करतब विक्रम लखिलीजो॥अत्र रहिमौन चपल करि घोरे।सा-
दरचलो पार्थके धोरे ॥ दोहा ॥ शल्य भूपसों भाषिइमि सुभटन
की दिशिहेरि । कर्णवीर सगरब बचनकहत भयोइमिटेरि ॥ नृप
के हितरत सुभट जो पार्थहिदेइदेखाय । ताहि शकटभरिदेउँगो
रत्नमोद सरसाय॥ कांस्यदोहिनीधेनुशत अयुत तुरगशतग्राम।
षटशत देहौं द्विरदवर शत इस्त्री छबिधाम॥दासी दासनकेनिकर
रथ भूषण समुदाय । देहौं ताकहँ आजुजो पार्थहिदेइदेखाय ॥
सोरठा ॥ पार्थ केशवहि मारिहरिहरितिनको सौजसब। देहौंताहि
विचारि पार्थहि देइ देखाइजो ॥ सूतज के ये बैन सुनि कौरव
मोदित भये । ह्वै सगर्व सहसैन बजवाये दुंदुभि घने ॥ जयकरी ॥
सुनि सूतजके ऐसेबैन । बोलोशल्यभूप बलऐन ॥ सूतज धनुष
रचत जेहि काज । आपुहिह्वैहै सो तुव राज ॥ बालबुद्धि गहि
खरचतदाम । बिनुधन दये सधी यहकाम ॥ तौबध कर्णजानि
निजस्वार्थ । आपुहि तौढिग आइहि पार्थ ॥ कृष्णपार्थकहँ बधन
सहर्ष । जोतुम कहतगहे उत्कर्ष ॥ अबलों सुन्यौन ऐसोचार ।
सिंहहि बधै द्विरद मतवार ॥ बांधि कंठ में शिला अक्षुद्र ।
चाहत पैरन क्षीरसमुद्र ॥ गिरिते गिरन हेत उमदात । नाहिं
पारथके सम्मुखजात ॥ गनेगने सुभटन लैसंग । करोपार्थ
सों भिरि रणरंग ॥ जो चाहौ निज जीवनलाहु । तौमतिज्वलत
ज्वलनमधि जाहु ॥ नृपति सुयोधनको हितजानि । यहतुमसों
कहियतु अनुमानि ॥ ऐसे दुसह बचन सुनि बीर । बोलो कर्ण
विदितरणधीर ॥ निजभुजदण्डनके बलशुद्ध । चाहतकियो पार्थ
सों युद्ध ॥ मित्रसही परशत्रु समान । तुमउपजावत भीतिमहान ॥
आवै बज्रपाणि रणहेत । तऊन रणते मोरब चेत ॥ सुनि ऐसे
सूतजके बैन । बोले शल्य अरुण करिनैन ॥ कुपित ब्यालके
मुखढिग पानि । चाहतकियो मरण बिधिठानि ॥ दोहा ॥ दिब्य
धनुषसो कढ़तलखि आवतबज्रसमान । पारथके शरनिरखि नाहिं

रहिहि तोहिं धनु ज्ञान ॥ शिशु जननीके गोद रहि शशिहि पसारत पानि। तिमि रथ पै रहि पारथहि बधन चहत प्रण ठानि ॥ पार्त्थ सिंह को जूठ धन आमिष पाय मोटाय। चहत पार्थ सों लरन अब जम्बुक सम उमदाय ॥ भयो कालबश उरग सम पार्थ गरुड़ पहँ जान। चहत पार्थअहि क्षुधितसों दरदुर सम लपटान ॥ जेहिबिधि सेवित शशनसों बनमें बड़ो शृगाल। आपुहि जानत सिंह बिनु लखे सिंह बिकराल ॥ तिमि तुम सेवित भटनसों आपुहि धनुधरबीर। जानत जौलगि सिंह सम पार्थहि लहत नतीर ॥ सोरठा ॥ जबपारथ ढिगआय बर्षिहि शायक बज्रसम। तबतुम धीर भुलाय रण तजिहौ कापुरुषसम ॥ अखुते यथा बिडाल अरु शृगालते सिंह जिमि। तिमितुम ते सबकाल अधिक पराक्रम पार्थभट ॥ चौपाई ॥ शल्य भूपकीसुनि यह बानी। बोलतभयो कर्ण अभिमानी ॥ जानत गुणी सुगुण गुणियनके। नहिंजानत जेनिर्गुण मनके ॥ तूगुणहीन कहा गुण जानै। सबहीको निर्गुण करिमानै ॥ अर्जुनको बिक्रमधनु शायक। अरु केशवके गुणजेहि लायक ॥ सो सब हम जानतहैं जे तो। क्षितिपति तुमनहिं जानत तेतो ॥ अरु अमोघनिज बिक्रम जानत। ममशायक गिरिभेदन ठानत ॥ तिनके बलकेशव पारथसों। लरन चहत करि रति स्वारथसों ॥ भीरुनके भयदायक दोऊ। रणमें मोहिं हरषप्रद ओऊ ॥ मूढ़ सभीत न युद्ध बिशारद। तुमताते सुहितहि भयभारद ॥ अपटु कुदेशजे शठअबिचारी। अनुक्षण उन्हें कहत भटभारी ॥ करि तिनको बधतौबध करिहौं।मद्रदेशमें प्रलयपसरिहौं ॥ हितह्वैअरिसम अरिहि सराहत।अजयहमारतासुजयचाहत॥आवैंसहस कृष्णशतपारथ। तौहम एक बधबगुणि स्वारथ ॥ कैवै हमैं मारि जय लैहैं। धर्म भूपतिहि आनँददैहैं ॥ उभै प्रकार क्षत्रियहिनीको। भीतमरत जो कादर जीको ॥ दोहा ॥ सबदेशन में नीचअति मद्रदेश त्रि-

शल्यसों हँसिके। चढ़ो सुरथपै हरिसम लसिकै॥ दोहा॥ यहसुनि सानँद शल्यनृप रघुबर रामहिं ध्याय। हय शीक्षण ढिग सुरथपै लसो शूरसमजाय॥ चढ़ो सुरथपै कर्ण तब ध्यायइष्ट गुरुदेव। घनेबजे बाजन तहां गहे युद्ध जयभेव॥ भुजंगप्रयात॥ तहांतौत-नय भूप आनंदपूरे। दये कर्णके कर्णये बर्णरूरे॥ किये भीष्म औ द्रोणजो कर्मनाहीं। करोआजु सो कर्म यायुद्ध माहीं॥ गहो श्रेष्टको ज्येष्ठजो पांचमोहे। बधौंचारिको हैं इहै हेतमोहे॥ बधो धृष्टद्युम्नादिजे युद्धकर्मा। बधौं सात्यकै जो महाभर्म भर्मा॥ सोरठा॥ इमिकहि तौ सुतभूप चढ़ो सुरथपै नृपनसह। द्विजगण मंगल रूप पठनलगे स्वस्त्ययन शुभ॥ तेहिक्षण शल्यमहीप बिहँसि कर्णसों कहतभो। अरेसूत कुलदीप निज बिक्रमदरशाउअब॥ दोहा॥ कर्ण धनुर्द्धर कर्षिधनु बर्षिबज्रसम बान। भीमपार्थआ-दिकन पहँ करु बिक्रम मनमान॥ धर्मराज कहँ पकरिले बधु पार्थहि सहसैन। देअपूर्ब जय कुरुपतिहि हौ प्रसिद्धजग जैन॥ सोरठा॥ यहसुनि कर्ण सगर्ब शल्य भूपसों कहतभो। बेगिहांकि हयसर्ब चलो पाण्डवी सैनपहँ॥ चौपाई॥ पार्थहि आदि सुभट सबउतके। जेबरणे अति बिक्रम युतके॥ तेसिगरे मम बिक्रम जोहैं। अबतेयुद्ध तजैं करिसोहैं॥ आजुप्रलय परदलमें पारत। महारथिन बांधमहिमाधि डारत॥ लखोमोहिं मारुत समलागत। परदललखो जलदसम भागत॥ उतअति प्रबलसुभटअसकोहै। जो मम निकट आइ नहिंमोहै॥ यहसुनि शल्य नयनकरि राते। बोलत भये बचन अतिताते॥ सूतसुवननहिं निजबल तोलत। कत पांडवन निदरि इमि बोलत॥ जौलगि सुनत न दायकदुख की। श्रुतिकटु धुनिगाण्डीव धनुखकी॥ तौलगि जिमिभावैतिमि बोलो॥ निजबिक्रमकीपदवी खोलो॥ जौलगि भीमहि गदाप्रहारत। लखतन मैंलग यूथसँहारत॥ सहदेव नकुल युधिष्ठिर राजहि। जौलगि करन शरनकेछाजहि॥ लखतनतौलगि हौंइमि भाषत।

लखेनबनहि धीरताराखत ॥ धृष्टद्युम्न सात्यकिहि निरेखी । इविधि न कहतबनिहि अवरेखी ॥ ऐसे बचन शल्यके सुनिकै । सूतज रहो अश्रुति सम गुनिकै ॥ कह्यो पालिसारथि पनभालिये । सादर अरिदल के ढिग चालिये ॥ सोसुनि शल्य हांकिरथ धीरे । चलो महाअमरष भरि हीरे ॥ धनुटङ्कारत नृपतौदलके । चले सदल बाढ़िजे अतिबलके ॥ दुन्दुभिआदि बाद्यतेहिक्षनमें । बजेअसंख्यन सैनसदनमें ॥ दोहा ॥ होतभयो दिगदाह अरु भे अति उल्कापात । महि कम्पादिक अपशकुन भेकरतां उतपात ॥ चले सैनके बामहै मृगपक्षी समुदाय । यहिप्रकार प्रगटित भये बहु अशकुन दुखदाय ॥ सोरठा ॥ तेहि क्षण कर्ण सटेक कहत भयो नृप शल्यसों । मोहिंन संशय नेक युद्धोत्सुक सुरपतिहु लखि ॥ चौपाई ॥ बिष्णु महेंद्रसदृश रणचारी । बिदितापिनाकी सम धनुधारी ॥ भीषम द्रोण तिन्हैं उनमारे । तदपि न हम कछु संशय भारे ॥ आजु पांडवन बधिजय लैहौं । कै जहँ द्रोण गयोतहँ जैहौं ॥ दुर्योधनको कारज करिबो । मोहिं उचित कै रणमाधि मरिबो ॥ आजुमहाधनु बिधि प्रगटितकै । दुसहशरनके जाल घटित कै ॥ बधिहौं पार्थहि सहित सहाई । बचिहि न शक्रहुके ढिगजाई ॥ यहसुनि कह्योसत्य क्षिति नायक । झूठ कहत नहिं तुमयहि लायक ॥ मौन रहो मतियहि बिधिभाषौ । मति रबि शशिहिगहन अभिलाषौ ॥ जब कुरुपतिहि गन्धबन लीन्हों । तहांनतुम सबबिक्रम कीन्हों ॥ गये बिराटनगरमें जादिन । पारथ कियो पराक्रम तादिन ॥ सोभुलाय अबयहिबिधि भाखत । मनकरि सुरतरु के फलचाखत ॥ बासुदेवसों रक्षितपारथ । कोतेहिजीतिसकै गुणिस्वारथ ॥ यहनरबर पारथभटआरज । कहँ तुम पुरुषाधम नरजारज ॥ जोन भागिजैहो वहिक्षन में । तौतो बध निरमित यहि दिनमें ॥ ऐसेबचन शल्यके सुनिकै । उत्तर दयोकर्ण इमि गुनिकै ॥ कपटत्यागि सारथिपन कीजो । मम

सूचीपत्र ॥

कर्णपर्व ॥

शल्यपर्व सूचीपत्र ॥

गदापर्वसूचीपत्र ॥

महाभारतदर्पणे।

कर्णपर्वदर्पणः ॥

दोहा ॥ करिप्रणाम नारायणहि नर नरोत्तमहि नौमि। बन्दि गिरा व्यासहि रचत भारत भाषा सौमि ॥ जेहि रघुबर प्रभुके चरित बहु शतकोटि अमन्द। ताहि नौमि भारतरचत भाषा बिरचि सुछन्द ॥ पारथके स्वारथभये सारथि परमअनूप। ते सारथ रचिदेहिं यहभारतभाषारूप ॥ सोरठा ॥ सुमिरि उच्छल-नि अक्ष उदधि उलंघन समयकी। भारत समुद्र प्रतक्षभाषा करि चाहततरयो ॥ बन्दौं कपिबरबीर रामपरमप्रिय पारषद। मंगल मूरति धीर भारत स्वरथ ध्वजरथ बर ॥ निर्मल करण अनन्दि जासु नाम ह्वै कर्णगत। करनजोरितेहि बन्दि करण पर्ब भाषा करत ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ रोला ॥ द्रोणगे जेहिदिवस बधि तेहिरजनि डेरनजाय। शोकग्रस्त महीप तो सुत सहितनृप समुदाय ॥ द्रोणसुत पै जाय बहुसमुझाय डेरन आय। भूत प्रात भविष्य शोचत रजनि तौन बिताय ॥ सैनपतिकरि सूत-जहि ह्वै बाहनानि आरूढ़। पाण्डवनसों जूटिक्रमसों युद्धकीन्हें गूढ़ ॥ दोयदिन लरिपाण्डवनसों मारिबहुरणधीर। पार्थके बर बाणसों बधिगयोकर्णसुबीर ॥ कर्णकोबधदेखिसंजय तुरँग चढ़ि दौराय। जायकै धृतराष्ट्र नृपसों दयोखबरिसुनाय ॥ कह्यौ बैश-

म्पानिमुनि यहवचनसो सुनिशोचि । कह्यौ जनमेजय महीपति बाबचनको दोचि ॥ जायसंजयभूपसों जबकह्यौ ऐसीबात । कह्योकैमेवृद्धनृपसों कुलिशकैसोपात ॥ मरेभीषम द्रोणआदिक मुहित मुभट अनेक । पुत्र कितक पउत्र कितने मरेलरिगहि टेक ॥ कर्णसों प्रिय कर्णनृपके मरोसुनि सो सर्ब । मरोनहिं धृ-तराष्ट्र नृप किमिमह्यो शोकअखर्ब ॥ कह्यौ बैशम्पानिमुनिसो मनयके अनुरूप । कर्णको सुनिमरण तेहिक्षण भयोजैसोभूप ॥ कहे बैशम्पानि संजय जायनृपकेपास । कियोनृपहि प्रणामगद-गद गरे लेत उसास ॥ जानिव्याकुल सूतजाहि धृतराष्ट्र अति दुखपाय । धीरधरि इमिकहे संजय कहोमोहिंबुझाय ॥ द्रोणको बधदेखि कैसे भये ममभटबीर । कियोका ममपुत्र धीरज दयो को रणधीर ॥ भूपको सुनिबचन संजयकह्यो सुनु क्षितिकन्त । दये साहस त्यागि तो भट द्रोणको लखि अन्त ॥ भूपतो सुत धीरधरि तवभटन धीर धराय । कर्ण कहँ सैनेश करिकै लरो ओजबढ़ाय ॥ दोयदिनकरि घोरसंगर कर्णधीर धुरीन । पार्थके शरघातमों मरिगयो सुरपुर ईन ॥ करणगत भो करण भट के मरणको आह्वान । भूप त्योंहीं गिरो ह्वै गतचेत मनु गतप्रान ॥ भयो हाहाकार अन्तः सदनमें तेहियाम । रुदन धुनिसों भयो पूरित भूमि गगन अछाम ॥ विदुर संजयसींचि जलसों स्वस्थ कीन्हें ताहि । चेति नृपगहि शोच चुपह्वै रहो चहुंदिशि चाहि ॥ ऊबि ऊबि उसासलै निज सुतहि निन्दि सडौर । सूत सुत सों कह्यो अनरथहोत भो केहितौर ॥ कहे संजयपुत्र सह बाधिगयो कर्ण अधर्ष । भीम दुश्शासनहिं बाधिकै पियो रुधिर सहर्ष । फेरि भूपति सूत सुतसों कहे गोइ न राखु । सुभट मम जेगये जिनको बधे सो सब भाखु ॥ सूत सुत तब कह्यो जितने प्रगट भट बलओक। पाण्डवनके बधे तनतजिगये ऊरधलोक ॥ रोला ॥

बैशम्पायनउवाच ॥ वृद्धनृपके बचन सुनिकै कह्यो संजयधीर । सुनो

भूपति मरेजे तुवओरके बरवीर ॥ दिवस दश कहियुद्ध भीषम मारि अगणित सैन । भिदित सब तन मृतकसमह्वै करत शर पर शैन ॥ मारि सुभट असंख्य अति दिन पांचकरि रण का-र्य्य । द्रुपदसुत सैनेशके कर मरो द्रोणाचार्य्य ॥ नृप विविंशित मरो बधि आनर्त्त अगणित बीर । बिन्दअरु अनुविन्द बधिगे युद्धकरि गम्भीर ॥ सिन्धुपति नृपभट जयद्रथ बधे अर्जुन ता-हि । बध्यो लक्ष्मण कुंवरको अभिमन्यु जय यश चाहि ॥ सुत दुशासनको बध्यो तेहि द्रौपदेय प्रचारि । एकलव्य किरातपति दिव गयो तन इत डारि ॥ पार्थके शरघातसों भिदि मरो नृप भगदत्त । तथा तासों गयोबधि जु श्रुतायु भूप प्रमत्त ॥ बधि असंख्यन शत्रुपक्षिन नृप सुदक्षिण बीर । मरो दक्षिण पार्थको लहि गात तीक्ष्णतीर ॥ कुशल धनुधर कोशलाधिप बध्यो तेहि अभिमन्यु । शल्यकोसुत बध्योभट अभिमन्यु करिअतिमन्यु ॥ कर्णको सुत कर्ण दुस्तर युद्ध जो वृषसेन । करिप्रतिज्ञा बध्यो ताकहँ पार्थभट जगजेन ॥ नृप श्रुतायू बिदितभट तेहि बध्यो धनुधर पार्थ । वृहत्क्षत्र भगीरथौ बधिगये सुनहु यथार्थ ॥ रु-क्मरथ जो शल्यसुत तेहि बध्योभट सहदेव । कृतप्रज्ञसुत भग-दत्तको तेहिबध्यो नकुल सुभेव ॥ पितामह तो बिदितभट बा-ह्लीक जो नरनाह । सहितसेना बध्यो ताकहँ भीम दीरघबाह ॥ जरासन्धमहीपकोसुत जयत्सेनउदण्ड । बध्यो तेहि अभिमन्यु योधा मारि शायकचण्ड ॥ बीरधीर कलिंगपतिजे उभय योधा पर्म । बधेगे तो अर्थ तेऊ कठिन करि रणकर्म ॥ सचिव तो वृषबर्म नामक बिदित योधा जौन । बध्यो ताकहँ भीमकर्मा भीम बिक्रमभौन ॥ अयुतगजबलभूप पौरवबध्योअर्जुनताहि । सूरसेन महीप ताकहँ बध्यो पारथ चाहि ॥ दोयसहस बसात योधा गये बधि रणधीर । शिवयसककालिंग अगणित मरे मालव बीर ॥ अभीषाह असंख्य अगणित सुभटश्रेण्य तौन । सुभट संसप्तक

असंस्यन वध्यो पारथ जौन ॥ सुभट वृषकाचल नृपति तो सखा जो बलवान । बध्यो ताकहँ पार्थ हनि हनि बज्रसम बर बान ॥ विदितधनुधर वीरवरणो शाल्व भू भरतार । बध्यो ताकहँ भीम जो सब जगतको जेतार ॥ ओघवन्त वृहन्तदोऊ नृपतिभे गतप्रान । क्षेममूर्त्तिहि बध्यो गदया भीमसेन अमान ॥ सुभटजो जलसन्ध ताकहँ बध्यो सात्यकिटेरि । बध्योभूरिश्रवहि सो अरु सोमदत्तहिहेरि ॥ राक्षसाधिप भटअलम्बुष रहोजो अति चण्ड । ताहि मारचो भटघटोत्कच चपलकरि दोर्दण्ड ॥ सूतसूत राधेयहू ते गये बधि रणमांह । कैकेय सुभट समस्त मारचो पार्थ दीरघबाह ॥ द्रविड़मद्र ललित्थ क्षुद्रक तुण्डकेशी जूह । मावित्र अरु मावेल्लपुत्रक मरेसुभटसमूह ॥ सुभटप्राचि प्रतीचिदक्षिण अरु उदीची वाल । तुरगसादी अरु पदाती सुरथ द्विरदविशाल ॥ मरेअगणित लाख ममदिशि कहँकबलों भूप । भयाकारज प्रगटजो तुवमंत्रके अनुरूप ॥ विकर्ण दुर्मुख सत्त दुशासन दुसह दुर्विषजौन । दुर्विजयदुर्मुखन दुर्जय सुवन तो बलभौन ॥ और तो बहुपुत्र मारचो भीमसेन प्रचारि । पियोरुधिर दुशासनै को मारिछाती फारि ॥ कर्ण अर्जुन को भयो नृप महादारुण युद्ध । बध्योकर्णहि करिसुदुष्करकर्म पारथक्रुद्ध ॥ बध्यो वृत्रहि इन्द्रजिमि अरु रावणहिं जिमि राम । तथा नरकासुरहिं मारचो कृष्ण महिमा धाम ॥ कार्तवीर्य्यहि यथा भार्गव अन्धकहि त्रिपुरारि । स्वामिकार्त्तिक महिष राक्षस बध्यो जिमि परचारि ॥ बध्यो कर्णहिं पार्थ तिमि करिद्वन्द्वयुद्ध महान । बन्धु पुत्र सवर्ग मारचो बरषि अविरल बान ॥ नृपति जीतो पुत्र ताकी आश जयकी जौन । कर्ण सँग तेहि मारिडारचो पार्थ बिक्रम भौन ॥ होहिं सिगरे भूमिकेपति पुत्र मम बलऐन । रही ऐसी बुद्धि जो तो हियेकरणि अचैन ॥ भयो यह फलतासु प्रगटित और ह्वैहै भूप । भीष्म व्यासादिक्नकोमत ध्वंसके अनुरूप ॥

दोहा ॥ संजयसों यह सुनि कह्यो नृपलै ऊर्ध्वउसास। कहु संजय जे उतमरे करिकै युद्ध बिलास ॥ यह सुनिकै संजयकह्यो महाराज सुनु तौन। मरेउतैके सुभटजे महापराक्रम भौन ॥ नारायणगण अगिन अरु बालभद्र गणभूरि। भीष्म असंख्यन भट बध्यो जाल शरनको पूरि ॥ चौपाई ॥ नृपति सत्यजित रण सों रात्यो। द्रोणाचारय ताहिनिपात्यो ॥ जेपांचाल सुभट भयवारे। तिन कहँ द्रोणाचारय मारे ॥ मत्सभूपके अगणित योधा। बध्यो द्रोणभटकरि अवरोधा ॥ द्रुपद बिराट शंख नरनायक। मारचो तिन्हेंद्रोण दृढ़घायक ॥ तिनके रहे बन्धुसुत जेते। तिन्हें बध्यो द्विजजययशहेते ॥ बध्यो उत्तरहि शल्य महीपा। श्वेतहिवध्यो भीष्मकुलदीपा॥ एकरथी अभिमन्युहि लहिकै। षटसुरथीमिलि घेरिउमहिकै ॥ बधाबिचारि अतिबिक्रम करिकरि। बिरथबिधनुतेहि कीन्हेंलरिलरि ॥ बध्यो दुशासनके सुतताही। महापराक्रम नद अवगाही ॥ नृप अम्बष्टकोसुत बलभारो। लक्ष्मण कुँवर ताहिलरि मारो ॥ वर्षत शायक करषि शरासन। बध्यो बृहन्तहि बीर दुशासन ॥ नृप मणिमानहि द्रोणनिपात्यो। दंडधराहि बधि आनँद रात्यो ॥ अंशुमाननृप योधाआरज। तेहि मारचोलरिद्रोणाचारज ॥ चित्रसेन सहसुत भट चीन्हें। तासु समुद्रसेन बधकीन्हें ॥ नील भूप कहँ अश्वत्थामा। मारचो महावीर जयकामा ॥ व्याघ्रदत्त अरुभट चित्रायुध। नृपति चित्रयोधी बर आयुध ॥ तिन्हैं बिकर्णबध्यो अतिरणकै। बधिअगणितभट अटपट मनकै ॥ तोदिशि कैकय नृपसहसाजा। सो कैकेयहि मारचोराजा ॥ जनमेजय पार्वती नरेशा। तेहिमारचो दुर्मुखभट बेशा। रोचमान युगबन्धुरहेहे। महापराक्रम तहांगहे हे ॥ करिअतियुद्धद्रोणतेहिमारचो। तासुसैनमें प्रलयपसारचो ॥ पुरजित कुंतिभोज दोउभाई। मारचोतिन्हें द्रोणदृढ़धाई ॥ अभिभू काशिराज बलभारचो। तेहि बसुदान भूपसुत मारचो ॥

नृपनि मित्रवर्मा रणचारी । क्षत्रधर्म भूपति धनुधारी ॥ इ
पाञ्चालन वधिवधि वरधो । द्रोण विप्र तो सुतजय सरधो
सुवन शिखण्डीको अतिवरधित । क्षत्रदेव होजययश सरधित
वर्य्योनाहि नो पौत्र अमाना । लक्ष्मण कुंवर बिदित बलवाना
जौन सुचित्र भूप बलरासू । सुभट चित्रवर्मा सुततासू ॥ मार
निन्हें द्रोण अति तुरमें । हनिहनि चोखेशायक उरमें ॥ मर
वार्धक्षेमी नरनाहू । अरु अमितौजादीरघबाहू ॥ सेनाबिन्दनृप
को बेटो । शस्त्रवानहो विरद लपेटो ॥ तेहिमार्‍यो बाह्लीक प्रच
री । मारिअमंस्यन भटरणचारी ॥ दोहा ॥ धृष्टकेतु शिशुपालसु
अरु सुकेतु वरवीर । घोरयुद्धकरि करि मरे बधि अगणित र
धीर ॥ सेनाविन्दु महीप अरु शास्त्रवान नरनाह । मरे द्रोण
शरनसों करि सुयुद्ध रणमांह ॥ भूप सत्यव्रत बीरअरु अ
मदिराश्वनरेश । सूर्यदत्तकहँ वधतभो द्रोण भयानकभेश
श्रेयमानवसुदाननृपकरिकरियुद्धअघात।मरेद्रोणकेशरनकोपा
वत्रकोपान ॥ इन्हें आदि अगणित सुभट मरे सुनोक्षितिपाल
कहँ कहांलों सकल अब दारुणदशा कराल ॥ सोरठा ॥ यह स
नि वृद्धनरेश संजयसों इमिकहतभे । कहुसंजय तेहिदेश ब
रहे जे सुभटमम ॥ भीषम द्रोण अमान मरे परोमरि कर्णसुनि
हम मानन गतप्रान जे जीवत तिन सकल कहँ ॥ संजयउवाच
चौपाई ॥ सुनो भूप जे भट तो ओर । हैं जीवत करता रणघोर
अश्वत्थामा वीर उदार । विधिवत धनुर्वेद ज्ञातार ॥ अरु अ
नर्त्त हृषिकसुतजौन । नृपकृतवर्मा विक्रमभौन ॥ अरु आर्त्ताङ्
सहित नरेश । शल्यमद्रपति वली विशेश ॥ सैंधव अरु कांबोज
नदीज । भट धार्वती शत्रुदुखबीज ॥ सुभट बनायुज लीन्हेसंग
लमें शकुनि नृप भरो उमंग ॥ कृपाचार्य्य अतिरण करतार
अरु कैकय नृपपुत्र उदार ॥ चित्रायुत श्रुतवर्मा भूप । सलद
स्मल सहसैन अनूप ॥ कैतव्यन को पतिसहसैन । बीर श्रुतार

अरिदलजैन ॥ चित्रसेन चित्राङ्गदजौन । भूप धृतायू बिक्रम भौन ॥ लीन्हें सैन संग हतशेष । भरे अमर्षगहे जयरेष ॥ तो सुत नृपके संग सडौर । लसत गहे अति गुरुता गौर ॥ तिन मधि नृप तो पुत्र अमान । लसत मेघमधि सूर समान ॥ कृश दल मध्य लसत क्षितिपाल । यथा अधूमज्वाल को जाल ॥ हय गजरथ पैदर सहभूप । सुन्दर लसत पुरन्दर रूप ॥ यह सुनिकै धृतराष्ट्रमहीप । महा मोह बशभो कुलदीप ॥ कहतभयो इमिसहित बिबेक । संजय मौनरहो क्षण एक ॥ सुनि अति अप्रियदशा कठोर । भो अतिशै ब्याकुल मनमोर ॥ इमिकहि समुझि हारिको हेत । भयो भ्रान्ति बश ह्वै हतचेत ॥ सूतउवाच ॥ दोहा ॥ यह सुनि जनमेजय नृपति कहे कहौ मुनितौन । तदनन्तर धृतराष्ट्रनृप कियो वारता जौन ॥ सुनि बैशम्पायन कहैं सुनो भूमि भरतार । तदनुचेति धृतराष्ट्रकहि हाय हाय बहुबार ॥ कर्ण बीरको मरणसो मेरु चलनसम जानि । जानि सूखिवो सिन्धुको रबि निपतन सममानि ॥ अर्जुनको अद्भुत करम गुणिलै ऊबिउसास । शोकागिनिसों दहतभो जानि सुतनको नास ॥ रोला ॥ करणको गुण कथन करि करि कियोभूरि प्रलाप । सुनो जनमेजय नृपति जोसुनो चाहत आप ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ बली वृषभ समान जाको ग्रीवउन्नत पुष्टामत्त मैगलसरिस उन्नतकाय शोभनसुष्ट ॥ सिंह सम बलवान जो गज नृपन मध्य बिभात । युद्ध मध्य महेंद्र सो जो जगत मध्य बिख्यात ॥ जासु ज्यातल शब्द नहिं सहि सकत हेनर नाग । बज्र बरषासंग जाको बाणबेग सराग ॥ जासुभुजबलकेभरोसे पुत्रमम क्षितिपाल । युद्ध ठानव पाण्डवनसों जानि बिजय अकाल ॥ श्रेष्ठ सब अति रथिनसों सो कर्णबीर बिशाल । बधोगो किमि पार्थसों अरिवृन्द दलको काल ॥ कृष्ण पारथ वृष्णिगण कह गुणतहो नहिं जौन । सोइ धनु गाण्डीव धनुषहि गुनतहो लघुजौन ॥ एकरथ हमबधव पार्थहि मारिसिगरी सैन ।

कहनहो मल्लपुत्रमों जो सकल धरणी जैन ॥ अंगबंग कलिंग कोशल काशिशक गान्धार । मद्रमत्स्यादिकन जीत्यो जौन बीर उदार ॥ बुद्धिहिन मम पुत्रके जो जित्यो नृपति अनेक । शत्रुबश ह्वै मर्यो किमिसो कर्ण जय यश टेक ॥ सुरनमें बरइन्द्र तैसे भटनमें बरकर्ण । अहिनको खगराज तैसे अरिनको मदहर्ण ॥ युद्धकरि मगधेश जासों भयो अति सन्तुष्ट । गहतभो मित्रत्व-भावप्रभाव गुणि अतिपुष्ट ॥ परमहित ममपुत्रकोभट कर्णताको घात । सुन्यो तौलौं शोकमें ममजीव बूड़त जात ॥ बज्रते अति कठिन संजय हृदय मेरो मानु । फटत नहिं लहिशोक ऐसोदुःख दुसह अमानु ॥ संजयउवाच ॥ अति प्रशंसित सुकुलमें उत्पन्न तुम मतिमान । यशी जाहिर जगतमें युतश्री ययाति समान ॥ ऋषिनके शुभवचन बहुदिन सुने सहित विधान । बिषादनदमें बोरिमनमति गहो दुख अतिमान ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ दोहा ॥ संजय भावी प्रबलहै पुरुष पराक्रमव्यर्थ । देखि कर्णको मरणध्रुवजानि परो यहअर्थ ॥ वर्षिबाण सब पाण्डवन मोहित करि रणधीर । मारिअसंख्यनभटन किमि बधोगयो बरवीर ॥ शोकसिन्धुको पारअब देखिपरत नहिं मोहि । अतिहित सूतजको मरणबिजय व्यर्थको जोहि ॥ मम आयुर्बल दीर्घ अति कियो बिधाता पूर्ब । जाते ममहिय सहत दुखकर्ण मरणको गर्ब ॥ भीष्मद्रोण अरु कर्णको बधमुनि जान्योयेहु । औशिमरेंगे सुभटमम सब जीवत जेनेहु ॥ जयकरी ॥ सब गुरुजनको वचन अनूप । नहिं मान्योशठ मोसुन भूप ॥ गहै न औषध पथ्य महान । यथा कुरोगी जो म्रियमान ॥ शरशय्या गत भीषमतात । जबमांगे पानी अवदात ॥ तबशर हनि महिते जलधार । काढ़िदयोजल पार्थउदार ॥ सोलखिकै भीषम मतिमान । ममसुतसों बोले सबिधान ॥ अबहूं तातकुहठ तजिदेहु । पांडवसों सम्मत करिलेहु ॥ रहैकुशलसहित बन्धु बिभात । होय युद्ध मम अन्त बिख्यात ॥ दुर्योधन नहिं

मान्योतौन। संजय होय न अनरथ कौन॥ जिमि पक्षिहि गहि पक्ष उचारि। बालक क्रीड़त महिपर डारि॥ तेहि प्रकारहैं पक्ष बिहीन। औशिहोव हम शत्रुअधीन॥ नृप धृतराष्ट्र भरे परि-ताप। यहि प्रकार करि भूरि प्रलाप॥ संजयसों इमिकहे सशोक। संजय नहिं भावी को रोक॥ जेहि क्षण करिकै युद्ध महान। म-रोकर्ण रणधीर अमान॥ केके तहांलरे रहिसंग। केके भगेत्यागि रणरंग॥ यथा शिखण्डिहि आगे राखि। भीष्महि बधे पार्थ नयनाखि॥ द्रोणहि यथा निरायुध देखि। धृष्टद्युम्न मार्‍यो अ-वरेखि॥ तैसे कर्णहि मार्‍योपार्थ। कैकिमि सो विधि कहो यथार्थ॥ बिरथ बिधनु करि भीमहि जौन। कीन्होहास कर्ण बलभौन॥ तेहिप्रकार सहदेवहि जीति। नहिं मार्‍यो गुणि वचन सुनीति॥ बध्यो घटोत्कच असुरहि जौन। केहिबिधि बधो गयोभटतौन॥ दोहा॥ धनु करषतबर्षत विशिख कर्णहिमारतकौन। भयोउपद्रव कछूतब मारिगयो बलभौन॥ भिन्नभयो धनुतासुकै महीग्रस्यो रथचक्र। अस्त्रतासुभे नष्टकै भये कालचख बक्र॥ तासु नाश को नहिं रहो कारण और समर्म। पार्थहि बधिबेकोरहो जोकीन्हें प्रणपर्म॥ सभामध्य सब पाण्डवन शण्डकह्योजो बीर। मरो कौनबिधि कर्णसो जगजेता रणधीर॥ दुश्शासन अरु कर्णको अति अनरथ बधदेखि। शोकाकुल ममपुत्र नृप कियेकहा अव-रेखि॥ बधोदेखि निज भ्रातरन सैन पराजित देखि। शोकाकुल ममपुत्र नृप कियो कहा अवरेखि॥ द्यूत बिरचि निरमित कियो यहि अनरथ करिफन्द। देखिकर्णबध शकुनिसों कहाकियो म-तिमन्द॥ रोला॥ कर्णकोबलबुद्धि बिक्रमबरणि बारंबार। कहि अबकहु भयोकैसे कर्णको संहार॥ शोकग्रस्त महीपइमि कहि किये भूरि प्रलाप। कठिन मेरोहियो संजय सहत ऐसो ताप॥ कर्णको सुनि मर्ण सुतकी हारि निश्चल जानि। हाय नहिं मम हियो फाटत सहत दारुण ग्लानि॥ पुत्र दुश्शासन परम प्रिय

मरोकिमिकरि युद्ध । लरे किमितेहि समय तहँ कृपआदि वीर सक्रुद्ध ॥ रह्यो पार्थहि बधनको प्रणकिये जोगहि गर्व । गयो बधि केहिभांति सोवह कर्ण वीर अखर्व ॥ दोहा ॥ यहसुनि संजय नृपतिसों बोल्योवचन प्रशस्त । सुनो शोकतजि धीर धरि सो वृत्तान्त समस्त ॥ तेहिदिनके निशिमधि विकल दुर्योधन क्षितिरौन । कहे कृपादिक भटनसों सुनो बुद्धिबल भौन ॥ अतिदुखदा दारुण दुसह मंददशा यहपाय । अवजैसो करतव्यसो कहौमंत्र सुखदाय ॥ यहसुनि बोलो द्रोणसुत भूपति शोच बिहाय । कर्णहि करि सेनाधिपति करौयुद्ध गहिचाय ॥ सोरठा ॥ द्विजबर के ये बैन सुनिदुर्योधन चैनलहि । जानि बुद्धिबलऐन किये प्रशंसा कर्णकी ॥ नयकरी ॥ हेहे कर्ण मित्र रणधीर । तू ममहित रत अनुपम वीर ॥ हमलहि तो सम्मत यहिदेश । कियेभीष्म द्रोणहि सेनेश ॥ तिनकहँ रक्षणीय हो पार्थ । ताते बधेनगुणिममस्वार्थ ॥ लरिदशपांच दिवस मनलाय । परे मरे ह्वै बाधित काय ॥ तुवकर जय लहिबे की आश । निति सों बसत हमारे पास ॥ ताते ह्वै सेनापति तात । सादर देहु विजय अवदात ॥ कीन्हें पूर्व प्रतिज्ञा जौन । सानँद शोचकरो अब तौन ॥ तुम्हें देखि सेनेश विशाल । तिमि ह्वै हैं पाण्डव पांचाल ॥ जिमि चक्रायुध विष्णुहि देखि । दानव दितिज होत भय भेखि ॥ सुनि भूपति के वचन नवीन । बोलो सूतज धीर धुरीन ॥ नृपहम ह्वै सेनापति अत्र । लेव विजय रचि संगर शत्र ॥ यह सुनि भूपति मोद बसाय । किये सविधि अभिषेकसचाय ॥ चारु कनकके कुम्भ भराय । तेहि विधिवत मंत्रितकरवाय ॥ तेहिसपुण्य जलमधि सनिबन्ध । करिमिश्रित शुभ औषधि गन्ध ॥ द्विरिद दन्तको पात्रअनूप । खङ्गशृंगके शुचि अति रूप ॥ तेहिजल पूरणकरि करि ताहि । दुर्योधन आदिक नृपचाहि ॥ विधिवत कियेतासु अभिषेक । द्विज गण पढ़त मंत्र सविवेक ॥ औडम्बर आसन

आसीन । करिकीन्हें अभिषेक अहीन ॥ पढ़ि स्वस्त्ययनविप्रसमुदाय । आशिष दीन्हें ओज बढ़ाय ॥ साहित गोविन्द पारथहि जीति । जीतौ पाञ्चालन जयप्रीति ॥ सूरउदय जिमिहोतउलूक । तिमितो शत्रुहोहिहैंमूक ॥ सुनिस्वस्त्ययन कर्ण मतिमान । मणि हय गो वसु दीन्होंदान ॥ कौरव दलमधिलसो उदार । सुरसेना मधि यथाकुमार ॥ कर्णहिं करि सेनापति भूप । तौसुत भयो कृतारथरूप ॥ मरे द्रोण भीषम सो देखि । दुर्योधन कर्णहिइमि भेखि ॥ बिजयचहतहतिशत्रु अमान । भूपहोतिआशाबलवान ॥

इतिमहाभारतदर्पणकर्णपर्वणिकर्णाभिषेकोनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

धृतराष्ट्र उवाच ॥ जयकरी ॥ लहि अभिषेक पूरिअतिचैन । कियो कहातब कर्ण ससैन ॥ सूतकह्यो तब कर्ण सुभेश । सैन सजन को दियो निदेश ॥ नृपतेहि शेष रजनि मधि भूरि । साजहु सजहु शब्दगो पूरि ॥ निरखि भोरकरि कृत्य प्रशस्त । चढ़े बाहनन सुभट समस्त ॥ दोहा ॥ कर्ण तहां बिरचत भयो मकर ब्यूह अति चण्ड । इबिधि राखि सबअंगमें धनुधर सुभट उदण्ड ॥ कर्णभयो मुखचषभये शकुनि उलूक ससैन । शीश द्रोण सुत ग्रीवभे सबतो सुत बलऐन ॥ दुर्योधनसेनासहित रहोतासु मधि देश । कृतबर्मा भो बामपद सदल भयानक भेश ॥ द्वितिय बामपदशल्य भो सह त्रिगर्त्तभटगोल । दक्षिण पदभो सैनसह गौतमबीरअडोल ॥ रथसहस्र त्रयशतद्विरद सहसुषेणनरनाह । भो द्वितीयदक्षिणचरण बरणोदीरघबाह ॥ चित्रसेनअरुचित्रनृप भ्राता सदल सगर्ब । पुच्छदेशपै थिरत भे धारेआयुध सर्ब ॥ यहलखि धर्म महीपको शासन लहि भट पार्थ । अर्द्धचन्द्र बर ब्यूह भो रचत जानि निज स्वार्थ ॥ बामपार्श्वमें रहतभो भीमसेन रणधीर । दक्षिण दिशिमें रहत भो धृष्टद्युम्न बरबीर ॥ मध्य देशमें रहतभे पारथ अरु नृपधर्म । पृष्ठरक्ष तिनके रहे सहदेव नकुल अभर्म ॥ उतमौजा नरनाह अरु युधामन्यु पाञ्चाल ।

चक्रगक्ष है सँगाल्ये चौंविधि दुलविकराल ॥ यहिविधि शेषमहीप सब मैमैग सुभट समूह। यथाभाग रहि रहि रहे रक्षत सेना व्यूह ॥ सोरठा ॥ दुन्दुभि आदिक भूरिलगेबजन बाजनघने। सुभट वीर रणपूरि बढ़िबढ़ि भिरिलागे लरन ॥ भिरि भिरि भट तेहिकाल घोरयुद्ध लागे करन। मढ़ो शरनको जाल दुहूँओर अविरल भयद ॥ चौपाई ॥ रथी पदाती भट हय सादी। बीर गजस्थ अशङ्क प्रमादी ॥ तोमर शक्ति भल्ल भयधारे। भिंदिपाल पट्टिश अनियारे ॥ बाणपरशुवध वर्षनलागे। परदलजीतन के अगपागे ॥ लगे लरन बढ़ि बढ़ि डटि डटिकै। मारो मरो मारु रटि रटिकै ॥ लागे गिरन शीश भुज कटि कटि। भरे रुधिर अतिशोभा अटि अटि ॥ गजते गिरन लगे भटतैसे। शिलागिरैं गिरि शिखरतेजैसे ॥ यहिविधि भयो युद्ध धुनि धुनिकै। सात्यकि भीम शिखण्डी गुनिकै ॥ द्राविड़ कांची मागधदेशी। अरुप्रभद्र भट उग्र निदेशी ॥ रथी गजी पैदर हयसादी। आयुध बर्षत त्रिदिन प्रसादी ॥ धृष्टद्युम्न आदिक भटजूहा। दलमाधि धसन चहे करि दूहा ॥ तिनमें भीम गजस्थ सुहायो। बर्षत बाणबेग सों आयो ॥ तेहिलखि क्षेमधूर्त्ति रणचारी। गजबढ़ाइ भो भिरत प्रचारी ॥ भिरिदोऊ भट गौरव लीन्हे। अतिशै तुमुलयुद्ध तहँ कीन्हे ॥ अगणितबाण परस्परमारे। अगणित शायक गजन प्रहारे ॥ दोऊ दुहुन बाण हनिडारे। दोउ दोउनके धनु कटिडारे ॥ दोऊ कोपि धनुष गहिकरषे। विविध भांतिके शायक बरषे ॥ द्वै बेधिन अति भयसोंपागो। क्षेमधूर्त्ति नृपको गजभागो ॥ फेरि गजहि सो नृप रण करकस। वर्षत भयोबाण बहु तरकस ॥ दोहा ॥ बज्र समान सुबाण बर कुम्भन मध्य प्रहारि। भीमसेनके गजहि वधि दीन्हो महिपै डारि ॥ कूदि द्विरदते भीमतब गहि गुरुगदा प्रचारि। क्षेमधूर्त्ति नृपके गजहि डारिदेत भो मारि ॥ क्षेमधूर्त्ति तब गजहि तजि चलो खड्गगहि चण्ड। ताहिबध्यो

हनि गुरुगदा पाण्डव बीरउद्दण्ड ॥ सोरठा ॥ ताकहँ गिरत नि-रेखि भगेतासु भटधीरतजि । पाण्डव जयअवरेखि प्रबल भये अति चावसों ॥ चौपाई ॥ सो दल बिचलत लखि तेहि क्षनमें। कर्णसैनपति रिसकरि मनमें ॥ करषि शरासन गौरवलीन्हो। परदल मधि अति शरझरिकीन्हो ॥ सोलखि कोपि नकुल रण चारी। सूत सुवनसोंभिरो प्रचारी ॥ भीमसेन रथचढ़ि बढ़िउत सों। लागो लरन द्रोणके सुतसों ॥ नृपति बिन्द अनुविन्द सु-धीरा। तिनसों भिरो सात्यकी बीरा ॥ श्रुतिकर्मासों अभिरो हर-षत। चित्रसेन भूपति शर बरषत ॥ दुर्योधन अति रिससों मढ़ि के। भिरोधर्म भूपतिसों बढ़िके ॥ बढ़ि बढ़ि संसप्तक गणस्रे। भिरे पार्थसों अमरषपूरे ॥ कृपाचार्य्य गौतम धनुधारी। धृष्टद्युम्न सों भिरो बिचारी ॥ भिरो शिखण्डीसों कृतबर्मा। श्रुतिकीरति सों शल्य अभर्मा। सहदेवसों भिरिबीर दुशासन। बरषोशायक करषि शरासन ॥ यहिप्रकार इतउतके योधा। लरतभये करि करि अवरोधा ॥ भिरिसात्यकि केकय दोउभाई। नृपकीन्हे अति तुमुललराई ॥ अतिबर्षा बाणनकीकीन्हें। दुहुं दिशि अंधकार मढ़िदीन्हें ॥ अगणित बाण परस्पर मारे। अगणित बाण शर-नसों वारे ॥ कैयक धनुष परस्पर काटे। फिरिधनुगहि गहिधनु विधिठाटे ॥ दोहा ॥ यहि प्रकार अति युद्ध करि सात्यकि धीर धुरीन। हनि क्षुरप्र अनुबिन्दको काटि दियोशिर पीन॥ सहित चारु कुण्डल मुकुट गिरत बंधु शिर देखि। हन्यो सात्य किहि साठिशर बिंदभूप अति तेखि ॥ सोरठा ॥ अबनभागु इमि भाषि हन्यो सात्यकिहि बीसशर। सात्यकि जय अभिलाषि बिन्दहि मारेउ तीसशर ॥ चौपाई ॥ दोऊ विविध भांतिसों चरिचरि। बिरथ बिधनुष परस्पर करिकरि ॥ सादर खड्ग चर्म गहिगहि कै। अबमति भागु आउ कहिकहिकै॥ लरेशक्र वृत्रासुर जैसे। फिरि फिरि लरत भये तहँ तैसे ॥ तहँ सात्यकि अति विक्रम

कीन्हों । बधि विन्दहि अनुपमजय लीन्हों ॥ बिन्दभूप कहँबधि चारिपथपे । चढ़िगो युधा मन्यु के रथपै ॥ फेरि और रथवर पहँ चढ़िकै । केकय दलमर्दन भो वढ़िकै ॥ चित्रसेन श्रुतिकर्मा भिरिकै । घोर युद्ध कीन्हें तहँ थिरिकै ॥ वलिबासव समयोधा दोऊ । कीन्हें युद्ध लखे सबकोऊ ॥ श्रुतिकर्मा बरशायक तुरमें। मारेउ चित्रसेनके उरमें ॥ लगे बाण वेधित ह्वै नरपति । मूच्छित भयो भूलि सब धनुगति ॥ तेहिक्षणमें श्रुतिकर्मा राजा । बरषो अविरल विशिख समाजा ॥ चित्रसेन फिरिचेतित ह्वै कै । मारि भल्ल काट्यो धनु ज्वैकै ॥ श्रुतिकरमा गहि और शरासन। वर्षत भयो बाण अरिनासन ॥ दोऊ बधिबेको पणलीन्हे । दुहूं ओर शर पंजर कीन्हे ॥ मत्त मतंग सरिस रणवनमें । घोरयुद्ध कीन्हें तेहि क्षनमें ॥ वाण उपलकर धनुसों गाहिगहि । कियेप्रहार भागु मति कहिकहि ॥ दोहा ॥ श्रुतिकरमा अतिबेगसों युग क्षुरप्र शरमारि । काटि धनुष तेहि नृपतिको काटेउ शीश प्रचारि ॥ चित्रसेनको शीशसह मुकुट गिरत तेहिकाल । जानिपरे मनु सूर शशि लपटि गिरे महिपाल ॥ सोरठा ॥ श्रुतिकरमा रणधीर चित्रसेन भूपतिहि बधि । वरषत बाण गँभीर चमू तासु मर्दन भयो ॥ सोदल मर्दित देखिचलोइतैसों चित्रभट । तासों भिरो निरेखि वढ़ि उतसों प्रति बिन्ध्यभट ॥ बसुकला ॥ ते सुभट शुद्ध । करि घोर युद्ध ॥ भरिरुधिर गात । भे अति बिभात ॥ वढ़ि डाटि डाटि । धनु काटि काटि ॥ धनु धारि धारि । शर मारि मारि ॥ जय ऊटि ऊटि । हटि टूटि टूटि ॥ थिरुटेरि टेरि । रथ फेरि फेरि ॥ तन चाहि चाहि । शर बाहिबाहि ॥ कीन्हे अमान। संगर महान ॥ दोहा ॥ बहु घंटा युत शक्ति बर चित्र नृपति लै पानि । तजत भयो तौ पौत्र पहँ दपटि ब्यामभरितानि ॥ तोमर ॥ तेहि निरखि उलका रूप । प्रतिबिंध्य योधा भूप ॥ बर बाण तीक्षण बाहि । मग काटि दीन्हें ताहि ॥ तब चित्रनृप बल

मेलि । वरगदा मारेउ झेलि ॥ सोवध्यो अश्वन लागि । प्रति-
बिंध्यतव रिस पागि ॥ भो शक्तिवाहत बेश । तेहि पकरि चित्र
नरेश ॥ प्रतिबिंद भटहि प्रचारि । भो तजत नाश बिचारि ॥
प्रतिबिंध्य सहिसो शक्ति । भो तजत शायक पंक्ति ॥ दोहा ॥
अति बिक्रम तेहि ठौर करि मारि बज्र सम बान । चित्र नरप-
तिहि बधत भो भट प्रतिबिंध्य अमान ॥ यहि प्रकार पाण्डव
सुभट बधि बधि भट समुदाय । किये पराजित सैन मम भल्ल
शक्ति शरछाय ॥ सोरठा ॥ तेहिक्षण धीरधुरीन द्रोणतनय भिरि
भीमसों । कियोयुद्ध अति पीनजाहि प्रशंसे सुमन गण॥ चौपाई ॥
करिकरलाघव भीमअमाना । द्विजहि हन्यो अतितीक्षणबाना ॥
द्विजभट हनतभयो तेहि क्षनमें । नब्बे बाण भीमके तनमें ॥
सहसनबाण बिप्रके ऊपर । डारचो भीम सारथी दूपर ॥ बाणन
बाण अनगिने काटत । चरत चक्रसम बढ़िबढ़ि डाटत ॥ दोऊ
अगणितशर अनियारे । तकितकि दोउनके तनमारे ॥ दोऊबि-
बिध भांतिके घातन । कियेयुद्ध समता कहिजातन ॥ चापपाणि
नखसमशर सोऊ । रणबनलरे सिंहसमदोऊ ॥ करि बिक्रमगुणि
बिधि बधिबेकी । गहे भावना जय साधिबेकी ॥ दोऊ परमपराक्रम
करिकरि । रथ पहँ चपल चक्रसम चरिचरि ॥ अतिशय घोर
युद्ध तहँकीन्हें । जो लखि सुरगण बिस्मयलीन्हें ॥ द्रोणतनय
बरमंत्र घटितकै । गरजो दिव्य अस्त्र प्रगटितकै ॥ सोई यतन
भीम बिस्तारो । दिव्यअस्त्र अस्त्रनसों वारो ॥ करि करि दिव्य
शरनकी बर्षा । लरे उभय भट गहि उतकर्षा ॥ दोऊ बिदित वीर
बर चीन्हे । नभ महि बाणनसों मढ़िदीन्हे ॥ दोउनके हयसूत
सोहाये । भरे रुधिरसों अति छबिछाये ॥ दक्षिण बाम भाग फिरि
फिरिकै । लरे त्रिबिधबिधिसों भिरिभिरिकै ॥ दोहा ॥ यहि प्रकार
अति युद्धकरि क्षत्री बिप्र अमान । दोऊ दोउन कहँ हने अग-
णित तीक्षण बान ॥ दोउनके शरवरन सों बेधित ह्वै ह्वै धीर ।

मूर्च्छित ह्वैहहैं गिरतभे दोऊ अनुपम बीर ॥ सोरठा ॥ तिन्हैं अचेत निरेखि चतुर सारथी दुहुनके । सारथिविधि अवरेखि रथलै निजनिज दिशि गये ॥ तोमर ॥ भट पार्थ यश जय ऊटि । संसप्तकनसों जूटि ॥ वर वाण सवथर पूरि । वधिडारि योधाभूरि ॥ हय द्विरद अगणितमारि । भो देतमहिपै डारि ॥ पग शीशभुज कटिकाटि । महि दियो रुण्डनपाटि । धनुध्वजा शायक पक्ति । असि गदा पट्टिश शक्ति ॥ संसप्तकनके भूरि । करि खण्ड खण्ड अदूरि ॥ भो वधत योधा यूह । सरसैत साजि समूह ॥ शररुधिर को उमँगाय । भो लसतओज वढ़ाय ॥ अति प्रलयकालसमान । सो समय करि वलवान ॥ प्रभु रुद्रसम तेहिकाल । भो लसत वीर विशाल ॥ यह देखि सुमन बिनोदि । भे सुमनबर्षत मोदि । इमि कहतभे बहुबार । यह हरतहैं महिभार ॥ दोहा ॥ नर नारायण एक रथ चढ़े युद्ध पथ दीठि । अकथ तासु करतव्य समथ कौन लहै जय ईठि ॥ तोमर ॥ सो द्रोणसुवन निहारि । अति कोपि धनु टंकारि ॥ गहि गरव गरजि प्रचारि । भोकहत रिसि बिस्तारि ॥ हेपार्थ उनसों ऊटि । लरु आइ मोसों जूटि ॥ दरशाउ धनुबिधि तौन । फिरि सिखे इत उत जौन ॥ इमि भाषि तुरताधारि । भो हनत शायक चारि ॥ भोहनत जय अवरेखि । शर साठि कृष्णहिं देखि ॥ तव पार्थ हनि शर तीन । धनुतासु काट्योपीन ॥ धनु और तुरितचढ़ाय । द्विज दयो शायक छाय ॥ शततीन तीक्षण वान । हनि केशवहि सविधान ॥ फिरि पार्थभटके गात । करि सहस्र शायक पात ॥ फिरि कइक अर्बुद पत्र । सो बीर बर सो तत्र ॥ कर शीश उर प्रति अङ्ग । धनु ध्वजा रथसों सङ्ग ॥ कढ़ि शरनके समुदाय । तहँ दये जाल बनाय ॥ यह ब्रह्ममंत्र प्रसाद । ताकि लहे नृप अहलाद ॥ शरजालमधि परिपार्थ । नहिंसको करि निज स्वार्थ ॥ दोहा ॥ वाण जालमधि पारथहि करि गरजो मतिमान । सोसुनि केशवसों कह्यो पारथ वीर असान ॥ दुष्टविप्र

ममबध समुभि हर्षिकरतआह्वान । लखोताहि मैं करतहौं क्षण में मृतक समान ॥ सोरठा ॥ इमि कहि पार्थ अमान कर्षि शरासन वर्षि शर । द्विजके सिगरेबान काटि गिरायो भूमिपै ॥ चौपाई ॥ द्विजके बाण निहार समाना । दुरे सूर समपार्थ अमाना ॥ द्विज द्विजराजहि हतरवि करिकै । बाणजाल झरिआतप भरिकै ॥ संसप्तकवन प्रतापितकीन्हों । बहुभटशर जीवन बिन कीन्हों ॥ बहुरि बिप्र करिभट विधिपालन । लायो तेहिशर घनकेजालन ॥ फेरि बिप्र भटसों भिरि पारथ । वर्षोविशिखजाल गुणिस्वारथ ॥ तेयुग धनुधर बीर बड़ेरे । शिष्यपुत्र आचारज केरे ॥ घोरयुद्ध कीन्हे तेहि पलमें । प्रलयपूर पारे दुहुदलमें ॥ काटि असंख्यन शर महिपाटे । महिदिव लों शरपंजर ठाटे ॥ अर्जुन मारिबाण अति चोखो । काटि द्रोणसुतको धनुनोखो ॥ अतिशय करला-घव बिधिधरिकै । द्विजहि शरनमधि गोपित करिकै ॥ फिरिसंस-प्तकगणसों भिरिकै । बरषोशर जिमि घनजल थिरिकै ॥ अग-णित हय गज भट बधिडारो । अगणितरथ धनुध्वजा बिदारो ॥ अगणित अंगद मुकुट धनीके । अगणितकियो मारिशरनीके ॥ तौलगि द्रोणतनय धनुगहिकै । काटि पार्थकेशर फिरुकहिकै ॥ कृष्ण पार्थ तुरगनके तनमें । हन्यो असंख्यन शर तेहिक्षनमें ॥ पार्थ ताहि अगणित शर हनिकै । बर्षोबिशिख रुद्रसमबनिकै ॥ दोहा ॥ फिरतचक्रसम सुरथपहँ घूमि सुचक्र समान । धनुष म-ण्डलाकार करिबरषि असंख्यन बान ॥ मढ़िघनसम सबदिशन में अन्धकार अतिपूरि । बधतभयो ममसयनंकेहय गज योधा भूरि ॥ गहत तजत शर ताहिलखि सको न कोऊ तत्र । गुणै पार्थ इत तजतशर गिरै भूरिभट यत्र ॥ सोरठा ॥ तेहिक्षण बिप्र सुबीर पांचबाण कृष्णहिंहन्यो । पांच अनूपम तीर हन्योसव्य-शाचीभटहि ॥ तहँकेशव मतिमानकहे पार्थसोंबिप्रयह । अयतन ब्याधि समान पीड़ित तेहि जीतौ सबिधि ॥ चौपाई ॥ यह सुनि

पार्थ द्रोणसुन पाहीं । शरवर्षों कहि बाचत नाहीं ॥ काटिकाटि सव द्विजके शायक। धनुधर पार्थ विदित भटनायक॥ कर भुज उर शिर पगन अदोखे। हन्यो अनागिणे शायक चोखे ॥ रसी काटि घोरन के तनमें। मारो बाण युगुति गुणि मनमें॥ बेधित ह्वै हय भयसोंपागे । तजि सन्मुख पथ रथलै भागे ॥ तुरगन मारि विप्रभट दीहा। तजि अर्जुन सों रणकी ईहा॥ सादरगयो कर्णके दलमें। पार्थ बध्यो बहुभट तेहिपलमें ॥ तेहिक्षण पांडव दलमधिघोरा। हाहाधुनि भो उत्तरओरा ॥ सुनिकेशव अर्जुन सों भाष्यो। उत मगधेश विजय अभिलाष्यो ॥ दण्डनाम भूपति रणधीरा। है भगदत्त सदृश बरबीरा॥ गजारूढ़ सो नृप जगजेना। मर्द्दनवधत चतुर विधिसेना ॥ उतचलि ताहिमारि मुदभरिकै। संसप्तकन वधहु फिरिलरिकै॥ इमिकहि कृष्ण हांकि सत्र घोरे। गे मगधेशभूपके धोरे ॥ पार्थहि लखि मगधेश अमाना। भयो प्रहारत द्वादशवाना॥ कृष्णहि षोड़श शायक हनिकै। हयनहन्यो त्रयत्रय शर गनिकै॥ बाणवारि बूंदनकी बर्षा। कियो जलदसम गहि उतकर्षा ॥ दोहा ॥ काटिअसंख्यन तासु शर पारथ धीरधुरीन । छेदिधनुष गजवानकहँ बध्यो मारिशर पीन ॥ तब नरपति तोमरतजत अगरो गजहिबढ़ाय।हनिक्षुरप्र शर तासुशिर काट्यो पार्थ सचाय ॥ तोमर ॥ फिरि मारि अगणित बान।तेहि गजहि करि गतप्रान॥ जिमि मारि वृत्रहिशक्र। तिमिलसो योधा बक्र॥ तब बन्धु तासु अमान। धनुकरषि बर्षत बान ॥ अतिप्रवल योधागूढ़। बढ़िभिरो द्विरदारूढ़ ॥ वर तीनि तोमर तीर। भोहनत कृष्णहि बीर ॥ शर पांच पार्थहि मारि भो हनत धनु टंकारि ॥ तब शर क्षुरप्र प्रहारि। भटपार्थ ताकहँ मारि ॥ बधिगजहि महिपैडारि । भो लसत जिमित्रिपुरारि॥मम भटन बधि बिचलाय। निजभटन धीरधराय ॥ फिरिबधत भट समुदाय। संसप्तकन पहँजाय ॥ भो प्रलयपारत बीर। तो बन्धु

सुत रणधीर॥ भट द्विरद बाजि समूह। भो बधत तजिशर जूह॥ महिरुण्ड मुण्डन पाटि। भोनदत धनुविधि ठाटि॥ जे बिदित बीरसगर्ब। संसप्तकनकेसर्ब॥ मृगयूथ दावाबीच। जिमिलसे लहिनिज मीच॥ जे भये सन्मुख तासु। ते होत भे गतआसु॥ बड़बागि मुखपरिनाव। जिमिहोत है तेहि भाव॥ तहँकहेकृष्ण बिचारि। यहसैन सादरमारि॥ भट सूतसुतहै यत्र। तहँ चलो बर्षत पत्र॥ भटपार्थ सुनि यह नीति। संसप्तकन कहँ जीति॥ गांडीव धनु टंकारि। इमिकह्यो प्रभुहि निहारि॥ दोहा॥ अब प्रभुसादर हांकिरथ चलो कर्ण है तत्र। सो सुनिकै केशव चले रहो सूतसुत यत्र॥ मगमें लखिरणभूमि प्रभु बोले बचनअनूप। लखो पार्थ रणभूमि यह महा भयानक रूप॥ रोला॥ हेममणि-मय रजत बिरचित धनुषके समुदाय। कहूं करमें भटनके बहु-परे भटन बिहाय॥ कटेकरमें किते कितने कटेकै बहुकाय। परे कितने सहितज्याबहु बिगतज्या छबिछाय॥ स्वर्णपुंख अनेक शरके भेद भूपरभूरि। परेलोहित सांपसे सबगात शोणितपूरि॥ चर्मपट्टिश गदायष्टी परिघ शक्ति अनेक। भिन्दिपाल भुशुण्डि आदिक कहैं और कितेक॥ भरेशोणित परे महिपै सकल आ-युध भेद। धसेकितने भटनके तन देतदेखत खेद॥ पाणि में निजअस्त्र प्रबिशे गातमें परअस्त्र। मरेकितने सुभटमानों तजन चाहत शस्त्र॥ ध्वजाईषा चक्रजूवा छत्र चामरजूह। कटे फूटेफटे टूटे परे सुरथसमूह॥ शक्तिशर असिआयुधनसों कटेकर शिर-पाय। लखौ पारथपरे गज हय नरनके समुदाय॥ बहतिशोणित धारतनते सहित मज्जामेद। डकरि डकरि खबीस पीवत गहत नहिं निरवेद॥ सहितअंगद आदिभूषण परेअगणितबाहु। गहेधनुषा लसतमानों लरन चाहतराहु॥ पाणिदक्षिण परेअग-णित सहित अंगुलित्रान। पांचफणके व्यालमानहुं सुपत हैं मनमान॥ लसतशोणित मध्यदेखो चारुबदन अछाम। भारतीमें

मनोकानन कमलको अभिराम ॥ कवित्त ॥ केतेकरपग केते धर
विना करपग मणिनसों भूषे जगमगता तनोतहैं । कुण्डलकि-
रीटसों ललितशीश भूपनके परे जहां तहां करे सुषमा उदोतहैं ।
केतेअधोमुख केतेउरधकियेहैं रुखकेते अधमरे दुखभरे भू करो
तहैं । केतेघातवश मारोमरो मारुमारुटेरि हेरि इतउत फेरिका-
लवश होतहैं ॥ अपरं ॥ केतेशरशूल भल्ल पट्टिशकेलगेमरेत्रिकु-
टी भृकुटी अवलोकिवक्र करेहैं।शूरनकेशीशकेते चूरनगदाकेलगे
पूरन शशांकशंभू समय केसे धरेहैं । एक करकटे केते युगकर कटे
केते उदरके फटेडाट शत्रुनसों डरे हैं । घोरनके भुण्डमुण्ड बिना
सुण्डके वितुण्ड कटे कौंच कुण्डकेतेरुण्डमुण्डपरे हैं ॥ दोहा ॥
गृध्रश्येन अरु काकगण ऊर्ध चलतगहिश्रांति । नभनापतहैंखग
मनहुं गहि जरीवकी पांति ॥ यहिप्रकार कै मेदिनी भई भयावनि
पर्म । दुर्योधन मति भरसके पाप करमके कर्म ॥ परिघ गदा अ-
गणित परेकटे कठिनको दण्ड । अंगदादि भूषणभरे कटेपटे दोर्द-
ण्ड ॥ दण्डपरिघ उदण्डदद्रिघ अखण्डडटिडटि । चण्डउच्चल
सुउमण्ड बलदोर्दण्ड कटिकटि ॥ भण्डधर दोर्दण्ड कटिबर भ-
ण्ड धरिधरि । मण्डच्छवि सुवितण्ड तजिछल छण्डतपरिपरि ॥
अपरं ॥ धरधरपित अगणित परे मारेडरे तुरंग । अंगभंग अग-
णित परेसहित सवारमतंग ॥ तंग परणिअशङ्क धरणि अरंक
गतिवही । पङ्कभरणि श्रूक करणि ध्रुकगतिलही ॥ लककट नी-
च्छु रकड़ डटनी शशङ्क शरवर । रागाच्छरणी बैराग्य करणी
विभागा वर धरा॥ अपरं॥ युत जमाति अगणित लसै जम्बुकादिके
भुण्ड।गृध्रश्येन काकादि द्विजबिलसत सामिषतुण्ड॥तुण्डतरल
वितुण्डपरलविशुण्डबहुगज।शुण्डकटि हय भुण्ड मरिपरितुण्ड
ददतिमज ॥ रुण्डवरयुत मुण्डधर बहुलुंढढादितउत । मुडडबहु-
त वितुण्डड बहुशिरकुण्ड वरयुत॥ अपरं ॥मनुजभरी भीषम महा
लखिन जाति दे अच्छ । मेदमांस मज्जा रुधिर कीचमई महि

अच्छ ॥ नृप जेहि लच्छम्भट रहिर रक्षदनुक्षिन । पक्ष सहित समच्छज्जहित बिलच्छ दे दहिदिन ॥ दक्षधनुधर म्लेच्छगण तन तच्छि तिमि गनु । मच्छबर अरु कच्छपर साति कक्षम्मधिमनु ॥ कलशाछप्पै ॥ घायल किते अबोलपरे प्रतिद्वंदहि हेरत । कितनेभये अडोल बैठि प्रतिबादिहि टेरत ॥ शेषप्राण भट कितेपरे प्रतिद्वंदिनि गहिगहि । किते पालि भट रेखपरे प्रतियोधहि जहि जहि ॥ लखुपारथ कितने प्रवलभट प्रतिद्वंदिन गहिगहि भिरत । लरि लपटि लपटि दटि दपटि रटि रपटि रपटि लटि गिरत ॥ दोहा ॥ गृध्रश्येनबायसबिहग ऊर्द्धचलतगहिभ्रांति । नभ नापत हैं खगमनहुं गहि जरीबकी पांति ॥ यहि प्रकारते मेदिनी भई भयावनि पर्म । दुर्योधन मति भरमके पाय करमकेमर्म ॥ तोमर ॥ इमि करत बार्त्ता बीर । गे करण दलके तीर ॥ तहँ पार्थरिसि विस्तारि । गाण्डीव धनु टङ्कारि ॥ तकि भूपको दल चण्ड । बढ़ि भिरोभट उद्दण्ड ॥ लखि घनो घन जेहिभाय । चलि भिरेमारुत धाय ॥ दोहा ॥ तेहिक्षण पांड्य महीप भट अर्जुन सम रणधीर । शर बर्षत मम सैनमधि धसत भयो रणधीर ॥ सब कुन्तल बाह्लीक गण भोज पुलिन्द निषाद । आदि भटनमर्दत चलोजहँ हो कर्ण सुनाद ॥ शर बर्षत मर्दत भटन पांड्यहिजात निरेखि । द्रोणतनय बढ़ि आड़ि इमि कहत भयो अवरेखि ॥ बज्र सदृश मम शरनकी बर्षासहि यहिकाल । थिरि भिरिमोसों युद्धकरु जात कहां क्षितिपाल ॥ सोरठा ॥ यहसुनि भूप सगर्ब कियो बिप्रपहँ बाण झरि । सहि बराय सो सर्ब बिप्रताहि बहुशर हन्यो ॥ चौपाई ॥ पांड्य सुबाण क्षुरप्र प्रहारी । काटौ तासु धनुष अतिभारी ॥ तुरित चढ़ाय धनुष अभिरामा । शायक बर्षो अश्वत्थामा ॥ अति करकश कर लाघव लीन्हों । नभ बाणनसों पूरित कीन्हों ॥ तहां पांडयअति तुरिता धरिकै । मंडल सरिस शरासन करिकै ॥ शर सों काटि असंख्यन शायक । द्विजहि प्रचारि विदित भट नाय-

क ॥ युगभटतासु चक्र रखवारे । तिन्हैं तीनिशत बाण प्रहारे ॥
लखि नृपको करलाघव ऐसो । द्रोण तनय करि बदन अनैसो ॥
आठ आठ नृपभन से वाहित । आठ सकत आयुध चितचाहि-
त ॥ द्रोपघरी महँनृप पहँ बरसो । जलद समान बाणप्रद सरसो ॥
पांडय भूपमो लखिगुणि मनमें । तजि वायव्य अस्त्रतेहि क्षनमें ॥
सिगरे बाण विप्रकेडारे । सबके लखत व्यर्थकरि डारे ॥ सोलखि
कोपितविप्र धनु करष्यो । नृपको धनुष काटिशर बरष्यो ॥ चारि
बाणसों तुरगन हतिकै । सूतहि बध्यो जीतिसों रतिकै ॥ करि
सबखंड रथहि अनिरोखो । काट्यो केतु मारिशर चोखो ॥ बध्यो
न नृपहि राखिरण ईहा । द्रोण कुमार बिदित भट दीहा ॥ भूप
तुरित तेहि रथसों कढ़िकै । भिरोमत्त मैगल पर चढ़िकै ॥ दोहा ॥
जृम्भा शक्र समानतहँ भिरेते सुभट अमान । घोरयुद्ध कीन्हें
महा वर्षि असंख्यन बान ॥ शरन वारि शरमारि शर गराजि प्र-
चारि प्रचारि । भरे रुधिर शोभित भये बाण प्रहारि प्रहारि ॥
सोरठा ॥ तेहिक्षण वीर अचार्य्य प्रगट अचारयपणो करि । गुनि
अपनो रणकार्य्य गजहि बध्यो बहु बाणहनि ॥ युगबर बाण प्र-
हारि युगभुज काटे नृपति के । हनिशर चौदह चारि हते नृपति
के अनुज सब ॥ फिरि क्षुरप्र शर मारि काटि शीश नृप पांडय
को । दीन्हों महिपैडारि शोभित कुण्डलमुकुट सह ॥ गुरुतोमर ॥ जिमि
काठ सृतक जरायकै । जन पाणिजल भरि पायकै ॥ बुझिजात
अनल समानको । जिमि पांडयनृप बरसानको ॥ बहुबाजि गजभट
मारिकै । दलमध्य प्रलय पसारिकै ॥ भट बिप्रके शर धार सों
बधिगयो बीर अपारसों ॥ माहिखरी ॥ तहँदेखि बध निज सुपति
को भट तासु सब अति भय पगे । करिघोर हाहाकार धुनि रण
त्यागि निज दल दिशिभगे ॥ सोदेखि अर्जुन भीम सात्यकि
आदि भट अमरष भरे । करि घोर विक्रम जूटि इतके भटनसों
अतिरणकरे ॥ तिमि कर्ण कृप द्विज तनय शल्यहि आदिइतके

भटघने । भिरि पांडवन के भटन सोंअतियुद्धकीन्हे रिससने ॥ तहँ मारु मारो मरो मारो मारु धुनि नभ भरिरही । जो लखेहम तेहि गैरसो सब जातनहिं यहिथर कही ॥ दोहा ॥ तोमर पट्टिश शक्तिशर भल्ल परश्वध और । खड्ग आदि आयुध मढ़े देखि परे तेहिठौर ॥ रथ हयते अरु गजनते गिरत सुभट गत प्रान । गज हय पैदर कटिगिरत देखि परे नहिं आन ॥ सोरठा ॥ राम राम सियराम कहि गहिसिगरे सुभट तहँ । चाहि अपूरब धाम किये घोर संग्राम भिरि ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेकर्णपर्वणिद्वितियोऽध्यायः २ ॥

धृतराष्ट्रउवाच ॥ दोहा ॥ पांड्यनृपतिको देखि बध कोपि लरेकिमि पार्थ । सो सुनिबो हम चहतहैं संजयभाषु यथार्थ ॥ संजयउवाच ॥ सुनो भूपतेहि क्षण तहां कर्ण धनुर्द्धर धीर । बाण बर्षि पर सैन मधि पारो प्रलय गँभीर ॥ चौपाई ॥ रथी पंचदश बिक्रम अतिके । बधत भयो पाञ्चाल नृपातिके ॥ अगणित हय गज भट बधि पलमें । रुधिरधार ढारो परदलमें ॥ लखि सहदेव नकुल धनु-धारी । सात्यकि द्रौपदेय रणचारी ॥ धृष्टद्युम्न भट सेनानायक । चले कर्ण पहँ बरषत शायक ॥ सोलखि इतके प्रबल सुयोधा । बढ़ि तिनको कीन्हे अवरोधा ॥ माचो घोरयुद्ध तहँ तिनसों । पृथक् पृथक् कहि निबरै किनसों ॥ तोमर भल्लशक्ति शरछूरे । भिन्दिपाल चलि दुहुंदिशि पूरे ॥ मूशल गदा भुशुण्डी आदी । आयुध छांड़न लगे प्रमादी ॥ अशनि सरिस अहिबाहनलागे । बधि शत्रुनजय चाहन लागे ॥ लागेगिरन भूरिभट भिदि भि-दि । गिरैं उठैं कितने महि छिदि छिदि ॥ हयगज रथते योधा मरिमरि । लागे गिरन रुधिर सों भरि भरि ॥ मारण मरण लगे भट बढ़ि बढ़ि । मारोमरो मारुधरु पढ़ि पढ़ि ॥ मारैं रथी रथिनसों भिरि भिरि । लरैं पदाति पदाती थिरि थिरि ॥ गजीगजी तेहि बिधि हयसादी । लागेमारण मरण

प्रमादी ॥ दुर्योधनको लहि अनुशासन । अंगबंग मागध अरि नाशन ॥ मेकल कोशलनाथ निषाधा । गजदल साहित अमंद अवाधा ॥ शरजल वर्षतघनसम फैले । धृष्टद्युम्न पहँ चले उतै-ले ॥ तिन्हैं देखि सेनापति कोपो । बधिबिडारि जययश कहँ चो-पो ॥ दशदश आठआठ अनियारे । शायकप्रति मेगलन प्रहारे ॥ किरणि समान बाण सहिताके । गजगजस्थ भट अतिममताके ॥ घन सम बढ़िगुणि जययश ओपन । चाहेताहि सूर ममलोपन ॥ कितने द्विरदमानवन धरिधरि । मर्दतभये चरण तरकरिकरि ॥ कितने गज दांतन सोंमारैं । कितने गहिऊरध उलभारैं ॥ कितने शुण्डन सों करि गहिगाहि । मारैं भटनसामने लहि लहि ॥ कितने शर पीड़ित भयभारैं । मुखमें कर कुण्डल करिडारैं ॥ कितने शीश उकाढ़े करिकै । ठाढ़ेरहे क्रोधसों भरिकै ॥ अति अंकुश अँगुठाके प्रेरे । अगरि जाहिं परभटकेनेरे ॥ तिमि गजस्थ भट आयुध बरषैं । प्रतिबादिन बाधि बधि अति हरषैं ॥ कितने प्रतिबादिनके मारे । गिरैं यथातरुतेफल मारे ॥ तेहिक्षण नकुल सात्यकी बीरा । द्रौपदेय सहदेव सुधीरा ॥ चेकितानअरु सुभट शिखण्डी । शर बर्षत सहसेना चण्डी ॥ प्रबल बायु बारिदसों जैसे । भिरैंभिरे गजदलसों तैसे ॥ दोहा ॥ शरझर कीन्हे गजन पहँ यहिविधि ते रणधीर । उमड़ि घुमड़ि जिमि गिरिनपहँ नीरद बरषैनीर ॥ गजबढ़ाय अति बेगसों अंगदेशको भूप । सात्यकि के सन्मुखभयो बर्षतबाण अनूप ॥ सोरठा ॥ सात्यकिबीर अमान हन्यो द्विरदके मर्मथल । शायक बज्रसमान तासोंभिदि गज गिरतभो ॥ चौपाई ॥ गजहि गिरत गुणिभूप अमाना । कूदन चहो मारिबरबाना ॥ तौलागि सात्यकि शर अनियारो । अंग भूपके उरमाधि मारो ॥ बेधित क्रैसो भूपति मरिकै । शोभितभयो भूमिपै परिकै ॥ पुंड्रभूप तिमि गजबर भेवहि ॥ चलो बढ़ाय निरखिसहदेवहि ॥ तब सहदेव बर्षिबर बानहि । ध्वजकाट्यो

बांधिकै गजवानहि ॥ तऊ अंग नृपसत दृढ़ घायक । माद्री सुत पहँ बर्षो शायक ॥ तेहि क्षण आय नकुल तहँ आसू । शतशर सों वेध्यो गज तासू ॥ सो शर सहस नकुल पहँ डारो । नकुल ताहि बाणन सों बारो ॥ ताज क्षुरप्र शायक धनु बरसों । दीन्हीं काटि तासु शिर धरसों ॥ शर हनि काटिदियो शिर तासू । महि पै गिर्यो बीर नृप आसू ॥ यमन जनक सुत नृपको मरिबो । लखि सबभट गुनि अनरथ करिबो ॥ मेकल उतकलपति नरनाहू । अरु निषाद नृप दीरघबाहू ॥ वली ताम्रलिप्तक भट गाढ़े । अरु कलिंग भट सिंहउ काढ़े ॥ नकुल बीरसों भिरे प्रचारी । बर्षत बाण बितरि अँधियारी ॥ सोलखि पांडव भट रिस पूरे । तिनसों भिरे बर्षिशर रूरे ॥ सोमक अरुपांचाल प्रबीरा । बढ़ि बढ़ि भिरे बिदित रणधीरा ॥ रथी गजरथनसों तेहिपलमें । माचो घोर युद्ध वहि थलमें ॥ सात्यकि आदि बीर सब उतके । बर्षि बर्षि शर अति अय युतके ॥ इतके शरन काटि बिरु बांकि बांकि । हनिहनि बाण मर्मथल तकि तकि ॥ कर पग उरधर कुम्भ बिदारी । बधे असंख्यन गज रणचारी ॥ मारि असंख्यन भटं बल ओकन । भेजिदेत भे ऊरध लोकन ॥ प्रलय पूरपूरितकरि छाजे । काल करालसरिस तहँ राजे ॥ बधि बिचलाय द्विरददल भारी । मर्दन लगे सैन रणचारी ॥ बर्षा नदी कूलजिमि तोरति । जल प्रबाहसों तृणबन बोरति ॥ दोहा ॥ ममदल मर्दत प्रबल अति भल्लशक्तिधर छाय । चले कर्णपहँ बेगसों पांडव भट समुदाय ॥ निजदल दाहत देखिकै सहदेवहि तेहि काल । रथबढ़ायकै भिरतभो दुश्शासन दलपाल ॥ सोरठा ॥ बलसों धनु टंकारि बढ़ि अविरल शरसेतुरचि । अति तीक्षण शरचारि सहदेवहि मारत भयो ॥ तोमर ॥ तब गरजि भट सहदेव । बढ़ि प्रगट करि भट भेव ॥ तो सवन भटके गात । हनि साठिशर अवदात ॥ शरतीनि सूतहि मार । भानदत धनु टंकारि ॥ तो तनय धनुविधिडाटि ।

धनु तासु शरसों काटि ॥ करि सविधि शर सन्धान । भो हनत सत्तरि बान ॥ तब खड्गगहि धनु त्यागि । सहदेव अरि बधलागि ॥ तकि वेगसों तेहि झेलि । वरवीर विधिसों केलि ॥ तो पुत्र को कोदण्ड । करि देतभो युगखण्ड ॥ दोहा ॥ काटि धनुषफिरि धनुष गहि हन्यो वज्रसम बान । सो शर काट्यो खड्गसों तासुतवीर अमान ॥ बाण काटि तजि खड्गसों गहिधनु करि सन्धान । दुश्शासन सहदेव पहँ डार्‌यो चौंसठिबान ॥ सोरठा ॥ एक एकमें बान पांच पांचहनि निमिषमें । भट सहदेव अमान काटि गिरायो भूमिपै ॥ चौपाई ॥ बाणकाटि तुरता बिस्तार्‌यो । अगणित शरतो सुतपहँ डार्‌यो ॥ तीनि तीनि शरसों सबशायक । काटिदयो तो सुतभट नायक ॥ सबशर काटि बाण नव गनिकैं । गरजो तासु सारथिहि हनिकै ॥ तब पाण्डव अतिशै रिसिधार्‌यो । कालदण्ड समबाण प्रहार्‌यो ॥ बेधि कवच कढ़ि महि मधि धसिकै । सोशर लसो उरगसम बसिकै ॥ अति बेधितह्वै हाधुनि करिकै ॥ रथपहँपरो मोहसों भरिकै ॥ नृप तो सुतहि अचेत निहारी । रथलै भगो सरस रथचारी ॥ इबिधि दुशासन सों जय लहिकै । भट सहदेव प्रबलता गहिकै ॥ सुरथ बढ़ाय बीर रसपागो । सैनकौरवी मर्दनलागो ॥ भयो तहां अति तेखी तेखा । नकुल कर्णसों देखीदेखा ॥ सुरथ बढ़ायसुधनु टंकारी । नकुल कर्णसों कह्यो प्रचारी ॥ बैर कलह अनरथ करमूला । तूशठपाप बुद्धि अनुकूला ॥ तो मतको फल लहि कछु दिनमें । कौरव नशत बसत तूजिनमें ॥ अब बधितोहिं भेजियमलोकहि । करिहौं दूरिहियेके शोकहि ॥ यहसुनि सूत सुवन हँसिभाष्यो । राजपुत्र नीको अभिलाष्यो ॥ अब लखाउ निज पौरुषमोहीं । जातसुभट गुणोंमें तोहीं ॥ लरि करिविक्रम लहि मम समता । तब इमि बचन भाषु गहिममता ॥ बीर करै विक्रम नहिंभाषै । कादर जलपि बिजय अभिलाषै ॥ इमिकहि

सूतसुवन बलवाना । नकुलहि हन्यो तिहत्तरि बाना ॥ तहां न-
कुल अति तुरता लीन्हो । असी सुबाण तासु तनदीन्हो ॥ का
टिनकुलको धनुतेहि क्षणमें । सूतजहन्यो तीसशर तनमें ॥ तु-
रितहि नकुल और धनुगहिकै । सत्तरि बाणहन्यो थिरुकरिकै ॥
सूतहि तीनि सुबाण प्रहारी । काट्यो धनुषमारि शरभारी ॥
दोहा ॥ धनुषकाटि शरतीनि शत कर्णहि हन्यो प्रचारि । तुरित
कर्ण धनुओर गहि ताहिहन्यों शरचारि ॥ नकुल तानि शर-
सात हनि फिरिकाट्यो कोदण्ड । तुरितकर्ण धनु आनगहि ब-
रष्यो बाण उदण्ड ॥ सोरठा ॥ तिमि पाण्डव बलवान बरसोशा-
यककर्ण पहँ । दोऊबिदित अमान गगन शरन छादित कियो ॥
चौपाई ॥ दोऊ बाण बर्षितेहिथरमें । दोउन कियो बाणकेघरमें ॥
दोऊसुभटभरे अतिरिसमें । अगणित सैन बधे दुहुदिशिमें ॥
दोऊ बिबिध भांति सों चरिकै । सुरन किये बिस्मित अतिल-
रिकै ॥ दिव्य अस्त्रके बिदित विशारद । दोऊ शत्रु सैनके भा-
रद ॥ दिव्य अस्त्र छादित करिदीन्हे । दिव्य अस्त्र सों वारण
कीन्हे ॥ तहांकर्ण अतिधनुविधिठाट्यो । शरहनि धनुष नकुल
को काट्यो ॥ फिरि हनिबाण सारथिहि हतिकै । तुरगन बध्यो
चपलता अतिकै ॥ तब पाण्डव गुरु गदा चलायो । ताहिकाटि
सूतज भट गायो ॥ शरसों काटिअंग सबरथके । बध्योचक्र रक्षक
रणमथके ॥ तबगहि खड्ग चर्म रथ तजिकै । नकुल कर्ण पहँ
चलो गरजिकै ॥ बर्षि बाण सूतज प्रणधरिकै । खड्ग चर्मयुग
शतधा करिकै ॥ अगणित बाण नकुलके तनमें । हन्योननकुल
गुन्योकछु मनमें ॥ सिंहचलै मैगलपै जैसे । बलसों चलोकर्णपै
तैसे ॥ सोलखिकर्ण बारबहु हँसिकै । रथसों कूदि बेगसोंगसिकै ॥
जाय नकुल के ढिगअति बलसों । डार्यो धनुषग्रीवमें कलसों ॥
यथा गारडू मंत्रन नहिकै । गहै कुपित व्यालहि थिर रहिकै ॥
दोहा ॥ धनुष मध्य इमि कर्णको आनन भयो बिभात । यथा बि-

पम परिवेष मधि पूरणशशि अवदात ॥ धनुपिंजर माधि डारि गहि नकुल केहरी और । हँसि हँसि सूतज हनतभो बचन शक्ति गंभीर ॥ लघु बिक्रम तू मोहवश कत मम सम्मुख आय । ह्वै गाहक जय अलभको नाहकभयोसहाय ॥ सोरठा ॥ अबमैं बधतन तोहि तोजननीको वचनगुणि । निजसमयोधाजोहि लरेहु मानि सिखजाहुफिरि ॥ श्रुती ॥ इमिभाखिकै । प्रणराखिकै ॥ तेहि त्यागिकै । मुद पागिकै ॥ फिरि आइकै । छबिछाइकै ॥ सुत सूतको । हित धूतको ॥ दोहा ॥ कर्णफेरि चढ़ि सुरथपै कर्षि कठिनकोदण्ड । मर्दन भो पांचालदल बर्षिबाण यमदण्ड ॥ मंत्रितह्वै रहि कुम्भ मांधि निछुटो उरग समान । व्रीड़ित निजदल बिवरमधि गयो नकुल बलवान ॥ भुजंगप्रयात ॥ बलीवीर बीरानमें बीरबाको । धरे धीर धीरानमें जासुसाको ॥ चलोजीति माद्रीसुतै भूरिभेखो । जितै आलपञ्चालको जालदेखो ॥ डरैडारि टंकार कोदण्डभारी । लगोबाण डारैबिडारैबिचारी ॥ ननर्दै लगो यूथमर्दै निदर्दी । यथा चालिबर्दै भुअर्दै कपर्दी ॥ सोरठा ॥ तब युयुत्सु कहँ देखि निज दल मर्दत तेहिसुमय । भटउलूक अतिलेखि भिरत भयो वर्षतबिशिख ॥ चौपाई ॥ बाढ़ियुयुत्सु तेहिबहु शरमारो । सोकढ़ि तेहिबहुबाण प्रहारो ॥ तहँउलूक करलाघव करिकै । काट्योतासु धनुष प्रण धरिकै ॥ तुरित युयुत्सु और धनु गहिकै । हन्यो साठि शर थिरु थिरु कहिकै ॥ हन्यो उलूकबीस शर ताही । सो तेहि हन्यो पांच शर चाही ॥ यहि प्रकार ते युगभट भिरिकै । घोरयुद्धकीन्हे तहँथिरिकै ॥ तहँउलूक अतितुरतालीन्हो । तासु सारथीको बधकीन्हो ॥ तुरगन बध्योमारि बहु शायक । तबरथ त्यागिभगो नरनायक ॥ इबिधि युयुत्सुहि जीति ननर्दत । भयो उलूक शत्रुदल मर्दत ॥ शतानीक सोंभिरितेहि शर्मा । महाराज तो सुन श्रुतिकर्मा ॥ काटिधनुष सब तुरगन हतिकै । बर्षीबिशिख पराक्रम अतिकै ॥ ह्वै तहँ बिरथ सुतनय नकुलको । तज्यो

गदा नाशन अरिकुलको ॥ तो सुतके रथपै सो परिकै । तुरग सूतरथ भस्मित करिकै ॥ राजतभई भूमिपै तैसे । पन्नगराज बमत बिषजैसे ॥ तब श्रुतिकर्मा चरिमहिमाहीं । गयो बिबिंशत के रथपाहीं ॥ गो प्रतिबिंध्य भूपकेरथपै । शतानीक योधा चरि पथपै ॥ भूपति यहिप्रकार सब थलमें । माचोघोरयुद्ध तेहिपल में ॥ दोहा ॥ गर्जिगर्जि भिरि शकुनि अरु बिदित बीर सुतसोम । इबिधि लरे जो लखिभये खरे सुरनके रोम ॥ बर्षि बर्षि शायक निकर काटिदये शरजाल । अगणित शर दोउन हने दोऊ बीर बिशाल ॥ सोरठा ॥ अति लाघव करितत्र नृप मामा तो सुतन को । मारि अनगिने पत्र तासु सूत तुरगन बध्यो ॥ गुरुते मर ॥ सुत सोमओज बढ़ायकै । रथत्यागि महिपै आइकै ॥ अतिचपलता गहिचावसों । चरिदक्षताके छावसों ॥ जिमि जलद जलगिरि देश पै । तिमिबाण शकुनि नरेशपै ॥ नृपभयोबर्षत टेरिकै । सुरमुदित भेसो हेरिकै ॥ तब शकुनि ताहि प्रचारिकै । बरभल्लबाणप्रहारिकै ॥ सुत सोमको धनु काटिकै । भो लसत धनुबिधि ठाटिकै ॥ सुत सोमसो धनु डारिकै । असिचर्म अनुपम्म धारिकै ॥ गहिपै तरे सब ठौर के । जे गौरताके डौरके ॥ भो काटि देत सुभेशके । सबबाण शकुनि नरेशके ॥ नृप शकुनिसों गति चाहिकै । बरशार क्षुरप्रहि बाहिकै ॥ भोकाटि देत सुभूपकी । सो खड्ग अद्भुतरूप की ॥ तबभूप अतिबलमेलिकै । अरध असिसों भेलिकै ॥ धनु काटि शकुनि अमानको । गहिडौर सुभट बिधानको ॥ शतकीर्त्ति के रथ जायकै । भोलसत ओज बढ़ायकै ॥ तेहि समय नृपपर सैनमें । शर शकुनि के रणऐनमें ॥ भेलसत जिमि बनचारिको । बहुबुंद बर्षित बारिको ॥ दोहा ॥ कृपाचार्य्य सोंभिरतभो धृष्ट- द्युम्न सैनेश । अति बिक्रमतहँ करतभो कृपाचार्य्य भटवेश ॥ कृपाचार्य्यके शरन सों ह्वै छादित भिदगात । लघुबिक्रमह्वै जातभो सुभट मषान लजात ॥ भुजंगप्रयात ॥ कृपाचार्य्यको देखि

के तेजपूरे । यथा कालकल्पांतको क्रुद्धकूरो ॥ इतैके सबैबीर आनंद आने । बलीधृष्टद्युम्नै बध प्रायजाने ॥ गहे द्रोणके घात को क्रोध भारी । लसो आर्य्य आचार्य्य आचार्य्य कारी ॥ न-मारे बिना आजु तौ ताहि छाड़े । बलीको उतै बीरजो याहि आड़े ॥ दोहा ॥ इविधि परस्पर कहतभे इतके सिगरे बीर । धृष्टद्युम्न कहँ बधतहै आजु विप्र रणधीर ॥ मोहित निज स्वा-मिहि निरखि बोलो सूतबिचारि । शिथिलपराक्रम होइकत ल-हनचहतहौ हारि ॥ धृष्टद्युम्न सों सुनिकह्यो लहिद्विजको शर पात । हम न पराक्रम करिसकत बेधितह्वै सबगात ॥ तातै धीरेफेरिरथ चलोभीम जेहिठौर । सुनत सूतरथहांकिगो जहां भीम भटमौर ॥ कृतबर्मा क्षितिपाल अरुसुभट शिखण्डीजूटि । घोर युद्ध कीन्हें तहां सुजय परस्परऊटि ॥ सोरठा ॥ दोऊ सुभट अमान वर्षि बनदसम बाणबन । किये कठिन घमसान भूप न कहिबे योगसो ॥ दोऊ बेधितगात शोणितके धारनभरे । रथ-पहँभये बिभात सजल कुम्भ बहु छिद्रजिमि ॥ चौपाई ॥ बज्रस-मान बाणबरपर्मा । हन्यो शिखण्डिहि नृपकृतबर्मा ॥ तासों बेधितह्वै तेहि क्षणमें । भयो अचेत शिखण्डी रणमें ॥ सो लखिसूत शोचसों पागो । तुरगण फेरि सुरथ लै भागो ॥ इनयुग बंधुन बिचलतदेखी । बिकलभये पर भट अवरेखी ॥ भूपतिसुनो पार्थतेहि पलमें । प्रलय पसारतभो ममदलमें ॥ सो लखि इतके नृपअरिजेना । भिरतभये बढ़ि बढ़ि सहसेना ॥ स-त्यसेन अरु सो श्रुतिराजा । चित्रसेन नृप सहित समाजा ॥ नृपति मित्रबर्मा रणचारी । मित्रदेव भूपति धनुधारी ॥ नृपति सुतंजय दीरघबाहू । चन्द्रदेव बरणो नरनाहू ॥ शिव पत्रिगर्त शाल्वगणरूरे । अरुसंसप्तक अमरषपूरे ॥ बर्षतबाणपार्थसोंतैसे । भिरे असुर सुरपति सों जैसे ॥ तहांपार्थ अतिधनु बिधिठाट्यो । सबके बाण असंख्यन काट्यो ॥ सबके गातबाण बहुमार्यो ।

अगणित भटन भूमिपै डारयो ॥ शत्रुंजय कहँ यमपुर दीन्हो। सो श्रुतिको धर बिनुशिर कीन्हो ॥ बध्यो चन्द्रदेवहि हनिशायक। धीरधुरीण पार्थ दृढ़घायक ॥ पांचपांच शायक अनियारे। हनि हनि इतर नृपन कहँमारे ॥ दोहा ॥ सत्यसेन क्षितिपाल तहँ करि लाघव तेहिकाल। कृष्णचन्द्रके भुजनमें तोमर हन्यो बिशाल ॥ बांहबेधिसो कढ़िगयो करते गिरोप्रतोद। सो लखिबोले पार्थइमि पूरित बीरबिनोद ॥ सोरठा ॥ गहिप्रतोदरथहांकि सत्यसेनपहँचलहुप्रभु। देतशरनसों फांकि तासु शीशसरदा सरिस ॥ चौपाई ॥ इमिकहि पारथ सत्यपरनको। करिअविरल सन्धान शरनको ॥ काट्यो सत्यसेनके शीशहि। व्यथितकियो तौ सुतअवनीशहि ॥ बहुरिमारि शायकबररूपहि। बध्यो मित्रबर्मा बर भूपहि ॥ मण्डल सदृश धनुष करिचरिकै। मित्रसेन कहँ बिरथीकरिकै ॥ सहसन संसप्तक भटहतिकै। बिलसतभयोजीति सोरतिकै ॥ अस्त्रऐन्द्रहि प्रगटित कीन्हों। प्रलयकाल रोपित करिदीन्हों ॥ राजपुत्र क्षत्रिनके धरसों। पाट्यो भूमिकाटिशरबरसों ॥ कुण्डल अंगद हार अदूषण। मणिमय मुकुट आदि बरभूषण ॥ सहितपरे कर शिरधररूरे। रुधिरभरे अति सुखमा पूरे ॥ लसत भये तहँ मणिगण तैसे। अरुण गगन मधि उडुगण जैसे ॥ धनुरथध्वज तुरगनकी राजी। काट्योप्रगटि धनुष बिधि ताजी ॥ अगणित गज बधिहरि महिभारा। प्रगटित कियो रुधिरकी धारा ॥ शक्ति बाण असि भल्लगदादिक। आयुधजितने तजेप्रमादिक ॥ सोसबकाटि पार्थरणधीरा। पलमें बध्यो असंख्यन बीरा ॥ बाणजाल सबरथ मढ़ि दीन्हों। प्रलय काल आरोपित कीन्हों ॥ बाण धनुषसों जे जहँलाये। ते तहँभयेकालके खाये ॥ शरधनु सहित गिरेकर तिनके। गिरेगदा सहबाहु अगिनके ॥ सोलखि एकहि बचत न जाने। तजिसाहस हतशेष पराने ॥ तिनकहँ जीतिपांडु हरिशावक। लस्यो बिधूम

लसै जिमिपावक ॥ तेहिक्षणधर्म भूपतिहिदेखी । दुर्योधनभूपति अवरेखी ॥ बर्षत बाण धनुष टंकारत । चलो युधिष्ठिर नृपहि प्रचारत ॥ सो लखिहरषि धर्म नरनायक । भिरो भूपसों बर्षत शायक ॥ प्रबलधनुर्द्धर दोऊभाई । नृपकीन्हें तहँ तुमुललराई॥ नवशायक अतिशय अनियारे । दुर्योधननृप धर्महि मारे ॥ दोहा ॥ अतिक्रोधित ह्वै धर्मनृप तकि तकि तेरहवान । चारिबाण सों बधत भो चारोंतुरग अमान ॥ रथिसूतहि ध्वज काटिफिरि काटि धनुष तरवारि । दुर्योधनके तनहन्यो शायक पांच प्रचारि ॥ सोरठा ॥ त्वरितत्यागि रथतौन भूपखरो भो भूमिपै । सो लखिकरि तहँ गौन घेरिलये कृप आदि भट ॥ उत भीमादिक बीर घेरि युधिष्ठिर भूपतिहि । बर्षनलागे तीर इत इतके उत शर घने ॥ भुजंगप्रयात ॥ किते शक्ति मारैं किते भल्ल डारैं । किते बाण धारैं चहूंओर ढारैं ॥ किते तोमरैं औ गदायष्टि ह्लालैं । किते पाट्टिशै औतजैं भिण्डिपालैं ॥ भिरैंनामलैलै तजैंबाणक्रूरे । घनेआयुधै के घने जालपूरे ॥ रथी अश्वसादी गजी अश्वसादी । भिरे त्यों रथी औ रथी औ प्रमादी ॥ भिरे हांक दैदै पदाती पदाती । कहूं अश्वसादी पदाती बिघाती ॥ महाघोर संग्राम ताठौर जूटो । परो जानि कल्पान्तको काल टूटो ॥ दोहा ॥ गत वाहनह्वै भटकिते लरे पयादे टूटि । किते निरायुधह्वै किये बाहुयुद्ध तहँजूटि ॥ महा युद्ध करि तहँ भये मोहित सुभट अमान । निजपर हय गज रथ तुरग रहो न काहुहि ज्ञान ॥ यह सुनि ऊबि उसासलै कह्योवृद्ध क्षितिपाल । बिरथीह्वै मम तनय नृप कहा कियो त्यहि काल ॥ यह सुनिकै संजय कह्यो क्रोधित नृपति अचैन । और सुरथपै त्वरित चढ़ि कहे सूत सों बैन ॥ सोरठा ॥ मोरथ शीघ्रबढ़ाय धर्म नृपतिके निकटचलु । सोसुनि सूतसचाय चलोयुधिष्ठिरकेनिकट॥ भूपहि आवत देखि रथ बढ़ाय अतिबेग सों । नृपति युधिष्ठिर तेखि भूप सुयोधन सों भिरो ॥ चौपाई ॥ दोऊबन्धु बिदित धनु

धारी । दोऊ राज्यहेतु रणचारी ॥ दोऊ गहे क्रोध उतकर्षा । दुहूँ दिशि किये शरनकी बर्षा ॥ नृप दुर्योधन तुरता ठाट्यो । शर हनि तासुशरासन काट्यो ॥ धर्मनृपति धनुगहि गुणिमनमैं । काट्योतासु धनुष ध्वज क्षनमैं ॥ त्वरित धनुषगहि भूपसुयोधन । कियो धर्मनृपको अवरोधन ॥ पुरुषसिंह दोऊभट आरज । लरे सिंहसम महि करि कारज ॥ धर्मभूप तौ सुत के उरमें । मार्‍यो तीनि बाण अति तुरमें ॥ तबतौ पुत्र शक्ति बर गहिकै । तज्यो धर्म पहँ थिरुथिरु कहिकै ॥ सो त्यहि काटि तीनि शर हनिकै । भूपहि हन्यो पांच शर गनिकै ॥ तब तौसुत नवशर अनियारे । नृपति युधिष्ठिरके तनमारे ॥ तेहिक्षण धर्मभूप अति रोखो । मार्‍यो नृपहि बाण अति चोखो ॥ सो शर नृप तौ सुतकेगातहि । बेधिकढ़ो कंटक जिमिपातहि ॥ तबतौ तनय गदागहि भारी । चलो धर्म भूपतिहि प्रचारी ॥ गदा गहे तौपुत्रहि देखी । मार्‍यो शक्तिधर्म्मनृप तेखी ॥ तासों बेधितकै नरनाहू । मूर्च्छित भयो शिथिल करि बाहू ॥ फिरि नहिं हन्यो भीमसों सुनिकै । तुम न बधो यहि मम पण गुनिकै ॥ दोहा ॥ भूपहि मूर्च्छित देखिकै कृतबर्मा क्षितिपाल । बढ़ि आइतभो परभटन बर्षि शरनकेजाल ॥ भातहुँ चौथे पहरमें यहि बिधिको संग्राम । गदरानो तौ कुमति तरु को फल दुखदा नाम ॥ सोरठा ॥ कर्ण आदि रणधीर भिरि भीमादिक भटनसों । किये युद्ध गम्भीर मारुमारु धरु रटनकरि ॥ चौपाई ॥ माचत भयो भूप तेहि पलमें । अतिशय घोरयुद्ध तेहि थलमें ॥ पाट्टिश भल्ल शक्तिशर रूरे । आयुध बिबिध दुहूं दिशि पूरे ॥ दिब्य शरनकी बर्षा करि करि । लरे सुभट बहुबिधि सों चरि चरि ॥ कै बिनु भट बहुहयगज घायल । इतउत फिरनलगे कै चायल ॥ कै बिनु बाहन योधा केते । महिगत लरनलगे जय हेते ॥ भये त्रिमुण्ड बितुण्ड घनेरे । अगणित भटन पाणि बिनु हेरे ॥ बिना मुण्डके अगणित योधा । आयुध गहे करें अब-

रोधा ॥ कितने परे धरणिपै लोटैं । मारुमारु कहि भूमि खसोटैं ॥ कितने खरे अधमरे भूमैं । घायल किते रोषसों घूमैं ॥ कितने निरथ निरायुध ह्वैकै । करैंमल्लरण रिसिसों ग्वैकै ॥ शिरधर भुजसह बसन बिभूषण । परे रुधिरमें लसैं अदूषण ॥ टूटिफूटि जिमि तरु छबि धरिकै । दहकत दावानल मधि परिकै ॥ कितने लरिगिरि उठिगिरि गिरिकै । महिपैपरे लरैं भिरि भिरिकै ॥ चामर छत्र किरीट पताका । हौदा पाखर अंकुश चाका ॥ अंगभंग हय गजभट मरिमरि । शोभित भये भूमिपै परिपरि ॥ रुण्डमुंड शोणितसों धरणी । भई भयानकरूप बिवरणी ॥ दोहा ॥ अस्त्र शस्त्र तनुत्राण शरके मिलान भवशब्द । धनु टंकार प्रचारधुनि सों पूरितभो अब्द ॥ मचो घोर संगर तहां निकट सात्यकी पाय । कर्ण कर्षि कोदण्डवर बहुशर हन्यो सचाय ॥ सूततुरग कर्णहिं हन्यो सात्यकि अगणित बान । यहि प्रकार दोऊसुभट किये घोर घमसान ॥ सोरठा ॥ लखिकर्णहि त्यहि काल छादित सात्यकिके शरन । भटसुषेण क्षितिपाल सदल गयोतहँ बेगसों ॥ तोमर ॥ तहँजात ताकहँ देखि । पर सैनपति अति तेखि ॥ करि चपलकरि कोदण्ड । बढ़ि भिरो बीर उदण्ड ॥ तहँ पार्थभट रण धीर । भमसैन जगपहँ बीर ॥ भो लसत सत्त्व समुद्र । कल्पान्त कैसो रुद्र ॥ सोदेखि तासुत भूप । करि बदन भीषम रूप ॥ शर वर्षि धनुटंकारि । बढ़ि भिरो ताहि प्रचारि ॥ तेहिदेखि पार्थ अमान । भोतजत आठ सुबान ॥ तकि तुरगचारों मारि । भोदेत महिपै डारि ॥ दोहा ॥ पंचम शरसों काटि धनु छठयें सों बधि सूत । द्वै शर सों काटत भयो छत्रकेतु मजबूत ॥ फिरि अमोघ शर तजत भो बधबिचारिकै तासु । ताकहँ काट्यो द्रोणसुत मारि सातशर आसु ॥ सोरठा ॥ करिअतिरिस हनिबान काटि धनुष द्विज तनयको । तुरगन बध्योंअमान पार्थधनुर्द्धर बिदित भट॥ चौपाई ॥ढिग कृप कृतबर्माकहँ तकिकै । काट्यो धनुष भागुम-

तिबकिकै ॥ करि दुश्शासन को धनु छेदन। चलो कर्णपहँ पर दलभेदन ॥ सो लखिकर्ण सात्यकिहि तजिकै। पार्थ बीर पहँ चलो गरजिकै ॥ तीनि बाण अर्जुनकहँ हानिकै। कृष्णहिं हन्यो बीसशर गनिकै ॥ सात्यकि तहां जायतेहि क्षनमें। शतशरहन्यो कर्णके तनमें ॥ तुरितजाइ तहँ अगणितयोधा। कियेकर्णभटको अवरोधा॥ युधामन्यु उतमौजाराजा॥ सुभट शिखण्डीसहितसमा-जा ॥ द्रौपदेय अरुनकुल सुबीरा। सहदेव धृष्टद्युम्न रणधीरा ॥ सदल धर्मभूपति धनुधुनिकै। भिरेसूतसुतको बधगुनिकै ॥ तहां कर्ण अति लाघवकीन्हों। सबपहँ बाणजाल रचिदीन्हों ॥ काटि तहां सबके बहु शायक। सबकहँ हन्यो बाणदृढ़ घायक ॥ दिव्य शरनकी बर्षा करिकै। सबकहँ ब्यथित कियो प्रणधरिकै ॥ सो लखि कोपिपार्थ धनुधारी। बर्षि दिव्य शायकरणचारी ॥ शस्त्र शस्त्रसों वारणकरिकै। बर्षो बिशिख चक्रसमचरिकै ॥ तिमिचरि कर्ण पार्थसोंभिरिकै। कीन्होघोरयुद्ध तहँथिरिकै॥ दोऊभूरि बि-क्रमीगाये। दुहुंदिशिबाण बनद समछाये ॥ दोहा ॥ दिव्यअस्त्रमें कुशल अति दोऊबरबाणैत। घोरयुद्धकीन्हेतहांदोऊधीरघैरेत ॥ यहिबिधिभिरिभिरि सकलथल दुहुंदिशिकेभटउद्ध। अतिबिक्रम करिकरि करे भीषम अद्भुत युद्ध ॥ महिहरी ॥ तहँ मचो भीषम युद्धसिगरे सुभटअति बिक्रमकरे। गजतुरग भट समुदायबधि बधि रुधिरमण्डन महिभरे ॥ इमिहोत संगर घोरसोदिनबितो रबि अथवत भये। अब युद्धतजि सबभूप निज निज सैन सह डेरनगये ॥ जुरिभूतगृध्र पिशाच जम्बुक हरषितहँ विहरनलगे। भटजाय डेरन कियेसब करतव्य शोचित श्रमपगे॥ जो भयोपूर्ब कुमंत्र तासों इतकअनरथ लखिखरो। अबकहतनाहिं कछु बनत नृपसों समुझि अरिआवतगरो ॥ दोहा ॥ कर्णपर्बके प्रथम दिन इमिरणभोक्षितिपाल॥ रामकृष्णजोचहतसोअवशिहोतसबकाल॥ इतिमहाभारतदर्पणेकर्णपर्बणिप्रथमदिनयुद्धसमाप्तिर्नामतृतीयोऽध्यायः ३

वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ कर्णपर्वके प्रथमदिन कोसुनि युद्धविहार । इमिबोले धृतराष्ट्रनृप गहे शोच अधिकार ॥ रोला ॥ सुनोसंजय होत सोई चहत ईश्वर जौन । सकै पार्थहिजीति ऐसोभयो योधा कौन ॥ विपिन खांडव पार्थ जाऱ्यो जीति शक्रहि एक । एकपार्थ निवात कवचिन बध्योगहि रणटेक ॥ एक पारथ लयोजय गन्धर्व गणसों जूटि । एक पार्थ बिराटपुरमें लयोजययशलूटि ॥ एक पारथलरो शिवसों लियो पशुपति अस्त्र । एक पारथ दिगपतिन सों लह्यो सिगरे शस्त्र ॥ तिहूंपुरके जीतिबेको योगपारथ बीर । बातसो परसिद्ध जानत कहतसब रणधीर ॥ भरो अतिदुख स-दल ममसुत तौन रजनि बिताय । कर्णसहचढ़ि लरोकैसे कहो सो समुझाय ॥ भूपके ये वचन सुनिकै कह्यो संजयबैन । भोर सूतज जाय नृपपे देखि नृपहि अचैन ॥ कह्यो भूपति शोचतजि मुदगहो ममप्रण जोहि । बधौंगोमैं पार्थकहँ कैपार्थ बधिहै मोहि ॥ आजु पार्थहि बधेबिनु नाहिं आइहौं तो पास । शोच इतक न पूर्व आयो निकट ममगहि त्रास ॥ अस्त्र बिक्रम शस्त्र धनुके गुननमें सविधान । शूरतामें तुल्यहैं हम पार्थभट नहिंआन ॥ बिजय नामक धनुष बिरच्यो बिश्वकर्मा पूर्व । जीति दैत्यन इन्द्रदीन्हों भार्गवहि सोगूर्व ॥ बारयकइस सकल क्षत्रिनजीति तासोंराम । मोहिंदीन्हों धनुष सोई बिजय जाको नाम ॥ धनुष सो गांडीवतासों अधिकसो अवधारि । भूपतोकहँ बिजय देहौं जीति पार्थहिमारि ॥ यथाअगिनिहि सकतनाहिं साहिवृक्ष तेहि बधिपार्थ । आड़िसहिनहिं सकैगोमम बाणवृष्टि पदार्थ ॥ एक मैंहमपार्थसों हैं हीनकहियतुतौन । पार्थकोहै सारथीयदुबीरसब गुणभौन ॥ नहींतासम सारथीममशोचइतनोभूप । शल्यसारथि पनोजानतकृष्णके अनुरूप ॥ होइजो ममसारथीनृपशल्यधीरधु-रीन । जीतिपार्थहिभूपतो तेहिदेउँजययश पीन ॥ पार्थकेहैंदिव्यरथ हयअक्षयअक्षतुणीर । तासुहितममसंगराखहुसुरथतर्कसभीर ॥

अउव हृदयसुमंत्र जानतकृष्ण जिमितिमि शल्य। शल्य होइसु सारथी तौकरौंतोहिं अशल्य॥ शल्यअधिकी कृष्णसोंहम पार्थ सोंसबठौर। अवशिजय हमलेब नृपजोसधै ऐसोडौर॥ कर्णके ये बचन सुनितौतनय नृपतजिशोच। शल्यके ढिगजाय सबिनयक-हतभो निजरोच॥ सत्यब्रतनृपसिंह परदल दलनधीर धुरीन। मद्र पतिसों करौंजोमैं कहतहौं ह्वै दीन॥ कृष्णके समकर्णको नहिं सारथी परबीन। तुम्हें तेहिसम पाइसूतज भयोचाहतपीन॥ जोरि कर करिविनय ताते कहतहौं हेभूप। कृपाकरिकैकरोसारथिपनो निज अनुरूप॥ कियो सारथिपनो विधि जिमि शम्भुको तेहि रीति। सूतसुतको सूत ह्वै नृप मोहिं दीजै जीति॥ कृष्ण रक्षक पार्थहि तिमि पाहिकर्णहि आप। जीति शत्रुन मेटियेममहिये को परिताप॥ दोहा॥ यथा अरुणसह भानुकाढ़ि नाशि देततम जूह। तिमि तुमसहलरिकै बिधिहि सूतज शत्रु समूह॥ भीष्म द्रोणको बधकिये वैकरि छल व्यापार। कर्ण बधैगो उनहिं लहि तब सहाय आधार॥ जिमि मम हित रत कर्ण तिमि आपु महारथ बीर। सारथिपन स्वीकार करि मोहिं दीजिये धीर॥ रोला॥ भूप के ये बचन सुनिकै लोचननि करि लाल। बंक करि भृकुटीन बोलो शल्य बीर बिशाल॥ भूमिपति कत भूमि ऐसो कहत बचन अनीक। बाहुबल मम बिदित तामें चहत लावन लीक॥ जानि मोसोंअधिक कर्णहिं कहत हूजैसूत। मैंनमानत सूतजहि निज सदृश भट मजबूत॥ प्रबलअति परसैनमें जो ताहि देहु बताय। ताहि बधिकै जावहम निजदेश शंख ब-जाय॥ कहौं सबसों लरन जो तौ लखौ बिक्रम मोर। प्रलय पारत शत्रु दलमें सरस शरको जोर॥ धनुष रथहय गदालखि ममदेखि बाहु उदण्ड। भूप बोलो बचन जो नहिं होइ लायक दण्ड॥ भये कबहूं सूतक्षत्री सूतको कहुतौन। सूतकैवे सूतको तुम मोहिं भाषत जौन॥ सूतसुत अधरथी ताको सारथी अब

हीन । भूपमोको कहव तुमहो उचित तुमको सोन ॥ भूप अभिषेकित विदितहम मद्रपति रणधीर । सूतसुतको सूतह्वै कहत तेहि निजतीर ॥ पाइइमि अपमान अबहम रहबनाहिं यहिदेश । जाब निजपुर अवशि शासन शीघ्रदेहु नरेश ॥ दोहा ॥ इमिकहि शल्य महीपउठि चलोक्रोधसों पूरि । गहि तोसुत लागोकहन बचन विनयभरि भूरि ॥ मम हियकी सिगरी ब्यथा जानतहौ क्षितिपाल । ताते सोई करहु जेहि बिनशै ब्यथा बिशाल ॥ यथा यज्ञकरि करिदये भूरि दक्षिणा तात । तिमि रणमख मधि देहु मोहिं बिजय द्रब्य अवदात ॥ शल्य सदृश तुम शत्रु के ताते शल्य बिख्यात । करि सारथिपन मोहिं अब करो अशल्य बिगात ॥ सोरठा ॥ कर्णनतुमसों श्रेष्ठ उभय सैनमें श्रेष्ठतुम । ताते इतोयथेष्ठमांगत दीजैआपुसो ॥ जयकरी ॥ तुमकहँ अधिककृष्ण सों जानि । जयहित यहमांगत अनुमानि ॥ अमरषत्यागिबूझि ममभाव । मांगतहौंसो देहु सचाव ॥ यहसुनि शल्य क्रोधकरि दूरि । कहत भये अनुकम्पापूरि ॥ एवमस्तुनृप तोजयहेत । सारथिपनोमानि हमलेत ॥ पैइतनो कहिलेत सचैन । सबथरकहब रुचिहि जोबैन ॥ यहसुनि भूप कर्णतजिदंड । कहे रुचिहि सो कहेहु सुछंद ॥ नृपतदनन्तर तोसुतभूप । कह्यो शल्य सों बचन अनूप ॥ मार्कण्डेय सुमुनि तपरास । ममपितुसों अनुपम इतिहास ॥ कहे पूर्ब जो सो यहिठौर । हमकहियतु तुम सुनौसगौर ॥ देवनसों असुरनसोंपूर्ब । भयोतारकामयरणगूर्ब ॥ लरि असुरनको करिसंहार । लहेसुजयसुरराजउदार ॥ तारककोसुत होताराक्ष । बिद्युन्मालीअरुकमलाक्ष ॥ अतितपकिये धीर धरि ध्यान । तबबिधिदेनकहेबरदान ॥ तबतेंकहेपरमयशलेहु । हेबिधि हमहिंअमरकरिदेहु ॥ कहतभयेबेधाअवदात । नहिंसब अमर होतहैतात ॥ मांगौऔरचहौबरजौन । यहसुनिबोलेतेबलभौन ॥ दोहा ॥ सुनोतातहमतीनिपुर बिरचितहैंतहिजौन । बधैत।कहनि

एकशर हमैं बधै सुरतौन ॥ एवमस्तु कहिकै मुदित बेधागे निज धाम। तेसब मयसों कहतभे रचो नगर अभिराम ॥ सोरठा ॥ बिश्वकर्मा गुणग्राम दैतनको मय अतुरबर। रच्यो तीनि पुर आम शतशत योजन बिस्तरित ॥ सुबरणमयो ललाम तारकाक्ष को नगरभो। रजतमयो अभिराम बनो नगर कमलाक्षको ॥ आयसमयो कठोर बिद्युन्मालीको नगर। होसबके चहुंओर परिखा नीर गँभीरयुत ॥ दोहा ॥ ऊरधहो कांचन नगर मधि में राजत रूह। महिपै आयसमय बसे सबथल असुर समूह ॥ कैयक अर्बुद असुरपति ह्वैह्वैते असुरेश। तीनिलोक पीड़ित किये जीति सुरन सबदेश ॥ तारकाक्षको सुवनभो हरिनामक बलधाम। सो तपकरि बिधिसों लयो बरदायक जयकाम ॥ रच्यो एकहम बावली तामधि डारैंल्याय। बध्योअस्त्रको असुर सो जिये तुरित गहिचाय ॥ रोला ॥ पाइइमि बरदानकै अतिप्रबल राक्षस सर्ब। लगे बांधन लोग सिगरे गहे अतिशय गर्ब ॥ क्रोधि सुरगण सहित तेहि पुरजाय लरि सुर राज। हारि करि अनुमान बिधि पहँ गये सहित समाज ॥ बिनय करिकै भयेबूझत वधनको उपचार। कहे बिधि हम पूर्बतिन कहँ दये सुबर सुठार॥एकशरसों कठिन तीनोंदुर्ग बेधैजौन। तारकाक्षहिआदि असुरन बधै रणमें तौन ॥ औरसों नहिं सधैगो यहपरम दुस्तर कर्म। बेधिहैं शर एकसों सबदुर्ग शंभुअभर्म ॥ बचन यहसुनि बिधिहि आगे राखि सुरसमुदाय। जाय शिवपहँ भये अस्तुति करत प्रेम बढ़ाय ॥ नमः शंकर शंभुशिव ईशान प्रभुभगवान। प्रजापतिके यज्ञ हन्ता प्रजापति परधान ॥ नमोहर प्रणतार्तिहर त्रय ताप हर बरदेव। नमो रुद्र सुनीलकंठ उदार अनुपमभेव ॥ नमो शूली शंभुत्र्यंबक बिभु पिनाकीनाम। बनस्पतिपति परम परमा नमो दायक काम ॥ नमो पशुपति भूतपति परमेष्ठि गौरी नाथ। नमो औढर ढरन आपद हरण करण सनाथ ॥ सुनो

अस्तुति सुरनकीह्वै भूतनाथ प्रसन्न। कहेसो सबकहो जेहिहित भयेआइ प्रपन्न ॥ बचन सुनि विधि कहे असुरन दये हमबर-दान। तौन करिनहिं तिन्हैं बाधिबे योग कोऊ आन ॥ आपुतिन कहँबधौ करिकै दुसह युद्ध बिनोद। होइकलमष हीनमहि सब सुमन पावैमोद ॥ कहे शिवनाहिं तिन्हैं मारणचहत लरिहमएक। अर्धबलममपाय ममसँग लरौ सबगहिटेक ॥ कहे सुरबलआप को हम सकब नहिं सहिनाथ। आपुसबको अर्धबल लैमारि करहु सनाथ ॥ शम्भु कीन्हे ग्रहण सबको अर्धबल तेहिकाल। कहेगे तेहि दिवसशंकर महादेव बिशाल ॥ सुमनगण करिमंत्र शंभुहिबरणिकैतेहिदेश। बिश्वकर्मासोंकरायो सुरथ रचनाबेश ॥ विष्णुपावक सोममयभे रचत अनुपमबान। सुरथ भूमि नक्षत्र ईर्षा अक्ष गिरिसबिधान ॥ चारुकूबर बासुकीऋषि सप्तमण्डल पूर। युवाकृतके युगतुमारुतचक्रभे शशिसूर ॥ मेरुभोध्वजयष्टि संवतशरधनुषअभिराम। देबिसाविन्त्री प्रत्यचाभइअद्भुतदाम ॥ जलदताड़िता सहपताका पार्श्वरक्षकबेद। देबिगायत्री सुरथकी शिखाबन्दअखेद ॥ अक्षबन्धनपास सागरलसोसरस समान। सिंधुगंगाभार-अयस्करभे सुरथके गिरिबिन्ध्यअरु हिमवान॥ चारिफलकोरचतभेरथतुल्यअतिकम-नीय ॥ औषधी अरुवृक्षसिगरेभयेघंटाभूरि। रात्रि दिनभे पूर्व परअस्थानपरमापूरि॥ तुरगमानसरज्जुभेकरकोटकादिकनाग। पलाकाष्ठा मास तिथि भे कील गहि अनुराग ॥ इबिधिबिरचित बिश्वमय रथनिरखि शंकर ईन। सुर ऋषिनसों सुनतअस्तुति होतभे आसीन ॥ राजि शिवतेहि सुरथपै हँसि सुरनकी दिशि हेरि। कहे अबउतकृष्ट मोसों सूत ल्यावहुघेरि ॥ बचनअहसुनि सुमनबिधि सों कहे चाहिअनन्द। आपहूजेसारथी तौमिटै सब कोदण्ड ॥ यदपिबेधारहे शिवसों अधिक तदपि बिचारि। नहीं मान्योनेकु अनुचित देवकार्य्य निहारि ॥ किये सारथिपनो रथ

चढ़ि हांकि तुरगअखर्ब । करतअस्तुति चलेशिवके संग सुमन ससर्ब ॥ दोहा ॥ भांति भांतिके बिशदधुनि बाजन भेद समूह । चले बजावत अर्बुदन गन्धर्बनकेयूह ॥ संगअसंख्यनगण चले बलकत हँसत सगर्ब । तेहिक्षणकी छबि बरणिको सकै भूप यहि पर्ब ॥ चौपाई ॥ तेहिक्षण शिवसुखमासों भेखे । त्रिपुर नाशको पण अवरेखे ॥ विधिसों कहे चलो तहँ रथले । जहां असुर सबगर्व अकथले ॥ तहांलखौमम बिक्रम भारी । क्षणमें बधन असुरपण धारी ॥ बेधा सुनत तुरित सब बाजिन । कीन्हें चपल बातगति साजिन ॥ चले बाजिबर नभ पीवतसे । पग सूचिन मगपट सीवतसे ॥ पुरढिग जाय वृषभभो गरजत । सुनिभो असुरनको हिय लरजत ॥ तेहिक्षणभये त्रिपुरमधि असगुण । प्रभु प्रगटित कीन्हें तामस गुण ॥ असुर असंख्यन पुरतेकढ़िकै । लरिबे को सम्मुख भे बढ़िकै ॥ तेहि क्षण शंभु क्रोधअति लीन्हें । रूपभयंकर प्रगटित कीन्हें ॥ अयुतादित्य तेजगहि राजे । महिदिवलों अति सुखमा साजे ॥ गहि त्रिशूल घनबर सम गरजे । असुर समूहनके हिय दरजे ॥ धुनि सुनि भे सभीत जय बादिक । सुर गण सोमसूर अनलादिक ॥ रथह्वैगयो शिथिल धुनि सुनिकै । सोलखि तहां बिष्णु प्रभु गुनिकै ॥ शरते निकसि वृषभ वपुगहि कै । सुरथ शीशपै लयेउमाहिकै ॥ वृषभ शीश हयपीठि परसपै । धुर लखि मनदै उग्र करमपै ॥ वृषके खुरन द्विधा करिदीन्हें । तुरगन कहँ बिनुअस्तन कीन्हें ॥ तबते वृषभ द्विधा खुर जोहै । अस्तन हीन तुरग सब सोहै ॥ तब महेश त्रयपुरहि निहारे । रिस गहि धनु चढ़ायटंकारे ॥ तेहि क्षण प्रभु प्रताप तेग्वैगे । त्रैपुर सिमिटि एकतै ह्वैगे ॥ एकै भे तीनो पुर जबहीं । सुरगण गहेमोदअतितबहीं ॥ सिद्धमहर्षि जयतिजय कहिकहि । अस्तुति करनलगे मुद गहिगहि ॥ प्रभु त्रयलोक्य सारमय शरगहि । धनु सों योजित कीन्हें जयचहि ॥ पशुपति अस्त्र घटित करितामय ।

कर्षे धनुष सरुष ममतामय ॥ तेजस सरसि सरस शरछाँड़े । सोत्रयपुर मधिप्रविशो चाँड़े ॥ उग्रप्रभाव उग्रता धरिकै । पुर सह असुरन भस्मित करिकै ॥ पश्चिम समुद्रमध्य करिमंजन । प्रगटित भयो सुरन मन रंजन ॥ त्रिपुर सहित असुरन करि भस्मित । लखि निज तेज शम्भुह्वै सस्मित ॥ अब मतिलोक भस्म करु ईना । इमि कहि किये आपुमें लीना ॥ ऋषिगन्धर्ब सुमन मुद लीन्हें । प्रभु स्वयम्भुकी अस्तुति कीन्हें ॥ दोहा ॥ सुनि अस्तुति शिव मुदितह्वै बेधहि सुरन समेत । करिसुबिदा तब आपुगे निज गिरि शुभद निकेत ॥ रोला ॥ कियो जिमि सारत्थ्य शिवको जगतकृत बिधि तत्र । कर्णको सारत्थ्य तेहि बिधि आपु कीजे अत्र ॥ पाइ बिधिहि सहायकृत जिमि रुद्र त्रिपुरहि जारि । किये शक्रहिसुचित कै यक खर्ब दैयतमारि ॥ तथा तुमहिं सहायकृत लहि कर्ण परदल नाशि । करि अकंटकराज्य देहैं मोहिं सरस सुपाशि ॥ कर्ण हममम राज्य जययश भूप तौ आधीन । कृष्ण समसारत्थ्यकरिकै देहुआनँदपीन ॥ असुरगण को नाश करिबे हेत श्री भृगुराम । अस्त्रअनघ अमोघ शिवसों लहे दायककाम ॥ दयेसो सब शस्त्रकर्णहिं रामगुणि निजभक्त । कर्ण धीर धुरीण क्षात्रसुधर्म मय अनुरक्त ॥ सूतकुल में जात नाहिं यह देवपुत्र महान । कवच कुण्डल सहित प्रगटित भयो वीरअमान ॥ मृगीब्याघ्रहि जनति नहिं नृप लखौ करि अनुमान । कर्णकोलघुगुणहु मानिहै कर्ण पुरुषप्रधान ॥ दोहा ॥ तजि अमरषकै सारथी देहु मोहिं जयदान । बिधि अरुकृष्ण समान तुम जानत अश्व विधान ॥ जयकरी ॥ पूरुबको इतिहासअनूप । मनदै सुनो मद्रपति भूप ॥ सीखनको सुरशस्त्र ललाम । सेयो शिवहिजाय भृगुराम ॥ तपलखि प्रगटिकृपाके भौन । कहेमांगु वर चाहत जौन ॥ सुनि भृगुपति इमि कहे प्रशस्त । हमैं देहु प्रभु अस्त्र समस्त ॥ सो सुनि शंभुपात्र गुणिताहि । दीन्हें अस्त्र

शस्त्र हितचाहि ॥ तेहि युगमें है असुरअमान । देवन दये खेद मनमान ॥ तबऋषि सुमन शंभु पहँजाय । कहे बरधि दैयतस-मुदाय ॥ देत हमैं दुखदारुण घोर । तिन्हैं बधो गहि धनुषक-ठोर ॥ सोसुनि शम्भु कृपाकरि भूरि । कहेरामसों आनँद पूरि॥ असुरन जाय बधो करियुद्ध । लहो सुरन मधि जययशशुद्ध ॥ सोसुनि लहि आनँद भृगुराम । बन्दि शम्भुके पद अभिराम॥ जायसुरन सहधनु टंकारि । असुरवृन्दसों लरे प्रचारि ॥ करि शिव शीक्षित अस्त्र प्रयोग । बर्षिशस्त्र नहिं सहिबे योग ॥ बधे जितक हेअसुरसगर्ब । अस्तुतिकिये सुमनगन्धर्ब ॥ सोईअस्त्र अमोघ समस्त । कर्णहिं दीन्हे रामप्रशस्त ॥ होतकर्ण में किल बिषछाम । तौ नहिं अस्त्रदेत भृगुराम ॥ दोहा ॥ हरणशस्त्र धनु कर्णके करिकर सम दोर्दण्ड । हित हर्षण कर्षण कठिन बिजय नाम कोदण्ड ॥ परम शिष्यभृगुराम को प्राकृत पुरुष न येहु । कर्णहिं लघुजानो न नृप यहमम सम्मत लेहु ॥ अधिकरथीसों सारथी होतसधत तबकाज । श्रेष्ठआप ह्वै सारथी नृप साधो ममराज ॥ लघुतोमर ॥ जब सुयोधन महिपाल । इमिकह्यो बचन बिशाल ॥ नृपशल्यतबलहि चैन । इमिकह्योभावतबैन ॥ दोहा ॥ होबकर्ण के सूत हम पै यहकहत निदान । जो कदाचि पार्थहि बधिहि कर्णबीर बलवान ॥ गदाचक्र गहिकृष्णतब बधिहैंतुम्हैं ससैन। आड़ि सकैजो कृष्णकहँ ऐसो कोऊहैन॥ चौपाई ॥ शल्य भूप के बचन सुबोधन । सुनि बोलतभो नृपति सुयोधन ॥ कर्ण समान बीरको जगमें । हैभट कर्ण पराक्रम अगमें । धनुर्वेदको पारग जाहिर । सबशास्त्रज्ञ शस्त्र बिद माहिर ॥ जासुधनुष की ज्याधुनि सुनिकै । भगत शत्रु भटबधध्रुव गुनिकै ॥ बिरथ बि-धनु करि भीमाहिंजोई । मूर्च्छितकियो बीररसु भोई॥ धनुषकोटि मधि करिअभिमानी । भाष्योदुसह शक्तिसम बानी ॥ तेहिबिधि महिगत नकुलहि करिकै । अहिसम धनुष पात्रमधि धरिकै ॥

बचन पालि जीयत तजि दीन्हों । तिमि सात्यकिहि मारिजय लीन्हों ॥ भीमतनय असुराधिप योधा । ताहि बध्यो जो करि अवरोधा ॥ जाके डररहि शंकित पारथ । सम्मुखह्वै न करत पुरुषारथ ॥ धृष्टद्युम्नआदिक पांचालन । जीतत जौन कर्णअरि घालन ॥ तेहि कर्णहिंको जीतन लायक । सहित बरुणयमशक्र सहायक ॥ तेहि प्रकारतुम बिदितपराक्रम । हौअजेय जेतारण आश्रम ॥ तीनि लोकमें ऐसो को है । जो नहिं तौ सम्मुखह्वै मोहै ॥ कृष्ण न अधिक बिक्रमी तुमते । नहिं त्वकसार अधिक दृढ़ द्रुमते ॥ केशव यथा पांडवी दलमें । आपु तथामम सेना थलमें ॥ दोह ॥ करि हैं केशव चक्रगहि जेहि बिधिको रण कर्म । शरधनु गहि ताते अधिक तुम करिहौ गुणि मर्म ॥ दुर्योधनके वचनये सुनि लहि आनँद भूरि । शल्य भूमिपति कहत भो गरवि बीररसपूरि ॥ निज पर सुभटनते अधिक अरु प्रभु कृष्णसमान । मोहिं कहतक्षितिपाल तुम निजहित मानिमहान ॥ सोरठा ॥ भूपति तौ जयहेत होब कर्णको सारथी । पै इतनोकहि लेत जब जो भाइहि सो कहब ॥ कर्ण सकै सहि तौन मोहिं सारथी तौकरै । यह बिचारि क्षितिरौन कहो कर्णसों बूझिकै ॥ जयकरी ॥ यहसुनि हर्षि कर्णअरुभूप । कहे शल्यसों बचन अनूप ॥ नृप जो रुचिहि कहहुसो बैन । अबकै सूत देहुमोहिं चैन ॥ यहसुनि शल्य भूमि भरतार । सारथिपनो कियो स्वीकार ॥ तब दुर्योधन नृप अति मोदि । कर्णबीरसों कहे बिनोदि ॥ शल्यहि पाय सूत अवदात । बधिमम अरिन अऋण होतात ॥ कर्णकहे नहिं शल्यनरेश । सहरष कहत बदन करिबेश ॥ ताते फेरि कहौ समुझाय । जाते लसै सुरथपै जाय ॥ यह सुनिकै दुर्योधन राय । शल्य भूपसों कहे बुझाय ॥ बेगि सहाय करो क्षितिपाल । सूतजलरो चहत यहिकाल ॥ बाधि अगणित परदल के बीर । पार्थहि बधनचहत रणधीर ॥ ताते निज जय हित करजोरि ।

याचत तुम्हैं बहोरि बहोरि ॥ पार्थहि रक्षतकृष्ण यथैव । तुम पालेहु सूतजहि तथैव ॥ यहसुनि शल्य नृपहि भरि अंक । कहतभयो कुलकुमुद सशंक ॥ गर्व त्यागिहैं कुरुकुलराज । सूत होत हमतौ हितकाज ॥ शल्य भूपके सुनि ये बैन । बोलो कर्ण बीर बलऐन ॥ विधि अरु कृष्णसदृश तुमदक्ष । रक्षण करनहार ममपक्ष ॥ शल्यउवाच ॥ दोहा ॥ आपनि अस्तुति कथन अरु परनिन्दाको जाप । निजमुखकरत न सतपुरुष कियेहोत परिताप ॥ इतै प्रयोजन वश कछू कहियतु निज ब्यवसाय । मातलि समहमशक्रको करिवेयोग सहाय ॥ बिना प्रमाद प्रयोग अरुविद्याज्ञान बिचार । करिकरिसबथर करबहम बिधिवत रथ संचार ॥ शोचत्यागि अब पार्थसों करो युद्धब्यापार । क्रुद्धउद्ध बरभजनबधि होहु कीर्त्ति कर्त्तार ॥ दुर्योधनउवाच ॥ चौपाई ॥ हेहे मित्र कर्ण धनुधारी । शल्य भूपभो तुव रथचारी ॥ अधिक कृष्ण ते ये रथचालक । अश्व हृदयज्ञाता हित पालक ॥ शल्यहि तुम्हहिं एकथल देखी । ह्वैहै बिकल शत्रु भय भेखी ॥ लेहु बिजय अब संशय नाहीं । पार्थहि जीति लसौ महिमाहीं ॥ इबिधि कर्णसों कहि हितबानी । कह्योशल्यसों नृपअभिमानी ॥ कर्णबीरको तुरगसमाजा । तीक्षणकरो युद्ध में राजा ॥ कर्ण आपकहँ पाय सहायक । भयो पारथहि जीतन लायक ॥ यहसुनि कह्योशल्य अनुमानी । सांच कहेतुम भूपतिज्ञानी ॥ सोसुनि कर्णमोद अति लीन्हों । सुमना सूतहि शासनदीन्हों ॥ ममरथ कल्पितकरोउतायल । नाधो प्रबलबाजि हति पायल ॥ आयुधभेद धरो सबबिधिके । जे अमोघ रणकारज सिधिके ॥ सोसुनि सुरथ साजिअनुगामी । कीन्हों अरज सिद्धरथ स्वामी ॥ जाहि ब्रह्मबिद बिप्र पुरोहित । मंत्रितकरि कीन्हें अति सोहित । तेहिक्षण कर्णदानदै सानँद । सुभटन सों सुबचन कहि मानद ॥ रथजयत्रकहँ करि सुप्रदक्षिण । करि नियमित निज रक्षक पक्षिण ॥ सादर कह्यो

शल्यसों हँसिकै। चढ़ो सुरथपै हरिसम लसिकै ॥ दोहा ॥ यहसुनि सानँद शल्यनृप रघुवर रामहिं ध्याय । हय शीक्षण ढिग सुरथपै लसो शूरसमजाय ॥ चढ़ो सुरथपै कर्ण तब ध्यायइष्ट गुरुदेव। घनेबजे बाजन तहां गहे युद्ध जयभेव ॥ भुजंगप्रयात ॥ तहांतौत-नय भूप आनंदपूरे । दये कर्णके कर्णये बर्णरूरे ॥ किये भीष्म औ द्रोणजो कर्मनाहीं । करोंआजु सो कर्म यायुद्ध माहीं ॥ गहौ श्रेष्ठको ज्येष्ठजो पांचमोहे । बधौंचारिको हैं इहै हेतमोहे ॥ बधो धृष्टद्युम्नादिजे युद्धकर्मा। बधौं सात्यकेजो महाभर्म भर्मा ॥सोरठा॥ इमिकहि तौ सुतभूप चढ़ो सुरथपै नृपनसह । द्विजगण मंगल रूप पठनलगे स्वस्त्ययन शुभ ॥ तेहिक्षण शल्यमहीप बिहँसि कर्णसों कहतभो । अरेसूत कुलदीप निज बिक्रमदरशाउअब॥ दोहा ॥ कर्ण धनुर्द्धर कर्षिधनु बर्षिबज्रसम बान। भीमपार्थआ-दिकन पहँ करु बिक्रम मनमान ॥ धर्मराज कहँ पकरिले बधु पार्थहि सहसेन।देअपूर्व जय कुरुपतिहि हौ प्रसिद्धजग जैन ॥ सोरठा ॥ यहसुनि कर्ण सगर्ब शल्य भूपसों कहतभो । बेगिहांकि हयसर्ब चलो पाण्डवी सैनपहँ ॥ चौपाई ॥ पार्थहि आदि सुभट सबउतके । जेबरणे अति बिक्रम युतके ॥ तेसिगरे मम बिक्रम जोहैं । अबतेयुद्ध तजें करिसोहैं ॥ आजुप्रलय परदलमें पारत। महारथिन बांधिमहिमांधि डारत॥लखोमोहिं मारुत समलागत। परदललखो जलदसम भागत॥उतअति प्रबलसुभटअसकोहै। जो मम निकट आइ नहिंमोहै ॥ यहसुनि शल्य नयनकरि राते। बोलत भये बचन अतिताते ॥ सूतसुवननहिं निजबल तोलत। कत पांडवन निदरि इमि बोलत ॥ जौंलगि सुनत न दायकदुख की। श्रुतिकटु धुनिगाण्डीव धनुखकी ॥ तौंलगि जिमिभावैतिमि बोलो।निजबिक्रमकीपदवी खोलो॥जौंलगि भीमहि गदाप्रहारत। लखतन मैंलग यूथसँहारत ॥ सहदेव नकुल युधिष्ठिर राजहि । जौंलागि करन शरनकेळाजहि ॥ लखतनतौंलागि हौंइमि भाषत।

लखेनबनहि धीरताराखत ॥ धृष्टद्युम्न सात्यकिहि निरेखी । इबिधि न कहतबनिहि अवरेखी ॥ ऐसे बचन शल्यके सुनिकै । सूतज रहो अश्रुति सम गुनिकै ॥ कह्यो पालिसारथि पनभालि-ये । सादर अरिदल के ढिग चलिये ॥ सोसुनि शल्य हांकिरथ धीरे । चलो महाअमरष भरि हीरे ॥ धनुटङ्कारत नृपतौदलके । चले सदल बढ़िजे अतिबलके ॥ दुन्दुभिआदि बाद्यतेहिक्षनमें । बजेअसंख्यन सैनसदनमें ॥ दोहा ॥ होतभयो दिगदाह अरु भे अति उल्कापात । महि कम्पादिक अपशकुन भेकरता उतपात ॥ चले सैनके बामह्वै मृगपक्षी समुदाय । यहिप्रकार प्रगटित भये बहु अशकुन दुखदाय ॥ सोरठा ॥ तेहि क्षण कर्ण सटेक कहत भयो नृप शल्यसों । मोहिंन संशय नेक युद्धोत्सुक सुरपतिहु लखि ॥ चौपाई ॥ बिष्णु महेंद्रसदृश रणचारी । विदितपिनाकी सम धनुधारी ॥ भीषम द्रोण तिन्हैं उनमारे । तदपि न हम कछु संशय भारे ॥ आजु पांडवन बधिजय लैहौं । कै जहँ द्रोण गयोतहँ जैहौं ॥ दुर्योधनको कारज करिबो । मोहिं उचित के रणमधि मरिबो ॥ आजुमहाधनु बिधि प्रगटितकै । दुसहशरनके जाल घटित कै ॥ बधिहौं पार्थहि सहित सहाई । बचिहि न शक्रहुके ढिगजाई ॥ यहसुनि कह्योसत्य क्षिति नायक । झूठ कहत नाहिं तुमयहि लायक ॥ मौन रहो मतियहि बिधिभाषो । मति रबि शशिहिगहन अभिलाषो ॥ जब कुरुपतिहि गन्धबन लीन्हों । तहांनतुम सबबिक्रम कीन्हों ॥ गये बिराटनगरमें जा-दिन । पारथ कियो पराक्रम तादिन ॥ सोभुलाय अबयहिबिधि भाखत । मनकरि सुरतरु के फलचाखत ॥ बासुदेवसों रक्षितपा-रथ । कोतेहिजीतिसकै गुणिस्वारथ ॥ यहनरबर पारथभटआ-रज । कहँ तुम पुरुषाधम नरजारज ॥ जोन भागिजैहो वहिक्षन में । तौतौ बध निरमित यहि दिनमें ॥ ऐसेबचन शल्यके सुनिकै । उत्तर दयोकर्ण इमि गुनिकै॥कपटत्यागि सारथिपन कीजो । मम

करतब विक्रम लखिलीजो॥ अब रहिमौन चपल करि घोरे। सा-
दरचलो पार्थके धोरे ॥ दोहा ॥ शल्य भूपसों भाषिइमि सुभटन
की दिशिहेरि। कर्णबीर सगरब बचनकहत भयोइमिटेरि ॥ नृप
के हितरत सुभट जो पार्थहिदेइदेखाय। ताहि शकटभरिदेउँगो
रत्नमोद सरसाय॥ कांस्यदोहिनीधेनुशत अयुत तुरगशतग्राम।
पटशत देहौं द्विरदवर शत इस्त्री छविधाम॥ दासी दासनकेनिकर
रथ भूषण समुदाय। देहौं ताकहँ आजुजो पार्थहिदेइदेखाय ॥
सोरठा ॥ पार्थ केशवहि मारिहरिहरितिनको सौजसब। देहौंताहि
विचारि पार्थहि देइ देखाइजो ॥ सूतज के ये बैन सुनि कौरव
मोदित भये। है सगर्ब सहसैन बजवाये दुंदुभि घने ॥ जयकरी ॥
सुनि सूतजके ऐसेबैन। बोलोशल्यभूप बलऐन॥ सूतज धनुष
रचत जेहि काज। आपुहिह्वैहै सो तुव राज ॥ बालबुद्धि गहि
खरचतदाम। बिनुधन दये सधी यहकाम ॥ तौबध कर्णजानि
निजस्वार्थ। आपुहि तौढिग आइहि पार्थ॥ कृष्णपार्थकहँ बधन
सहर्ष। जोतुम कहतगहे उत्कर्ष॥ अबलों सुन्योन ऐसोचार।
सिंहहि बधै द्विरद मतवार ॥ बांधि कंठ में शिला अक्षुद्र।
चाहत पैरन क्षीरसमुद्र॥ गिरिते गिरन हेत उमदात। नाहिं
पारथके सम्मुखजात ॥ गनेगने सुभटन लैसंग। करोपार्थ
सों भिरि रणरंग॥ जो चाहौ निज जीवनलाहु। तौमातिज्वलत
ज्वलनमधि जाहु॥ नृपति सुयोधनको हितजानि। यहतुमसों
कहियतु अनुमानि॥ ऐसे दुसह बचन सुनि बीर। बोलो कर्ण
विदितरणधीर॥ निजभुजदण्डनके बलशुद्ध। चाहतकियो पार्थ
सों युद्ध॥ मित्रसही परशत्रु समान। तुमउपजावत भीतिमहान॥
आवै बज्रपाणि रणहेत। तऊन रणते मोरब चेत॥ सुनि ऐसे
सूतजके बैन। बोले शल्य अरुण करिनैन ॥ कुपित ब्यालके
मुखढिग पानि। चाहतकियो मरण बिधिठानि॥ दोहा ॥ दिब्य
धनुषसो कढ़तलखि आवतबज्रसमान। पारथके शरनिरखि नहिं

रहिहि तोहिं धनु ज्ञान॥ शिशु जननीके गोद रहि शशिहि पसारत पानि। तिमि रथ पै रहि पारथहि बधन चहत प्रण ठानि॥ पार्थ सिंह को जूठ धन आमिष पाय मोटाय। चहत पार्थ सों लरन अब जम्बुक सम उमदाय॥ भयो कालबश उरग सम पार्थ गरुड़ पहँ जान। चहत पार्थअहि क्षुधितसों दरदुर सम लपटान॥ जेहिबिधि सेवित शशनसों बनमें बड़ो शृगाल। आपुहि जानत सिंह बिनु लखे सिंह बिकराल॥ तिमि तुम सेवित भटनसों आपुहि धनुधरबीर। जानत जौलगि सिंह सम पार्थहि लहत नतीर॥ सोरठा॥ जबपारथ ढिगआय बर्षिहि शायक बज्रसम। तबतुम धीर भुलाय रण तजिहौ कापुरुषसम॥ अखुते यथा बिडाल अरु शृगालते सिंह जिमि। तिमितुम ते सबकाल अधिक पराक्रम पार्थभट॥ चौपाई॥ शल्य भूपकीसुनि यह बानी। बोलतभयो कर्ण अभिमानी॥ जानत गुणी सुगुण गुणियनके। नहिंजानत जेनिर्गुण मनके॥ तूगुणहीन कहा गुण जानै। सबहीको निर्गुण करिमानै॥ अर्जुनको बिक्रमधनु शायक। अरु केशवके गुणजेहि लायक॥ सो सब हम जानतहैं जेतो। क्षितिपति तुमनाहिं जानत तेतो॥ अरु अमोघनिज बिक्रम जानत। ममशायक गिरिभेदन ठानत॥ तिनके बलकेशव पारथसों। लरन चहत करि रति स्वारथसों॥ भीरुनके भयदायक दोऊ। रणमें मोहिं हरषप्रद ओऊ॥ मूढ़ सभीत न युद्ध बिशारद। तुमताते सुहितहि भयभारद॥ अपटु कुदेशज शठअबिचारी। अनुक्षण उन्हें कहत भटभारी॥ करि तिनको बधतौबध करिहौंमद्रदेशमें प्रलयपसरिहौं॥ हितह्वैअरिसम अरिहि सराहत।अजयहमारतासुजयचाहत॥आवैंसहस कृष्णशतपारथ। तौहम एक बधबगुणि स्वारथ॥ कैवै हमें मारि जय लैहैं। धर्म भूपतिहि आनँददैहैं॥ उभै प्रकार क्षत्रियहितीको। भीतमरत जो कादर जीको॥ दोहा॥ सबदेशन में नीचअति मद्रदेश त्रि-

स्यात । मित्रद्रोह करिकै जहां पुरुष न नेकु लजात ॥ अनाचार को चारजहँ नेकु न बरण बिचार । नात गोतको भेदकछु गुणत न करत बिहार ॥ अति प्रमत्त जेहि देशकी युवतीकरि मधुपान । बसन त्यागि निरतहिं हँसहिं करहिं सुरति सुखगान ॥ सदारहत मैथुन चहत तिन युवतिनके पुत्र । किमि मित्रनकोहित गहैंकरैं धर्मसों सुत्र ॥ पापकर्म जितनोकरत तितनो तहँनरनारि । पृथक् पृथक् अवगुण सकल कबलोंकहैं बिचारि ॥ सोरठा । जेहि देशिनको साथ बरजत हैं सब शास्त्र बिद । तेहि कुदेशको नाथ कृतनहिं जलपै भांतियहि ॥ जो यहि विधिकेबैन फेरि कहैगो मद्रपति । तौ हनि गदा सचैन तौंशीशहि चूरणकरौं ॥ इमिकहि कर्ण सक्रुद्ध शल्य भूप सों फिरि कह्यो । कपट त्यागि कै शुद्ध चलो पार्थपहँ भीतितजि ॥ रोला ॥ सुनोनृप सुनिसूत सुतके बचन ऐसे आम । कहत भो फिरि बचन ऐसे शल्य नृप बलधाम ॥ यज्ञकरता धर्मरत नृपबंशमें हमजात । मद्यपेयी मत्तसम तुम कहत ऐसीबात ॥ बिसम सम अरु बलाबल अरु सगुण कुसगुण नेत । सुनो जानत भलेहम इमि कहतहैं तेहिहेत ॥ पुरुष को है धर्म रक्षण मित्र को सबयाम । बूझिसोतौ बचनहितहम कहे वचन ललाम ॥ नौंबिसम समबचन तुमकहँ लगोकरकस तात । लगो नहिं गुरु सदृशप्रिय तेहिहेतु इमिबतरात ॥ सुनो ताते काकको अरुहंसको इतिहास । कहत अबहम सुनोहै जो वृद्धजनके पास ॥ सिंधुकेतट भूप धर्म प्रधानको नृपग्राम । बसत होतहँ बैश्यएक धनाढ्य अति अभिराम ॥ रहोतासु कुमारसो करिप्रेमपाल्यो काग । नामतासु उछिष्ट भृत सोरहोपूरितभाग ॥ दैवबशयक दिवसमें चक्रांग आदिक हंस । चलेताके निकट कै है विदित जासुप्रशंस ॥ देखिहंसन कागसों इमिकह्यो बैश्य सचेत । त्याज्य सबपक्षीन में है कागसो केहिहेत ॥ सत्यहो यह बचनयद्यपि तदपिकाग रिसाय । मूर्खतासों कहतभो इमिनांघि

निज व्यवसाय ॥ परम गुरुता उड़ब है पक्षीनको नहिंआन । उड़ैमेरे संगजो ये गहैं कछुअभिमान ॥ बचन यहसुनि कहत भो चक्रांगहंस उदार । उड़ौगे ममसंग किमि तुम कहोसो उपचार ॥ खायजूठोपुष्टगर्वित कागसुनि ये बैन । कह्यो जानत उड़नकी शतरीति हमबलऐन ॥ उड्डीन अरु अवडीन अरुप्रड्डीन अरु नीडीन । संडीन तिर्य्यग्डीन अरु बीडीन अरु परिडीन ॥ पराडीन सुडीन अरु अतिडीन अरुश्वाडीन । डीनअरु संडीनडीनक महाडीन अडीन ॥ इन्हें आदिप्रकार शतहैं उड़न केतेसर्व । भलीविधि हम सिखे ताते गहत इतनोगर्व ॥ जौन गतिकी कियेहोहु अभ्यास तुमगति तौन । गहन करिकै उड़ौ ममसँग सकोजोकरिगौन ॥ कागके ये बचन सुनिकै कह्यो हंस सुजान । एकगति सब बिहँगकी तुमकाग शतगतिमान ॥ एक बिधिसों उड़बहम तुम यथारुचित सुबंस । बांधियाहिविधि बहस लागे उड़न बायसहंस ॥ बैठिवृक्षन उड़िततक्षण चलो काग सडौर । उड़त बोलत फिरत इतउत गहे गुरुता गौर ॥ देखिऐसी तासुगतिभे मुदित सिगरे काग । हंससिगरेलगेविहँसन जानि तासु अभाग ॥ इबिधि एक मुहूर्त उड़िभो कहत हैंसहिटेरि । प्रगट करिये कला निज ममकला इतनी हेरि ॥ हंस सुनि हँसि चलो पश्चिमओर सागरयत्र । चलोताके संगबायस चपलकीन्हेपत्र ॥ उदधिपैकछुदूरिलों बढ़िजायथाकोकाग । वृक्ष टापू लखे बिनुतजि धीर डरपन लाग ॥ शिथिल ह्वैगे पक्ष तब गिरिपरो सागरमाह । देखिसोहँसिखरो ह्वैभो कहत हंसजनाह ॥ पालि व्रत करि शीघ्र मज्जन चलो बायस कन्त । एकशतयोजन इहांते उदधि कोहै अन्त ॥ कहो शतमें उड़नकी यह चारुविधि है कौन । बारिमें परतुण्ड बोरत कढ़तहो रहिमौन ॥ बचन यह सुनि नीचबायस कह्यो आरतबैन । देखि निजदिशि क्षमाकरि अब मोहिं दीजे चैन ॥ कुमतिबश हमकह्यो कुत्सित बचन सो

करि दूरि । मोहिं जलतेकरौबाहर दया हियमें पूरि ॥ सुनो सूतज कागके सुनिबचन हंस अमन्दा पकरि पगसों ल्याय थलपै दयो डारि स्वछन्द ॥ वैश्यकेघर खायजूठो पुष्टह्वै जिमिकाग । हंस सों करि बहस प्रगटित कियो अपनो दाग ॥ तथा तुम धृतराष्ट्र के घर खाइ बाढ़ि मोटाय । पार्थसों लरि कागके सम चहत होन हँसाय ॥ द्रोण कृपतुम भीष्म आदिक भटन जीत्यो पार्थ। एकतुम तेहि जीति चाहत कियो नृपको स्वार्थ ॥ दोहा ॥ सूर्य्य चन्द्र सम विदितहैं पारथ कृष्ण अमान । तिनकी सरबरि जनि करो तुम खद्योत समान ॥ बर प्रभाव हरि पार्थको पूर्ब कह्यो बलराम । सो भुलाय कत मोहबश लरन चहत जयकाम ॥ सोरठा ॥ ऐसे बचन अमन्द सुनेशल्य क्षितिपालके । बोलेबचन स्वछन्द करणशुद्ध मतिक्रुद्धतजि ॥ जयकरी ॥ कृष्णपार्थके सुगुण अमन्द । हमजानत नाहिं आनतदन्द ॥ पैममहियेएक यहदाह । सोहमकहत सुनोकरिचाह ॥ पूरबहम भृगुपति पहँजाय । धनु बिधि सीख्यो जाति छपाय ॥ मम ऊरूपै धरि शिरश्राम । एक दिवस सोये भृगुराम ॥ तहँ मम अहित हेत मति बक्र । आयो कीट रूप धरि शक्र ॥ अधसों ममऊरू अभिराम । बेधनलगो कुटिल तेहि याम ॥ गुरु सोवत हैं गुणि गहि टेक । हम नहिं टारयोऊरूनेक ॥ अधसों बेधिउरू सुनुभूप । ऊपर कढ़ो भयानक रूप ॥ तासों कढ़ी रुधिरकीधार । तबजागे भृगुराम उदार ॥ लखि शोणित बूझे सोभेद । हम बतायदीन्हों तजिखेद ॥ गुणि ममधीर कहे बलभौन । नहिंतू बिप्र सत्यकहु कौन ॥ यह सुनि शाप भीति उरल्याय । हमक्षत्री इमिदयो बताय ॥ सो सुनि कोपि तपस्वी बिप्र । भूपति शापदयो मोहिं क्षिप्र ॥ मोसों लहे अस्त्रतुम जौन । कार्य्य कालमें सिगरे तौन ॥ रहिहैं नहीं उपास्थित तोहि । प्रबल शत्रु जबऐहै कोहि ॥ यहसुनि मोहिं न जानेहु हीन । अगणित अस्त्र लहे फिरि पीन ॥ दोहा ॥ तिन

अस्त्रनकहँ बर्षि पर दलमधि प्रलय पसारि । प्रबल धनुर्द्धर पार्थ तेहि देहौं महिपै डारि ॥ सुर मानुष असुरनहुको जीतन हार अडोल । पारथ तेहि शरबरनसों करिहौं आजु अबोल ॥ सत्य कहत तुम जगतको जेता पार्थ सटेक । ताहि जीतिबे योग म्वहिं रच्यो बिधाता एक ॥ सोरठा ॥ तू अधीर मतिमन्द मित्र द्रोहकर क्षुद्रनर । कियो चहतहै बन्द ममबिक्रम ये बचन कहि॥ चौपाई ॥ इन्द्र कुबेर बरुण यमराजा । जोचढ़ि आवहिं सहित समाजा ॥ तबहुं न कछू भीति मोमनमें । कहा पार्थ ममसम्मुख रनमें ॥ मोहिं न लगत भीति जेहिकारन । सो सुनु शल्य भूप भयभारन ॥ हमहैं बाण चलावत वनमें । लगो बाण गोसुतके तनमें ॥ होत धेनुसुतको बधदेखी । दीन्हों शाप बिप्रअतितेखी ॥ मचो एकदिन युद्ध ठिहारे । पतित होहिंगे चक्र तिहारे ॥ सो सुनि हम अतिशय भयलीन्हे । षटशत वृषभसहस गोदीन्हे ॥ चौदहसहस धेनुदै आतुर । दासी दास दये शतचातुर ॥ फिरि सबगेह देन तेहि लागे । तब मुनिराज दयासों पागे ॥कहेकहेहु मतिमिथ्या कबहूं । परमधर्म यहअबहूंतबहूं ॥हिंसापातक तोहिं न ह्वैहै । लहि उतकृष्ण सुगतिमुदग्वैहै ॥ इमि कहिगये सुमुनि छबिछाये । शोचत्यागि हमनिज घरआये ॥ हमहैं शुद्धहृदय यह ताते । तुमसोंकह्यो सुहितके नाते ॥ कामम निकट पार्थ धनु-धारी । बधिहौं बन्धुनसहित प्रचारी ॥ शक्रहि मैंन गनत कछु मनमें । तेहिभयदेत पार्थसों रनमें ॥ जो इमि कहत और भट कोऊ । अबलों जात कालपुरसोऊ ॥ नृपको मित्रसखा ममआ-रज । अबलों किये मित्रके कारज ॥ कहिबेहेत बचनकटुचीन्हें । प्रथमहिं तुम निबन्ध करिलीन्हें ॥ ताते बचोजात सुनि लीजै । अब यहिबिधि मति सरबर कीजै ॥ निज भुजबल हम पार्थहि जीतब । नहिं तुम बिनु बिक्रम सों रीतब ॥ दोहा ॥ सूतजके ये बचनसुनि कह्यो शल्य क्षितिनाथ । तरुणि न सुख पावति

परशि निज उरोज निजहाथ ॥ निजमुख निज बिक्रमकहे तिमि न मिलहिं यशतोहिं । कत जल्पत बिनुकाज इमि निज अजान गनिमोहिं ॥ सोरठा ॥ शल्यभूपके बैन सुनिसूतज इमि कहतभो । सुनुभूपति अगऐन समाचार निजदेशको ॥ इमि कहि कर्ण स- क्रुद्ध पृथक् पृथक् सब कहतभो । जो सुनिरहो अशुद्ध रहनि मद्रदेशीनकी ॥ रोला ॥ पूर्बनृप धृतराष्ट्रके ढिगआय ब्राह्मण एक । कह्यो जो तहँ सुने हम सो कहत सहित बिबेक ॥ परम पण्डित वृद्धब्राह्मण कह्यो सुनियेभूप । त्याज्य कुगति कुदेशज- गमें मद्रकुत्सित रूप ॥ सुरसरित सरस्वती यमुना परमपावन जौन । तीर्थजो कुरुक्षेत्र तासों दूरअस्तिअथभौन ॥ पांचनद अरु सिंधु छठवों बसत तिनकेबीच । अशुधि अनयी अरु अधर्मी वसत जहँ जननीच ॥ वटगोबर्द्धन नाम चत्वर जहँ सुभद्रक नाम । राजकुलके द्वारपै हमसुनत नितिसों आम ॥ नगर शाकल अजल सरिता मद्रये अपवित्र । बृत्तिइनकी परम निन्दित रहनि गहनि विचित्र ॥ मद्रदेशी अपटु आसव पियत गोपलखात । शाकलहसुन पाकखोजत काकसम हरषात ॥ हँसति नृत्यति जहां युवती मत्तकरि मधुपान । ऊंटखरके सरि- स स्वरसों करति सबक्षणगान ॥ सदा मैथुनमें रहतरत नहींनेकु अघात । टेरिपुरुषहिं मिलत तरुणी कियेपुलकितगात ॥ आत्म अरु परपुरुषको जहँनहीं वर्ण बिचार । देतगारी परस्पर करि कलह हास बिहार ॥ बकत ऐसोरहत युवती पुरुषजहँ सबयाम । आत्मपरातिय पुरुषको जुबिचार करत निकाम ॥ बाराह कुक्कुट मांस गोषल रसभ मांसनखात । मद्यपान न करततांको जन्म निष्फलजात ॥ भाषिइमि द्विजकह्यो नृपसों पञ्चनदके नाम ॥ चन्द्रभागाअरु शतद्रू अरु बिपासा आम ॥ इरावततबहैंबितस्ता सिंध्र छठवोंतासु । मध्यमें ते बसतपूरब पापसंचय जासु ॥ ग्रहण करत न दत्त तिनको पितर ब्राह्मण देव । जानिकुत्सित कर्मरत

अरु महाकुत्सित भेव॥ भक्ष्य और अभक्ष्य गम्यागम्यको जेहि देश। नहींनेकुबिचार जहँतहँ धर्मकोकहँलेश॥ दोहा॥ बश प्रस्थल गान्धार अरुमद्र और आरट्ट। येसबकुत्सितदेश अतिकुत्सित जनको ठट्ट॥ है मनुष्यको म्लेच्छमल देशनको मलमद्र। मल्ल सिगरे याचकनको क्षात्र पुरोहित भद्र॥ यहि प्रकार तौदेशकी कहि बार्त्ता मतिमान। गयो बिप्रनिज आशरम सो हम सुने बिधान॥ सोरठा॥ कसन कहौ अस बैन तू पतिकै तेहिदेशको। बधब तोहिं सह सैन जोऐसो फिरि कहोगे॥ महिखरी॥ सुनिसूत सुतके वचन ऐसेशल्यभूपति इमिकहे। परदोष निरखत रहत जेनरहोत सब दूषण नहे॥ द्विज बैश्य क्षत्री शूद्रकहँ नहिंहोत मूरख पटसुनो। अरु धर्म पातक कर्म कहँ नाहिं होत निजमन मधिगुनो॥ तुम अधिप अंग कुदेशके तहँ आतुरनत्यागतसुने। इमि दोष अरुगुण होत सबमें पोतमणिगण सबबुने॥ ममदेश को कथिदोषमति तुमपारथहि जीतनचहो। जिमि रहे इतउत लरत तेहि बिधि लरनको पणफिरिगहो॥ दोहा॥ इतनेमें नृपसुवन तुव दुर्योधन क्षितिपाल। उभयभटन कीन्हों क्षमित कहि कहि बचन रसाल॥ नहिं उत्तर दीन्हों करण शल्य न बोल्यो फेरि। हँसिसूतज इमि कहतभो चलोपार्थ पहँहेरि॥

महाभारतदर्पणेकर्णपर्वणिद्वि०दिनयुद्धेकर्णशल्यसंबादोनामचतुर्थोध्यायः

संजयउवाच॥ दोहा॥ इमि सम्भाषण करि तहां कर्णशल्य रणधीर। सदलशत्रुदलपहँ चलेगहेओज गम्भीर॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ केहि प्रकारको व्यूहरचि चलोपार्थ भटचण्ड। सदलपार्थ किमि बढ़ि भिरो करषि कठिन कोदण्ड॥ यहसुनिकै संजयकह्यो सुनोयथा रचिव्यूह। उभय सैनपति बढ़िभिरे बर्षत शस्त्र समूह॥ कृप कृतवरमा शाल्व तब अरु मागध नृपदक्ष। हैंसपक्ष ममसैनके रक्षक दक्षिण पक्ष॥ रहे तासु प्रतिपक्षनृप शकुनि उलूकससैन। बजवावत दुन्दुभिघने बिदितशत्रु दलजैन॥ पार्वतीय गान्धार

अरु संसप्तकगणसर्व । चौबिस सहसरथीरहे बामपक्ष गहिगर्व ॥
सक कांबोज ससान अरु यवनसमूह समस्त । रहे तासुप्रतिपक्ष
करि जीतिलेनको कस्त ॥ मध्य सैनमुखमें रह्योकर्णबीर सैनेश ।
रहे ताहि रक्षत सबै तौसुत सदल सुबेश ॥ दुश्शासन चढ़िद्वि-
रदपहँ सुभट सहित सहचैन । पृष्ठरक्ष मम सैनकोरहो बीरबल
ऐन॥रहोताहि रक्षतसदल तौसुतभूपबिशाल । तिमिअश्वत्थामा
प्रभृतरहे सर्व दलपाल ॥ इबिधि ब्यूहरचि सूतजहि ब्यूहबदन
में देखि । धर्म भूमिपति पार्थसों कहतभयो अवरेखि ॥ ब्यूह
बिरचि आवत करण तासों सहित विधान । लरो सुजय हित
यतनसों गहिरणरीति महान ॥ धर्मभूपके बचनसुनि पार्थकह्यो
करजोरि । अनुशासन जिमिदेहु तिमि युद्धकरौं शरजोरि ॥ कहे
धर्म तुम कर्णसों लरो करषि कोदंड । नृपदुर्योधनसों भिरै भीम
वर्षिशरचंड ॥ नकुल लरैवृषसेनसों सौबलसों सहदेव । दुश्शा-
सनसों भिरिलरै शतानीक बरभेव ॥ कृतबर्मासों भिरिलरैसा-
त्यकि अनुपमवीर । अश्वत्थामासों भिरै पांड्यभूपरणधीर ॥
सोरठा ॥ सहित शिखंडी बीर सुवन द्रौपदीके सबै । शायकदाय-
कपीर बर्षि सोदरनसों लरैं ॥ कृपाचार्यसों जूटिकरषि शरासन
हमलरब । धृष्टद्युम्न जय ऊटि दलरक्षत सबसोंलरि हि ॥ दोहा ॥
इबिधिरचना ब्यूहकी सुनि कह्यो वृद्ध महीप । कहो फिरि किमि
लरेबढ़िबढ़ि उभयनृप कुलदीप ॥ कहेसंजय सुनो भूपतिसबिधि
ब्यूह बनाय । सूतसुत पहँ चलोपारथ दुन्दुभी बजवाय ॥ घने
बाजन बजन लागे मढ़ी धुनि अतिघोर । लगे सनसन ठनन
घनघन चलन अस्त्र अथोर ॥ देखि आवनि पार्थकी घनजलद
सम भयदानि । कर्णसों इमि कहतभो नृपमद्रपति अनुमानि ॥
सूत सुत जेहि पार्थकहँ तुमरहे हेरततौन । चलो आवत काल
समअब करो करतबजौन ॥ होतयहिक्षण अपशकुन बहुआजु
पारथ बीर । बधिहि इतके बहुत हयगज सुभट नृप रण धीर ॥

दोहा ॥ लखो होत भूकम्प अरु सम्मुख डोलत पौन । कूजत हैं क्रव्याद मृग करत बामह्वै गौन ॥ केतु भयानक रूपह्वै ति-ष्ठत रबि ढिगजाय । काग गृध्र चहुंदिशि जुरे बोलत सम्मुख आय ॥ ध्वज कम्पत बिपरीतिगति तुरगनके चषबारि । होत भयद उलका पतन अरुण भये दिशिचारि ॥ अवशि असंख्य-न भूमिपति मरि लसिहैं भूबीच । लसत भटनको शीशचढ़ि कालसंगलै मीच ॥ चौपाई ॥ शंख भेरि आदिक बहु बाजन । की धुनि आवतहै भयछाजन ॥ बाणशब्द अरु धनु टंकारनि । गज गरजनि अतिशयभय भारनि ॥ हय हींसनि रथनेमि भयानक । औभट टेरनि पूर पयानक ॥ दोहा ॥ सुनो कर्ण अति घोरधुनि पूरत गगन समस्त । आवत अर्जुन बनदतोहिं करन सूर स-मअस्त ॥ चौपाई ॥ दामिनिसरिस ध्वजाछबि छाजत । छत्रबलाक हंससम राजत ॥ देखुकर्ण अर्जुन धनुधारी । आवतशक्रसरिस रण चारी ॥ पाञ्चालन के बिशद पताका । चहुंदिशि सोहत मनुशशिराका ॥ लखु अर्जुनके ध्वज पहँ सोहत । बानर जाहि देखि मनमोहत ॥ देखो चक्र गदाधर स्वामी । करत सूतपन केशव नामी ॥ कौस्तुभमणि सोहत उर जाके । पीत बसन तन अति परभाके ॥ श्वेततुरग अर्जुनके रथके । देखुकर्ण मर्दनमहि पथके ॥ लखु गांडीव धनुषकी कर्षनि । लखु अमोघ अबिरल शर बर्षनि ॥ हय गज भट बधि बधि महि डारत । लखु पार्थहिं आवत भयभारत ॥ पारथके बाणनसों आकुल । लखो कौरवी सेना ब्याकुल ॥ मृग समूहमें केहरि राजत । तिमि अर्जुनमम दल मधि गाजत ॥ जेहि देखन हित हेधन खरचत । सो आ-वत बाणन दल अरजत ॥ एक रथस्थ पुरुष बरदोऊ । जिन समनहिं तिहुंपुर मधिकोऊ ॥ नर नारायण अर्जुन केशव । बरणि न सकै जासु गुण शेशव ॥ आवत हय गज भट बधि डारत । अबिरल यूथप यूथबिडारत ॥ कृष्ण सारथी अर्जुन सुरथी ।

तासों लरै कौन जय अरथी ॥ संजयउवाच ॥ दोहा ॥ शल्य भूपकेबचन सुनिकरि अति राते नैन । कर्ण दयो टंकारिधनु निज सुभटन कहँ चैन ॥ सुनु भूपति तेहि क्षण तहां संसप्तक गण ऊटि । सहसन भटलागेलरन एकपार्थसों जूटि ॥ संसप्तकगणपार्थ पहँ बर्षि शस्त्र समुदाय । क्षणमें दये अदृश्य करि लाघवता दरशाय ॥ निशिपालिकाछंद ॥ तौनलखि मोदि अति सूतसूत शल्यसों । आनि हिय गर्बअतिखर्ब कौशल्यसों ॥ मानिअतिकर्म रणधर्मतिनसर्ब को । बैन सचिचैन सति ऐन करि गर्बको ॥ दोहा ॥ कह्यो कर्ण लखु मद्रपति पार्थहि बाणनछाय । संसप्तक चाहत बधन अबन सकत इतआय ॥ यहसुनिबोल्यो मद्रपति सूतजकहु अनुमानि । कौनसुभट जोपार्थकहँ बधै जंगजति ठानि ॥ इंधन डारेहोतनहिं सावित आगि गुणतौन । बधैअसंख्यन भटनकहँ पारथ बिक्रम भौन ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ लयेसंगदे बाणले युद्धनीतै । कुबक्रौभये जाहि शक्रौ न जीतै ॥ बधैताहिको काहिको बीरकूजो । लखो अर्जुनै अर्जुनैसो न दूजो ॥ लखो धर्मराजै गहेबर्मराजै । युवा सूरसो तेजकी लेजछाजै ॥ लखो भीमसेनै महाजंगजेनै । लखो शत्रुसेनै बलीजौनसेनै ॥ महाबीर माद्री तनय दोउ देखो । न जानो इन्हैं बाल ये काल लेखो ॥ लखो सात्यकै धृष्टद्युम्नादि योधै । अहैको सहैआशु जो तासु क्रोधै ॥ लखो पार्थके बाण कोजाल जैसो । नहीं कालके गालको शाल ऐसो ॥ दोहा ॥ शल्य कर्ण ते इमिकह्यो जौलगि बचन गँभीर । तौलगि संसप्तकन सो लरिपारथ रणधीर ॥ शस्त्र समूह बिदारि सब बरबाणन बानैत । बधि बिचलाय चलाजितै रहो करण धाकैत ॥ सोरठा ॥ भूपसुनो तेहिकाल तुमुल युद्ध सब ठौरमें । होतभयो बिकराल पृथक् पृथक् कबलौंकहैं ॥ यह सुनि वृद्ध महीप कह्यो कर्णतहँ किमि-लरो । सोकहु हेकुलदीप यथालरे ममपुत्र सब ॥ चौपाई ॥ सुनि-धृतराष्ट्र भूपकीवानी । कहतभयो संजय अनुमानी ॥ धृष्टद्युम्न

आदिक पांचालन। देखिसूतसुत अरिदल घालन॥ गरुड़चलै अहिगणपै जैसे। तिनपहँ चल्योबेगसों तैसे॥ कर्णहिंलखितै सबभट नायक। भिरे बेगसों बर्षतशायक॥ दुन्दुभि शंखआदि सबबाजे। तेहिक्षण तहां दुहूंदिशि साजे॥ बढ़िबढ़ि सुभटप्रचारन लागे। आयुधघने प्रहारनलागे॥ करिअतिशै बिक्रम तेहि पलमें। सूतजपैठि पाण्डवीदलमें॥ क्षणमेंबध्यो प्रभद्रक दलके। सतहत्तरि योधाबरबलके॥ भटपचीस अतिरथी गनाये। पांचालन यमलोक पठाये॥ चेदि नृपतिके अगणित योधन। बधत भयो करिधनु बिधिशोधन॥ लाघव करत वर्षिशरनीके। काटि असंख्यन शरसबहीके॥ भानुदेव कहँ यमपुर दीन्हों। चित्रसेन कहँ बिनुशर कीन्हों॥ सेना बिन्दहि बधिअति रोखो। तबनहिं बध्यो मारिशर चोखो॥ बाधि भट सूरसेन कुल दीपहि। व्यथित कियो पांचाल महीपहि॥ सोलखि कोपि रथीदश टूटे। बर्षत बिशिष कर्णसों जूटे॥ हनि दशबाण तिन्हैंबधि क्षणमें। बिलसो कर्ण कालसम रणमें॥ दोहा॥ सत्यसेन बलवान अरु भट सुषेन रणधीर। सुवन कर्णके तेरहे युगदिशि रक्षकबीर॥ पृष्ठरक्षजेठो सुवन होवृष सुवन अमान। नेताधनु सन्धान सब ज्ञाता शस्त्र बिधान॥ सोरठा॥ निजदल मर्दतदेखि उतके भीमादिक सुभट। बधकरिबो अवरेखि भिरे आयअति बेगसों॥ चौपाई॥ तिनकहँ देखि धनुष टंकारी। भीमहिबीर सुषेणप्रहारी॥ भल्ल प्रचारि काटिधनु तासू। मारतभयो सातशरआसू॥ तुरतहि भीम और धनुगाहिकै। शरहनिकाटि धनुषथिरु काहिकै॥ दशशर तासुगात में हनिकै। कर्णहि हन्यो तिहत्तरि गनिकै॥ बध्यो भानुसेनहि हनिशायक। भीमाबिदित सुभटनको नायक॥ अगणित भटन भूमिपै डार्‍यो। दुश्शासनहि तीनिशरमार्‍यो॥ कृपकृतबर्मा के धनुनोखे। काटिहन्यो बहुशायकचोखे॥ षटशर सौबलके तन दीन्हों। बिरथ उलूक पतात्रिहि कीन्हों॥ भानुसेन सुतको बध

देखी । शोकाकुल ह्वैकर्णबिशेखी ॥ काटिभीमको धनुअतिगाढ़ो ।
हन्योतीनिशर कहि रहुठाढ़ो ॥ तुरितहि भीम औरधनु लीन्हों ।
हन्यो सुषेणहि शरवरचीन्हों ॥ भिरि सुषेणको काटि शरासन ।
वरषो बिशिष भीमअरिनाशन ॥ सुवन सुषेणहि अर्दितलखिकै ।
कर्णकोपि रक्षण अभिलषिकै ॥ करषिकाठिन कोदण्ड अधीमहिं ।
मार्यो बाण तिहत्तरि भीमहिं ॥ धनुगहि बीरसुषेण अवरजो ।
नकुलहि पांच बाणहनि गरजो ॥ ताकहँ बीस बाण अनियारे ।
हन्योनकुल गिरिवेधनहारे ॥ तहँसुषेण थिरुथिरु थिरु भनिकै ।
बाण इग्यारह नकुलहि हनिकै ॥ अर्द्धचन्द्र शायकहनि आसू ।
दीन्हीं काटि शरासनतासू ॥ तुरित नकुल गहि और शरासन ।
हन्यो सुषेणहि नवशर नाशन ॥ फिरि सुषेणके सूतहि हतिकै ।
धनुकाट्यो करलाघव अतिकै ॥ तबसुषेण धनु और सुधार्यो ।
शायकसाठि नकुलकहँ मार्यो ॥ सहदेवहि षटशर हनिहरषो ।
तथा नकुल तापहँ शरबरषो ॥ करलाघव करिकरि धनुकर्षै ।
दोऊदोउनपै शरबर्षै ॥ दोहा ॥ यहिप्रकार अति युद्धतहँ कीन्हों
नकुल सुषेन । तिमि बढ़ि सात्यकिसों भिरे बलीबीर वृषसेन ।
बाणबर्षि वृषसेनके सूतहि बधि तेहिठौर । धनुध्वज काटिबध्यो
हयन सात्यकि भटशिरमौर ॥ सोरठा ॥ तुरित तौन रथ त्यागि
चलोखड्गगहि कर्णसुत । मारिबाण पणपागि सात्यकिकाट्यो
खड्गसों ॥ चौपाई ॥ बिरथ बिधनु वृषसेनहिं देखी । दुश्शासन
अनरथ अवरेखी ॥ सादर तेहि निजरथ पहँलैकै । गयोअनत
चलि मनानिरभैकै ॥ फिरि वृषसेन सुरथपहँ चढ़िकै । भीमहि
हन्यो साठिशर बढ़िकै ॥ हन्यो द्रौपदेयनके तनमें । तीक्षणबाण
तिहत्तरि क्षणमें ॥ पांचबाण सहदेवहि हनिकै । नकुलहि हन्यो
तीसशर गनिकै ॥ शतानीककहँ सातसुशायक । हन्योशिखण्डि-
हि दश दृढ़घायक ॥ धर्म भूपतिहि शतशर मार्यो । इतरनृपन
बहुबाण प्रहार्यो ॥ धनुकर्षत घन सदृश ननर्दत । भो वृष

सेनशत्रुदल मर्दत ॥ सात्यकि दुश्शासनसों भिरिकै । शायक बरषि चक्रसम फिरिकै ॥ क्षणमें विरथ बिधनुकरि तरजो । भ्रूमधि तीनिबाण हनिगरजो ॥ सुरथऔरपैचढ़िदुश्शासन । शर बर्षतभो करषि शरासन ॥ तोहिक्षणधृष्टद्युम्न रणचारी । कर्णहिं दशशर हन्यो प्रचारी ॥ भीमनकुलसहदेव शिखंडी। शतानीक सात्यकि अरिदंडी॥ द्रौपदेय अरु धर्ममहीपति। औरअनेकरथी अवनीपति ॥ करलाघवकरिकरि धनुकरषे । बाणसमूह कर्ण पहँ बरषे ॥ तहां कर्ण अति बिक्रमकीन्हों । सबके तन दशदश शरदीन्हों ॥ दोहा ॥ मंडलसम कोदंड करि अनुपम बिधि दरशाय । दियो पांडवी सैनमधि अबिरल शायक छाय ॥ मोहित करि अगणित भटन रथी तीनिशतमारि । धर्म भूपपहँ चलत भो अचले सुभटनटारि ॥ सोरठा ॥ इतके भटतेहिकाल कर्णहिं रक्षत चलतभे। उतके सुभटकराल धर्महिंरक्षत भिरतभे॥ धर्म भूपपहँजात कर्णहिं इमिआड़ेसुभट । औषधमंत्र बिभातव्याधिहि रोकतभांति जेहि ॥ तोमर ॥ फिरि कर्ण भटदृढ़ घाय । शरसेत अबिरलछाय ॥ सब पांडवनबिचलाय । तिमिचढ़ोदीरघ काय ॥ जिमिरोग कर्मज आय । नहिंघटत औषधपाय ॥ फिरि भीम आदिकबीर । धनुकर्षि बढ़ि धरिधीर ॥ लरिभये आड़त ताहि । इमिपरो गुणिसों चाहि । प्रभुकृपाते जेहि भाय । दुख कर्म जो घटिजाय ॥ करि कर्ण बहु ब्यवसाय । नाहिं सको धर्महिंपाय ॥ जिमि योग बिदको प्रान । नहिंलहतकालअमान ॥ तेहि ठौर नृप तेहि काल । भोयुद्ध अति बिकराल ॥ दुहुं ओर के भट जूटि । सब बिजय निज निज ऊटि ॥ तिमि लरे बिक्रम भौन । नहिं बनत भाषत जौन ॥ तहँ निकट कर्णहिंहेरि । नृप धर्म भाष्योटेरि ॥ तूगहत जेहिबलगर्ब । अबप्रगट करुसोसर्ब ॥ तूदुष्टताको धाम । बहुकिये कुत्सितकाम ॥ अब दर्प तेरोतूरि । मैं देतहौं करि दूरि ॥ इमि भाषि धर्म नरेश । भोहनत दशशर

सूतजहि देखि । भटभीम तेखि ॥ निज सूत ताहि । इमि कह्यो चाहि ॥ शल्यहि निहारि । चरिश्रो बिचारि ॥ दोहा ॥ धृष्टद्युम्न अरु सात्यकी सों फिरि कह्यो बिचारि । तुमरहियो रक्षत सदा धर्मनृपहि पणधारि ॥ आवत मोपहँकर्ण मैं तासोंभिरि करियुद्ध । आजु याहिबिधि करतहौं निज जयकी बिधि शुद्ध ॥ सोरठा ॥ इमि कहि धनुटंकारि घन सम गरजत सुभट मणि । बर्षत बिशिष प्रचारि चलो सूतसुतके निकट ॥ चौपाई ॥ भीमहिं आवत लखि अनुमानी । शल्य कर्णसों कह्यो सुबानी ॥ देखुकर्ण आवत यहि पलमें । बर्षत बिशिष भीम ममदलमें ॥ काल कराल सदृशभय भारत । गनेभटनको धीरजटारत ॥ अबलौं तासुरूप यहिबिधि को । लख्यो न जगतजीतकी सिधिको ॥ आवत तौबधको पण कीन्हे । लखेहु वाचिबेकी बिधिलीन्हे ॥ सुनियह बचन कर्णहँसि बोलो । भूपकहे तुम बचन अतोलो ॥ हैअतिबली वृकोदर भूपर । हैअति गहेक्रोध ममऊपर ॥ यहरहि गुप्तकीचकहि आदिक । बध्यो धीरबहुबीर प्रमादिक ॥ हैयह प्रबलबीर हम जानत । पैनिज निकट तृणै सममानत ॥ यहिकरि बिरथ बिमुखकरि देहौं । तब अर्जुनहिं मारि जय लेहौं ॥ इमिकहि कह्योचपल करिघोरे । सादरचलो भीमके धोरे ॥ यह सुनिशल्य प्रतोद उठायो । करि अति चपल तुरंग बढ़ायो ॥ धनु टंकारत बढ़िसहसेना । बजवावत दुन्दुभि जगजेना ॥ भटराधेय प्रमेय बिशारद । अति अजेय परदल भयभारद ॥ शर बर्षत घन सदृश ननर्दत । गो जहँ रहोभीम दलमर्दत ॥ तेहिबिधि भीमसेन धनुकर्षत । भिरो सेनसह बढ़िशर बरषत ॥ दोऊ बिदित बीरधनुधारी । दोऊ महाप्रबल रणचारी ॥ अद्भुत भांति शरासनकरषे । दोऊ दोउ नषै शरबरषे ॥ काटिकर्णके अगणितशायक । नवशर हन्योभीम दृढ़घायक ॥ काटि भीमको धनुष अनोखो । मारयो कर्ण बाण अति चोखो ॥ गहिधनु और भीमरणचारी । मारयोताहिबाण

अतिभारी ॥ बाणपचीस कर्ण तेहि मार्‍यो । रचि शायक कोजाल प्रचार्‍यो ॥ दोऊ पुरुष सिंह धनुधारी । दोऊ अति दृढ़बाण प्रहारी ॥ दोऊ अति करलाघव कीन्हे । दुहुंदिशि बाण जाल रचि दीन्हे ॥ दोहा ॥ अति करलाघवकारि तहां भीमबिदित बलवान । कर्ण बीरके उर हन्यो शायक बज्रसमान ॥ तासों बेधित ह्वै करण रथपैपरो अचेत । सोलखि भागो सुरथ ले शल्य सुबुद्धि निकेत ॥ सोरठा ॥ इमि कर्णहिं बिचलाय बीरवृकोदर विदित भट । ममसेना समुदाय मर्दन लागो बर्षि शर ॥ चौपाई ॥ भीमसेनको यहरणकारज । सुनि इमिकह्यो वृद्धनृपआरज ॥ चाहतदैव होतसो ऐसे । जीतैभीम कर्णकहँ जैसे ॥ संजय पाण्डव सब पाञ्चालन । मारिहि एक कर्णशर जालन ॥ यहिबिधि कहत रह्यो दुर्योधन । जीत्योताहि भीम अति क्रोधन ॥ सुनुसंजय लखि अचरज ऐसो । ममसुत कीन्हो कारजकैसो ॥ संजयकह्यो भूप तेहि क्षनमें । दुर्योधनहो ब्याकुल मनमें ॥ कह्यो सोदरनसों पण धरिकै । लरोभीमसों बिक्रमकरिकै ॥ यहसुनि क्राथ बिबित्सु सुबीरा । बिकट श्रुतर्बा दुर्धरधीरा ॥ समउपनंदकनंदसुबाहू । दुःप्रधर्षसलगुन निजलाहू ॥ धनुग्राह दुर्मद सहनामा । बातबेग जलसन्ध सुकामा ॥ ये सिगरे तौसुत दृढ़घायक । चले भीमपहँ बर्षत शायक ॥ मखकृत द्विजके करसों जैसे । आहुति चलैअग्नि मुखतैसे ॥ दुर्योधन भूपतिके प्रेरे । येसब चले भीमकेनेरे ॥ अगणित बाण काटि इन सबके । भीम बर्षि शायक बरफबके ॥ भट बिबित्सु को करिशिर छेदन । सहय बध्यो जय शब्द निबेदन ॥ बधि बिकटहिं नन्दहि बधिडारो । उपनन्दहि बधि प्रलय पसारो ॥ बधि क्राथहि यमपुर गत करिकै । अगणित भटन बध्योपण धरिकै ॥ यह लखि काहुहि बचत न जाने । ह्वै ब्याकुल हतशेष पराने ॥ मनदै सुनोभूप तेहिपलमें । हाहाकार मचोमम दलमें ॥ तौलागि चेति कर्ण रणचारी । फेरि भीमसों

भिरो प्रचारी ॥ दोहा ॥ कर्ण भीमअति भीमभट भूपति भिरितेहि ठौर । घोरयुद्ध कीन्होंमहा गहिअति गुरुतागौर ॥ दोऊदोउन पैदये बिरचि शरनको जाल । दोऊकाटे दुहुनकीभूरि शरनकी माल ॥ सोरठा ॥ करि करलाघव तत्र कर्णहन्यो तनभीमके । अति तीक्षण नवपत्र भीम सातशर तेहिहन्यो ॥ चौपाई ॥ कर्णतहांअति तुरता करिकै । बर्षो बिशिष चक्रसम चरिकै ॥ तेहिबिधि भीम शरासन करषो । बाण समूह कर्णपैबरषो ॥ अति करलाघवकरि दृढ़घायक । भीमहिं कर्ण हन्यो दशशायक ॥ घनसम गरजिसिंह सम डाट्यो । भल्लप्रहारि शरासन काट्यो ॥ तजिसो धनुभट भीम अदूषित । झेल्यो परिघ हेम मणि भूषित ॥ अशनिसमान देखि तेहि आवत । कर्णकाटि भो मगहि गिरावत ॥ तबगहि धनुष भीमरण करकस । बर्षत भयो बिशिष बहुतरकस ॥ भो अति घोरयुद्ध तेहिक्षनमें । देखिसुमन बिस्मित भेमनमें ॥ भीमहिं कर्णतीनि शरमारो । तहां भीम अति बिक्रमधारो ॥ बज्रसमान बाणअति तुरमें । मारतभयो कर्णके उरमें ॥ भिदितासों क्षणमोहित रहिकै । बरष्यो बिशिष भागुमति कहिकै ॥ केतुकाटि अतिरिससोंरात्यो । धनुषकाटि सारथिहि निपात्यो ॥ भीमबिरथ ह्वै सोरथ तजिकै । चलतभयो गहिगदा गरजिकै ॥ जायबेगसों द्विरदगरट में । बधनलगो हनिगदा करटमें ॥ सहसारोह सात शत हाथी । बधिशत रथिनबध्यो सहसाथी ॥ सहसन पैदरयूथ सँहारो । क्षण मैं तेहि हथप्रलय पसारो ॥ दोहा ॥ भीम भानुसों तपितह्वै सुनो भूप ममसैन । चरम सरिस सिकुरत भई त्यागि बीर रसचैन ॥ सोदल बिचलत देखि बढ़िरथी पांचशतधीर । लगेवृकोदर बीरपहँबर्षत अबिरलतीर ॥ चपलचक्रसमचरितहां गरुई गदाप्रहारि । भीमनिमिषमें बधितिन्हैं दयो भूमिपैडारि ॥ सोरठा ॥ सोलाखि शकुनि नरेश भयो बढ़ावत भीम पहँ । तीनिहजारसुबेश तुरगसवार उदारभट ॥ गुरुतोमर ॥ अतिबेगसों

तेजायकै । भेलरत शायकलायकै ॥ सबपैतरनपै घूमिकै । भटभीम सबसों भूमिकै ॥ चरिगरजि गरजि प्रचारिकै । अति गुरुगदाहि प्रहारिकै ॥ पगपाणि अगणित तोरिकै । उरशीश अगणितफोरिकै ॥ सबतुरग सादिन मारिकै । अरुघने सुभटन टारिकै ॥ फिरि और रथपै राजिकै । भोबाण बर्षत गाजिकै ॥ भटकर्ण तौलगि ऊटिकै । बढ़िधर्म्मनृपसों जूटिकै ॥ अति कठिन शायक बाहिकै । भोबधत सूतहिचाहिकै ॥ सोसुभट उतकेदेखिकै । बाढ़िभिरे अतिशय तेखिकै ॥ भट भीमसों गति हेरिकै । कितजात फिरुइतटेरिकै ॥ चरिचक्रके सम नाचिकै । बरबाण बर्षोयाचिकै ॥ तबकर्ण सबकहँ त्यागिकै । फिरि महा रिससों पागिकै ॥ कै चपल सुरथ अधीमपै । भोबाण बर्षत भीमपै ॥ सोदेखि सात्यकि कोपिकै । भोबाण बर्षत चोपिकै ॥ तिमिधृष्टद्युम्नहिं आदिकै । बढ़ि भिरे परमप्रमादिकै ॥ इत तनयतोभदि औतमो । हार्दिक्य सौबल गौतमो ॥ वृषसेन आदिक बीरहे । तेकिये युद्ध गँभीरहे ॥ बर शक्ति तोमर बाणकी । अरु गदाभल्ल कृपाणकी ॥ अरु परिघ पट्टिश आदिकी । झरि किये युक्ति अनादिकी ॥ तेहि समय संगर घोरभो । थिरु मारु मारयो शोरभो ॥ महि गगन आयुध पूरिगे । मरि सुभट अगणित दूरिगे ॥ भुजंगप्रयात ॥ बही शोणितोदा नदी ह्वै गहीरी । गहे बेगगाढ़ी नहीं नेकुधीरी ॥ बहैं रुण्ड मुण्डैं कटेपाणि शुण्डैं । सुबेधे हियके मरेतासु भुण्डैं ॥ लसैं जाइ सेते बसे भारतीके । खसे केतुसेते तु सेतारतीके ॥ बहैंबाण भल्लैं गदा भिन्दिपालैं । मनो कालके गालके खालचालैं ॥ दोहा ॥ बढ़ि२ भट दुहु दलनके मिलियुग समुद समान । अति बिक्रम करि करि तहां किये घोर घमसान ॥ तेहि क्षण भानु न लखिपरे शर शक्तिनकी छाँह । रहो मारिबोई जगत सबहीके मन माहँ ॥ भुजंगप्रयात ॥ किते आपने नाम औगोत बोलैं । हनैंबो हनैं बाहनैं हांकि ओलैं ॥ सहैंशेल सूधे धँसे शेल्ह

झेलैं । महा लाल से काल से युद्ध केलैं ॥ कटे मुण्ड केते अड़े रुण्ड लोटैं । गिरैं औ उठैंको उठैंभूख रोटैं ॥ अमन्दीभये यो सुछन्दी बिहारैं । अदन्दी अदन्दी न द्वन्दीन मारैं ॥ जुरे भूत पीशाचके यूथ हेलैं । चहूंधा चढ़े चाय चोगान खेलैं ॥ पियैं शोणितै औ भषैं मांस मेदैं । बली निर्बली औ भली भांतिखेदैं॥ हँसे फेरि आनैं तितै रंग ठानैं । खुशीह्वै खबीसैं करैंखानपानैं ॥ खसेउद्ध यो युद्ध ताठौर जैसो । लख्योना सुन्यो आजुलों और ऐसो ॥ सोरठा ॥ भूपमध्यदिन पाय यहिविधिको संग्रामभो । जो न सविधिकहिजाय कहोचाहिकवलों कहैं ॥ महिहरी ॥ उतजीति संसप्तकन पारथ कर्णकीदिशि जबचलो । तबफेरिसंसप्तक सकल भिरि करत भे बिक्रम भलो ॥ भटनृप सुशर्मेहिं आदि चौदह सहस अतिअनुपम गने । गुनि पूर्वको निजबैर तापहँ भये बर्षत शरघने॥ शर काटि अगणित पार्थ अगणित भटन बिनु करपग करे । गत प्राण अगणित भटन करिकरि रुण्डमुंडन महिभरे ॥ गज बाजि अगणित मारिमहिपर डारि महि भीषमकियो । फिरि शंखध्वनि करि कर्णकी दिशिचलनगति मनमधि लियो ॥ दोहा ॥ तेहिक्षण संसप्तक सकल जीवन आशात्यागि । बधिबेकै बधि जाइबे कै प्रणसों मनपागि ॥ फिरि पारथ सोंभिरि करे शायक वृष्टि प्रशस्त । घोर युद्धतेहि क्षणभयो कहत न बनत समस्त ॥

इतिमहाभारतेकर्णप० द्वितीय दिनयुद्धेयुगयामसमाप्तिर्नामपंचमोऽध्यायः॥

वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा॥ इविधि व्यवस्था युद्ध की सुनिधृतराष्ट्रनरेश । संजयसों बूझतभये संजय कहो बिशेश ॥ पारथसों जेहि विधि कियो संसप्तक गण युद्ध । यह सुनिकै संजय कह्यो नृप सुनिये सो शुद्ध ॥ चौपाई ॥ नारायण अरु कोशलबीरा । अरु संसप्तकभट रणधीरा ॥ जीवन की आशा तजि दीन्हें । भिरि अर्जुनसों अतिरण कीन्हें ॥ बध बिचारिहियमें अति हर्षै । चहूं ओरसों शायक वर्षै ॥ तहँ पारथ सब सुभटन डाटत । शक्ति श-

रासन शरअसि काटत ॥ बूली सुशर्मा नृपसों भिरिकै । बहुभट बध्यो चक्रसम फिरिकै ॥ तहां सुशर्मानृप धनुधारी । करतभयो बिक्रम अतिभारी ॥ दशशरहन्यो पार्थकेतनमें । कृष्णहिं तीनिहन्यो गुणि मनमें ॥ अति तीक्षण गुरु भल्ल सुधारचो । सोध्वजस्थ कपिके तन मारचो ॥ लागेबाण कोपिकपि गरज्यो । सोसुनि सुभटन को हियदरज्यो ॥ भीति पूरिभट मोहित ह्वैगे । सबकेचेत पराक्रम ज्वैगे ॥ अचल भये भट पुष्पितबनसे । रहे मुहूर्त युद्धनहिं मनसे ॥ ह्वै सहचेत लरन फिरि लागे । मरणमारिबेके प्रणपागे ॥ अगणित भट चहुंदिशितेझुकिकै । बाणन भिदितरहे नहिं रुकिकै ॥ रज्जु धुराअरु ईर्षा गहिगहि । गेरथपैधरि बांधौकहि कहि ॥ किते कृष्णके भुजन लपटिगे । कितेपार्थके गात चपटिगे ॥ कितनेभट तुरगन कहँधरिकै । कीन्हेंशोर मोद हियभरिकै ॥ दोहा ॥ केशव भुज उलझारि तब सबकहँ दये गिराय । पार्थ गिराये सबनकहँ करिअतिशय व्यवसाय ॥ कृष्ण प्रतोदउठाय के कीन्हेंचपल तुरंग । तहँसंसप्तक सुभटसब होतभये बदरंग ॥ लघुपातन शरवृष्टिकरि तहँ पारथ रणधीर । बधिडारचो अगणित सुभट कर्तायुद्ध गँभीर ॥ सोरठा ॥ अगणित भटन भजाय कहतभयो इमि कृष्णसों । इमिरथ धृतह्वैजाय छुटोनकोउआजु लौं ॥ प्रभुतोप्रभुता पूरिनिज बिक्रम परसादते । इबिधि छूटिरहि दूरिलखो बधतसब शत्रुभट ॥ चामर ॥ योंसुभाषि पार्थशंखदेवदत्त लै भले । कृष्णचन्द्र पांचजन्य शंखबाद्यकै भले ॥ सैन ऐनमें अचैनता महान पूरिकै । पार्थ चापखैंचि ऐंचि बाणवृष्टि भूरिकै ॥ मारि डारिदये बीर धीरतीर जेरहे । तीर घात पीरपूरि भूरि दूरिले रहे ॥ फेरि फेरि टेरि टेरि हेरि हेरि ते थिरैं । घेरि घेरि झेरिकै निशान सानसों भिरैं ॥ दोहा ॥ नागअस्त्रतजि पार्थ तहँ दीन्हें सबकहँ बांधि । पादबन्धह्वै सुभटसब सके न धनुबिधि साधि ॥ पादबन्ध करि पार्थतहँ बध्यो असंख्यन बीर । देखि

सुशर्मा नृपतितब कीन्होंक्रोध गँभीर ॥ सोरठा ॥ गारुड़ अस्त्रमहान तजतभयो अनुमानि तहँ । लखिगरुड़न दुखदान नागभगे भट छुटतभे ॥ चौपाई ॥ नागबन्धते छुटिसब योधा । लरनलगे फिरि करि अवरोधा ॥ पट्टिश भल्ल शक्ति अनियारे । भिंदिपालतोमरशरमारे ॥ गदापरश्वधबर्षनलागे । मारोधरो रटतप्रणपागे ॥ तहँपारथअति धनुबिधि डाट्यो । तिनकेशस्त्र अनेकनकाट्यो ॥ अगणित भटन कालबश कीन्हों । अगणित भट बिनुकर करि दीन्हों ॥ अगणित भटन कियो बिनु बाहन । अगणित भटन बध्यो जय चाहन ॥ अगणित भटन शीश तकि मार्‌यो । अगणितके उर उदर बिदार्‌यो ॥ अगणित धनुध्वज छेदनकरिकै । अगणित भटन बध्यो पण धरिकै ॥ अगणित योधन कियोपराजित । अगणित धर करि पग बिनु राजित ॥ काट्यो शीशक शीश बिचक्षण । अगणित बध्यो धनुर्द्धर दक्षण ॥ तेहिक्षण नृपति सुशर्मा तुरमें । मार्‌यो बाण पार्थके उरमें ॥ फिरि अति तीक्षण तीनि सुशायक । हन्यो पारथहि नृपदृढ़ घायक ॥ तिनबाणन बेधितह्वै पारथ । मूर्च्छितभयोभूलि चरितारथ ॥ सोलखिकै अति आनँद लहि लहि । पारथबध्यो गयो इमि कहिकहि ॥ इतके सुभट शोर अति कीन्हे । बाणन नभछादित करिदीन्हे ॥ भेरीशंख तूर बजवाये । कहे आजु अनुपम जयपाये ॥ दोहा ॥ तुरित चेति पारथ तहां करिशर धनुष संयोग । ऐन्द्र अस्त्र को करतभो अतिशय प्रबलप्रयोग ॥ सहसन शर तासों प्रगटि महाभयानक रूह । ह्वै पूरित सब सैनमधि मारे सुभटसमूह ॥ शस्त्र चलावनको भटन लह्योन फिरि अवकाश । द्वै मुहूर्त्त मों होतभो अयुत भटनको नाश ॥ तोमर ॥ बधि अयुत सुभट महान । भोसमित अस्त्रअमान ॥ तररहे जेहतशेष । तेबर्षिशस्त्र बिशेष ॥ ते किये अति घमसान । नहिं चहे राखनप्रान ॥ दश सहस सुरथीगूढ़ । त्रय सहस द्विरदारूढ़ ॥ अति किये संगर

तन्त्र । नहिं बनत भाषतअन्त्र ॥ तहँ पाण्डुनन्दन बीर । अति कियोयुद्ध गँभीर ॥ तौ सुवनसो सुधि पाय । बहु सुभट के समुदाय ॥ तहँ भयो भेजत भूप । जे प्रबल भीषम रूप ॥ दोहा ॥ नृप तेहि क्षणसब सैनमधि भोअति दारुण युद्ध । मारु मारु मार्‌यो मरो रहीपूरि धुनिउद्ध ॥ भुजंगप्रयात ॥ भयो घोर संग्राम सुग्राम तेहां । लरो पार्थ संसप्त कार्यार्थ जेहां ॥ लरो कर्णसेना र्णवा भर्ण तैसो । लरोभीमजे बर्ण लेपर्ण ऐसो ॥ तथा कृत्तबर्मादि शर्म्मा सुशर्म्मा । अभर्म्मा महाघोर कर्म्मा सुधर्म्मा ॥ भरे बीर पर्म्मा सहैं बाण धर्म्मा । गहैं शस्त्रकर्म्मा करैं गात बर्म्मा ॥ सोरठा ॥ यहि बिधिको संग्राम भयोतीसरेयामतहँ ॥ शोणितनदी अक्षाम बहीफेण मेदावती ॥ दोहा ॥ नृपबीततयुग यामतहँ कृप आदिक रणधीर । भिरि भीमादिक भटनसों कियेयुद्ध गंभीर ॥ चौपाई ॥ कृपहि निरोखि शिखण्डी योधा । शरबर्षत कीन्हों अवरोधा ॥ गौतमता पहँ शर झरिकरिकै । दशशर हनतभयोप्रण धरिकै ॥ शायकबर्षि शिखण्डी क्षनमें । हन्यो सातशरकृपकेतन में ॥ तेहि क्षणकृपाचार्य्य अति रिसिकै । द्रुपद तनय पहँबाण बरसिकै ॥ पलमें बिरथ बिधनु करि दीन्हों । तब असिचर्म शिखण्डी लीन्हों ॥ करतपैतरेअसि फरकावत । चलोबिप्र पहँओज बढ़ावत ॥ कृपतजि सहसनशरपग पगमें । बाणजालरचिदीन्हों मगमें ॥ सोलखि धृष्टद्युम्न रणचारी । चलो बेगसों कृपहि प्रचारी ॥ कृपपहँ जात करत शरछाजा । लखि आड्योकृतबर्म्मा राजा ॥ तब सहसेन धर्म्मनृप तक्षण । कृपपहँ चलो शिखण्डहि रक्षण ॥ कृपपहँ जात भूपतिहि देखी । आड्यो द्रोण तनय अव रेखी ॥ तब सहदेव नकुल तहँ डगरे ।तेहि आड्यो तोसुतगण अगरे ॥ सोलखिचलो भीमदृढ़ घायक । रोंक्यो ताहि कर्णभट नायक ॥ चित्रकेतुको सुतरणचारी । भूपसुकेतु बिदितधनुधारी ॥ जायतहां गौतमहिं प्रचारो । शायक बर्षि बाण बहुमारो ॥ तब

क्षणपाय शिखण्डी भागो। गो निज दलमधि भयसों पागो॥
दोहा॥ नृपसुकेतु गौतमहिं हनि तीक्षण सत्तरिबान। धनुषकाटि सूतहि हन्यो शायक बज्रसमान॥ तबकृपरिस करि धनुषगहि तीसबाण तेहिमारि। शरक्षुरप्रसों काटिशिर दियो भूमिपैडारि॥
सोरठा॥ कृतवर्मा क्षितिपाल धृष्टद्युम्नये भिरि तहां। कीन्हें युद्ध कराल घने शरनके जाल रचि॥ चामर॥ धृष्टद्युम्न आठ बाण हारदिक्यको हन्यो। हारदिक्य ताहिबाण जालमें किये ब्रन्यो॥ धृष्टद्युम्न काटिबाण जाल यादवार्य्यके। शोरकै अथोरबाणमारि घोर कार्यके॥ बाणमारि सूततासु डारिभूमिपैदये। अश्वभीत पूरिभागि दूरिजान लैगये॥ धृष्टद्युम्न जीति ताहि कौरवी दलै दल्यो। बाणजाल कालगाल शाल शोच लैचल्यो॥ चौपाई॥ सदलधर्म भूपतिसों भिरिकै। रथपर बिप्र चक्रसम फिरिकै॥ बाण जालसों गोपितकीन्हों। प्रलयकाल रोपित करिदीन्हों। सात्यकि आदि बिदित भटएकौ। नहिंकरि सकै पराक्रम नेकौ॥ सबके काटि अनगिने शायक। बध्यो असंख्यन भट दृढ़घायक॥ तब ते सबगहि अति उतकर्षा। कियेद्रोण सुतपैशरबर्षा॥ सात्यकि बत्तिस बाण प्रहारयो। धर्म नृपति सत्तरि शर मारयो॥ तीनि बाण मारो श्रुतकर्म्मा। सातहन्यो श्रुतकीर्त्ति सुधर्म्मा॥ तब द्विजकरि बाणनको दुर्दिन। सबकहँ हनत भयोशर अनगिन॥ अबिरल बाण बर्षि पणधरिकै। सबसुभटन कहँमोहित करिकै॥ अगणित हय गज भट बधिडारयो। परसेनामें प्रलयपसारयो॥ धनुष वेद बिधिके मदमात्यो। सात्यकिके सारथिहि निपात्यो॥ सोलखि धर्मभूपभय आन्यो। द्विजसों काहुहि बचत न जान्यो॥ अरुणनयन करि बदन अनैसो। भाषत भयो बिप्रसों ऐसो॥ रेद्विज पुत्र त्यागि निज कारज। परगुणगहिकत होतअनारज॥ मम सुभटन सब कौरवगनसों। देअब लरन उचित गुनि मन सों॥ तुम मम बंधुबंधुताराखे। करोयुद्धमम जय अभिलाखे॥

यह सुनिद्विजसुत हँसिचुप रहिकै। लरनलगो कलुऋजुतागहि कै ॥ दोहा ॥ तजि सम्मुख द्विजपुत्रको धर्मभूप सहसैन। मम्सेना मर्दन लगो बिदित बुद्धि बलऐन ॥ सृंजयअरुपांचालदल मधि धँसि कर्ण कराल। प्रलयकाल रोपितकियो बरणो बीरबिशाल ॥ तुवसेनामधि भीमधँसि बसिलसि रुद्रसमान। संसप्तकमधिपार्थ तिमि कियेघोर घमसान ॥ दलमर्दत माद्रीसुतनलखि दुर्योधन भूप। अतिविक्रम करिलरितिन्हैं करतभयो गतरूप ॥ सोरठा ॥ अर्दित तिन्हैं निरेखि धृष्टद्युम्न सेनाधिपति। शर बर्षतअदरेखि भिरो सुयोधन नृपतिसों ॥ चौपाई ॥ ते युगबीर घनेशर बाहक। जीतिन शीलयशी जय चाहक ॥ भूरिपराक्रमके बल सागर। भीषम युद्ध किये भटनागर ॥ बारअनेक भयेधनुकाटत। शायक काटिभये महिपाटत ॥ गातनमें शर भूरिहने ताकि। भागुनभागु नबांचत योंबकि ॥ दोहा ॥ अति बिक्रम करिद्रुपदसुत शायक बर्षि अनेक। धनुष काटितौसुत नृपहि बिरथकियो गहिटेक ॥ नृपहि बिरथ लखि दंडधर निजरथपर बैठाय। अनतजाय पर भटनसों लरतभयो शरछाय ॥ सोरठा ॥ तेहिक्षण सूतजबीरधँसि पांचालन भटन मधि। बधतभयो रणधीर षोड़श बरणे अति रथिन ॥ चौपाई ॥ अगणित बध्यो तुरग असवारन। अगणित बध्यो भटन सह बारन ॥ अगणित पैदर यूथ सँहार्‍यो। अगणित ध्वजरथ रथिन बिदार्‍यो ॥ जिमि दावानल बिलसैबनमें। तिमितहँ कर्ण लसतभो रनमें ॥ जे गहिगर्ब सामने आये। ते सबभये कालके खाये ॥ महाराज सुनिय तेहिपलमें। हाहाकार मचो परदलमें ॥ लखि अर्दित पांचाली सेना। सदल धर्मभूपति जगजेना ॥ द्रौपदेय जन्मेजय राजा। सहदेव नकुल सपुत्रस-साजा ॥ धृष्टद्युम्न येसिगरे योधा। किये सूत सुतको अवरोधा ॥ भोअति घोर युद्ध तेहिठाईं। अबसब कहत न बनतगोसाईं ॥ यथाकर्ण परदलमधि धँसिकै। पार्‍यो प्रलय रुद्रसम लसिकै ॥

तिमि ममदल मधि धँसिरण कर्कश । पार्यो प्रलय भीमकरि सर्कश ॥ बधि अगणित हय रथ गज गामी । रच्यो रुधिर को नद जयकामी ॥ तिमि कृतबर्मा सात्यकि आदिक । दुहुंदिशिके सबसुभट प्रमादिक ॥ रोपेप्रलय दुहूंदिशि माहीं । सोबिधिवत कहि निबरत नाहीं ॥ संसप्तकन जीति उतपारथ । कह्यो कृष्णसों गुणि निज स्वारथ ॥ सूत सुवन ममसैन सँहारत । सादर तहां चलो भयभारत ॥ संसप्तक हतशेष पराने । अब न सकत फिरि अतिभय साने ॥ दोहा ॥ यह सुनिकै केशवकहे मर्दिकौरवीसैन । फेरि चलेहु राधेयपहँ सुनो शत्रुदल जैन ॥ इमि कहिकै ममसैन मधि चपल सुरथ लेजाय । सारथिपन की कुशलता करतभये गहिचाय ॥ सोरठा ॥ धँसि ममदल मधिबीर भटकपि केतु किरीटधर । बधि अगणित रणधीर अर्पिदयो अपसरन कहँ ॥ चौपाई ॥ महाराज तो सुत तेहिक्षनमें । गुणि निजहारि बिकलभे मनमें ॥ संसप्तकन दयो अनुशासन । तेसिगरे फिरि कर्षि शरासन ॥ चौदह सहस सुभट हय सादी । सहस रथीबर बीर प्रमादी ॥ द्वैशत सहस सुबीर पदाती । द्वैशत गजारोह अरिघाती ॥ घेरि पारथहिं आयुधबरसे । घेरेरबिहि जलदसम दरसे ॥ पारथ बर्षिबाण बर फबके । काटि असंख्यन आयुध सबके ॥ अङ्गभङ्ग अगणित भटकीन्हों । बहुभट बिरथ बिधनु करिदीन्हों ॥ नृपति सुदक्षिण को लघुभाई । बध्यो ताहि अति ओज बढ़ाई ॥ दश हजार योधाबधि पलमें । पारतभयो प्रलय ममदलमें ॥ हाहा धुनितेहि थलमें सुनिकै । सुवन द्रोणको अनरथ गुनिकै ॥ सुरथ बढ़ाय सिंहसम हेरत । पार्थ आउ ममढिग इमि टेरत ॥ आइ भिरो पारथसों तैसे । करिवर भिरै द्विरदसों जैसे ॥ धनु बिधि सिखे द्रोणसों दोऊ । जिन्हैं समान और नहिं कोऊ ॥ तेयुग सुभटभिरे जब राजा । बिस्मितभोतब सुमन समाजा ॥ दक्षिणबाम भागफिरि फिरिकै । टेरिटरि सन्मुख थिरिथिरिकै ॥ दोऊ सुभट

गहे उतकर्षा । करतभये बाणन की बर्षा ॥ दोहा ॥ द्रोण तनय तेहिक्षण कियो अतिबिक्रम क्षितिपाल । जैसो बिक्रम नहिं कियो द्रोणौं काहूकाल ॥ करिअद्भुत बिधिबाणझरि ह्वै अति भीषम रूप । करलाघवता पार्थकी दयो शिथिल करिभूप ॥ सोरठा ॥ कृष्ण पारथहि तत्र गोपितलखि शरजाल मधि । अतिआनँद भोअत्र सुर समूह शंकित भये ॥ रतीछंद ॥ तहँ केशव बिप्रको बिक्रम देखि । अरु पारथ की ऋजुता अवरेखि ॥ इमिभाषतभे करि लोचन लाल । कत बिक्रम हीन भये यहिकाल ॥ भुजबेधि गयेके गयो धनुटूटि । केहिहेत गयो तुव धीरज छूटि ॥ गुरुकोसुत जानिधौंगौरव देत।गुरुबिक्रमके जेहि जीति नलेत॥दोहा॥केशवके येबचन सुनि पारथ धनुटंकारि। कुपित रुद्रसम ह्वै।बिशिखबर्षौ सुजय बिचारि ॥ बाणजाल सब काटि अरु चारु शरासनकाटि। बज्र सरिसशर बिप्रके उरमाधि मार्‍यो डाटि ॥ बेधित ह्वै गत चेतद्विज रहो ध्वजासों लागि । सो निरेखिकै सारथी गयो सुर-थलैं भागि ॥ सोरठा ॥ इमि बिप्रहि बिचलाय पार्थभयो मर्दत स-यन । प्रगट होतभो आय भूपति फलतो कुमतिको ॥ चौपाई ॥ पार्थहि निजदल मर्दत लखिकै। दुर्योधन क्षितिपाल बिलखिकै ॥ कह्योकर्णसों ह्वै अति आरत । आजुपार्थ मम सबदल मारत ॥ मद्रमहीप आदिसब राजा । सुनो बचन मम सहित समाजा ॥ बड़ेभाग क्षत्री धनुधारी । ऐसोयुद्ध लहत हितकारी ॥ बधिपाण्ड-वन भरो सुख उरमैं । कै बधि जाय बसौ सुरपुरमैं ॥ उभय प्रकार धर्मबिधि साधन । करो महाबिक्रम अवराधन॥यहसुनि सबयोधा सुखपाये। ह्वैसरोष दुंदुभिबजवाये॥सोसुनिअश्वत्थामा नागर।कह तभयोबर बचन उजागर ॥धृष्टद्युम्न अधरम रण करिकै । ममजन कहिमारो पणधरिकै ॥ अवशि आजु ताको बध करिहौं । परसेना माधिबिपदा भरिहौं ॥ सो सुनिकैसब योधा हरषे । शत्रु सैन माधि आयुध बरषे ॥ तेहिक्षण भयो युद्धअतिभारी । मरेअसंख्यन भट

रणचारी ॥ करपग रुण्ड मुण्ड मय धरणी । रुधिर धारसोंभई विचरणी ॥ जयकरी ॥ उत अपार मम सेना जीति । पार्थ कृष्ण सोंकहे सनीति ॥ लखो दिवस को तीजो भाग । बीतन चहत सुनो वरभाग ॥ भूपहि लखे बिना मन मोर । है चिन्तित ताते वहि ओर ॥ चलो शीघ्र भूपतिहि निरेखि । लरब कर्णसों जय अवरेखि ॥ यह सुनि सुरथ हांकि कुलदीप । चले रहो जहँधर्म महीप ॥ कर पग रुण्ड मुण्ड मयभूमि । उठत गिरत घायल भट घूमि ॥ देखत जायधर्मके पास । लखि भूपहि लहि परम सुपास॥ लगो लरन मम दलसों जूटि । बाधिसुभटन जय लीबो ऊटि ॥ तेहिक्षण भयो घोर संग्राम । कटे असंख्यन भट बलधाम ॥ सशयन धृष्टद्युम्न भटउद्ध । लागो करन कर्णसों युद्ध॥ हनि क्षुरप्र शरसूतज आसु । दीन्हों काटि शरासन तासु ॥ धनुष काटि मास्यो नव बान । तौलगि सो भट गहि धनुआन ॥ मारत भयो कर्णके गात । सत्तरि शायक अतिअवदात ॥ रण महिकी भीषमता देखि । कहे कृष्ण हिय करुणा भेखि॥ पार्थलखो रण महिको रूप । महा भयानक भई अनूप ॥ मरेपरे कहुँ द्विरद अठाम । मरे असंख्यन हय छविधाम ॥ करपग रुण्ड मुण्ड मयभूमि । गिरत उठत घायल भट घूमि॥घायल किते करत जलपान । किते पियतजल त्यागत प्रान ॥ कितने मारु मारु रटलाइ । रहे बातबश हैहत चाय ॥ कितने बीर परस्पर टूटि । रहे मारिमार महिपरि जूटि ॥ कितने आयुध कियेउदाव । भिदि गिरिपरे गहे रणभाव॥ पट्टिश भल्ल गदाके घात॥कितने मरे पाय शरपात ॥ कितने परे करिनके शुंड । परे अनगिने मरे बितुंड ॥ तुरगन सहित तुरँग असवार । अगणित मरेपरे सरदार॥दोहा॥ चन्दन चर्चित माणिन के भूषण भूषित भूरि । दोर्दंड आयुधन सह परे सुपरमा पूरि॥ मुक्तिका ॥ परे शोणितोदा नदी में लसैं गात । भरे भूरिभासो चहूँ धिडरे ख्यात ॥ मनो भारतीमें पटेहैं कटे काठ । दरेजान के हैं

खरेते ध्वजा लाठ॥ परे पंक्ति शक्तीनके भूरि हैं भात। गदा भ-
ल्लयष्टी अनष्टी लखो ताल॥ परे तोमरैं भिंदिपालैं कितेवान।
परे सांप सेचापहैं तापके थान॥ दोहा॥ कटे चक्र बाजी मरे रथपरि
शोणित बीच। लसै मनोलटिफटिपरी नाव भारती कीच॥ कर
णधारधर सारथी बह्योरुधिरकीधार। रथी बिकल लहिगहि रह्यो
ध्वजा यष्टि गुणदार॥ भुजंगप्रयात॥ किते रुण्ड बैठे लहैं तो
न भेलैं। कितेशत्रुके मुंडलै कुंडमेलैं॥ किते औरके मुंडलै मुंड
लावैं। किते खड्गलीन्हें चहूंओर धावैं॥ किते रुण्डके पाणि
औ पाय डोलैं। किते क्रुद्धबाहैं किये ऊर्द्ध ओलैं॥ किते युद्धकी
शुद्धिकै रुन्धि बैठें। जुपैठे चहैंसे गहैं ऐड़ि ऐठैं॥ किते रुण्डहैं
केतुसे क्रूरकारे। कितेशङ्कके चापसे बक्रडारे॥ किते मुंडहैं राहुसे
राजनी पैं। किते खंड मार्तण्ड से चंडदी पैं॥ किते मुण्ड हैं कु-
ण्डलौ कुण्डधारे। किते कुण्डलौ कुण्डके भुण्डडारे॥ किते मुण्ड
के तापसे आख ह्वैगे। किते आल है लाल ह्वै भाल ह्वैगे॥ दोहा॥
गदा यष्टि तोमर खडग भल्लपरश्वध बान। शक्तिआदि आयु-
ध अखिल परे अमन्द अमान॥ कवित्त॥ केते मेद मज्जा मांस
शोणितके कीचपरे डरे दावानल बीच दारुसे लखात हैं। केते
नके गातचलै ऊरध रुधिरधारं रगबारि भार से फुहारे से बि-
भात हैं। केते भटकत पटकत गात मरेजात जैसे चटकत जे
उपल आगिपात हैं। कितने सुभट परे शोणित में ऊबि ऊबि
ढबढब करिकैबेढब डूबिजातहैं॥ दोहा॥ मणिमय भूषण नृपन
केपरे किरीट अनेक। लखोपरे अगणित डरे मरेनृपतिगहिटेक॥
सोरठा॥ यहिप्रकार रणभूमि दरशावत प्रभुपारथहि। चपलहय
नकरिघूमि गयेधर्मनृपके निकट॥ दोधक॥ देखिमहीपति आनँद
ओले। पारथसों प्रभुयों हँसिबोले॥ पारथधर्म महीपहिदेखो।
हैअतिपूरित कोपबिशेखो॥ लै दल हयदल पैदलभारी। जात
चलो नृपजूह निहारी॥ सात्यकि आदिगणैमम योधा। तेसँग

जात कियेअवरोधा ॥ दोहा ॥ धृष्टद्युम्न आदिकभटन लखोकरत अतियुद्ध । बढ़िबढ़ि दुहुंदिशिकेसुभट लरतमरत अतिक्रुद्ध ॥ तोटक ॥ लखुपारथ भीमउदय रविसो । परसैनदिशा दिवमेंप्रबिसो ॥ तमतोम सुबीरन नाशतहैं । दुर्योधन चौरहि शासतहैं ॥ भटयूथ कुमोदिनको दुखदै । निजसैनिक कौलनको सुखदै ॥ गज सागर जीवनशोषतहैं । जयबारिसकी बिधिपोषतहैं ॥ दोहा ॥ लखुपारथ सूतज प्रबल गरजतमेघ समान । शृंजयपांचालन बधत बरषि बारिसम वान ॥ देखोपारथ द्रोणसुत टंकारतकोदण्ड । पांचालनपहँ जातहै मारतएडकोचएड ॥ जयकरी ॥ यहिबिधि कहत सुनोअभिराम । केशव अर्जुन सुखमाधाम ॥ जाय धर्म भूपतिकेपास । लहि भूपहि लहिपरम सुपास ॥ लगेलरन मम दलसों जूटि । बाधि सुभटन जयलीबोऊटि ॥ तेहिक्षण भयोघोर संग्राम । कटे असंख्यन भट बलधाम ॥ ससयन धृष्टद्युम्न भट उद्ध । लागो करन कर्णसों युद्ध ॥ दोऊ गणे बिदित बाणैत । दोऊ धीर धुरीन धकैत ॥ दोऊ बरषि दुहुनपैबान । कीन्हें तहां कठिन घमसान ॥ हनिक्षुरप्रशर सूतज आसु । दीन्हों काटि शरासन तासु ॥ धनुषकाटि मार्‍यो नवबान । धृष्टद्युम्न तबगहि धनुआन ॥ मारतभयो कर्णकेगात । सत्तरि शायकं अति अवदात ॥ तापहँ कर्णदयो शरछाय । बरषो बिशिख तीन दृढ़घाय ॥ करिताके बधको अनुमान । कर्ण चलायो बाण अमान ॥ बज्र समान जात लखिताहि । सात्यकि काटिदियो शरबाहि ॥ दोहा ॥ निज अमोघ शरव्यर्थलखि अतिरिसगाहि राधेय । भयोसात्यकि सुभटपहँ बर्षतबाण अमेय ॥ तिमिसात्यकिभटकर्णपहँ बरषोबाण अथोर । यहिप्रकार दोउसुभट कियेयुद्धअतिघोर ॥ सोरठा ॥ इतनेमेंतहँआय अश्वत्थामा बिदितभट । देतभयो शरछायधृष्टद्युम्न सैनेशपहँ ॥ चौपाई ॥ शरबर्षत इमिटेरिसुनायो । आजुकालतो सम्मुखआयो ॥ जोक्षणएक थिरतममघोरे । तौयमलोक जात

मनमोरे ॥ भागिबचैकै पार्थबचावै । नातरु द्विजबधको फलपावै ॥ सुनि अश्वत्थामाकी बानी । बोलोधृष्टद्युम्न अभिमानी ॥ द्रोणाहिं बध्यो बजाइ सुभेरी । तोकहँ बधतमोहिं का देरी ॥ इमि कहि धृष्टद्युम्न दलनायक। भयो बिप्रपहँ बर्षत शायक॥ इमिभे उभयबीरशर बर्षत । कोऊभयो न नभदिशि दर्शत ॥ बिबिध भांतिसों धनु बिधिठाटे । अगणित शरन शरन सोंकाटे ॥ करि लाघव क्षत्री अरिनाशन। दियोबिप्रको काटिशरासन ॥ तुरतहि बिप्र औरधनु गहिकै । बर्षोबिशिख भागुमति कहिकै ॥ मारि क्षुरप्रवाण अतिचोखो । काट्यो तासुधनुष अतिनोखो॥धृष्टद्युम्न तबगदाचलायो । बिप्रबीचही काटिगिरायो॥ तुरगनमारि काल बशकीन्हों । सूतहिबाधि यमपुर पथदीन्हों॥ धृष्टद्युम्नतब सोरथ तजिकै । खड्गचर्म गहिचलो गरजिकै ॥ तबशरबर्षि बिप्रधनु धारी ।काट्यो खड्गचर्म रणचारी॥फिरि अगणित शायकतेहि हनिकै मोहित समकरिबिलसो बनिकै ॥ दोहा ॥ करितेहि मोहित धनुषतजिगहि तीक्षणतरवारि।कूदिसुरथतेचलतभोबधिबोतासु बिचारि ॥ यहलखि केशव पार्थ सों कहेबिप्र जयचाहि । द्रुपद सुतहि मारन चहत बेगि बचावो ताहि ॥ इमिकहि केशव बेग सों गये सुरथलै तत्र। पार्थ बिप्रके गातमें हन्यो अनेगनिपत्र ॥ अर्जुनके बरशरनसों ह्वै बेधित द्विजबीर । फिरि रथपैचढ़ि धनुष गहि बर्षन लागो तीर ॥ सोरठा ॥ तहां बेगसोंजाय भटसहदेइ उदारमति । रथपैलये चढ़ाय धृष्टद्युम्न रणधीर कहँ ॥ चौपाई ॥ गहिअति क्रोध बिप्र उतकर्षो । अबिरल बाण पार्थपहँ बर्षो ॥ बहुशर काटि पार्थ तहँ तुरमैं । बरशर हन्यो बिप्रके उरमैं ॥ ह्वै बेधित मूर्च्छासों पगिकै। द्विजभटरहो ध्वजासों लगिकै॥सोलखि सूतसुरथ लैभागो । पारथ सुभटन मर्दनलागो ॥ भूपति सुनो भीमतेहि पलमैं । अति बिक्रम कीन्हों ममदलमैं ॥ बध्यो असंख्यन गज मतवारे। अगणित करभुज शीश बिदारे ॥ अगणित

भटनविरथ करिसारयो । अगणित पैदर यूथसँहारयो ॥ अगणित तुरगतुरग असवारन । बध्योमारिशिर शिलाबिदारन ॥ येरणकर्म भीमकेगाढ़े । देखिकृष्णपारथ रहिठाढ़े ॥ अनुपम सुभट जानि मुदलीन्हें । केशव बहुत प्रशंसाकीन्हें ॥ इमि निजदल मधिभीमहिंगाजित । देखिदेखि निजसैनपराजित ॥ करिअतिक्रोधकर्ण धनुकर्षत । चलो भीमपहँ शायक बर्षत ॥ सोलखि उतके भट रणचारी । बढ़ि सूतजसों भिरेप्रचारी ॥ धृष्टद्युम्न सात्यकि भट नागर । जन्मेजय भूपति बलसागर ॥ सुभटशिखण्डी अमरषपूरे । और प्रभद्रक योधाखरे ॥ तिमि यहिदिशिते योधाबढ़ि बाढ़ि । तिनसोंभिरे क्रोधसोंमाढ़िमाढ़ि ॥ दोहा ॥ भिरोशिखण्डी कर्णसोंभिरेनकुल वृषसेन । चित्रसेनसों भिरतभे धर्मभूप जयलेन ॥ भिरोदुशासनसों गरजि धृष्टद्युम्न रणधीर । भिरिउलूक सहदेव येकियेयुद्ध गंभीर ॥ सोरठा ॥ सात्यकि शकुनिनरेश अति संगर कीन्हेतहां । युधामन्यु भटबेश गौतमसोंभिरि लरतभो ॥ चौपाई ॥ उतमौजा कृतबर्मा भिरिकै । घोरयुद्ध कीन्हेतहँ थिरिकै ॥ भीमसेन बिचरत कुरुगणमें । रहोप्रलय पूरित तेहिक्षणमें ॥ कर्णतहां अतितुरतालीन्हो । बिरथाबिधनुष शिखण्डिहि कीन्हो ॥ करिअतियुद्ध अरथधनुह्वैकै । भगोशिखण्डी बचब न ज्वैकै ॥ बिमुख शिखण्डिहि करिजगजेना । सूतजभो मर्दत परसेना ॥ भटउलूक अतिविक्रम करिकै । भिरिसहदेव सुभटसों लरिकै ॥ बिरथ बिधनु ह्वै रणतजि भागो । और सुरथ चढ़ि बिचरन लागो ॥ शकुनि सात्यकी भिरि तेहिठाईं । अति संगर कीन्हें सुनुसाईं ॥ लरि तासों बजवावतबाजा । भगो बिरथह्वै सौबल राजा ॥ तासुत भूपभीम अतिबलसों । करिअतियुद्ध भगो तेहिथलसों ॥ कृपाचार्य्य बरणों भटतासों । युधामन्यु नृपलरि पुरतासों ॥ ह्वैकै बिधनु बिकलह्वै लजिकै । गोनिजदलमधि सम्मुख तजिकै ॥ उतमौजा भूपति कृतवर्मा ॥ घोरयुद्ध कीन्हें त्यहिथर्मा ॥ कृतबर्माके शरसों भिदिकै ॥ सोनृप

मूर्च्छितरहो ध्वज छिदिकै॥ भागो सूत सुरथलै सादर। गोनिज दल माधिकै मनकादर॥ दोहा॥ महाराज यहिविधि भयो घोर युद्ध तेहियाम। सुनतरहे जिमि पूर्वभो देवासुर संग्राम॥ ऐसो भीषमयुद्ध लखि शकुनि दुशासन बीर। गजानीक सहगर्जिकै चले भीमके तीर॥ सोरठा॥ तोसुत भूप अधीम त्यहिक्षण तासों लरतहो। तेहिभगाय भटभीम गर्जिचलो गजसैनपहँ॥ तोमर॥ तहँ भीमधनु टंकारि। बहु दिव्य अस्त्र प्रहारि॥ गजसैनमें तेहि काल। भो करत कर्म कराल॥ बहुकिये कर पग क्षीन। बहुकिये दशन बिहीन॥ बहुबधे ग्रीवाफारि। बहुबधे कुम्भ बिदारि॥ शरबज्र सरिस बिचारि। बहु गजनके उरमारि॥ गतप्राणकरि पणधारि। भो देत महिपै डारि॥ बधि गजारूढ़ अनेक। भो डारिदेत सटेक॥ गहि भूरि भयको भार। गज करतभे चिक्कार॥ धुनि महा आरत छाय। भगिचले गज समुदाय॥ बहु बमत शोणित नीर। तहँखरे पूरित पीर॥ मनु कढ़त सानु अगार। बहु भारतीकी धार॥ तहँ भीम योधा पर्म। नृप कियो जो रण कर्म॥ नहिंजात भाषो तौन। मन चहत रहिबो मौन॥ तेहि समय पार्थ अमान। भो करत अति घमसान॥ गज बाजि सु-भट समूह। भो बधत तजि शरजूह॥ तेहि ठौर भू भरतार। भो महा हाहाकार॥ दोहा॥ भीम पार्थको निरखिकै अति रण कर्म कराल। सदल धर्मनृप पहँ चलो दुर्योधन क्षितिपाल॥ धर्मनृपति पहँ भीर लखि सदल नकुल सहदेव। भिरे भूपकी सैनसों धृष्टद्युम्न बरभेव॥ सोरठा॥ धर्मभूप पहँ जात अर्धसैन सह नृपहि लखि। भीम सुभट अवदात गयो प्रचारत ठौरतेहि॥ चौपाई॥ एक क्षोहिणी सेना परकी। नृप पहँ आवत लखि बल बरकी॥ शायक बर्षि कर्ण धनु धुनिकै। आड़त भो सबकोबध गुनिकै॥ दुर्योधन भूपतिसों भिरिकै। भट सहदेव चक्रसम फिरिकै॥ तीस बाण भूपतिके तनमें। मार्यो नृपको बध गुणिमनमें॥

रुधिरभरो भूपतिहि निरेखी । कर्णबीर अनरथ अवरेखी॥ करि अविरल शर झरि सब थलमें । बध्यो असंख्यन भटपर दल में ॥ जेहि विधि दावानल लपटन सों । दाहै बिपिनजाल झप टनसों ॥ तथा कर्ण शरझरिके झारण । बध्यो असंख्यन नर हय वारण ॥ दशदिशि बाण जालसों मढ़िकै । चलोधर्म भूपति पै बढ़िकै ॥ धर्मभूप तेहि देखि प्रचारे । तीक्षणबाण पचास प्रहारे॥ अगणित बाण बर्षि ताऊपर । दिये डारि बहुभट बधि भूपर ॥ तब सूतज अतिबल बिस्तार्‍यो । अगणित बाण भूपतिहि मार्‍यो ॥ तिनबाणनसों बेधित ह्वैकै । नृपति युधिष्ठिर धीरज ग्वैकै॥ कहे सारथीसों मनभाई । सुरथचलाइ अनतचलु भाई ॥ यहसुनि सूत सुरथ लैभागो । कर्ण शत्रुदल मर्दन लागो ॥ धरु धरुजान न पावै बकि बकि । इतके सुभट चलेतेहि तकितकि ॥ दोहा ॥ सात सहस कैकय सुभट अरुपांचाल अनेक । आड़े तिन मम भटन कहँ गहि जीतनकीटेक ॥ अतिकर लाघवकरि तहांकर्ण पराक्रम ओक । कैकय भटबधि पांचशत भोभेजत यमलोक ॥ सोरठा ॥ लखिमर्दतनिज सैन धर्मनकुल सहदेव फिरि । शरबर्षत बलऐन भिरेसूतके सुवनसों ॥ तहँ सूतज जयऊटि बर्षिबाण चरि चक्रसम । धर्म नकुलसों जूटि बिरथ बिधनु करि देतभो ॥ चौपाई ॥ बिरथ बिधनु ह्वै ते चरिपथपै । गे सहदेव सुभट के रथपै ॥ तिन्हैं विरथ लखि शल्य महीपति । कह्यो कर्णसों बाणी दीपति ॥ अति सुकुमार भूपसों भिरिकै । सूतज कहा लरत इत थिरि कै ॥ जासु जीतिबेको करि शोधन । पाल्यो तोहिं महीप सुयोधन ॥ तेहि पारथ सों भिरि लरुभाई । प्रगट होय जहँ तो मनुसाई ॥ कुन्तिहिबर दीन्हेंसो तजिकै । भूपहि चाहत बधन गरजिकै ॥ भीम सुयोधन नृपसों लरिकै । चाहत बधन कालसम चरिकै ॥ बेगि बचाउ नृपहिं तहँ चलिकै । भीम पराक्रम नदमें हलिकै ॥ यह सुनि कर्णकह्यो उत चलिये । गोतहँ शल्य गहेगति मलिये ॥

कर्णकाल के मुखसों काढ़िकै। भूपति महाशोचसों मढ़ि कै॥ तीक्षण शर घातनसों पीड़ित। जायसुडेरामाधि अतिव्रीड़ित॥ रथसों उतरिसेजपहँ परिकै। कह्योनकुलसों धीरजधरिकै॥ गयो भीमपहँ कर्णअकादर। तुमयुगबन्धु जाहुतहँसादर॥ यहसुनि और सुरथपै चढ़िचढ़ि। तेगहिगर्ब गयेतहँ बढ़िबढ़ि॥ भट अश्वत्थामा तेहिक्षनमैं। भिरिपारथसों गर्बितमनमैं॥ दिव्य शरनकी बर्षाकरिकै। अतिरणकियो क्रोधसों भरिकै॥ दोहा॥ अक्षशरासनपक्षमें दक्षउभय रणधीर। लक्षपरस्पर करिभयेबर्षत अबिरलतीर॥ अतिबिक्रमकरि फाल्गुन काटिशरनके जाल। द्रोणतनय भटसिंहको काट्यो धनुष बिशाल॥ सोरठा॥ नृपतब बिप्रअमान अतिरिसकरि गहि औरधनु। अस्त्रअइन्द्र महान तजतभयो भटपार्थपहँ॥ चौपाई॥ तेहिक्षणपार्थ सुभटबलभारो। अतिकर लाघवता बिस्तारो॥ सानँद अस्त्रअइन्द्रहि त्यागो। अस्त्रअइन्द्र बारिमुदपागो॥ त्यागयोजौन अस्त्र द्विजनायक। तजिसोअस्त्र पार्थदृढ़घायक॥ कीन्होंतौन अस्त्रको बारण। पार्थ सुभट बरव्यूह बिदारण॥यहिप्रकार दोऊपणधरिकै। दिव्यशरन की बर्षा करि कै॥ महा युद्ध कीन्हें तेहि क्षनमें। जो लखि सुर बिस्मितभे मनमें॥ करिकर लाघव अश्वत्थामा। शायक तीनि परम अभिरामा॥ हन्यो कृष्ण के दक्षिण भुजमें। लखि पारथ अति अघगुणि द्विजमें॥ बर्षिबाण तुरगन बधिडाऱ्यो। गुरुसुत जानि न तेहिशर माऱ्यो॥ बर्षि असंख्यन अबिरल बाणन। बध्यो अनेगन सुभट अमानन॥ रथी सारथी भट हयसादी। अगणित बध्यो गजस्थ प्रमादी॥ तौलगि बिप्र हयन करियो- जित। धनु टंकारि बर्षिशर ओजित॥ भिरो पार्थसों गरजि प्रचारत। जय लीबोबहु भांति बिचारत॥ शायक अक्ष बक्षमधि माऱ्यो। तहँ पारथ अति रिसि विस्ताऱ्यो॥ शायक बर्षि मा- रिशर चोखो। काट्यो द्विजको धनुष अनोखो॥ तब द्विजतज्यो

परिघ अतिभारी । काट्यो ताहि पार्थ धनुधारी ॥ तबद्विज और शरासन कर्ष्यो । अविरल बाण पार्थ पहँ बर्ष्यो ॥ शतशर केशवके तन मारे । पारथ कहँ त्रयशंत अनियारे ॥ तहँ पारथ अति कोपित ह्वैकै । बध्यो तासु सूतहि बिधि ज्वैकै ॥ नृप तेहि समय द्रोणसुत योधा । आपुहयनको करि अवरोधा ॥ पार्थ कृष्णपै शरकी वर्षा । करत भयो गहि अति उतकर्षा ॥ सो लखि सबभट अचरजमाने । द्रोणसुतहि बहुबार बखाने ॥ सोलखि हँसिपारथ रणचारी । काटिदयो बरबाग बिचारी ॥ ह्वैअबन्ध हय रथलैभागे । भगेअसंख्यन भटभयपागे ॥ तेहिक्षण पार्थ वर्षिशरस्हरे । अगणित भटनमारि महिपूरे ॥ हाहाकार मचो ममदलमें । कोउधिर नरहो निजथलमें ॥ तिमिपांचाल भटन केमारे । नृपममसुभट भगेभयमारे ॥ सोलखि दुर्योधन नृप आरज । कह्योकर्णसों निजजय कारज ॥ ममदल भगतदेखि यहिक्षनमें । तुमनहिंकानि गहत कछुमनमें ॥ यहसुनि कर्णमद्र रणपतिसों ॥ कहतभयो इमिगौरवअतिसों । हेनृपपुरुषसिंहमुद लीजे । अबतुरगन अतिचञ्चल कीजे ॥ धँसिपरदलमें ओज बढ़ाई । लखोमोरि बिक्रमप्रभुताई ॥ इमिकहि बिजयनाम धनु कर्ष्यो । शत्रुसैनपर शायकबर्ष्यो ॥ दोहा ॥ भार्गव अस्त्रअमोघको करिप्रयोग तेहिकाल । भोबर्षत अरिसैनपै कोटिनशर बिकराल ॥ केयकअर्बुद बिशिषबरशत्रुसैनमधिडारि । अगणित हयगजभटनबाधि दीन्होंमहिपैडारि ॥ सोरठा ॥ तेहिक्षणहाहाकार भयो पाण्डवी सैनमधि । बही रुधिर की धार रुण्ड मुण्ड जल जन्तुयुत ॥ गोला ॥ घोर धुनि निजसैन मधिसुनि पार्थधीर धुरीन। कहे केशवकर्ण के ढिग चलो रथलैपीन ॥ कहे केशव सूत सुतके शरनसों अति पीड़ि । युद्धतजि नृपधर्म डेरन गयोमनमेंत्रीड़ि ॥ शीघ्रतहँ चलि देखिभूपहि बहुरि दलमेंआय । कर्णको बधकरो तीक्षण शरनकी झरिलाय ॥ बचन यहसुनि कहे पारथ अवशि

चलिये तत्र । तुरित रथलै कृष्णगेहो भीम बिलसत यत्र ॥ दे-
खि भीमहिंकहे पारथकहां धर्म महीप । सैनमधि नहिं परतलखि
कमनीय कुरुकुलदीप ॥ भीम बोले सूत सुतके शरनसों भिदि
भूप । त्यागिधीरज बिकल डेरनगयेहैं गतरूप ॥ कहे अर्जुन
भूपतिहि बिनु लखेमोहिं न चैन । जातहैं हम भूपढिग इतरहो
तुम बलऐन ॥ क्षत्र धर्म निधान सब बिधि प्रबल तुमजगजैन ।
रहोगे तुम तहांनृप जय अवशि संशय हैन ॥ भीमसों इमिभाषि
पारथ शीघ्रडेरन जाय । उतरिरथसों धर्म नृपके गहे कोमल
पाय ॥ कृष्ण पार्थहि देखि भूपति बधो कर्णहिजानि । परम आ-
नँद भरे बोलतभये जय अनुमानि ॥ परम दुर्जय शत्रु जगत
प्रसिद्ध धनुधर एक। कालसम मम सैनको जो नाशकरनसटेक ॥
शिष्यजो भृगुरामको सबदिव्यअस्त्र निधान। रहोतेरहवर्ष मम
हिय जासुभय परधान ॥ तासुबधकरि आयतुम मोहिंदये आ-
नँद पर्म । आजुबेधितभयो ममअरिभूपको हियमर्म ॥ नकुल
सात्यकि धृष्टद्युम्नहिं आदिभट बलभौन । लखतातिनके मोहिं
कीन्हों व्यर्थ बलनिधि जौन ॥ बिरथकरिकै कह्योबहु दुर्बचन
कठिन कठोर । जाहि सुधिकरि ग्लानित्यागन करतनहिं मन
मोर ॥ सहितकेशव पार्थकहँ हमबधब रचिशरजाल । कहतहो
जोगर्बगहि रणधीर बीरबिशाल ॥ द्रौपदिहि दुर्बचन बहु जो
कह्योगहि अतिगर्ब । बध्योतुम तेहिकर्णकहँ किमियुद्धकरिइमि
पर्ब ॥ त्रातारजो निजसैन परदलपारको गन्तार। अपारबिक्रम
धारजो ममसैनको हन्तार ॥ शक्रसमबलवानजो यमतुल्यपरम
अमान । बध्योकिमि तेहिसूतजहि तुमकहो तौनबिधान ॥ शक्र
बरुण कुबेरसम जोयुद्धबिद बिख्यात । ताहिकर्णहिं बध्योकिमि
तुमकहोसो अवदात ॥ कर्णहन्ता पार्थको इमिकहतहैं जोहिसर्ब ।
बध्योतुम केहिभांतितेहि किमिगिरोसो तजिगर्ब ॥ इबिधिकेसुनि
बचनधर्म महीपके तेहिकाल । चिन्तिमननें फालगुन इमिकहे

बचन रसाल ॥ रहे हम संसप्तकन सों लरत रचि शरसेत । आय मोसों भिरोतहँ सुत द्रोणको जयहेत ॥ जीति तेहि बधि सुभट अगणित रुधिरनद उमँगाय । युद्धभार समर्पिभीमहिं बर्षिशर समुदाय ॥ आइइत अबदेखि आपुहि कुशलफिरि इत जाय । आजु कर्णहिं बधब त्यागौशोच कुरु कुल राय ॥ कर्णके बरशारनबेधित धर्मभूप अचैन । बचन यह सुनि महारिसिग हिकहे ऐसे बैन ॥ पेखिबिक्रम कर्णको निजसैन बिचलत देखि । युद्ध तजि तुम इतैआये बाचिबो अवरेखि ॥ बृथाही तुम किये यहि जग पृथाके उरबास । जौन कर्णहिं बध्यो कीन्हें ब्यर्थ धनुष अभ्यास ॥ द्वैत बनमें कहे कर्णहि बधब लरिहम एक । तौन तुम अब छोड़ि भीमहि भजेतजि निज टेक ॥ कर्णसों नहिं सकबहम लरि भाषते जो पूर्ब । तौन बनते आइहम इतरचित संगर गूर्ब ॥ रही चौदह बर्ष तौ बल जीतिबेकी आस । आजु सो कढ़ि भई बाहर पूरि ममहिय त्रास ॥ युद्धकरि नहिंसके तौ गाण्डीवधनु जो ताहि । कृष्णको दे डारते तौ कृष्ण बधते ताहि ॥ जन्मते तो सातयें दिन गगन बाणी पर्म । सुन्यो कुन्ते भयो तो सुत भरो क्षात्र सुधर्म ॥ नागनर गन्धर्ब असुरन जीतिबेके योग । भयो रबि सम तेज याको करिहि महिपै भोग ॥ धनुर्द्धर नहिं भयो ऐसो नहीं ह्वैहै और । तिहूं पुरके धनुर्द्धर को होयगो शिरमौर ॥ देवतनको बचन सोऊ परो झूठो जानि । युद्धतजि तुमबिचलिआये कर्ण को भयमानि ॥ आजु धिक् तव बाहुबल को शरनको धिक्भूरि । धनुषबर गांडीवको धिक् तूरिडारो दूरि ॥ दोहा ॥ धर्मभूपके बचनये सुनिअर्जुन अनखाय । पाणिधरे तरवारिपहँ महाक्रोधसों छाय ॥ करलाघव तरवारिपहँ देखिकृष्ण अनुमानि । कहेसमयबिनु खड्गकत गहत कहा अनुमानि ॥ सोरठा ॥ युद्धकरनकेहेत नहिंकोऊ सन्नधइतै । करिकरतलपैदेत कहोपार्थ कारणकहा ॥ जयकरी ॥ कृष्णचन्द्रके सुनियेबैन । कहत

भये पारथबलऐन ॥ हमहैंकिये प्रतिज्ञापूर्ब। जोनिरदी ममबि-
क्रमगूर्ब ॥ धनुगांडीवहि निदरि अलेन। जोकोउभाषिहि और
हिदेन ॥ ताकोबध हमकरबसटेक। करब न अनुचित उचितबिबे-
क ॥ सो सबकियेधर्म क्षितिपाल। हमअबइन्हें बधबयहिकाल ॥
यहसुनिकहे कृष्णअवदात। अर्जुन करनचहत उत्पात ॥ जानि
परतसुनि बचन असिद्ध। नहिंसेये पटुपण्डितवृद्ध ॥ जोनहिंकबहूं
कहिबे योग। चाहत कीन्हों तौन प्रयोग ॥ मिथ्या आदिक जिते
अनिष्ट। हिंसा तिनसों अधिक गरिष्ट ॥ सो तुम चाहत कियो
अचाय। बधिबो धर्मनृपति सो भाय ॥ यह नहिं सत्यब्रता हे
तात। होइहि अपकीरति बिख्यात ॥ कौन काज करिबो यहि
द्यौस। गहत कहा करिबेको हौस ॥ तुमकहँ उचित न कहिबो
एहु। अरिदल नाशनको प्रणलेहु ॥ कर्णहिं बधिबेको प्रणजौन।
कीन्हेंकरो सत्य अबतौन ॥ ब्यासहि आदिक वृद्ध महान। यहि
बिधि भाषत धर्म बिधान ॥ पांचठौर जनि मिथ्या भाषि। लहत
न पाप पुण्य अभिलाषि ॥ दोहा ॥ सांचकहे जेहि ठौरमें जीव
जानको योग। अरु सबसे हरिजानको लागत जहां प्रयोग ॥
अरु बिवाहके कार्य्यमें अरु रतिसमय सुवेश। बिप्रहेत मिथ्या
कहे होत न अघको लेश ॥ जेठो भूपति धर्ममय तासु जीवको
घात। चहत मूढ़सम नाहिं चहत लीबो सर्बस जात ॥ जयकरी ॥
पार्थसुनो जेजन मतिमान। तेसब करत काज अनुमान ॥ हिंस
हु किये पुण्य कहुं होत। सत्यकरत कहुं पाप उदोत ॥ जिमि
दोऊकरि ब्याध बलाक। लह्यो पुण्य पातक परिपाक ॥ यहसुनि
पार्थ कह्यो तजि गास। कहो प्रगटकरि यह इतिहास ॥ कृष्णउवाच ॥
ब्याध बलाक नामहो एक। सो मृगहिंसक हो गहि टेक ॥ एक
दिवस मृग मिलो न ताहि। जलढिग श्वान अरिहिसों चाहि ॥
बध्यो मरत ताके तेहि ठौर। भयो दिब्य पुष्पनको झौर ॥ दिन
लहि देहत्यागि मतिरास। पायो ब्याध स्वर्गको बास ॥ करिदिव

भोग भूमिपै आय । भो द्विज कौशिक गोत सचाय ॥ नदीतीर वनमें बसि तौन । रहो करततप आनँद भौन ॥ एक दिवस त-स्कर भयपाय । ताढिग दुरे सधनजन आय ॥ तेहि दिनमें त-स्कर समुदाय । आये हरि बेमें मनलाय ॥ बूझे बिप्रहिकहँ जन जूह । दियो बताय बिप्रकरि ऊह ॥ सत्य कहनको राखे टेक ॥ गुण्यो न धर्म अधर्म बिबेक ॥ सति वकता द्विजसों लहि भेद । गे तहँ तस्करगण तजि खेद ॥ बध्यो तिन्हें धन लिये छुड़ाय । विप्र लह्यो पातक अधिकाय ॥ तन तजि लह्यो नर्क अतिघोर । व्यर्थभयो तपधर्म अथोर ॥ दोहा ॥ हिंसाकरि.वहगति लह्यो स-त्य कहे गतिएहु । इबिधि दान असतिहिदये पाप होत गुणिलेहु । पारथधर्म अधर्मको सूक्षम गति परधान । ताते तहँ अनुमान करितजोबचनअभिमान ॥ चौपाई ॥ कृष्णचन्द्रकी सुनियहबानी । अर्जुन कहतभये अनुमानी ॥ प्रभुजो आपुकह्योसो सहिये । पै अबइतो बूझिकै कहिये ॥ जातेरहै प्रतिज्ञासोऊ । मोकहँ अधम कहैनाहिंकोऊ ॥ यहसुनि कृष्णकहे सुनिलेहू ॥ ऋषिअंगिर को सम्मतएहू ॥ मानभंग माननिको करिबो । सोबध समपातकको भरिबो ॥ तातेनिदरिबोलि क्षितिपालहि । पालहु बचन प्रतिज्ञा आलहि । ह्वैहैबिदा शीघ्रअबचलहू । सूतसुवनकेगाताहिदलहू ॥ ऐसेबचन कृष्णके सुनिकै । अर्जुनकोप लोपकरि गुनिकै ॥ तुम मति भूपकहो इमिबानी । रहौमौन विक्रमअनुमानी ॥ रहतकोश भरिरणते न्यारे । यहिबिधि बोलतबिना बिचारे ॥ ऐसोभीमकहै तौसोहै । जोगजयूथ मर्दिदलमोहै ॥ जौनभीम बधि अगणित राजा । भेज्यो यमपुर सहितसमाजा ॥ तुमकीन्हेका बिक्रमरनमें । निदरतहमैं कहागुणिमनमें ॥ तोहितलागि दिशासब जीते । सो तुवजुआँ खेलिफिरिरीते ॥ तोहित हमदुखसहेघनेरे ॥ सोतुमकहे बचनाबिषमेरे ॥ हयगजनृप भटबधे अलेखे । सो समकाज न तुम अवरेखे ॥ दोहा ॥ धर्मनृपति सों भाषि इमि पारथ आनि

गलानि । निजबध करिबोचहतभे जीवनअनुचित जानि ॥ सो लखिकेशव नीतिकहि कियेनिवारण तौन । पार्थ आत्मबध भ्रातृ बध तुल्य पापको भौन ॥ तब पारथ नृपसों कहे उचित बचन अवराध । पिता सरिस गुरुबन्धुनृप गुणोन ममअपराध ॥ इतनेमें उठिसेजते रिसकरि धर्मनरेश । कहे पार्थ ममसंगतुम लहे न सुखको लेश ॥ अब हम बनको जातहैं तुम भीमहिकरि भूप । लहोमोद मनमान निति निज बिक्रम अनुरूप ॥ यहसुनि केशव नृपतिकहँ सबिधि मरम समुझाय । बैठाये शुचिसेजपहँ दारुण दुखहि दुराय ॥ सजल नयन पारथगहे धर्म नृपतिके पाँय । सजल नयन नृप पारथहि हियसों लयेलगाय ॥ इमिमिलि भूपति कर्णको दीन्हो कर्म सुनाय । मिटिहि कर्णको बधसुने दुख इमि कहे बुझाय ॥ सोसुनि पारथ कर्णके बधको करिपण पर्म । धर्म नृपहि मोहित किये पालक क्षत्रीधर्म ॥ यह सुनि केशव नृपति सों पार्थहि बिदाकराय । दारुकसों सजवायरथ चढ़े सुशंख बजाय ॥ बिप्रन सों स्वस्त्ययन सुनि सगुण लखतङ्के तुष्ट । चले कर्ण के बधनकी करत प्रतिज्ञा पुष्ट ॥ अतिबर बिक्रम पार्थको वर्णत श्री यदुराय । चले कर्ण के बधन की दृढ़ता करत सचाय ॥ चौपाई ॥ पारथएक बीरतूजगमें । तोबिक्रम सागरसमअग में ॥ तुम जेहिजीति बधे रणमाहीं । जीतनयोग ताहि कोउनाहीं ॥ नृपश्रुतायु अयुतायु प्रमादिक । भीषम अरुभगदत्तहि आदिक ॥ बधेअसंख्यन नृपतुम रनमें । जेहिगुणि उपजतबिस्मय मनमें ॥ तुमबहुबार द्रोणकहँ जीते । शल्यहि जीतेसुजय पिरीते ॥ बिन्दा बिन्द सुदक्षिण राजा । बधेतिन्हेंतुम सहितसमाजा ॥ दूरिपात बेधन करलाघव । अरुनिशङ्कबल हेजिमि राघव ॥ हैंतवदिव्य अस्त्रअति गतिके । परमअमोघ जीतिकी जतिके ॥ सुरगन्धर्ब असुरके जेता । होतुमपारथ धनुबिधिबेता ॥ यहगाण्डीव दिव्य धनुसारथ । जेहिगहि युद्धकरत तुमपारथ ॥ देवनहूमें धनुधर

तोसम । नहिंहमलखत यथातुम अनुपम ॥ तुमअजेय जेतासब-
हीके । भरेबीररस पूरणसीके ॥ पारथतो धनुकी धुनिसुनतै ।
शत्रुनबनत हारिनिज गुनतै ॥ तोशरधारि होत अरिमोहित ।
जिमि बड़वानल मुख परिवोहित ॥ तो रथघोष सुनत जग
जेना । केहिअतिबल जे सकुचितभेना ॥ तुम अतिचण्ड सूर
समसोहत । अरिदल दबिउलूकसम मोहत ॥ दोहा ॥ पारथ तो
सम जगत में हैं सूतज भटएक । कृतीबली सब अस्त्रबिद गहे
जीतिकीटेक ॥ तेज बाणमें अग्निसम क्रोधेकाल समान । पुरुष
सिंह अतिशूरभट अभिमानी बलवान ॥ दुर्योधनको परमहित
तुवबैरी अतिमान । हैअबध्य सुर असुरते जेताताासु न आन ॥
सोरठा ॥ ताके बधिवे योग हौ पारथ तुम बिदित भट । करिअति
अस्त्र प्रयोग लरि सटेक कर्णहि बधौ ॥ मनोरमा ॥ इमि पारथसों
कहि केशव मानद । फिरि भाषतभे गहिकैअति आनँद ॥ दिन
सत्रह आजुभयो इतयोधन । नरबारण बाजिनको बधशोधन ॥
अति क्षीण भयो दुर्योधन को दल । तिमि क्षीण भयोदल तो
परके बल ॥ नहिं जीवनआश गहे भटएकव । गहि आयुध
को भयआनत नेकव ॥ दोहा ॥ दुर्योधन को प्रबलदल को भट
जीतनहार । बिनु पाण्डव बिनु द्विरदको सहै द्विरदको भार ॥
तुमते रक्षित द्रुपदसुत दोऊबन्धु अमान । भीष्म द्रोणको बध
किये जोनसाध्य यहिमान ॥ चौपाई ॥ कृपकृतबर्मा द्रोणाचारज ।
शल्य शकुनि वृषसेन अनारज ॥ कर्ण सुयोधन अश्वत्थामा ।
दुश्शासनाहिं आदिबलधामा ॥ तिन्हैंजीति बरब्यूह बिदारत । को
भटप्रबल सैंधवाहिमारत ॥ तुमऐसो अद्भुतरणकरता ॥ परभटरुधिर
धार महि भरता ॥ दरदतुषारस यमन समाठर । दार्बमि सार-
अंध अरुपाठर ॥ भटपुलिन्द पार्बतीप्रबीरा । अरुअनूपबासी
रणधीरा ॥ म्लेच्छकलिंग किरातहि आदिक । दक्षयुद्धमें परम
प्रमादिक ॥ बिनुपाण्डव तिन्हकहँ कोजीतै । दुर्योधन दलसुभट

नरीतै ॥ दशहजार बरयोधनहतिकै । भटअभिमन्यु मरयोरण अतिकै ॥ लरिदशदिवस पुरुषपञ्चानन । भीषम बधिलाखन भटबानन ॥ भिदिसब गातशरनपरपरिकै । राजतयुगुति योगकी धरिकै ॥ द्रोणाचार्य्य पांचदिनलरिकै । मारिअसंख्यन भटपण करिकै ॥ लरिनिशि मध्यमहा रिसलीन्हें । दिव्य अस्त्रकी बर्षा कीन्हें ॥ द्रुपद बिराट आदि बहुराजन । बध्योसहित सामन्त समाजन ॥ मरो पांचये दिन थिर रहिकै । धृष्टद्युम्न के कर बध लहिकै ॥ तथाआजु सूतज धनुकर्षत । तीक्षण तरलघने शर बर्षत ॥ सृंजयअरु पांचालन बधिकै । ग्रसतकालसम लसत बरधिकै ॥ तथा भीम शर गदा प्रहारत । नर हय बारण बधि महि डारत ॥ तिमिसात्यकि आदिक भटरूरे । भटनबधत अतिअ-मरषपूरे ॥ धृष्टद्युम्नगुरु धनु टङ्कारत । रथीपदातिन बधिमहि डारत ॥ द्रौपदेय अरु सुभट शिखण्डी । बधत भटन गहि धनु बिधि चण्डी ॥ सहदेव नकुल करत रणकरकस । बधत शत्रुभट परम अधरकस ॥ युधामन्यु उतमौजा राजा । चक्र-रक्ष तुव सहित समाजा ॥ रक्षत तुम्हैं रहत अरिपरखत । अ-बिरल शायक बिधि वत बरषत ॥ दुर्योधन आदिक भट उत-के । ममदल मर्दत बिक्रम युतके ॥ अब उत चालिकरि सुजय निरेखन । बधुपर सुभटबली हत शेषन ॥ पांचमहा रथहैं उत बाचे । अति धनुधर अति गर्वित सांचे ॥ अश्वत्थामा कृप कृत बर्मा । कर्ण शल्य पूरित अति पर्मा ॥ तिन्हैं मारि लहि विजय अनूपहि । बधि सबन्धु दुर्योधन भूपहि ॥ भोगौभूमिस-मुदतक बासिकै । पांचोपांचशूर समलासिकै ॥ जोगुरुसुत गुणि अश्वत्थामाहिं । गुरूजानिगौतमबलधामाहिं ॥ गुणि निजमातुल शल्यनरेशहि । यदुबंशी हार्दिक्य सुबेशहि ॥ जो करि कृपा न बधअनुमानौ । तौ ममबचन परमहित मानौ ॥ कुमती क्षुद्रकुटिल अभिमानी । अनरथमूलजासु अघबानी ॥ कर्णताहि बधुआजु

शरनसों । होउतीर्ण निजपूर्ब परनसों ॥ परमकाज यह तो कहँ पारथ । है जयकारण गुणो यथारथ ॥ दोहा ॥ जोगर्बित नितकहत हैं बैठिसभा आगार । मैं बधिहौं सब पाण्डवन बर्षि शरन कीधार ॥ जेहिसूतजके बलगहे दुर्योधन जयआश । पार्थमारु तेहि सूतजहि करिअति युद्धप्रकाश ॥ सुन्दरी ॥ सूतजजे अपराध किये तब । दाहतही सुधि आवत ते जब ॥ शण्डभये पति तो बिगरे सब । दासिनसंग बसो तुमहूं अब ॥ तू दुर्योधनकी तिय ह्वै रहु । बैन महा कटु या बिधिके बहु ॥ भूपति पाण्डवकी महिषी तेहि । भाषतभो यह बेगि बधो यहि ॥ दोहा ॥ धनुष काटि अभिमन्यु कहँ बधवायो यइँ मूढ़ । अब यहिबधि लोपित करौ निज हियको दुख गूढ़ ॥ कर्ण शरनको सेत रचि काल समान बिभात । बधत असंख्यन भटनकहँ देखि दहतममगात ॥ तुम्हैं बिना यहि सैनमधि नाहिं ऐसो भटऔर । जो सन्मुख लरिकर्णसों कुशल फिरै गहि गौर ॥ सोरठा ॥ बधिकर्णहिं यहिकाल डारु दारुसम भूमिमधि । बायसगृध्र शृगाल तासुभेद मांसहिभखैं ॥ कर्णहिं भूगत देखि भगि जैहैं दल कौरवी । लेहु बिजय अवरेखि बधि सबन्धु दुर्योधनाहिं ॥ तोटक ॥ सुनि माधवके सुगिरा रुचिरा । हिय पारथके अतिमोद थिरा ॥ भटसूतजके बधको पनलै । इमि बोलत भो प्रभुको मनलै ॥ तुमनाथ करौ सुकृपा जेहिपै । सर्बथा जय श्री निबसै तेहिपै ॥ प्रभु आपुसदा मम गोहन ते । नहिं नेकुटरौ अति छोहन ते ॥ दोहा ॥ तुव सहायते नाथहम तीनिलोक जेतार । कहा कर्णको बध करनहै ममकरन अपार ॥ लखोनाथ पांचालदल द्रवत कर्णकेभीत । लखो कर्ण बिचरत बिरचि रणजगजीत अजीत ॥ लखोकर्ण प्रेरित लसत भार्गव अस्त्र अमन्द । ज्वलत दवानल सरिसबाढ़ि लाखिनलहत कोदन्द ॥ सोरठा ॥ हानि अमोघ शरचण्ड आजु बधब हम सूतजहि । कीरति अमल अखण्ड मण्डित रहि है भूमिमित ॥

तारक ॥ धृतराष्ट्रनरेश महादुखपैहैं । दुर्योधनहारि कहूंबहिजैहैं ॥ सहबन्धु सपुत्र समित्र सस्वामी । यहि आजुकरौं बधि ऊरध गामी ॥ निजबन्धु महीपहि मोदितकैकै । सब भूभरतार करौंपन लैकै ॥ शिरछेदन सूतजको करिकैहै । दलकौरवको बधिहौं लरिकैहै ॥ दोहा ॥ रोधहिं करत अपुत्र अरु दुर्योधनहिं अमित्र । रथीहीन शल्यहि करत वृषसेनहिं हत पित्र ॥ चौपाई ॥ आजुवर्षि तीक्षण शरक्रूरे । गृध्रपक्ष युत सुबरण पूरे ॥ बधि शत्रुन अभिमन्यु कुंवरके । करब भूमिगत योधापरके ॥ धार्तराष्ट्र बिनु अब महि होइहि । कैनिराजुन महिअरि जोइहि ॥ कृष्ण आजु धनुधरकी गतिसों । मैं ह्वैहौं उत्रिनबलअतिसों ॥ तेरहवर्ष सह्यो दुखभारी । आजु मेटिहौंसोपणधारी ॥ बध्योसंबरहि मघवा जैसे । बधिहौं आजुकर्णकहँ तैसे ॥ बाधिकर्णहिं देहौंसुख सीमाहिं । सहदेव नकुल सात्विकी भीमाहिं ॥ लखत कर्ण के बधि वृषसेनहिं । करिहौं प्रगट दुष्टकेऐनहिं ॥ कर्णहिंबांधि शरनकेजालन । बधिहौं मारिबाण अरिघालन ॥ धृष्टद्युम्नआदिक पाञ्चालन । देहौंआजु मोद हियलालन ॥ आजुलखै मम बिक्रम योधा । बधत कर्णको करि अवरोधा ॥ अस्त्रशस्त्रज्ञाता जगमाहीं । ममसमान धनुधर कोउनाहीं ॥ धनुगाण्डीव मुक्तशर झरिकै आजुकौरवन बधिहौं लरिकै ॥ निजनामांकित शरके घातन । करिहौं आजु कर्ण को पातन ॥ कृपकृतबर्मा अश्वत्थामा । आदिजिते योधाबलधामा ॥ करिहौं तिन्हैं बिकल यहि दिनमें । अगणित भटनमारिहौं क्षन मैं ॥ सोरठा ॥ इबिधि करत सम्बाद कृष्णपार्थ दल मधि गये । अति उतकर्ष प्रसाद मढो उभय दलमधि लखे ॥ संजय के ये बैन सुनिबोले धृतराष्ट्रनृप । कहुसंजय बलऐन तेहिक्षण किमि संगर भयो ॥ चौपाई ॥ यहसुनिकै संजय गुणि मनमें । कहे सुनो भूपति तेहि क्षनमें ॥ संसप्तकन सहित दुश्शासन । भीमलरत हे कर्षिशरासन ॥ लरत शिखण्डी कृपसों भिरि कै । सात्यकि

दुर्योधन भिरि थिरिकै ॥ भटयुयुधान बिदित धनुधारी । अरु वृषसेन बिशद रणचारी ॥ नकुल सुबीर भूप कृतबर्मा । हेतहँ लरत अमानुष कर्मा ॥ धृष्टद्युम्न सूतज अति धरकस । हे तहँ लरत उभै रण करकस ॥ भिरि सुषेन उत मौजा राजा । रहे लरत तहँ सहित समाजा ॥ उतमौजा अति तुरता ठाट्यो । भट सुषेन के शीशहि काट्यो ॥ सुत सुषेन को मरिबो देखी । कर्णभूपको बध अवरेखी ॥ बाणनकी बर्षा बिस्तार्यो । तुरगन मारि भूमिपै डार्यो ॥ तहँ उतमौजा अनरथ कीन्हों । कृपके सूतहि यमपुर दीन्हों ॥ कृपके युगसूतन बधि पथ पै। गयो शिखण्डी भटके रथपै ॥ सोलखि द्रोणतनय तहँ आयो । बढ़ि आगेलरि कृपहिबचायो ॥ यहिबिधि मचो युद्ध अतिघोरा । रुधिरधार धाई चहुँओरा ॥ तेहिक्षण भीम जीति अभिलाषे । आदर सहित सूतसों भाषे ॥ रथ लै चलो शत्रुदल माहीं । लखौ गमन सुभटनकी नाहीं ॥ दोहा ॥ कहो किते मम सुरथमधि आयुधभेद समस्त । यह सुनि सूत बिशोक इमि बोलो बचनप्रशस्त ॥ मार्गण साठिहजारहैं भल्लौ साठिहजार । रथ पै साठिहजारहैं बरशायक क्षुरधार ॥ दोयहजार नराचहैं प्रदर सहसहैंतीनि । दोयशकटहैं खड्गसबकहैं कहालौंगीनि ॥ काल दण्डसमहैं सहस गदासुनौ रणधीर । परशुशक्ति मुद्गरघने अगणित तोमरतीर ॥ आयुधकमतर होनकी शंकाकरौननेक । लरौअरिणसों जिमिचहौ आयुधतजौ सटेक ॥ यहसुनि भीम कहेबहुरिक्रोधभरे ममनयन । निजपरनाहिं चीन्हतकछू यहिक्षण सुनुबुधि अयन ॥ तातेतुम ममभटनके चीन्हत चिह्नसमस्त । रहेहुबचाय तिन्हहिंमम आयुध चलतप्रशस्त ॥ शोचबड़ोनृप ढिगगयो पारथफिरो न तौन । कर्णशरन पीड़ितगयो नृपतिभई गतिकौन ॥ सोरठा ॥ भीमसेनअवरेखि इमिकहि फिरि चहुंओर लखि । ममदल बिचलतदेखि बिहँसिसूतसों कहतभो ॥ बिकल

शत्रुदलसर्ब्ब हाहाधुनि अतिसुनिपरत। बरणेभट तजिगर्ब्ब इत उत बिचलत लखिपरत॥ जानिपरत ओहिओर आयोपारथ रिपुदलन। करिअबिरल शरजोर अरिदलमधि पूरत प्रलय॥ यहसुनि सारथि स्वस्थ कह्योप्रगट गाण्डीवधुनि। कपिबरबीर ध्वजस्थ उदय सूरसमलखिपरत॥ यहसुनि चौदहग्राम शत दासी अरुबीसरथ। देनकह्यो अभिराम सूतहिभीम प्रसन्नह्वै॥ जयकरी॥ सुनि ममसैनमध्य अतिशोर। धनुटंकार बाद्यधुनिघोर॥ सुभटनकीगरजनिअतिचण्ड। गजहयहींसनि महाउमण्ड॥ मारु मारु मार्‍यो धुनिभूरि। सुनिपारथ अति अमरषपूरि॥ कहेकृष्ण करिचपल तुरंग। परदल चलो मध्यसउमंग॥ सुनि केशवकरि हयन अधीम। चले लरतहो जेहिदिशि भीम॥ शंखबरण घोरन की दौर। धनुटंकारि नेमिधुनि गौर॥ बाणवृष्टिकी सृष्टिमहान। पूरतचलो पार्थ बलवान॥ जृम्भहि हनत हेत जिमि पूर्ब्ब। चलो बज्रधर गहिरिसि गूर्ब्ब॥ बधतरथी हयहाथी जूह। बधत पदाती सुभट समूह॥ पुरुष सिंह ईक्षत जयपर्म। अरिद्विरदन को मर्दतमर्म॥ यहि बिधि देखि पार्थकहँ जात। क्षत्री यूथपयूथ बिख्यात॥ हयगजरथ भट जूह बढ़ाय। भिरे पार्थसों शायक छाय॥ भल्लशक्ति तोमर बरबाण। गदा परश्वध यष्टि कृपाण॥ आयुध भिंदिपालदे आदि। बर्षणलगे प्रमादि प्रमादि॥ तेहिक्षण भयो तहाँ अति युद्ध। लसो कालसम पारथ क्रुद्ध॥ बधत असंख्यन भटनप्रचारि। लसोसूर जिमि जलदहि टारि॥ दोहा॥ छत्रधनुष ध्वजरथ तुरग द्विरदसारथी जूह। रथीपदाती भटबध्यो काटतशस्त्र समूह॥ शरक्षुरप्र अरुअर्धशशिकी बरषाकरि भूरि। चलोपार्थ जहँ कर्णमहि रुण्डन मुण्डनपूरि॥ चौपाई॥ दलमर्दत तेहिअगरतदेखी। अगणित सुभटभिरे अतितेखी॥ रथी गजी हयसादी योधा। चहुंदिशिते कीन्हेंअवरोधा॥ मारो धरिबांधो बकिबकिके। चहुंदिशितेबोले तकितकिकै॥ पट्टिश

भल्ल शक्ति शर झेलैं। एकबार सहसनभटरेलैं ॥ तिन्हैंपार्थशर झरिकेघातन। क्षणमेंकरे भूमिपरपातन ॥ मण्डलसमकोदण्ड-हि करिकै। रथपर चारुचक्रसम चरिकै ॥ अगणित नर बारण बलओकन। भेजिदेतभो ऊरधलोकन ॥ तहँकै पारथकेशरपीड़ित। हाहाकरत भगेभट ब्रीड़ित ॥ चिघरतभगे द्विरदमतवारे। हींसतभगे तुरगभयभारे ॥ तेहिक्षणभयो शोरअतिभारी। यम सम लसोपार्थ रणचारी ॥ सोदलजीति पार्थशरबर्षत। चलो कर्णके दलपहँ हर्षत ॥ पार्थहिदेखि लसैंभटतैसे। गरुड़हिदेखि होहिंअहिजैसे ॥ भट तजि तजि जीवनकीआशा। करैंपार्थसों युद्धविलाशा ॥ होहिं पार्थकेसन्मुख जेते। तुरतैहोहिं कालबश तेते ॥ तहांपार्थ अनरथ भरिदीन्हो। भीषमरूप मेदिनिहि कीन्हो ॥ तथालरे बिक्रम अति मितिके। सात्यकि कर्ण आदि उतइतके ॥ दोहा ॥ महाघोर संग्रामभो भूपसुनो तेहियाम। अगणित हयगज सुभटमरि जायबसे यमधाम ॥ पार्थ लरततहँ शोरसुनि भीमसेन बलधाम। ह्वैप्रसन्न अति गर्ब्बगहि कियोघोर संग्राम ॥ भुजंगप्रयात ॥ महा भीमता भीमता गैर लीन्हो। महा उद्धके तौरको युद्ध कीन्हो ॥ महा पौनसो पौनजा पौनबेगी। शुभा भौनहै कौनता जौनसेगी ॥ कियो गौरता डौरकोपाणि लाघो। मृगापैयथाना करैदौरबाघो ॥ युधै नीतिकी जीतिकी साध साधै। बधै भूरियोधा प्रलय नाध नाधै ॥ दोहा ॥ भीम पराक्रम सरित शर बर्षाभौर महान। मधिपरि भ्रमि ब्याकुलभयो ममदल नाव समान ॥ मीर बहरसम सुवनतुव तिन्हैं उबारण हेत। पठयो वोहित सरिसबहु यूथप साहस देत ॥ तोमर ॥ तेतुरग द्विरद स-वार। अरु रथी सुभटउदार ॥ भटभीमसेनहिघेरि। भेलरतबचत न टेरि ॥ तहँ लसो भीम अबध्य। जिमि सोम तारनमध्य ॥ तेघेरि बर्षतत्र। गुरु गदा मृशलपत्र ॥ अरु भल्लशक्तिअनेक। कीकिये झरि गहिटेक ॥ तहँ भीमयोधा चण्ड। अति चपलकरि कोदण्ड ॥

करि चक्रसम कोदण्ड। भरिबाण वृष्टि अखण्ड॥ बधिडारि अ-गणित बीर। बिचलाय अगणित भीर॥ इमिकढ़ोव्यूहबिदारि। जिमि मीन जालहि फारि॥ तिमि ब्यूह बाहर आय। भो बधत भट समुदाय॥ द्वैसहस द्विरदसवार। बधि द्विरदकइकहजार॥ बधि पाँचसहस महान। भटगजारोह अमान॥ शतरथी योधामा-रि। भोदेत महिपै डारि॥ बर रुधिर सरिताटारि। भोलसतजिमि त्रिपुरारि॥ रथचक्रतहँ आवर्त्त। गिरिभिरे हौदागर्त्त॥ हयद्विरद ग्राहअनूपातहँ लसतभीषमरूप॥ दोहा॥ भुजधर ऊरुनसुरनके बिलसतमीन समान। धनुध्वजयष्टी अरुगदा करिकरनाग महा न॥ लसातिक्षीण पाठीनसम पराशक्तिअसिजौन। पीनमीनसमल सतिहैं परीशतघ्नीतौन॥ मेदफेन आलारसर केशसेवारबिधान। चरमकच्छ अरुछत्रहैं हंसचरत बिनुप्रान॥ सारंगरूपकछन्द॥ याडौ लखोदेखिकै घोरसंग्राम। जोभीमसेनैंकियो अद्भुतैंकाम॥ तोपुत्रकै ब्याकुलै आकुलिच्छाम। योंसौबलैसों कह्यो कैबलैआम॥ लैसंग सेनाबध्यो याहियायाम। तूतौबिजयमोहिंदैहै समासाम॥ हैकाल सोंजौनपूरे प्रलयकाल। याकेमरे हालऐहै बिजय चाल॥ दोहा॥ यह सुनिशकुनि महीपमणि रणदुंदुभि बजवाय। सैनसहित बढ़ि भीमसों भिरोबाण झरिलाय॥ तोमरछंद॥ भटभीम ताकहँदेखि। बढ़िभिरो बध अवरेखि॥ करिपाणि लाघव घोर। भोतजत बाण अथोर॥ नृप शकुनि सुरथ बढ़ाय। तहँ बर्षिशर समुदाय॥ तकि भीम भटको गात। भोकरत बहुशरपात॥ लखि बामपारश तासु। शरहन्यो तीक्षण आसु॥ लगिअस्थिली करिगौन। भो बसत शायकतौन॥ तब भीमक्रै अतिचण्ड। भो तजत बाण उदण्ड॥ तेहि मध्यहनि शरबेश। भो काटिदेत नरेश॥ तबभीम ताहि प्रचारि। शरअर्द्ध शशिसम मारि॥ बरधनुष नृपकोकाटि। बहुबाणमारयो डाटि॥ तब शकुनि नृपति सडौर। गहितुरित धनुषा और॥ द्वै सारथीके गात। शरहन्यो भीमहिं सात॥ ध्वज

काटि हनिशर एक । फिरिकाटि छत्र सटेक ॥ शरचारि तुरगन मारि । भोनदत धनुटंकारि ॥ तबभीम सुभट बिशाल । भोतजत शक्तिकराल ॥ नृपशक्तिसो गहिफेरि । मोहनत भीमहिंटेरि ॥ भुजबाम बेधततासु । वहगईमहिपै आसु ॥ भिदिभीम तासों तत्र । करिक्रोधबरषोपत्र ॥ हयशकुनिके सबमारि । भोदेतमहि पैडारि ॥ दोहा ॥ बधिसूतहि काट्योध्वजा तब रथतजिसोभूप । महिपैठाढ़ो ह्वै लगो बर्षणबाण अनूप ॥ भीमसेन तब मारिशर काटिकठिन कोदण्ड । सौबलनृपके तनहन्यो शायक अतिशय चण्ड ॥ तासोंभिदि भूपतिगिरो महिपै ह्वै गतचेत । ताहिडारि रथपहँभगे तौसुतहाहालेत ॥ अनुगीती ॥ नृपशकुनि की यहदशा देख । तौ सुवन नृपअनरथ परेखि ॥ बरतुरग चढ़िभागो उ- ताल । लखिभगे सिगरेसुभट माल ॥ ढिगकर्णकेगे बचबचा- हि । सबबकत सूतजपाहि पाहि ॥ बलभीमको सागरअपार । तहँपरेममभट बिनुअधार ॥ त्यहिभयोद्वीप सूतजअमान । करि पाणि लाघवबर्षिबान ॥ नृपमचो त्यहिक्षण घोरयुद्ध । अतिकियो बिक्रमभीमक्रुद्ध ॥ दैभटन साहससूतपुत्र । फिरि युद्धमगलायो ससुत्र ॥ भिरिउभयादिशिके सुभटसर्ब । अतियुद्धतहँकीन्हों स- गर्ब ॥ दोहा ॥ यहसुनिकैधृतराष्ट्रनृप मनकरिमहामलीन । कहेतदनु किमिरणभयो कहुसूतज परवीन ॥ यहसुनिकै संजय कह्यो तेहि क्षण कर्णअमान । कह्योशल्यसों चलहुजहँ भटपाञ्चालमहान ॥ सोरठा ॥ यहसुनि शल्यनरेश रथचलाय अतिबेगसों । चलो शत्रु दलदेश तकिसेना पांचालकी ॥ चौपाई ॥ सूत सुतहिनिज दल मधि आवत । लखि सहदेव नकुल भटभावत ॥ सुवन द्रौपदी के रणधीरा । धृष्टद्युम्न सेनापति बीरा ॥ भीम शिखण्डी सात्यकि योधा । बढ़िताको कीन्हें अवरोधा ॥ करलाघव करिकरि धनु- कर्षे । अबिरलबाण कर्णपहँबर्षे ॥ सात्यकि तेहिशर बीसप्रहारे । बाणपचीस शिखण्डीमारे ॥ पांचबाणमार्‍यो दलनायक । द्रौप-

देयसब चौंसठि शायक ॥ शतशर हन्यो नकुल बरबीरा। नब्बे हन्यो भीम रणधीरा ॥ तेहिक्षण सूतसुवन बलवाना। कियोअ-मानुष कर्ममहाना ॥ सबपै जाल शरनकैठाटे। सबके बाण अ-नगिने काटे ॥ सबके बाण अनगिने सहिसहि। सबकहँ आउ खड़ोरहु कहिकहि ॥ सात्यकिकोकरि धनुध्वज छेदन। हन्योबाण नवदायक बेदन ॥ भीमहिं देखि क्रोधअति कीन्हों। बाण तीनि शत हनिमुद लीन्हों ॥ बिरथकियो द्रुपदीके बारन। क्षणमेंबर्ष्यो बाण हजारन ॥ भीम आदि सब सुभटन क्षनमें। ब्याकुलकरि मोदित ह्वै मनमें ॥ सबकहँ बाण अनगिने हनिहनि। सब कहँ कियो पराजित गनिगनि ॥ मृगगण मध्य सिंहसम चरिकै। ब-रणै भटनपराजित करिकै ॥ मर्दतभयो शत्रुदल तैसे। तरुवन दहै दवानल जैसे ॥ रुण्डमुण्ड करपगशुण्डनसों। भरयोभूमि बाधि हय भुशुण्डनसों ॥ कर्ण महा बिक्रम करिराजा। बध्यो अ-संख्यन सुभट समाजा ॥ प्रति सन्धान अनागिने योधन। बधे कर्ण करि धनु बिधि शोधन ॥ सृंजय अरुपाञ्चाल सुयोधा। बढ़ि बढ़ि तासुकरैं अवरोधा॥तिनमधि लसै सूत सुततैसो। द्वि-रदन मध्य केहरीजैसो ॥ भटपाञ्चाल शूरता जोरे। लरिमरिबे तेनहिं मन मोरे ॥ धनुध्वजसूतरथी हयहाथी। मारिअसंख्यन करण प्रमाथी ॥ भीषमरूप मेदिनिहि करिकै। कालसरिस बि-लसो पणधरिकै ॥ भीम आदि योधा सब फिरिफिरि। कीन्हेंयुद्ध कर्णसों भिरि भिरि ॥ तेहिक्षणभयो युद्धअति भूरित। भईघोर धुनि नभमधि पूरित ॥ तिमि कृप कृतबर्माबलधामा। दुश्शासन अरु अश्वत्थामा ॥ बरणे शत्रुभटनसों भिरि भिरि। घोरयुद्ध कीन्हें तहँ थिरि थिरि ॥ उत अर्जुन इत निजदल माहीं। सुनि हाहाधुनि गुनि मनमाहीं ॥ यदुपति सों बोल्यो बलसागर। उत लै सुरथ चलो नय नागर ॥ दोहा ॥ सूतज मर्दत सैन मम मृगगण सिंह समान। ताते सादर चलहु उत लखो युद्ध मन

मान ॥ यह सुनिकै केशव चले सूतसुवन हो यत्र । धनु कर्षत पारथ चलो बर्षत अबिरलपत्र ॥ आवत देखि कपिध्वजहिं शल्य भूप अनुमानि । सूतसुवनसों कहतभो वचन भयानक सानि ॥ सोरठा ॥ आवत पारथ बीर देखु सूतसुत अग्ररथी । शोणित सरितगँभीर उमगावत वहिओरते ॥ बिकल करत सब सैन आवत तोपहँ चाहि बध । अब धरिधीर सचैन बढ़िआगे भिरु पार्थ सों ॥ रोला ॥ सभा मधि तुम पाण्डवन कहँ कहे अनुचित जौन । आजु धर्म्महिं बेधि बाणन बिकल कीन्हें तौन ॥ भीम आदिक भटनकहँ करि बिमुख अद्भुत कर्म । करत तुम यहि समय मनमें गुणत तौन अधर्म ॥ कालसदृश कराल बर्षत दंड शर यहिकाल । क्षीणबल जलमीन सुभटन ग्रसत रचि शरजाल ॥ तुम्हें बाधिबे हेत आवत बधत भट समुदाय । कौन ऐसो सुभट जो अब तासु सन्मुख जाय ॥ तुम्हें बिनु नहिं और भट जो लरै तासों जूटि । ताहि बधिबेयोग कुरुपति तुमहिं जानत ऊटि ॥ पार्थ आवत लरो अबतुम करो पणप्रतिपाल । पार्थसम तुमसुभट भीषम द्रोणसम बिकराल ॥ पार्थ धीर धुरीण आवत सकत तेहिसहि कौन । चहत हे तुमभयो सोअबकरो करतब्र जौन ॥ बचन यहसुनि कर्णबोल्योशंक त्यागो भूप । आजुपार्थहि बधबहम करियुद्धकर्म अनूप ॥ मोहिंपारथ बाधिहै केजय अजयरण गतिदोय । लरब नृपहित चाहि होनीहोयजो सो होय ॥ कर्ण केये बचन सुनि कै शल्यनृप मतिमान । कहेजगमें पार्थके सम कौन सुभट अमान ॥ भाषियहि बिधि कह्यो क्रमसों जौन पार्थ सगर्ब । कियेहे खांडीव दाहन आदि कर्म अखर्ब ॥ शम्भु आदिक लोकपालन दये शस्त्र अनेक । भाषिसो सब पार्थ के गुण कहे सहित बिबेक ॥ शल्यके ये बचन सुनिकै कह्यो कर्णसडौर । बंदिजन सम भूपबरणत पार्थ के गुणगौर ॥ पार्थकोबल धनुष धरता शस्त्रसंचन भेद । सकलजानत भूप हमपै गहत नहिंभय

खेद ॥ शल्यनृपसोंभाषि यहिबिधि कर्णधीर धुरीन। नृपति तो सुत भूपसों इमि कहत भो परबीन ॥ भोजकृप गान्धार पति गुरु तनय ये सहसैन। घेरि पार्थहि युद्धकरिकै करें समितअ-चैन ॥ तदनु हम सारिबधव्र तेहि यह बचन सुनिभटसर्ब। सेन सह बढ़ि घेरि पार्थहि लगे लरन सगर्ब ॥ सव्यसाची पार्थ तेहि क्षण कियो बिक्रमघोर। देतभो प्रतिभटन पहँरचि चावसों शर जोर ॥ द्रोणसुत कृप आदि सुभटन व्यर्थकरि अवलोक। मारि अगणित भटन दीन्हों भेजिऊरधलोक ॥ तोमर ॥ ह्वैबिरथ चढ़ि रथ और। फिरि लरे भट शिरमौर ॥ करिबाणबर्षा घेरि। नहिं बचत अब इमि टेरि ॥ शर भल्ल पट्टिश आदि। भे तजत आ-युध नादि ॥ तहँ पार्थ धीर धुरीन। चरि चक्र सरिस अहीन ॥ अतिबाणकी झरिठाटि। सबदेत आयुध काटि ॥ भोहनत सब कहँ बाण। दश बीस शत परमाण ॥ तहँ द्रोणसुत सहजोर। करि पाणि लाघव घोर ॥ दशबाण पार्थहि मारि। फिरि हन्यो कृष्णहिं चारि ॥ शरचारि कपिहि प्रहारि। भोनदत धनुटंकारि ॥ तहँपार्थ ताकहँडाटि। धनु ध्वजा द्विजको काटि ॥ बधि सारथी कहँ आसु। बधि तुरगचारां तासु ॥ बहुबाण मारयोताहि। डरि दशा ताकी चाहि ॥ कृप आदि सब रणधीर। करि सुरथपै तेहि बीर ॥ बहुकिये बलपरकाश। नहिंलहतभे अवकाश ॥ परिपार्थ शरके घात। भे बिकल बेधितगात ॥ तिमिलसो पार्थ प्रचारि। जिमि जलद बर्षत बारि ॥ दोहा ॥ कृतबर्मा दुश्शासनहिं आदि भटनके गात। अगणित शायक हनतभो पार्थबीर बिख्यात ॥ बर्षा पूरत शरन जिमि रचि जलधार अपार। तिमि पूरयोमम सैन सब पार्थ शरन के धार ॥ तो सुत आदिक भटन करि बि-रथ बिधनु तेहि ठौर। दक्षिण दिशिह्वै कर्णपहँ चलो सुभट शि-रमौर ॥ सोरठा ॥ नकुल शिखण्डी बीर सहदेव सात्यकि तेहि समय। बर्षत अबिरल तीर भये तीर भटपार्थ के ॥ सहसृंजय

कुरुबीर बढ़िबढ़ि तिनसों भिरतभे । नीरद बर्षतनीर भई बृष्टि तिमि शरन की ॥ चौपाई ॥ छादित भईं उभय दिशि बानन । निरखे पेखिपरै कछु आनन ॥ निशिसम अन्धकार तहँ छा-यो । मनु हिमन्तघर पावस आयो ॥ तेहिक्षण पार्थ शत्रुदल जेना । मर्दतभयो कर्णकी सेना ॥ भल्ल क्षुरप्र अर्द्धशशि शायक । अबिरल बर्षि धनुषधर नायक ॥ रथी सारथिहि पारथ मारे । रथलैभगे तुरग भयभारे ॥ मरे सुभट कितने हयदौरे । बहुभट किये तुरग बिनु बौरे ॥ अंगभंग कितने रथकीन्हें । अगणित र-थिन्ह कालबश कीन्हें ॥ अगणित चामर छत्रपताका । काट्यो अगणित रथ के चाका ॥ अगणित शस्त्र सुभट जेझेलत । काटि तिन्हें निज शायक रेलत ॥ कर पग शिरकटि धनुध्वज काटत । बधिगज बाजि भयो महि पाटत ॥ अगणित हयगज रथबिनु योधन । करतलसों करिधनु बिधिशोधन ॥ बहुरथअं-गभंगकरिडारत । बहुबितुण्डके शुण्डबिदारत ॥ शोणितकी स-रिता उमगावत । चलोकर्णपहँ ओजबढ़ावत ॥ तहँकृतबर्मान्रप केप्रेरे । भटद्विरदरथ चारिशतघेरे ॥ क्षणमेंद्विरद द्विरदअसवा-रन । बधतभयो पारथशर धारन ॥ भूपतिसुनो पार्थतेहिक्षणमें । कालसमान चरतभो रणमें ॥ जानिपरो गांडीवहिकर्षत । पारथ शक्रबज्रशरबर्षत ॥ बनमेंलगे दवानलजैसे । होहिंमृगासमभवमें तैसे ॥ बिनुकरिया मारुतबशपरिकै । बोहितहोय कूलसोंटरिकै ॥ तिमिपारथशर झरिकेघातन । ममदल करतभयो सहत्रातन ॥ दल बिचलायबीररसभीजो । चलतभयोकुंतीसुततीजो ॥ दोहा ॥ जायभीम के निकटकहि न्रपति कुशल करि मंत्र । फेरिचलतभो कर्णपहँ पारथबीर स्वतंत्र ॥ दुश्शासन दशरथिनसह फिरि घे-रतभो ताहि । दशशरसों तिनके शिरन पारथ काट्यो चाहि ॥ इमि गार्बित कुरुसुभट जे भये सामने तासु । बिरथ बिधनु ह्वै शरन भिदि तेगेयमपुर आसु ॥ सोरठा ॥ बिनुकर पगबिनु शीश

विरथ विधनु बिनु गज तुरग। करत भटन भटईश चलो बाम दे फौज मम ॥ चौपाई ॥ महाराज सुनिये तेहिक्षनमें। नब्बेरथी मरण गुणिमनमें ॥ तेसंसप्तक योधाऋरे। भिरे शपथकरि अमरषपूरे ॥ नब्बेबाणमारि बरफबके। क्षणमें काटि शीश तिनसबके ॥ तिनसबकहँ बधि सहित समाजा। कपिध्वज चलो कर्णपहँ राजा। सो लखिलखि योधा यहि दिशिके। रथगज हयसादी अतिरिसिके ॥ जीवन क्षोभ त्यागि धनुकर्षत। भिरेफाल्गुणसों शर बर्षत ॥ तेरहशत गज सादी योधा। म्लेच्छ तासु कीन्हों अवरोधा ॥ शक्ति गदामूशल शरबर्षा। करतभये गहि अति उतकर्षा ॥ क्षणमेंपार्थ धनुषधर नायक। बरषि क्षुरप्र अर्द्धशशि शायक ॥ सबके शीश काटिमहि डारयो। मम सेनामधि प्रलय पसारयो ॥ अगणित भटबिनु बाहन कीन्हों। बहुबाहन बिनुभट करि दीन्हों ॥ इतके भट जीवन डरडारी। बढ़िबढ़ि भिरहिं प्रचारि प्रचारी ॥ अतिशय घोरयुद्ध तहँ माचो। पारथ कालबीर रसराचो ॥ अतिशयभीर पार्थपहँदेखी। भीमसेन अनरथ अवरेखी॥ हतशेषन ममयोधनतजिके। पारथकेढिग गयोगरजिके॥ हे हतशेष पार्थकेधोरे। जेममसुभट नचावतघोरे ॥ रुद्रसमान रुद्रतापागो। तिनपैगदा प्रहारण लागो ॥ महाराज सुनिये तेहिपल में। हाहाकार मचो ममदलमें ॥ भुजंगप्रयात ॥ हयानीक में यों प्रलय कालकेके। गदालालके कालकी चाललैके ॥ शतानीक जो है गजानीकमाहीं। महाभीमके भीमयोधी मनाहीं ॥ हनेपैरमें मैरकेते तवेमें। हनेदंतमें दंतकेअंतवे में ॥ हनेकन्धमें कुम्भमें शुंडनेमें। हनेजन्तभूकन्तके मुंडनैमें ॥ दोहा ॥ हयहयसादी दशसहस बधि पैदर समुदाय। गजानीक मधि धसतभो भीम बीरहढ़घाय ॥ गजारोह बहुबहुगजन बधि अगणित बिचलाय। फेरि जायरथ पहँ लसो भीमओजअधिकाय ॥ तिमि पारथके शरनभिदि मम योधा बलऐन। भागि कर्णके ढिगगये तोसुतभये अचैन ॥ सा-

हसदै तिन भटन कहँ कर्ण धनुर्द्धर धीर । मर्दतभो पांचालदल बर्षिअसंख्यन तीर ॥ चौपाई ॥ शतानीक श्रुतिसीमहि बानन । छादित कियो पुरुष पंचानन ॥ धृष्टद्युम्नके घोरन बधिकै । सात्यकि के हयबध्यो बराधि कै ॥ केकय पातिके पुत्रहि हतिकै । बिलसत भयो पराक्रम अतिकै ॥ लखिकुमारकोमरण अचायक । बढ़िशर बरषि तासु दलनायक ॥ नाम उग्रकर्मा रणचारी । भिरो कर्णके सुतहि प्रचारी ॥ सुतप्रसेन कहँ ताड़ित देखी । कर्ण धनुर्द्धर अतिशय तेखी ॥ अर्द्ध चन्द्र बरबाण प्रहारयो । काटि तासु शिर महिपै डारयो ॥ तब प्रसेन सात्यकि सों भिरिकै । घोरयुद्धकीन्हों तहँ थिरिकै ॥ तहँ सात्यकि अति गौरव कीन्हों । कर्णसुतहि बधियमपुर दीन्हों ॥ सोलखि कर्णक्रोधसों पागो । कालसरिस रणबिचरन लागो ॥ अतिअमोघ शायक मनभायो । भटसात्यकिपहँ टेरिचलायो ॥ सुभटशिखण्डी अमरष सनिकै । काटयोताहि तीनिशरहनिकै ॥ सोलखि कर्णमारि शरचोखो । काटयोतासु धनुषअति नोखो ॥ धृष्टद्युम्नको सुत बधिडारयो । शत्रुसैनमधि प्रलयपसारयो ॥ सोलखि कृष्णकहे सुनुपारथ । चलहुकर्णपहँ गुणि बधस्वारथ ॥ यहसुनि पार्थशरासन कर्षत । चलोकर्णपहँ शायकबर्षत ॥ दोहा ॥ नभ छादित करि शरनसों अन्धकार अतिपूरि । चलोबीर पारथबधत हय गज योधाभूरि ॥ तासुपीठिरक्षक चलोभीम सुभटशिरताज । मण्डल समकोदण्डकरि मर्द्दत सेनसमाज ॥ त्यहिक्षण उतमौजा नृपति युधामन्यु रणधीर । धृष्टद्युम्न भ्राताउभय जनमेजययेबीर ॥ बढ़ि बढ़ि सूतजसोंभिरे तिन्हेंकर्ण दृढ़घाय । बिरथबिधनुकरि निमिष में देतभयो बिचलाय ॥ सोरठा ॥ भूपसुनो त्यहिकाल सुवनद्रौपदी के सकल । सात्यकिबीर बिशाल भिरेसूतके सुवनसों ॥ वसुकला ॥ तेसुभटशुद्ध । अति कियेयुद्ध ॥ शर शक्तिघोर । बर्षे अथोर ॥ तिमि सकल ठौर । भोयुद्ध भौर ॥ बहुरुण्ड मुण्ड । पगपाणि

शुण्ड ॥ ध्वज धनुषवान। पाखरमहान ॥ हौदाम्लान। अंकुश कृपान ॥ रथअंगभंग। हयकेटसंग ॥ करगहेचर्म। तनसाहित वर्म ॥ मणिमुकुट जूह। भूषण समूह ॥ सब शस्त्रभेद। घायल सखेद ॥ माथि रुधिरधार ॥निरखे अपार ॥ जिमि उदधिपूर। जल जन्तुभूर॥महिभईभूप।अति भयदरूप॥भोदिनकराल।जगनाश काल ॥ तवकरि कुमंत्र। अबसुनो तंत्र ॥ यहिसमय जौन। भो अनर तौन ॥दोहा॥ तोसुत दुश्शासनप्रबल कर्षिकठिन कोदण्ड। भीमसेनसों भिरतभो वर्षतशायक चण्ड ॥ काटिधनुष षटशर हन्यो सूतहि गर्जि प्रचारि। नवशर मार्‍यो भीमकहँ अतिकर लाघव धारि ॥ सोरठा ॥ भीमसेन त्यहिकाल शक्तिचलायो अश-निसम। हनिदशबाण बिशाल काटिदयो तोसुवनत्यहि ॥ चौपाई ॥ तबगहि कठिनधनुष अतिभारी ॥ भीमसेन अनुपम रणचारी ॥ दुश्शासनपहँ शायकबरष्यो। जोलखि हियोभटनको धरष्यो ॥ तिमितोसुत बाणनकीबर्षा। करतभयो गाहिअति उतकर्षा ॥ कैअतिचपल प्रचारि प्रचारी। भल्लक्षुरप्र प्रहारिप्रहारी॥ दोऊ सुभट प्रबल अति धरकस। कीन्हें तहांयुद्ध अतिकरकस ॥ अगणित बाणशरनके ठाटन। वारणाकिये किथेबहु काटन ॥ बहु शरपात गातपहँ सहिसहि। अबमतिभागु खरोरहु कहिकहि ॥ कीन्हें घोरयुद्धतहँ दोऊ। जिमि नहिंकिये असुर सुरकोऊ ॥ तहँ तोसुत अति धनुबिधि ठाट्यो। शरसोंधनुष भीमको काट्यो॥ धनुषकाटि अतितुरता धार्‍यो। तीक्षणबाण तासुतन मार्‍यो ॥ सोधनुत्यागि भीमबलभाख्यो। गहिगुरुगदा सुधारिप्रचार्‍यो ॥ तोशरकठिन सह्यउँमैं भाई। अबतूसहु ममदुसह गदाई॥ इतो कहत तोसुत क्षणपायो ॥ बज्रसरिस बरशक्ति चलायो ॥ सो धसिगई भीमकेतनमें। भीमनकियो खेदकछुमनमें ॥ तनतेकाढ़ि शक्तिगहि सोई। तज्यो दुशासनकोतन जोई॥ फिरिप्रचारिबह गदा प्रहार्‍यो। शक्रबज्रजिमि गिरिपहँ डार्‍यो ॥ दोहा ॥ गदा

लगे तोसुतगिरो दशधनु पीछूजाय। हयनसहित चूरणभये रथ ध्वज धनुसमुदाय॥ भईचूर्णित कवचकी कटीसकल अभिराम। मूर्च्छितह्वै गतप्राणसम परोवीरबलधाम॥ त्यहिक्षण अतिआनँदगहे उतकेभट समुदाय। पसरो महाबिषादइत नृपसों कहो न जाय॥ दुश्शासनहिंअचेतलखि भीम सुबीर अभर्म। रथताजि गोतहँबेगसों समुझि सभाके कर्म॥छन्द॥ तहँजाय ताकहँ लखि अचेत। भटभीम इमि उरआनिनेत॥ भोगुणत यहशठमृतक प्राय। किमिपियो शोणित भेदिकाय॥ बिनुचेत यहकिमिलखिहि तौन। हमकहे शोणित पियन जौन॥ कटिबसनलै जीवनबनाय। त्यहिकियो चेत न मरुतछाय॥दोहा॥ करिसचेत दुश्शासनहिं भीमसगर्ब सचाय। धरिछाती परलात इमि बोलोभुजाउठाय॥ कृपकृतबर्मा अधिरथिहि आदिक सबसुनिलेहु। बधत याहिहम सुभटसों रक्षण करहुसनेहु॥ यहसुनि कोऊकरिसक्यो नहिं रक्षण गहिगर्ब। पार्थआदिकनकेशरन ह्वैछाजितभटसर्ब॥ सोरठा॥ इमि सुमटनसोंटेरि भीमपराक्रम भीमभट। दुश्शासन तनहेरि कहतभयोअमरषभरो॥ तबतो शोणितपान करनकह्यो हम मधिसभा। सोअबकरत सचान सकतत्राणकरि कौनभट॥ चौपाई॥ नृप यहसुनि तो सुत रणधीरा। कहतभयो इमि बचन गँभीरा॥ ये ममकर करि कुंभ बिदारन। देनहार गोबाजिहजारन॥ इनके बलतुम सर्बस हारे। बर्ष त्रयोदश बिपिनबिहारे॥ शरपंजर बिरचन बलभारे। पीन पयोधर मर्द्दनहारे॥ अतिसुकुमार सुगन्धनि भीजे। राजसूयके जलसों भीजे॥ केशद्रौपदी को त्यहि कर्षण। कर्णहार ममभुज अरिधर्षण॥ तुम सबलखत रहे त्यहि क्षनमें। तब न रह्योकछु बिक्रम तनमें॥ अब हमपरे समरमें ऐसे। मनमें रुचै करोसो तैसे॥ शोणित पियन कहत तुम सोऊ। करोमोहिं नहिं अमरषकोऊ॥ क्षात्रधर्म पालनकरि रणमें। हम इमिपर मरेभट गणमें॥ काकशृगाल पियें ममशो-

णित। कैतुम पियो करणकरिद्रोणित॥ यहसुनि भीमक्रोधअति गहिकै। फिरि वहि भांति भटनसों कहिकै॥ गहि तो सुत को भुजाउपार्‍यो। सोई तासुगात पहँमार्‍यो॥ चरण दबाय कण्ठ पहँ धरिकै। असिसों बक्षफारि मुदभरिकै॥ लागोपियनरुधिर कछुताते। बीरबिभत्स रौद्ररसराते॥ पियेबारिग्रीषमकोप्यासो। तिमि सोरुधिर पियत तहँभासो॥ दोहा॥ गोरस ऊख मयूष के रसआदिक जे पेय। तिन सबते यारुधिर में है अतिस्वाद अमेय॥ इबिधिसराहि सराहि त्यहि करत सुशोणितपान। लखि सबजाने असुर यह नहिंमनुष्य बलवान॥ भरिअंजलि पीवत रुधिर उमगिगातपैजात। गिराधारधर शिलासम लसोभीमको गात॥ कुम्भकरणसम गरजिकै फिरिसब भटनप्रचारि। कंठ काटिपीवनलगो शोणितकर्मबिचारि॥ कहिकहिकहि ताकेकिये कर्म आदितेसर्ब। डकरि डकरि पीवतभयो शोणितभीम सगर्ब॥ महिवरी॥ इमिपियत शोणितदेखि भीमहिंभीति इतकेभटकहे। यहप्रबलराक्षस रहतहो नरवेशअबलों छपिगहे॥ अब आज प्रकटितकरतभो निजरूपगुण लहिक्षणभलो। तजिराजपुत्रहि चहतभक्षण सबहिनातरु भजिचलो॥ सुनुभूपतहँ तोसुवन दशतिनि देखि बन्धुहि रिसिभरे। बढ़िमोहबशतजि जीविताशा भीमभटसों भिरिलरे॥ तबभीमतजि दुश्शासनहिं चढ़िसुरथपै आनँदभरे। दशबाणसों बधि तिन्हैं सबनिज बन्धुभट मोदित करे॥ दोहा॥ त्यहिक्षण हाहाकारकरि भूपभगी ममसैन। दुर्योधनकृप कर्णसब मोहितभये अचैन॥ श्रीयदुपति श्रीकृष्णको कहाकियो नहिंजौन। भूपतासुफल प्रकटभो बारिसकैतेहिकौन॥ सोरठा॥ अब धरि धीरज भूप रामकृष्ण सुमिरणकरो। राम कृष्ण नररूप परब्रह्म परमातमा॥

इतिमहाभारतदर्पणेकर्णपर्बणिद्वि दिनयुद्धेदुश्शासनबधोनामषष्ठोऽध्यायः

दोहा॥ बांधबन्धुहि शोणितापियत लखिअति अनरथऊटि।

सहिनसके तोसुवनदश लरेभीमसोंजूटि ॥ दण्डधारसहधनुगहे बातवेगबलवान । कवचीपाशीखड्गअरु आलोलुपमतिमान ॥ सुभटसुबर्चस पुत्रतुव निपुण निषंगाबीर । कर्षिकर्षि धनु बर्षि शर कियेयुद्ध गम्भीर ॥ बसुकला ॥ भटभीम कोपि । तहँ प्रलय रोपि ॥ हनिअतिउदण्ड । दशबिशिखचण्ड ॥ तिनभटनमारि । गहिदियोडारि ॥ सोनिरखिबीर । भेबिगतधीर ॥ दोहा ॥ दुश्शासनको बधभये कर्णहिनिरखि अचैन । शल्यभूमिपति कर्णसों कहतभयो इमिबैन ॥ जयकरी ॥ सूतसुवन कतभये अचैन । तजो शोचकछु संशयहैन ॥ रणमेंचढ़िकरि युद्धबिनोद । क्षत्रिहिमरिबो मंगलमोद ॥ जयकै अजय युद्धमेंहोत । तुमलरिबेमें करो न ओत ॥ पारथआदिसुभटरणधीर । आवततुमपहँबर्षततीर ॥ तो सुतभट वृषसेनअमान । बढ़िशत्रुनपहँ बर्षतबान ॥ करोयुद्ध तुम शोचबिहाय । नृपकेशोकहि देहुदुराय ॥ तुमपहँधरोयुद्धको भार । चलोपार्थपहँ रचिशरधार ॥ जीते सुयश मरेसुरलोक । लरोत्यागिनृप सुतकोशोक । सुनियहबचन सूतसुतदक्ष । लरिलागो मर्दनपरपक्ष ॥ तिमिवृषसेन बाणभरिलाय । भयोबधत अरिभट समुदाय ॥ सोलखिनकुल सुबीरउदण्ड । तासोंभिरो कर्षिकोदण्ड ॥ दियक्षुरप्र बाण हनिआसु । ध्वजाकाटि धनुकाट्योतासु ॥ तुरित और धनुगहि रणधीर । कर्णपुत्रतेहि मार्यो तीर ॥ तापहँनकुल नकुलपहँ तौन । बर्षेबाण सुबिक्रम भौन ॥ कर्णतनय रणधीर बिशाल । अतिकरलाघव करितेहिकाल ॥ बध्योनकुलके रथ के सर्ब । तुरगबनायुज चपल अखर्ब ॥ दोहा ॥ नकुलतुरतसो सुरथतजि गहिसुचर्म तरवारि । गहिखगगतिह्वै सहसभट दयो भूमिपैडारि ॥ इबिधिकरत अद्भुतकरम नकुल सुभटकेगात । करतभयो वृषसेनभट अगणित शायकपात ॥ काटिशरन सों चर्मअसि कियोअनगनेटूक । गयोभीमकेसुरथपहँ तबभटनकुल अचूक ॥ सोरठा ॥ कर्णपुत्र रणधीर गर्जिगर्जिबढ़ि कर्षिधनु ।

बर्षो अगणिततीर तिनयुगबन्धुन भटनपहँ ॥ चौपाई ॥ सोलखि अंजनिसुत रणधीरा । बीरबांकुरो अनुपमबीरा ॥ सहिनसक्यो हियअमरष राख्यो । यहिप्रकार पारथसों भाख्यो ॥ कर्णतनय घन सदृश ननर्दत । माद्रीसुतहि शरनसों मर्दत ॥ तापहँ बेगिचले शर बाहत । अजयतासु निजजययश चाहत ॥ यहसुनि पार्थ शरासन कर्षत । चलोकर्णसुतपै शरबर्षत ॥ सोलखि इतके सुभट सयाने । अनरथहोन चहत अनुमाने ॥ कृपकृतबर्मा अश्वत्थामा । शकुनि सुयोधन नृपबलधामा ॥ शकुनितनय वृकक्राथ अमाना । वृद्धनाम योधाबलवाना ॥ बर्षतबाण मंत्रपढ़ि पढ़िकै । आडतभये ताहिबढ़ि बढ़िकै ॥ सोलखि उतके योधारूरे । तिनसोंभिरे गर्ब सों पूरे ॥ सात्यकि धृष्टद्युम्न सैनेशा । द्रौपदेय भटभीषम भेशा ॥ भईतहां अतितुमुल लराई । पृथक् पृथक् सबकही न जाई ॥ नृप कुलिन्दकोसुत रणचारी । कृपाचार्यसों भिरोप्रचारी ॥ कृपाचार्य अति गौरवलीन्हों । द्विरद सहितताकोबध कीन्हों ॥ सोलखि तासु अनुज रणचारी । चलोबिप्रपहँ धनुटंकारी ॥ तबगान्धार भूप प्रणधरिकै । काट्यो तासुशीश शरझरिकै ॥ नृपकुलिन्दको सुत धनु कर्षत । द्विरदबढ़ाय चलो शरबर्षत ॥ तासोंभिरो क्राथरथ चारी । क्राथहि बध्यो तौन धनुधारी ॥ तबवृकशरण तासु गज अरद्यो । गजपगसों त्यहिरथसह मरद्यो ॥ बृकहिमारि नृपसुत दृढ़घायक । चलोशकुनिपहँ बर्षतशायक ॥ बध्योताहि गान्धार महीपति । बाणनकीबर्षा करिदीपति ॥ शतानीक नाकुलि त्यहि पलमें । बध्योअसंख्यन भटममदलमें ॥ यहिप्रकार दुहुंदिशिके योधा । बढ़िबढ़िभिरि करिकरिअवरोधा ॥ कीन्हेतुमुल युद्धबल भारे । अगणितमरि सुरलोक सिधारे ॥ दोहा ॥ कर्णपुत्र त्यहि क्षणकियो बिक्रम कठिनकठोर । भीमनकुल कृष्णहिंहन्यो तीक्षणबाण अथोर ॥ सो लखिपारथ बर्षिशर नृपममं योधनटारि । भोसन्मुख वृषसेनके भटनभूरिभयभारि ॥ सोरठा ॥ पार्थहिनिकट

निरेखि कर्णपुत्रको दण्डधर । शायकबर्षत तेखिचलो नमुचि जिमिशक्रपहँ ॥ त्यहिक्षण अद्भुतकर्म करतभयो धनुधरमुकुट । अगणित शरतकिमर्म हन्योपार्थहिबर्षिशर ॥ चौपाई ॥ अतिकर लाघवकरिपण धरिकै । मण्डलसरिस शरासन करिकै ॥ अगणितबाणकाटि पारथके । करता तासु सरिस स्वारथके ॥ बाहुमूलमधि बाण प्रहारयो । तीक्षण नवशर कृष्णहि मारयो ॥ फिरि दशबाण पार्थके तनमें । मारतभयो गर्बगहि मनमें ॥ तबपारथ अतिरिस बिस्तारयो । कर्णतनयको नाशबिचारयो॥करित्रिशाख भृकुटीअति भीषम । भोजिमितरणिदुसह लहिग्रीषम ॥ कर्णहि टेरिकह्यो इमिभाजा । लहिअकेल तुमसहित समाजा ॥ ममपुत्रहिबधि आनँदलीन्हें । धर्मत्यागिअधरम रणकीन्हें ॥ दुर्योधन सह तुम्हरेदेखत । हमतोसुतहि बधन अवरेखत ॥ सँगलै नृप कृप आदिक दक्षण । जोकरिसको करोतोरक्षण ॥ शकुनिदुशासन तू दुर्योधन । अनरथमूल प्रलय बिधि शोधन ॥ क्रमसोंतुम सब नभपथलैहौ । गयो दुशासन जहँतहँजैहौ ॥ इमिकहि पार्थ धनुषधर नायक । कर्णसुतहि मारयो दशशायक ॥ फिरिप्रहारि शायक अतिचोखो । काट्योतासु शरासन नोखो ॥ फिरिप्रहारि युगशर अनियारे । काट्योतासु भुजाबलभारे ॥ तबक्षुरप्र शर टेरिचलायो । काट्योतासु शीशमनभायो ॥ दोहा ॥ बिभुजबिशिर ह्वै कर्णसुत गिरोसुरथतेभूप । यथाबायुबश शिखरते पुष्पितबृक्ष अनूप ॥ बधलखिसुत वृषसेनकर सूतजह्वै हतचेत । धरिधीरजाफिरि पार्थपहँ चलोअजय जयहेत ॥ यह लखिकै केशव कहे आवतकर्ण सखेद । बेगिकरोअब तासुबध गुणिअद्भुत धनुवेद ॥ यहसुनिकै पारथकह्यो तो अनुकम्पापाय । यहिदिनमेंहम सूतजहि बधबदिब्य शरलाय ॥ सोरठा ॥ इमिकहि पार्थ अमान करषि कठिन गाण्डीवधनु । बर्षणलागोबाण सूतसुवन रणधीर पहँ ॥ तिमिसूतज बलवान बिजय धनुष टङ्कारबाढ़ि । करिअ-

द्भुत सन्धान बरषो शायक पार्थपहँ ॥ रोला ॥ टेरि टेरिप्रचारि दोऊबिदित बीरबिशाल। भयेबर्षत दुहूंदिशिसों दिव्यशायक जाल ॥ दुहुनकेरथ व्याघ्रचर्मनि रचितपरमअनूप। दुहुनकेरथ श्वेतघोरन सहितराजितभूप ॥ द्विरदध्वजरथ कर्णको अरुपार्थकोकपिकेतु। दुहुनरथपैदयेदोऊ बिरचिशायकसेतु ॥ दुहुनके दिशि घनेबाजन लगेबाजनतत्र। दुहुनकेसँग सुभट दुहुंदिशि लगेबर्षण पत्र ॥ सुनोनृप तेहिसमय दुहुंदिशिदुहुनके भटपक्ष। गुणे निज निज सुजय निश्चल शत्रुनाश समक्ष ॥ धनुषबिधिमें सदृशदोऊसुभट भिरि तेहिकाल। कियेअद्भुतकर्म दुहुंदिशिबर्षि शायकमाल ॥ शक्रसंबर सरिसअतिशय प्रबलदोऊबीर। किये जैसो युद्ध सो सबकहत छूटतधीर ॥ सिद्ध सुर गन्धर्ब किन्नर यक्ष आदि समस्त। भयेचाहत फालगुणको बिशद बिजयप्रशस्त ॥ असुर गुह्यक यातुधान पिशाच आदिक सर्ब। भयेचाहत सूत सुतको बिजय बिरद अखर्ब ॥ भानुभाषे पारथहिबधि लहै कर्ण सुजीति। कह्योमघवा बधैकर्णहि पार्थपालकनीति ॥ कह्योबिधि सों शक्रतेहिक्षण आपुभाष्योपूर्ब। कृष्णजेहि दिशिरहैगोसो लहै गोजयगूर्ब ॥ कहौफिरि अबलहैगो कोसुजयशत्रुहिमारि। नाथ निश्चय भाषिसोमम देहुसंशय टारि ॥ बचनयहसुनिकह्यो बेधा लहैगो जयपार्थ। कृष्णजाकेसुरथपै नितिसधिहि ताकोस्वार्थ ॥ बचनयहसुनि भयेमोदित सुमनके समुदाय। असुरपक्षी कर्णके सबदये मोदबिहाय ॥ कह्योतेहिक्षण शल्यसों इमि कर्णपालक धर्म। पार्थहमको बधैतौतुम करौकैसोकर्म ॥ शल्यबोल्यौ पार्थ तुमकहँ बधैतौहमएक। बधबसिगरे पांडवनकहँ बरषिशरगहि टेक ॥ दोहा ॥ पारथबूझे कृष्णसों कर्णबधै जोमोहिं। तौप्रभु तुम करिहौकहा सूतसुवनकहजोहिं ॥ कहेकृष्णतौकर्णको करिसगर्ब संहार। क्षणमेंबधि सबकौरवन पूरबप्रलय पसार ॥ कहेपार्थ प्रभु इमिकरत जापैपूरपियार। सोहमक्षणमें सूतजहि बधब नसंशय

चार ॥ सुमनसिद्ध गन्धर्ब ऋषि किन्नर अप्सरसुद्ध। रहेप्रगट रहि तहँलखत कर्णार्जुनको युद्ध ॥ सोरठा ॥ अतिशय संगरघोर होतभयो तेहिक्षणतहां। शस्त्रप्राणधनचोर पूरिरहे रणगेहमधि॥ चौपाई ॥ पार्थकर्णके शायकरूरे। बारिबुन्दसम दुहुंदिशि पूरे ॥ दोऊअति धनुबिधि बिस्तारे। अगणितहय गज भटबधिडारे ॥ सोलखि पांचसुभट इतकेरे। गणेधनुषधर बीरबड़ेरे॥ दुर्योधन कृपशकुनि सोहाये। भोजभूप द्विजसुत भट गाये ॥ बढ़िबढ़ि कृष्ण पार्थहि तकि तकि। बरषे बिशिख भागुमति बकि बकि ॥ तेहिक्षण पार्थचक्रसमचरिकै। भल्लअर्ध शशिकी झरिकरिकै ॥ सबके हय सारथिन सँहारे। ध्वज धनुकाटि भूरिशरमारे॥ लखि तिनकी यहदशाप्रमादी। शतसुरथी शतहय गजसादी ॥ सक-तुषार यमनकांबोजा। भिरेपार्थसों गहि अति ओजा ॥ बर्षि क्षुरप्र पार्थतेहिक्षणमें। तिन्हैं काटिडारों सबगणमें ॥ सोलखि सुरगण अति मुदपाये। साधुसाधुकहि तूरबजाये ॥ बरषेसुमन पार्थके ऊपर। ब्यथितभयेसब तासुतभूपर ॥ द्रोणतनय सुर बाणी सुनिकै। सुमनदृष्टिलखि मनमेंगुनिकै ॥ दुर्योधन नृपको करगाहिकै। यहिबिधि कहतभयो थिरराहिकै ॥ नृपप्रसन्नह्वै मम सिखधरहू। बन्धुबिरोध दोष परिहरहू ॥ पांडवअजौं साम्यता चाहत। जनबिनाशलखि हियेकराहत ॥ दोहा ॥ तुमबिरोध तजि धर्मनृपसों मिलभायपुलेहु। देहुभागकरि भूमिसम मिटैसकल संदेहु ॥ भूपसगणहत शेषसब निजनिज गेहनजाहिं। मिटमहा अनरथ नृपति औरमंत्र अबनाहिं ॥ निजमरिबेकी शङ्ककरिह-मनकहत यहबैन। हमसम मातुलअमरहैं बहकछु गोपितहैन॥ बन्धुबर्ग समुदाय सह तुम अरु नृपति समस्त। गुणि सबको कल्याणहम बोलत बचनप्रशस्त॥ तुममानौ तौ सामितकरि कर्ण पार्थकोयुद्ध। धर्महि तुम्हहिं मिलाइहमकरैंहिताईशुद्ध ॥ जयकरी॥ द्रोणतनयके सुनियेबैन। कहतभयो तो सुत बलऐन ॥ तुमजो

कहेन अनुचित तौन । तुम्हैंसमानमोरहित कौन ॥ पैहमकहत तौन सुनिलेहु । नहिं ममहियमें प्रविशतयेहु ॥ सिंहसमान भीम बलवान । गहिममबन्धुहि द्विरद समान ॥ बक्षफारि शोणित करिपान । गर्बितबोलो बचन अमान ॥ सोमोहिंलगो कुलिशको पात । किमिअब मेलकरें हमतात ॥ हमकीन्हे उन्हकोअपकार । सोकिमि भूलिहि उन्हैंसवार ॥ ताते गहौनसंशयनेक । कर्णपार्थ कहँ बधिहि सटेक ॥ दोहा ॥ यहसुनिकै चुपकैरहो द्रोणतनय मति शुद्ध । होतभयो तेहिक्षण महा कर्णार्जुनकोयुद्ध ॥ चौपाई ॥ यहि बिधि लरतभये तेभिरिकै । लरतमनों युगबारिद थिरिकै ॥ दोऊ शक्र सरिस तहँहरषे । बज्रसमानघनेशर बरषे ॥ मण्डलसरिस शरासन लीन्हे । दोऊनभशर छादितकीन्हे ॥ पक्षीजूह बृक्षपहँ जैसे । बासहेतु निपततहैं तैसे ॥ दोउनकेशर दोउनऊपर । परैं परैजिमि पाहनभूपर ॥ दोऊ दोउनकेशरखरे । बाणनकाटियुद्ध महिपूरे ॥ दशदशबाण दुहुनकेतनमें । दोऊहनतभये तेहि क्षन में ॥ पार्थतहांअति अमरषपाग्यो । अस्त्राग्नेय कर्णपहँत्याग्यो ॥ तेहिक्षणसुरथ कर्णकोराजित । भोअतिज्वाल जालसोंछादित ॥ सबकेबसन बरनतहँलागे । कैअतिबिकल सुभटसबभागे ॥ सो लखिकर्ण धनुषधरदारुण । छाँड़तभयो अस्त्रबरवारुण ॥ तासों ज्वालजाल भो लोपित । भयोजलदसों महिनभ गोपित ॥ तब बायव्य अस्त्रतजिपारथ । ताहिबिदारि करतभोस्वारथ ॥ दाइत अस्त्रकियो बिस्तारा । तासोंकढ़ी शरनकीधारा ॥ हयन सहित सूतजके गातहि । तेबेधे कण्टकजिमि पातहि ॥ तब अतिरिस करि कर्ण अमाना । छांड्यो भार्गव अस्त्रमहाना ॥ दोहा ॥ अस्त्र अस्त्रसों समितकरि बर्षिबाण पगधारि । बधिअगणित पांचाल भट दयोभूमिपैडारि ॥ भुजंगप्रयात ॥ बलीकर्ण बैकर्णकै शत्रुसेना । गुन्यो तो सुतै आशिजै जीतिदेना ॥ कियोपार्थपै बाणकी बृष्टि कैसे । तजैशैलपै बारिमेघालि जैसे ॥ करैपार्थके अस्त्रको व्यर्थ

तसे । यथा ईतिकी भीतिको भूपनैसे ॥ किये चण्डको दण्ड को दण्डभारी । लसोकालजैसो प्रलयकालकारी ॥ दोहा ॥ तोहिक्षण इतकेभटगुणे कर्णपारथहिमारि । देनचहत कुरुपतिहिजय धनु बिधि सिधि निरधारि ॥ तथापार्थ गाण्डीवधनु किये मण्डला कार। बर्षोसूतजपैविशिख यथामेघजलधार ॥ बारिपार्थकोबाण सब बास पार्थपहँछाय। कर्णबधतभो शरनसों हयगजभटसमुदाय ॥ सोरठा ॥ सोलखि पवनकुमार बिक्रमनिधि अमरषभरो। करिनिजसुप्रण बिचार पाणिपाणिसों मलतभो ॥ जयकरी ॥ भीमसेन अतिरिसिबिस्तारि । पारथसों इमिकह्यो बिचारि ॥ तुम गन्धर्बन जीत्यो पूर्ब । कियो शम्भुसों संगरगूर्ब ॥ इन्द्रहिजीति कियोबनदाह । असुरनसों जयलह्योसचाह ॥ अबकत शिथिल भयेहोतात । सहतकर्णको आयुधपात ॥ सुधिकरिपूर्ब कियोअप्रकर्म । शीघ्रबधौ यहिगुणि निजधर्म ॥ यहसुनिकै केशव हित मानि । पारथसों बोले अनुमानि ॥ सूतजप्रबल परोयहिकाल । तुमकतगहत शिथिलताचाल ॥ यहिबिधिलहौ जीतियाहियाम । भोगौ भूरिभूमि अभिराम ॥ यहसुनिपार्थ क्रोधबिस्तारि। त्याग्यो ब्रह्मअस्त्र प्रणधारि ॥ तजितेहि प्रतिम अस्त्रकरिगौर । कीन्ह्यो व्यर्थ कर्णतेहि ठौर ॥ सोलखि कह्योभीम अनखाय । अस्त्रभेद तुमदये भुलाय । शायकबर्षि बधौयहितात ॥ शिथिलभये दिन बीतोजात ॥ तबपारथ अमरषसों पूरि । सूतजपहँ बर्ष्यो शर भूरि ॥ममसेनामधि शायकछाय। बध्योअसंख्यनभट समुदाय॥ शरगाण्डीव धनुषसोंमुक्त । भेजिमि किरणि प्रलयकेउक्त ॥ तपि सहसांशु सरिस जगजैन।भस्मित करतभयो ममसैन ॥ दोहा ॥ तोहिबिधिसूतज प्रबलभट बर्षिबाण उरदण्ड। भीम कृष्णपार्थहि हन्यो तीनितीनि शरचण्ड ॥ कृष्णहि शरताड़ित निरखि पार्थ क्रोधबिस्तारि। शल्यभूपके गातमें मार्‌यो शायकचारि ॥ मारि केतुमें एकशर करिअद्भुत सन्धान । तीनि चारि बसु दश हन्यो

सूतजकेतन बान ॥ तीनि आठ द्वै चारि दशतीक्ष्णशायक भूप।
फिरिक्रमसों कर्णहिंहन्यो करिशरवृष्टि अनूप ॥ सोरठा ॥ जलद
झरत जिमि बारि तेहिबिधि शायकबरषि तहँ। बधेद्विरद शत
चारि रथीआठशत बधतभो ॥ सहसतुरग असवार पैदरआठ
हजारबधि। बरषिघनोशरधार कर्णहिदयो अदृश्यकरि ॥ चौपाई ॥
भूपतिसुनो कर्णतेहिक्षनमें। मण्डलसम धनुकरि गुणिमनमें ॥
करि करि अगणित परस्परछेदन। बध्योअसंख्यन भट अरि
खेदन ॥ सुवनअश्विनीके मनभाये। तेहिक्षण धर्मभूपपहँआये ॥
औषधिकरि शरव्यथा दुराये। धर्मभूप अति आनँदपाये ॥ रथ
चढ़िकै आयो निजदलमें। सुभटन मुदितकियो तेहिपलमें ॥
कर्णसिंह तेहिक्षण रणबनमें। शतशरहन्यो पार्थकेतनमें ॥ साठि
सुबाण केशवहि मार्‌यो। अनिल नन्दनहिं अयुत प्रहार्‌यो ॥
छकोबीररस प्रबलप्रमादित। अरिदल कियोशरनसों छादित ॥
तिमि पारथधनु कर्षण करिकै। रथपर चपलचक्रसम चरिकै।
बाणनअन्धकार करिदीन्हो। जातेपरो न हयगज चीन्हो ॥ तीक्ष-
णदश शर शल्यहि हनिकै। कर्णहिं मार्‌यो द्वादश गनिकै ॥ फेरि
सात शायक अतिचोखे। मारतभयो तेजसोंपोखे ॥ शायकबर्षि
कर्णधनुधारी। हन्यो ताहि शरतीनि प्रचारी॥कृष्णहि हन्यो पांच
बरशायक। कर्णसुबीर बिदित भटनायक ॥ पार्थ केशवहि बधित
देखी। बर्षोबिशिख नाश अवरेखी ॥ दोयसहस सूतजके अंगी।
बधिकीन्हे यमपुर गतसंगी ॥ दोहा ॥ तजिकर्णहि तेहिक्षणभगे
तो सुतभट समुदाय। जिमि ब्याधहि लखि सुतरु तजि भगत
बिहँग भयपाय॥ पार्थअधरथीके बधनको प्रणपूरणधारि। पार्थ
लसो जिमि त्रिपुरदल मध्यलसो त्रिपुरारि ॥ सोरठा ॥ तिमि सू-
तज रणधीर प्रलयभर्‌यो परसैनमधि। दोउतुलबलबीर कीन्हे
अद्भुतयुद्ध तहँ ॥ भुजंगप्रयात ॥ महाबीरदोऊ धनुर्वेदचारी। दुहूं
ओरकेबाणकी वृष्टिभारी ॥ किये घोरसंग्राम ताठौरदोऊ। नहीं

सामुहेभेदुहूं ओर कोऊ ॥ गयेदूरिजेते भयेमौनऐसे । गयेसामने तेभये नाभऐसे ॥ दुहूं ओरके योंकहे याचिबेको । नहीं आजुतो योगहै बाचिबेको ॥ दोहा ॥ कर्णहि बधिदल कौरवी बधिहिपार्थ वलऐन । कैपार्थहि बधिकैकरण बधत पाण्डवीसैन ॥ चौपाई ॥ दोऊ गगन शरनभरि दीन्हे । अन्धकार आरोपितकीन्हे ॥ दोउन केअति बिक्रमदेखी । विस्मितभये सुवनअवरेखी ॥ दोऊक्षात्रधर्म अवतंसे । इमिकहि कहिसुर दुहुंन प्रशंसे ॥ दोउनके करकरि करभारी । रहेजात लखि काननचारी ॥ कबहुंपार्थ बढ़ि बिक्रमकीन्हों । कबहुँ सूतसुत गुरुतालीन्हों ॥ रह्यो न थिरघटि बढ़ि पद कोऊ । अतिशय प्रबल धनुषधर दोऊ ॥ भूप किये तहँ तुमुल लराई । पृथक् पृथक् सबकही न जाई ॥ नृप तेहिसमय भई कछुलीला । सोहम कहैं सुनो श्रुतिशीला ॥ नागराज को सुत रिसिपागो । जोखाण्डव सुबिपिनते भागो ॥ मातबधनको अघगाहिहीरे । सोतेहिं समौ समय लहिनीरे ॥ पार्थहि बधन हेतु अतिधरकस । प्रविशत भयो कर्णके तरकस ॥ गहिशररूप रहोछबि सानो । काल कराल पार्थको मानो ॥ ऐरावत सुतमुख सो शायक । योजित कियो कर्ण भटनायक ॥ लखिसो बाणकाल समनाचत । शक्रकह्यो नहिं ममसुत बाचत ॥ कहे बिरंचि शोच मति करहू । मरिहिन तो सुत साहस धरहू । चाहिपार्थको शीश अनोखो । कर्ण तज्योसो शायक चोखो ॥ दोहा ॥ निरखि तासु ऊरध सुगति केशवरथहि दबाय । कछुमहिमधि प्रविशित कियो चारुचक्रगहिचाय ॥ भूमिचक्र प्रविशित भये चारोंहय तेहिमान। जानुमोरिमहिपहँधरे हरिइच्छा बलवान ॥ इन्द्रदत्त शुचिमुकुट मधिलगोबाण करिगौन।कटिकिरीट महिमाधिगिरो ब्यर्थभयोशर तौन ॥ श्लोक ॥ गोकर्णासुमुखीकृतेनइषुणागोपुत्रसंप्रेषिता गोशब्दात्मजभूषणंसुविहितंसुव्यक्तगोसुभ्रमं । दृष्ट्वागोगतकंजहार मुकुटंगोशब्दगापूरिवै गोकर्णाशनमर्दनश्चनतयानप्राप्यमृत्यो

वैशम्प० ॥ दोहा ॥ उग्रबाण बपुनागवह बहुरिकर्ण पहँजाय। कह्यो कृष्णकीकृपाते बचोपार्थकोकाय ॥ फेरितजोमोहिं पार्थपहँ अब के बचीलतौन। शक्रहुकेरक्षणकरे करिहिकाल पुरगौन ॥ सोरठा ॥ सूतजसुनि यहबैन कह्योनागसों कौनतुम। सोसुनिनागसचैन पूर्ब कथा सबकहतभो ॥ तोमर ॥ सुनि सूतसुत बलवान। इमि कह्योकरि अनुमान ॥ हमऔरकोबलपाय। नहिंचहतजयसुख दाय ॥ तुमजाहु निजअस्थान। हम बधबहानि निजबान ॥ फिरि चलोसो अहिएक। गहिपार्थ बधको टेक ॥ तेहिदेखि हरिगहि खेद। कहिदये पार्थहिभेद ॥ तेहिपार्थ हनिषटपत्र। करिदयो षटधातत्र ॥ फिरिबर्षि शायकधार। शतरथिनको संहार ॥ भो करत पारथबीर। भटविदित अतिरणधीर ॥ भटकर्ण तेहिक्षण भूप। ह्वैदुसह शूरस्वरूप ॥ बरशरनकी झरिलाय। दशहन्यो ताकेकाय ॥ तब पार्थ रिसकरिचाहि। शरहन्यो द्वादशताहि ॥ तबकर्ण पार्थहिटेरि। शरहन्यो नब्बे फेरि ॥ फिरिबासुदेवहि हेरि। शरहन्यो द्वादश घेरि ॥ तकि गरजि गरजि सहास। शर हनतभो गुणिनास ॥ शरबर्षि पारथ आसु। नहिं सह्यो गरजनि तासु ॥ तकिकर्ण भटको गात। भो करत बहुशरपात ॥ दोहा ॥ करलाघव करि बर्षिशर टेरि टेरि गहिटेक। चारु कर्णकेकर्णको कुण्डल काट्योएक ॥ अतिरिस करि तेहितीनिशर मार्‍यो कर्ण कराल। परित्रिदोष बश पुरुषसम पार्थभयो तेहिकाल ॥ धनु गाण्डीवहि कर्षित्यहि पार्थहन्यो बहुबान। लसोकर्ण बर्षा समय गैरिक शृंगसमान ॥ सोरठा ॥ सुनोभूप तेहिठौर दोऊबरणै धनुष धर। कियेयुद्ध यहि ठौर जोलखि बिस्मित सुमनभे ॥ चौपाई ॥ महाराज सुनिये तेहि क्षनमें। कर्णगह्यो अति गौरव मनमें ॥ अतितीक्षण वरबाणअधीरे। मारतभयोपार्थकेहीरे ॥ तासोंभिदि मोहित ह्वैपारथ। नहिं करिसक्यो धनुषचरितारथ ॥ सोलखि कर्णधर्मबिद आरज। थिरह्वैरहो त्यागि धनुकारज ॥ कृष्ण पार-

थहि मोहित ज्वैके। कहतभये अति दोचित ह्वैके ॥ पार्थ धार धरिशायक बरषो। प्रबल शत्रुकोबधकरि हरषो॥ पार्थकृष्णकी बाणीसुनिकै। लगो बिशिख बर्षण धनुधुनिकै॥ तथा कर्णअति अमरष पागो। करिलाघव शरबर्षण लागो॥ दोऊधनुधर गौरव लीन्हो। अतिशयकठिन युद्धतहँकीन्हो॥ नृपतेहिसमय समुझि निजबानो। कालकर्णके ढिगनागिचानो॥ परशुरामको शापसोहायो। अरुद्विजशाप समयलखि आयो॥ रथकोबाम चक्रबर बरणी। गाढ़ेग्रसतभई तबधरणी॥ शल्य यतन करि बिस्मय भारे। बली तुरग सबबल करिहारे॥ यह अनरथ लखि कर्ण बिचार्‌यो। महिकेहिहेतु सुरथ ममधार्‌यो॥ मैंनकियो अधरमं निजजानत। दानमान दायक सबमानत॥ धर्म धर्म करतहि नितिरक्षत। अबममधर्म भयोकित गच्छत॥ दोहा॥ इमिकहि सुमिरत निजधरम धरमधुरंधर धीर। पारथके बाणन भयो बिकलकर्ण रणधीर॥ कर्षिधनुष कृष्णहि हन्यो तीक्षण तीनि सुबान। हन्योअर्जुनहि सातशर करिअद्भुत सन्धान॥ अति तीक्षण सत्रहबिशिख कर्णहि मार्‌योपार्थ। गातबेधि ते कढ़िगये भूपतिसुनो यथार्थ॥ सोरठा॥ कर्णसाहसीधीर तजतभयोब्रह्मास्त्रतब। सो लखिपारथबीर इन्द्रअस्त्र छांड़तभयो॥ इन्द्रअस्त्र बरतासु ब्यर्थभयो ब्रह्मास्त्रसों। सोलखिपारथआसु तजतभयो ब्रह्मास्त्र तहँ॥ चौपाई॥ तुल्यप्रभाव अस्त्रते भिरिकै। नृप सुनु अमितभयो तहँ थिरिकै॥ तहां कर्णअति तुरता गहिकै। पारथ अत्र न बचत इमि कहिकै॥ कर्णबीर अतिधनु बिधि ठाट्यो। ताधनुको सुप्रत्यंचाकाट्यो॥ पार्थ प्रत्यंचा और चढ़ायो। काट्यो सोउकर्ण भटभायो॥ तीसरि चउथि पांचई छठई। ज्या काटतभो सतई अठई॥ कटत प्रत्यंचा पार्थ चढ़ावै। कर्णकाटि तेहिओज बढ़ावै॥ पार्थ धनुषकी ज्यागुण अगरी। कीन्हों कर्ण भाण्डकी पगरी॥ क्रमसों पारथके धनुकेरी। शतज्या काटिदयो

शतबेरी॥ तहँ पारथ अतिगौरव लीन्हों। नृप अचरजकर लाघव कीन्हों॥ कटत चढ़ावत बर्षत बानाहिं। नेकु न भेदपरो लखि आनाहिं॥ रथबिनु चले कर्ण तेहि क्षनमें। समयदेखि भैब्याकुल मनमें॥ धनुरथपै धरिबीर उतरिकै। चारुचक्र युत करसोंधरिकै॥ लगो उठावन सुनु महि साईं। अचरज कियो कर्ण तेहिठाईं॥ गिरिसागर काननसह धरणी। रथकेसँग तेहि पूरण परणी॥ अंगुल चारि प्रमाण उठायो। सुरगणकेमन बिस्मयछायो॥ छुटो न रथतब कर्ण बिलखिकै। सजलनयनभो इतउत लखिकै॥ करिशरवृष्टि पार्थतेहिक्षिनमें। बहुशरहन्यो कर्णकेतनमें॥ तिनसोंकर्ण महादुखपायो। पारथको इमि टेरिसुनायो॥ हे हे पार्थ कहा अघधारो। बाणवृष्टि क्षणएक निवारो॥ असितचक्र धरणी ते जबलों। मैं काढ़ोंतू थिररहु तबलों। बिनाशस्त्रपहँ तजिबो शायक। उचितनतुम्हैं बिदित भटनायक॥ दोहा॥ नहिंकृष्णहि नहिंतुमहिंहम भीतिकहत येबैन। तुमसेक्षत्रिहि धर्मको तजिबो सोहतहैन॥ जौलगिचक्र छोड़ाइहम नाहिंपकरैंधनुबान। पारथ तौलगि करिक्षमा बहुरिलरो मनमान॥ जयकरी॥ तहां कर्णके सुनिये बैन। कहतभये केशव मतिऐन॥ तुम दुर्योधन शकुनि कराल। कबकीन्हे सुधरम प्रतिपाल॥ भीमसेन कहँजहरखवाय। सांपनसों दीन्हे कटवाय॥ करिकै मंत्रनाश अभिलाखि। इनकहँ लाक्षागृहमें राखि॥ निशिमेंदाह करायोपूर्ब। तबकित रहो धर्म व्रतगूर्ब॥ कियेसभामें कुकरमजौन। अबनाहिं कहत बनत सबतौन॥ तेरहेंबर्ष बांटिमहि लेन। कियेकरार न चाहेदेन॥ तब कितगयो धरमकोकाम। अबलखि परोधरम अभिराम॥ बिरथ बिधनुष अकेलोवार। पार्थसुतहि बांधिपटधनुधार॥ अतिआनँद लहि भयेअभर्म। अबचाहत करवावोधर्म॥ अबतोबध करिबो यहियाम। हे पारथको धर्म ललाम॥ केशवके येबचन अनूप। सुनि सूतजकै लज्जित भूप॥ फिरि रथपहँ चढ़ि गहिकोदण्ड। बर्षण

लागोबाण उदण्ड ॥ भरो क्रोध लाघव सरसाय। दयो पार्थपहँ शायकछाय ॥ सोलखिकै केशव अनुमानि। कहेपार्थसों अवसर जानि ॥ दिव्य शरनसों बेधि सडौर। अब यहि शीघ्र बधोकरि गौर ॥ दोहा ॥ केशवके येबचन सुनि पारथ धनुटंकारि। बर्षण लागो कर्णपहँ दिव्य अस्त्र प्रणधारि ॥ करतभयो ब्रह्मास्त्रको तेहि क्षण कर्ण प्रयोग। पारथतजि ब्रह्मास्त्र तेहि क्षमित कियो करि योग ॥ ताहिशमितकरि तजतभो दइत अस्त्रसों बीर। बारुणास्त्र सों तेहि शमित कियोकर्ण रणधीर ॥ घनतमसों छादित दिशा देखि पार्थकरिकोप। कियो अस्त्रबायब्यसों बारुणास्त्रकोलोप ॥ सोरठा ॥ सो लखि कर्ण अमान परम दिब्यशर गहतभो। करि अद्भुत सन्धान तज्यो देखि डरपे सुमन ॥ बज्रसरिस सो बाण तासु भुजातर मधिलगो। भिदि तासों बलवान मोहितभो अर्जुन सुभट॥ चौपाई ॥ महाराज सुनिये तेहिक्षनमें। रथतेउतरिकर्णगुणि मनमें ॥ हर्ष बिषाद क्रोधसों पागो। बलकरि सुरथ उठावनलागो ॥ कृष्णचंद्र सोसमय निरेखी। पारथसों बोलेअवरेखी ॥ रथ चढ़ि गहेधनुष शरजौलौं। कर्णहि पार्थ बधो तुमतौलौं ॥ कृष्ण चन्द्रकी बाणीसुनिकै। पारथ मंत्रयथारथ गुनिकै ॥ तीक्षणशर क्षुरप्र करलीन्हो। तासोंकेतुकाटि द्वैकीन्हो ॥ फिरि अमोघआंजालिक सुशायक। गह्योपार्थ भटधनुधर नायक ॥ चक्रत्रिशूल बज्रसम घोरा। कालदण्डसम कठिन कठोरा ॥ प्रलय कालके भानुसमाना। बायुअग्नि समदुसह महाना ॥ भरिआंगिरसमंत्र कीपुरता। करिअति अगणित गौरव गुरता ॥ सबदिशि हेरि क्रोधसों रातो। बोलोपार्थ बीररसमातो ॥ अबहनि यहशरगौरव भेखो। कर्णहि बधिडारत शरदेखो ॥ इमिकहि पारथ तेहिशर बरसों। काट्यो शीशकरण केधरसों॥मारतण्डसम परमप्रभाको। महिपै गिरो शीशकटिताको ॥ तदनु गिरोधर तजि बलगारो। सरस सुखोचित सुखमाभारो ॥ मणिमय भूरिभूषणनि छाजित।

महिपरभयो कर्णभट राजित ॥ दोहा ॥ सबके देखत तहँभयो अद्भुत अति अमलीन । तेजकर्णकी देहसों कढ़िभो रबिमें लीन ॥ इबिध कर्णको बध निरखि केशवपांडव सर्ब । लगेबजावन शंखअति आनँदभरे सगर्ब ॥ गरजि गरजि सोमकसकल अरु पांचाल समस्त । सानँद बजवावनलगे जय दुन्दुभी प्रशस्त ॥ नृपतहँ ममदल मथिमढ़ो हाहाधुनि गम्भीर । भागिचले भट बिकलह्वै तजिबल गौरव धीर ॥ सोरठा ॥ कर्ण अग्निकी शान्ति युद्धयज्ञके अन्तलखि । आवतभयो अकान्ति सरथशल्य रित्युज बिकल ॥ दुर्योधन क्षितिपाल कर्णसखाको बध निरखि । तजत नयन जलजाल महाराज अतिबिकलभो ॥ पूरितमोदमहानकरि करि धनुटंकार अति । भीमसेन बलवान गरजि गरजि निरतल भयो ॥ शल्य नृपति पहँआय सकलब्यवस्था कहतभो । सुनितो सुतक्षितिराय रुदनकियो अति दीनह्वै ॥ चौपाई ॥ नृपधृतराष्ट्र बचनयहसुनिकै । संजयसों बूझै शिरधुनिकै ॥ संजयकहो दशा लहिऐसी । ममसुतभूप गह्योगति कैसी ॥ संजयकह्यो सुनोनरनायक । तेहिपलतोभट भये अचायक ॥ पार्थ धनुर्द्धर कर्णहि बाधिकै ॥ अबहम सबकहँ बधी बराधिकै ॥ भीमसेन बिनुबधे न छांड़िहि । कोअससुभट ताहिजो आड़िहि ॥ यहबिचारि अति शय भयपागे । साहस छोड़ि भूरि भटभागे ॥ नृपतेहिक्षण मम भटभे तैसे । बूड़ेनाव बणिकजन जैसे ॥ लखियहदशाभूप दुर्योधन । निजचष जलको करि अवरोधन ॥ गुणि दुखगहेहारि यहिक्षनमें । तोसुतभूप धीर धरिमनमें ॥ बिचले भटनटेरि अनखायो । क्षात्रधर्म बहुभांति सुनायो ॥ सोसुनि तेसबफिरे नकैसे । रुकै न बहुत सरितजलजैसे ॥ सोलखि तोसुत सुभटअतोलो । सुहित सारथीसों इमिबोलो ॥ संशयत्यागि चपलकरि घोरे । सादरचलो पार्थके धोरे ॥ मैंरणरच्यो सुभुजबलभाई । बिचलि जाहिं सबसुभट सहाई ॥ कहाभीमका केशव पारथ । हमबधि

इन्हें करब निजस्वारथ ॥ येनाहिं आइसकत ममनीरे । ममबिक्रम गुणिडरपितहारे ॥ यहिबिधि तोसुत नृपसों सुनिके । धीरेचलो सारथी गुनिके ॥ सहसपचीस वीरभट बांके । बर्षतबिशिख चले सँगताके ॥ सोलखि गर्बिउतैके योधा । बढ़ितिनको कीन्हेंअव-रोधा ॥ सात्यकि भीम नकुल दोउभाई । धृष्टद्युम्न अति ओज बढ़ाई ॥ कीन्हेंघोरयुद्ध तहँराजा । बधेअसंख्यन सैनसमाजा ॥ तिमिइतके योधापण धरिकै । बधेअसंख्यन भट शरझरिकै ॥ दोहा ॥ गर्जि २ भटभीमतहँ गहिगुरुगदा अमान । बधतभयो कैयकसहस हयगज भटपरधान ॥ अति ब्याकुलह्वै तेहि समय इतकेभट हतशेष । भगेनृपहि तजित्याग करिक्षात्रधर्मकी रेष ॥ सोरठा ॥ सुनुभूपति तेहिकाल तोसुत नृपधनुधर मुकुट । बर्षिशरन कोजाल घोरपराक्रमकरतभो ॥ एकसुभट रणधीर भिरिअगणित परभटनसों । कियो युद्ध गंभीर पूरिभूरि शर दिशनमें ॥ रोला ॥ शल्यनृप तेहिसमय भूपहिभरो अमरषदेखि । सैनबिचलितदेखि नृपसों कहतभो अवरेखि ॥ युद्ध करि तनत्यागिक्षत्री लहे ऊरध लोक । युद्धमें तनत्यागि क्षत्रिहि श्रेष्ठत्यागो शोक ॥ करणदुःशा-सनहिं आदिक परेतो प्रियपर्म। लहैउत्तमलोकरणमें पालिक्षत्रिय धर्म ॥ भीम सूतज द्रोणसुतवृषसेन सात्यकि पार्थ । मेदमय करि मेदिनी अब कियेफेरि यथार्थ ॥ देखि दुःशासन करण वृषसेन भटको नास । भगेभट फिरिसकत नहिंलरिभरे अतिशयत्रास ॥ भूमिपति अब युद्धत्यागो देशकाल बिचारि । चलो डेरन कर्ण बधको शोक हियसोंटारि ॥ शल्यके सुनिबचन भूपति युद्धत्यागि बिचारि । लगो रोदनकरन ब्याकुल कर्ण कर्ण पुकारि ॥ शल्य नृप तेहिसमय बहुबिधि भूपतिहि समुझाय । चलेडेरनओरलैरथ युगुति सों फेरवाय ॥ द्रोणसुत कृप शकुनि कृतबर्म्मादि सुभट समस्त । गहे अति दुखचले डेरनहोत सूरजअस्त ॥ गये निज निजठौर सुर गन्धर्ब ऋषि समुदाय । सदल पाण्डवगये डेरन

दुन्दुभी बजवाय ॥ कृष्णपारथ मुदित पूरित शंखध्वनि कम-णीय। गयेडेरन जय प्रशंसा सुनत अति रमणीय ॥ कहेकेशव पूर्ब वृत्तहिबध्यो शक्रअमान। आजुतासमकर्ण कहँतुमबध्योहानि बरबान ॥ दोहा ॥ बहुदिनसों इच्छित रहे धर्मनृपति यहकाल। चलितासों बध कर्णको कहो सुबचन रसाल ॥ कृष्णपार्थ कहँ देखिनृप जानिकर्णकोनास। उठिसप्रेम उरलाय बसिबूझेकुशल सुपास ॥ सोरठा ॥ तहँअर्जुन यदुराय धर्मनृपतिको बचनसुनि। क्रमसों दये सुनाय जेहि प्रकार भोकर्णबध ॥ महिखरी ॥ सुनि प्रबलअरि भटकरणको बधधरम अति आनँदभरे। बहुभांति हरिहि प्रशंसि प्रभुता कृपाकी बर्णनकरे ॥ फिरि कृष्ण पारथ भटनसह चढ़िसुरथपै मोदितमहा। गेधर्म भूपतिकर्णभटमणि परोहो जेहि थलतहा ॥ तहँ साहित सुत मरिपरो कर्णहि देखि अति आनँदगहे। तुव कृपासों ममसुजय सबथर इबिधिकेशव सों कहे ॥ बहुजरत चारुमसाल संगउमंग सों सबदेखिकै। नृप धर्म डेरन गयेफिरि निज सुजय ध्रुवअवरेखिकै ॥ दोहा ॥ करत प्रशंसा कृष्णअरु पारथकी सबबीर। गे निजनिज डेरन लहत आनँद सिन्धु गँभीर ॥ भूपति कियो कुमंत्रतुम करता इतोअन र्थ। प्रलयकाल आरोपिअब शोचकरतहौव्यर्थ ॥ बेशम्पायनउबाच ॥ इबिधि कर्णको मरण सुनि दम्पति वृद्धनरेश। मोहितह्वै गिरि परतभे त्यागि चेतकोलेश ॥ भूपहिगहि संजय बिदुर गन्धारिहि कुरुनारि। चेतित कीन्हे यतनकरि धीरजधरौ पुकारि ॥ कर्णपर्ब में होतभो यहिबिधि युद्धबिनोद। रामकृष्ण कहँ जपतसो लहत सदा जयमोद ॥ सोरठा ॥ रामभक्त कपिबीर बिलसो जासु ध्वज-स्थह्वै। कृष्णबसे जातीर किमि नलहै जय पार्थसो ॥

इतिगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाबिरचितेभाषायांमहा भारतदर्पणेकर्णपर्बणिकर्णबधोनामसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

कर्णपर्बसमाप्तः ॥

महाभारत दर्पणे ॥

शल्यपर्बदर्पणः ॥

दोहा ॥ नमस्कार नारायणहिं करि नरोत्तमहिं नौमि । बन्दि गिरा व्यासहि रचत भारत भाषा सौमि ॥ जेहि रघुबर प्रभुके चरित बहु शतकोटि अमन्द । ताहि नौमि भारत रचत भाषा बिरचिसुछन्द ॥ पारथके स्वारथ भये सारथि परम अनूप । ते सारथि रचिदेहिं यह भारतभाषारूप ॥ सोरठा ॥ बन्दौंकपि बर-बीर राम परमप्रिय पारषद । मंगल मूरति धीर भारत स्वरथ ध्वजरथबर ॥ सुमिरि उच्छलनिअच्छ उदधिउलंघन समयकी । भारत समुद प्रत्यक्ष भाषाकरि चाहत तखो ॥ दोहा ॥ दाशरथी नृपरामप्रभु बिश्वयोनि भगवान । जासुपरम प्रभुता परशि जल मधितरे पषान ॥ जेहि प्रभुकी लहि कलकृपा सुरगण भये अशल्य । शल्यपर्ब भाषा रचत सुमिरि तासु कौशल्य ॥ जन्मे-जयउवाच ॥ दोहा ॥ हे द्विजबर यह चरित सुनि ममनन गहत न तोष । कहो कर्णबध परलरे किमियुग नृपति सरोष ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ दोहा ॥ सुनो भूपलखि कर्णको बध दुर्योधन राय । कर्ण कर्ण कहिकहि बिकल रोदन कियो अचाय ॥ करिरोदन सब भटनसह नृप दुर्योधनराय । गुणिभाविहि बलवानधरि धीरभेरि बजवाय ॥ करिशल्यहि सेनाधिपति सह नृपभट हतशेख । कियो युद्ध पाण्डवन सों गाहि क्षत्रिनकीरेख ॥ शल्य नृपति पाण्डवन

सों करि सुयुद्ध युगयाम । धर्म नृपतिके शरनभिदि तनतजि गो सुरधाम ॥ शल्य भूपको बध निरखि लहि मरिबेकी त्रास । दुर्योधन ह्रदमधि दुरो गहि बचिबेकी आस ॥ तहां जाय टेरतभयो भीमकढ़ो तबभूप । गदायुद्धकरि तेहिबध्यो भीम भयानकरूप ॥ रोला ॥ नृपतिको बध देखि संजय पूरिशोक महान । गयो पुरमें भयो अनरथ करतयह आह्वान ॥ सुनत नृपबध बचन पुरजन मोहदुख बिस्तारि । हाय हाकहि लगे रोदन करन सब नरनारि ॥ गये संजय रहेजहँ धृतराष्ट्र बिदुर समेत । पुत्र बधुन समेतही गान्धारजा गतचेत ॥ करत रोदन बिकलसंजय भूपके ढिगजाय । शल्य अरु नृपसुतनको बधदयो सबिधि सुनाय ॥ गयेबधि तौ सुवन सब अरु नृपनके समुदाय । धृष्टद्युम्नहिं आदि उत सब मरे बेधित काय ॥ सात सुरथी बचे उत इत तीनि भटतजि खेत । कृष्ण सात्यकि पांच पाण्डव उतै जययश लेत ॥ इतै कृतबर्मा महीपति द्रोणसुत कृपबीर । और सबबधिगये इतउत रहेजे रणधीर ॥ बचन यह सुनि मूर्च्छि महिपै गिरेहे जेतत्र । राज योषित बिदुर नृपमनु लगो तीक्षण पत्र ॥ घरिकमें नृपचेत लहि उठिबैठ धीरजधारि । बिदुरसों इमि कह्यो भावी होति अघशि बिचारि ॥ बिदुरमोहिं अनाथकहँ अबरही तौ गति एक । भाषि इमि फिरि गिरो महिपर रहो चेत न नेक ॥ सींचि जलसों व्यजनकरि तब कियो चेतित लोग । चेति बैठो भूप पूरित पुत्र शोक कुरोग ॥ ऊबि ऊबि उसांस लैलै चेति क्षणक्षण मोहि । घरिकमें इमि बिदुरसों नृपकहो कुसमय जोहि ॥ जाहिं गांधारी तियनसह गेहमें यहि काल । बचन यह सुनि गईं तिय सबकरत रुदन कराल ॥ और जन जेरहे तिनहिं बिसर्जि वृद्धनरेश । करन रुदन प्रलापलागे त्यागि धीरज लेश ॥ दारु लोह पषाणसों मम ह्रदय कठिन असमान । फटत नहिं लहि शोक ऐसो बज्रपात समान ॥ महाराज धिराज नरपति भूमिको मघवान । अन्ध वृद्ध

सुपितहि तजि कित गये तजि पणठान ॥ तात हे हे महाराज पुकारि सानँद जोहि । मधुर बाणी परम प्रिय न सुनाइहौ अब मोहि ॥ सहित बन्धुन करत हे तुम बाल कौतुक जौन । दयो अति सुखपूर्ब अब ममहियो दाहत तौन ॥ पुत्र तव ऐश्वर्य बिक्रम फौजसौज उदण्ड । समुझि परचतहियो ममगुणि तेज दुसह अखण्ड ॥ द्रोण भीषम कर्ण कृप भगदत्त अश्वत्थाम । शकुनि कृतबर्मा अलम्बुष शल्य बल बुधि धाम ॥ बिन्द अरु अनुबिन्द भूरिश्रवा आदि नरेश । यमनसक काम्बोज संसप्तक दलन अरिदेश ॥ दल एकादश क्षोहिणी नृपरहे सेवत जाहि । मरे सो तुम हाय यह मम कर्मको फल आहि ॥ बिकल कहिकहि इबिधिके बहुबचन भूप अडौर । महारोदन कियो नहिं सबजात कहि यहिठौर ॥ रोय इमि चिरकाललों फिरि मोहबश भैभूप । धीरधरि इमि कह्यो हामैं खन्यो दुखदा कूप ॥ कहो संजय भयो किमि रण कर्ण बधके भोर । मद्रपति किमि मरो किमि मम पुत्र नृप शिरमोर ॥ धृष्टद्युम्नहिं आदि उत किमि मरे लरि कहुतौन । भाषुसो जिमिमरे लरि इत शकुनि आदिक जौन ॥ भूपकोसुनि बचन संजय कहतभो गुणिमर्म । कर्ण बधके ऊर्द्धभूपति कियो बिक्रम पर्म ॥ कृपाचारय तहां बहुबिधि भाषि नृपहि बुझाय । कह्यो मिलिबो पाण्डवनसों देन महि बिलगाय ॥ भूप कृप के बचन सुनिकै मर्म कहि समुझाय । नहीं मान्यो बचनसो फिरि लरतभो शरछाय ॥ तदनु कृतबर्मा शकुनिअरु शल्य सांझ लखाय । गये डेरन नृपहिलै सहसेन धीर धराय ॥ जाय डेरन भूप शोचित धीरधारि अचाय । द्रोणसुतसों भयो बूझत मन्त्र बिधिहि मनाय ॥ दोहा ॥ तुम सर्ब्बज्ञ अचार्य्यसुत मम हित बिस्वे बीश । कहौ शत्रुसों किमि लरैं केहि करि सेनाधीश ॥ यह सुनि कह्यो अचार्य्य सुत शल्यहि करि सैनेश । लरौ शत्रु सों धीरधरि त्यागि शोचको लेश ॥ द्रोणतनयके बचनसुनि नृप

शल्यहि करजोरि । सविधि प्रशंसा करिकह्यो तुवकर कीरति मोरि ॥ जयकरी ॥ तोसुतनृपको बचनललाम । सुनिबोलोभूपति बलधाम ॥ कुरुपतिसुनौ तुम्हारे अर्थ । राज्यप्राण दीबो नहिं ब्यर्थ ॥ तुमजो कहो करें हमतौन । तुवहित करब उचित नहिं कौन ॥ यह सुनिकै दुर्योधनभूप । कह्यो सेनपति होहुअनूप ॥ सुरनदेत जयजिमि अस्कन्द । देहुमोहिंतिमि सुजय असन्द ॥ यहसुनिकह्यो शल्यगहिहौंस । हमसैनेशहोब यहिद्यौस ॥ कृष्ण पार्थनहिंमोहिंसमान । सात्यकिभीम कौनभटमान ॥ बधिपाण्ड-वन लहतयुगयाम । देहौंतोहिंसुजय अभिराम ॥ यहसुनिदुर्यो-धन गहिटेक । कियोतासु बिधिवत अभिषेक ॥ बजवायेदुन्दुभि समुदाय । मोदितभये सुभट उमदाय ॥ पढ़िस्वस्त्ययन मंत्रमुद देत । द्विजनदयो आशिष जयहेत ॥ लहिअभिषेक शल्यक्षिति-पाल । कहतभयो इमिबचन बिशाल । काल्हिलखौ ममबिक्रम सर्ब । क्षणमेंशत्रुन करत अगर्ब ॥ बधिपाण्डवन लेबजयपर्म । कैबाधिजाब पालि निजधर्म ॥ मारि पराजित करि अरि सैन । अगणित भटन देब यमऐन ॥ जयहित शोच तजो सबलोग । जय लहि भूप करौ महि भोग ॥ दोहा ॥ लखि शल्यहि सेनाधि पति सुनि सुनि गर्बित बैन । कर्ण मरणको शोच तजि ममभट भये सचैन ॥ शल्यहि सुनि सेनाधिपति धर्म भूप अनुमानि । कृष्णचन्द्रसों कहतभे जययश दुस्तरजानि ॥ चौपाई ॥ सुनोनाथ दुर्योधन राजा । आजु मन्त्रकरि सहित समाजा ॥ शल्य नृपहि सेनापति कीन्हे । भटन सहित अति आनँद लीन्हे ॥ अब तासों जयकी बिधि कहिये । कृष्ण कह्यो मति संशय गहिये ॥ भीषम द्रोण कर्ण सम आरय । हैनृपशल्य युद्धके कारय ॥ ताके बधन योग यहि दलमें । हौतुम एक बिदित सब थलमें ॥ ताते तुम बढ़ि तुरता लीजो । कौरवमारि तासु बधकीजो ॥ मातुल जानि दया मति धरियो । क्षत्रधर्म्म पदवी अनुसरियो ॥ इमि कहि

केशव सिविर पधारे। निज निज डेरन सुभट बिहारे॥ दुर्योधन नृप अमरष छाये। रजनि बिताय सेन सजवाये॥ शल्य सेनपति कहँ करि आगे। चले शत्रु पहँ अमरष पागे॥ तिमि पांडव दल साजि सुहाये। बढ़ि मम दलके सम्मुख आये॥ बढ़ि बढ़ि लरे सुभट दुहुँदिशिके। जे दिनमणि अति संगर निशिके॥ सुनिधृतराष्ट्र कह्यो तेहि दिनमें। किमि लरिमरो शल्य नृपतिनमें॥ किमिममसुवन भूपरणधीरा। किमिइतउतके सुभट सुबीरा॥ सोसब पृथक् पृथक् कहुमोसों। जोबिधिअकथकथावततोसों॥ यहसुनिकै संजय अनुमानी। कहतभयो सुनुभूपति ज्ञानी॥ दोहा॥ भीष्मद्रोण अरुकर्णको बधलखितो सुतभूप। करिशल्यहि सेनाधिपति चाह्योसुजय अनूप॥ आशाबशसब जगतनृप आशा अति बलवान। आशालाशा बिहगमन जौ लगि घटमोंप्रान॥ सोरठा॥ ब्यूहसर्व्वतोभद्र बिरचिचलो पाण्डवनपहँ। भूपति पालकमद्र निजदलसह रहिब्यूहमुख॥ चौपाई॥ सहित त्रिगर्तननृपकृतबर्मा। रहोबामदिशि पूरित्तपर्मा॥ सहित यमनगणकृप धनुधारी। दहिनीओर रहोभटभारी॥ काम्बोजन सह अश्वत्थामा। रहोपृष्ठ रक्षक बलधामा॥ कुरुन सहित दुर्योधन राजा। रहो मध्यमें सहित समाजा॥ हयसादिन सह शकुनि नरेशा। होदल रक्षत भीषमभेशा। पाण्डव बिरचि ब्यूह रणभूपर। रचिदल तीनिचले ममऊपर॥ धृष्टद्युम्न अरु सुभट शिखण्डी। भिरि भिरि सहसेना चण्डी॥ भिरे शल्यकी सेना अतिसों। कीरत्तिचाहि जीति कीरतिसों॥ धर्म महीप शल्यनरपतिसों। भिरतभयो सुभटनकी जतिसों॥ अर्जुन बाण वृष्टिकरि पणसों। भिरतभयो संसप्तकगणसों॥ अरुकृतबर्मा नृपहि प्रचारत। आवतभयो भूरिभयभारत॥ सहित सोमकन भीमसुबीरा। कृपाचार्यसों भिरोसधीरा॥ सहदेव नकुल मारु धरुधुनिसों। अभिरतभये उलूक शकुनिसों॥ इबिधि अनेक

सुभटइतउतके । भिरिभिरि लड़नलगे बलयुतके ॥ यहसुनिवृद्ध नृपति गुणिकारय । कहतभयो कहुसंजय आरय ॥ सत्रहदिवस कालके नाचे । दुहुंदिशिरहे कितेभट बाचे ॥ दोहा ॥ यहसुनिके संजयकह्यो नृपतेहिदिन ममओर । दशहजारअरुसातसे रहे द्विरदसहजोर ॥ सहसइग्यारह रथिरहेतीनिकोटि पदचार । दोय लाख घोरेरहे सहितबीर असवार ॥ रहेउतै षटसहसरथ तिते द्विरदमतवार । रहेकोटिपैदर सुभट घोरेदशेहजार ॥ सोरठा ॥ यहि मिति भटदुहुंओर बढ़िबढ़ि भिरिलागेकरन । मचोयुद्ध अतिघोर उमगिचली शोणितनदी ॥ चौपाई ॥ शोणितबारि भौंररथभाये । धनुष स्रोत ध्वज वृक्षसोहाये ॥ करपगग्राह बाणअसिमीना । चर्म परेतहँ कच्छपपीना ॥ मज्जामेद फेणसम राजे । मुखबारिजसम सुखमासाजे ॥ चामरकेश सेवारअहीने । छत्रमनोपक्षीअमलीने ॥ द्विरदगिरे मनु गिरतकरारे । सुभटलसे मनु मज्जाहारे ॥ शूर द्विजनकहँ सुखदातारा । म्लेच्छकादरन भयदअपारा ॥ यहिबिधि मचो घोररणराजा । कटेअसंख्यन सेनसमाजा ॥ यहिबिधि मचो युद्ध अतिभारी । अर्जुन भीम बिदित रणचारी ॥ बाणवृष्टिको दुर्दिन कीन्हे । ममसुभटन मोहित करिदीन्हे ॥ ममसुभटनकहँ मोहित करिके । शङ्खबजावतभे पणधरिके ॥ धृष्टद्युम्न युगबन्धु अमाना । सोधुनिकै करिकरि अनुमाना ॥ नृपतियुधिष्ठिर कहँ करिआगे । चलेशल्यनृपपहँ भयत्यागे ॥ तेहिबिधि माद्रीसुतधनु धुनिधुनि । ममदलदाबिलये जय गुनिगुनि ॥ महाराज सुनिये ममदलमें । हाहाकारमचो तेहिपलमें ॥ भगेसुभटतजि सुत पितु संगी । नहिंकाहू निरख्यो निजअंगी ॥ करत चिघार द्विरद मतवारे । भागिचले बाणनके मारे ॥ दोहा ॥ दलबिचलत लखि सूतसों कह्योशल्य सैनेश । धर्मनृपतिपहँ शीघ्रचलु लैमम सुरथ सुभेश ॥ नृपशासन सुनिसारथी हांक्यो तुरँग चलांक । जलद बारितिमि शल्यशर बर्षतचलो निशांक ॥ तेहिक्षण उतकेसुभट

सबभिरेशल्यसों टूटि। बाणजाल सब पहँरच्यो शल्य भूपजय ऊटि॥ बेलासम परदलउदधि आड़त नृपहि निहारि। फिरत भये इतकेसुभट मरिबोभलो बिचारि॥ सोरठा॥ महाघोर संग्राम भूपति तेहिक्षण मचतभो। तनतजिगे सुरधाम अगणित हय गज भट घने॥ पद्धटी॥ नृपसुनो त्यहिक्षण नकुल तत्र। लखि चित्रसेनहि बरषिपत्र॥ भे भिरत ते युगभट अमान। भे करत अतिसंगर महान॥ करि चित्रसेन लाघव कराल। रचि दियो ता पहँ बाण जाल॥ धनुकाटि तुरगन दयो डारि। फिरि बध्यो सूतहि बाणमारि॥ तब नकुल असि अरु चर्म धारि। रथत्यागि ताको बध बिचारि॥ भोचलत सो लखि चित्रसेन। भो बाण बर्षत सुजय लेन॥ तब नकुल करि पैतरे आसु। सब काटि दीन्हेंबिशिख तासु॥ अति बेगसों तानिकटआय। फिरिकूदि रथ पै चढ़ोजाय॥ दोहा॥ देखत इतकेभटनके बाहिबिशद तरवारि। चित्रसेनको काटि शिरदियो भूमिपैडारि॥ कर्ण पुत्रको बध निरखिभो इतहाहाकार। उत मोदितभे सुभटसब लखि अतिबिक्रम चार॥ निज भ्राताको बध निरखि सत्यसेन रणधीर। अरु सुषेन ये नकुल पहँ बरषनलागे तीर॥ सोरठा॥ तौलगि सूत सुधीर रथलैआयोबेगसों। चढ़ितापै रणधीर नकुललगो इनसोंलरन॥ चौपाई॥ चारिबाण हनि अति अनियारे। सत्यसेनके हय बधि डारे॥ धनुषकाटि बहु बाण प्रहारयो। अबन बचत यहि भांति पुकारयो॥ सत्यसेन तब सो रथ तजिकै। और सुरथपै चढ़ो गरजिकै॥ गहिधनु और गह्यो उत कर्षा। करतभयो बाणनकी बर्षा॥ तहँसुषेन अति रिसगहि मनमें। हनि क्षुरप्र शायकतेहि क्षनमें॥ गुरुकोदण्ड नकुलको काट्यो। बाण बरषि न बचत कहि डाट्यो॥ तुरतहि नकुल और धनु गहिकै। हन्यो पांचशर थिरु थिरु कहिकै॥ माद्रीसुत युग भटसों भिरिकै। कीन्ह्यो घोर युद्धतहँ थिरिकै॥ अशनिसमान शक्ति हनि उरमें। बध्योसत्य

सेनहिं अतितुरमें ॥ नृपतेहिसमय सुषेन सुबीरा। अतिबिक्रमकी न्हों रणधीरा॥ करिशरजोर नकुलतेहिबाधिके। ममदलमर्दतभयो बराधिके ॥ तहँशरबरषि मद्रपति तक्षण। करतभयो निजदल को रक्षण ॥ शल्यहिघेरि सुभट सबइतके। धर्मभूपतिहि योधा तितके ॥ अतिबिक्रम कीन्हेंतेहिपलमें। भोअति घोरयुद्धतेहि थलमें ॥ भटकपिकेतु बिदित धनुधारी। बाधि संसप्तक भटन प्रचारी॥ बर्षत बिशिख क्रोधसोंपागो। सैनकौरवी मर्दनलागो॥ दोहा॥ तिमि भीमादिक शत्रुभट कृपआदिक ममबीर। उभय ओरपारे प्रलय बरषि शक्तिशरतीर॥ महाघोर संगरभयो तेहि क्षण सुनियेभूप। ममसेना अति बिकलह्वै होतभई गतरूप॥ दलव्याकुल लखिमद्रपति गहि अनुपम कोदण्ड। भो बर्षत पाण्डवनपहँ अबिरल शायकचण्ड॥ सोरठा॥ नृपतेहिक्षण तेहि ठौर अगणित अशकुन होतभे। मृगगहि अशकुन डौर चलत भयेममबामह्वै॥ चौपाई॥ शल्यभूप अमरष करिमनमें। अतिकर लाघवकरितेहिक्षनमें॥ सात्यकि भीमनकुल सहदेवहि। द्रौपदेय नृपधर्म सुभेवहि॥ धृष्टद्युम्न युग बन्धुन तकि तकि। दशदश बाणहन्यो जयबकि बाके॥ बारिदकरत बारिकीबर्षा। तिमिशर बरषो गाहिउतकर्षा॥ अगणित हयगज भटबाधि डार्‍यो। शत्रु सैनमधि प्रलय पसार्‍यो॥ तहां बिचलिपर भटचलिचाड़े। गयेधर्म भूपतिके आड़े॥ सोलखि धर्मभूप धनु धुनिके। भिरो शल्य नृपसों जयगुनिके॥ अतिरण करनलगेतहँदोऊ। जेहि सम कबहुं लरेनाहिं कोऊ॥ सो लखि उतकेयोधा राजिराजि। चले शल्यपहँ सुभटन तजि तजि॥ तबइतके भटइत फिरुपढ़ि पढ़ि। भिरत भये तिन सबसों बाढ़ि बाढ़ि॥ भिर्‍यो भीमसों नृप कृतबर्मा। द्रौपदेय सों शकुनि सुपर्मा॥ माद्रीसुतनदेखिअभि-रामा। भिरत भयो भटअश्वत्थामा॥ क्रोधभरोदुर्योधनराजा। भिर्‍यो पार्थसों सहित समाजा॥ यहि बिधि तहां द्वन्दशतजूटे।

भरे बीररस आनँद लूटे॥ कृतबर्मा बाणनकी झरिकै। बध्यो भीमके तुरगन लरिकै॥ तबगहिगदा भीम रथतजिकै। गजन बधतभो गरजि गरजिकै॥ दोहा॥ लखि सम्मुख सहदेव कहँ शल्य चारि शरमारि। बाधिरथके चारो तुरगदयो भूमिपैडारि॥ सो रथतजि सहदेव तब गहि तीक्षण तरवारि। शल्य भूपके सुवनको काटचोशीशप्रचारि॥ सोरठा॥ कृपाचार्य्यरणधीर धृष्टद्यु- म्नसों भिरि तहां। कियोयुद्ध गंभीर बाणजाल रचि दिशनमें॥ तोमरछन्द॥ तेहिसमय शल्यअमान। करिबाणवृष्टि महान॥तकि धर्मनृपहि सगौर। भोकरत ब्यथित सडौर॥ वहदेखि बिक्रम भीम। तहँभयो चलतअधीम॥ तेहिशल्य आवत देखि। भो हनत तोमरतेखि॥ गहिभीम तोमरतौन। करिसारथीको दौन॥ फिरिगुरु गदहि प्रहारि। बधिदियो तुरगन डारि॥ तब गदा गहिनृपशल्य। भिरिकरतभो कौशल्य॥ भिरिउभय योधा शुद्ध। तहँकियो अद्भुतयुद्ध॥ दोहा॥ अगणित बिधिके पैतरे करतफिरत जिमिचक्र। गदायुद्धते करतभे गहिगति सूधीबक्र॥ कबहुं बाम दक्षिण कबहुं कबहुं ऊर्ध्व अधलाय। अतिचापलता करिकरचो गदायुद्ध दृढ़ घाय॥ सिंह सिंहभिरि जिमिलरैं द्विरद द्विरदमतवा र। मत्तवृषभसम भिरिलरे शल्य भीम तजिप्यार॥ गदागदाके लगनसों कढ़ैंफुलिंग अपार। तक्षक बासुकि लरतमनु अबिरल बमतअँगार॥ सोरठा॥ गदायुद्ध अतिघोर करिसब अँगशोणित भरे। मोहितकै तेहिठौर भीम शल्यदोऊगिरे॥ चौपाई॥ महाराज सुनिये तेहिपलमें। भोहाहाधुनि दोऊदलमें॥ कृपशल्यहि निज रथपर धरिकै। सादर अनतजातभो टरिकै॥ क्षणमेंचेति भीम नर वारन। शल्यभूपकहँ लगोप्रचारन। सुनिइतकेभट अमरष पागे। अतिबिक्रमकरि बिचरन लागे॥ तेहिप्रकार उतकेभट रूरे। लरतभये करिबिक्रम पूरे॥ तेहिक्षण दुर्योधन धनुधा- री। बज्रसमान सुबाण प्रहारी॥ चेकितान नृपको बधकीन्हो।

परदलमांधि अति दुखभरिदीन्हों ॥ चेकितानको बधलखि उत के । योधा प्रबल युद्ध बिदयुतके ॥ तोमर शक्ति भल्ल शर आदिक । अस्त्रलगे बर्षन जयबादिक ॥ कृप कृतबर्मा सौबल राजा। शल्यभूप सह सहित समाजा ॥ भिरे धर्म नृपसों तेहि क्षणमें। पूरि दये शर पाण्डव गणमें ॥ द्रोणाचारयको बधकरता । धृष्टद्युम्न अद्भुत धनुधरता ॥ तासों दुर्योधन नृप भिरिकै । घोरयुद्ध तहँ कीन्ह्यों थिरिकै ॥ त्रिसहस रथिन सहित धनुकर्षत । अश्वत्थामा शायक बर्षत ॥ भिरो बिजय भूपतिसों हर्षत । सुयशपाइबेकी गति पर्षत ॥ सरमांधि धसैं हंस गण जैसे । दुहुं दल लसे सुभट सब तैसे ॥ दोहा ॥ कटे सुरथ हय गजकटे हयगज योधा भूरि। मारु मारु धरु मारु धुनि रही गगनमें पूरि ॥ शल्य भूप तेहि क्षणहन्यो धर्म भूपतिहि बान । चौदहशर शल्यहि हन्यो धर्मभूप बलवान ॥ सोरठा ॥ अतिरिसकरि तेहिकाल शल्यभूप धनुधर बिदित । गहि अति लाघवचाल नृपहिहन्यो अगणित बिशिख ॥ चौपाई ॥ तेहिक्षण धर्मभूपधनुधुनिकै । शल्य भूपतिहिको बधगुनिकै ॥ चन्द्रसेन द्रुमसेनहिं हतिकै । नृपहि हन्यो बहुशर रिस अतिकै ॥ चक्र रक्षकनको बधदेखी । शल्य धनुषधर अतिशय तेखी॥धर्महिहन्योपांचशर चोखो । तेहिक्षण धर्मभूपअतिरोखो ॥ भल्लप्रहारिदीह ध्वजकाट्यो । तकिसहास ह्वै शल्यहि डाट्यो ॥ तब अतिकोपि शल्य उतकर्ष्यो । धर्मभूप पहँ शायकबर्ष्यो ॥ सहदेव नकुल सात्यकीभीमहि । मार्य्योपांच पांच शरहीमहि ॥ बाणजाल रचि गौरवलीन्हो । धर्मभूपतिहि ब्याकुलकीन्हो ॥ धर्म भूपतिहि ब्याकुलजानी । सात्यकि भीम। नकुल अनुमानी ॥ अरु सहदेव मद्रपतिघेरी! बरषे बाणन बाचतटेरी ॥ भीमसेन अति कोपित मनमें । हन्यो सातशर नृपके तनमें ॥ सात्यकि शतशर हन्यो प्रचारी । पांच २ युगबंधु सुखारी ॥ तेहिक्षण शल्य महारिस करिकै । चक्रसमान सुरथपर

चरिकै ॥ बाणपचीस सात्यकिहि मार्‍यो । भीमहि सत्तरि बाण प्रहार्‍यो ॥ नकुलहि सातबाण हनिगर्जों । मानोशक्र बज्रगहि तर्जो। धनुष काटि सहदेव सुभटको । हन्यो तीन शायक गुणि षटको ॥ दोहा॥ तबसहदेव प्रचारितेहि गहिकठोर धनुपीन। शल्य हिमार्‍यो पांचशर फिरिमार्‍योशरतीन॥ भीमहि सत्तरिशरहन्यो नवसात्यकिके गात। धनुकाट्यो नृपधर्मको शल्यबीर विख्यात ॥ सोरठा ॥ तुरत औरकोदण्ड गहि नृपधर्म उदण्डभट । छायदयो शरचण्ड सदलशल्य क्षितिपाल पहँ ॥ तोटकछन्द ॥ नृपमातुलबाणन छादितह्वै । गहि कोपिकराल प्रमादितह्वै ॥ दशपाण्डवनाथहि बाणहन्यो । फिरिबाणनकी झरिकौन गन्यो ॥ लखिसात्यकि सोअति कोपगहा । हनिशायक पांचबचाउकहा ॥ तबशल्य महीपति कोपकियो । भटसात्यकिको धनुकाटिदियो॥ दोहा ॥भीम नकुल सहदेवके अगणित शायक बारि । मेघनाद सम नदत भो तीनि तीनि शरमारि ॥ तेहिक्षण डार्‍यो शल्यपहँ सात्यकि तोमप्रचंड । नकुलशक्ति तानुजगदा भीमबाण उद्दंड ॥ तज्योशतघ्नीधर्मनृपसो सबअस्त्रअमान। बीचहिकाट्यो शल्यनृप मारि अनगिनेबान ॥ सोरठा ॥ तेहिक्षण शल्यनरेश दुसहपराक्रम करतभो ॥ त्यागिशोचको लेश दुर्योधन नृप मुदितभो ॥ चौपाई ॥ शल्यभूप गहिपाणि अतुरता । करतभयो अतिबिक्रमगुरुता ॥ परदल पूरि शरनसों दीन्हों । भीमादिकन बिकल अतिकीन्हों ॥ करिबाणनसों नभ अवरोधन । कियोकाल बश अगणित योधन। अगणित भटन पराजित करिकै ॥ रुद्रसमान लसोपण धरिकै ॥ तेहिक्षण सुमन सिद्धनभचारी । निरखि शल्यको बिक्रमभारी ॥ अति मोदितह्वै कियेप्रशंसा । तोसुलतज्यो अजय की संसा ॥ महाराज सुनिये तेहि क्षणमें । अर्जुन सिंह सरिस चरिरणमें ॥ द्रोणतनय भट माणिसों भिरिकै। कीन्हो समरचक्र समफिरिकै ॥ करिकर लाघव धनु बिधि ठाट्यो । अगणितभ-

टन मारिमहि पाट्यो ॥ तीनिबाण द्विजसुतहि प्रहार्‍यो। दोय
दोयशर सुभटन मार्‍यो॥ महाराज सुनिये त्यहि क्षनमें। द्विज-
सुत आदि सुभट गुणि मनमें॥ घेरि पारथहि अमरष पागे।
अबिरल शायक बर्षनलागे॥ तेहिक्षण पार्थ पराक्रमसागर।
सकलशस्त्र शिक्षक मणिनागर ॥ बर्षिहेममय शरवरफबके॥
काटि असंख्यन शायक सबके॥ द्विज दलमाधि बाणनकोदुर्दिन।
करिभोबधत सुयोधा अनगिन॥ पूरिरुण्ड मुण्डनसों धरणी।
करपग शुण्डनकियो विवरणी॥ दोहा ॥ बारिदानसमलसिबरषि
बाणबारि भरिमीच। पूरिदयो रणभूमिमाधि मांसरुधिरकीकीच॥
सुरथी दोयहजारबधि निर्मलअग्निसमान। लसतभयो पारथ
तहांअसह अदेख अमान॥ दावानलसम पारथहि दलबन जारत
देखि। भिरोद्रोणसुत बनदसम शरबन बर्षतलेखि॥ सोरठा ॥ क्षत्री
बिप्रअमान दोऊधनुधर मुकुटमणि। कियेघोर घमसान करि करि
दुर्दिन शरनको ॥ चौपाई ॥ द्रोणतनय अति लाघवधरिकै। शा-
यक बर्षि चक्रसम चरिकै॥ द्वादश बाण पारथहिमार्‍यो। दश
शायक यदुपतिहि प्रहार्‍यो॥ तहँपारथ अतिरिससों भिरिकै।
गुरुसुतको गुणिबो परिहरिकै॥ तुरगनमारि सारथिहि बधिकै।
बर्षोबिशिख क्रोधगहि अधिकै॥ अतिरथ द्रोणतनय तेहिक्षन
में। भरोक्रोध अनरथगुणिमनमें। महाभयानक मुशल चलायो।
शस्त्रकाटि तेहिपार्थ गिरायो॥ तब द्विजतनय परिघबर गहिकै।
भयो चलावत थिररहुकहिकै॥ तेहि लखिअर्जुन तुरतालीन्हों।
हनि शर पांच पांच करि दीन्हों॥ परिघ काटि पारथ धनु धुनिकै।
तीनि भल्ल मार्‍यो बध गुनिकै॥ भिदि भल्लन सों ब्राह्मणयोधा।
कछु धर दबो ब्याल सम क्रोधा॥ गहि कोदण्ड लगो शर बर्ष-
ण। गणे गणे भट बधन अमर्षण॥ सुरथी सुरथनाम तेहिक्षन
में। भिरो बिप्र सों गर्बित मनमें॥ सो पांचाल सुभट बर बीरा।
बर्षो बिशिख जालप्रद पीरा॥ तेहि लखि बिप्रबीर रणधीरा।

दै रद छद पहँ सुरदन हीरा ॥ बध्यो ताहि हनि शायक चोखो। रथसों गिरो सुरथ भट नोखो ॥ तेहि बधि द्रोणतनय भट बढ़िकै। सादर तासु सुरथपै चढ़िकै ॥ निज अनुरूप सूत करि थापित। लगो पार्थसों लड़न प्रतापित ॥ अगणित संसप्तक गण फिरिकै। लगो लड़न पारथ सों भिरिकै ॥ तहँ पारथ अति लाघव लीन्हो। सबपहँ बाणजाल रचि दीन्हो ॥ लरो शक्र दैत्यन सों जैसे। तिनसों लरो फाल्गुन तैसे ॥ दोहा ॥ मचो घोर संगर तहां दिनप्रविशो युगयाम। अगणित हयगज भटकटे पायेऊरधधाम॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशल्यपर्वणिप्रथमोऽध्यायः १ ॥

दोहा ॥ दुर्योधन बन्धुन सहित धृष्टद्युम्नसों जूटि। घोर युद्ध तहँ करतभो बध बिचारि जयऊटि ॥ सहित प्रभद्रक भटनबढ़ि सुभटशिखण्डीबीर। कृप कृतबर्मासों आभिरि किये युद्धगंभीर ॥ चौपाई ॥ महाराज सुनिये तेहि क्षनमें। शल्यनरेश सुजय गुणि मनमें ॥ परदल मध्य शरन की झरिकै। अगणित भटन बध्यो प्रण धरिकै॥ करि तीक्षण बाणनसों आकुल। कीन्हों धर्म महीपहि व्याकुल ॥ सोलखि नकुल ओज बिस्तारत। शल्य नृपति सों भिरो प्रचारत ॥ अगणित बाण बर्षि अति तुरमें। दशशर हन्यो शल्यके उरमें ॥ तेहिक्षण शल्य महीप प्रमादित। नकुलहि कियो शरनसों छादित ॥ लखि माद्रीसुत पहँ शर छाजा। सात्यकि भीम युधिष्ठिर राजा ॥ अरु सहदेव शरासन कर्षत। भिरे शल्य नृपसों शर बर्षत ॥ आड़्यो तिन्हैं शल्य नृप तैसे। बेला लहरि उदधि की जैसे ॥ भीमहिं पांचबाण अनियारे। हनिनृप धर्महिं तीनि प्रहारे ॥ तीनि बाण सहदेवहि हनिकै। हन्यो सात्यकिहि शतशर गनिकै ॥ हनि क्षुरप्र शायक अति पुलको। काट्यो धनुष सुबीर नकुलको ॥ तुरतहि नकुल और धनु गहिकै। बर्षो विशिख खरोरहु कहिकै ॥ तहँ सहदेव धर्मनरनायक। हते भूपतिहि दश दश शायक॥ शायक साठि वृकोदरमार्‍यो।

तिमि सात्यकि दशबाण प्रहारयो॥ तेहि क्षण कोपि मद्र नृप धानुष। करतभयो तहँ काज अमानुष॥ दोहा॥ हनिनव शायक सात्यकिहि फिरि हनि सत्तरि बान। मारि अर्ध शशि बाणबर काट्यो धनुष महान॥ चारिबाणहनि हयनबाधि करितहँ बिरथ बिहाल। अगणित शायक सात्यकिहि हन्यो मद्र क्षितिपाल॥ धर्म नकुल सहदेव अरु भीमसेनके गात। दश दश शायक हनतभो करि अबिरल शरपात॥ सोरठा॥ परम प्रसिद्ध अमान इन सुभटन कहँ बिकल करि। बिलसो रुद्र समान शल्य भूप अति प्रबल भट॥ चौपाई॥ सात्यकि और सुरथपर चढ़िकै। बर्षत बिशिख बेगसों बढ़िकै॥ चलो शल्य नरपतिहि प्रचारत। तापहँ चलो शल्य शर डारत॥ दोऊ दुहुन प्रचारि प्रचारी। निज निज सुजय बिचारि बिचारी॥ अतिशय तुमुल युद्ध तहँ कीन्हे। नभ बाणन पूरित करि दीन्हे॥ बन्धुन सहित धर्म धनु धुनिकै। शल्य महीपति को बध गुनिकै॥ बर्षत भये बिशिख प्रण धरिकै। तेहि क्षण शल्य चक्रसम चरिकै॥ सबके बाण असंख्यन काटत। सबपहँ भयो बाणभरि ठाटत॥ शल्य महीप बीररस छायो। तहँ अद्भुत बिक्रम दरशायो॥ शल्य नृपति के बाणन पीड़ित। उतकेघने भटन लखि ब्रीड़ित॥ इतके सुभट बिजय गुणि मनमें। अति बिक्रम कीन्हे तेहि क्षनमें॥ मरदित किये शत्रुदल तैसे। मन्दरबारि उदधिको जैसे॥ सोलखि अ-र्जुन बीर अमर्षो। कृप कृतबर्मा पहँ शरबर्षो॥ सहदेवभिरो श-कुनिसोंहर्षत। नकुल शल्यपहँहो शरबर्षत॥ द्रौपदेय सबगहि उतकर्षा। नृपगण पहँ कीन्हे शर बर्षा॥ द्रोण तनयसों भिरो शिखण्डी। गहे चढ़ाव चपलता चण्डी॥ गदापाणि बरबीर वृकोदर। गयो रहो जहँ नृपति सहोदर॥ दोहा॥ नृपति युधि-ष्ठिर सैनसह शल्य नृपतिसों जूटि। लरत भयो शरजाल रचि बध बिचारि जय ऊटि॥ नृप तेहि क्षण तेहि थर मचो महा-

घोर संग्राम। कटे असंख्यन भट बही शोणित नदी अछाम॥
सोरठा॥ मद्रदेशपति भूप मण्डल सम कोदण्डकरि। भोअति भीषम रूप घोरपराक्रम करि तहां॥ गोला॥ सोमसम नृप धर्म के ढिगजाय शनिसम भूप। जननपीड़ित कियो उत रचि बाण जाल अनूप॥ एकभट बहुभटन बांधि बिचलाय अगणितधीर। भीमकहँ लखितीर नृपकेचलो बर्षत तीर॥ धीरधरिकै तासुसम्मुख भयेजे अरिबीर। भीरसुरपुर मध्यकीन्हें बीरतेगतिभीर॥ मद्रपति की चपलताअरु बीरता इमि देखि। धर्म भूपतिटेरि ऐसे करतभो अति तेखि॥ सुनो केशव सुनो सब ममबन्धु भट समुदाय। आजु प्रणकरि कहतहौं मैं बचनसत्य सचाय॥ द्रोण आदिक धनुषधर जे दुसह बीर बिख्यात। गये कुरुपति हेतजहँ तहँ आजु मातुलजात॥ सुवन माद्रीके प्रबल जिमि शक्रअरु उपशक्र। रहहु रक्षत चक्र मम निज मातुलहि गुणिबक्र॥ कहत हम तिमि और योधा रहो अब ममसंग। रहो दक्षिणओर सात्यकि बिदित बीर अभंग॥ रहो रक्षत बामदिशि भट धृष्टद्युम्न अमान। पृष्ठरक्षत रहौ पारथ बीरबर्षत बान॥ अग्रगामी रहो अब मम भीमसेन सडौर। बधब हम नृप मातुलहि नहिं बचिहि काहू ठौर॥ भूप के सुनि बचन परभट शंक तजि गहि मोद। भरणलागे हांक अतिरण करणयुद्ध बिनोद॥ ठानिइमि प्रणसदलभूपति दुन्दुभीबजवाय। मद्रपतिपहँ चलोतीक्षण शरनसों नभछाय॥ भिरे बढ़ि बढ़िभूप तिनसों सुभट इतकेतत्र। शक्तितोमरभल्लबर्षत घनेतीक्षणपत्र॥ शल्यभूपतिभयो बर्षत बाण धर्महिहेरि। भिरेताकितकि प्रबलयोधा प्रबल योधनटेरि। नृपसुयोधन भीमसों भिरि करतभो घमसान। प्रकट करि द्विज द्रोणसों जो लहेधनुष बिधान॥ प्रबलयोधा बन्धुदोऊ धनुषधर मणिदक्ष। समर महिशर सरसको बर शरन पूरे कक्ष॥ दोहा॥ अतिकर लाघब करि तहां तौ सुत भूप बिचारि। केतुकाटिभट

भीमको काट्योधनुषप्रचारि ॥ अति रिसकरिभटभीमतब शक्ति चलायोचाहि । भिदितासोंमोहितभयो तौसुतभूपकराहि ॥ सोरठा ॥ भूपहि मोहित देखि भीमसेन सूतहिबध्यो । सूतमरण अवरेखि तुरग भगेसो सुरथलै ॥ चौपाई ॥ महाराज सुनिये तेहि पलमें । हाहाकार मचो ममदलमें ॥ अश्वत्थामा कृपकृतबर्मा । नृपरक्षण कीन्हें तेहि थर्मा ॥ धनु गाण्डीव कर्षि तहँ पारथ । बधिअग-णित भटकीन्होंस्वारथ ॥ शल्यसैनसों भिरितेहिठाईं । अति रणकियो धर्मनरसाईं ॥ अबिरल बाणजालरचि दीन्हों । अग-णितभटन कालबश कीन्हों ॥ शल्यनिरखि मर्दित निजसेना । नृपहिप्रचारि भिरो जगजेना ॥ दोऊ अतितुरता गहि ग-हिकै । अमरषभरे बैन कहिकहिकै ॥ बरबाणनकी बर्षाकरि करि । अगणित बाणगातपर धरि धरि ॥ भरेरुधिरतन दोऊ राजे । पुष्पित किंशुकतरु समसाजे ॥ यहिबिधि लरतभये तहँ दोऊ । जोलखि गुणितभये सबकोऊ ॥ एकहिएक बधत यहि क्षणमें । नाहिंदोऊ बाचतयहि रणमें ॥ तहां शल्यभूपति करि तुरता । काट्यो तासुधनुष गहिगुरता ॥ तेहिक्षण धर्मक्रोधसों दहिकै । तुरतहि और शरासन गहिकै ॥ शल्यहि मारि तीनि शत शायक । काटतभयो धनुषदृढ़घायक ॥ चारोंतुरग सुरथ के बाधिकै । उभयसारथिन बध्यो बराधिकै ॥ काट्योकेतु भल्ल शर हनिकै । धर्ममहीप रुद्रसम बनिकै ॥ दोहा ॥ कालकराल समानलखि धर्मनृपति तेहिकाल । बिचलिचले तिमि अचल भट जेनचले जेहिचाल ॥ द्रोणतनय अति बेगसों बर्षत शर समुदाय । जायशल्य क्षितिराय कहँ रथपरलयो चढ़ाय ॥ और सुरथपर तुरित चढ़ि धनुगहि मद्रनरेश । भूपयुधिष्ठिर पहँ भयो बर्षत बाण बिशेश ॥ सोरठा ॥ बराषि असंख्यन बान हन्यो सात्यकिहि बाणदश । करि अद्भुत सन्धान तीनिबाण भीमहि हन्यो ॥ चौपाई ॥ अगणित हयगज सुभटसँहारयो । अंग भंग

करि महि मधि डार्‌यो ॥ अति कराल बिक्रम बिस्तार्‌यो । शत्रु सेनमधि प्रलयपसार्‌यो ॥ महाराज सुनिये तेहिक्षनमें । पाण्डव अति अमरष करि मनमें ॥ भीम नकुल सहदेव सुबीरा । अरु अनगिने सुभट रणधीरा ॥ गरजि गरजि गहिगहि उतकर्षा । किये मद्रपति पहँ शरबर्षा ॥ तिमि इतके योधा शरतक्षक । भे- तहँ शल्यमहीपहि रक्षक ॥ भो अतिघोर युद्ध तहँ राजा । कटे असंख्यन सैन समाजा ॥ शल्यधर्म भिरि गौरवलीन्हें । अति शय तुमुल युद्ध तहँ कीन्हें ॥ अगणित बाण परस्पर वारे । अग- णित बाण परस्पर मारे ॥ शल्य युधिष्ठिर को धनु काट्यो । धनु गहि धर्म बाण झरि ठाट्यो ॥ बाण शल्यनृप के हिय मार्‌यो । मोहित ह्वै फिरि भूप सिहार्‌यो ॥ हन्योधर्म भूपहिं बहु शायक । तिमि शल्यहि नृप धर्म सचायक ॥ द्वै शर मारि शल्य रणचारी । काट्यो तासु धनुष अतिभारी ॥ तुरतहि धर्म और धनुधारी । शल्यहि नवशरहन्यो प्रचारी ॥ फिरि नृपशल्य मारि शरचोखो । काट्यो तासु धनुष अतिनोखो ॥ नृप षटबाण मारि अनियारे । बधि सारथिहि भूमिपर डारे ॥ दोहा ॥ शल्य भूप तब कर्षिधनु चारोंतुरगन मारि । धर्मभूप तिहि बिरथकरि बर्षोबिशिख प्रचारि ॥ भीमसेनतहँ शल्यके दीरघधनुषहि का- टि । बधिसूतहि तुरगनवध्यो अद्भुतधनु बिधिठाटि ॥ तौलगि चढ़िरथ और पर धर्म महीप अमान । नृपबर्षतभो शल्य पहँ अबिरल तीक्षणबान ॥ सोरठा ॥ तेहिक्षण शल्यनरेश खड्गचर्म गहित्यागिरथ । सिंहसमान सुभेश चलोधर्म क्षितिपाल पहँ ॥ बसुकला ॥ तेहिनिकट देखि । भट नकुल लेखि ॥ मोहनतबान । तब नृपअमान ॥ रथकाटि तासु । फिरि चलोआसु ॥ तहँशत्रु ओर । अतिभयो शोर ॥ दोहा ॥ भीम शिखण्डी सात्यकी धृष्ट- द्युम्न रणधीर । द्रौपदेय ये शल्यपहँ बरषे अबिरलतीर ॥ भीम तहां नवबाणहनि काटिचर्मतरवारि । निजसुभटनमोदितकियो

शल्यहि बहुशरमारि ॥ शल्यसिंहसम नरपतिहँ असिअधकटी प्रहारि । धर्मभूप के हयनबधि दीन्ह्यों महि पै डारि ॥ चौपाई ॥
शल्यहि निकट देखि नृपहरषो । बधिक्षण प्रगटभयो इमिपरषो ॥
कृष्णचन्द्रको बचन बिचारो । शक्ति अमोघ उठाइ सिहारो ॥
चक्र त्रिशूल बज्र सम जोही । कालदण्ड सम महिमा पोही ॥
जो निरमित त्वष्टाके करषो । भरी कालकी कृलना बरषो ॥ बहु मणिमय घण्टनसों भूषित । मन्त्रन मन्त्रित अमल अदूषित ॥
सो सुशक्तिभरि व्याम उठायो । अब न बचत इमि टेरिचलायो ॥
मन्त्र आंगिरसकी करिपुरता । भयो चलावत गहिअतिगुरता ॥
लखिसोशक्ति शल्य नृप शूरा । परम क्षात्रगण गुनसों पूरा ॥
गरजिलयो निज उरपहँ तैसे । घृतकीधार ज्वलित शिखिजैसे ॥
मरमबेधि सोशक्ति सोहाई । गई भूमिबधि अति छबिछाई ॥
रामराम सीतापति पढ़िकै । नृपमरि गिरो शत्रुदिशि बढ़िकै ॥
बाहु पसारि परो नरसाईं । हरषो बधो नमुचिकी नाईं ॥ भरो रुधिर तनभूप अक्षोभित । भोतहँ इन्द्र धनुष सम शोभित ॥
नृपइमिमरण बन्धुको लखिकै । खाण्डवनाम सुबीर बिलखिकै ॥
बर्षतबाण भूरिभय भारत । धर्मभूपसों भिरो प्रचारत ॥ धर्महिं बधिबे को प्रण लीन्हों । बाणनको दुरदिन करिदीन्हों ॥ दोहा ॥
काटितासु शर धर्मनृप काट्योशीश उदण्ड । गिरोसकुण्डल भूमिपहँ शीशसूर जिमिदण्ड ॥ नृपतेहिक्षण ममसैनमाधि भो अति हाहाकार । पटहबजे अरिसैनमाधि आनँदभरो अपार ॥
सोरठा ॥ ममदल बिचलतदेखि सात्यकि शरबर्षतचलो । लखि कृतबर्मातेखि इतसोंबढ़ि तासोंभिरो ॥ चौपाई ॥ दोऊकृष्णबंश के नागर । धीरधुरीण पराक्रम सागर ॥ करकोदण्ड चपलता भारे । लरेलरैं जिमिगजमतवारे ॥ धनेपतँगगण मारिनभसोहैं । तिमिकीन्हे जेहिलखि जन मोहैं ॥ दशशरहनि सात्यकि के धर्मा । काट्यो धनुषबीर कृतबर्मा ॥ सात्यकि और धनुष गहि

तक्षण । बध्योतासुहय सूतसपक्षण॥बिरथदेखि कृतबर्माराजहि। कृपबिडारि अरिसैनसमाजहि ॥ जायचढ़ाय ताहिनिजरथपै । चंचल चरणलगो रणपथपै ॥ देखिदशा यह कृतबर्म्माकी । भगीफौज नृपगतधर्म्माकी॥ दल बिचलत लखितोसुत राजा। भिरोपाण्डवनसों सहसाजा ॥ कृतबर्मा निजरथपरचढ़िकै। गयो तहां शरबर्षत बढ़िकै ॥ देखिताहि तहँधर्म नरेशा। बधत भयो सबतुरग सुभेशा ॥ बधिकृतबर्माके हयतोखे । हन्योकृपहि षट शायक चोखे ॥ द्रोणतनय तहँ तुरता कीन्हों । कृतबर्म्महि निज रथपर लीन्हों ॥ महाराज सुनिये तेहि क्षनमें । रथी सात शत प्रणधरि मनमें ॥ संगी शल्य महीपति केरे । भिरे पाण्ड-वनसों चलिनेरे ॥ गजचढ़ि दुर्योधन भयसाने । मनाकिये नहिं तेसबमाने ॥ दोहा ॥ शल्य भूपको मरणलखि निज मरिबो बर जानि । रथींमद्र क्षितिपालके लड़नलगे प्रणठानि ॥ बाणनपूर शत्रुदल धनुधुनिसों नभसर्ब । सुरथी शल्य महीपके अरिदल जेन सगर्ब ॥ सोरठा ॥ पारथ आयो तत्र सुनि तेहिक्षण तहँ तु-मुलधुनि । बर्षत तीक्षण पत्र पूरत धनु गाण्डीव धुनि ॥ चौपाई ॥ सानुज धृष्टद्युम्न धनुधारी।सात्यकि द्रौपदेय रणचारी ॥ संजय सोमक अरु पांचाला । गने धनुषधर बीर बिशाला ॥ बरषि शक्ति शायक रिसिपागे। घेरि मद्रदल मर्दन लागे ॥ प्रबलमद्र भूपतिके योधा। तिन सबको कीन्हें अवरोधा॥ प्रति योधन बि-रचे शरसेतू । अगणित भटन बधे जयहेतू ॥ मथै सिन्धु जिमि मकर समूहा।अरिदल मधि तिमि लसेसजूहा॥प्रबलशत्रुसुभट-नकेमारे। तहँइमितिनकीदशानिहारे॥ केते अंगभंगभे जबहूं । गर्जतबलैशत्रुदिशितबहूं ॥ बिरथभयेकितनेसरदारे। शत्रु सैन मधिप्रलयपसारे॥बिरथ बिधनु बेधिततन केते। मारुमारु टेरत जय हेते ॥ भिदि कितने योधा बल धरिकै। मरैंजाय अरिरथ पर परिकै ॥ किते कबन्ध प्रचारत देखे। धावतलरत अनगिने

पेखे॥ किते गिरैं उठिगिरि माहि चूमैं। गिरि उठि किते खेररहि भूमैं॥ लखियहदशा मद्रदल माहीं। शकुनि महीप सकोसहि नाहीं॥ कहतभयो तौ सुतनरपतिसों। कततुमखरे निठुरताअति सों॥ मद्र रथिनको मरिबो देखत। नहिं सहाय करिबो अवरे-खत॥ सुनि बोलो कुरुपति नरसाईं। हम इनकहँ बरजो बहु दाईं॥ नहिंमाने ममबचन अतोलो। लरन मरन अब देहु न बोलो॥ यह सुनिकह्यो शकुनिनरनायक। भूपति तुम्हें न ऐसो लायक॥ जय हित शूर युद्धलागि बढ़िकै। फेरे कहूं फिरत रण चढ़िकै॥ दोहा॥ क्रोध त्यागि बढ़ि सैनसह सादर करोसहाय। निजकरदीबो अरिहिजय नहिं नृपनीति सचाय॥ यहसुनि दु-र्योधन नृपति पटहभेरि बजवाय। चलत भयेतहँ सैनसह जिमि घन उलद सबाय॥ सोरठा॥ नृप जौलगि यहसैन जायतहां तौ लगि उतै। पाण्डवभट बलऐन किये अशेषितमद्रदल॥ तोमर छन्द॥ दलि मद्रपति की सैन। अरिप्रबलबल बुधि ऐन॥ जय दुन्दुभी बजवाय। इतबढ़े शायक छाय॥ शरभल्ल तोमरभूरि। इत दये अबिरल पूरि॥ जिमिरुद्र बासव काल। तिमिपरेदेखि कराल॥ इनबध्यो ऐसोऊटि। नहिं सकेकोऊ जूटि॥ भजिचली सेना सर्व। तजिबीरता को गर्व॥ नहिं फिरैंफेरे एक। नहिंथिरैं हेरैंएक॥ जिमि निरखि केहरि जूह। भजिचलैं द्विरद समूह॥ दोहा॥ रथी पदाती अनगिने अगणित तुरँगसवार। भागिचले भयपूरि भट द्विरदी दोय हजार॥ तेहिक्षण पाण्डव प्रबलह्वै किये अमानुष कर्म। बधि अगणितहय द्विरदभट बिचरनलगे अभर्म॥ भीष्म द्रोण अरु कर्णके जूझे ममभट भूप। भये अधीर सभीत नहिं शल्य मरन अनुरूप॥ नौका डूबे होत जिमिब्याकुल उतरनहार। मरे शल्यके तिमिभयो ममदल बिग-त अधार॥ भूपतितेहि क्षण उदित भो धर्मनृपतिको धर्म। कहे सबै फल लहत जो किये सुयोधन कर्म॥ सोरठा॥ निजदल

बिचलत देखि नृपतिसुयोधन धीरधरि। कह्योसूतसों तेखिअरि सन्मुख लैसुरथचलु ॥ चौपाई ॥ नृपति सुयोधनसों इमिसुनिकै। सारथिचलो सुरथले गुनिकै ॥ इकइस सहस सुभट थिरिरण में। चले भूपके सँग त्यहि क्षणमें ॥ पाण्डव बढ़िबढ़ि तिनसों भिरिकै। लागेकरन युद्ध तहँ थिरिकै ॥ रथते उतरि भीम बल पागो। गदापाणि ह्वै बिचरण लागो ॥ धसि तौ सुतके पैदर दलमें। प्रलय पसारतभो तेहि थलमें ॥ जंघा जानु बाहु कटि तोरत। शीशहदीस कुम्भसम फोरत ॥ बिलसत भयो भीम तहँ तैसे। मृगगण मध्य केहरी जैसे ॥ महाराज सुनिये तेहि क्षनमें। भटहत शेष भगे गुणिमनमें ॥ धर्म आदि पाण्डव धनुधारी। दुर्योधन पहँ चले प्रचारी ॥ तिन्हें देखि नहिं तौसुत धरषो। कै यक सहस भल्ल शर बरषो ॥ यहि बिधि निज सुभटनसों भाष्यो। भागि अमरता तुम अभिलाष्यो ॥ अमर होत नर रण में मरिकै। नहिं जे मरत रोगवश परिकै ॥ ताते पलटि लरो भय तजिकै। हानि लाभमें आनँद सजिकै ॥ जयलहि लहत सुयश को टीको। रणमें मरेहु क्षत्रियहि नीको ॥ और एकहै सुनिये सोऊ। इनसों भागि बचिहि नहिं कोऊ ॥ यह सुनि चेति फिरे सब योधा। किये पाण्डुदलको अवरोधा ॥ दोहा ॥ शाल्वम्लेच्छ पति तेहि समय मत्त द्विरदपर बैठि। शत्रुसैनसों भिरतभो मन मोक्षनको ऐठि ॥ कालराज महिषस्थ सम शत्रुसैनसों जूटि। भयो भगावत बिकलकरि दण्ड शरनसों कूटि ॥ सोरठा ॥ निज दल बिचलत देखि धृष्टद्युम्न सेनाधिपति। शर बर्षत अतितेखि चलो शाल्व क्षितिपालपहँ ॥ चौपाई ॥ ताहि देखि आवत शर छावत। शाल्व भूपभो द्विरद चलावत ॥ धृष्टद्युम्न तहँ तुरता धार्‍यो। बसुशर कुम्भन बीच प्रहार्‍यो ॥ लागे बाण द्विरद दबि पिछलो। मनु रणबन्धु गोदसों बिछलो ॥ बहुरि चलायो नृप रिसिपागो। धृष्टद्युम्नके बधहित लागो ॥ धृष्टद्युम्न तब घनसम

गर्जो । गहि गुरु गदा त्यागि रथ तजों ॥ मत्त मतंग नेकु नहिं अटक्यो । सुरथउठाय भूमिपै पटक्यो ॥ शाल्वभूप अति तुरता धार्यो । अगणित भटन शरनसों मार्चो ॥ सात्यकि भीम शिखण्डी तौलों । आये सजे द्विरद रथ जौलों ॥ पुरुषसिंह सेनापति धरकस । गजके कुम्भ गदाहनि करकस ॥ बध्यो चिघरि सो गज मतवारा । गिरो बमत शोणित की धारा ॥ सात्यकिमारि बाणगति अतिको । काट्यो शीश शाल्व नरपतिको ॥ ढिग लखि क्षेमधूर्त्ति अवनीशहि । शर हनि काटि गिरायो शीशहि ॥ नृप यहि बिधि को अनरथ लखिकै । मम भट हाहा किये बिलखिकै ॥ सो लखिकै भूपति कृतबर्मा । भिरो सात्यकीसों बरपर्मा ॥ दोऊ एकबंश भवनागर । दोऊ बिदित पराक्रम सागर ॥ अगणित भांतिनकी गतिलीन्हे । बाणनको दुर्दिन रचिदीन्हे ॥ दोहा ॥ अगणित शायक परसपर काटि काटि गति ठाटि । हने परस्पर बाण बहु डाटि डाटि शर पाटि ॥ कृतबर्मा शर अर्द्ध शशि हनि काट्यो धनु तासु । सात्यकि काट्यो तासु धनु गहि कठोर धनुआसु ॥ बांधि सूतहि घोड़न बध्यो काट्यो ध्वजा अनूप । शूल चलायो और रथचढ़ि कृतबर्मा भूप ॥ सोरठा ॥ काटि शरनसोंताहि करिकरलाघव सात्यकी । फेरि बधतभो चाहि तुरँग सूत हार्दिक्यके ॥ इबिधि बिरथ करि फेरि भल्ल हन्यो हिय मध्यतकि । इमि कृतबर्महिं हेरि कृप बाढ़ि निज रथपर लयो ॥ नृप यह दशा निहारि ममदल बिचलो धीर तजि । सदालहत फलचारि राम कृष्ण जेहि हिय बसत ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबंदीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेशल्यपर्वणिशल्यबधोनामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

दोहा ॥ बारबार बिचलत सयन लखि दुर्योधन भूप । अति रिस गहि परभटनसों भिरो भयानक रूप ॥ और सुरथपरचढ़ि तहां कृतबर्मा क्षितिपाल । जातभयो बर्षत बिशिख बिक्रम करत कराल ॥ चौपाई ॥ महाराज सुनिये तेहि क्षनमें । दुर्योधन अनरथ गुणि मनमें ॥ अतिशय दुसह पराक्रम कीन्हों । बाणजाल पूरित करिदीन्हों ॥ शतशर हन्यो युधिष्ठिर राजहि । सत्तरिशर भटभीम दराजहि ॥ चौंसठि बाण नकुलकहँ मारचो । तीनिबाण सात्यकिहि प्रहारचो ॥ धनुसहदेव सुभटको काटचो । यहिबिधि सबपहँ शरझरि ठाटचो ॥ तब सहदेव और धनु गहिकै । दश शर हन्यों खरोरहु कहिकै ॥ नकुल हने नव बाण सुहाये । द्रौपदेय सत्तरि छबिछाये ॥ मारचो धर्म पांचशर चोखे । भीम असीशर हन्यो अनोखे ॥ इतनेमें इतके भटरूरे । गये तहां अति अमरष पूरे ॥ भिरो भीमसों अश्वत्थामा । नकुल उलूक भिरे बलधामा ॥ भिरि सात्यकिसों नृप कृतबर्मा । कियो घोर रण अद्भुत कर्मा ॥ शकुनि धर्म भूपति सों भिरिकै । घोर युद्ध कीन्हों तहँ थिरिकै ॥ भूपहि शकुनि बिरथकरि दीन्हों । नकुल तुरित निज रथपर लीन्हों ॥ रथचढ़ि धर्मभूप धनुधारी । लरे शकुनि सों बल बिस्तारी ॥ धृष्टद्युम्न अरु नृप दुर्योधन । भिरि कीन्हें अद्भुत धनुशोधन ॥ द्रौपदेय अरु बिप्र अचारय । घोर युद्ध कीन्हें जयकारय ॥ दोहा ॥ यहि प्रकार भिरिभिट तहां किये द्वन्द संग्राम । भूप अब्द शब्दन भरो रुण्डमुण्ड रणधाम ॥ अति बिक्रम करिकरि लरे सुभट प्रचारि प्रचारि । तोमर पट्टिश शक्ति शर भूरि प्रहारि प्रहारि ॥ सोरठा ॥ अतिशय अद्भुत युद्ध भूप भयो तेहिक्षण तहां । पाण्डव योधा उद्ध बिचलित कीन्हें सैन तुव ॥ चौपाई ॥ दल बिचलित लखि नृप दुर्योधन । फिरि फेरचो करि बहुबिधि ओधन ॥ होत भई तहँ तुमुल लराई । लरेसुभट अति ओज बढ़ाई ॥ नृपति युधिष्ठिर थिररहु भनिकै । शायक

तीनि गौतमहिं हनिकै ॥ कृतबर्माके घोरन हतिकै । बर्षो बिशिख पराक्रम अतिकै ॥ तहां द्रोणसुत तुरता कीन्हों । कृतबर्माहिं निज रथपर लीन्हों ॥ तब दुर्योधन गर्बी तेजो । रथी सातशत नृप पहँ भेजो ॥ ते बढ़ि बर्षि बाण नृप ऊपर । गोपित करिदीन्हें रण भूपर ॥ तिनमधि सब पाण्डव भट धसिकै । मृगगण मध्य सिंह सम लसिकै ॥ क्षणमें बधे सातशतबीरण । भये पराजित करत अधीरण ॥ बहुबिधिके अशकुन वहिथलमें । भूपति होतभये तेहिपलमें ॥ फेरिशकुनि बहुसुभट पठायो । तेहिपाण्डव यमलोक लगायो ॥ तब सौबल जयपै मनदैकै । दशहजार हय सादीलै- कै ॥ घूमि गहे घातैं कलबलकै । गयो पीठिपै पाण्डव दलकै ॥ दुर्योधनके जयरति पागो । भल्ल बर्षि दलमर्दन लागो ॥ मर्दित ह्वै भागेभट लितकै । प्रबलपरे सबयोधा इतकै ॥ हाहाकारमचो तेहिठाईं । मुदित भयो कुरुपति नरसाईं ॥ दोहा ॥ सोलखिकै सह- देवसों कह्यो युधिष्ठिरराय । द्रौपदेय सहसैनलै दलरक्षो तहँजा- य ॥ गज सवार शतसात अरु पैदरतीनि हजार । पांच सहस सहदेव सँग दयोतुरँग असवार ॥ सोरठा ॥ जायतहां सहदेवभिरे शकुनिकी सैनसों । द्रौपदेय बर भेव भिरे भिरे ह्वै सरित ज्यों ॥ चौपाई ॥ आयुध बाहिबाहि बरबादी । लरे अश्वसादी हय सादी ॥ पट्टिश शक्ति गदा शरस्रुरे । हनैं परस्पर अमरष पूरे ॥ किते जात इत आउ प्रचारैं । यष्टिशूल बरभल्ल प्रहारैं ॥ तुरँग तु- रँगसों भिरैभिरकै । हनैं खड्ग थिरु धिरैधिरकै ॥ कितने खड्ग चर्मपैलेहीं । बधि बादिहि महिगत करि देहीं ॥ किते परस्पर महिपै गिरिगिरि । बाहुयुद्ध बितरैं फिरि भिरिभिरि ॥ कटेशीश असि भुजा उठाईं । कितने फिरैं तुरँग दौराईं ॥ मरेकिते पायर में अटकै । लसे धूम पाणीसम लटकै ॥ किते परस्पर बाहि कटारी । मरिमिलि परे यथा पियप्यारी ॥ कितने तुरँग सवार बराधिकै । गरजैंद्विरद सवारन बाधिकै ॥ कितेगजरथ धनुषधर

नीके। बधें तुरग भटशकुनि अनीके॥ कितने पैदर सुभट अनोखे। बधे तुरँग भट अरिके पोखे॥ किते अश्वसादी जब लीन्हें। अगणित पैदर यमबश कीन्हें॥ यहिविधि घोर युद्धभो राजा। तौ कुमन्त्र तरुको फल ताजा॥ तहां न बचत जानिमति पुरको। शकुनि भूप निजदलले मुरको॥ षटहजार भट शोणित छाये। तुरगन सह घायल बचि आये॥ दोहा॥ धृष्टद्युम्नके ढिग गये द्रौपदेय सहसैन। गोसगर्ब नृपधर्मपहँ भट सहदेव सचैन॥ शकुनि भूप फिरि मध्यमें धृष्टद्युम्न दल देखि। भिरत भयो अति बेगसों नाशकरब अवरेखि॥ सोरठा॥ तिनसों भट पांचाल भिरत भये अतिओजसों। महाराज तेहिकाल भयो तहां अति घोररण॥ भुजंगप्रयात॥ भिरेहेरिकै टेरिकै फेरि बीरे। लगेडारने डाटि पट्टीशतीरे॥ गदा शक्ति भल्लै भलीभांति भेलैं। खरे खड्गकी खेलमें खड्ग खेलें॥ अरे आडुरे आडुरे टेरि टूटैं। बनी लोहकी यष्टिसों शीश कूटैं॥ किते खड्ग टूटे कटारीनबाहैं। कटे हाथ केते भरेरोष चाहैं॥ भिदे गात केते खरे गात भेदैं। किते जातके घात दैमासु मेदैं॥ कटे शीश केते अटे कोप घूमैं। कटे गात केते लटे भूमि चूमैं॥ बिना बीरके ह्वै किते अश्वधावैं। बने बातके पोतसे भूरि भावैं॥ तजैं संगही आयुधै बीरकेते। मरैं संगही संगही जात चेते॥ दोहा॥ यहि प्रकार तहँ होतभो युद्ध भयानक वेष। तृषितभये भट शकुनिके बचेरहे जेशेष॥ पाण्डव भटदल शकुनिको घेरि तहां क्षितिनाथ। मर्दतभे आयुध बरषि अति आतुर करिहाथ॥ सोरठा॥ सुभट शकुनि के सर्ब अति बलकरि तिनसों लरे। पसरो सर्ब अखर्ब भूपति तीजे याम तहँ॥ निजदल बचत न जानि शकुनि भूपकाढ़ि युगुति सों। गोनृपपहँ अनुमानि बचे सुभट शतसात सह॥ चौपाई॥ जाइ सुयोधन नृपके नेरे। कहत भयो मन मानो मेरे॥ योधन सहित शत्रुदलमाहीं। पैठि लरो कछु संशय नाहीं॥ सुजयलेहु

आपद् अरिमधिकै। हयदल पैदल गजरथ बाधिकै॥ यह सुनि दुर्योधन करि भावत। चलत भयो दुन्दुभि बजवावत॥ शंख बजाय सुभटअरिदलके। बाढ़िभे भिरतगणे बरबलके॥ मचो घोरसंगर तेहिपलमें। पूरिदये आयुध सबथलमें॥ मारु मारु धरु मारु रटनकी। अरु ज्योंशब्द सुबाण अटनकी॥ भूपति परिजातभो नभमें। भयोबीररस पूरण सबमें॥ धीरधुरीणपार्थ तेहि क्षनमें। कह्यो कृष्ण प्रभुसों गुणिमनमें॥ अरिदल मध्य चलो रथलैके। आजुबिनाशकरौं परलैके॥ भीषम बिदुर आपु हितशोधन। कह्यो न मान्योमूढ़ सुयोधन॥ भीषम द्रोण आदि भटरूरे। गिरे रहे जे बरबलपूरे॥ जूझे कर्ण शल्य भटजबहूं। चेतोनहीं मूढ़शठ तबहूं॥ मरेअनेक सहोदरभाई। तबहूंकरत न चेत अदाई॥ बिदुरबुझाय कह्योयहमोसों। सोमैंआजुकहत प्रभुतोसों॥ रहिहिप्राण याकेघट जौलों। तुम्हैंभाग देइहिनाहिं तौलों॥ दोहा॥ याकेजन्मत घोरधुनि रोदनकिये शृगाल। यासों बिनशी जगतसब यह क्षत्रिनको काल॥ सबक्षत्रिनसह याहि बिधि सुनोकृष्ण यहबात। शोकाकुल बन्धुनसहित करबअवशि निजघात॥ सोरठा॥ तातेसुरथ बढ़ाय चलो शत्रुकेसैनढिग। यह सुनि कृष्ण सचाय रथलैआये सैनढिग॥ चौपाई॥ भटकपि केतु महारिसिपागो। भूपयहांशर बर्षणलागो॥ बज्रसमान प्राणहर रूरे। शरगाण्डीव धनुषप्रद पूरे॥ दावादहै गहन बन जैसे। मर्दतभो कौरवदलतैसे॥ प्रतियोधन बाणनकीधारा। पूरिद्यो रणधीर अपारा॥ रथधनुध्वजा तुरग भटवारन। अंगभंगकरि लागो डारन॥ बहुविधिके बाणनकीबर्षा। करतभयो गहिआति उत्कर्षा॥ पारथदवा बाणझरिलपटैं। ममदल लताजूहलखि झपटैं॥ कितनेभगे प्राणहर ज्वैके। कितेमरैंबाढ़ि सन्मुखह्वैकै॥ भागे बंधु पुत्र तजिकेते। बहुभगि पलटिलरैं जयदेते॥ किते भागिकरि हयआश्वासन। आयलरैं फिरिकर्षि शरासन॥ तुरग

द्विरदरथ बिनुह्वैकेते । भगेबिकलह्वै जीवनचेते ॥ कितने अंग भंगह्वैभागे । चेतिपलटि मरिबे कहँलागे ॥ बहुभगिवारि पान करिफिरिकै । पार्थशरण सोंभूमैंथिरिकै ॥ कितेभभरि भगिचलैं अनेरे । फिर पलटैं तो सुतके फेरे ॥ घायलपरे कितेभट ऊबैं । कितने मरे रुधिरमें डूबैं ॥ पारथ कै जय यशको चोपित । यहि बिधि कियो प्रलय आरोपित ॥ दोहा ॥ महाराज सुनु तेहि समय दुर्योधन क्षितिपाल । धृष्टद्युम्नसों भिरतभो करषत धनुषकराल ॥ दोऊ धनुद्धर प्रबलभट बरषिबाण समुदाय । घोर युद्धतहँकरत भे लाघव ओज बढ़ाय ॥ सोरठा ॥ तोसुत भूपअमान बध्यो तासु चारो तुरग । हन्यो भुजनि द्वैबान हन्यो हियेमें एकशर ॥ चौपाई ॥ धृष्टद्युम्न अति अमरष छायो । बधि भूपति के तुरग गिरायो ॥ फेरि प्रचारि सिंहसम डाट्यो । शरसों शीश सूतके काट्यो ॥ तब दुर्योधन हयपर चढ़िकै । हो जहँ शकुनि गयोतहँ कढ़िकै ॥ तीनिहजार द्विरदलैटेरत । भोबढ़ि पांच पाण्डवन घेरत ॥ तेतहँ लसे जलद मधि जैसे । रबि गुरुशुक्र चन्द्रबुध तैसे ॥ तब गहि गदा भीमरथतजिकै । बली सिंहसम चलो गरजिकै ॥ गज कु-म्भनपै लगो प्रहारन । गज बधि लगो सानुसम डारन ॥ अग-णित द्विरद भयो बधि डारत । डरि अगणित भगिचले चिघा-रत ॥ लखि गज यूथ क्रोधसों छायो । सादर धृष्टद्युम्न तहँआ-यो ॥ अश्वत्थामा कृपकृतबर्मा । लख्यो न तहँ भूपतिबर पर्मा ॥ ह्वैअति दुचित क्षत्रियन बूझै । गये कहां भूपति के जूझै ॥ तेसबकहे सुनो यहजातिसों । भूपतिहारि शत्रु दलपातिसों ॥ हय चढ़िगोजहँ सौबलराजा । तहांलरतहैं साहित समाजा ॥ करिहो कहा नृपतिलै भाई । अब लरिबोई नेहसगाई ॥ सोसुनि भये सुचित तेनाहीं । सादरगये भूमिपाति पाहीं ॥ गर्बित धृष्टद्युम्न भटभायो । सेनासहित तहांचलिआयो ॥ निरखितहि ममसुभट सकाने । ह्वै बिबरण अति अनरथजाने ॥ अर्जुनके शरघातन

पीड़ित । हे सबसुभट हारिलहि ब्रीड़ित ॥ लरेबिना नहिं लहि अवकाशा । हम तेहिक्षण तजि जीवनआशा ॥ सबसुभटनसह धीरज धरिकै । तासोंभिरत भयेप्रण धरिकै ॥ धृष्टद्युम्न करकश रणकारी । तेहिथल अगणित सुभट सँहारी ॥ बाणप्रहारिभटन करिमोहित । गयोअन्त पाण्डव नृपकोहित ॥ तहँआयो सात्यकिधनुकर्षत । रथीचारिशत सहशर बर्षत ॥ एकमुहूर्त्त युद्धभो तासों । बधिममदल सात्यकि भरिभासों ॥ कैमोहित ताके शर घातन । हमगिरिपरे भूपकहि जातन ॥ तबसो मोहिंडारि निज रथपै । गयोबाण बर्षत रणपथपै ॥ भूपहिलखे बिना तेहिक्षणमें । अन्तकसम भीमहिं लखि रणमें ॥ हैहत शेष सुबनतो जेते । नृप बधजानि बिकल भेतेते ॥ दोहा ॥ दुर्बिमोच्च दुर्भर्षण दुर्बिष भूरि श्रुतान्त । जयत्सेन रवि जैत्र अरु बाल सुजात सुकान्त ॥ सुभट श्रुतर्बा धनुषधर दुःप्रधर्ष बरबीर । भिरे भीमसों मोहबश बर्षत तीक्ष्ण तीर ॥ लखि तिनकहँ भट भीमचढ़ि रथपैधनु टंकारि । क्रमसों तिनके काटिशिर दयोभूमिपर डारि ॥ चौपाई ॥ सब बंधुन को मरण निरेखी । सुभट श्रुतर्बा अतिशय तेखी ॥ भीमहिं कैं यकबार प्रचारी । हनत भयो अगणित शरभारी ॥ काटिभीम के अगणित शायक । काटतभयो धनुषदृढ़घायक ॥ तुरतहि भीम और धनुगहिकै । बरषोबिशिष भागुमति कहिकै ॥ अगणितबाण बारिकैताके । हन्यो श्रुतर्बाशिर बरभाके ॥ तहँ दोऊ अति लाघव लीन्हे । बाणननभ छादित करिदीन्हे ॥ भीम मारि बहुशायक चोखे । बध्यो श्रुतर्बा के हयरोखे ॥ बधिसूतहि अगणित शर मारयो । तबतो सुबनचर्म असिधारयो ॥ तब भटभीम कराषिधनु आसू । हनिक्षुरप्र काट्यो शिरतासू ॥ इमितो पुत्रनको बधलखिकै । ममभटअगरे बध अभिलखिकै ॥ घेरिचहूं दिशिसोंधनुकरषो । भीमसेनपहँ शायकबरषो ॥ भीमसेनगति अति उतकर्षा । तिनपहँ बिरचि बाणकीबर्षा ॥ शरन

पांचशत रथीसँहार्यो । सुभट सातशतगज बधिडारयो ॥ बध्यो लाख पैदर धनुधुनिकै । बसुशत द्विरदबध्यो जयगुनिकै ॥ तब हतशेष सुभट सब इतके । चले बिचलि बलवीर्य्य अमितके ॥ इमि बिचलाय कौरवी सेना । तालदेतभो भटजगजेना ॥ दोहा ॥ यहिप्रकारतो सुवनबधि भीमबीर उद्दण्ड । आपुहिमान्यों धन्य अति गुणिपूरण पणचण्ड ॥ नृपतेहिदिन तेहिक्षणरहो तोदल किंचितशेष । तबहूं तोसुतभूपनहिं मान्योकछु बिशेष ॥ सोरठा ॥ युगदलशेष निहारि कृष्ण कह्यो इमि पार्थसों । यहिदिन सुजय बिचारि पार्थबधौ सबशत्रुदल ॥ चौपाई ॥ सात्यकि परदल मधि जय लहिकै । लैआयो संजय कहँ गहिकै ॥ व्यूहबनाय किये अवरोधन । हयदल मध्य खरो दुर्योधन ॥ कृपकृतबर्मा अश्वत्थामा । नृपसों दूरि खरेबलधामा ॥ हैं अति सामित सुभट दुहुं दिशिके । लरतराजके जागे निशिके ॥ अबतुम निजधनु बिधि अवराधौ । बधिशत्रुहि नृपकारज साधौ ॥ नाथ आपु यह कहत यथारथ । यह सुनि कह्यो कृष्णसों पारथ ॥ भीमतासु सबबन्धु सँहारे । हैं द्वैतीनि जातते मारे ॥ भीषम द्रोण कर्ण हैं आदिक । मरे असंख्यन सुभट प्रमादिक ॥ बचे पांचशत भट हय सादी । शकुनि भूपके जय धुनि नादी ॥ द्वैशत बचे रथी कुरुपतिके । शतगज गजारोह बलअतिके ॥ तीनिहजार पयादे बाचे । तेमम बाणनकी भयराचे ॥ अश्वत्थामा कृपकृतबर्म्मा । अरु त्रिगर्त्तपति भूप सुशर्म्मा ॥ शकुनि उलूक शेषदल एतो । ताको बधब पराक्रम केतो ॥ नृप न भागि हैं रणतजि जेते । मम बाणन बधि जैहैं तेते ॥ जीत्यो शकुनि रल अधरमकै । सो हम आजु लेत सुधरमकै ॥ यह सुनि कृष्ण चपलकरि घोरे । चलत भये मम दलके धोरे ॥ दोहा ॥ चले पार्थके संगतहँ भीम नकुल सहदेव । टङ्कारत कोदण्डबर बर्षत बाण सुभेव ॥ तिन कहँ आवत देखि नृप शकुनि सुशर्म्मा भूप । बाढ़ि पारथसों भिरतभे

बर्षत बाण अनूप ॥ सुभट सुदर्शन सुवन तुव भिरो भीमसों बीर । भिरतभयो सहदेवसों दुर्योधन रणधीर ॥ प्रासहन्यो सहदेवको शीश हयस्थ नरेश । ह्वै मोहित फिरि चेदिसो बर्षोबाण सुभेश ॥ चौपाई ॥ बर्षिबाण पारथ धनुधारी । बध्यो समस्त सुभट हयचारी ॥ रथिन मध्य फिरि प्रलय पसारयो । अगणित रथिन भूमिपै डारयो ॥ बाण क्षुरप्र प्रचारि प्रहारयो । सत्यकर्म को शीश बिदारयो ॥ मृगगण मध्य सिंहज्यों भूषो । लस्योलसो तिमि पार्थ अदूषो ॥ रथीसुशर्म्माके सबबधिकै । बध्यो सुशर्माहिं पार्थ बरधिकै ॥ रहे सुशर्म्माके सुत जेते । तिनकहँ बध्योमारि शरतेते ॥ बधि त्रिगर्त्तदल भट छबिछायो । शेष कौरवी दलपै आयो ॥ तोसुत सुभट सुदर्शन चीन्हों । भीमसेन ताको बध कीन्हों ॥ लखि बध तासु तासु अनुगामी । भिरे भीम दलसों बधकामी ॥ तिनकहँ बध्यो भीम क्षणमाहीं । लखि सबगुणै बचत कोउ नाहीं ॥ तो सुतको सेनापति जोहो । भिरो शत्रुदल सों सोकोहो ॥ रथिन सहित अरिदलसों भिरिकै । सो अतियुद्ध कियो तहँ थिरिकै ॥ हन्यो उलूक बाण दश भीमहि । शकुनि तीनि शर हन्यो अधीमहि ॥ भट सहदेव जीति कीरतिसों । भो तहँभिरत शकुनि नरपतिसों ॥ शकुनिताहि नब्बेशर मारयो । सोभूपहि बहुबाण प्रहारयो ॥ तेसबसुभटतहां सुनुराजा । करत भये बाणनको छाजा ॥ दोहा ॥ इमिदुहुंदिशिके सुभटसब भिरि भिरिओजबढ़ाय । तोमर पट्टिश शक्तिशर दियदुहूंदिशि छाय ॥ रुंड मुंड भुजजानुसों भईभयानक भूमि । बायस जम्बुक गृध्रजुरि शोणित पीवत घूमि ॥ सोरठा ॥ सौबलबीर अमान प्रास हन्यो सहदेवशर । भोमूर्छितबलवान भटसहदेव उदारमति ॥ चौपाई ॥ सोलखि भीमशरासनकरष्यो । शकुनिआदिकहँ शायकबरष्यो ॥ घनसमानगर्जो प्रणधरिकै । सोसुनिभगे सुभट अति डरिकै ॥ सिंहगर्ज सुनिभागे कर्णी । तिमि ममसेना भई बिबर्णी ॥ दल

बिचलतलखि नृपदुर्योधन। इमिकहिकै कीन्हें अवरोधन॥ फिरो फिरो सबसंशय तजिकै। नरकलहौगे रणसोंभजिकै॥ सुनिते फिरे रोषसों पागे। तजि जियक्षोभ लरनतहँ लागे॥ सहदेव चेति शरासन लीन्हें। दशशरगात शकुनिके दीन्हें॥ तीनिबाण तुरगनकहँ हनिकै। काट्योधनुष खरोरहु भनिकै॥ तुरितहिशकुनि और धनुधारी। नकुलहिहन्यो साठिशर भारी॥ हन्योउलूक साठिशर भीमहि। सत्तरिशर सहदेव अधीमहि॥ भीम उलूकहि नवशर मार्‌यो। शकुनिहि चौसठि बाण प्रहार्‌यो॥ हनिसुभल्ल सहदेवनभटको। काट्योशीश उलूक सुभटको॥ शकुनिपुत्रकोमरिबो लखिकै। बाक्यबिदुरको समुझिबिलखिकै॥ दृगजल पूरिभूरि दुखभरिकै। चिन्तिमुहूर्त्त हियोदृढ़ करिकै॥ तज्योतीनिशर पाण्डव ऊपर। तेहिसहदेव गिरायोभूपर॥ तकि सहदेव सौबलहि डाट्यो। बाणअर्द्ध शशि हनिधनु काट्यो॥ तबगहि खड्ग शकुनि रणखेलत। भैसहदेवबीरपहँ झेलत॥ भटसहदेव बाणहनि चीन्हों। बीचहि खड्गकाटि द्वैकीन्हों॥

दोहा॥ तबसौबलगहि गुरुगदा गर्जिचलायोआसु। ताहिकाटि सहदेवभट व्यर्थकियो बलतासु॥ शक्तिचलायो शकुनितबतेहि काट्यो सहदेव। शकुनिभूपतब बिचलिगो भभरित्यागि निज भेव॥ सोरठा॥ शकुनिहि बिचलतदेखि बिचलिचले हतशेषभट। तबसहदेव बिशेखिचले प्रचारत सौबलहि॥ चौपाई॥ अब कहँ भगे जातहौ मामा। तजिपुंसत्व भये जिमि बामा॥ कुरुकुल अगिनिपलटि लरु भिरिकै। कियेकर्म को फललहु थिरिकै॥ आजु काटि तो शीशसोहायो। लेतजुवाको बैरबनायो॥ इमि कहि शकुनिहि दशशर मार्‌यो। चारिबाण तुरगनपहँ डार्‌यो॥ फिरि हनि छत्र ध्वजाध्वज काट्यो। धनुष काटि लाघ वता ठाट्यो॥ तब अतिकोपि शकुनि रणचारी। चह्यो चलावन प्राससुभारी॥ तब हनि तीनिभल्ल अरिनन्दन। काट्यो भुजा

पाण्डु नृपनन्दन ॥ फिरिहनि भल्लकाटि शिरताको । दियोडारि अतिभरो प्रभाको ॥ गिरो कबन्ध शकुनिको रथते । मानोंकेतु गिरोनभपथते ॥ शकुनिहि मरो देखिभट उतके । शंखबजाये आनँदयुतके ॥ तबभट सौबलके अनुगामी । भिरपाण्डवनसों नभकामी ॥ अर्जुनभीम बर्षिशर तिनपै । दीन्होंभेजि शकुनिगो जिनपै ॥ तबअतिकोपि सुयोधन राजा । बचेरहे जे सुभटसमा-जा ॥ तिनसोंकह्यो पाण्डवन हतिकै । आवोशीघ्र पराक्रमअति कै ॥ सोसुनिते सबअमरष साने । मरिसुर संगहेत उमदाने ॥ चले पांडवनपहँ धनुकर्षत । पट्टिश शक्ति शूल शरबर्षत ॥ देखि तिन्हैंभट पांडवदलके । बढ़ि बढ़िभिरे गणेबरबलके ॥ दोहा ॥ नृपसुतहूंलभरि होतभो तहांघोरसंग्राम । पांडवकिये अशेष बधि सबतोसैन ललाम ॥ एकादश अक्षौहिणी नृपतोसुतकी सैन । तेहिक्षण सिगरी बधिगई भावीहोति टरैन ॥ एक सुयोधन भूप बाचि इतउत चखन चलाय । निजदिशि सूनीमेदिनी लखिभो महाअचाय ॥ धनुटंकारत पाण्डवन लखिकछुसैन समेत । मोहिं चेति भगिजानको भूपगहतभोनेत ॥ सोरठा ॥ यहसुनिवृद्धनरेश संजयसों बूझतभयो । कहुसंजय तेहिदेश बचेकिते पाण्डवसु-भट ॥ जनमेजयउवाच ॥ जयकरी ॥ सोसुनिकै संजयमतिमान । कहत भयो सुनुभूपसुजान ॥ द्वैहजार रथ गजशत सात । पांचहजार अश्वअवदात ॥ दशहजार पैदर बलऐन । इतनीबची पाण्डवी सैन ॥ लखिनर्दत परयोधाचंड । चालनकरत कठिनकोदण्ड ॥ मरोतुरँगतेउतरि सदन्द । भागिचलो दुर्योधनमन्द ॥ एकादश क्षौहिणिको नाथ । चलोपयादे नहिंकोउसाथ ॥ गदापाणिअति जबसों जाय । दुरतभयो शरनीरेपाय ॥ गुणतबिदुरको बचन प्रशस्त । शरमधिभयो सूरसम अस्त ॥ उतसात्यकिके रथपर सोहि । धृष्टद्युम्न सेनापतिजोहि ॥ हँसिबोलो सात्यकिसों बैन । राखेइन्हैं नफाकछुहैन ॥ यहसुनिकै सात्यकि करिचेत । करमें

खड्गलियो बधहेत ॥ तेहिक्षण तहांआइ मुनिव्यास । कह्योन याहि बधौमति रास ॥ व्यासबचन सुनि बीरबिशाल । दीन्ह्यों मोहिंछोड़ि तेहिकाल ॥ व्याससुमुनिकी कृपाप्रसाद । हम बचि चलेतजे अंहलाद ॥ नृपति कोशभरि तहँसों आय । सरमधि भूपहिलख्यो अचाय ॥ नृपलखि मोहिंबारि भरिनैन । रहोमोह बश घरिक अचैन ॥ दोहा ॥ चेति भूपफिरि कहतभो कहुसंजय मतिमान। मम सुहितनमें एकतुम बचेन कोउआन ॥ यहसुनि हम नृपसोंकहो बचेतीनि भटऔर। कृप कृतबर्मा द्रोणसुत बिदित भटनको मौर ॥ तबमोसों नृपकहतभो कहेहु पितासोंजाय। तो सुत दुर्योधनबचो ह्रदमें पैठिअचाय ॥ पुत्रबन्धुहित वर्गबिनु कहाजियें अबमोहिं । कह्योराज्य पाण्डवसबल किमि जीवे सो जोहि ॥ इमि कहिमोकहँ बिदाकरि दुरोबारिमधिभूप । कृपकृतबर्मा द्रोणसुत तहँआये हतरूप ॥ महिखरी ॥ तेआय मोसोंभये बूझतकहो भूपति कितगयो। हैबचो कैलरिमरो तबहंमरहोन्नृप तहँकहिदयो ॥ तेरोय तेहिथर शोकभरि फिरिमोहिं रथपरकरिलये। रथहांकिआये सिविरमधि तेहि समय रबि अथवतभये॥ तेहिसमय रोदन शब्दआरत सकलसिविरन भरतभो ॥ हातात सुतपितु बन्धुस्वामी शब्दयहसुनि परतभो ॥ सबदाररक्षकन्नृपनकी तियरथन करिलै चलतभो । भागिचले सेवकसौंज लै लै शोकदावन जलतभो ॥ उरशीशताड़त करतरोदनचलीं योषित दुखभरीं। सबआय हस्तिन नगरमधि नृपठौरठौरन गिरिपरीं॥ उत बिदाकीन्हेंधर्म नृपति युयुत्सुकहँ उरलायकै। रथहांकि सो दृग भरेजल नृपनगर देख्योआयकै ॥ नृपढारछत्ता मिलताहि प्रणाम करिसो थिरिरहो । सुतभाग्य बशतुम बचेआये नृपति बिनुतिन इमिकहो ॥ तबकह्यो सबवृत्तांत बेश्यापुत्रजिमि आवत भयो। सुनिसमुझि भावीकह्यो बिधिगति बिदुर सतगुण मतिमयो ॥ दोहा ॥ निशिभरि रहिनिजगेह सुतभोरधर्मकेपास । जा-

यहु इमिकहितेहि बिदा कियोबिदुर मतिरास ॥ ताहि बिदाकरि दुखितअति बिदुरचले तुवपास । बेश्यासुत निजगेहगो गुणि प्रभु चरितप्रकास॥ रामराम सियरामजपि कृष्णचन्द्रकहँध्याय। शल्यपर्ब दर्पणरच्यो हनुमत कृपासहाय ॥

इतिभाणिदेवकविविरचितेमहाभारतशल्यपर्बणितृतीयोध्यायः३ ॥

इतिशल्यपर्बसमाप्तम् ॥

महाभारत दर्पणे ॥

गदापर्वदर्पणः ॥

दोहा ॥ नमस्कार नारायणहि करि नरोत्तमहिनौमि । बन्दि गिरा व्यासहिरचत भारतभाषा सौमि ॥ भूकृत भृभृत भूभरण भूस्वामी भगवान । तेहि भरतहि भजि भणत यह भाषाभार्त महान ॥ पारथके स्वारथ भये सारथि परम अनूप । तेसारथ रचि देहिंयह भारत भाषा रूप ॥ सोरठा ॥ बन्दौं कपिबरबीर राम परमप्रिय पारषद । मंगल मूरतिधीर भारत स्वरथ ध्वजस्थबर॥ सुमिरि उच्छलनि अच्छ उदधि उलंघन समयकी । भारत समुद प्रतक्ष भाषाकरि चाहत तस्यो ॥ जनगदंग जनहेत गहत गदा कौमोदकी । तेहिगहि हिये निकेत गदापर्ब भाषारचत ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ जयकरी ॥ शल्यपर्वकी कथा ललाम । कहिबोले संजय बलधाम ॥ महाराज दुर्योधन भूप । जब ह्रदमध्य दुरोगतरूप ॥ भरो सिविर मधि शोकअपार । भगेलोगकरि हाहाकार ॥ द्रोण तनय अरु कृप अनखाय । कृतबर्मा कछु रजनिबिताय ॥ शरपर जाय दुखित अतिमान । कह्योभूप सों करि आह्वान ॥ नृपहम तीनि महारथ चण्ड । तोजय यशहित धुनिकोदण्ड ॥ चाहत फेरि कियो संग्राम । ताते चलो लरैं यहियाम ॥ बधिहत शेष पाण्डवीसैन । लेहु बिजय बधि अरिबल ऐन ॥ के बधिजायबसो सुरलोक । उभय प्रकार सुयशको ओक ॥ यहसुनि दुर्योधन क्षि-

तिपाल । बोलेबचन पूरि दुखआल ॥ तुम त्रयबीर बचेहौ जौन । मम सुभाग्यकी पुरता तौन ॥ नाहिं यहिक्षण लरिबेके योग । हैं हम महाशमित लहिभोग ॥ कै गतश्रम यह रजनि बिताय । तुम सह करब युद्ध गहिचाय ॥ नृपतेहि समय दैव आधीन । भीमसेनको चाकर पीन ॥ बधिक एककै शमित महान । आयोतहां करन जलपान ॥ सोसुनियह बार्ता सविधान । मनमें भयो करत अनुमान ॥ है यहि सर मधि कुरुकुल राय । जाय भीमकहँ देउं बताय ॥ तौमोहिं बहुधन देहैंभीम । यह बिचारि सोचलो अधीम ॥ बिजयपाय उत धर्म नरेश । बन्धुसखन सह मुदित सुभेश ॥ मिलोन दुर्योधन नरनाह । तातेअति चिन्तित मनमाह ॥ चारण कहँ कहि बहुधन देन । सबदिशि भेजिदयो सुधिलेन ॥ तेसब जाय दूरिलों हेरि । आय भूपसों भाषेटेरि ॥ हेर्यो बहुतभूप शिर ताज । नहिंकहुंमिलो सुयोधन राज ॥ जानिपरै लरिमरो सगर्ब । क्षात्र धर्मयुतबीर अखर्ब ॥ इतनेमें वह व्याध सचैन । जाय भीमसों बोलो बैन ॥ जो द्वैपायनसर अभिराम । ताभधिदुरो भूपकै छाम ॥ इमिकहि कहत भयो सबतौन । सुनीरहे तहँबार्ता जौन ॥ भीम ताहिदै धनसुखपाय । सबिधि कह्यो भूपतिसों जाय ॥ सो सुनि धर्मभूप लहि मोद । सदल सकृष्णचले तेहि कोद ॥ तेहिक्षण भयो किलकिला शब्द । शंखशब्द सों पूरो अब्द ॥ कृप कृतबर्मा अश्वत्थाम । सुनि सो शब्द पूरि दुखधाम ॥ कह्यो सुयोधनसों वहिओर । परत सुनाइ शब्द अतिघोर ॥ जानिपरत नृपधर्म ससैन । यहि दिशि आवत पूरित चैन ॥ दोहा ॥ अबइतसों टरिजात हैं हम सब अनत अलेष । जाते तुम यहिमधि नइमि पांडव गुणै बिशेष ॥ यहसुनि तिनको करि बिदा दुर्योधन क्षितिपाल । जलथम्भन करि तालमधि दुरत भयो तेहिकाल ॥ तेत्रय योधा बेगसों दूरिजाय तेहि याम । बैठिरहे बटवृक्ष लहि महाशोचसों छाम ॥ सोरठा ॥ धर्मभूप तेहिठौर बन्धु सखन सहजायनृप ।

दुर्योधनको ठौर देखि कृष्णसों कहतभे ॥ रोला ॥ लखो दुर्योधन नृपतिको महामाया कर्म। बारिथम्भन करि दुरोशर मध्यपरम अभर्म ॥ नरन कहँनहिं प्राप्य अब यह जाइ बधि केहिभांति। मरोदेखैं याहि जबतब मिटै दुखकी पांति॥ बचन यहसुनि कह्यो केशव कहत नृपतुम सांच। युक्तिसों बधिजायगो यह सुकृतकी लहिआंच॥युक्तिसों बधिगये क्रमते असुरपति सबपूर्ब। युक्तिसों बधि जायगो यह किये मायागूर्ब॥ बचन यहसुनि नृप युधिष्ठिर हियेकरि अनुमान। भूमिनाथ जलस्थसोंइमिकह्यो करिआह्वान॥ नृप सुयोधन गर्बतजि अबगह्यो कैसोकर्म।क्षत्रबंश बिनाशि अब किमितजतक्षात्र सुधर्म॥बन्धुसम्बन्धी सखासुत समरमें मरवाय। आपुजीवनआश गहिअब छिपेजलमें जाय ॥ गहेअनुपम शूरता तबकहेबचन सगर्ब। गर्बबिक्रम शूरतानिज करत मिथ्या सर्ब ॥ जानिऐसो परतपरबलकहे गरबितबैन। परेनिजपर भीर रणतजिकिये अबजलशैन। शूरतादरशाय सबसंसार नाश कराय। भागिजलमें दुरेइमि निजबंश बिरदभुलाय॥ धारिधीरज कढ़ोजलते लरोभिरि मनमान। उचित नाहिं कुरुबंश जनकहँ जीवक्षोभ मलान॥ सुनिसुयोधन धर्मनृपके परमतीक्षण बैन। बारिमधिरहि कह्योमोकहँ जीवकी कछुभैन॥ बिरथ बिधनु अभृत्यकै हमभये शमितमहान। हेततेहियहि वारिमधि धसिकरत शैननआन॥ साहितअनुगण सोयतुमहूं बितयरण श्रमलेहु। भोरलहि हमलरब तुमसों राखिजयसों नेहु॥ कह्योतब नृपधर्म हम सबबिगत श्रमहैंभूप। बारिते कढ़िलरो यहिक्षण बीरता अनुरूप॥ मारिहमकहँ करोअबकै भोगभूमि समस्त। देहतजिकै जाय बिलसौसुमन लोकप्रशस्त॥ नृपसुयोधन कह्यो जिन सुत भ्रातरनहित राज्य। चहत ते सब मरे अबसोंभये हम कहँ त्याज्य॥ क्षीण रत्नाहीनक्षत्री भूमिरुच तिनमोहिं। युवति बिधवा सरिससो तजिदेत अबहमतोहिं॥ अबहुं तुमकहँ मारि-

बेको मोहिंहैउत्साह । पैनजीवतबन्धुसुत तोहिहैतत्यागत चाह ॥ जायबनमेंबसब अबहम अजिन अम्बरधारि । देततुमकहँभूमि भोगोसकल संशयटारि ॥ बचनयह सलिलस्थ नृपको सुनत धर्मनरेश । कह्यो अबकलकहत इमिरहि गुप्तपाय सुदेश ॥ सुई अग्रनदयेतब अबदेत सिगरी भूमि । सुबुधियहतो हिये आई कहोकितसों घूमि ॥ भूमिदीबेयोग जोतुम अजौलोंहैतात । तौन हमतो सुमुखदीन्हीं लेबसहि अवदात ॥ बंशरक्षण हेत तब हम रहेमांगत आपु । दये नहिंतबभयो तातेबंशक्षयकृत तापु ॥ बध बिनु अबतुम्हें नाहिं महिलेब जानोएहु।गुरुनको नहिंबचनमानेहु तासुफल तुमलेहु ॥ भागिरणते बारिमधि दुरिदेतहो महिदान। दानमें अरु युद्धमेंभो कौनतुम्हाहिं समान ॥ जानियतुहो मूर्ख जीयतभूमि शत्रुहि देत । सुई अग्र न दये तबअब इतोधीरज-लेत ॥ नहीं जौलगि मरिहि हम तुमदोयमें ते एक । कालतौलगि गहे रहि है जगत क्षयको टेक ॥ सुनो ताते बारितेकढ़ि लरो डरबिसराय । शूरता तजि गहत कादरपनो लाजबिहाय ॥ ब-चन यह सुनि कहतभे धृतराष्ट्र भूप अचैन । कहो ममसुतसह्यो कैसे महाकटु ये बैन ॥ जासु है चषकोर निरखत नृपनके समु-दाय । तौन ममसुत सह्योकैसे बचन ऐसेहाय ॥ दोहा ॥ वृद्धनृप-तिको बचन सुनि कह्यो सूतसुत दक्ष । नृपके दारुण बचन ये सुनि तो सुवन अपक्ष ॥ करतलसों करतलहि हनि महाक्रोधसों पूरि । सहि न सको नृप धर्मके बचन भरे बलभूरि ॥ कह्यो भूप तुम सकलहो सरथ सधनुष ससैन । अरथ अधनु हम एक कि-मि तुमसोंलरें सचैन ॥ एक एक क्रमसों करौ गदायुद्ध जोजूटि। तौहम कढ़ि तुमसोंलरें बध बिचारि जयऊटि ॥ भीष्मद्रोण क-र्णादिसों अऋण होब यहियाम । बधि सिगरे पाण्डवनकहँ करि सुगदा संग्राम ॥ धर्मयुद्ध जो करहु तुम जूटि एकसों एक । तौ सूची मुखमहि अजौं दुर्लभ तुम्हैं सटेक॥ सोरठा ॥ दुर्योधनके बैन

सुनि मोदित ह्वै धर्मनृप । बोले अचरजहैन हौतुम ऐसे सुभट
मणि ॥ क्षात्रधर्म बरजौन अजौं गहेतुम दैवबश। परम शूरताजौन
भूप गहेसो दैवबश ॥ चौपाई ॥ इमि कहि कह्यो धर्म नरनायक ।
आपकहेसो करिबे लायक ॥ लरि हि एक कहिहौ जेहि आरज ।
और खरे लखिहैं तो कारज ॥ यह सुनि भूप सुयोधन गरबी ।
कढ़ो गहे सुगदा अय दरबी ॥ महामत्त मैंगल सम बलते । ग-
दापाणि नृप निकरो जलते ॥ पूरित क्रोध अरुण अति ईक्षण ।
भृकुटी करे यथाअसि तीक्षण ॥ गदापाणि बिलसो अरित्रासक ।
मनहुं दण्डधर सब जगनाशक॥गरुई गदा लोहकी भारी । गहे
लसोमनु त्रिपुर सँहारी ॥ नृपहि अकेलो लखि तहँ थरपै । हँसे
सुभट करदैदै करपै ॥ हास करत लखि भूप सुयोधन । अति
रिस पूरि कह्यो जयशोधन ॥ सब यहि हँसिबेको फल लहिकै ।
यमपुर जैहौ नभपथ गहिकै ॥ यह सुनि उतके योधा रूरे । कु-
पितभये अति अमरष पूरे ॥ कीलित अहिसम नृप तेहि क्षन
में । बोलत भयो रोकि रिसि मनमें ॥ भूपति कहत पुकारे तोसों ।
करो धर्म संगर अब मोसों । बिरथ बिधनुष कवच नाहिं तनमें ।
हौ सम एक प्रबल भटगनमें ॥ भूप सुयोधनकी सुनि बानी ।
कह्यो युधिष्ठिर नृप अनुमानी ॥ जब अभिमन्युहि बधि जय
लीन्हे । तब तुम तहाँ धर्मनाहिं चीन्हे ॥ अब यहि समय धर्म
तुमजाने । यदपि कहत तुमसो हममाने ॥ हौ तुम कवच हीन
अबताते । देत कवचहम पूरितभाते ॥ इमिकहि धर्मकवचबर
दीन्हे । ताहि सुयोधन धारणकीन्हे ॥ बर शिरत्राण धारि बल
सागर । कहतभयो तोसुत भटनागर ॥ दोहा ॥ पांच पाण्डवनमों
रुचै जाहिगदा गहितौन । गदायुद्ध हमसोंकरै और लखैं रहि
मौन ॥ गदायुद्धमें मोहिं सम कौनभूमि तलमाह । न्याय युद्ध
करि जो लहैमोसों जय नरनाह ॥ सोरठा ॥ इमिकहि बारम्बार
गर्जितदेखि सुयोधनहि । केशवजानि बिकार नृपतियुधिष्ठिरसों

कह्यो ॥ जयकरी ॥ तुमभूपहि दीन्हों बरदान । लरिहिएक तुमसों सविधान ॥ तेहिबिधि लहौराज्यतुमभूपा। इमि कहिदीन्ह्यों बचन अनूप। नहिंऐसो साहस होयोग। अरिसों उचित न धर्मप्रयोग॥ वैकेहिबिधि करिकरि अन्याय । लीन्ह्यो राज्यरत्नसमुदाय ॥ तुम फिरि गहत धर्म यहिठौर । हैं कछुभोग भोगिबे और ॥ गदा युद्धमें जीतैयाहि । ऐसोकहै कौनकोचाहि ॥ भीमहुसों संशयपर-धान। यह जीतैधौंभीम अमान ॥ जो यहभीमहि बधे सचाय । तौ फिरिबसौ बिपिनिमें जाय॥ जानिपरो यहराज्यउदार । नाहिं तो भाग्य लिख्यो करतार ॥ धर्मसहित रहिगदा सुयुद्ध । यासों करिहि मरिहि सोशुद्ध ॥ यह सुनि भीमसेन बलवान । कह्यो कृष्णसों करि अनुमान । कृष्णचन्द्र मतिकरौ बिषाद । हमयहि बधबगहौ अहलाद ॥ हम सबबिधिहैं यासोंश्रेष्ठ । भूप पाइ हैं बिजय यथेष्ठ ॥ यह सुनिकृष्ण प्रशंसेताहि । कह्यो बधौयहि सु-गदाबाहि ॥ सात्यकि धर्मभूप कुलदीप । तासुप्रशंसाकियोमही-प ॥ सुनि सुप्रशंसाभीम अभर्म । कियोतासु बधको पणपर्म ॥ दोहा ॥ दुर्योधनके बधनकी करत प्रतिज्ञाचण्ड॥भीमउतरिरथसों चलो गाहिगुरुगदा उदण्ड ॥ लखिभीमहि गर्बित बचन कहत सुयोधनभूप । गदा उकाढ़त बढ़िचलो बलीसिंह अनुरूप ॥ दोऊ दोउनके बधन को पणकरत सपर्म। दोऊ दोउनसों कहत निज निज बिक्रममर्म ॥ सोरठा ॥ दोऊसुभट निशङ्क मत्तमतँग समसारिसबढ़ि । दोऊगहि गतिबङ्क गर्जि गरजिलागे लरन ॥ चौपाई ॥ महाराज तेहिक्षण मनभायो । अति अभिराम राम तहँआयो ॥ रामहिदेखि कृष्णउठिपूजे । बूझेकुशलकुशलनिज कूजे ॥ भाइन सहित युधिष्ठिरराजा । धृष्टद्युम्न सात्यकि सुख साजा ॥ क्रमसोंमिले मोदअति गहि गहि । आजुसुदिन तुम आये कहिकहि॥ सुखासीन करि धर्ममहीपति । कह्यो रामसों बाणी दीपति ॥ येयुग बीरबन्धु रणचारी । भरेगर्ब गुरुगदाप्र-

हारी ॥ परम बिचक्षण शिष्य तुम्हारे । लरत आजु अतिश्रम-रषभारे ॥ ह्वै मध्यस्थ कृष्ण तुम मानद । देखौ गदायुद्ध यह सानद ॥ सुनि बलराम कह्यो गुणि चितसों । हम हेगयेपुष्य में इतसों ॥ एकपुष्य रहि अनत बिताये । दूजीश्रवणमध्य इत आये ॥ आइबयालिस दिनपैलेखो । चाहतगदायुद्ध यहदेखो ॥ रामहिबन्दि बन्दि तहँ तक्षण । लगेलरन युगबन्धुबिचक्षण ॥ यह सुनि जनमेजय गुणि धुनिसों । बूझे बैशम्पायन मुनिसों ॥ मुनि सुयुद्ध आरम्भन क्षनमें । रामगये कितको गुणि मनमें ॥ आयेतहां कहाका करिकै । सोसब सुमुनिकहो मुदधरिकै ॥ यह सुनि बैशम्पायन भाषे । सुनोभूप तुमजो अभिलाषे ॥ दोहा ॥ करिब्यतीत निज कुदिनसब सुदिन पाय नृपधर्म । जब भेज्यो धृतराष्ट्रपहँ कृष्णहिं ज्ञापनकर्म ॥ जायतहां करि बार्ता कृष्ण चन्द्रफिरि आय । कहि उतको वृत्तान्त सब युद्धमंत्र ठहराय ॥ दल बिभाग लागेकरन तेहि क्षणमें बलराम । कृष्णचन्द्रसोंकहतभे सुबचन अतिअभिराम ॥ सोरठा ॥ उनकोसंग सहाय करिबो हमको उचितहै । सोसुनिकै यदुराय मन न दयो तेहि बचनपै ॥ रोला ॥ कृष्ण मान्यो बचननाहिं तब क्रोधगहि बलराम । तीर्थ यात्रा करन को भोजात बलबुधिधाम ॥ भोजआदिक सकल यादवगये कुरुपति ओर। सहित सात्यकि पाण्डवनादिशिकृष्ण पालकमोर ॥ चलतउत बलराम भृत्यन देइचारु निदेश । द्वारिकासों सौंजसब मँगवाइ यात्रादेश ॥ बाजिकुंजर बसन सुबर्णधेनु भूषणभूरि । ऋत्विजन अरु द्विजन दीनन दये आनँद पूरि ॥ ठौर ठौर कराय भोजन द्विजनके समुदाय । दयेदक्षिणा हेमभूषण बसन प्रीतिबढ़ाय ॥ तीर्थ सारस्वतीकरि यहिभांति सों बलराम । जातभे कुरुक्षेत्रमधि तेहि रजनिमें तेहियाम ॥ भूप जनमेजय सुमुनिकै बचन ये सुनिभूप । कह्योसारस्वतीको अबकहो महिमारूप ॥ बचन यहसुनि कह्यो मुनिनृप सुनहुसो

इतिहास। गये हैं यदुभूप उत जहँ परमतीर्थ प्रभास॥ छुटो जेहिथल चन्द्रमाको महायक्ष्मा रोग। परशि जेहिकै बिगति किल्विष करत रजनीभोग॥ भूपयहसुनि फेरि बोलेकहो मुनि शिरताज। रोगभोकिमि शशिहिछूटो किये कौनसुकाज॥सुमुनि यहसुनि कह्यो भूपति सुनोसो मनलाय। सुता सत्ताइस प्रजापति दक्षके शुचिकाय॥ हैं नक्षत्र सताइसौ ते दक्ष तिनहिं सचैन। दये सानँद रजनिपतिकहँ भाषिउचित सुबैन॥ रजनिपति अतिचारु तिनमें रोहिणी को देखि। त्यागि औरन लगोतासों रमणमोद बिशेखि॥ कछु दिनमें दुखितह्वै सब तरुणिते अनखाय। कह्यो यहवृत्तान्त बिधिवत दक्षके ढिगजाय॥ दक्षसो सुनि चन्द्रमासों कह्यो निजढिग पाय। रमौसम सब तियन सों यह उचित धर्म सुन्याय॥दक्ष शशिसों भाषि इमि फिरि कह्यो दुहितनपास। जाहु शशिपै बचन ममगुणि करिहि पूरण आस॥ गईते शशिगेह शशिनाहिं रमो तिनसों फेरि। विकलते फिरिआइ पितुसों कह्यो निजदुख टेरि। दक्षफिरि समुझाय शशिसोंकह्यो सहित बिधान। रमत नाहिं सम तियनसों सो लहतपाप महान॥ रमौ क्रमसों सबनसों इमिभाषि शशिहि बुझाय। कह्यो दुहितन जाहु पतिपहँरमिहि क्रमसों आय॥ मोहबश नहिं फेरितिनसों रमोनिशिपति मूढ़। फेरितेसबजाय पितुसोंकह्यो निजदुखगूढ़॥ बचनतो नहिंसुनत शशिनहिंरमत हमसोंतात। जातनहिंअब सह्यो हमसों मदनको उतपात॥ बचनयहसुनि दक्षकरिकै महा दारुणकोप। कह्यो यक्ष्माजाय शशिकोकरौ बिक्रमलोप॥ त्वरित यक्ष्माजाय प्रविशो रजनिपतिके गात। चन्द्रछीजन लगो दिन दिन तासुलहि उतपात॥ कियेऔषध यतनबहु नहिंलगो एकउपाय। भयो अति बलक्षीण शशिह्वै महादुर्बलकाय॥ देखि शशिकीदशा सुरगण जाय बूझेहेत। कह्यो सोसब रजनिपति जिमि लह्यो शापअचेत॥ सुमनगण तबदक्षके ढिगजाय करि

अवराध । कहे हेप्रभुक्षमो अबनिशिनाथको अपराध॥ चन्द्रमा के नशे बिनशिहि बीज औषध सबै । नशिहि ताते जगतसब सुर असुर ऋषि गन्धर्ब ॥ सुरनकेसुनि बचनबोले दक्ष नीति बिचारि । रमै समसब तियनसों शशिगहैव्रत प्रणधारि ॥ जाय तौ सुरसतीके मधिपैठिकरि अस्नान।होयगोफिरि पूर्बवत् शशि बिगतरोग अमान ॥ क्षीणह्वैहै मासआधे बढ़िहि आधेमास । कियेमज्जन सुरसतीमें होयगो नाहिंनास ॥ भयो पश्चिम समुद में सुरसती संगमयत्र । चारुतीरथ प्रभासो शशिकरौ मज्जन तत्र ॥ जायतहँ शशिकियो मज्जन लह्योपूरबरूप। तीर्थसारस्वती सोनृप परमफलद अनूप ॥ दोहा ॥ जायतहां बलराम करि मज्जनरहि निशिएक। भूरि दक्षिणा द्विजनकहँ दीन्हें सहित बिबेक ॥ फेरितहां ते रामचलि गयेकूपकोआप। जेहिमधि रहिद्विज सोमलहि दियोबन्धुकहँ शाप ॥ यहसुनि जनमेजय कह्यो कहो विप्रहितचाहि । किमितहँ पायोसोमद्विज शापदयो कृतताहि ॥ सोरठा ॥ सोसुनिकै मुनिराज कहतभये क्षितिपालसों । सुनोभूप शिरताज कथा पुरातन द्विजनकी ॥ दोहा ॥ रहेपूर्बयुगमें नृपति ब्राह्मणभ्राता तीन । तेजसदनसब सूरसम कर्त्तातप मखपीन ॥ कछुदिनमें तिनकेहिये भईभावना भूप। करिसुयज्ञ लहिपूर्णहम पीवैंसोम अनूप ॥ यहबिचारते याचकन पूजिमोदसों छाय। गे प्रभास शुभतीर्थतट लीन्हें पशुसमुदाय॥ त्रितनामक कछुपशु लये होबढ़ि आगेजात। और दोयपीछूरहे लीन्हेंपशुअवदात॥ वै द्वै पीछू गुणिकछू टेरेत्रितहि सडोर। सोसुनि त्रितफिरिचलत भो गुणिकछु कारजगोर ॥ तहांआइ घेरयो त्रितहि वृक तब भाग्यो विप्र । भीतातुरसों भगिचलो गिरो कूपमधि क्षिप्र ॥ ताहिकूपमधि गिरोगुणि वृकनदेखितेदोय। भागिचले सबपशुन लै महाभीतसों भोय ॥ परितेहि निरजल कूपमधि कीन्हों बिप्र बिचार। मरेइहां अब किमिमिलै पावनसोम उदार ॥ इतनेमें

द्विजकूपमाधि लम्बित बीरुधदेखि । तपबलसों प्रगटित कियो बिमलबारि अवरेखि ॥ अग्निहोत्रकी अग्निकहँ करिप्रज्वलित महान । लगोकरनमख पढ़िऋचा ब्राह्मण तेजानिधान ॥ तासु बेदधुनि जीवसुनि कह्योसुमनसों तत्र । जाहुसुमनसब शीघ्रतहँ त्रितमखपूरत यत्र ॥ करिहिकोप वहबिप्रतौ निजतपबलकेभेव । ताहीथल प्रगटित करिहि नूतन सिगरेदेव ॥ यहसुनि सुमनस आयतहँ कहेबिप्रसों बैन । हमसबआये भागहित देहुबिप्रगहि चैन ॥ सुरनदेखि द्विज मुदितह्वै दयोयथाबिधि भाग । बरमांगौ द्विजसुरकह्यो पूर्णभयो तुवयाग ॥ सोसुनि मांग्यो विप्रबर जो परशै यहकूप । सोमपान कृतकीलहै गतिसो दिव्य स्वरूप ॥ एवमस्तुकहि सुमनसब जातभये निजधाम । कूपमध्य पूरितभई सरस्वती अभिराम ॥ सोरठा ॥ भरोतेज-अतिमान द्विज कढ़िकै बाहेरभयो । निजगृहआइ सुजान शापदयो युगद्विजन कहँ ॥ दन्तिनकहँ भयपाय भगेमूढ़ तुमहमहिंतजि । तातेअबतोकाय प्रगटै गुरुलांगूल कपि ॥ कछुदिनमें क्षितिपाल कह्योबिप्र जो सोभयो । यहइतिहास रसाल सुनोब्यास तपधामसों ॥ दोहा ॥ जायतहां तेहिकूपको परशि बारिबलराम । सुबरणमणि बिप्रन दये भूषण बसन ललाम ॥ जयकरी ॥ फिरि तहँसोंचलिकै बल-राम । गयेसुभूमिक थलअभिराम ॥ शूद्रअभीरणको भयमानि । गुप्तभई जहँगिरासुजानि ॥ जहांरमैंअप्सर गन्धर्ब । किन्नरयक्ष सुमुनि सुरसर्ब ॥ तहांजायकरिकै अस्नान । बिप्रनदियो तृप्तकरि दान ॥ फिरि गन्धर्ब तीर्थमेंजाय । करिमज्जन दैधनअधिकाय ॥ फिरिगो गर्गतीर्थपै भूप । सरस्वतीको सुतट अनूप ॥ कीन्हों तहां तपस्यागर्ग । तबसों गर्गतीर्थ प्रदस्वर्ग ॥ तहांजाय करिकैअस्ना-न । बिप्रनदीन्हो दानमहान ॥ फिरिगो शंखतीर्थ मतिमान । जहँबर शंखसुमेरु समान ॥ सरस्वतीके तटपै जौन । श्वेत शैल सम सुखमा भौन ॥ जहँबिलसैं सुर अप्सर यक्ष । नहिं मनुष्य

को गमन प्रतक्ष ॥ तहँदैधेनु बसन मणि भूरि । गयो द्वैत बन आनँदपूरि ॥ पूजि मुनिनतहँ अतिसुख पाय । बिप्रनकहँ भोजन करवाय ॥ दैसुबरण मणि हलधरबीर । जायसुरसती दक्षिण तीर ॥ गयो नागधन्वा थलदक्ष । दानशील हलधर सहपक्ष ॥ जेहिथल बासुकि पन्नगराज । कहँ अभिषेक्यो सुमन समाज ॥ चौदह सहस बसत वहि यत्र । नहीं व्यालको भय कछु तत्र ॥ तहँदै द्विजन दान अधिकार । चलेपूर्वदिशि रामउदार ॥ अगणित तीर्थकरत तेहि ओर । देत द्विजनकहँ दान अथोर ॥ दर्शन करत मुनिनको पर्म । गयो तहांलों सुमति सधर्म ॥ जहां जाय सुरसती असेग । पश्चिम मुख फिरिभई सबेग ॥ सो लखि बिस्मितह्वै बलराम । आयोनैमिषार तपधाम ॥ यहसुनि जनमेजय क्षितिपाल । कीन्ह्योंप्रश्न सुनो नरपाल ॥ सबिधि बुझाय कहोसो बिप्र । कत फिरि चलिसुरसती सुक्षिप्र ॥ कतबिस्मित भो यदुकुलचन्द । सोसुनि कह्यो मुनीयअमन्द ॥ महाराज कृतयुगमें पूर्ब । नैमिषारके मुनितपगूर्ब ॥ होतदोयदश बार्षिकयज्ञ । तेहिमधिजाय सुतप सर्वज्ञ ॥ भयेयज्ञ पूरणफिरि आय । सुरसतिके दक्षिण दिशिजाय ॥ अग्निहोत्र ब्रत धरि रमणीय । सोमितकिये कूलकमनीय ॥ तेहि सिमन्त पञ्चकमधि चाहि । कीन्हेतपमख बरब्रतगाहि ॥ तिनकेहित पश्चिमदिशि आय । गई पूर्बफिरि गिरासचाय ॥ तहँकरि बिप्रनको सत्कार । बिधिवत् तृप्तकियो बहुबार ॥ दोहा ॥ फेरितहांते रामचलि निरखतमुनिन अमन्द । सप्तसारस्वत तीर्थमधि जातभयो कुलचन्द ॥ जहां मंजुमंकनक मुनि करत तपस्याताात । यह सुनिजनमेजय नृपति कियेप्रश्न अवदात ॥ तीर्थसप्त सारस्वतीभो केहिहेतललाम । तपनिधिको मंकनकमुनि कहौ सुमुनि तपधाम ॥ सोरठा ॥ बैशम्पानिमुनीश यहसुनिकै नृपसोंकह्यो । जनमेजय अवनीश सुनो प्रश्नं जोतुमकिये ॥ रोला ॥ सुप्रभाअरु कांचनाक्षी अरुबिशाला

मंजु । अरु सुरेण मनोरमा बिमलोदका कृतरंजु ॥ ओघवति ये नाम तिनके सुनो भूभरतार । सुनो अबसो कहतहौं जिमिभई प्रगट उदार ॥ किय पुष्करक्षेत्र पै बिधियज्ञ अति अभिराम । किये बिधितहँ सुरसतीको स्मर्ण आनँद धाम ॥ भई तेहि थर प्रगट भूपति सुरसतीकीधार । नामताको सुप्रभा भो चारिफल दातार ॥ सुनो नैमिष बिपिनमें बसि ऋषिनको समुदाय । सुरसतीको कियो सुमिरण ध्यानधरि चितलाय ॥ तेजतपनिधि मुनिनके उपकारहेत अनूप । कांचनाक्षी सुरसतीतहँ भईप्रगटित भूप ॥ ऋषिनसहगये भूपकीन्हों परमपावनशत्र । नृपबिशाला नाम सुरसति भई प्रगटित तत्र ॥ कियो उद्दालक परमतपसुरसतीको चाहि । भईप्रगटित तहांकहत मनोरमा सबताहि ॥ भूप कुरु कुरुक्षेत्रमें नृपकियो अनुपम यज्ञ । भई प्रगटित सुरसती तहँ ओघवति सर्बज्ञ ॥ दक्ष कीन्हें यज्ञगंगाद्वार पै सबिधान । सुरसती तहँ भई प्रगट सुरेणुनाम महान ॥ किये हिमवत निकट ब्रह्मा परमउत्तमयाग । तहां बिमलोदा सुरसती कढ़ीपूरण भाग ॥ भई एकीभूत तेहिथल देवि सातों रूप । सप्तसारस्वत भयोसोतीर्थ परमअनूप ॥ सुनोअब क्षितिपाल मुनिमंकनकको इतिहास । आपगामधि रहोमज्जन करतसो तपरास ॥ एकतरुणि दिगम्बरा तहँकरतही अस्नान । देखिताको गिरोमुनिको रेतपरम अमान ॥ तुरितमुनि संकनकलीन्हों कलशमें सोरेत । सप्तधाह्वै कलशमें सोपरोभूप सहेत ॥ तुरित प्रगटित भयेतासों सातमरुत महान । बायुबेग सुबायुबल अरुबायुहो बलवान ॥ बायुमण्डल बायुज्वाला बायुरेत प्रवीन । बायुचक्र कुमारसतयों भयो अतिशयपीन ॥ भूपऔरोसुनो मुनिकीकथा अतिरमणीय । कियोचारु कुशाग्रसों क्षतपाणिमें कमनीय ॥ गिरनक्षतसों लगो अनुपम साकरस तेहिकाल । देखिसो द्विजलगो निर्त्तन गहेमोद बिशाल ॥ ताहिनिर्त्तन तासुतपबल पायनृप तेहिठौर । थावरो अरु

जंगमौ सबगेह निर्त्तनडौर ॥ तिन्हैं निर्त्तत देखि सुरऋषि महा अनरथजानि । जायशिव सों कहे ताकहँ समितकीबो मानि ॥ आयतहैं शिवकह्यो द्विजतुम नचतहौ केहिकाज । शम्भुसोंतब कह्यो द्विजनिज साकरसको राज ॥ कह्यो शिवतब विप्रसों यह कौनअचरजसाज । भाषि इबिधिअगुष्ठ निजमें कियोक्षतगिरिराज ॥ गिरन तासों लगोहिमसो देखिद्विज गहिलाज । कियो अस्तुति शम्भुकी ह्वै नाचिबेसो बाज ॥ तेजनिधि मंकनक इमितेहि तृप्तकरिबलराम । द्विजनदै बहुदक्षिणा फिरिचलोबरचसधाम ॥ फेरिउशनस तीर्थगे बलगेह मोदमहान । नामजासु कपाल मोचनअर्थ नामप्रधान ॥ पूर्व जेहिथल कियेहोतपशुक्र महिमा भौन । किये मज्जन दानदीन्हे रामकरि तहँगौन ॥ भूमिपति इतिहास यह सुनि प्रश्नकीन्हों फेरि । नाम तासुकपालमोचन भयो किमि कहुनेरि ॥ प्रश्न यहसुनि भूमिपतिसों कह्यो मुनि अनुमानि । भूप हमसों कहतहौ तुमसुनो आनँद आनि ॥ जाय दण्डक बिपिन में जब कोशलापति राम । दूषणादिक असुर गणको कियोबध जयकाम ॥ शीश काहू असुरको तब एक उड़िकै जाय । हो महोदर बिप्रताको ग्रस्यो जंघा काय ॥ भयो आरत बिप्रवह तब छूटिबे के हेत । लगो तीरथ करन फिरि फिरि गहे बुधिबल चेत ॥ दोहा ॥ उशन तीर्थमें जायसो सरस्वतीके बीच । करनलगो अस्नान तहँ छूटिपरो शिर नीच ॥ गतपीड़ाह्वै बिप्रवह मोदि द्विजन पहँ जाय । उशनतीर्थकी निज दशा बिधिवत दयो सुनाय ॥ तेहि कपालमोचन कह्यो सोसुनि मुनि समुदाय । सो कपालमोचन भयो ताते सुनोसचाय ॥

इतिमहाभारतदर्पणेगदापर्वणिबलरामतीर्थयात्रावर्णनोनामप्रथमोऽध्याय

दोहा ॥ नृपकपालमोचन बिमल तीरथमधि बलराम । मुनिन संग निवसतभये एक रजनि अभिराम ॥ सोरठा ॥ तहँ बहुधनदै रामद्विजनपूजि अतिमोदसों । अंगारक तपधाम मुनिकेआश्रम

जातभे ॥ नृपसुतबिश्वामित्र जहँ तपकरि ब्राह्मणयलहि। कीन्हे कला बिचित्र सप्तऋषिनके सरिसकै ॥ जयकरी ॥ तहँदै द्विजन दान अधिकाय। गेबकआश्रममें छबिछाय ॥ जहँदालभ्यकियो तपपर्म। तहँपूज्यो बिप्रनगुणि धर्म ॥ मुनि दालभ्य परमतप-रास। सुनोएक ताकोइतिहास ॥ मखहित मांगन पशुबहुरास। गेधृतराष्ट्र भूपकेपास ॥ मुनि दालभ्यकह्यो नृपअक्ष। मखहित बहुपशुदेहु प्रतक्ष ॥ सुनिनृपबोलो त्यागिउछाहु। मिलैं मृतक पशुसोलैजाहु ॥ सोसुनि मुनिगुणि अति अपमान। गेआश्रम गहिक्रोध महान ॥ नृपको नगर बिनाशन चाहि। पशुहोमन लागे पणपाहि ॥ छीजनलगो भूपकोग्राम। तबचिन्तितह्वै नृप अभिराम ॥ बिप्रन बूझोताको हेत। कह्यो हेतते बिप्रसचेत ॥ तबधृतराष्ट्र भूरिभयमानि। गेदालभ्यपास अनुमानि ॥ पग गहि कीन्हों बिनयमहान। कृपाकियो तबबिप्र सुजान ॥ नृपके नगरवृद्धके काज। कियोहवन तब द्विजशिरताज ॥ बहुपशु दै आयो नृपगर्ब। बरधितभयो नगर जिमिपूर्ब ॥ तेहिमुनिके आ-श्रम बलिराम। सरस्वतीकेतट अभिराम ॥ बिप्रनबहु धनदैस-बज्ञ। गेजहँ सुर गुरुकीन्होंयज्ञ ॥ असुरनाश सुरगणकीवृद्धि। चाहिमांसहोमे साचि सिद्धि ॥ गज हय बसन अन्नदै तत्र। गे ययाति कीन्हों मख यत्र ॥ तहँदै बिप्रन सुबरण भूरि। गे बशिष्ठ आश्रम मुद पूरि ॥ बिश्वामित्र सुरसतिहि शाप। दयो जहां भो शोणित आप ॥ सुनि जनमेजय कह्यो बिचारि। यह इतिहास कहो बिस्तारि ॥ वैशम्पायन सुनि यह बैन। कहत भये नृपसुनो सचैन ॥ सरस्वती सरिताके तीर। स्थानु किये हे तप गम्भीर ॥ स्थानु तीर्थभो ताको नाम। तबसों सुनो भूप मतिधाम ॥ तेहि थरमें जुरि सुमन अनेक। अस्कन्दहि कीन्हें अभिषेक ॥ तहां तपत हे सुमुनि बशिष्ठ। तत्त्व बिचारन मध्य प्रबिष्ठ ॥ कछू दूरपै बिश्वामित्र। रहे करत तप परम बिचित्र ॥ ते युगऋषिहियभरे

बिरोध। ईर्षाधरे करततप शोध॥ लखि वशिष्ठ को तेज अमान। कौशिक अमरष गहे महान। करि आवाहन ओज बढ़ाय। सरस्वती कहँ निकट बोलाय॥ कह्यो गिरा मम शासन मानि। निज प्रबाह मधिकरि अनुमानि॥ल्याउ वशिष्ठहि ममढिग ताहि।बधों चहतहम निज जय चाहि॥ दोहा॥ दिब्य सरूपा सरितसो सुनि यह मुनिकी बात। कहि न सकी कछु थिररही ह्वै अति कंपित गात॥सोलखिकरि रातेनयन कौशिक कह्यो सटेक। शीघ्र बशिष्ठहिल्याउअब करु बिलम्ब मतिनेक॥ यहसुनि सोयुग मुनिनको गुणि तपतेज प्रभाउ।गई बशिष्ठ मुनीशपहँ बिकल दूरिकरि चाउ॥ कह्योजौन कौशिक कही मुनिबशिष्ठ सों तौन। सुनि वशिष्ठ तासोंकह्यो करौ तौनभय कोन॥ सोरठा॥ जो न तासु यह बैन करिहौ देहैं शापतौ। यह सुनि सुरति सचैन निज प्रबाह मधि धँसिगई॥ रोला॥ समयलहि करिकूलकर्षण सरित मुनि पणमानि। धारमधि करि मुनिबशिष्ठहि चलीलै अनुमानि॥ धारमधि धरिचले मुनिवर करत अस्तुति तासु। गई सरिता मुनिहि कौशिक के निकटलै आसु॥ लखि बशिष्ठहि निकट कौशिक चले बधन उताल। ब्रह्महत्या बूझि सरिता भरीभीत बिशाल॥ तब बशिष्ठहि पूर्बदिशिकहँ दई शीघ्र बहाइ। देखि कौशिक दियो ताकहं शाप अति अनखाइ॥ ठगो मोकहं होय ताते रुधिर तेरो बारि। भयो शोणित धारताको शाप मुनिको धारि॥ तहां आइ पिशाच राक्षस गहे मोद महान। नचत किलकत बसत तेहिथल करत शोणित पान॥ कछू दिन में तहां आये तीर्थ यात्रा हेत। बिप्र अगणित बेदमारग परमतेज निकेत॥ तहां बिहरत राक्षसनलखि देखि सरितारूप। बोलि सरितहि भयेबूझत तासुकारण भूप। कही सरिता तौनसो सुनि दुखित ह्वै सब विप्र। लगेकरन उपायजाते शाप छूटै क्षिप्र॥ लगे तप मख करन शिवहि अराधि रहि ब्रतयुक्त। कछूदिनमें

भई सरिता शाप अघसों मुक्त ॥ होय दुखित पिशाच तेसब बन्दि द्विजन सठौर । कहै अब हम कहां भोजन करब भ्रमि सबठौर ॥ पिता गुरु गुरुबन्धु आदिक गुरुनको अपमान। किये होत पिशाच सो सब करब अबका पान ॥ कहे द्विजन उच्छिष्ट भोजन लहैं भूप पिशाच । पान कचजल रुदन जल अरु शौचको जो बाच। भाषि यहिबिधि कह्यो बिप्रन सरितसों यहिभांति। इन्हें तारो सरितबर तुम परम पूरणकांति ॥ जानि मुनिमत कियो सरिता अरुण अपनोबारि । न्हाइ तामधि गये राक्षस स्वर्ग शुचि बपुधारि। परम अनुपम तीर्थगुणिसोंन्हाइ तहँ सुरराज। ब्रह्मबध अतिपापसों छुटि लसत सहितसमाज॥ भूप कीन्हों प्रश्न इमिफिरि सुनो तेजसभौन । ब्रह्महत्या लह्यो कैसे शक्र कहियेतौन ॥ कह्यो मुनिवर शक्रके भयभागिनमुचि बिचारि । दुरोरश्मिन मध्य रबिके तहांशक्र निहारि ॥ करतभो तब नमुचिसों हठि मित्रता सम्बन्ध। नमुचि तब सुरराजसों इमि भयो करत निबन्ध ॥ दिवसमें मतिरातिमें मति अस्त्रगण के धार । बधौ मतितुम मोहिंसो सुनिशक्रकरि स्वीकार ॥ समय हेरतरहो कबहूं परत कुहिशचाहि । आपनिधिको फेण गहिकै बधो बलसों ताहि ॥ शीश काटिकै नमुचिको लागि चलो पछि तासु । भगे सुरपति लोकसब नहिंलह्यो कतहुँ सुपासु ॥ गये बिधिके पासतब बिधिदयो तेहि उपदेश । जायसादर सुरसती में गिरोत्यागि अँदेश ॥ शक्रसो सुनिआय सादरपरे अरुणा-धार । ब्रह्मकुल भवमित्र बधको छुटोपातक चार ॥ नमुचि को शिरतहां परिकैलह्यो उत्तमलोक। परमपावन करनसोवह तीर्थ महिमा ओक ॥ जाय तहँ बलराम करि अस्नान दै बहु दान। सोम के बरतीर्थ माधिभो जातधीर अमान ॥ राजसूय महान मखजहँ कियो सोमउदार । अत्रिमुनि जहंभयेहोता बेदपार अपार ॥ राजसूय सुयज्ञके जेहिभयेके परभाव । युद्ध तारकमयो

पीछू भयो अनघ अठाव ॥ सेनपतिको जासुमधि अस्कन्दकहँ अभिषेक। सहित सुर ऋषि किये सुरपति बेदबिधि सबिबेक। कथायहसुनि कह्यो जनमेजय महीभरतार। अस्कन्दको अभिषेकभो किमिकहो सुमुनि उदार ॥ प्रश्न यहसुनि कह्यो मुनिबर सुनो भूपति तौन॥ यथाल्लहि अभिषेक शिवसुत कियो बिक्रम जौन ॥ प्रथम अब अस्कन्द प्रभुकोजन्म सुनिये भूप। फेरिक्रम सोंसुनो ताकोचरित चारुअनूप ॥ दोहा ॥ तेजशम्भुप्रभुको परो अग्निमध्यं सुनुभूप। पावकसो नहिंसहिसको बरचसपरमअनूप॥ तज्यो सुरसरित मध्यसो गर्बपरम अभिराम । सहिनसकी सो सुरसरित गर्बतेज तपधाम ॥ गंगागिरि हिमवानपर तज्योगर्ब अतिचण्ड। तहँबर्द्धितभो गर्बसो तेजपुंज उद्दण्ड ॥ शरस्तम्भ पर ज्वलितलखि मारतण्डसम गर्ब । धीरधारि धारतभई धामिनि कृतिकासर्ब ॥ पुत्रार्थिन षटकीर्तिकनको गुणिप्रभवमहान । षटमुखह्वै स्कन्दप्रभु कीन्हों अस्तन पान ॥ कार्तिकेयह्वै शैलपहँ बर्द्धितह्वै भगवान। मुनिगन्धर्बनसों सुनत प्रियअस्तुति अतिमान ॥ जातकर्म सुरगुरुकियो तासुआइ तेहिठौर । धनुर्बेदअरु वेद सब प्राप्त भये गहि गौर ॥ उमा उमापति गणन सह तहँ आये तपधाम । सुमन रुद्र आदित्य अहि खग दानव अभिराम ॥ ब्रह्मा आये सुतनसह विष्णु शक्र सब और। चढ़ि बिमान आये तहां गहे मोहको डौर॥ तेजपुंज वह बाल प्रभु चलो शम्भुके पास। तदनु चले सब देवता निरखत प्रभा प्रकास ॥ तेहिक्षण गंगा अरु उमा पावकके भो मान । यह काको सुत प्रथम अब कापहँ जात सुजान ॥ तिनके मनकी समुझि सो बाल चारि बपुधारि। गयो चारि पहँ चावसों चारु सुचार बिचारि ॥ स्कन्द रूपगे शम्भु पहँ बिशख उमाकेगोद। शाखअग्निपहँ सुर सरित नैग्नेय प्रदमोद ॥ सो लखिके ब्रह्मादि सब अतिविस्मित भे भूप। तब बिरंचिसों शिव कहे बिधिवत बचन

अनूप। सविधि देहु यहि बालकहँ आधिपत्य अनुमानि । सुनि बिचारकरि बिधि कियो सेनापति सुखदानि ॥ करि सम्मत अभिषेकको बिधि हरि हर सुरसर्ब । किन्नर अप्सर यक्ष ऋषि सब दिगपति गन्धर्ब ॥ हैमवती पावनि परम सरस्वतीकेतीर। सरंजाम अभिषेकको सह सुर गुरु ऋषिभीर ॥ तहँ सुर गुरु प्रभु हवनकरि किये सबिधि अभिषेक । सुमणिमाल हिमवान तहँ स्कन्दहि दीन्हे एक॥ विष्णु इन्द्र आदित्य रबि रुद्र पितर बसुसर्प । सिद्ध साध्यलोकप सकल कीन्हें आशिष अर्प ॥ मित्र पितामह प्रजापति पुलह आदिऋषि सर्ब। नारदादि मुनिदिशप सब मंगल बदेअखर्ब ॥ सर्बलोक अरु सिन्धु सब सत्र गिरिसरिता सर्ब। सर्बनाग सम्बत सकलभे मोदित सबपर्ब ॥ सबदेवी अरु वेदसब सब ब्रह्माण्डज रूप। मुदितभये स्कन्दको लखि अभिषेक अनूप ॥ अभिषेकित स्कन्दकहँ चतुरानन त्रिपुरारि। चारि चारि अनुचर दये प्रबल प्रचण्ड बिचारि ॥ शक्रसूर्य यम बरुण हरि अनुचर दीन्हे भूरि। बिन्ध्य मेरु हिमवान ये दीन्हें आनँद पूरि ॥ विशुकर्मा अरुदस्र अरु धाता पूषामित्र । मरुत सिन्धु गिरियादये पार्षद करत अचित्र ॥ यहिबिधिसब कोऊ दये अगणित पार्षदताहि । दिब्यअस्त्रयुत दिव्यबपु दिब्य पराक्रमचाहि ॥ और असंख्यन सुभटगण कार्तिकेयके भूप। कुमुद पद्म आदिकगहे बिबिधभांतिके रूप॥ एकमुण्ड बहुमुण्डयुग करपगबहु पगपानि । बिविधभांतिके पदनके कहँ कहां लों जानि ॥ बिबिधभांति के अस्त्रधर प्रबलप्रचण्ड अखेद। बिबिध भांति के वेषधर शोभित भेदाभेद ॥ तथा असंख्यन मातृगण तासु सैनिकाभूप। बिबिध भांति आयुधगहे बिबिध भांतिको रूप॥ सोरठा ॥ शक्ति अमोघ अमन्द अरुण पताका अमल अरु। शम्भुसुवन स्कन्दकहँदीन्हें सुरराजतहँ॥ दीन्हें आपु इशान भूरिभूतगणकीचमू। दीन्हें बिष्णुमहान बैजयन्ति

को माल बर ॥ दीन्हें गरुड़ मयूर बसन बिरजसी गिरि सुता। अमृत धारसोंपूर दयो कमण्डलु सुरसरित ॥ ताम्रचूड़ अभिराम बारुणास्त्र दीन्हेंबरुण। कृष्ण अजिन गुणग्राम कार्तिकेय कहँ बिधिदयो ॥ चौपाई ॥ यहिबिधि सेनापति पदलहिकै। अभयहोहु सुरगणसों कहिकै ॥ साजिसैन अति बलसों चढ़िकै। भिरो असुर सेनासों बढ़िकै ॥ कार्तिकेय अतिगर्बित मनमें। कोटिन असुर बध्योतेहि रनमें ॥ राक्षस लाखसहित भटभारी। तारताहिभो बधत प्रचारी ॥ आठपद्म सेनाको नायक। माहिष ताहि बध्यो दृढ़ घायक ॥ भटशत अयुतसेन सहचारी। होत्रि पाद तेहि बध्यो प्रचारी ॥ असुर खर्बपतिबीर सहोदर। सदल बध्यो तेहि सुमिरि दमोदर ॥ कार्तिकेय अतुलित बलभारयो। इबिधि असंख्यन असुरसंहारयो। बलिको सुवन बाणरणतजिकै। दुरोक्रौंच गिरिवर मधिभजिकै ॥ स्कन्दशक्तिगिरिशिरतब मारयो। उन्नत शृंगभस्मकरि डारयो ॥ तहँ हतशेष असुरभय भरिकै। भगेसमर तजि हांहा करिकै। कार्तिकेय अति महिमा छायो। घने बिजय दुन्दुभि बजवायो ॥ मोदि सुमनगण पूजन कीन्हें। करि सुप्रशंसा आशिष दीन्हें ॥ नृपयहिबिधि अभिषेक सुहावन। कार्तिकेयकोभो मनभावन ॥ लहिअभिषेक कियोजो कारय। सो हम तुम्हें सुनायो आरय ॥ यहइतिहास चारिफल दायक। बर्द्धित करनतेज चित चायक ॥ दोहा ॥ तैजस नाम सुतीर्थसो सुनोभूप तपधाम। भयोजहां स्कन्दप्रभु को अभिषेक ललाम ॥ पूर्बसुमनसबऋषिनसह तेहिथल सहितबिबेक। सर्ब समुद्पति बरुणकहँ कीन्हें करिअभिषेक ॥ सुनो भूपतहँ एक निशि रहिदैबिप्रनदान। अग्नितीर्थ बलरामगे आनँदभरेमहान ॥ सुनोभूप जहँ पूर्बभे गुप्त अग्नि भगवान। कीन्हों प्रगट बिरंचिफिरि करिकै यत्न महान ॥ यहसुनि जनमेजयकह्यो कहो बिप्रमतिभौन। भयेअग्निकिमि गुप्ततहँ प्रगटभये किमितौन॥

पूर्वअग्निभृगुशाप भयदुरे शमीमधिजाय। प्रगटकियेबिधिजाय तहँ भृगुकोशाप दुराय॥ जयकरी ॥ तहांजाय करिकैस्नान। दैबिप्रन कहँ बिधिवतदान॥ गो कौबेर तीर्थ बलराम। पूरत बिप्रन को मनकाम ॥ जहँ कुबेरकरि तप सबिबेक। भये धनद लहिकै अभिषेक ॥ करिसो तीर्थराम मतिमान। गये बदरपाचन अस्थान॥ भरद्वाजकी सुतासकाम। श्रुतावतीनामा अभिराम॥ इन्द्रहोहिं ममपति यहिहेत। जहां उग्रतप कियोसचेत॥ लखि अतिभक्ति इन्द्रतेहि ठौर। बनि बशिष्ठआये गहिगौर॥ लखि महर्षिकहँ बिप्र कुमारि। बोलत भईजोरि युगबारि॥ शासन करौदेहिं हमतौन। हम चाहतहैं शक्रहिरौन। यह सुनिकै सुरपति द्विजरूप। कहत भये यह बचन अनूप॥ तप करि देह त्यागकरि सर्ब। पावतहै सुरलोक अखर्ब॥ तुमकहँ पांच बदर हमदेत। तिन्हैंकरौ परिपाकसनेत॥ इमिकहि इन्द्रबदरदैताहि। इन्द्रतीर्थ मधिबैठेचाहि॥ अग्नि बारिसों तरुणि सुजानि। पचवनलगी बदरहित जानि॥ ईंधन सञ्चितहो सबजौन। सो सब जरौन पाकोतौन॥ तब तिय महा शोचसों छाय। देत भई निजचरण लगाय॥ चरणपरे तबहूंगहिटेक। नहिंसो तियरुख मोरयो नेक॥ तबकरिकृपा धारिनिजरूप। आयेतहां शक्रसुनुभूप॥ कहेकियोतुम तपजेहिकाज। पूरणभयो तौनतौराज॥ ममपुरचलो त्यागिसन्देह। ममसँगभोगो पूरितनेह॥ इमिकहि शक्रपूर्ब इतिहास। तासोंकहे सुनोमतिरास॥ इत अरुन्धती कहँ तजिपूर्ब। गेहिमवन्त सप्तऋषिगूर्ब॥ द्वादशवार्षिकको तेहि काल। अनावृष्टिभो महाकराल॥ अरुन्धती इतबरव्रतधारि। रहीकरततप सुखद बिचारि॥ तहँशिवगहि द्विजरूप प्रशस्त। आये दायक सुफल समस्त॥ मुनिपत्नीसों भाषेएहु। हे ब्रत धारिणि भोजनदेहु॥ अरुन्धतीबोली सुनिबैन। बिप्रअन्नआश्रम मधिहै न॥ करौबदर भोजन सुनिएहु। बोलेशम्भु चुरै

यहदेहु ॥ सोलागी चुरवन करिढंग । कहनलगे शिवकथाप्र-
संग ॥ ताहिचुरत बीतोदिन भूरि । बरषेजलद गयोमुदपूरि ॥
इतनेमें ऋषितेज अतूल । आयेतहां गहे फलमूल ॥ तिनसों
कहे शंभुलखि धर्म । तुमसबसोंयाको तपपर्म ॥ दोहा ॥ इमि कहि
कै करिअतिकृपा निजबपुगइ ईशान । अरुन्धतीसों कहतभे
सुतामांगु बरदान ॥ यहसुनिकह्यो अरुन्धतीदेहु परमबरसर्ब ।
याहि बदरपाचन कहैं तीर्थसुमन ऋषिसर्ब ॥ याहि थलमें बसि
तीनिदिन करैसुब्रत तपजौन । द्वादशवार्षिक तपकिये कोफल
पावैतौन ॥ सोरठा ॥ एवमस्तुकहिचाहि शंभुगये निजलोकप्रति ।
भयेप्रशंसतताहि सप्तऋषीश्वर मुदित कै ॥ तुमअति दुस्तर
कर्म कीन्हें इततातेसुनो । रहिनिशिएक सधर्म अबसोफललहि
हैं सुजन ॥ यहसुनिसोतजि देह चढ़िबिमान गहि दिब्यतन ।
गईशक्रके गेह सुमनवृष्टि कीन्हें सुमन ॥ रोला ॥ भूपयह इति-
हास सुनिकै कियेप्रश्न प्रपन्न । सुताभारद्वाजकी सोभई किमि
उत्पन्न ॥ प्रश्नयह सुनिकह्योमुनिसो सुनहुनृप मतिमान । लखि
घृताचिहि अत्रिसुतको गिरोरेत महान ॥ पत्रपुटमें लियो मुनि
सो सुता प्रगटीचित्र । श्रुतावतिमुनि तासुराख्यो नाम परम
पवित्र ॥ बदरपाचन तीर्थमाधि तपिगईसो सुरधाम । तहां सो
चलि इन्द्रतीरथगये श्रीबलराम ॥ जहां अगणित यज्ञ करिकै
इन्द्र शतक्रतु ख्यात । तहांसो बलरामगे जहँरामतीर्थ बिभात ॥
जीतिमहि बहुबार जेहिथलजाय श्रीभृगुराम । अश्वमेध सुयज्ञ
अगणितकियो पूरणकाम । तहांसों बलराम यमुनातीर्थ आये
भूप । बरुण प्रभुजेहिठौर कीन्हें राजसूय अनूप ॥ भयोदेवासुर
महारण जासुमखके भेव । लहे अतिशयखेद दानव असुरसि-
गरे देव ॥ पूजि बिप्रन तहांश्रीबलराम पूरणमोद । जातभे आ-
दित्य तीरथ करत परम बिनोद ॥ जहांमखकरि अग्नि प्रभुभे
ज्योतिपति रुचिधाम । पूर्बमधुकैटभहि जेहिथल बध्यो बिष्णु

सकाम ॥ पितर सुर गन्धर्ब किन्नर यक्ष ऋषि गणसर्ब । जहां मज्जन करिलहतभे परमसिद्धि अखर्ब ॥ जहां देवल असित मुनि गहि गृहीधर्म अनूप । जलजदल जलभाव रहि सुख दुःख में सम रूप ॥ बेदआज्ञा करतलाये तत्त्वमें मन वृत्ति । गुणत ईश्वर नित्यकी यह नटनि माया भृत्ति ॥ तहां जैगीषब्य मुनि गहि भिक्षु भेषअमन्द ॥ गुप्तरहि तिमिचरतसर्पत जलदमधि जिमि चन्द ॥ जातआश्रम असितके जब भिक्षुभोजन काज । देततबते ताहि भोजन यथाशक्ति समाज ॥ गयोइमि बहुकाल तबयुगबन्धु सुमुनि सचेत । गहि कमण्डलुगये नभपथ सिन्धु मज्जन हेत ॥ तहां देख्यो करत मज्जन भिक्षु ब्राह्मण तौन । गुणे मनमें भिक्षु वह इत कियो केहिबिधि गौन ॥ न्हाय जलसों पूरिभाजन फेरिनभपथ आय । देखिआश्रम मध्य बिप्रहि दये बिस्मयछाय ॥ एकदिन फिरिचले ऊरधलोकते युगबिप्र । तहां देख्योभिक्षु ब्राह्मणजात आगेक्षिप्र ॥ पितृआदिक लोकक्रमसों गयेऊरधयत्र । असित देवल भिक्षुबिप्रहि लख्यो आगेतत्र ॥ जायक्रमसों लोकमें पतिब्रतनके मतिमान । लख्यो विप्रहिजात आगे भरो तेज महान ॥ जायतहँते लख्यो नहिं फिरि भिक्षु बिप्रहिभूप । तहां सिद्ध न भये बूझत तासुकारण रूप ॥ सिद्ध तिनसोंकह जैगीषब्यसों तप ओक । परमयोगी योग बिधिसों गयोबिधिकेलोक ॥ तहांतो गतिनहीं तुम उतसकौगे नहिंजाय । सुनि पलटिते फेरिबिप्रहि लख्योआश्रमआय ॥ जानि जैगीषब्यते ढिगजाय बिधिवतनौमि । जोरियुगकर कहतभे इमिसरस भाषा सौमि ॥ मोक्षधर्म अनूप अबहम गहन चाहततात । कृपा करिकै करहुसो उपदेश अति अवदात ॥ तिन्हैंजैगीषब्य चाहे देनपथ संन्यास । रुदनलागे करनातिनके पितर तबताजिआस ॥ रुदन सुनिते तजेनहिंगृह रहेरुकि कछुकाल । फेरिगुणिकेलये तासों मोक्षधर्म बिशाल ॥ असित देवल सहित जैगीषब्यकी

तेहि ठौर । सुमनऋषि गन्धर्ब अस्तुति किये गहिगहि गौर ॥ तौनपावक तीर्थ मधिरहि एकनिशिबलराम । द्विजनदै बहुदान गेजहँ सोमतीर्थ ललाम ॥ तहांसों फिरिगयो जेहिथल कियो सुतपदधीच । जासुसारस्वत सुवनजोभयो सुरसतिबीच ॥ बचन यहसुनि प्रश्नकीन्हों भूप आनँद भौन । भयो जेहिबिधि जन्म ताको सुमुनि कहियेतौन ॥ दोहा ॥ बैशम्पायन प्रश्नसुनि बोले बचन रसाल । लखि दधीचिको तपमहा भीतिभरे सुरपाल ॥ जोअलंबुषा अप्सरा तासोंकहे सटेक । मुनिदधीचिको तपकरो भंगकला करिनेक ॥ रहेदेव तर्पणकरत सुरसति मध्यदधीच । मुनिमनमोहनि अप्सरा आई तहां न भीच ॥ देखि अप्सरहि गिरतभो मुनि दधीचिकोरेत । सोगहिलीन्हीं सुरसती मुनिहित करणि सचेत ॥ सोरठा ॥ गर्भउदरमें धारि भयोप्रसव तब पुत्र लै । मुनिपहँजाय बिचारि कहतभई अतिमोदसों ॥ यहतोपुत्र शुक्रांत लेहुगोदमें प्रेमगहि । इमिकाहिसो वृत्तान्त कह्यो लह्यो मुनिरेत जिमि ॥ चौपाई ॥ सो सुनिमुनि अति आनँद लहिकै । पुत्रहिलियो गोदमें गहिकै ॥ मूर्द्ध सूँघिअति आनँदलीन्हों । सुर सतिकहँ बहुआशिष दीन्हों ॥ फिरि यहिबिधि सुरसतिसों भाष्यो । तुममम संभव सुत अभिलाष्यो ॥ ताते सुत सारस्वत नामी । होयतुम्हार नाम अनुगामी ॥ सुरसति ऐसीबाणी सुनि कै । गईसुतहिलै निजसुत गुणिकै ॥ कछुदिनमें सुरअसुर उमँगिकै । लरनलगे अति बलसों पगिकै ॥ तहँ सुरपति नहिंजय बिधिदेख्यो । बिधिहिमंत्रि तब इमि अवरेख्यो ॥ अस्थि दधीचि सुमुनिकोपावै । ताहिल्यायबर अस्त्रबनावै ॥ तौताकहँ गहि बिक्रम अतिकै । बिजयलहैसब असुरनहतिकै ॥ यहगुणिशक्र आय मुदपागे । हाड़ दधीचि सुमुनिसों माँगे ॥ सुनि दधीचि अति उत्तमजाने । परउपकार हेतअनुमाने ॥ सयतनहाड़शक्र कहँदैकै । अक्षय लोकगयो यशलैकै ॥ लैसो अस्थि शक्र मन

भाये। बज्रशक्र गुरुगदा बनाये॥ तिन्हैंप्रहारि असुरदलजीते। तीनलोक पति भयेअभीते॥ कछु दिनगये सुनो अरिधर्षण। बारहबार्षिकभयो अबर्षण॥ तबसुरसति तटकेद्विजरूरे। बिना अहार शोचसों पूरे॥ दोहा॥ पढ़े रहे हे बेदजो सो सबगयो भुलाय। समयपायते फिरिपढ़े सारस्वत तहँ जाय॥ द्विजबर साठि हजार कहँ बेदपढ़ायो तौन। सुवन सरस्वति को भयो यहिबिधि महिमा भौन॥ तहँ करिकै अस्नान दै हेमरजत मणिभूरि। गये कुमारी जहँकरी तप अतिआनँद पूरि॥ सोरठा॥ यहसुनि भू भर्त्तार किये सुमुनि सों प्रश्न फिरि। कहौ तौनजेहिचार कियो कुमारी परमतप॥ जयकरी॥ सुनियह प्रश्न सुमुनि मुदधारि। जनमेजय सों कहेबिचारि॥ होमुनिगर्ग सुमुनि तपभौन। सुतामानसिक जायोतौन॥ कछु दिनमें मुनिकरितन त्याग। गयोस्वर्ग अति पूरण भाग॥ बिप्रसुता सो पूरणरूप। अति तपतहां कियो सुनभूप॥ नहिं इच्छा सुखदायक नाह। ऊरध लोकचाहि मनमाह॥ तपकरिदीन्ही जन्म बिताय। भई वृद्धजीरण सबकाय॥ तन तजिबेको कीन्होंडौर। आय कह्यो नारद मुनिमौर॥ संस्कारबिनु हेतपओक। कन्याहि मिलतन ऊरधलोक॥ यह सुनिसो अति गही गलानि। कौनगहै अब मेरोपानि॥ सो सुनिप्राकश्रृंग तपधाम। तासों बोलो बचनललाम॥ एक निबन्ध करौ जो मानि। तौहमगेहैं तिहारोपानि॥ रमव एकनिशि भरिभरिप्रेम। फेरिनकबहुं रमौयहनेम॥ यह निबन्ध करि मुनि सुखदानि। गह्यो बेद बिधि ताको पानि॥ निशिलहिसो वृद्धाअवदात। भईयुवाह्वै महाबिभात॥ भूषण बसन धारिछबिछाय। रमीबिप्रसँग लाजबिहाय॥ गुणिनिबन्ध रतिसुख द्विजनाह। अतिपछितात भयोमनमाह॥ निशिबिताय करिकै अस्नान। मुनिसोंकहि निबन्धकोठान॥ ह्वैकैबिदा त्यागि तनतौन। ऊरधलोक गईकरिगौन॥ तुमकीन्हेंजो प्रश्नप्रकास।

है ताको ऐसो इतिहास ॥ नृपताही थलमें बलराम । सुन्यो शल्यकोबध अति छाम ॥ तजिसुमन्त पंचकको द्वार । कह्यो मुनिनसों रामउदार ॥ कुरुक्षेत्रको फलहैजौन । सानँद सुमुनि कहो सबतौन ॥ यहसुनिकै बोलो द्विजराज । सुनोरामसों सहित समाज ॥ हैसमन्त पंचक यह पूर्ब । विधिकी उत्तर बेदी गूर्ब ॥ कियो दिवौकस इत बहुसत्र । फिरि कुरुभूप राजऋषि अत्र ॥करिअतिकष्ट साधितप पर्म । इतकरष्यो सबतीरथधर्म ॥ तब अनुमानि शक्रइत आय । भूपतिसों बूझैहर्षाय ॥ हेराजर्षि कहौ केहिकाज । हौकर्षत सबभूमि समाज ॥ तबनृपकह्यो सुनो यहिहेत । हमकर्षत सबतीर्थ सनेत ॥ मरैंइहांजे बिना प्रयास । ते सबकरैं स्वर्गकोबास॥ यहसुनि सुरपतिकरि अनुमान । कह्यो भूपसों सुनोसुजान ॥ ब्रतकरिजो इततजे शरीर।कैरणमध्य मरै जोधीर॥ लहै स्वर्ग सोगहि अह्लाद।राखब उचितइतोमर्य्याद ॥

दोहा ॥ स्नानदान तपमखवरत करैंजितो इतआय । तासुसहस गुणको लहैं फल अमोघ अधिकाय ॥ परिसमीरबश जायउड़ि कुरुक्षेत्रकीधूरि । जेहिपरसै सोऊलहै उत्तमगति मुदपूरि॥ इमि कहि कुरुराजर्षिसों शक्रगये निजधाम । कुरुक्षेत्रको परमफल कहैंकहालोंराम॥ यह सुनिकै बलराम तहँ दै बिप्रन बहुदान । चलितहँसों फिरि लखतभे आश्रम सुभग महान॥ सोरठा ॥ सो आश्रम बलराम देखिकहतभे मुनिनसों । यह आश्रम अभिराम कहोकौन तपधामको ॥ जयकरी ॥यह सुनिकै मुनि तपनिधि बोले । सुनोभूप इतिहास अतोले॥ पूर्बविष्णु इतबरतपकीन्हें । तपप्रभाव कहँ गरिमादीन्हें ॥ ऋषिशांडिल्य विप्रकीतनया । ही श्रीमती नाम अतिसनया ॥ ब्रह्मचारिणी सोइतरहिकै। करितप पर्म धर्म ब्रत गहिकै ॥ तन तजिगई स्वर्ग मतिधामा । यहता को आश्रम अभिरामा ॥ फिरितहँसों चलिकै हलधारी। गेसर स्वतितट तीरथचारी ॥ तहँ अन्हाय सन्ध्यादिक करिकै। मुनि

न संग बैठेमुद धरिकै ॥ तेहिक्षणमें तहँ नारद आये । बिधि-
वत पूजिराम बैठाये ॥ भे मुनिसों बूझतगुणि मनकी । कहौदशा
कुरुपाण्डव रनकी ॥ यहसुनिकै बोलेमुनि नारद । बधिगे अ-
गणित युद्ध बिशारद ॥ कहँकहांलों चलिसब देखो ।भावीअव-
शिहोत अवरेखो ॥ यहिक्षण भीमसुयोधन भिरिकै । गदायुद्ध
बितरततहैं थिरिकै ॥ अबगुरुता युग शिष्यन केरी । चलिकै
लखौकरौभतिदेरी ॥ सुनिबलभये बिदामुनिगनसों ।जाहुद्वारि-
का कहि निज जनसों ॥ गिरिते उतरि सुरथ परचढ़िकै । चले
युद्धथल बनते कढ़िकै ॥ सरस्वति सरितहि हिये सराहत । गे-
जहँरहे कृष्णरणचाहत ॥ दोहा ॥ गयेउहां बलरामतब जोवार्त्ता
भो भूप । सोसिगरो प्रथमहिं कह्यो संजयबचन अनूप ॥
इतिमहाभारतेगदापर्वणिबलरामतीर्थयात्रावर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २॥
बैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ संजयके मुख रामको सुनि आगम
तेहिठौर । कहतभये धृतराष्ट्रनृप गहेमोहकोडौर ॥संजयजबरण
भूमिमधि आये श्रीबलराम । भीम सुयोधन किमिलरे तबसो
कहु मतिधाम ॥ चौपाई ॥ सुनि धृतराष्ट्रभूपकी बानी। कहतभये
संजय अनुमानी ॥ नृपते उभयबीर रणचारी । गदापाणि गिरि
वर समभारी ॥ सिंहसमान सरस बलभारे । गर्जतजिमि मतंग
मतवारे ॥ दोऊदोउनके बधिबेकी । करतप्रतिज्ञा जय साधिबे
की ॥ बढ़िबढ़िलागे गदाप्रहारण । प्रबल प्रचण्ड प्रभाव प्रचा-
रण ॥ फिरि अप्सब्य सब्यगति गहि गहि । मारुबचाउनबाचा
कहिकहि ॥ मारैंगदा चपलकर करिकरि । टारैंगदागदापरधरि
धरि ॥ दोऊगदा गातपर सहि सहि । बाहैं गदा क्रोधसों दहि
दहि ॥ कूदि दूरिहय फिरिफिरि झपटैं । गदाप्रहारण करिकरि
दपटैं । गदाप्रहारि द्वैकपगहटिहटि । दोऊगदा प्रहारैंदटिदटि ॥
दोऊचपल प्रबलअरु पायल । युद्धछबीले अतिछरकायल ॥
गदायुद्ध हलधरसों सीखे । गदायुद्ध बिदमें गुरुलीखे ॥ दोऊ

दोउनको बध ईछे । लरत गहे अतिसौंह तिरीछे ॥ दोऊ गदा गातमधि मारैं । दोऊ गदागदासों टारैं ॥ लगेदुहुनके गदागदा सों । कढ़ेउतंग फुलंगअदासों ॥ भरेरुधिरतन दोऊकोहे । पुष्पित किंशुक तरुसमसोहे ॥ दोहा ॥ यहिप्रकार लरिकैतहां कैअति शमित नरेश । दोऊयोधा दूरिकै खरेभये हरिभेश ॥ रहिमुहूर्त फिरि बढ़िभिरे दोऊसिंहसमान । गदायुद्धकी घातसों लागेलरन अमान ॥ गदायुद्धकेमार्गजे तिनमार्गनके डौर । लरतभयेदोऊ सुभटगहि अति गुरुतागौर ॥ गतप्रत्यागत आदिकरि मण्डल बिबिध विचित्र । घोरयुद्धतहँ करतभे दोऊसुभट अमित्र ॥ परिमोक्ष प्रहारण परिवारण अति चण्ड । अभिद्रवण आक्षेप अरु अवस्थान उद्दण्ड ॥ उपन्यस्त अपन्यस्त अरु संविग्रहदै आदि । गदायुद्ध अस्थानसों करिकरिलरे प्रमादि ॥ रोला ॥ भयेतहँ अति करत बिक्रम उभययोधाधीर । सहिपरस्पर गदागरुई गनत नेकुन पीर ॥ गरजि गरजि अखंड गतिगहि उभयबीर उदण्ड । करत चालन दोरदण्डन चपल अतिशयचण्ड ॥ सव्यकोउ अपसव्य फिरिजो सव्यसो अपसव्य । फिरत बाहत गदागरुईबीर भाभरि भव्य ॥ शब्दसों भरिदये अब्दहि स्तब्दभे नहिंनेक । टूटि टूटि अचूक बाहतगहे बधकीटेक ॥ वृत्र बासव सरिसदोऊ लरे नृप तेहिठौर । बज्रसम बर गदाबाहत गहेअनुपमडौर ॥ भीम भारीगदा माऱ्यो तौनसहि तौपुत्र । गदा माऱ्यो भीमके शिर राखि जयसोंसुत्र ॥ गदालागे शीशमों भो नेकुव्यथित न भीम । तजतभो तौतनय नृपपहँ गदापरम अधीम ॥ ताहिदीन्हों व्यर्थ करि तौतनय तजिअस्थान । गरजिमाऱ्यो भीमकेउर गदापरम अमान ॥ देखिऐसी चपलता तौतनयकी तेहिकाल । भयेपाण्डव व्यथित मनमें सहितसब पांचाल ॥ दोहा ॥ नृप तेहिक्षण अति क्रोधकरि गर्जि भीमभट चण्ड । तौसुतके बखिआनमधि माऱ्यो गदा उदण्ड ॥ गदालगे कै मोहबश धरिपृथ्वीपर जानु । रह्यो

अचलकै सुवनतौ जिमि गिरिकै गिरि शानु ॥ सोरठा ॥ यहिविधि भूपहिदेखि हँसतभये पांचाल सब । चेति सुयोधन तेखि भिरो भीमसों गरजिकै ॥ चौपाई ॥ गरजि गरजि फिरि दोऊभिरिकै । घोरयुद्ध कीन्हेतहँ थिरिकै ॥ चक्रसमान चपलकै गतिसों । दोऊ लरे भिरे रिस अतिसों ॥ दोऊ प्रबलप्रचण्ड उकाढ़े । हनिहनि हनत गदा अति गाढ़े ॥ बिबिध भांतिसों गात बचावैं । करैं कुघात घातजहँ पावैं ॥ भीमगदा तोसुतके उरमें । समय ताड़ि ताड़ितभो तुरमें ॥ लागेगदा गिरोनृप तैसे । पुष्पितसाल बायु बशजैसे॥लखि सबपाण्डवगण अति हरषे। मोदितसुमन सुमन तहँ बरषे ॥ तुरित चेतिभूपतिभो ठाढ़ो । सरतेउठै द्विरद जिमि बाढ़ो ॥ भिरोवृकोदरसों फिरि राजा। भो अति चिन्तित शत्रुस-माजा ॥ भूपतहां अति तुरिता धारचो । गदा भीमके उरमाधि मारचो ॥ गिरोभीम तबमोहित ह्वैकै । अति पीड़ितभे पाण्डव ज्वैकै ॥ चेतिभीम फिरि जयसों रतिकै । भिरो भीमसों बिक्रम अतिकै ॥ नृपतियुधिष्ठिर गुणिकै मनमें । केशवसों बूझे तेहि क्षनमें ॥ इनमें न्यून अधिकको कहिये । यहसुनि कृष्णकहे जो सहिये ॥ हैउपदेश तुल्ययुग जनको । बलमें अधिक भीम सब गनको ॥ गदायुद्धके दीहजतनमें । अधिक सुयोधनशत्रु हतन में ॥ दोहा ॥ भीमलरैजो न्यायतजि बधैयाहि तौभूप । नातरु भीमहि बधिहि यहभूप भयानकरूप ॥ प्रबलशत्रुसों मिलतजय करिमाया तजिन्याय। लह्योवृत्रसों शक्रजय मायाबल अधि-काय ॥ यहिबिधिके शठशत्रुसों यहिप्रकार जयपाय । भूपति कोऊ करतहै द्वन्द्वयुद्ध गहिन्याय ॥ सोरठा ॥ कह्योसभामें जौन ऊरूतोरण भूपकी । भीमकरैं अबतौन नहिंअधरम पालवबच-न ॥ चौपाई ॥ ऐसेबचन कृष्णके सुनिकै। बीरधनंजय मनमेंगुनि कै ॥ तकिरहि जुरैडीठि पणधरिकै । कह्योभीमसों संज्ञा करि कै॥ बामउरूमें गदाप्रहारो । बधिसुयोधनहि बिजयसुधारो ॥

संज्ञाजानि भीमपणलैकै । लरतभयो बधमेंमनदैकै ॥ गदायुद्ध में परम बिचक्षण । लरतसुयोधन करि निजरक्षण ॥ खेलत खरे खिलारीदोऊ । देखत खेलखरे सबकोऊ ॥ विविधभांतिकी घातैं करि करि । लरेअनेक भांतिसों चरिचरि ॥ गगनगदन गर्जनि की धुनिसों । पूरितहोत भयोदश गुनिसों ॥ लागै गदागातपर तड़तड़ । बोलै बड़ीकवचकी कड़कड़ ॥ करिअस्थानभेद चरि अड़दैं । मारैं गदा गदापर धड़दैं ॥ कबहूंलरैं चक्रसम फिरिकै । कबहूंगहैं वक्रगति भिरिकै ॥ कबहूं गरजि उछालिकै ऊरध । गदा प्रहार करैंतकि मूरध ॥ परमनिशाक हांकदै दैकै । हनैंबचावैंगतिलै लैकै ॥ दोऊदोउनको बधचाहत । अतुलपराक्रम नद अवगाहत ॥ कर्दम भरेमहिष युगजैसे । लरैंलसे तहँयुग भटतैसे ॥ सिंह सिंह वृष वृष गजगज सों । लरैं लरे तिमि युगभट सजसों ॥ दोहा ॥ यहि प्रकारलरि शमितकै छूटि घरिक फिरिजूटि । गर्जिगर्जि लागे लरन उभय सुभटजय ऊटि ॥ गदा चलायो भीमतेहि टरितो तनय बचाय । हन्यो भीमके गातमें गदासिंह सोजाय ॥ लगे गदा कछुमोह गहि कीन्हे गदाउकाढ़ । डीठिडीठिकै नीठि कै भीमगयो रहिठाढ़ ॥ तो सुत जान्योहै गहेगदा हननकीघात । ताते नहिं मारयोरह्यो तकत गदाको पात ॥ सोरठा ॥ क्षण में चेति अमान भीमगदा वाहतभयो । किये कठिन घमसान यहि प्रकार दोऊ सुभट ॥ रोला ॥ भीम विक्रमभीम तैसोभीम विक्रम भूप । करि समरडललरे वृत्रासुर अखण्डलरूप ॥ कूदिचाह्यो भूप मारन गदाताकेगात । भीमतौलों गदामारयो जांघमेंलहि घात ॥ बज्रसमसो गदालागतगई ऊरूटूटि । गिरोमहिपर भूप मूर्छितगयो धीरजछूटि ॥ भयोउल्कापात तेहिक्षण कह्योभीषम बात । भयेवर्षत पांशु शोणित करन अति उत्पात ॥ यक्षभूत पिशाच राक्षस किये नभमेंशोर । गृध्रवायस आदि पक्षी किये भीषमरोर ॥ देखि अशकुन महा शङ्कित होतभे तेहि काल ।

जानि कछु भवितव्य पाण्डव सकल अरु पांचाल ॥ सुमन ऋषिगंधर्व किन्नरगये निजंनिजधाम।कहतपरम बिचित्रभारत युद्धभो अभिराम ॥ भीम दुर्योधन नृपतिको युद्ध वर्णत भूरि। सिद्ध किन्नर आदि सुरगण गये आनँदपूरि ॥ केहरीको बधो मत्तमतंग सम तेहि ठौर । परोभूपति भीमतासों कहत भो यहि डौर ॥ सभामें धन जीति कीन्हे हास्य जो बहुबार । द्रौपदीको कियो अति दुर्दशा अंशुक हार ॥ आजु ताको लहो फल तुम भीमयहि बिधि भाखि । कहतभो इमिबाम पदतलशीश उरपर राखि ॥ सभामें सहबन्धु तोकहँ बधत भाख्योजौन । मारिक्रम सों आजुपूरण कियो हमसो तौन ॥ भूमिपतिके शीशपहँ तेहि चरणराखेदेखि । भीमअनुचित करत भाख्योधर्म भूपतितेखि ॥ बन्धुभूपति परममानी परो बिगत सहाय । महापातक करत राखत तासु शिरपरपाँय ॥ जियतलों है बैर बैर नमरेकरत सुजान । करन हमकहँ परी इनकी क्रिया सहित बिधान ॥ भाषि यहिबिधि धर्म भूपति तजत चषसोंबारि । नृप सुयोधनसोंकहत भेशोच अतिशय धारि । भूमि धनको लोभगहि परिमोहबश तुमतात । किये अनुचित कर्मताते लहे इमि महिपात ॥ गये तातेबधे सुतहित बंधु साथीसर्ब । एकतुम रहिपरे यहि बिधि खोइ बिक्रमगर्ब ॥ बड़ो दुख नहिं तुम्हें तुमतो भये तनतजि पार । हमें भोगनपरो अब यह शोक निरय अपार ॥ भूरिबिधवनके रुदनको सुनब मेरेभाल । लिखेहो कर्तार तिनको सुनब शाप कराल ॥ ऊबि ऊबि उसांसलैलै भाषि इमि क्षितिपाल । रुदतभे चिरकाल लों तहँगहे शोकबिशाल ॥ कहे नृपधृतराष्ट्र तेहिक्षण रहेतहँ बलराम । भीमकोलखि युद्धअधरम कह्योकछु बलधाम ॥ कहे संजय रामसों लखि क्रोधकरि अतिमान । भये धृष्ठतभीम कहँ कहिबचन सहित बिधान ॥ गदायुद्ध बिशालको है शास्त्रमें यहलेख । गदामारब उचितनाहिंअध अंगमधि सबि-

शेख ॥ भाषि इमिहल पाणिमधिलै चलेमारन ताहि । कृष्ण वारणकिये तबकहि बचन ऐसेचाहि ॥ मित्रआपन मित्रकोजो मित्र मिति अरिजौन । तिन्हैं मानव मित्रअरि निजवद्ध हित मतिभौन ॥ पितृ भगिनीपुत्र अप्रिय मित्रमम अवदात । मित्र इनको मित्रमम अरि शत्रुममहेतात ॥ सभामधिहो भीमकीन्हे बर प्रतिज्ञाएक । तोरिहौं मैं जांघतेरी गदामारि सटेक ॥ भीम पाल्यो बचननिज नहिंकियो अधरमनेक । बचन पालनकरब क्षत्रिहि परमधर्म बिबेक ॥ दियेहो मैत्रेय इनकहँ शापऐसोपूर्व। भीमऊरू तोरि हैं तौ गदाहनि अतिगूर्व ॥ भयो सो तुमतजो रिससुनि क्रोधताजि बलराम । बिदा ह्वै चढ़ि सुरथपरगे द्वारका मतिधाम ॥ कृष्ण चिन्तित देखि धर्महिं कहे करि अनुमान । भूप चिन्तितहोत कतलहि हर्षदिन मतिमान ॥ धर्मबोले कृष्ण हम गुणिदयेशोच बिहाय । भीमगुणि कृतकर्म ताकोधरचोशिर परपाँय ॥ भीम भूपहि सोमलखि ढिगजाय युगकरजोरि । कह्यो शत्रुहि बध्यो हम जो दीहऊरूतोरि ॥ भूप सो तौ भाग्यको अरु धर्मको अधिकार । लहि अकण्टकभूमिको अबकरोभोगउदार ॥ नृप युधिष्ठिर कह्योकेशव जासुसंग सहाय । अवशिपावै बिजय सो इतकौन अचरजभाय ॥ दोहा ॥ यहसुनिकै फिरि कहतभो शोकाकुल क्षितिपाल । नृपबध लखिका करतभे सबशृंजय पांचाल ॥ यहसुनिकैसंजयकह्यो सुनोभूप तेहिकाल । बिहँसिबि-हँसिबलकतभयेसबशृंजयपांचाल ॥ कितनेटङ्कारतधनुषबोलत गर्बित बैन । किते बजावत शंखअरु किते भेरिलहिचैन ॥ किते प्रशंसत भीमकहँ किते धर्मको भाग । किते प्रशंसत केशवहि गहे परम अनुराग ॥ सोरठा ॥ तेहिक्षण कृष्ण बिचारि नृपति युधिष्ठिरसों कहे । निजकृतको फलधारि बधोगयो यह मूढ़शठ ॥ चौपाई ॥ गुरु गुरुजनको कह्यो नमान्यो । भरो लोभ निजस्वारथ जान्यो ॥ बीस बिस्वे अधरम उरमान्यो । दुष्टनके मतको पण

ठान्यो ॥ यह तबहींको बधो बिचारो । नृप मति गुणो आजको मारो ॥ हठ गहि कर्मकियो शठजैसो । आजु सबन्धुलह्यो फल तैसो ॥ शोचन योग न यह रणचारी । इतसों चलो धर्मपथ-धारी ॥ कृष्णचन्द्रकी सुनि यहबानी । सहि न सको तो सुत अ-भिमानी ॥ धरि धीरज उठि बैठ यतनसों । कहत भयो यदुबंश रतनसों ॥ तो मातुल पितु सेवक मेरो । गोप गेह वर्द्धित तन तेरो॥तोहिं न लाज लगतइमि बोलत।मोहिं मरो गुणिनिज मति खोलत ॥ अधरम करिबो सूचित करिकै। मोहिं बधायो तू अघ भरिकै ॥ खण्ड शिखण्डिहि आगेधरिकै। भीष्महि तू बधवायो छलिकै ॥ गज बधाय द्विजसुत बध कहिकै । द्रोणहिं बधवायो छलगहिकै ॥ कर्ण अमोघ शक्ति जो पाये । सो राक्षस परब्यर्थ कराये ॥ ब्यर्थ निरायुध अभुज अदायो । भूरिश्रवहि तुमहिं बधवायो ॥ बाणरूप पन्नगसुत धायो । तेहि कटाय अर्जुनहिं बचायो॥महिते चक्र निकासत गहिकै।कर्णहिं तू बधवायो कहि-कै ॥ दोहा ॥ इतने अधरम तुमकिये उन्हैंकराये सीखि । अधरम थापत हमहिंपर करि अधर्म्म जयईखि॥भीष्मद्रोण आदिक जिते रणमें मरे अभर्म । कारणताको कठिन है तो कृत कपट कुकर्म ॥ मांगेदये न पाण्डवन पिता अंशकी भूमि । हम बुझाय बिधिवत तुम्हैं गये नाश गुणि धूमि ॥ चौपाई ॥ तुमहीं भीमहि जहर पि-याये । राखि लाहगृह आगि लगाये ॥ किये दुर्दशा द्रुपदसुता की । एक बसन रजुधर्म युताकी ॥ करिअधर्म रचि छलकेपाँसे । हरि सरबस फिरि बिपिन निकासे ॥ अर्जुन सुतहि अकेलो लहिकै । बधे निलज बहुसुभट उमहिकै ॥ ताते बधे गये तुम ऐसे । भो जगको क्षयइते अनैसे ॥ ऐसे बचन कृष्णके सुनिकै । बोलो नृपति सुयोधन गुनिकै ॥ प्रबल अरिन करिकै बनबासी । भोग्यों सर्ब भूमि सुखरासी ॥ इच्छित महिधन मित्रन दीन्हों । जेहिक्षण जौन रुचो सो कीन्हों ॥ जिमि सुरगण मधि सुरपति

आजत। तिमिहम हे नृपगणमांधि राजत॥ शक्रलहत सुखजौन अरोगे। हमसो सकल भूमि परभोगे॥ इविधि भोगि रणमें तन त्यागत। नहिं दुख शोच लेशको पागत॥ नहिंविधिसके पाण्डवन रनमें। इतो शोच पूरित ममममनमें॥ सुनि भूपतिकी ऐसी बानी। बर्षेसुमन सुमन सुखदानी॥ लखि यहि विधि पूजन तौ सुतके। विस्मित भये लोग सब उतके॥ भीषमकर्ण द्रोण धनु शोधन। भूरिश्रवा अरु नृपति सुयोधन॥ इनको बध अधरमसों जानी। रहे शोचि उतके भटज्ञानी॥ दोहा॥ सो गुणिकै केशवकहे जो यहि बिधिके कर्म। करि उनको बध होतनाहिं तौ न मिलतजय पर्म॥ इमिकहि मोदितकरि भटन कृष्ण कृपाके ऐन। शयनहेत डेरन चलन कहे पाण्डवीसैन॥ धृष्टद्युम्न युग बन्धु अरु द्रौपदेय सब भाय। निज निज डेरन जातभे जेहत शेष सचाय॥ पांचौ पाण्डव सात्यकी सहित आपु कंसारि। दुर्योधनके बासगृह आवतभये विचारि॥ जयकरी॥ दुर्योधन के डेरन आय। पाण्डव सहित कृष्ण गहिचाय॥ कहे पार्थहों धनुष तुणीर। लै पहिले उतरौ तुमबीर॥ सुनिलै धनु तुणीर अभिराम। उतरे प्रथम पार्थ मतिधाम॥ फेरि सुरथते घोरे छोरि। उतरे कृष्ण कुशल बिधि जोरि॥ भे ध्वजस्थ कपिअन्तर ध्यान। गयो भस्मह्वै सुरथ महान॥ तब कर जोरि पार्थ मतिभौन। बूझत भे हो कारण जौन॥ केशव कहे सुनो सो शास्त्र। द्रोण कर्ण के बर ब्रह्मास्त्र॥ तिनसों भस्मितहो रथ एह। मम प्रभाव सों बचो सनेह॥ अब रणकर्म पूर्ण भो जानि॥ कियो बिसर्जन हम अनुमानि॥ ताते भो अब भस्मा शेष। पारथ याको इहै बिशेष॥ इमि कहि केशव करत बिनोद। मिले युधिष्ठिरसों गहि मोद॥ कहे भाग्य बश दैवाधीन। लहैं विजय बधि आरि अति पीन॥ बन्धुन सहित कुशल तुम भूप। पाये बिजय भाग्य अनुरूप॥ यह सुनि बोले धर्म अगर्ब। प्रभुतव कृपा बचे हम सर्ब॥

भीषम द्रोण कर्णकहं मारि। बिजय दयो तौ कृपा मुरारि॥ यह सुनि कह्यो रुक्मिणी रौन। अब करतव्य करो सब तौन॥ अब यहिनिशि मधिरहौ सयत्न। रक्षत रहैं पार्थ भट रत्न॥ रहि कछु क्षण सब पाण्डव बीर। जात भये फिरि सरिता तीर॥ जाय तहां नृपधर्म सनेम। कृष्णचन्द्रसों कहे सप्रेम॥ सादर गांधारी के पास। जायआप करिये आश्वास॥ सुनिदारुकिसों रथस-जवाय। कृष्णचन्द्रतहँ गयेसचाय॥ यहसुनि जनमेजय क्षिति-पाल। बूझेकहो बिप्र मतिआल॥ कृष्णहि गान्धारीके तीर। भेज्योधर्मसुमातिगंभीर॥ यामेंकियेभेद कछुभौन। कहौप्रगटकरि कारणतौन॥ यहसुनिकह्यो सुमुनि मतिमान। सुनोहेतुसो भूप सुजान॥ गुण्योधर्म भूपति मनमाह। करिअधर्म गोबाधि नरना-ह॥ गान्धारीसुनि गहिसुत शोक। क्रोध अग्नि भरि मानस ओक॥ दुसहशापदै अनरथजोहि। भस्मित करिहि बन्धु सह मोहि॥ यहबिचारकरि भूपसचेत। प्रथमहिं क्रोधशमनकेहेत॥ कृष्णचन्द्रकहँ सबिधि प्रशंसि। भेजेतहां मंत्र अवतंसि॥ रथ चढ़ि केशव गहेसनेह। गेधृतराष्ट्र भूपके गेह॥ रथते उतरि कृष्ण शुभभेश। गये जहांधृतराष्ट्र नरेश॥ दोहा॥ लखिशोका कुल दम्पतिहि करि अभिवाद सुजान। गहिसुपाणि धृतराष्ट्र को रोदनकिये महान॥ करि मुहूर्तलों रुदन फिरि बारि माँगि मुखधोय। कहनलगे धृतराष्ट्रसों बचनशान्तिरससोय॥ भूपति वृद्धसुजान तुमजानत शास्त्रअनूप। समय पायके होति मति भावीके अनुरूप॥ कियेपाण्डवनको जितो तौसुत नृपअपकार। सोसब तुमजानत गुणो कस न होइसंहार॥ कियद्रौपदीकी अ-पति दियेबिपिनको बास। तहांलहे वे जौन दुखसोगुणि उपजत त्रास॥ युद्धयोग लखिआय हमकह्यो बहुत समुझाय। पांच ग्राममांगे तऊदये न तुमक्षितिराय॥ भीष्म द्रोण कृप बिदुर अरु सोमदत्त बाह्लीक। कितो कह्यो मान्यो न तुमगहि कुमंत्रकी

लोक ॥ भूपति दोष न आपको काललेत हरिज्ञान । होनीके अनुसार मतिउपजाति और न आन ॥ तातेदोष न पाण्डवनको कछुकरोबिचार । प्रथमभई मतिआपकी होनीकेअनुसार ॥ न-तरु पाण्डुके सुवनको हरिसर्वस यहिरीति । मांगेदये न भूपतुम पांचग्राम करिप्रीति ॥ सुवनपाण्डुसे बन्धुके भरेभूरि गुणसर्व । ताहिनिकासे भूपतुम हरिसर्वस करिसर्व ॥ करि अतिदुख फिरि समयलहि लैसपक्ष सहसैन । कुलरक्षणहित ग्रामकछु मांगे वै मतिऐन ॥ सोऊतुम दीन्हेनहीं गहिभावीको भाव । तातेउनको दोष कछु मतिमानो तजिचाव ॥ गुणिभावीकहँ प्रबलअब धीर धरौ क्षितिपाल । मृत्युलोक यहप्रगटहै सबकहँ कर्षत काल ॥ इमिकहिकै गान्धारजासों बोलेयदुराय । अम्बधरौ तुमधीरनहिं बिधि लिपि मेटीजाय ॥ तुमहूं नृप दुर्योधनहिं कितोकही समु-झाय । एक न मान्योकाल बश बिधिसों कहा बसाय ॥ ताते धीरजधारि अब सहोशोकको दाप । पांडुसुतनके नाशको मति आनो उरपाप ॥ तुमचाहौतौ लोकसब करौभस्म सबिधान । पर अबकुल रक्षणकरब उचितकरो अनुमान ॥ यहिप्रकार कहि शाप कीही मतिताहि दुराय । द्रोणतनयको शङ्कगहि बिदाभये यदुरा-य ॥ बन्दि दम्पतिहि ब्यासकेचरण परशि तेहिठौर । रथ चढ़ि आये कृष्णजहँ हैं पांडव भटमौर ॥ रोला ॥ ऊबिऊबि उसांस लै लै गहेशोकमहान । कहेंनृप धृतराष्ट्र संजयकहो सहितबिधान ॥ पुत्रममभेहत पराक्रमपरो जबगतचैन । भीमराख्यो चरण शिर पर कहतगर्बित बैन ॥ परममानी पुत्रमम तबभयो कैसोतन्त्र । एककोऊ आपनोहित परोदेखि न यत्र ॥ कहेसंजयगये हमतहँ गयोजब अरिसैन । कियेहोनृप जहां क्षत्रिहि स्वर्गदायकसैन ॥ मोहिंलखि क्षितिपाल धीरज धारिकै उठिबैठि । बीररससों भरो केश सुधार मूछनऐठि ॥ कह्योसंजय सुनो होनिहि सकत नाहिं कोउ टारि। द्रोण भीषम कर्णजा सँगलहे सोइमिहारि॥ द्रोणसुतकृप

कर्णसुत भगदत्त शकुनि नरेश। आदि एकादश अक्षौहिणी जासु संग शुभेश ॥ परेसो ह्वै धूरिमाधि इमिबिना संग सहाय। खबरि यहसुनि जनकजननी कहाकरिहैं हाय ॥ पुत्रसों अरु पौत्रजाके मरे अगणिततौन। धरिहि कैसेधीर ताहिबुझाइ सकिहैकौन ॥ सुतनको सुत सुतनकी सबतियनको अति मान। सहोकैसेजाय गो हा रुदनको आहवान ॥ भीममारो गदा मोकहँ धर्मकोकरि त्याग। सदाअधरमाकिये पाण्डव अनय उनके भाग ॥ नृपहि सविधि बुझाइयो तुमकाल गति दरशाय। इन्द्रसम करिभोग रणमें मरबमंगलचाय ॥ भूपइतनेमें नृपतिकी खबरि सुनि त्रय बीर। द्रोणसुत कृपभूप कृतबर्मा महा रणधीर ॥ चढ़ि रथनपै हांकि जबसों शीघ्रआये तत्र। भरेशोणित धूरि कर्दम परोहो नृपयत्र ॥ गृध्रजम्बुक योगिनी जुरिभूत घेरे ताहि। यथायाचक जूहघेरत सधनदातहि चाहि ॥ देखिभूपहि उतरिरथसों करत रोदन भूरि। जायबैठे निकट नृपके महादुखसों पूरि ॥ द्रोणसुत परि मोहबश इमि लगोकरनप्रलाप। इन्द्रसम महिपाल रज माधिपरो परितताप ॥ द्रोण भीषम करण दुःशासन शकुनिभट और। गयेकिततुम बिजन यहिबिधि परेहो यहिठौर ॥ व्यजन चामर छत्रऔपर्य्यंक दासीदास। गयेकित इतमामकरता लोग सबताजिआस ॥ भाषियहिबिधि करतरोदन द्रोणसुतकहँदेखि। तजतचषसे बारिभूपति कहतभो अवरेखि ॥ जौनप्रगटतआय इतसों नशतभोगि स्वकर्म। भयोहमकहँ प्राप्तसो अबजौन इत को धर्म ॥ शक्रसम करिभोगरणमें मरेंकोनहिंखेद। लहेपाण्डव बिजय अति दुखहोत यह गुणिभेद ॥ हन्योभीम अधर्मकरिकै गदामम अधअंग। नहींजीत्यो मोहिंकरिकै न्यायाबिक्रमसंग ॥ आपनो करिलये तुमसों जनिनकहँ हमपूर्ब। तऊ यहिबिधिपरे भावी होति है अतिगूर्ब ॥ भाषि यहिबिधि नृपसुयोधन तजत चषतेनीर। रहो चुपह्वैभय ब्यापति दुसह दारुणपीर ॥ द्रोणसुत

सुनि बचन नृपके महारिस बिस्तारि । कहे वै सबमूढ़ जबमम पितहि डारेमारि ॥ मोहिंभो नहिं इतो दुख तब जितो तो दुख देखि । सुनोताते कहतहों अब इतोपण करि तेखि ॥ बनिहि जिमि तेहिभांति यहिनिशि बधबसब पांचाल । जान कहँ तहँ मोहिं आज्ञादेहु हे क्षितिपाल ॥ दोहा ॥ भूपति सुनि ऐसे बचन अति आनँदउरआनि । कृपाचार्यसों कहतभे राजनीति अनु-मानि ॥ हे आचारयपूर्ण जल सादर कलश मँगाय । द्रोणसु-तहि सेनाधिपतिकरौ सबिधि गहिचाय ॥ यहसुनिकलशमँगाइ कृप सहित बिधान बिबेक । द्रोण सुतहि सैनेशको करत भये अभिषेक ॥ द्रोणतनय सैनेशको लहि अभिषेक अनूप । गयो भूप सों कैबिदा भयो भयानकरूप ॥ सोरठा ॥ रामराम सियराम जपत सुयोधन तहँरहो । चाहिबिजय अभिराम द्विजसुतको आगम लखत ॥

स्वस्तिश्रीकाशिराजउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिनामणिदेवेनकविना विरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेगदापर्बणितृतीयोऽध्यायः ३ ॥

गदापर्बसमाप्तः ॥

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी
माह फरवरी सन १८९१ ई०

महाभारत दर्पण ॥

सौप्तिकपर्वदर्पणः ॥

दोहा ॥ नमस्कार नारायणहिं करिनरोत्तमहिं नौमि । बन्दि गिरा व्यासहि रचत भारतभाषासौमि ॥ भूकृत भूभृतभूभरण भूस्वामी भगवान । तेहि भरतहि भजि भणतयह भाषा भार्त्त महान ॥ जेहिरघुवर प्रभुकेचरित बहुशतकोटि अमन्द । ताहि सुमिरिभारत रचत भाषा विरचिसुछन्द ॥ पारथके स्वारथ भये सारथि परमअनूप । तेसारथ रचिदहिं यह भारतभाषा रूप ॥ सोरठा ॥ बन्दौं कपिबरबीर रामपरम प्रियपारषद । मंगलमूरति धीर भारतस्वस्थ ध्वजस्थवर ॥ सुमिरि उच्छलनिअच्छ उदधि उलंघनसमयकी । भारतससुद प्रतच्छ भाषाकरिचाहततरचों ॥ दोहा ॥ सातुक सौप्तिक सपनकी दशामध्यजोप्रात । भाषा सौप्तिक पर्व यह रचतताहि गुणिआत ॥ संजयउवाच ॥ जयकरी ॥ सीतारामहिं सुमिरि नरेश । सुनो तदनु जो भो तेहिदेश ॥ जबह्वै नृपसों बिदासगर्व । चलोद्रोण सुत सुभट अखर्व ॥ तबकृपअरु कृत-बर्मा भूप । चले तासुसँग सुभट अनूप ॥ तेत्रयरथी बीर बल धाम । अरिदलके ढिगजाय सकाम ॥ तहँचैतन्यशत्रुदलजानि । मुरुकि बिपिन माधिगे अनुमानि ॥ तहां निकटबट वृक्षनिरेखि । बैठेउतरि मंत्र अवरेखि ॥ यह सुनि शोकाकुल नृपवृद्ध । कह

तभयोकरि इयासप्रबन्द्ध ॥ बातजात करियुद्ध अधर्म । बधतभयो मम सुवन अभर्म ॥ संजय ममहिय महा कठोर । सहतइतो दुख दुसह अथोर ॥ शतसुत तिनके सुवन अनेक । कोबधसुनिदहि फटत न नेक ॥ दम्पति वृद्धसुतनसों हीन । किमिहमबसब शत्रु आधीन ॥ कह्योबिदुरजो नीतिसुनाय । अबसोपरो प्रत्यक्ष लखाय ॥ क्षात्रबंशको भयोबिनाश । सबसुतमरे न पूरीआश ॥ अबकहुसंजय बटतरजाय । कियेकहां त्रयभट दृढ़घाय ॥ यह सुनिकै संजयमतिमान । कह्योजाय तहँबीर अमान ॥ गुणितो पुत्रनकोबध भूप । अरुक्षत्रिनको नाशकुरूप ॥ कहि कहिकरुणा शोचबढ़ाय । क्षतसों पीड़ित परे अचाय ॥ भे निद्राबश कृप कृतबर्म । गह्यो न निद्रा द्विजभट पर्म ॥ अमरषक्रोध भरोद्विज बीर । निरखनलागो बिपिनगँभीर ॥ बिपिनलखत निरख्यो द्विजराय । वृक्षनबसे कागसमुदाय ॥ सब निद्राबशह्वै कलपाय । निर्भयसोवत शोचबिहाय ॥ तहांउलूक बिहँग तेहिकाल । आयो बायसकुलको काल ॥ सोक्रमसों प्रतिनीडन जाय । भोकतरत कागनको काय ॥ कितनेकेकाट्यो पगपक्ष । कितनेके उरफार्‍यो दक्ष ॥ भोकाटत अगणित को शीश । सो कौशिक कागा दह दीश ॥ यहिबिधिकरि कागनको नास । कौशिक पक्षीगो निज बास ॥ इमि निजशत्रुन मारतताहि । द्रोणतनय तेहि निशिमें चाहि ॥ गहतभयो मनमेंसो भाव । मनुपायो उपदेश बनाव ॥ इमिभो मनमें करतबिचार । पाण्डव प्रबलससैन उदार ॥ नहिं सन्मुख बधिबेके योग । ताते यहबिधि अमिट प्रयोग ॥ अमरष बशनृपके ढिगजौन । हम पणकरि कीन्हों इतगौन ॥ धर्मधरेते मरण न आन । यहबिधि पणसाधिबेको ठान ॥ दोहा ॥ द्रोण न बधि यहद्रोण अरि द्रोणबधनको बेश । दूरिकर्णकहँ द्रोण सम कियोआइ उपदेश ॥ द्रोणबधन द्रोणारिको द्रोणदये दुखतौन । दूरिकरन अरिद्रोणमनु कहे द्रोण अरिद्रौन ॥ न्यायसहित लरि

शत्रुसों हारेंसबैंस जात । करिअधर्म जीतेरहत सर्बसजीति क-
हात ॥ समितकार्य्य तत्परभजत निजन निरायुधपाय । सोवत
निशिमें समयलहि शत्रुहि मारबन्याय ॥ इमि गुणि द्विजसोवत
बधब ठीकमंत्र ठहराय । तिनयुगभटन जगायभो कहतसविधि
समुझाय ॥ रोला ॥ भीम दुर्योधन नृपतिके धरोशिरपर लात ।
समुझिसो ममहिये अनुक्षण क्रोधबाढ़त जात ॥ भूपकी लखि
दशा शत्रुन बधनको पणठानि । सहिततुमयुग भटनआये इहां
जय अनुमानि ॥ एकदश अक्षौहिणी नृपसैन अति उद्दण्ड ।
भीष्म द्रोणादिकन सहभे बधत पांडव चण्ड ॥ सदल तिनके
बधनको हमगहे ईहातात । कहोताको मंत्रजेहिबिधि मिलैजय
अवदात ॥ द्रोणसुतके बचनसुनि कृपकहे सुनहु सप्रेम । जिते
जन्मतआय ते सबमरतहैंयहनेम ॥ दैवके अरुकर्मके बलसधत
सिगरे काज । एकसो नाहिं पुरुषसाधि न सकतहै निजराज ॥
प्रवृत निवृत प्रसिद्धसब थल ब्याप्त सुनिये चाहि । शिखरपर
जमिवृक्ष बाढ़त दैवसींचत ताहि ॥ बिनासींचे होतकेते सींचतौ
कुंभिलात । दैवकर्मसहाय बलकी होतअभिगत बात ॥ ध्याय
दैवहि शोधि कर्महि धर्मपथ गहिजौन । गुरुनमंत्रित कार्य्यरंभन
सिद्ध सबबिधि तौन ॥ लोभबशपरि नृपसुयोधन कियोतासुबि-
रुद्ध । लियोतिनकोमंत्र जिनकीबुद्धि निपटअशुद्ध ॥ कहोभीषम
बिदुरको नहिंगुणो सुखदातार । लहैऐसीदशा किमि नहिंजासु
यह ब्यापार ॥ मंत्र बूझतहो हमहिंतो कहत इमि अनुमानि ।
चलोनृप धृतराष्ट्रकेढिग वचनश्रेयद जानि ॥ भूपगान्धारी बिदुर
सों बूझि बिधिवतमंत्र । कहैंवे जो भांति जेहिसो करो आय
स्वतंत्र ॥ कृपाचारय के बचनसुनि द्रोणसुत अनखाय । कह्यो
निजमति श्रेष्ठ सबकहँ परतजानि सचाय ॥ कारणान्तर योगमें
मति बुद्धि पलटतितात । हैबिचित्र मनुष्यको चितठीक नाहिंठ-
हरात ॥ भिषज भेषजदेत जीवनहेत समुझि निदान । काल

वश वहमरत तौसवकहत तेहि अज्ञान॥पुरुषसिंह प्रवीणभूपति
कियो राजसधर्म। गयोकाज नशाय अबसबकहत कुत्सितकर्म॥
विप्रहम निजधर्म तजिकै गह्योक्षत्रीधर्म। कर्मक्षत्रिनको करब
अब उचित तजिकैभर्म॥ झूठकहि तजिधर्म उन ममपितहि
डारयोमारि। तथा अब हमबधब उनकहँ नीतिधर्म बिसारि॥
पायजय बजवाय दुन्दुभि सुचितपांडवसैन। सैनकरि परि नींद
वश अबपरे पूरितचैन॥ जायअब हमशिविर सबकेकाटि सब
को शीश। धृष्टद्युम्नादिकन बधि जयलेब बिस्वेबीश॥ धर्मआ-
दिक पांडवनबधि काललोक पठाय। होबउत्रण भूपसों यहप-
रम धर्मसन्याय॥ द्रोणसुतके बचनसुनिकै कह्यो इमि आचा-
र्य्य। करबऐसे कर्मकुत्सित उचिततुमहिं न आर्य्य॥ लेहुकरि
बिश्राम यहिनिशिभोर धनुटंकारि। हमहिं युगभट सहित लरि
कै लेहुजयप्रण धारि॥ बाणबर्षत तोहिंलखिकै सुभटऐसोकौन।
जीतिको उत्साहगहि जोकरैसन्मुखगौन॥ दुसहतो कृतबाणझ-
रि नहिं शक्रसहिबे योग। और मानवसहैकातो दिव्यअस्त्र प्रयो-
ग॥ तथा हम तिमि भूपकृतबर्मा दुसह रणधीर। बधब तिमि
अरिसैन जिमि बनदहत अग्नि समीर॥ सामित हम अरुभूप
तुमहूंलेहु करिबिश्राम। बधबसबपाञ्चाल सेनाभोर करिसंग्राम॥
सुनत मातुलिके बचनये द्रोणसुत भटचण्ड। क्रोध भरि करि
अरुण ईक्षण कह्योबचन उदण्ड॥ कहां निद्रा आतुरहि अरु
भरो अमरष ताहि। कहां निद्राताहिघेरे महा चिन्ता जाहि॥
सकलये ममहिये पूरित कहां निद्रामोहिं। पिताके बधतेअधिक
दुखकौन बूझत तोहिं॥ धृष्टद्युम्नहिं बधेबिनु मम हिये परचत
तात। बधेबिनु पाण्डवन नहिं ममशोक करुणाजात॥ दोहा॥
ताते यहि सौप्तिक रजनि माधिबाधि अरि समुदाय। दुख दुराइ
सब करब हम सुख बिश्राम सचाय॥ अश्वत्थामा के बचन
सुनिकृप सुमति सुधाम। कह्यो न सोहत है तुम्हैं ऐसो कुत्सित

काम ॥ बिनु जानेहू शस्त्रकरि शास्त्रज्ञनको संग। जानत अधर-मधर्मनर सुकरम कुकरमअंग ॥ जानन हित सत असत मग भजत पण्डितन लोग। तुम पण्डितकै आपुकत गहत अधर्म प्रयोग ॥ पापात्मा सब जन्मके करत सपातक कर्म। जे सबदि-नके पुण्यकृत तेनिति गहत सुधर्म ॥ लक्ष्मी आवे जायकै रहै न रहैसप्रेम। धर्मशील नरनहिंतजत धर्म सुपथको नेम ॥ तुम सबबिधि शास्त्रज्ञ पटु धर्म कर्म करतार। मतिहठ गहिकरिबो गुणो यह कुत्सित उपचार ॥ त्यक्तशस्त्रबिनु कवचरथ भागत सोवत जोन। आरत कहि आवत शरण तिन्हैं बधब अघभौ-न ॥ लखिबहुदिन अति स्रमित ह्वै सोवत आयुध त्यागि। ति-न्हैं बधब सो है चलब रौरवके मगलागि ॥ तातेऐसी कुमतित-जिकरि निशिमें बिश्राम। भोरप्रचारि प्रचारिकै बधब शत्रुबल-धाम ॥ सुनि अश्वत्थामा कह्यो सत्यकहे तुमतात। पैजो करिबो अवशितहँ नहिं अधरम लखिजात॥ भीष्मद्रोण भूरिश्रवा कर्ण सुयोधनभूप। तिन्हैंबध्यो तिनबिजय हित कौनधर्म अनुरूप॥ नाहिं मोसों सहिजात अब पितु बधको दुखघोर। इमिकहिकै चढ़िसुरथ पर चलो सैनकीओर॥ कृप कृतबर्मा चलतभे तासु अनुग ह्वै भूप। सैनद्वारपर जातभे तेत्रयसुभटअनूप॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ सेन द्वारपर जायते कियेकहा कहु तौन। यह सुनिकै संजय कह्यो सुनो तौन मतिभौन॥ तहां जायकैद्वारपर देख्यो पुरुषउदंड। सूर्य्यसारिस बरचस भरो बाहतपरम प्रचंड॥ व्याघ्र खालकोबसन अरु भूषण व्यालकराल। जाकेसहसन मुखचषन कढ़तज्वालके जाल ॥ सोरठा ॥ प्रलयकालके सूर समसोहत सो पुरुषतहँ।कढ़ततेजकोपूर चषमुखनासा श्रवणमग॥ तिनतेजन ह्वैभूप प्रगटत अगणित बिष्णुप्रभु। चारु चतुर्भुज रूपचक्र आदि आयुधगहे ॥ चौपाई ॥ द्रोण तनय सो लखितेहि क्षनमें। गुणि प्रभावह्वै चिन्तित मनमें॥ धीर धुरीण शोचपरिहरिकै।

दिव्य अस्त्र बर्षौं पणधरिकै ॥ नृपसो पुरुष अस्त्र सब तैसे । ग्रस्यो सरित जल सागरजैसे ॥ अस्त्रन ब्यर्थ देखि भटनायक । तज्योअमोघ शक्ति बध लायक ॥ पुरुषप्रभाव शक्तिसोंभारी । होतभईऊरध पथचारी ॥ बिप्रकोपि तबखड्ग चलायो । पुरुष ब्यर्थकरि ताहि गिरायो ॥ तब द्विजतज्यो गदा अतिघोरा । ग्रस्यो ताहिसो पुरुषकठोरा ॥ मारिअस्त्र सबगुणिबधताको । करि ब्यवसाय बिप्रसुत थाको ॥ देखि जनार्दन मय अधपूरध । बिप्र बिचारि कियोअधमूरध ॥ तब कृपबचन बिचारि हियेमें । गुण्यो बिपति हठिकर्म कियेमें ॥ शास्त्ररीति युतवृद्ध सिखापन । नाहिंहमगुण्यो पालिहठ आपन ॥ सपना सौतुक सौतुकसपना । होतदैवबश ब्यर्थ कल्पना ॥ चाहतदैव होतसो सबहूं । नरचाहतसो होत न कबहूं ॥ जौनकरत नर कर पग मुखसों । सो सबहोत दैवके रुखसों ॥ यहबिचारि कारज मग लागो । रथ तजि शिवहि प्रशंसन लागो ॥ रथते उतरि बिप्रमुद लीन्हें । सबिधि शंभुकी अस्तुति कीन्हें ॥ उग्रहि आदिनाम सब कहिकै । महिमा कह्यो भक्ति अतिगहिकै ॥ अस्तुति करत तत्त्वके भेदी । प्रगटिभई काञ्चनकी बेदी ॥ तापहँचित्रभानु प्रभुराजे । नभदिशि बिदिशि तेजसों छाजे ॥ अगणित शिर चषकर पग सोहैं । सेवलखरे दिब्यगण मोहैं ॥ गणसमूहसोहैं बहुबिधिके । अति अभिराम धामरुचि निधिके ॥ बहुप्रकारके आनन जिनके । वेषबनाव बिबिध बिधि तिनके ॥ बिबिध भांतिके आयुध धारे । निरतत हँसत यथामतवारे ॥ कितने आयुधकिये उकाढ़े । गरजतफिरत बिन्ध्यसम बाढ़े ॥ कितनेखरे धनुषटंकारत । अश्वत्थामहिं कितप्रचारत ॥ कितने शिवहि प्रशंसत थिरिथिरि । कितने हरहरटेरत फिरिफिरि ॥ यहअद्भुतलखि द्विजसुतयोधा । धरिधीरज करिमन अवरोधा ॥ पाणिजोरि इमिशिवसोंभाष्यो । भयोब्यर्थ हमजो अभिलाष्यो ॥ प्रभुहम तन होमत यहिठाईं ।

मम आत्मावलि लेहुगोसाईं ॥ इमि कहि अग्नि ज्वलित तहँ करिकै। प्रविशतभो द्विज धीरज धरिकै ॥ ज्वलित अग्निमधि द्विजहि निहारी। शम्भुकृपा करि कहे विचारी॥ हम प्रसन्नतो पहँ भट नायक। अबनिज इच्छित करु दृढ़ धायक॥ दोहा ॥ इमिकहि शिव द्विज बरहि दे खड्गदिव्य परभाव। गुणिभारी सब गणन सह गुप्तभये गहिचाव ॥ गहिसो असि अतिमुदित ह्वै अश्वत्थामावीर। सैनद्वार मधि प्रविशिगो शिविरनप्रतिरण-धीर ॥ सुनिबूझे धृतराष्ट्र तहँ कियोकहा द्विजजाय। कृपकृत-बर्मा काकियो सोसब कहोबुझाय ॥ संजयउवाच ॥ जब शिविरन मधि जातभो बिप्र भयानकरूप। खरेरहे तबद्वारपर कृप कृत-बर्मा भूप ॥ सोरठा ॥ कृप कृतबर्महि राखिद्वार देशमें बिप्रभट। बध करिबो अभिलाखि धृष्टद्युम्नके शिविरगो ॥ रोला ॥ तहां शुचि पर्यंक सोवत धृष्टद्युम्नहिंदेखि। लातमारिजगाय दीन्हों नीति मग अवरेखि ॥ जागि बिप्रहिं चीन्हिलागो उठन पर सैनेश। झपटि तौलगि भयोपटकत बिप्र गहिकै केश॥ कण्ठ उरपर लात धरिकै दाबि बैठोताहि। भरो आलस तौननाहिं करिसको बिक्रम चाहि॥ द्रोणसों इमि कह्यो मोकहँ अस्त्र सों बधुबिप्र। पाय तो परसंगजाते जाँउसुरपुर क्षिप्र ॥ बिप्रयह सुनि कह्यो रेगुरुबधिकसों गतितोहिं। भाषिइमिभो बधतमरम-हि दाबिपदसों कोहि ॥ रहीरक्षक तासुयुवती तहांते सबजागि। देखि बिप्रहि भूतगुणि परिरही भयसों पागि ॥ द्रोणसुत तब शिविरते कढ़िसुरथ परचढ़ि भूप। परमगर्बित भयो ठाढ़ो महा भीषम रूप॥ युवति कीन्होंशोरतब जगिआइ तहँ सबलोग। धृष्टद्युम्नहिं मरोलखिकै भयेबूझतयोग ॥ कह्यो युवतिन दनुज कैधौं मनुजबधिकै ताहि। खरो रथचढ़ि सुभट तबबाढ़ि घेरि लीन्हें चाहि ॥ द्रोणसुत तिनभटन परकरि रुद्रअस्त्र प्रहार। तूल राशि समान सबको करत भो संहार ॥ शीघ्र उतमौजा

नृपति के शिविर मधि चलिजाय। धृष्टद्युम्नहिं बध्यो जिमि तिमि बध्यो अमरष छाय॥ युधामन्यु महीप तुरतहि जागि अनरथ मानि। द्रोणसुत के हन्यो उरमें गदाराक्षस जानि॥ खड्ग सों बधिताहि द्विजसुत भयो बधत सटेक। नींद बश परिपरे थरथर घूमिसुभट अनेक॥ द्रोणसुत ह्वै चपल कीन्हें न्याय धर्महि दूरि। परे सोवत तुरँग गजभट भयो मारत भूरि॥ जगेजेऊ देखि तेहिते रहे नैनन मूंदि। तिन्हैं बधि भो बधत सोवत भटन पायँन खूंदि॥ करत निरजन शिविर सिगरे गयो द्विज भटबीर। रहे सोवत द्रौपदीके सुवन जहँ रणधीर॥
दोहा॥ तेहिक्षण तहँके सुभट सब जागि करतभे शोर। जागि द्रौपदीके सुवन करषे धनुष कठोर॥ धृष्टद्युम्नको मरणसुनि जागि शिखण्डी दक्ष। द्रोणसुवन कहँ घेरिकै बरषेबिशिख सपक्ष॥
जयकरी॥ तहँगहि खड्ग चर्म बलधाम। द्रोणसुवन भट अश्वत्थाम॥ द्रुपद सुताके सुतन प्रचारि। भो प्रतिबिंध्यहि बधत प्रहारि॥ तब सुतसोम पाश हनि ताहि। असि गहि चलतभयो बधचाहि॥ तब अश्वत्थामा गहि बेग। बाहि रुद्रप्रद खड्ग असेग॥ दक्षिण भुजाकाटिकै तासु। काट्यो शीशबाहि असिआसु॥ शतानीक रथचक्र उठाय। तज्यो बिप्रपहँ ओज बढ़ाय॥ गहिसोचक्र बिप्रभटनाह। हन्योनकुल सुतके उरमाह॥ लागे चक्र गिरो सो भ्हौरि। तब शिरकाटि लियोद्विज दौरि॥ तब श्रुतकर्मा परिघ उठाय। बढ़ि मारतभो द्विजके काय॥ सो सहि बलकरि बिप्रन भीच। खड्ग हन्यो ताके मुखबीच॥ तब श्रुतकर्मा सुभट अमान। गिरो भूमिपर ह्वै गतप्रान॥ सोलखिकै श्रुतिकीर्त्ति उदार। द्विजपर बरषो शायक धार॥ सबशर धारि चर्मपर बिप्र। काट्यो तासु शीश बढ़ि क्षिप्र॥ द्रुपदसुताके सुतसब मारि। सुभट शिखण्डहि बध्यो प्रचारि॥ इनसुभटनकहँ बधि तेहि ठौर। बधत भयो सब भटनसडौर॥ कालक-

राल सदृश तेहियाम । बिलसत भयो बिप्र अभिराम ॥ दोहा ॥ जितने मत्स्य प्रभद्रगण अरु पाञ्चाल बिशेष । रहेजिते हत शेषसो द्विज बधि कियो अशेष ॥ फिरि पाण्डवदल सृंजयन मध्य प्रविशि द्विजबीर । हयगज भटहत शेषसब वधत भयो बेपीर ॥ तहँ जे भट जागत रहे तेनिरखे तेहिकाल । प्रथमजाति कालीबधति पीछू बिप्र बिशाल ॥ चौपाई ॥ चेति भिरैं द्विजवरसों जेते । कटि कटि परैं भूमिपर तेते ॥ काहूके पगकटि भुजकाटत । कितने शीश काटि महि पाटत ॥ कितने हय गजकाटि थितावत । लसो रुद्र जिमि कल्प बितावत ॥ कितने घोर शब्दसुनि जागैं । कहा होत इमि बूझत भागैं ॥ कितने नींदभरे नहिंबूझैं । कहाहोतको आयोकूझै ॥ जागत सोवत बैठेभागत । बधतबिप्र कछुदया न पागत ॥ हाहाकार भूपतेहिपलमें । होतभयो सबपांडवदलमें ॥ धुनिसुनिद्विरद तुरग भयपागे । तोरिसुबन्धन धावन लागे ॥ तिनके घातलाततर परिपरि । मरतभये भट हाहाकरि करि ॥ उड़ीधूरि अतिशय तमछायो । सबकेमन बिभ्रम भरि आयो ॥ बिनुचीन्हें आपुसमें लरिलरि । मरेअसंख्यन धीरज धरिधरि ॥ कितने पिता बन्धुसुत टेरैं । कितने हय गज रथ धनुहेरैं ॥ भागिद्वारपर जाहिंसभर्मा । बधैंतिन्हें कृपअरु कृतबर्मा ॥ नृपइतनेमें अश्वत्थामा । आगिबारि फूंक्यो पटुधामा ॥ तीनिओरसों आगिलगायो । पूरिउजेरो असि फरकायो ॥ अंग भंगकरि हय गज योधन । करतभयो निजपण बिधि शोधन ॥ कितनेमरे अग्निमें जरिकै । कितनेमरे परस्पर लरिकै ॥ सुभट असंख्यन द्विजसुत मार्‍यो । प्रलय कालको रूपपसार्‍यो ॥ बधे पशुनकहँ पशुपतिजैसे । हय गज भटन बध्यो द्विजतैसे ॥ निशियुगयामगये सुनुराजा । भोअशेष अरिसैनसमाजा ॥ राक्षस भूत पिशाचघनेरे । भक्षणलगेमांसकरि डेरे ॥ खुशी खबीसयोगिनी फिरि फिरि । शोणितपियैं ग्रीवसों भिरि भिरि ॥ निरतत

बलकत फिरत अनेरे । खातगूद लखिवीर बड़ेरे ॥ चौपदपक्षी मांस अहारी । मांसखात अतिसुदिन निहारी ॥ यहि प्रकार सब अरिदल बधिकै । निज पणपूरि मोद हियमधिकै ॥ सैनद्वारके बाहेर आयो । निज कर्तब्य युगभटन सुनायो ॥ नृप धृतराष्ट्र दशा यह सुनिकै । संजयसों बूझतभो गुनिकै ॥ यहि निशि बिप्रकर्म जो कीन्हों । प्रथमहि कत यहपण नहिं लीन्हों ॥ जब जूझो मम सुत नृप आरज । तब कत करतभयो असकारज ॥ सो बुझाइ कहु संजय ज्ञानी । सुनिबोलो संजय अनुमानी ॥ कृष्ण आर्जुन के भयपागो । नाहिं आगे द्विज यहि मतलागो ॥ सात्यकि सहित उन्हैं यहि निशिमें । अनतजानि प्रविशो यहि दिशिमें ॥ दोहा ॥ बधि हतशेष समस्तदल करि पूरण पण आस । कृप कृतबर्म्मा सहितगो दुर्योधनके पास ॥ शेषप्राण सह भूमिपर परो भूप तेहिकाल । शोणित मुखसों बमतअरु श्वासाबढ़ी कराल ॥ दुर्योधनकी लखिदशा तेत्रयभट तहँ बै-ठि । रुदन करन लागे महा शोक समुद्रमें पैठि ॥ गुणबिक्रम ऐश्वर्य्यसब कहि कहि गहि दुखभूरि । किये बिलाप प्रलाप गति लहि अति दुखसोंपूरि ॥ नहिं बोलोजब नृपति तब कह्यो द्रोणसुत एहु । स्वर्गजात नृपश्रवण सुख बचनइतो सुनिलेहु ॥ धृष्टद्युम्न आदिक सकल बधिपरभट समुदाय । द्रुपद सुता के सुतनकहँ बधि यमलोक पठाय ॥ जारि शिविर पाण्डवनके हम आये तुवपास । सातसुभट उतबचिरहे बसिअनतै गहित्रास ॥ पांचौ पाण्डव कृष्ण अरु सात्यकि योधा जौन । तीनि सुभट हम इतबचे सुनो बुद्धिबलभौन ॥ सुनि मुदगहि तो सुत कह्यो तुम उत्रिणभे आजु । भीष्मद्रोण अरु कर्णनहिं कीन्हों करिसो काजु ॥ इमि कहि चुपरहि क्षणक गुणि कहि कहि सीताराम । नृपतिसुयोधन त्यागितन गोसुरपति के धाम ॥ जयकरी ॥ राम कृष्णकी कृपा अनूप । लहिजयलह्यो युधिष्ठिरभूप ॥ रामकृपा

नका नहिंहोत । रामकृपा सबसुखको सोत ॥ रामकृपा इच्छित फल दानि । रामकृपा मुद मंगल खानि ॥ रामकृपालहि सुर सुरराज । निरभय बिलसत सहित समाज ॥ रामकृपाते दम्पति पूर्ब । इत पायो निजतपफल गूर्ब ॥ रामकृपाते विश्वामित्र । पूर्णकियो मख परम पवित्र ॥ रामकृपाते गौतमबाम । लही पूर्ब तन अति अभिराम ॥ रामकृपाते सुरसरि बार । केवटतरो सहित परिवार ॥ रामकृपाते जनक बिदेह । निजपण पूरण लह्यो सनेह ॥ रामकृपा लहि राम प्रयुक्त । भेनिज धर्म कर्म सों युक्त ॥ रामकृपा ते कोशल ग्राम । रामनिवासभयो छबि ग्राम ॥ रामकृपालहि परम बिचित्र । भो निषादअति पावन मित्र ॥ रामकृपाते तीरथनाथ । पाइनाथ पद भयो सनाथ ॥ रामकृपाते ऋषि बाल्मीक । है चाहत देख्यो सो नीक ॥ राम कृपाते चित्र सुकूट । निरख्यो बिष्णु चतुरधाजूट ॥ रामकृपा ते असुर बिराध । फिरि गन्धर्ब भयो निरवाध ॥ रामकृपाते ऋषिसरभंग । लह्यो परमपददाहि सुअंग ॥ रामकृपाते ऋषि समुदाय । दण्डकबसे अराक्षस पाय ॥ रामकृपाते तर्यो ज-टाय । बस्योकबन्ध पूर्बपदजाय ॥ रामकृपालहि आनँदओक । शवरी पायो उत्तमलोक ॥ रामकृपा लहिकै सुग्रीव । राज्यपाय भे कपि कुलसीव ॥ रामकृपाते सुकपिउदार । जायबायु सम बारिधिपार ॥ रामकृपा गुणि सीतहि देखि । लङ्कादाहकियो अ-वरेखि ॥ राम कृपाते फिरि फिरि आय । खबरि सुनायो श्रुति सुखदाय ॥ रामकृपाते कपि जयहेत । बांधतभे सागरमें सेत ॥ रामकृपाते लक्ष्मण बीर । बध्यो मेघनादहि रणधीर ॥ रामकृपा ते रावणआदि । राक्षस मुक्तभये अघबादि ॥ रामकृपालहि बिस्वेबीश । भयोबिभीषण लङ्काधीश ॥ रामकृपाते अवध अ-धार । फेरिभरतभो मंगलचार ॥ रामकृपाते धनपति केरि । पु-ष्पक पायो आनँद मेरि ॥ रामकृपाते भरतसप्रेम । रामहिलखे

पालि ब्रत नेम ॥ रामकृपाते सहितबिबेक । पुरजन लखे राम अभिषेक ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकबीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपिनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकबिनाबिरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे सौप्तिकपर्बणिप्रथमोऽध्यायः १ ॥

सौप्तिकपर्ब समाप्तः ॥

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छपी
माह फरवरी सन् १८९१ ई०

महाभारत दर्पणे ॥

ऐषिकपर्बदर्पणः ॥

दोहा ॥ नमस्कार नारायणहिं करि नरोत्तमहिं नौमि । बन्दि गिराब्यासहि रचत भारतभाषा सौमि ॥ भूकृत भूभृत भूभरण भूस्वामी भगवान । तेहिभरतहि भजिभनत यह भाषाभार्त्त म-हान ॥ जेहि रघुबरप्रभुके चरित बहु शतकोटि अमन्द । ताहि सुमिरिभारत रचत भाषाबिरचि सुछन्द ॥ पारथके स्वारथभये सारथि परमअनूप । तेसारथ रचिदेहिं यह भारत भाषारूप ॥ सोरठा ॥ बन्दौं कपिवरबीर रामपरमप्रिय पारषद । मंगलमूरति धीर भारत स्वस्थध्वजस्थबर ॥ सुमिरि उच्छलनिअच्छ उदधि उलंघन समयकी । भारतसमुद प्रतच्छ भाषाकरि चाहततर्यो ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ धृष्टद्युम्नको सारथी बचि सौप्तिक निशि माह । भोरभये चलिजातभो जहां धर्मनरनाह ॥ जयकरी ॥ जाय धर्म भूपतिकेपास । कहतभयो लैऊबिउसास ॥ यहिनिशि द्विज सुत कियो अनर्थ । बधिडारयो तौ सेना व्यर्थ ॥ द्रुपदसुताके सुत सब जौन । युगभट द्रुपदतनय बलभौन ॥ युधामन्यु उत-मौजाआदि । सबको बधभो करतप्रमादि ॥ सब हय गज योधा समुदाय । बध्यो द्रोणसुत निशिमेंजाय ॥ सोवत जागत निशि में भीति । सबकहँबध्यो बिप्र तज़िनीति ॥ दियोशिविरमें आगि

लगाय । बन सम काट्यो भटन बनाय ॥ रहे द्वारपर ठाढ़े तत्र । कृप कृतबर्म्मा गहि धनु पत्र ॥ द्विजसों भागि बाचि तेहि ठौर । गयो बध्यो तेहि तिन गहिगौर ॥ यथा तथा भगि दैवाधीन । बचे एक हम दुखसों क्षीन ॥ यहसुनि धर्म्मनृपति मति ओक । गिरो भूमिपर गहि सुतशोक ॥ तब सात्वकि गहिलियोउठाय । कियो प्रलाप भूप बिलखाय ॥ होत अनर्थ अर्थ के हेत । है अनर्थको अर्थ निकेत ॥ यह जय यमजाया सम घोर । भयो अजय सो अधिक अथोर ॥ सेवक सखासुहित सरदार । मरे सुसनबन्धी परिवार ॥ अब लै राज्य करब का हाय । इमि कहि रोये धर्म्म अचाय ॥ दोहा ॥ भीष्मद्रोण कर्णादिके रणसमुद्रको जैन । द्रोण तनय अधरम सरित मधि बूड़ी मम सैन ॥ पिता बन्धु पितृव्य गण को सुनि मरण मलान । पाञ्चाली कैसेसहिहि सुतबध बज्र समान ॥ भूरि प्रलाप प्रकारयहि करि आलब्ध निहारि । नृपति युधिष्ठिर नकुल सों बोले समय बिचारि ॥ सोरठा ॥ तुम कृष्णा पहँ जाय कहो भयो अनरथ जितो । कहि भावी समुझाय लै आओ पुत्रनलखै ॥ द्रुपदसुताके ओक नकुल गये चढ़ि सुरथ पर । बन्धुन सहित सशोक भूप गये रणअजिरमें ॥ रोला ॥ जाय तहँलखि मरे पुत्रन कियेरोदनभूरि । भे बुझावत नृपहि सात्यकि भीम दुखसोंपूरि ॥ सखा सुहितन मरो लखि नृप रहे शोचतयत्र । बिकल कृष्णाहिं सुरथपहँ लै नकुल आये तत्र ॥ देखिपुत्रन गिरी महिपर रुदत करि हाहाय । भीम गहि बैठाय श्वासित किये स-बिध बुझाय ॥ करतरोदन धर्म्मनृपसों कही कृष्णाबाम । द्रोण सुतको होय बध तो जियोंमैं यहियाम ॥ कियो जैसो कर्म कुत्सित लहैं तिमि फल तासु । नतरु गे जहँ सुवन तन तजि तहां जैहौं आसु ॥ धर्म नृप सुनि कहे गुरुसुत गयो अब कढ़ि दूरि । धर्म्म-चारि णिधीर धरुबिधिअंक आमिटाबिसूरि ॥ बचन यहसुनिद्रुपद तनया कही भीमहिं टेरि । कीचकहि तुम बध्यो मम हित बधो

बिप्रहिहेरि ॥ परममणिहै तासु शिरमें ताहिबधि सोल्याय। भूपके शिरकरो राजित मोरदुख तौ जाय ॥ भरो अति दुख वचन नहिं सहिसको भीम अमान। चढ़ो रथपर नकुल कहँ करि सारथी बलवान॥ धनुष टंकारत बिशिखगहिगुणत विक्रमघोर। वेगसों हँकवाइरथभो चलत उत्तरओर ॥ भीमरथ चढ़िगयो जब तब कृष्णकरि अनुमान। धर्मनृपसों कहतभे इमिसुनो भूपसुजान ॥ क्षीण अति सुत शोकसों भटभीम गहिरिसचण्ड। गयोद्रोणिहिं बधनसो वह बिप्र सुभट उदण्ड ॥ अस्त्रउत्तम ब्रह्मशर है द्रोण दीन्ह्योंताहि। भाषि कबहूं मनुजपर मतितजेहु यहिजयचाहि॥ द्रोणसुत कछु दिवसमें नृप सुनो ममपुर जाय। कछू दिन रहि भयो हमसों कहत अवसरपाय ॥ ब्रह्मशरहै अस्त्र परमअमोघ हमसों लेहु। तासु प्रतिउपकारमें निजचक्र हम कहँ देहु॥ कह्यो तब हमअस्त्र आपन देहु मतितुम मोहि। चक्र तुमकहँ देतहैं हमलेहु श्रेयदजोहि ॥ भाषि इमि निज चक्रहम धरिदये तबउठि बिप्र। बामकरसों चक्रगहिके लगोकर्षण क्षिप्र ॥ उठो नहिंतबलगो कर्षण पाणि दक्षिणलाय। थकोबलकरि उठोनहिं तबरहो शीशनवाय ॥ बिप्रसों तब कह्योहम सुनुबिप्र अर्जुन राम। शाम्ब गदन प्रद्युम्न मांगे चक्र ममअभिराम॥ प्राणसम प्रियमोहिंते नहिं कबहुंमांगे जौन। कियेबिनु अनुमान शठसम आइ मांगेतौन ॥ वचनसुनिमम द्रोणसुत इमिकह्यो गहि सति भाव। सुनोचाहि अजेयहूबो कह्योहम यहिभाव ॥ हेममणि दै कियोतब हमबिदाताको भूप। सुनोताते द्रोणसुतहै कुटिलताको रूप ॥ भाषि इमि निजसुरथपर सबपांडवन बैठाय। वेगसोंतहँ गये जहँगो भीमओज बढ़ाय ॥ द्रोणसुतकी लेतसुधिगो भीम सुरसरितीर। हांकिअश्वन साथहीतहँगयो केशवधीर॥ ऋषिन सह तहँरहेबैठे व्यासमुनि तपधाम। रहोऋषिसम तहांबैठो बीर अश्वत्थाम ॥ द्रोणसुतकहँदेखि टेरत भयो भीम प्रचारि। देखि

आतन सहित भीमहिं द्रोणतनय बिचारि ॥ मानिअनरथबाम करसों गहि इषीक अरोग । दिव्यअस्त्र सुब्रह्म शरको करिअ-मोघ प्रयोग ॥ कुरुअपाण्डवभाषिइमि तेहितजतभो गहिडौर । चलोसो दिशिज्वाल जालन पूरिकैतेहिठौर ॥ लोकनाशकअस्त्र सो लखि कृष्णकरि अनुमान । दुचितह्वैके पार्थसों इमि कह्यो सहित बिधान ॥ ब्रह्मशरजो अस्त्रहै तोहियेमें तेहिक्षिप्र । अस्त्र प्रसमन हेत त्यागो नतरु जीततबिप्र ॥ कृष्ण के सुनि बचन पारथ उतरि रथसों भूप । देवगुरुहि मनाइ त्यागत भयो अस्त्र अनूप ॥ चलो गर्जत ज्वालमाला बमतअस्त्र बिशेष । भिरेमग में अस्त्र युगते यथा तक्षकशेष ॥ भई अतिशय घोर धुनितहँ प्रलयकाल समान । भईकम्पितभूमिऋषिगण भरेभीतिमहान॥ जानि जगको नाशतेहि क्षण सुमुनि नारद आय । उभय अस्त्रन मध्य ठाढ़ेभये ओजबढ़ाय ॥ उभय अस्त्रन मध्यह्वै इमि कह्यो सुमुनि अभर्म । पूर्व धनुधर भयेतेनहिं कियो ऐसोकर्म ॥ तज-तकोऊ अस्त्र यह तुम कियो साहस कौन । नाशह्वैहै लोकको यहभयो कारजतौन ॥ पार्थनारदहि देखितहँ अरुबचनसुनिनिर-धारि । करतभे निजअस्त्र बरको संजहार बिचारि ॥ संजहार सुअस्त्रको करिकह्यो मुनिसोंटेरि । बिप्रकेबरअस्त्रको अवशमन कीजैहेरि ॥ द्रोणसुत निजअस्त्रको नहिंसको करिसंहार । दीन मनह्वै व्यासमुनिसों कहतभोयहिचार ॥ भीमको भयपायकै निज प्राणरक्षण हेत । शीघ्रतासों तज्योहम यहअस्त्र ह्वै गतचेत ॥ बध्योदुर्योधनहि करिकै भीमसेन अधर्म । तज्योताते अस्त्रयह हमजानि दुष्करकर्म ॥ दोहा ॥ नाशहेत पाण्डवनके तज्योअस्त्र यहचण्ड । संजहार नहिं रुचत यह बिनु बधलखै अखण्ड ॥ व्यासकह्यो सबअस्त्रमें पारथ परम प्रवीन । करिहि शमन यहि अस्त्रको त्यागिशस्त्र अति पीन ॥ अरुव ब्रह्मशरअस्त्रसों बधो जातहै यत्र । बिप्रसुनो द्वादशबरष बारि न वर्षत तत्र ॥ ताते

अब यहिअस्त्रको करौशीघ्र संहार । तुम्हैं न वधि हैं पाण्डु सुत कर्त्ता बिशद बिचार ॥ चौपाई ॥ तोशिरमाधि जोहै मणिनीकी । सोप्रिय द्रुपदसुताके जीकी ॥ बिनुबधकीन्हें सोमणि पैहैं । तो पाण्डव सुखसों फिरिजैहैं ॥ द्रोणतनय बोलो यहसुनिकै । मम माणि चहतकहा वै गुनिकै ॥ मणिसमूह कुरुपतिके घरमें । सो लहि तोष न आनत उरमें ॥ हमनिज मणि नहिंदेन उमाहैं । पाण्डव करैंजोन कछुचाहैं ॥ नहिं यह अस्त्र शमनके लायक । तातेकहत सुनो मुनिनायक ॥ गर्भउत्तराको जो तामें । प्रेरित करत अस्त्र जयकामें ॥ यह सुनि ब्यासकह्यो करुसोई । मति करुआन अनर जेहिहोई ॥ ब्यास बचनसुनि द्विजमुदलीन्हों । अस्त्रगर्भमाधि प्रेरित कीन्हों ॥ कृष्णचन्द्र यहगुणि तहँहँसिकै । कह्यो बिप्रसों अनुपम लसिकै ॥ सुताबिराट नृपतिकी जोई । पार्थ सुवनकी तियासो होई ॥ सोहै गर्भवती यहमानो । हैइमि भाषै बिप्र सयानो ॥ कुरुकुल के परिक्षीण भयेपै । लहिसुपास कछु मास गयेपै ॥ ह्वैहै पुत्र परीक्षित कीजो । नाम परीक्षित ताकहँ दीजो ॥ तातेबंश वृद्धिके कारज । है भवितब्य परीक्षित आरज ॥ बिप्रबचन नहिं मिथ्याह्वैहै । प्रगटि परीक्षित आनँद ग्वैहै ॥ दोहा ॥ कृष्णचन्द्रके बचनसुनि कह्यो द्रोणसुत दुष्ट । ब्यर्थ न ह्वैहै अस्त्र यह गर्भ न ह्वैहै पुष्ट ॥ यह सुनिकै केशव कह्यो ब्स्त्रन होइहि ब्यर्थ । प्रापि उदरमें मृतक सम गर्भहि करी समर्थ ॥ फेरि गर्भ चैतन्यह्वै ह्वै दीर्घायुषपर्म । समय पाय होइहि प्रगट पालक मही सधर्म ॥ चौपाई ॥ तुम पापात्मा सहसा कर्मी । बालघातकृत परम अधर्मी ॥ अबयहि अधरम को फलपैहै । तीनिहजार बरष इतरैहै ॥ निर्जनथलमें फिरि है व्याकुल । रहिहै महारोगसों आकुल ॥ अर्जुनसुतको पुत्रअमाना । प्रगटिपरीक्षित नृपबलवाना ॥ कृपाचार्यसों धनुविधि लैकै । भोगिहि भूमि बिशदयश जैकै ॥ बिप्रअमोघ अस्त्रकेझर

सों। दाहित गर्भभरो दुखधरसों॥ हमतेहि जीवित करि यश लेहैं। पाण्डुसुतनकहँ आनँद देहैं॥ ममतप विक्रम लखु द्विज दोषी। प्रगटकरत गति अमल अनोषी॥ अश्वत्थामा विप्रहि ऐसे। कृष्णकहे जबबचन अनैसे॥ तबमुनिव्यास बिप्रसोंबोले। तुमहठ गहि शतपथ तजिडोले॥ तजिसुधरम अति अनरथ कीन्हों। याते कृष्णरोष अति लीन्हों॥ अब मणिदेके आनँद लहिके। बसोबिपिनमें मुनिव्रत गहिके॥ द्रोणतनय यह सुनि हित चीन्हें। सुमणि पांडुसुतके करदीन्हें॥ मणिदै बिपिनगयो द्विजआरय। मुनिननौमि पाण्डवकरि कारय॥ हांकिबेगसों रथ मनभाये। सादरद्रुपदसुता पहँ आये॥ रथतेउतरि कृष्ण सह शोचित। बैठे अतिदुख गहे अरोचित॥ दोहा॥ लहि आज्ञा नृपधर्मकी भीमसेन बलभौन। द्रुपदसुताके पाणिमें देतभयेमणि तौन॥ मणिदैके इमि कहतभे तजोशोक धरिधीर। क्षात्र बंश को धर्मगुणि मतिउपजावो पीर॥ हमबधिके दुश्शासनहिं पियो रुधिर लहिचैन। शकुनि कर्ण दुर्योधनहिं बध्योसबन्धु ससैन॥ जयकरी॥ जायद्रोणसुत बीरहिजीति। मणिलीन्हें बिक्रमसोंरीति॥ बध्यो न गुरुसुत बिप्रबिचारि। मणिलै जानदियो प्रणधारि॥ मणिलखि मोदि द्रौपदीबाम। कहीधरैंमणि नृपअभिराम॥ तब नृपमुकुट मौलपर राखि। शोभितभयो शोचसब नाखि॥ सुमणि धारि नृपधर्म बिचारि। कहेकहो केशवनिरधारि॥ द्रौपदेय अति प्रबलअमान। धृष्टद्युम्न अतिशयबलवान॥ तिनकहँमारि द्रोण सुत एक। बध्यो असंख्यन सुभट सटेक॥ यहगुणि मोहिंहोत अति शोच। कतमम सुभटगये क्वैपोच॥ यहसुनिकह्यो कृष्ण मतिमान। करिशिवकी अस्तुति मनमान॥ द्विजशिवकी अनु-कम्पा पाय। सिद्धकियो यहकर्म अन्याय॥ पायअमरता बिक्रम वान। कियो भटनको नाश महान॥ इमिकहि केशव सरस सु-भाव। बिधिवत कह्यो शम्भु परभाव॥ सर्बभूतगणको प्रभुशम्भु।

अन्त मध्य अरु प्रथम अरम्भु ॥ वेधा जगरचना अवरेखि। सबके प्रथम गिरीशहि देखि ॥ कह्यो रचो भूतनसंविधान। सो सुनिकै शिवकरि अनुमान ॥ करनलगे तप जलमेंपैठि। बहुत काल बितयेतहँबैठि ॥ तब बिचारि फिरि शिवढिगजाय। कह्यो पितामह प्रेमबढ़ाय ॥ दोहा ॥ शीघ्र सृष्टि रचनाकरौ तब बोले शिवबैन। ममअग्रज कोउ होइ नहिं तबहमरचैं सचैन ॥ एव-मस्तु तबबिधिकह्यो सोसुनिशिव हर्षाय। परमप्रजापति सतदश प्रगटकिये मनलाय ॥ ते सब विरचे चारिबिधि भूतग्राम संमु-दाय। प्रगटि क्षुधितह्वैतेचले प्रजापतिनकहँखाय ॥ भीतिप्रजा-पति भागितब ब्रिधिसोंबोलेजाय। शीघ्रदेहु भोजनइन्हैं तबहम बचत सचाय ॥ तब बिचारिकरि पितामह रचेअहार सनेत। दयेथावरन औषधी अन्त जंगमनहेत ॥ कछुदिन में कढ़िस-लिल ते देखि प्रजन की वृद्धि। रिसगहिकै बर्द्धित किये लिंग देतजो सिद्धि ॥ तासों भोसब लोकमें संकीरन सुनु तात। तब विरञ्चिशिवसों कह्यो बचन परम अवदात ॥ किये कहा तुम सलिल में करि निवास चिरकाल। बर्द्धित कीन्हें लिंग निज कारण कौन कराल ॥ शिवउवाच ॥ सकल प्रजा औरन रच्यो का-रज कहा हमार। अब अबते ह्वैहै प्रजा किये लिंग व्यापार॥ इमि कहिकै उर्जवत गिरि पहुँगे श्री ईशान। तहां जायकै करत भे तप अति उग्रमहान ॥ तहां पृथक् कीन्हें सकल मख गुणि वेद प्रमान। भागयोग जे देवता अरु सब हविष बिधान ॥ यज्ञफलदगुणि शम्भुकहँ सुरनदये नहिं भाग। तब शिवधनु कल्पितकिये पूरिजयद अनुराग॥ क्रियायज्ञ गृहयज्ञ अरु लोक यज्ञ नृपयज्ञ। लोकयज्ञ नृपयज्ञसों धनुबिरच्यो सरबज्ञ ॥ चौपाई ॥ पांचकिष्कुमित गरुई धनुषा। बषटकारजाकी ज्यापरुषा॥ गहि सोधनुष शम्भुरिस पूरे। गये यजत जहँ सुरगण रूरे ॥ देखि पिनाकिहि महितेहिक्षनमें। कम्पितभई डरेसुरमनमें ॥ डरेपवन

सबगवन भुलान्यों । अनरथ होन चहत सबजान्यों ॥ पावक सहित यज्ञभयपागो । ठहरि न सको मृगाह्वै भागो ॥ भागि जाय दिवमधिसो राजत । सोई रूपधरे छबिछाजत ॥ तहां शम्भुप्रभु गौरव कीन्हों । सुरन धनुष के मधि करिलीन्हों ॥ बषट्कार मयज्या अति भाकी । बाणीकाटि दई तब ताकी ॥ तब सुरयज्ञ सहित मुद्राखे । शरणागत आरत ह्वै भाखे ॥ तब करि कृपा शम्भु प्रभु मानद । जलमधि दियो क्रोधसो सानंद ॥ सोवह क्रोध अग्नि ह्वै लसिकै । शोषो करत बारि तहँ बसिकै ॥ ताते सबमख ईश्वर अरपन । करिबो नीक अ-बिघ्नक बरपन ॥ प्रभुके कोप किये सब ब्याकुल । होत कृपा-लहि मुदसों आकुल ॥ ताते शिवप्रसाद लहिराजा । बध्यो द्रोणसुत सैन समाजा ॥ कृष्ण कृपालहि पाण्डव बाचे । राम कृपा मुद मंगल राचे ॥ रामकृपा ईप्सित फलदाता । रामकृपा निति सबथर त्राता ॥ राम कृपा सब ठौर सहाई । रामकृ-पा सुत पितु हित भाई ॥ रामकृपा रुज आपद हरता । राम कृपा बुधि बिभ्रम भरता ॥ रामकृपा सन्तति सुखदायक । राम कृपा सम्पति पद चायक ॥ रामकृपा यशकीरति करणी । राम कृपा भवनिधिकी तरणी ॥ रामकृपा दुख दारिद दरता । राम कृपा बिनु चिन्ता करता ॥ रामकृपा धीरजको धरता । रामकृपा कृत सतपथ चरता ॥ रामकृपा कर्त्ता गुरुनामी । रामकृपा कर्त्ता बरधामी ॥ रामकृपा नितिशुचि मति पोषति । रामकृपा कुत्सित मति शोषति ॥ रामकृपा कर्त्ताबर पण्डित । रामकृपा कृतमहिमा मण्डित ॥ रामकृपा दायक पटुसंगी । रामकृपा प्रदसब रसरंगी ॥ रामकृपा अनुक्षण मति शोधति । रामकृपा कुमतिहि अवरोध-ति ॥ रामकृपा तनरोग न आवत । रामकृपा बपुओज बढ़ावत ॥ रामकृपा प्रद सुबुधि सुस्वामी । रामकृपा प्रदशुचि अनुगामी ॥ रामकृपा प्रद पतिब्रत धरणी । रामकृपा गृह सम्पदभरणी ॥

रामकृपा दायक मनभायक । रामकृपायुत सुवन सुलायक ॥ रामकृपा पालनि पण भारी । रामभक्ति देवरधन हारी ॥ दोहा ॥ रामकृपा सत सत्यको नेमनिबाहति आम । राम कृपाते सुजन को न्यूनहोत नहिं नाम ॥ रामकृपा ते सुजनको दिन प्रति बर्द्धतभाग । रामकृपा ते सुजन कहँ कबहुँनलागत दाग ॥ रामकृपाते सधत इत कर्म योग व्यवहार । रामकृपाते मिलत उत उत्तम सुपद उदार ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्या-
ज्ञाभिगामिनाश्रीवन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरा-
त्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणि-
देवेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे
ऐषिकपर्व्बणिप्रथमोऽध्यायः १ ॥

ऐषिकपर्व्ब समाप्तः ॥

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छपी
माह मार्च सन् १८९१ ई० ॥

महाभारत दर्पणो ॥

विशोक पर्ब दर्पणः ॥

दोहा ॥ नमस्कार नारायणहिं करि नरोत्तमहिं नौमि । बन्दि गिरा ब्यासहि रचत भारथ भाषासौमि ॥ भूकृत भूभृत भूभरण भूस्वामी भगवान । तेहि भरतहि भजि भनत यह भाषा भार्त्त महान ॥ जेहिरघुबर प्रभुके चरित बहु शतकोटि अमन्द । ताहि सुमिरि भारत रचत भाषा बिरचि सुछन्द ॥ पारथ के स्वारथ भये सारथि परम अनूप । ते सारथ रचि देहिं यह भारतभाषा रूप ॥ सोरठा ॥ बन्दौं कपिबर बीर राम परमप्रिय पारषद । मंगल मूरति धीर भारत स्वस्थ ध्वजस्थबर ॥ सुमिरि उच्छलनि अच्छ उदधि उलंघन समयकी । भारत समुद प्रतच्छ भाषा करि चाहत तर्यो ॥ जनमे जयउवाच ॥ जयकरी ॥ सुनि दुर्योधनको बध भेद । किये कहा धृतराष्ट्र सखेद ॥ कृप आदिक त्रयसुभट अभर्म । किये कहा सह बन्धुन धर्म ॥ वृद्धनृपति की दशा निरेखि । केहकहा संजय अवरेखि ॥सुनि बैशम्पायन मतिमान। जनमेजय सों कहे बिधान ॥ बज्रपात सम सुतबध कर्णि । शोकाकुल नृप बचन बिवर्णि ॥ बैठिमूक ह्वै शीश नवाय । शोचत सुतन बिकलता छाय ॥ देखि कह्यो संजय मतिऐन । नृपकत शोचत भये अचैन ॥ जिमि करतब्य प्रेतबिधि जौन ।

धरि धीरज करवावो तौन ॥ यहसुनि गिरोभूप लहिशूल ।
जिमि अशाख तरु उखरे मूल ॥ गहि धीरज संजय तनहेरि ।
कहतभयो अतिदुख मनमेरि ॥ हतसुत हत सेवक समुदाय ।
क्षीणपक्ष पक्षीगति पाय ॥ नात गोत गणसों ह्वै हीन । अब
जिय रहे होत दुख पीन ॥ नारद ब्यासकृष्णके बैन । रहे सुखद
सो मान्यों मैंन ॥ भीष्म द्रोण कृप बिदुर सचेत । कहेबुझाय
कुशल के हेत ॥ सोहम किये श्रवणनसों दूरि । कत न दहैं
हिय दुखसों पूरि ॥ शकुनि दुशासनकर्ण सुबीर । दुर्योधन के
बचन गँभीर ॥ सुनिहम दीन्ह्यों नीति भुलाय । कत न दहै
हिय दुखसों छाय ॥ अबसब महिपर मोहिं समान । कोअभाग्य
दुखभरो महान ॥ यहि प्रकार हठगहि निज हाथ । आनैं बि-
पति मोट निजमाथ ॥ यह सुनिकै संजय मतिमान । कहतभयो
सुनुभूप सुजान ॥ बृद्ध तपस्वी हितमति भौन । तिनको कहो
न मानत जौन ॥ लोभी तरुण मूढ़ युत गर्ब । तिनको कहो करत
जो खर्ब ॥ सो पावत बिपदा को धाम । दहत हियो लहि शोच
अछाम ॥ सो तुम किये कहत हो सांच । कत न दहै हिय दुख
के आंच ॥ ऐसी दशा लहे सुनुभूप । कहत सकल मतिमान
अनूप ॥ पहिले करिये काज बिचारि । पटु बृद्धनको सुमन सु-
धारि ॥ सोबिनु कियेकिये हठिकाज । प्राप्त होतजब बिपति स-
माज॥तबकरि हियपोढ़ो धरिधीर । सहिबो उचित परै जो पीर॥
बिपति परेपर धीरज धर्म । राखै सोई सुकृती पर्म ॥ गुरुजन
की बाणी अनुमानि । रहैं बिपति पै धीरज आनि ॥ शोकाकुल
संजय महिरौन । तासों भाष्यो नारद जौन ॥ सो गुणि कै धीरज
अधिकाय । करौ प्रेतबिधि शोच बिहाय ॥ दोहा ॥ निजकर तूल
भरायकै निजकर अग्नि लगाय । जारिदेइ निज गेह सो फेरि
कहा पछिताय ॥ पावकाग्नि में लोभ घृत डारि बातकरि बात ।
सैन सामिध तो सुत जरे शलभसरिस करिपात ॥ मधुलोभी

धसि गिरिदरी गिरै होइतन भंग। तौन यथा पछितात नृप तुम शोचत तेहिरंग॥ प्राप्त होइ नाहिं बिपतिसों पहिले करै बिचारि। सो पण्डित आये बिपति रहै सुधीरज धारि॥ नृप इतने पै भूपसों बोले बिदुर सुबैन। भूपसुनो यहि लोकमें म-रिबो अचरज हैन॥ समजेहि करषत जेहियुगुति सो तिमि तनतजि जात। उक्ति नरन की व्यर्थसब काल युगुतिके पात॥ जातयुद्ध में बचत सो घरवारे मरिजात। सब प्रमाण भरि जियत हैं नहिं प्रमाण टरिजात॥ दिनलहि कर्षत जीव निति कालहि कछू न छोह। काल न काहू को अहित नहिं हित त्या-गोमोह॥ जिमि रजतृण आदिकनको है संयोग बियोग। मा-रुत बश तिमि दैवबश है जीवनको भोग॥ प्रथम और फिरि तौ भये फेरि औरके और। नहिं ते तुव उनके न तुम कौन शोच को ठौर॥ मरेस्वर्ग जीते सुयश नीको उभय प्रकार। लहेस्वर्ग तौसुवन नृप तजौशोच संचार॥ यथा करत हैं कर्म नर तथा लहत फलथाप। सुखपावत करि शुभकरम दुखपावत करिपाप॥ मित्र आपनो आपुही आपुहि बैरीरूप। आपुहि साक्षी आपनो कृत अकृत अनुरूप॥ कियो होतहैं प्रगट नृप अकृतन करत उदोत। तुम समानकी मति पलटि कियो कर्म फल होत॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ बिदुर तिहारे बचन सुनि दूरि भयो मम शोच। और सुन्यो चाहत कछू कहो तौन मतिश्रोक॥ बिनु ईछितको प्राप्त अरु ईछितकोमिटि जाब। किमि तेहिदुखसों छुटतजिमि द्विरद दशनको दाब॥ बिदुरउवाच॥ जब ईछितटरि जातहै बस-त आपदा आय। तब धीरजधरि पटु पुरुष सहि दुख देत दु-राय॥ सुखलहि भोगत शान्तिगहि नर प्रवीण तजिदम्भ। है असार सब सार नृप जिमिकदलीको खम्भ॥ सुनो होइ धन-वानकै निधन मरत सब लोग। यश अपयश रहिजातहै मलि-न प्रशस्त प्रयोग॥ स्वर्ग नरक सुख दुख मिलत कर्महिंके उप-

चार। मृण्मय पात्रनको यथा हैं आधे अविचार॥ मृर्त्तिमानभो पात्र तब फूटत सुनो निदान। सूखो ओदोपाकिकै लहि बहु दिन परमान॥ तिमि गर्भहि कै जनमिकै बाल युवाकै वृद्ध। देह नशाति सबकी सुनों आदि सुमन ऋषिसिद्ध॥ कर्मभोगसों सब गतिन करत लोक संचार। यह शाश्वति गति समुझिनृप तजो शोकको चार॥ यह सुनिकै धृतराष्ट्र नृप कहे कहो समुझाय। केहि प्रकार बसिगर्भमें प्रगटहोत सबआय॥ बिदुरउवाच॥ सुनो भूप मिलि रेतरज होत बुदबुदाकार। मांस पिण्डकै होत फिरि सकल अंग उपचार॥ क्रमसों पचयें मास नृप पुष्ट होत सब अंग। तब प्रविशतहैं जीव तहँ लिये कर्म फल संग॥-बसि तहँ दुख सहि समय लहि बात बीति क्रमपाय। ऊर्द्ध चरण अध शीशकै कढ़त योनि मग आय॥ क्रमसों इन्द्रिन सहित फिरि पुष्ट होतहै तौन। बिषय भोगमें लिप्त फिरि होत सुनो मतिभौन॥ कामक्रोध लोभादि बश कितने करत कुकर्म। कितने ज्ञानी सुपथ गहि साधन करत सुधर्म॥ मूरुषपटु निधनी धनी अरु कुलीन अकुलीन। मांस रुधिरमें भेदनहिं कर्म प्रशस्त मलीन॥ यहि बिधि सुनि गुणि समुझिजे सतपथ सहित बिचार।उत्तम गतिते लहतहैं दुहुंदिशि आनँदचार॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ गहन धर्म परचरत नर जिमि गहिबुद्धि बिधान। पृथक्पृथक् अबसो कहो बिदुर बिदित मतिमान॥ बिदुरउवाच॥ तौ प्रश्नोत्तर कहत हम प्रभु स्वयंभुवहि नौमि। यथा कहत संसारकी गति जिनकी मति सौमि॥ भूप सुनो संसारमें अति भीषम बनमाह। प्रविशो कोऊ बिप्र जहँ बसत घने मृगनाह॥ गैबर ऋक्ष बराहगण सो आकुल बनतौन। निबिड़ भयानक देखि अति डरो बिप्रमतिभौन॥ तबलागो इतउतलखन देख्यो तहां बिबेक। बँधोवृक्षमो रज्जुसों गहेखरी तियएक॥ पंचशीरषा नाग फिरि देख्यो शैलसमान। लख्यो द्विरदषटमुखचरण

द्वादशको बलवान ॥ बझोलतनमधि चलतसो मन्द मन्द गहि ठान । ताहिदेखि डरिकूपमधि गिरो बिप्र मतिमान ॥ तामधि लपटि लतानसों रहीबीचही तौन । ऊर्द्धचरणभो शीशअधबिनु हरि काढ़ैकौन ॥ सुनोतहांकी बिपति तहँ रहाभयानक ब्याल । सो बिप्रहिलखि डसनको लायो घातकराल ॥ और सुनो तहँ मधुप हे लाये मधुकोछात । तेउड़िउड़ि बोलत भयद करत महाउतपात ॥ श्वेतकृष्ण द्वैमूषतहँ काटत बल्लीमूल । जामधि लपटो द्विजपरो खटकिरहो बिनुकूल ॥ तहांगिरत मधुछातसों मधुकी धाराभूप । ताहिबदन पहलेपिवत भयो कृतारथरूप ॥ ऐसेहुपै सोबिप्रतहँ जियोचहत बहुकाल । जीबेकी आशा नहीं छूटति हेक्षितिपाल ॥ यहसुनिकै धृतराष्ट्रनृप कहे अहो अति खेद । कौनदेशवह बिप्रको बिदुर बुझाओ भेद ॥ कहेबिदुरनृप सुनहुसो बिपिनगहन संसार । जरायुवतिसो ब्यालवह ब्याधा सुनो उदार ॥ बिप्रजीवहै कूपतन आयूलता महान । कूपमध्य जो ब्यालसो कालकराल अमान ॥ संवतसरसो द्विरदहै ऋतु-मुख द्वादशमास । मूषक निशिदिन तौनहै सुनोभूप मतिरास ॥ कामादिकते भवरहै कामाशा मधुतौन । नृपयहि बनपरि सुखित सो आशहिजीतै जौन ॥ यहसुनिकै धृतराष्ट्रनृप कहेकहौ फिरि तात । महागहन संसारकी कछुबार्त्ता अवदात ॥ कहेबिदुरयह बचनसुनि भूपसुनो मनलाय । रूपवान चर अचर जे प्रगटत हैं इतआय ॥ शब्द स्परश अरु रूपरस गन्धमये सबहोत । ब्याधि जराबशहोतसब सबकोनाश तनोत ॥ रथशरीर अरु सारथी शीलसुनो मतिमान । कर्म बुद्धिहै बागसब इन्द्री तुरँग अमान ॥ जातजितै इन्द्रीतितै गौनकरतहै जौन । यहि संसार सुचक्र में भ्रमोकरत है तौन ॥ जोरोकत पै नहिं रुकत इन्द्री यह मुहजोर । सोऊ भरमत पै न तेहि ब्यापत मोहअथोर ॥ तातेसर्व प्रयत्नकरि इन्द्रिन जीतत दक्ष । रहतसदा सन्तुष्टसो

मोदत दोऊपक्ष ॥ जेनहिं जीतत इन्द्रियन करत लोभ बशकाज। भूपति आपुन के सरिस ताको होत अकाज ॥ दुःख व्याधि कोएकहै औषधज्ञान महान । दुःखव्याधि बरधित करन कुपथ बिसन अज्ञान ॥ जेनवसाधन परमयह शान्ति रज्जुअवदात । मानस थितिरथ चढ़िचरत तेउत्तम पदजात॥ भूतमात्रकहँ महाभय मरण सुनोनृपमर्म । तातेसिगरे भूपपहँ दयाकरबअतिधर्म ॥ चौपाई ॥ ऐसेबचन बिदुरके सुनिकै । भूपति मरणसुतन कोगुनिकै ॥ गिरोभूमिपर मूर्च्छित ह्वैकै। दुचितभये सबसोगति ज्वैकै ॥ भेसींचत गुलाबकेपानी । बीजन किये परमहितजानी ॥ कछुक्षण गये चेति नरनायक। कियोबिलाप महादुख दायक ॥ नृपबिलाप सुनिव्यास मुनीशा । कहेशोक त्यागो अवनीशा ॥ मृत्युलोक यहइत गतिऐसी। नचति रहति निति मृत्युअनैसी ॥ जातेमरेन सोबिधिलोचत । जबमरिगयो न तबबुध शोचत ॥ नहिंतुम प्रथम मरनबिधिवारे । अबकत शोचतभये दुखारे ॥ तुमतौ भूपपरम मेधावी । मतिहि पलटि प्रगटतिहैभावी ॥देवनको ईछित जोकारज । सोहम प्रगट सुने सुन आरज॥ हमहेगयेसभा सुरपतिके । तहांरहे सुरमुनिवर मतिके॥ तहांआइ पृथ्वी सुरगनसों । कहत भई अतिमोदित मनसों ॥ बिधि ढिगममकारजकरिबेकी । कियेप्रतिज्ञा धुरहरिबेकी ॥ करौ शीघ्रसोसुमनसमाजा। यहसुनिबिष्णुकहे सुनुराजा ॥ अबतो काजकरीकछु दिन में । जोदुर्योधननृप नृपतिनमें॥ लरिलघुभारकरिहिसोपरणी।यह सुनिगई मुदितह्वैधरणी ॥ दोहा ॥ बिधि सुर सुरपति बिष्णुको यह सम्मतहोभूप । कहौतौन कैसेटरै युद्धभयानकरूप ॥ हैकलियुग को अंशनृप तौसुत जेठोजौन । क्षात्रबंशको नाशयहहठि करवायोतौन ॥ कर्णशकुनि दुःशासनौ ताहीके अनुरूप । तथाहोत परजासखा यथाहोतहै भूप॥ रोला॥ सुमुनि नारद सबिधि जानत भूप यह वृत्तान्त। भयो दुर्योधन नृपति सबजगतको किरतान्त ॥

सुनोताते धीरधरि अब तजौशोक सरूप । पाण्डवन कहँ पुत्र जानो धर्मशील अनूप ॥ शास्त्रबिधिसब मर्म ज्ञाता धर्मभूप स-धर्म । करिहि सेवनआपको नित सहित आदर पर्म ॥ शोकबश जो मरोगे तुम बृद्ध दम्पति तात । धर्म नृप तौ शोक गहिनहिं राखिहैं निजगात ॥ धर्म नृपपहँ दया गहिकै सुहृदसुत अनुमा-नि । भूपराखौ प्राणमम मतमानि बिधिगति जानि ॥ धीरधरि तजिशोक अब करतव्य तपचिरकाल । परम प्रज्ञा बिपिन मधि बसि सुनतिमुनि गणनाल ॥ व्यासके येबचन सुनिनृप कहेकरि अनुमान । आपकोमत समुझि अबहम सहबशोक अमान ॥ धीरधरिकै समुझि बिधिगति करब धारणप्रान । पूर्बइत कृत कर्मकोफल भयो और न आन ॥ दोहा ॥ भूपतिके येबचन सुनि व्यासमुनीश महान । कहिनृपसों निज आशरम गेकै अन्तर्द्धान ॥

स्वस्तिश्रीकाशिराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगा मिनाश्रीबन्दीजनकाशिबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलना थस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचि तेभाषायांमहाभारतदर्पणेविशोकपर्वणिप्रथमोध्या यःसमाप्तः ॥ १ ॥

बिशोकपर्व समाप्तम् ॥

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छपी
माह मार्च सन् १८९१ ई० ॥

महाभारतदर्पणो

स्त्रीपर्व्वदर्पणः ॥

दोहा ॥ नमस्कार नारायणहिं करि नरोत्तमहिं नौमि । बन्दि गिरा व्यासहि रचत भारतभाषा सौमि ॥ भूकृत भूभृतभूभरण भूस्वामी भगवान । तेहि भरतहि भजि भणत यह भाषाभार्त महान ॥ जेहिरघुबर प्रभुके चरितबहुशत कोटिअमन्द । ताहि सुमिरि भारतरचत भाषाबिरचि सुछन्द ॥ पारथके स्वारथ भये सारथि परमअनूप । ते सारथ रचिदेहिं यहभारत भाषारूप ॥ सोरठा ॥ बन्दौं कपिवरबीर रामपरम प्रियपारषद । मंगलमूरति धीर भारतस्वस्थ ध्वजस्थबर ॥ सुमिरिउच्छलनि अच्छ उदधि उलंघनसमयकी । भारतसमुद प्रतच्छ भाषाकरि चाहततरचो ॥ दोहा ॥ जेहिसकलाकी शुचिकला सकलाइस्त्रीभेद । ताहिसुमिरि इस्त्रीपरब भाषारचत अखेद ॥ जनमेजयउवाच ॥ चौपाई ॥ व्यासगये ह्वै अन्तरधान । तबका कियो भूप मतिमान ॥ अरुपाण्डव जो किये सचाय । मुनिबर सोसब कहौ बुझाय ॥ सुनि बैशम्पायन अनुमानि । कहैं सुनो नृप धीरजआनि ॥ तेहिक्षण संजय सनय बिचारि । कहभूप अब धीरजधारि ॥ उतचालिकै करिहियो कठोर । कीजैप्रेतकर्म्म अतिघोर ॥ सुनिसंजयके ऐसे बैन । गिरो मृतक समभूप अचैन ॥ महा मोहवश नृपहिनिहारि।बोले बिदुर नीतिनिरधारि ॥ भूपति उचितन ऐसोशोक। समयपाय बिनशत

सबलोक॥ प्रथमअभावहोत फिरिभाव। फिरिअभाव यहआमिट अभाव॥ मरोफिरत नाहिं कीन्हेशोच। ताते तजोशोचगुणिपोच॥ मरि रणमधितें सुरपुर भोग। करतन अब सबशोच न योग॥ यज्ञदानतपमखकरतार। नहिंतिमिपावतस्वर्गबिहार॥ जेहिबिधि स्वर्ग लहतहैं शूर। औरहि दुर्लभसो सुखपूर॥ क्षात्रिहि युद्ध परमगति भूप। तज्योशोच धरिधीर अनूप॥ लहेस्वर्गसब पालि सुधर्म। अबचलिकरौ उचित जोकर्म॥ नृपयहसुनिकै भूप बिचारि। चढ़ेसुरथपर समय निहारि॥ भूपतिको अनुशासन पाय। रुदनकरत गान्धारी आय॥ कुन्तिहि आदि युवति समुदाय। पीड़ित करतप्रलाप अचाय॥ चढ़िसुरथनपर बिकल अचेत। नृपसँगचलीं जहां रणखेत॥ रहींजिती कुरुकुलकी नारि। रुदतचलीं अतिदुख बिस्तारि॥ नृपतेहिसमय रुदनको शब्द। जानिपरो अब बेधत अब्द॥ जे नृपपत्नी सुखमा पूर। जिन्हैं न कबहूं देख्यो सूर॥ तिन्हैंलखैं सबजन त्यहिकाल। व्याकुल रोदनकरत कराल॥ तजेअभूषण छूटेकेश। एकबसन धारे गतबेश॥ चलींपयादे सहसनबामै। करतप्रलाप पूरिदुख दाम॥ नाथ नाथकहि रुदतअचाय। उर शिर ताड़त लाज बिहाय॥ महामोहबश बिकल अचेत। गिरत उठत उत जैबे हेत॥ नाथ बन्धु पितु सुत सुतटेरि। रोदतचलीं दुसहदुखमेरि॥ एकहिंएकजाहि लपटाय। रुदनकरैंअति शोकबढ़ाय॥ गहे एक एकनिको पानि। चलैंबुझावत बिधि अनुमानि॥ यहिबिधि युवतिन सहित नरेश। पुरबाहरभो भरोकलेश॥ शिल्पीबणिक शूद्र गतरंग। रोवत चले भूपकेसंग॥ दोहा॥ इमि पुरते कढ़ि कोश भरि आयो नृपति अचाय। कृप कृतबर्म्मा द्रोण सुत तहां मिलतभे आय॥ बारिधार चषसों तजत तेत्रय सुभट अखेद। कहतभये धृतराष्ट्र सों गहेमहानिर्वेद॥ नृपतोसुतबन्धुन सहित सहित सखा बलऐन। क्षात्रधर्म्म प्रतिपालकरि सुरपुर

गयो ससैन ॥ चौपाई ॥ यहिप्रकार भूपति सों कहिकै। ते त्रय योधा धीरज गहिकै ॥ यहिविधि गान्धारी सों भाषे। तो सुत सुभट स्वर्ग अभिलाषे ॥ लरिनिर्भय धरि धनुर्विधि शोधन। करि बिक्रमबधि अगणित योधन ॥ तनतजितजिभिदि आयुध घातन। धारिदिब्य पूरितपरभातन ॥ दाताशूर अभय कृतकारज। सुरपुर बिलसत सुर सम आरज ॥ क्षात्रिहि अंति उत्तम गति तैसी। तो सुत सदललहे गति जैसी ॥ निरखि भूप को निधन अनैसो। हमफिरि कीन्हे कारज ऐसो ॥ निशि में पाण्डु सेनमधिधसिकै।कैअतिचपल रुद्रसमलसिकै॥धृष्टद्युम्नआदिक पांचालन। बध्योबध्यो सबदल पणपालन॥ द्रुपदसुताके सुतन सँहारयो। करि निश्शेष शत्रुदल मारयो॥ यहिविधि श्रुतिसुख नृप श्रुतिडारयो। सुनिमुदगहि नृप स्वर्ग पधारयो॥ शोकत्यागि उर धीरज आनो। क्षात्रधर्मकी बिधि अनुमानो ॥ अबयहसुधि सुनि पांडवऐहैं। लखिहम कहँ फिरि युद्धमचैहैं ॥ तातेअब हम नहिंइतरैहैं। बिदाकरौकहुं अनतैजैहैं ॥ इमिकहि बिदाभये दुख भरिकै। सादर नृपहि प्रदक्षिण करिकै॥ कृपकृतबर्म्मा अश्वत्थामा। सुरसरि ओरगये बलधामा ॥ दोहा ॥ कृपाचार्य रथहांकिगे हास्तिनपुर तेहि याम । जातभयो निजनगर प्रति कृतबर्म्मा मतिधाम ॥ जातभयो मुनिब्यासके आश्रम सुरसरितीर । सुरथ हांकि अति बेगसों द्रोणतनय रणधीर ॥ अनुदित रात्रिके द्रोण सुत गोसुरसरि तटभूप। तदनु जाय भीमादि तहँ लीन्हेसुमणि अनूप ॥ रोला ॥ सहित युवतिन वृद्धनृपको आगमन तेहियाम। सुन्योधर्ममहीप बन्धुनसहित दुखसोंछाम ॥ सुभट सात्यकि भट युयुत्सहि सहित बलबुधि धाम। द्रौपदी अरुऔर जेपांचालगण कीबाम ॥ तिन्हैंसह बढ़ि धर्मनृप गेवृद्धनृप केपास। दुहूंदिशिके रुदनधुनिसों गयोपूरिअकास॥ भयेबन्दतपितहि कहिकहि परस्पर निजनाम। धर्म अर्जुन भीम सहदेव नकुलजय यशधाम ॥

पुत्रबध करता समुझि नृप गहे अतिशय कोप। भयो तिनसों मिलत कीन्हे कोपअघको गोप ॥ धर्मनृपसों मिलो पहिले रोकि दीरघश्वास। फेरिभीमहिं भयोटेरत गुणत कीबो नास ॥ कृष्ण आशयसमुझि नृपकोराखि भीमहिंदूरि। भीमआयसु भयोआगे दये करि भयपूरि ॥ समुझि यहवृत्तान्त प्रथमहिं भीमसम बर गात। लोह प्रतिमा बिरचि लीन्हें रहे अति अवदात ॥ मिलो तासों भूप गहिकै दाबिउर कोदण्ड। जानिभीम उदण्ड बलकरि करत भोबहुखण्ड ॥ अयुत गजबल भूपकीन्हों इतोबल तेहि काल। कढ़ोशोणित बदन मग ह्वै लखतअति बिकराल ॥ दाबि प्रतिमहिं परोमहिपर तौन संजय हेरि। पकरि भूपहिसमितकीन्हों उचित सुबचन टेरि ॥ त्यागितेहि गत क्रोधभूपति मरोभीमहि जानि। भीमहाहा भीमकहिभे रुदत करुणाआनि॥ बिगतक्रोध बिचारि भूपहिकहे केशवबैन। भीमगुणिनृप बध्यो जेहिसोभीम योधाहैन ॥ दुसह बिक्रम आपुको गुणिसमुझि यह वृत्तान्त। लोहप्रतिमा दयोहम मतिशोच कीजैदान्त ॥ दूरिरहिकै आपुसों हैभीमबांचो भूप।भीमकोवध समुझिनृपमति होहु शोचितरूप॥ शास्त्र हौ तुमपढ़े जानत वेदभेद बिधान। सुनेसकल पुराणसी खेराजनीति निदान ॥ योग्य और अयोग्य बिधिजो तासुहौज्ञा तार। करतइमि रिसकरत निजअपराध कौन बिचार ॥ भीष्म हम अरुबिदुर संजय कहेकितक बुझाय। धर्मबिक्रम शूरता में अधिक पांडवराय॥ बलाबलहि बिचारिकै अरु देशकालनिहा रि। बैरप्रीति बिबेक करिबो उचित नृपहि सिहारि ॥ आपनो अरु औरकोगुणि कर्म दोष अदोष। कियेकोफल लहेपर नहिं उचितकरिबो रोष॥ कृष्णके येबचन सुनिकै भूपकरि अनुमान। कहेकेशव कहत तुमसों सांचसबनाहिंआन ॥ नेहबश परिपुत्रके हमगह्यो कुत्सित टेक। आपुयहिक्षण कियोबारण बड़े अघको एक ॥ अकुलायो चहतहम अबपांडवन कहँतात। बचनयहसु

निमिले नृपसों भीमभट अवदात ॥ मिलेअर्जुन मिलतभे फिरि नकुल अरु सहदेव। मिले रोदन करतभूपति भरेदुखकेभेव ॥ पायआज्ञा भूपकीतब कृष्ण पाण्डव साथ। गयेढिग गांधारजाकेसुनो कुरुकुलनाथ ॥ क्रोधबश गांधारजाको जानिकैतेहिठौर। व्यासमुनि ह्वैप्रगट तासोंकहत भेयहितौर ॥ पांडवन पहँ कोप अवमति करहुअनरथ ठानि। दयाकरिकै करोरक्षण पुत्रआपन जानि॥लहेतौसुतदशा तैसी कियेजैसीचाहि॥विदुर हमतुम कइक बार बुझाइहारे ताहि ॥ धर्म जहँजयतहां हमइमि कहेकैयकबार। युद्धकरि जयलहेपाण्डव धर्मकेअधिकार॥मानिकैममबचन अब निजधर्मकर्मबिचारि। क्रोधतजिकैक्षमाआनहुदैवगतिनिरधारि॥ व्यासकेयेबचन सुनिगांधारजा हितमानि। कहीमोमन होतबिक्लपुत्रबध अनुमानि ॥ बधबकैबिधि जायबोलरि मिलतहै गति एक। गयेबिधिमो सुवनजो गहिलरे अधरमटेक॥ दोहा ॥ जूटि पररूपर लरिमरे नहियाकोकछुदोष। भीमबध्यो दुर्योधनहिं होत तौन गणिरोष ॥ दुरोताल मधिपुत्र ममताहि प्रचारि निकारि। बध्योगदा हनिजांघमें यह अधर्मपण धारि ॥ चौपाई ॥ सुनिगांधारसुताकी बानी। अतिभय भरो भीम अभिमानी ॥ धीरज धारि नम्रह्वै बोलो। देवि कह्यो तुम बचन अतोलो ॥ करि अधर्म हमभूपहि मार्‌यो। बिनुअधर्म नहिंजीति निहार्‌यो ॥ पै यहसमुझि क्षमाकरु माई। हमपाल्या निजपण प्रभुताई ॥ द्रुपदसुतहि दुश्शासन ल्यायो। तबभूपति निजजांघ देखायो ॥ तब हम टेरिकह्यो इमि तासों। याहितौरिहौं मारि गदासों ॥ सो हमकियो मातु सतिमानो। कारण सदृशकाज अनुमानो ॥ यह सुनि कहतभई गान्धारी। तू राक्षस है मांसअहारी ॥ लरि दुश्शासनको बधकरिकै। रुधिरपियो अति आनँद धरिकै ॥ लरे बधेको नहिं दुखमोहीं। शोणित पियो कौनबिधि जोहीं ॥ यह सुनि भीमकह्यो सुनुमाता। दुश्शासनहो ममप्रिय भ्राता ॥ तासु

रुधिर निजसम अनुमान्यो । तातेकछू घृणानाहिं आन्यो ॥ और एक कारण सुनुसोऊ । हैनछपो जानत सबकोऊ ॥ हीरजस्वला द्रुपदकुमारी । एकबसन धारेगृहचारी ॥ ताहिसभा ल्यायो कच गहिकै । तोपतिसबै शयड इमि कहिकै ॥ चाह्योताहि अवसन कीबो । तहांकह्यो हमशोणित पीबो ॥ दोहा ॥ सोहमकीन्हें अम्ब सुनुममबचन दुखअनुमानि॥क्रोधईर्षा दूरिकरु दयाहियेमें आनि॥ यहसुनि गांधारीकही शतसुतबधे सटेक । अन्धवृद्धके लकुट हिय समुझिन छोड़ेएक ॥ इमिकहिकै नृपधर्मसों कहतभई सुनु तौन । शतसुतकोबध इमिनिरखि तोखगहै किमिकौन ॥ चौपाई ॥ यहसुनि धर्मनृपति भयभरिकै । कहतभये इमि धीरज धरिकै ॥ हमतोसुत बधकरता अतिकै । बध्योयुद्धमें जयसों रतिकै ॥ अब करजोरिखरे हमपांचौ । शापदेहु कैआशिष सांचौ ॥ मोहिंबन्धु बधको दुखपागत । राज्यजियब कछुनीक नलागत ॥ यहसुनि मौनरही गांधारी । तबपनगहे धर्मव्रतचारी ॥ पटअन्तरकै नख नृपकरके । नृपपतनी देख्यो छबिबरके ॥ डीठिपरत करके नख सिगरे । द्युतिबिहीन कुत्सितह्वै बिगरे ॥ लखियहदशा फाल्गुण डरिकै । गयेकृष्णके पाछेटरिकै ॥ भीम नकुल सहदेव सकाने । इत उत टरिगे बचन न जाने ॥ तबगान्धारसुता रिसिखैकै । कीन्होअभय कृपायुत ह्वैकै ॥ गान्धारीकी आज्ञालहिकै । निज जननीढिगगे मुदगहिकै ॥ बहुदिनपै निजपुत्रन लखिकै । पृथा कियो अतिरुदन बिलखिकै ॥ गहिक्रमसों सबकेतन परसत । भईदुखित आयुधक्षत दरशत ॥ द्रुपदसुता तहँरोदन करिकै । गिरतभई अतिदुखसों भरिकै ॥ ताहिबुझाइ सहित सबनारी । पृथागई जहँही गांधारी ॥ निरखि निरखि अतिरोदन कीन्हों । करुणारसहि प्रगटकरिदीन्हों ॥ दोहा ॥ कुंतीसों भाषतभई गांधारी तेहिकाल । प्रगटभयो अबतौन दुख जोविधि बिरच्योभाल ॥ दुसहशोक सबपहँपरो को समुझावैकाहि । जिमिहम तिमि तुम

तिमि सबै हियनफटत यहचाहि ॥ इतनेमें धृतराष्ट्रनृप पाण्डव कृष्ण समेत । तियन सहित चलिजातभे भीषमयुद्ध निकेत ॥ चौपाई ॥ तहांयुवति मृतकन लखिलखिकै । गिरींरथनते बिलखि बिलखिकै ॥ कितनी पतिपति सुतसुतभाषैं । लाजछोड़ि लखिबो अभिलाषैं ॥ कितनी बन्धुबन्धु सुतटेरैं । इतउत फिरिफिरि मृत-कनहेरैं ॥ नृप अति आरतधुनि तेहिक्षनमें । अति पूरित भो सैनसदनमें ॥ तेहिक्षण धीरजधरि गान्धारी । कृष्णहिं बोलि कही दुखभारी ॥ ममसुत युवतिनकी गतिदेखो । ममअभाग्य को बल अवरेखो ॥ व्याकुल दुसहशोकसों भरिभरि । रोवतउर शिर ताड़न करिकरि ॥ पति पुत्रनको मरण बिचारी । सहि न सकतदुख जीवअहारी ॥ युवतिजूह आरतिधुनि बोलत । पति सुत बन्धुन ढूंढ़त डोलत ॥ कितीचीन्ह पति पुत्रन लहिलहि । व्याकुल रुदनकरतिहैं गहि गहि ॥ बिनुशिर भुजधर लहिलहि केती । गहैं न निश्चय होहिंअचेती ॥ कितनी सदृशरूपलखि देखैं । नहिंमम इमिकहि औरहि पेखैं ॥ बिनुशिर परपतिआपन गुनि गुनि । कितनी रुदनकरत शिर धुनि धुनि ॥ कितनी कटे शीशलहि चीन्हों । रोदनकरत गोदमें लीन्हों ॥ कितनी आधो धर लहिरोवैं । भरोरुधिर आंशुनसों धोवैं ॥ अंगभंग पति सुत ज्वैज्वै कै । कितीगिरैं मुर्छितह्वै ह्वैकै ॥ दोहा ॥ दिब्य चखनसों लखतहैं हम सकसुनो सुजान । द्रोण शल्य करणादिजे मरे परे बलवान ॥ मणि सुबरणमय सेजपर सोवतरहेजे भूप । धरणि धूरिमाधितेपरे भयेभयानक रूप ॥ बायसगृद्ध शृगाल ये नोचि नोचि बपुखात । नहिं मोपहँ कहिजात यह बिधिकी अभिगति बात ॥ जयकरी ॥ कृष्णचन्द्रसों कहिये बैन । लखि निजपुत्रहि भई अचैन ॥ घरीएकलों चुपरहि मोहि । चेति सुयोधन भूपहि जोहि ॥ करगहिलागी करनप्रलाप । हायपुत्रकहि पूरिसताप ॥ जेहिसेवत अभिषेकित भूप । सोमहिपरो भयोगत रूप ॥ कृष्ण-

चन्द्र कहँ निकट निरेखि । यहि बिधि कहत भई अवरेखि ॥
एकादश अक्षोहिणि धीश । काग तासु फोरत शुचि शीश ॥
सबमहि शिक्षकभूप अमान । परोभूमिपर रंकसमान ॥ अब
लक्ष्मिनकी माता हाय । करिहि कहा पतिपुत्र गँवाय ॥ मरो
परो दुश्शासनबीर । बायस जम्बुक खातशरीर ॥ इमिकहिकहि
पुत्रनकोनाम । महारुदनकीन्ही कै छाम ॥ कहिकहि बल बिक्रम
ऐश्वर्य्य । कीन्ही रुदन शोकके मर्य्य ॥ हाय कढ़त नहिं प्राण
कठोर । कढ़िहि पार्थ कैसो दुख घोर ॥ पति पुत्रन गहि गहि
सबनारि । रुदनकरति निजमरण बिचारि ॥ गहिअभिमन्युहि
रोवतभूरि । कुंवरि उत्तरा अतिदुखपूरि ॥ कहति प्रलाप दशामें
जौन । हाय न सहो जातिहैतौन ॥ द्रुपदसुता पुत्रन गहिहाय ।
रोवतिसो दुख सहो न जाय ॥ कृष्णलखो तिमितिय समुदाय ।
गहिगहि पति पुत्रनको काय ॥ रुदति कहति गुणबिक्रमप्रीति।
हाय कौन कर्त्ताकी नीति ॥ तिमिममपुत्रनकी तियसर्ब । लहि
पतिपुत्रन गहि गतिखर्ब ॥ रुदनकरतकरि भूरिप्रलाप । कृष्ण
लह्यो हम कबकोपाप ॥ कर्णधीर धनुधरबलधाम । मरोपरो भो
तनु बिनुचाम ॥ पतिनी तासुलपटिकै ताहि । रुदनकरति निज
मरिबोचाहि ॥ भूरिश्रवाभूपसुत सोम । परेभूमिपर जिमि गिरि
सोम ॥ शकुनि जयद्रथमरे ससैन । देखि हियोमोहोत अचैन ॥
द्रुपद बिराट सहित परिवार । परे भूमिपर लहिसंहार ॥ तिन
सबकी युवतिनकोजौन । रोदनबेधत ममहियतौन ॥ लखोकृष्ण
मरिमद्र महीप । परो भूमिपर नृपकुलदीप ॥ करपग कर्षतकाग
शृगाल । कढ़ीजीभि मनुमहितेब्याल ॥ घेररोवत युवतिसमूह ।
कालकला परखतकरिऊह ॥ कुम्भकर्ण समबीर प्रमत्त । परो
भूमिपर नृप भगदत्त ॥ जोजीत्यो सिगरीअरिसैन । बध्योजाहि
पारथबलऐन ॥ करिताके आँतनकोभाग । इतउतकर्षतजम्बुक
काग ॥ दोहा ॥ इकइसदिन भृगुरामसों लरेभीष्म भट जौन ।

प्राणशेष शरतल्पपर परो वीरवरतौन ॥ भृगुपतिसम शीक्षक समर द्रोणवीर अरिद्रौन। परोतौन रणभूमि पर बचत कालसों कौन ॥ कृपीतासु तिय रुदतिढिग चाहि दाहिनोअंग। उत्तमथर में चहतिहै बासकियो पतिसंग ॥ सोमदत्तकी तियरुदति गहि पति सुतकोशोक। पुत्र बधुनको रुदनसुनि तज्यो चहति यह लोक ॥ उभयभूप आवन्तपति अरु केकय क्षितिपाल। अरु कलिङ्गपति मरिपरो काहिन भक्षतकाल ॥ जयत्सेन श्रुतिसेन अरु शल्लउलूकरणधीर। परेभूमिपर कालबश देखिहोत अति पीर ॥ इन सबकीतरुणी तरुणि उरशिर ताड़िसमोह। रुदन करत कहि कहिबिकल नाथतजे ममछोह ॥ रोला ॥ नृपबृहद्बल परोमहिपर भरो शोणितगात। घेरि ताकहँरुदति युवती शोक नहिं सहिजात ॥ द्रोणके दिब्यास्त्रकी झरिदुसह दाव समान। दहे तासों नृपनके सुतपरेह्वै गतप्रान ॥ मत्स्यसंजय अरुप्रभद्रक परेबेधितकाय। रुदति तिनकी युवति ब्याकुल कहतबचन अवाय ॥ मरेनृप पाञ्चालकेसुत सुभट हयगजभूरि। परेलुंठित जम्बुकनसों धूरि शोणितपूरि ॥ सुवनसब नृप सुतनके अरु पाण्डवनके बार। परेह्वै गतप्राण महिपर ढारि शोणित धार ॥ कृष्ण आपुनकी कृपासे पांच पाण्डवबीर। भीष्म द्रोणादिकन सों बचिरहे योधाधीर ॥ बिदुर भीषम ब्याससंजय कहे आगम जौन। कियेहठ गहिकर्म प्रगटित भयोआपदतौन ॥ भाषिइमि गान्धारजा ह्वैमोहवश तेहिकाल। परीमहिपर मृतकसमह्वै मनहु गरस्योकाल ॥ चेति छिनमें भूप पतनी भूरि ईर्षाभारि। कृष्ण सोंइमिभईभाषत महारिसि बिस्तारि ॥ कृष्णअनरथ चाहिकरि परिपञ्च बैर बढ़ाय। नाशकरवाये यथा मम बंशकोगहिचाय॥ तथा अबसोंगये छत्तिसबरष सबतोबंश। आपुसैमों लरिमरैंगे पूरि तामसअंश ॥ सखासुत परिवार सब लरिमरैंगे करिद्रोह। पाइहैं जोयुवति ममसमछोह उद्भवमोह ॥ बचनयह गान्धारजा

को कृष्ण सुनि लहि चैन । कहे हम यह रहेचाहत कहीतुमजो बैन ॥ रह्यो जगमें और नाहिं जो शस्त्रके उपचार । करै लरिकै युद्धमें यदुबंश को संहार ॥ सुनो ताते नाश तिनको करनपरतो मोहिं । तौनबिधि तुमकरो कलपित मनहुं मममतजोहि ॥ कृष्ण के ये बचन सुनिकै सुहित पाण्डवबीर । नाशयदुकुलको समुभिकै भये दुखित अधीर ॥ फेरिइमि गान्धारजासों कहे कृष्ण अबाध । नाशभो कुरु बंशको तोभूपके अपराध ॥ कुटिलकपटी अधमद्रोही दुष्टतेरापुत्र । होइ कतनहिं इतो अनरथ जहांताको सुत्र ॥ बचन यहसुनि रहीचुप ह्वै भूमिपतिकी नारि । नृप युधिष्ठिरसों कहेतब वृद्धभूप बिचारि ॥ जीव कितने तजेतन रण खेत में लहि घात । कहौ तौन प्रमाण सो जो तुम्हैं जानों जात ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ साठिकोटि षटकोटि अरु बीससहस दशलाख । तीससहस अरु पांचशत भट जयके अभिलाख ॥ मरेसुभटहय द्विरदको नहिंकहिसकैं प्रमान । यहसुनिकै धृतराष्ट्र नृपकहे सुनोमतिमान ॥ लहेकौनगतिते सकल कहौतौनसमुभाय । यहसुनिकै पांडवनृपति कहतभये हरषाय ॥ जेमुदगहि लरिबाढ़िमरे तेपाये सुरलोक । मरेधर्मगुणि ते लहे पुरगान्धर्ब अशोक ॥ जे भयगहि कछु सुरिमरे तेगे गुह्यकधाम । मरेलरत बिनु तेसबै गेउत्तर कुरुग्राम ॥ घायलभये निरायुधौ बढ़ि बढ़ि मरे सप्रेम । ब्रह्मसदनते जातभे क्षत्रीशूर सनेम ॥ जयकरी ॥ यह सुनिकै धृतराष्ट्र महीप । कहतभयेसुनु सुतकुलदीप ॥ कौनज्ञान ते यह सिद्धान्त । तुम जानतसो कहु हे दान्त ॥ यह सुनि कहे युधिष्ठिर भूप । जब तुमशासन पायअनूप ॥ तहांआइ लोमश तपअंग । तीरथयात्राके परसंग ॥ दिब्यदृष्टि दीन्हें गहि नेहु । ताते हमजानत सबयेहु ॥ इमिकहिकै नृपधर्म बिचारि । कहे बिदुरकी ओर निहारि ॥ तुमयुयुत्सु अरु संजयतात । इन्द्रसेन आदिक अवदात ॥ सूतसेवकनलै निजसात । जारौ सबसुभटन

को गात ॥ यहसुनि बिदुर आदि सबलोग । करि घृतईंधनको संयोग ॥ पृथक् पृथक् रचिचिता सुजान । पहिले लखि लखि पुरुष प्रधान ॥ जितने नृप नृपपुत्र समस्त । जाच्यो तिनकोगात प्रशस्त ॥ लहि निजसुत पतिकरत कराह । कीन्हीं अगणित युवतिनदाह ॥ फेरिजुगुतिसों काठधराय । डारितेलघृत अग्नि लगाय ॥ जारे सबमनुजनके अंग । कहैं कहांलों तौनप्रसंग ॥ धूमधारसों भरोअकाश । नहिं इमिकबहुंभयो जननाश ॥ इमि कहि बैशम्पायन आप । कहतभये उरआनि उताप ॥ भईरजनि तब नृपधरि धीर । गेयुवतिन सह सुरसरि तीर ॥ तहां उदक बिधि कीन्हींबाम । रुदनकरत गहिशोक अछाम ॥ श्रुति नासा कर भूषण त्यागि । उदकदानकीन्ही दुखपागि ॥ तेहिक्षणकुन्ती करिअनुमान । रुदनकरत करिमनहिं मलान ॥ कहीधर्मनृपसों गहिमोह । पीड़ितमोहिं कर्णकोछोह ॥ ममगुरुपुत्र कर्णरणधीर । बन्धुतुम्हार बिदित बरबीर ॥ कुण्डलकवचधरे अभिराम । जो प्रगटो बलविक्रम धाम ॥ कर्णतुम्हार सहोदर भाय । बध्योजाहि पारथ दृढ़घाय ॥ यहसुनि नृपगहि परम उताप । कहेजननिसों करत प्रलाप ॥ किमि तोपुत्र कर्णकहुतौन । तबसोकही रहीबिधि जौन ॥ सोसुनिनृप अति दुखसों पूरि । कहतभये करि करुणा भूरि ॥ प्रथम न कहेमातु यह हेत । होतकहा अब कीन्हेचेत ॥ जोयहदेती प्रथम जनाय । तौनहोत बिग्रह यहभाय ॥ इमिकहि बन्धुन सहित नरेश । कर्णहिंदिये तिलांजलिबेश ॥ तासुकलत्र ल्याय निजगेह।किये अनन्तर क्रियासनेहसुनो॥ भूप तेहि दिनको खेद।समुझतअजहुँ होतनिर्वेद॥ दोहा ॥रामकृष्णजोचहत सोहोत होतनहिं आन ।रामहि कृष्णहिं जपत जो सोप्रबीण मतिमान ॥

इतिगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाबिर-
चितेभाषायांमहाभारतदर्पणेस्त्रीपर्वप्रथमोऽध्यायः १ ॥

स्त्रीपर्व समाप्तम् ॥

महाभारतदर्पणो

शान्तिपर्व राजधर्म दर्पणः ॥

दोहा ॥ करिप्रणाम नारायणहिं नरनरोत्तमहिं नौमि। बन्दि गिरा ब्यासहिरचत भारत भाषासौंमि ॥ कबित्त ॥ धामआपने को धाम धाम धाम पूरणकैं धारत धरणि जो बसैया धामधाम को। यामयाम जाकोयश जलसब यामजमो जाहिर जगतहैं जगैया यामयामको ॥ सोई अभिराम रामदायक अराममोहिं गोपीनाथ मुनिगावै भेदजाके नामको। मत्स्य कोल कच्छप औनारसिंह बामन त्योंभृगुराम रामकृष्ण बौद्धबलिरामको ॥ अपर बारिजातिहूंते अवदात गातहैं बिभात सोतैसमशील सिन्धु साईके शयनके। मुनिमनरंजन प्रभंजन तनयके प्राण खंजनते नीकेहैं अखंजन नयनके ॥ साथी गोपीनाथके प्रमाथी वीररसभेरे हाथी के चढ़ैया कृपाकाराणि कयनके। ऐनसुखमाके जैनमैनहुके नैनऐनचैनद सुनैनराम राजिव नयनके ॥ अकथ कहानी मोसोंजात न बखानी कछू जानतिहैं ज्ञानीजे हैं ध्यानी सबयामके। जनमन रंजन मुदितमहा मोहनहैं शोभाके सदन सदाशीक्षकहैं सामके ॥ गोपीनाथ कबिकामधेनु कल्पद्रुमसे कौतुक करत दाता कमनीय कामके। दैतनको नरसिंह नखसे अनखभारे साधुनके रखवारे चखवारे रामके ॥ रंकभे निरंक

नोकतासे बंकवकताजे लंकपति आदिहे निशंक कीन्हें तचना। स्थान मघवानको महानभो अमान महागानसो करत हैं जहां न मानि यचना॥ गोपीनाथ करता सनाथ कौनतोसो नाथ जाहिर सुकण्ठ औविभीषणकी रचना।रोचनता गहेचारु लोचन तिहारेराम मोचन सुलोचनके शोचनकी सचना॥ कच्छ कमनीयता औसच्छ स्वक्षधरम में शीलसिन्धुकच्छ जासपलके सुभेशके। रक्षकामक्रोधसो अगच्छचाव यक्षवान दक्षजारमन अक्षभोगी जेहिदेशके। यक्षणके नातहोत लक्षण हे गोपीनाथ तक्षण निरखि जासु लक्षण अशेशके। पक्षनिज जनके प्रतक्ष दक्ष रक्षणमेंलक्ष दशमक्ष अच्छराम अवधेशके॥ दोहा ॥ कपि कुलकानन कल्पतरु बनकुलनायकस्वच्छ। सुमिरिताहि चाहतरच्यो भारतभाषा स्वच्छ॥ सोरठा॥ सुमिरिउच्छलनि अक्ष उदधि उलंघन समयकी। भारतसमुद प्रतक्ष भाषाकरि चाहत तर्यो॥ कबित्त॥ गोपीनाथ नन्दन प्रभंजनको लंकाबीच कूदो देखिसाहस सरासरके सरके। तालदेतजाके कालकालको कराल भयो छूटिगे हथ्यारजे कराकरके करके। खलभल हलके हलंकके खलनके दहलकेमहलके बराबरके बरके। डरिडरि ढरिगये ढहर ढहरढर धहर धहरके धराधरके धरके॥ अपर॥ गोपीनाथ आनन समान जासुबलवान बीरहनुमान जासुधरणी सुढारसी। बानन विधानन अमाननके प्राणनके हरताकेकरता कुशलता टुटारसी। शक्रसान भानकी दैतपंचाननकीबाणि घामसाननकीकरतारुढारसी।धीगधांगटाननकी हांकविकटाननकी काननदशाननके कान नकुढारसी॥कबित्त॥धरखिधकेतन बधैतनको बधकरिकर तासधूम धाम रावणकेधामको।तीक्षणनिरीक्षणके ईक्षणकीबीक्षणसों शीक्षण रुदन अरुराधिपकी बामको॥दोनासमलायो द्रोणाचलजो दुवनदौना बीरबातछौना जोनाभूलै पणरामको। गोपीनाथ कोमल कठिन कमनीयजौन करताकहायो कल्पद्रुमके कामको॥दोहा॥ पर

ब्रह्मपरमात्मा दाशरथी प्रभुदान्त। ताहिसुमिरि भाषारचत शां-तिपर्वसिद्धान्त॥ वैशम्पायनउवाच॥ दोहा॥ सुरसरितट पांडवनृपति उदकक्रिया करिभूप। सहितबिदुर धृतराष्ट्रअरु सहसबतियगत रूप॥ मासएक निवसतभये पुरकेबाहर जाय। व्यासदेवआये तहां अरु नारद सुखदाय॥ देवल देवस्थान अरु कण्वमहामु-निराज। औौर वेदबिधि बिप्रबर प्रज्ञावान दराज॥ शिष्यनसह आयेतहां सुनोभूपतेहिपर्ब। देशकाल अनुरूपकै पूजित बैठेस-र्ब॥ शोकाकुल कुरुपति नृपतिकरि आश्वासिततत्र। नारदमुनि बोले सुनहुनृप करिमन एकत्र॥ जयकरी॥ तुम अतिभाग्यवान नृपधर्म। केशव जासुसहायक पर्म॥ निजसुधर्म बलते तुमभूप। प्रबलशत्रुबधि बिजयअनूप॥ पायगहत अबकतनिरखेद। जय लहिक्षत्रिहि उचितनखेद॥ तुमबहुदिन पालेनिजधर्म। उनसब दिन कीन्हें हठकर्म॥ तुम सबबिधि उनकहँ समुझाय। नहिंमाने तब लरेसचाय॥ क्षात्रधर्म करिमहि श्रीपाय। अबइमि खेदकरब अन्याय॥ क्षात्रधर्म कोकरि अनुमान। मोदगहौ गुणिभाग्य महान॥ यहसुनिकै नृपधर्म बिचारि। मुनिसों कहतभयेनिरधारि॥ कृष्णाकृपा अरुबिप्र प्रसाद। भीम आर्जुनके बलनाद॥ पाय बिजय भूलही समस्त। प्रबलशत्रु दलबल करिअस्त॥ पैमुनि मोहिं दुसहदुखतौन। ज्ञातिबन्धुको क्षयभोजौन॥ द्रौपदेयअभि-मन्युउदार। भीषमद्रोण आदि सरदार॥ कर्ण बिदितबल सोद-रभाय। गुणितिहिको न बखानोजाय॥ मुनि इनसबको बधकर-वाय। बिजयलह्यो दारुणदुखदाय॥ जमजाया समबिजयकठोर। समुझि समुझि बिहरत हियमोर॥ पतिसुत जिनके मरेबिचारि। किमिधीरज धरिहैं तेनारि॥ दोहा॥ सुमुखि सुभद्रा द्रुपदजा कैसे धरिहैंधीर। मरेपरमप्रियजासुसुत बिदितबीररणधीर॥ जयकरी॥ अयुतनागसम बली अमान। मरोकर्ण ममबंधु महान॥ प्रथम न हम यह जान्योहाय। कर्ण हमारो सोदर भाय॥ पूर्बकह्यो

नहिं मातामोहिं । यहवृत्तान्त कहत सतितोहिं ॥ नातरु तासों हेत बढ़ाय । देइत आपद बिघ्न बराय ॥ मरो अर्जुनके कर जौन । परशुराम सों शिक्षित तौन ॥ भृगुपति कर्णहि दीन्हों शाप । मुनि हमसुने कहो सो आप ॥ काहे शापदयो भृगुराम । लहि ऐसोप्रियशिष्य सकाम ॥ यहसुनिकै नारद मतिऐन । धर्म नृपतिसों कहेसुबैन ॥ द्रोणाचारय सों तुमसर्व । धनुबिधि सीखतरहे अखर्व ॥ तब एकान्त द्रोण कहँपाय । कर्णकह्यो करि बिनय सचाय ॥ सहरहस्य ब्रह्मास्त्र विख्यात । हमसीखो चाहत हैं तात ॥ अर्जुनके समकरिबोयुद्ध । हमचाहतहैं गुरुता शुद्ध ॥ यहसुनि द्रोण कपटगुनि तास । कहतभये करिक्रोध प्रकास ॥ हैंब्रह्मास्त्र बिप्रकहँयोग । अथवा क्षत्रिहि उचित प्रयोग ॥ नहिं शूद्रहि ताको अधिकार । निजलायक गुणलेहु उदार ॥ यहसुनि कर्णजानि सिद्धान्त । जातभयोपहँ भृगुपति दान्त ॥ हेमहेन्द्र गिरिपैभृगुराम । गीतहँ सुमिरत रघुबर राम ॥ दोहा ॥ निकटजाय भृगुरामके करिप्रणाम मतिधाम । हमब्राह्मण इमिकह्यो सुनि कृपाकियो भृगुराम ॥ नामगोत्र सबबूझि अरु बूझिआगमन हेत । लगे सिखावन धनुषबिधि धनुबिधि बिशदनिकेत ॥ देव यक्ष गन्धर्व गण राक्षस गणसोंतत्र । भयो समागम कर्णसों भृगुपति बिलसतयत्र ॥ एकदिवस शरधनुषगहि कर्णचरत बन बीच । बिप्रधेनु लखिजानिमृग शरहनि बधोनभीच ॥ गीता ॥ जाइकैढिग धेनुलखिकै मनहिमन पछिताय । मुनिहि क्रोधित देखिकै इमिकहतभो गहिपाय ॥ भ्रांति मृगकेबध्यो हमयहिक्षमा कीजैतात । बड़नके हितक्षमा निवसति लघुनके उत्पात ॥ भ्रान्तिवश कृतकर्म लखिनहिं दोषमानत दान्त । बिनय ममसुनि क्षमाकीजै समुझिकै सिद्धान्त ॥ कर्णकेसुनि बचनबोलो बिप्रपूरित क्रोध । अवशिहै बधयोग शठतू मूढ़मत्त अबोध ॥ जानिजीतन हेतशठतू करत धनुषाभ्यास । जूटिहै जेहिदेव-

तासों आनिजयकी आस ॥ प्रगट ह्वैहै तौनदिन यहपापतो शिरघूमि। चक्रतेरे सुरथके गहि ग्रसन करिहै भूमि ॥ तदनुते रोशीश छेदन करिहिशत्रु अमान। कर्णयहसुनि गुरुयोभावी होतिहै बलवान ॥ भाषिइमि द्विजरह्यो चुपनहिं सुने ताकेबैन। कर्णआयो रामकेढिग भरोशोच अचैन ॥ रहनलागो पूर्व्ववत फिरिरामके ढिगतौन। करतसेवा सविधि निशिदिन उचितजेहि क्षणजौन ॥ देखिबिक्रम बुद्धिगुण शुचिकर्म ताकेराम। देतभे ब्रह्मास्त्र बिधिवत सहित अंगललाम ॥ धनुषवेद पढ़ाय बिधि-वतकियो अनुपमदक्ष। एकदिनको सुनोकौतुक भयोजो परतक्ष॥ कर्णकेधरि जानुपैशिर शयनकीन्होंराम।तहां आयोकीट शोणित आमिष आशीआन ॥ महादारुण जानुबेधन लगोसोअघआय। धीरधरि नहिंजानु कम्पित कियोकर्ण सचाय॥ बहीधारारुधिर की तबजागिकै भृगुराम। देखि शोणित भयेबूझत तासुकारण छाम ॥ कर्णभाष्यो कीटकीन्हो जानुबेधन तात। तुम्हैं निद्रित जानि हम नहिंकियो कम्पित गात ॥ रामदेख्यो कीटशूकर रूप बसुपदमान। दशनसूची सरिस तीक्षणरोम भयद महान ॥ लखतही भृगुरामके वहकीटभो गतप्रान। तुरित राक्षस रूप ठाढ़ोभयो घोर अमान ॥ श्यामतन अरुनील ग्रीवा मेघबाहन तौन। जोरिकर भृगुरामसों इमि कह्यो बिक्रम भौन ॥ मुक्तभे ह-म नरकते अबदरशप्रभु तव पाय। देहु शासन जात हम निज देश शोच बिहाय ॥ कह्योतबभृगुरामको तुमअसुर बपुहे गूर्ब। कह्योसो हमअसुरहे सुनुदंशनामक पूर्ब ॥ देवयुगमें हरीभृगुकी तिया हमअतिमन्द। पायभृगुकोशाप तबभेकीटरूप सदन्द ॥ बिनयबहु सुनिशापको मुनि अन्तभाषेटेरि। पायदर्शनरामको तुमअसुर ह्वैहौफेरि ॥ पायदर्शन आपके ममछुटो अघको धर्ष। भाषिऐसे नौमिरामहिं गयोअसुर सहर्ष ॥ क्रोधकरि तब राम भाष्यो कर्णसों तेहिकाल। बिप्र नहिंसहिसकत ऐसोदुसहदुःख

कराल ॥ गहत ऐसो धैर्य्य क्षत्रीकौन तूकहुसांच । बचन यह सुनि कर्णभाष्यो पाय तपकीश्रांच ॥ ब्रह्मक्षत्रीमध्यमें लहिजन्म हम हेतात । राधेय सूतज कर्णहैं सबजगतमें बिख्यात ॥ अस्त्र के बरलोभ काजे हमछिपाई जात । क्षमाकरिये दोषमेरो कृपा करि अवदात ॥ पिता गुरुमें भेदकछुनाहिं जानिहम यह हेत । गोत्रतबसो बह्योआपन पृथक् करिकैचेत ॥ अस्त्रलोभी दास हमप्रभु क्षमो मो अपराध । भाषिइमि कैनमित महिपरि करत भो अवराध ॥ कह्योतब भृगुराम जेहिहित कही मिथ्यामोहिं । समयलहि ब्रह्मास्त्रसोनाहिं प्रातह्वैहैतोहिं ॥ जाहु अबनाहिंमोहिं भावत कहतमिथ्याजौन । होहुगेतुम महाउद्भट परमबिक्रमभौन ॥ बन्दिरामहिं आइ निजपुर कर्णभट शिरताज । कह्योनृप सों लहेहमसब अस्त्रशस्त्र समाज ॥ कर्णयहिबिधि रामसों लहि अस्त्रबिधि अरुशाप । भयोकुरुपति साथ राजित भरतदारुण दाप ॥ दोहा ॥ सुनोभूप अबकर्णके बिक्रमके इतिहास । जोकलिंगपुरमें कियो दुस्तरबीर बिलास ॥ रच्यो स्वयम्बर सुताको चित्रांगद क्षितिपाल । आयेतहँ राजासकल जेभट बीरबिशाल ॥ कर्णसहित तहँजातभो दुर्योधन क्षितिकन्त । रंगभूमिमें आइ तहँ बैठेनृपति अनन्त ॥ जरासन्ध शिशुपाल अरु भीष्मकनील शृगाल । महाबली नृपभोज अरु अरुबिशोक क्षितिपाल ॥ अरुकपोतरोमा नृपति शतधन्वामहराज । और तहांबैठतभये अगणित भूप समाज ॥ कन्यातहँ आवतिभई गहि जयमाल अनूप । रंगभूमि महिमाधिचली बिरदसुनत लखिरूप ॥ दुर्योधनको पासलहि बंशबिरद सुनितासु । नहिंमेल्यो जयमालतिहि चली औरपै आसु ॥ चौपाई ॥ सो न सकोसहि नृपदुर्योधन । कन्याको कीन्होअवरोधन ॥ पाणिपकरिरथपर बैठाई । चलो कर्णसह ओजबढ़ाई ॥ सोलखि सबराजा रथचढ़िचढ़ि । चले भटनसह टेरत बढ़िबढ़ि ॥ सोसुनिफिरो कर्णसहराजा । बर्षत

अबिरल बिशिख समाजा ॥ भूपभई तहँतुमुल लड़ाई । अति रण कियो कर्णदृढ़घाई ॥ रथधनुध्वजा गदाशरकूरे। अगणित शक्तिकोटि महिपूरे ॥ अगणित हयगज सूतन बधिकै । अगणितयोधन मारिबरधिकै ॥ निशिसम अन्धकार अति भिरि कै। तुमुलयुद्ध कीन्हों तहँ थिरिकै ॥ जीति पराजितकरिसबराजन । चलिबजवावत बिजयीबाजन ॥ रक्षत दुर्योधन क्षितिपालहि । आयोहास्तिन नगर बिशालहि ॥ ऐसो कर्ण दुसहरण करकश । रह्योबिदितभट बलीअधरकश ॥ औरसुनोताकीप्रभुताई । कहत सांचनहिं झूठबड़ाई ॥ कर्णबीरको बिक्रमसुनिकै । जरासन्धनृप जियमें गुनिकै ॥ कर्णहिंबोलि आपुबाढ़िआगे । कीन्हींद्वन्द युद्ध भयत्यागे ॥ प्रथमसुरथ चढ़िशर धनुगहिगहि । कीन्होंयुद्ध भागु मति कहिकहि ॥ दिव्यअस्त्रकी बर्षा धरिधरि । दिव्यअस्त्र सों बारन करिकरि ॥ दोऊ घोरयुद्धतहँ करिकै । द्वैद्वै बिधनु खड्ग कर धरिकै ॥ महायुद्ध करि गौरव लीन्हे । बाहुयुद्ध फिरिरम्भन कीन्हे ॥ नृपतब कर्ण महाबल चीन्हों । दाबि सन्धि सन्धिल करिदीन्हों ॥ तेहिक्षण लखि बिकार निजतनको । तज्योयुद्ध नृप द्वै ऋजुमनको ॥ सादर कर्णहि भयो सराहत। हमंप्रसन्न इमि- कह्यो उछाहत ॥ नगरमालिनीपति करिसादर । अंगदेशदीन्हीं करि आदर ॥ तबसों कर्ण भूमिपति ह्वैकै । कुरुपति संगलसो मुदग्वैकै ॥ कर्णसकल जगजीतन लायक । जो नहिंशाप देत भृगुनायक ॥ दोहा ॥ बिप्र न देतो शापजो कवच न लेत सुरेश । तोको लरिकै कर्णसों लहत बिजयकोलेश ॥ क्षात्रधर्म प्रतिपाल करि मरोयुद्धमें तौन । क्षत्रिहि उत्तम और नहिं शोच करतहौ कौन ॥ कुन्तीसुतसों बचन इमि कहिकै नारद प्रज्ञ । होइरहेचुप कछुन पुनि बोलेसुनु धर्मज्ञ ॥ जयकरी ॥ अति शोकाकुल सुतहि निहारि । पोंछति तजति चषनसों बारि ॥ कुन्तीकही तजोसुत शोक । काल सदन में सबको ओक ॥ ताहि बुझायो हम बहु-

बार । सूर्य्य सुनायो गिराउदार ॥ कर्णनहीं मान्यो प्रणठानि । शोकतजो ध्रुवभावी जानि ॥ सुनत बचन यह धर्ममहीप । चष जल तजत कह्यो कुलदीप ॥ यह वृत्तान्त करोतुम गुप्त । ताते यहदुख भयो अलुप्त ॥ सो गुणि शापदियो करिकोप । तियमति मंत्रसकै करिगोप ॥ इमिकहि शोकभरो कुरुभूप । भोसधूम पावकके रूप ॥ सोलखि अर्जुनकी दिशिमान । कहत भयोऋजु बचन महान ॥ राज्य लोभलगि अनरथ भूरि । हम कीन्होंनिर्दयपणपूरि ॥ जोहम गह्यो राज्यकी आश । ताते क्षात्रबंशको नाश ॥ भयो दोषताते ममसर्ब । हमलरिकियो कर्म अतिखर्ब ॥ बधि धृतराष्ट्र तनय सबभाय । लहब कौन गतिकहो नजाय ॥ नातगोत हितबन्धु अनन्त।पुत्रसुपौत्र सखा क्षितिकन्त ॥ जाके हेत बधाये हाय । लहब कौनसुख सोमहिपाय ॥ मोदत श्वान चाबिजिमि अस्ति । तिमियहि राज्य महीसुखआस्ति ॥ सोयह राज्य न भावतमोहिं । बन्धुबर्ग बिनु अवनीजोहिं ॥ दुर्योधनकी मति अनुसार । क्षात्रबंशको भोसंहार ॥ तुममम राज्य हेतअवदात। कीन्हों भूरि पराक्रम तात ॥ तुम अबलेहु राज्य अधिकार । पालौप्रजा सहित ब्योहार ॥ हमअब करब बिपिन मधि बास । मुनिन संगलहि परम सुपास ॥ मोहिंनराज्य भोग को काम । इमिकहिमौन रहोनृपछाम ॥ धर्मनृपतिके ऐसेबैन । सुनि बोलेपारथ मतिऐन ॥ नीतिनिपुण तुमधर्मनरेश । जानत सकल धर्म्म सबिशेश ॥ कतभाषत जिमि कहतअयान । जेबैकलअरु क्लीवसमान ॥ धर्म्मपालि द्विजसमबन घूमि । क्षात्रधर्म करिदीन्होंभूमि॥तामेंकौनपाप अधिकार । नशत काललहिसबसंसार॥ जबजाकेकर जाकोघात । तौन होतकछु लहिउत्पात ॥ सोई भयो नतोकछुदोस । नाहकभूप करौअफसोस ॥ प्रबल शत्रुबधि इमि जयपाय । खेदकरबहै अतिअन्याय ॥ यहिबिधिराज्यपाय कैत्याग । करत नकोऊ पूरणभाग ॥ राज्य त्यागको देखिप्रयोग ।

तुमकहँ कहा कहैंगेलोग ॥ जेहिलागि कीन्हेंऐसेकर्म। ताकोत्यागब कौनसुधर्म ॥ कुटिल पापरत भूपतिजौन। भिक्षाटन करतहैतौन ॥ दिनप्रति जासुवृद्ध अधिकात। ताको भाग्य परम अवदात ॥ ऋद्धिवृद्धिहित भूपतिसर्ब। निशिदिन शोचतनीति अखर्ब॥ दारिद सर्बपापकोमूल। दारिदहै रौरवकोकूल ॥ जिमि पापीशोचतदिनरैन। तथादारिदहि कबहुंनचैन ॥ भूपतिभयो दारिदी जौन। ताकीदशा सकै कहिकौन ॥ त्यागिसुधन दारिदी सोंप्रेम। करब न नीति निपुणकोनेम ॥ दोहा ॥ सकै न कछुकरि दारिदी दोऊदिशा नशात। होतसधन मतिमानको दोऊदिशि अवदात ॥ सधनपुरुषके सधतहैं अर्थधर्म अरु काम। होत काज धनहीनको ग्रीषमसर समछाम ॥ धनते धनहै होत अरु धनतेहोत सुकर्म। धनतेप्रगटत धर्मजिमि गिरिते सरिता पर्म ॥ काम क्रोध अरु हर्ष मद धीरज बड़ोबिचार। धनतेप्रगटत भूप अरु सधत सकल उपचार ॥ सोपण्डित गुणवानगुरु दाताशूर सुजान। दासबन्धु हितलासु सब जोजगमें धनवान ॥ गोहय सेवक बन्धुहित बिनुहैं जोकृशतौन। नहिं शरीरकृश तौनकृश धनबिनु कृश सबभौन ॥ मुनिन संगमहि अजिनधरि दर्भ कमण्डलु पानि। होनीभूपहि उचित नहिं राज्यकरो हितमानि ॥ सोरठा ॥ अर्जुनकेये बैन सुनि सुधर्मरत धर्मनृप। मर्मसहितमति ऐन कहेकर्म बनबासके ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ रोला ॥ मूलदारिद पाप को तुमकहेसति नाहिं आन। सधतधनते कामसिगरो इहौसत्य बिधान ॥ सुनोतौन गृहस्थको ये उभय सुख दुखदानि। भयो मृगवत बिपिनबासी ताहिबन सुखखानि ॥ ताहिधनसों काम नहिं नहिं दरिद कछुदुखदेत। ताहिदेत दरिद्र दुखहै जासुधन सों हेत ॥ अवशिचहत गृहस्थकोधन बिपिनबासी बारि। मूल फल कुशअजिनते सन्तुष्टपुष्ट बिचारि ॥ सुनोताते त्यागिममता बसब बनमेंजाय। धारमुनिव्रत मृगन सँगकरि मृगनसम दृढ़

काय ॥ भूपके येबचनसुनिकै भीमसेनसुजान । कहतभेअनखाय ऐसोकहत नहिं मतिमान ॥ रही ऐसी बुद्धितुवतौ प्रथम कहते तात । ग्रहणकरत न शस्त्रको हम होतनहिं उत्पात ॥ भीखमांगत मोक्षहित नहिंकरत दारुणयुद्ध । जानि जोयह परतभूपहि बिजय होतिअशुद्ध ॥ छली गरबी प्रबल अरि धृतराष्ट्रपुत्रनमारि । लहब अबफलकौनतुममहि तजतधर्म बिचारि ॥ यथाप्यासा जाय सरतट फिरत पियत न बारि । वृक्षचढ़ि मधुपाय जिमिमधु पियतनाहिं भयभारि ॥ यथा सहसन कोशचलि तेहिनगरकेढिग जाय । फिरत प्रविशत नगरमधि नहिं महाश्रम हियछाय ॥ क्षुधित भोजन सिद्धकरि नहिंखात जिमि अनखात । यथाकामी तरुणि नहिंलहि करतरति तजिजात ॥ भईतैसीदशा ममलहि बिजय त्यागतराज।भलीहमको हारिहीका बिजयलहिभोकाज ॥ पायऐसो बिजययश फिरि अयश चाहतलेन । कहतताहिकपोत सबजो आमिष त्यागतशेन ॥ हारिसर्बसकिये तेरहबर्षतब बनबास । युद्धकरि सो त्यागिचाहत फेरि बिपिन बिलास ॥ सगर नहुष ययाति आदिक भूपकरि रणभूरि । राज्यकरिकै नरकपाये सुने निकट न दूरि ॥ महिषकोल बराह द्विरदै मृगैपावतस्वर्ग । बिपिनबसि अरु ग्राम्यजन सबलहतहैं अपबर्ग ॥ इहौंअबलौं सुनेनहिं नहिंसुने करिसंन्यास । वृक्षसिगरे मुक्तभे तजिजगत जनको पास ॥ सुनोभूपति बसति नहिं गृहत्यागमें अतिसिद्धि । सिद्धि बसति सुकर्ममें अरु पुण्य धनकीवृद्धि ॥ जीवासिगरेलहत हैं गतिकर्मके अनुसार । सुनोनृप करतव्यताते कर्मकेव्यवहार ॥ दोहा ॥ भीमसेनके बचनये सुनि अर्जुन मतिरास । धर्मनृपतिसों कह्यो नृपसुनोपूर्ब इतिहास ॥ अर्जुनउवाच ॥ कोऊ बिप्र गृहस्थ गुणि चले बिपिन गृहत्यागि । इन्द्रधारि खगवपुतिन्हैं निन्दित भे हितलागि ॥ जयकरी ॥ खगउवाच ॥ धन्य बिघशासी नरजौन । नहिंउच्छिष्ट भोजनकृततौन ॥ सोसुनिकै तेबिप्रसचेत । कहेबिहँग

कहुयाको हेत ॥ कौन बिघशाशी मतिमान। कोउछिष्ट भोजन कृतवान ॥ पक्षीबोलो सुनोयथेष्ठ। गऊचतुष्पद इदमें श्रेष्ठ ॥ द्रव्यनमें सुवरण बरहोत। शब्दनमें बरमंत्र उदोत ॥ द्विपदनमें बरबिप्र महान। ताकहँ वैदिककर्म प्रधान॥ ऋतुमासादिक ब्रत मख सर्ब। करैं करावैं बिप्र अखर्ब ॥ यज्ञस्वर्गको पन्था पर्म। ताते उत्तम वैदिक कर्म ॥ हैगृहआश्रम महाअनूप। परमसिद्धि को क्षेत्र स्वरूप ॥ देव पितरको अर्चन यत्र। अतिथिनको आश्वासन तत्र ॥ सर्बकर्मको जहँ अधिकार। ताकोआश्रित सब सबसार ॥ जेबिधिवत शुचिअन्न बनाय। देव पितरकहँ अरपि सन्याय ॥ फिरि सादर आगतन खवाय। सहपरिवार खातसुख पाय ॥ सुनोबिघशाशीते स्यात। चहतस्वर्गते अतिअवदात ॥ जेउछिष्ट आशी सुनुतौन। तजिकै गेह किये बनगौन ॥ तजि परिवार गहेसंन्यास। देव पितरकहँकिये निरास ॥ धूरिधूसरित गातमलीन। बनमें फिरत क्षुधाते क्षीन ॥ खगमृग कृमिके जूठे पात। फल अरु मूल नित्यसो खात ॥ सोउछिष्ट भोजन कृत तात। पूर्बकर्मकोलहिउतपात ॥ यह दुखसहि चाहतजोक्षेम। तौन मिलैजो निबहै नेम ॥ दोहा ॥ शक्रबिहँगके बचन ये सुनिकै बिप्र सुजान। फेरिपलटि गृहबासकरि कियेकर्म सुखदान ॥ ताते तुम धर्मज्ञप्रभु धीर धारितजि मोह। पालनकीजै महिप्रजा सहित सुहित सन्दोह ॥ सोरठा ॥ भरेअर्थ गम्भीर अर्जुनके ऐसे वचन। सुनि सुनकुल मतिधीर कहतभये नृपधर्मसों ॥ चौपाई ॥ नकुलउवाच ॥ तात सुनो ममवचन सुहाये। वैदिककर्म देतमनभाये ॥ निवसत सुमन कर्मफल माहीं। बिना कर्मकोउ निवसत नाहीं॥ उत्तमकर्म गृहीको गावत। करि सुकर्म नर सुरपुर पावत ॥ गृहको त्याग न त्याग कहावत। ममता त्याग त्यागसुख छावत ॥ हठ ब्रतधारि देहजो त्यागत। तामस त्याग नाम सों पागत ॥ गृह तजि रहत मूलफललागी। सुनोभूप सो भिक्षुक

त्यागी ॥ गृहबासि कर्म गृहीको धारत । वेदउक्त निजधर्म बिचारत ॥ मतिमानन को पथमन भावन । गुणत न गहत बिकार बिभावन ॥ सुख दुखफल माधि भाव न लावत । सो त्यागी आनँद सरसावत ॥ सम दम धीरज सत्य बढ़ावत । शुचिरहि बालनकर्म पढ़ावत ॥ देव पितरअरु अतिथि न पूजत । वेद पुराण बारता कूजत । उतपति करत प्रजासुख दायक । पालत धर्म पालिबे लायक ॥ करतकर्म सबत्यागि फलासा । सो त्यागी नहिं करि बनबासा ॥ उतपतिकरत प्रजाबिधि गुनिकै । करिहि यज्ञ ममबाणी सुनिकै ॥ करत न यज्ञ धर्मधन लहिकै । सोगृहस्थ शठकिल्बिष गहिकै ॥ तातेगहौ प्रजाप्रतिपालन । यज्ञकरो इत उत हितचालन ॥ दोहा ॥ प्रजा न पालत नृपति जो देतन बिधिवतदान । लेत न शाजित राज्यसुख सो नृप महा नदान ॥ नहिं पालत शरणागतन अरिन न देत सजाय । शरद मेघसम भूपसो प्रगटत जाय नशाय ॥ तजौ शोच नृप नीतिगुणि करो राज्य सुखभोग । छली बन्धुबधिमहि लियो क्षात्र धर्म उपयोग सोरठा ॥ सुनत नकुलकेबैन चैनभरे सहदेवअति । मुद मंगलके ऐन कहेधर्म क्षितिपालसों ॥ सहदेवउवाच ॥ चौपाई ॥ भूपतिसुनो भूमि नहिं त्यागे । होतन सिद्धि बिपिन अनुरागे ॥ मनकीवृत्ति छुटै जब भाई । बरधाति तबै सिद्धि प्रभुताई ॥ रागद्वेष ममता मदत्यागी । पटुगृह चरत धर्म पथ लागी ॥ अक्षर दोय मृत्यु कहवावत । अक्षर तीनि ब्रह्मपटु गावत ॥ ममयह बुद्धि मृत्यु सुनु स्वामी । नहिं ममभान ब्रह्म अनुगामी ॥ सेवत ब्रह्मबुद्धि जो आरज । ताहि न दोष किये कछुकारज ॥ नहिं आपुहि करता अनुमानै । न्यामक ईश्वरकी गति जानै ॥ इतउत सुखी रहत सो राजा । गुणत ब्रह्ममय सृष्टिसमाजा ॥ वेदउक्त पथ चरत सुभावन । सो नृप चरत मोद मन भावन ॥ ताते तजि निरवेदअलायक । बिलसौभूमि भूमिके नायक ॥ जो नृपभूमि

पाइ नाहिंभोगत। निष्फल ताकोजन्म प्रयोगत॥ भोगो भूमि तजो मति ऐसी। महिलाहि त्यागो नीति अनैसी॥ जबसह देव कहीइमिबानी। तबइमिकही द्रौपदीरानी॥ नृपतो बन्धुबचनतौदूषत। गुणिवृत्तान्त सुमन समसूखत॥ मोहित इन्हेंकरौ हितकरिकै। भूमिभोगकी इहानगहिकै॥ एतोधर्महेत बल्लवैकै। बनदुखसहे बिप्रसमकैकै॥ दोहा॥ द्वैतेबिपिन माधि भ्रातरनअति पीड़ित लाखिनाथ। कतभाषे दुर्योधनहिं बधबबन्धुगण साथ॥ बधिसगर्ब दुर्योधनहिं भूमिभोगि धनजोरि। यज्ञकरब दैद्विजन कहँ सुबरणकइककरोरि॥ निजमुख ऐसोभाषिनृप अबकतगहत गलानि। राज्यकरोनृपनीति युत क्षात्रधर्मअनुमानि॥ बीरबधत हैंअरिनकहँ बीरभोगवतभूमि। बीर करतहैं दानमख नहींखण्डरण जूमि॥ दुर्योधन कर्णादिके समुझिकर्म उतपात। राज्य करो निरबेद तजिबूझि क्षात्रपद ख्यात॥ प्रथमजुवा में हारि सबकरवाये बनबास। फिरिकरवाये युद्धकरि क्षात्रबंशकोनास॥ फिरि भाषत बनजान अब प्रभुयहकौन सुधर्म। तुमसर्वज्ञउदार मतित्यागे चहतसुकर्म॥ प्रभुतव सिगरेबन्धुजो होतेमत्तसुभाव। तौ करिकारागृह तुम्हेंकरते राज्यबनाव॥ राज्यछोड़िकै आपदा कत चाहत क्षितिपाल। अम्बरीष अरु नहुषसम भोगोभूमि बिशाल॥ सोरठा॥ द्रुपदसुताके बैनसुनि अर्जुन जगजैनभट। कह्योभूपकछुमैंन राज्यकरोमुदऐनगुणि॥ अर्जुनउवाच॥ रोला॥ साम दाम बिभेद दण्ड उपाय नृपकेचारि। प्रथमकीन्हें तीनिमानो नहीं शठहठधारि॥ दण्डकरि निजभूमिलीन्हें कौनदोषबिचार। प्रबलनृपकहँ दुष्टकेहित दण्ड अति उपचार॥ सुनोभूपति दण्डप्रदको सधतासिगरो काज। दण्डदेन असक्ततासु न रहत अबिचल राज॥ दण्डपालन प्रजारखतअर्थ धर्म सकाम। धन्यधन गृह नगर रक्षत दण्ड जगमें आम॥ अश्व गजबश होतदीन्हे दण्ड पशु नरसर्ब। दण्डते न उपाधिठानत कागआ-

दिक खर्व ॥ व्याल बाघ बराह आदिक दुष्टजन्तु समस्त । दण्ड के भयरहत गोपतहोतहैं न प्रशस्त ॥ बाक्दण्ड द्विजाति क्षत्री बाहुदण्ड अमान । दानदण्ड वइश्य सेवादण्ड शूद्र न आन ॥ दंडकेभय रहतआश्रम बरणको मर्य्याद । दण्डके भयमत्त जन नहिं सकत करि उन्माद ॥ भारबाहन भार बाहत दंडभय विनु तात । बालपढ़त न दंडभयं बिनुकरत तिय उतपात ॥ दंडभय बिनुप्रजा त्यागत पूर्वपथ शुचिगात । दंडदायक नृपति नययुत लहतवृद्धि बिभात ॥ इन्द्र वृत्रहिमारि भूप महेन्द्रभो बिख्यात । तथा शत्रुन दंडदायक नृपतिभो अवदात ॥ आततायिहि दंड देके लई पैत्रिक भूमि । भूपभोगोराज्य मतिदुख रहोबनमें घूमि ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ अर्जुनके येबचनसुनि बोलोभीम अमान । कियेकछू रातेनयन सुनोभूप मतिमान ॥ भीमसेनउवाच ॥ हमनकहो चाहत नहीं कहेबिना रहिजात । सुनोभूप ताते कहत नीति उचितजोबात ॥ रोला ॥ ब्याधिदोय प्रकारकी नृपहोत सुनियेतौन । एकदैहिक मानसिक सुनुभेद इनमेंजौन ॥ शीतआतप बातसों जोहोत है उतपात । तौनदैहिक ब्याधि है इमिकहत मति अवदात ॥ सत्यरजतम जनितहै उतपात जाहिरजौन । तौनमानस ब्याधिजानो सुनोनृप मतिभौन ॥ दुःख हर्षहि दूरिकरता हर्षदुःखहिदूरि । दुःखमें सुखहोत सुमिरण हर्षमें दुखभूरि ॥ हर्षमेंसुख स्मरत तुमनहिं स्मरतदुखमें हर्ष । देवगति यहभोग पूर्वक करत मतिकोकर्ष ॥ पूर्वको अपकर्मउनको करतसुधि नहिंतात । बिपिन को दुखभूलिकै अबबिजयलहि पछितात ॥ समुझिभूप बिराटपुर को गुप्तहित उपयोग । युद्धको दुखसमुझि त्यागो ग्लानि दारुण रोग ॥ भाग्यबल नृपबिजय पायकरोउर्वीभोग । यज्ञदान बिधान करिकै करोमोदित लोग ॥ दोहा ॥ सीतारामहिं सुमिरिकै शान्ति पर्व सुखदाय । यह बाइस अध्यायको कह्यो एक अध्याय ॥

इतिमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिराजधर्मेप्रथमोऽध्यायः ॥

दोहा ॥ भीमादिक पाण्डवनके सुनिकैबचन अहीन। व्यास देव नृपधर्मसों कहेबचन अतिदीन ॥ व्यासउवाच ॥ सुनोभूपतुव बन्धुसब कहतउचित शुचिबैन। गेहत्यागि बनबासनहिं उचित तुम्हैं मतिऐन ॥ देव पितर अरु अतिथिगण भृत्य दारदी जूह। तोषत धनी गृहस्थसो पशुसब जीव समूह ॥ पिता पितामह राज्य यह पालन करो महीप। समदम संयम क्षमागहि यज्ञकरो कुलदीप ॥ द्रव्यजोरिबेमों निपुण पात्रबिचारि उदार। दण्डधारिबेमों कुशल यहन्टपनीति बिचार ॥ नृप सुद्युम्न वरवित भयो दण्डधारि हेभूप। सुनोतौन इतिहास हम कहत अनूपमरूप ॥ शंख लिखितद्वै बिप्रहे भ्राता अति मतिमान। बन में आश्रम पृथकरचि हेतपतपत महान ॥ जयकरी ॥ लिखित एक दिन गयो बिभात। शंख बिप्रके आश्रम तात ॥ शंखनहो निजआश्रम माँह। जाय लिखित तहँसुनु नरनाह ॥ देखिधरो फल आश्रम बीच। सोलैलागो खाननभीच ॥ इतने में तहँआयो तौन। लिखितगयोहो बनमधि जौन ॥ तहां लिखितफल खात निहारि। इमिबूझतभोहिये बिचारि ॥ कहँपायो यहफल अभिराम। निज अराजित समखात अधाम ॥ सोसुनि कह्यो लिखित हतरूप। इतही यहफल लह्यो अनूप ॥ तब इमिकह्यो शंख अनुमानि। तुमफलतेय कियो अघखानि ॥ लेतपरोक्ष दियोबिनु जौन। पाप लहततस्कर समतौन ॥ जब सोलहे दण्ड अघयुक्त। तब फिरिहोइ पापसोंमुक्त ॥ तातेजाय भूपकेपास। निजकुकर्म यहकरोप्रकास ॥ दण्डदेइजब नृपतिसुधर्म। तबगतपातक होहुअभर्म ॥ यहसुनि लिखित पापकेशङ्क। जायभूपसों कह्योकलङ्क ॥ फलअदत्त इमखायोभूप। दीजैदण्ड धर्मअनुरूप ॥ पूजितद्विजको ऐसोबैन। सुनिसुद्युम्न भूपतिमतिऐन ॥ पाणिजोरिकै बिप्रहिनौमि। कहतभयो बाणीअतिसौमि ॥ उचितकहत तुम बिप्रउदार। भूपहिसदा दण्ड अधिकार ॥ तुम

तपकरता विप्रअहीन । तुमकहँजात दण्ड नहिं दीन ॥ मांगो और तौनहमदेव । नहिंअघहेत निठुरतालेब ॥ तबद्विजकीन्हों हठ अधिकार । तब नृपकियो दण्ड स्वीकार ॥ छेदन करवाये युगपानि । गयोबन्धुढिग द्विज हितमानि ॥ दोहा ॥ शंखलिखित कहँ देखिकै महेकरो कतिखेद । सरित बाहुला मधिकरो मज्जन तजिनिरबेद ॥ लिखितजाइ तब सरितमधि सपरण लागो भूप । तहां पाणि नूतनकढ़े बारिजातके रूप ॥ पाणिदेखिके लिखित ह्वै बिस्मित बाहरआय । भयो देखावत शंखकहँ महामोद हियछाय ॥ शंखकहे तब लिखितसों यह ममतप परभाव । लिखित कहेकत नहिं किये तुमहीं दण्ड बनाव ॥ शंख कहेनहिं विप्रकहँ दण्डदेब अधिकार । दण्डधर्महे नृपति को हरतापाप पहार ॥ यहिविधि भूप सुद्युम्न नृप भयो दण्डदे ख्यात । दण्ड धर्महै नृपनको नहिं मुण्डन करिखात ॥ सोरठा ॥ कहि ऐसो इतिहास व्यासदेव नृपसों कह्यो । गुणि निज धर्म प्रकास राज्यकरोसब खेदतजि ॥ रोला ॥ बसतबनमेंभीम आदिक बंधुतो रणधीर । करि मनोरथ रहे भोगन देहुतौन गँभीर ॥ महा दुखको अंत लहि अब सुखहि भोगन देहु । पालिसुधरम यज्ञकरिकै परमपद गतिलेहु ॥ धर्मशास्त्र बिचारपूर्वक करोरक्षण लोक । शास्त्रजामति प्रबलकरिकै लहोआनँदओक ॥ साधुशूर सुजान सुधनी शास्त्रविद मतिमान । गुणिनको गुणपालि सादर करोराज्यमहान ॥ निदरि इनकहँ होतनृपजो बिषयमोंलवलीन । शत्रुतस्कर राज्यताको करतहैं अतिक्षीन ॥ नीतिधर्म सुभूमिके हितमरतलरि क्षितिपाल । लहतहैंसुरलोकनृपसो सुयश होतबिशाल ॥ हयग्रीवमहीप निरजनधर्मलगिलरिपूर्व । मारिशत्रुनजाय वधिजिमिलह्योसुरपुरगूर्व ॥ समयलहि तस्करनसोंलरिप्रजाहित क्षितिरौन । हयग्रीव महीप तनतजि कियो सुरपुर भौन ॥ दोहा ॥ व्यासदेवके बचनसुनि कहेधर्म क्षितिपाल । नहिंछूटति ममग्ला-

नि गुणिबंश बिनाश कराल ॥ सुनिबिलाप सबतियनको धारत वनत न धीर। मोहिं न भावत राज्य प्रभुमोहिंदेत अति पीर॥ सोरठा॥ सुनिभूपतिके बैन व्यासदेव इमिकहतभे। सुनोभूपमति ऐन मरत न कोऊ कालबिनु॥ रचेबिधाताजौन कालपायसो नशतसब। बिनुआये क्षणतौन नाशेकोऊ नशतनहिं॥ निरमित बरधन काल लहि बरधत अगुणी नरो। लहिलघुदिन धनपाल गुणीजातहैं दारिदी॥ दोहा॥ कालपायकैं असितासित रैनिहोति सुनुतात। वृक्षलहतहैं फूलफल भरत कटतहैं पात॥ चौपाई॥ पूरबभूप शेनजित भाख्यो। बिधिजोक्षण निरमित करिराख्यो॥ उतपति प्रलयतौनलहि होई। भावी कहवावतहै सोई॥ भूप होतिहै भावी जैसी। लहिसोसमय होतिमति तैसी॥ पटुलहि प्रलय धीरता भेखै। और न लहै प्रलयसो देखै॥ सम्पतिपाइ कर्म्म अवरेखै। धनवाननकी कला निरेखै॥ शोचनकरत आ-पदा लहिकै। पटुदिन बितवत धीरज गहिकै॥ दुखअस्थान सहस शत सुखके। मोहत मूढ़ न बिना कलुषके॥ तृष्णा रतकहँ अतिदुख छावत। दुख आरतजोसो सुखपावत॥ दुख को अन्तभये सुख आवत। दुखके अन्त सुखेमन भावत॥ परदुख देखि गहत दुखभारी। सोनहिं कहूं होत सुखचारी॥ तातेजोनाहिं सुखदुख मानत। प्राप्त होतसो कर्मज जानत॥ सोई मोद लहत सुनुराजा। नाशमान सबभूत समाजा॥ इ-मिकहि गयो शेनाजित भूपति। यहशुचि बाणी सुमति अनूपति ऐसेबचन ब्यासके सुनिकै। भूपयुधिष्ठिर मनमें गुनिकै॥ कहे फाल्गुणसों पियबानी। सुनोतौन जनमेजय ज्ञानी॥ यह इति हास परममति दायक। नीतिधर्मगति बरधन लायक॥ युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ हैसुधर्म श्रेयदमहा लहत सुधर्मीसर्ब। प्रजा पालि करियज्ञ नृप पावत स्वर्ग अखर्ब॥ सधनीके सब सधत है निधनीको कछुनाहिं। जीवदेह तजिकाल लहि फिरि आवैं

फिरिजाहिं ॥ आप कहतसो सांचसब पैसुनिये ममबैन । समुझि मरण अभिमन्युको धीरजधरो रहैन ॥ द्रुपद सुताके सुवन सब अरुबिराट नरनाह । धृष्टद्युम्न अरुद्रुपदको मरण खुभत मनमाँह । धृष्टकेतु आदिक नृपन कोगुणि मरण अवात । मो-हिं सतावत शोकप्रभु नहिं धीरज धरिजात ॥ चौपाई ॥ जासु अंकमधि क्रीड़ा कीन्हे । जासों सुधरम शिक्षालीन्हे ॥ बिदित पितामह बरव्रतधारी । परशुरामके समरणचारी ॥ जाकेसगुण जात नाहिं गाये । राज्य लोभ लगि ताहि बधाये ॥ पूजन योग्य पूज्य सबहीको । बिप्र अचारज धनु धरणिको ॥ योगी गुरू बीर गिनती को । सब पाण्डब कहँ आदरही को ॥ तौ न बीर सो सुत बध सुनिकै । बूझो मोहिं सत्य बध गुनिकै ॥ सोहम राज्य लोभ अति गुणिकै । ताहि बधायो मिथ्या क-हिकै ॥ हम अभिमन्युहि टेरिहठायो । ब्यूह बिदारणहेत प-ठायो ॥ सिंहगुहामाधि मत्तद्विरदसों । प्रबिशिमरोकरि बिक्रमहद सों ॥ सोदर बंधुकर्ण धनुधारी । ताहि बधायो बिजय बिचारी ॥ हमलगि राज्यलोभ हे आरज । कीन्हेअगणित दुष्करकारज ॥ ताते अवशिदेह हमत्यागब । कोलगिशोक अग्निमन दागब ॥ दोहा ॥ नृपति युधिष्ठिरके बचन सुनिकै व्याससुनीश । पाणिपक रिकै कहतभे असनकहो अवनीश ॥ बधेगये सबकाल बश तुम न बधायेएक । करता मानत आपुकहँ यहमतहे अबिबेक ॥ हे संयोग बियोग ध्रुव प्राणीको सुनुतात । यथा बुदबुदा बारि मधि होत जुरत मिटिजात ॥ सुख दुख मोद गलानिकी थिति नहिं रहति सदैव । पूर्ब्ब कर्म्म समहोत ये पूर्ब्ब कर्म्म हैं देव ॥ अत्र पूर्ब्ब इतिहास हम कहत सुनो तुम तौन । भूपति जनक बिदेह सों कहे अस्म मुनि जौन ॥ जनक अस्म मुनि सों कहे कहो बिप्रमुनिदक्ष । केहिप्रकार कल्याणनर लहतजाति अघर-क्ष ॥ अस्मउवाच ॥ जन्मजरा अरु मृत्यु फिरि जन्म जरादिकरोग ।

नित्यदुःखहै जीवकहँ अन्तर सुखको भोग॥ प्राप्त होतसुख दुःख सो किये बनतहै भोग। निज मेटेनाहिं मिटतहै हैकर्मज संयोग॥ अधनीके सुत बहुत नहिं एकधनीके होत। कर्मदैवकी गतिकहूं यहिबिधि करति उदोत॥ जियत दरिद्री बहुत दिन थोरे दिन धनवान। दोऊ सुख दुख लहतहैं निजकृत कर्मप्रधान॥ जियत बहुतदिन दारदी दुखभोगन केहेत। भोगी सुखहि प्ररब्धभरि धनी मरत यहनेत॥ मंत्रऔषधी टोटका धनसुत शास्त्रसहाय। टारिसकत नहिं मृत्युगति निरमित कालहिपाय॥ सहसन माता पिता तिमि तिय सुत भाई रौन। क्रमसों संगमहोत फिरि नशै कौनको कौन॥ पथसंगमसमहोत उरगृह कुलसंगम भूप। नहिं पूरब नहिं परकछू नाशवान सबरूप॥ नित्यपक्षमें जीवते देह होतिउत्पन्न। हैअनित्यमेंदेहजे जीवोत्पति आपन्न॥ नहींनित्य संबासहै काहूको सुनुतात। पिता पितामह आदि तुव कहा सबंधु बिभात॥ कियेकर्मको भोगहै अचल चलतनहिं एक। तातेनृप कल्याणप्रद वैदिककर्मबिबेक॥ शास्त्रनयनहैं जगतके शास्त्रसुनो मतिऐन। बरण आशरमको धरम पालब दायकचैन॥ अस्म बिप्रके बचनसुनि जनक यथा बिधि पूजि। गये मोहतजि निज सदन सबिनयबाणी कूजि॥ तथा भूपतुम मोहतजि क्षात्रधर्म हितजानि। करो पैत्रिक राज्य यह उचित न गहब गलानि॥ व्यासदेवके बैनसुनि रहो मौनह्वैभूप। तब अर्ज्जुन श्रीकृष्णसों बोले गिराअनूप॥ ज्ञातिशोक अति उदधिमाधि नृपबूड़त करि ग्लानि। ताहिनिकासो नाथकरि लम्बितबानी पानि॥ सोरठा॥ सुनि अर्ज्जुनके बैन कृष्णचन्द्र नृपसों कहे। नृप कत होत अचैन लोक शास्त्र नृपनीति तजि॥ रोला॥ क्षात्रधर्म्म बिचारकरि करि मरे रणमें बीर। शोक कीन्हे मिलत नाहिं ते भूप धारो धीर॥ पूर्ब्ब को इतिहास अब हम कहत सुनिये तौन। दुखित सञ्जय भूमिपति सों कहे नारद जौन॥ भाषि ऐसो कहे षोड़-

श राज्यको इतिहास । अभिमन्युको वध बिकल नृप सों कहे हे जो व्यास ॥ कथा सो श्रुति पूर्व्व फिरि सुनि रह्यो मौन नरेश । व्यासमुनि तबकहे धीरजधरो भूपसुभेश ॥ आततायी खलन को बध भूपतिनको धर्म । नीतिपूर्बक प्रजापालन करब वैदिक कर्म ॥ भूपकरि निजधर्म अब इमि वृथा आनत शोच । शोच कीजै भूपपदसो खेदकीजै मोच ॥ व्यासके सुनिबचन बोलेधर्म उरबी रौन । धर्मकी नहिं मोहिंशंका सुनोमुनि मतिभौन ॥ राज्य कारण बधेबहुत अवध्यहम हेतात । हियेदाहत शोकताको धीर नहिं धरिजात ॥ दोहा ॥ धर्मनृपतिके बचनसुनि व्यासकहे सुनु भूप । ईश्वर करता व्याजकरि करत कर्मअनुरूप ॥ ईश्वरन्यात्मक तासुवश पुरुषकरतहैं कर्म । यथा पुरुषबशह्वै परशु तरु छेदतयहमर्म ॥ जोकर्त्ता पुरुषहिगणो नहिं न्यामकहै और । तऊ कियेनृपनीति तुमशंक तजौनृप मौर ॥ कर्मकियेको दण्ड देपुरुष न पावतपाप । सदानृपतिको उचितहै दण्डवृत्तकोथाप ॥ किये अशुभशुभ कर्मको फलपावत नरऔसि । करिसुधर्म कततनतजत लेहुराज्य सुखहौसि ॥ रचेबिधाताजासु जिमि मरण मरत तिमि तौन । करमरूप निरमितकरत विधिआगम थितिगौन ॥ ज्ञाति बन्धुके मरणको दोष न तुमकहँ तात । जयविभूति यश हित मरेलरि क्षत्री अवदात ॥ सुने नहीं जो पूर्बभो देवासुरसंग्राम । एकपिताके पुत्रहे दोऊबली अक्षाम ॥ असुर रहेजेठरहे छोटेसुमन उदार । दोऊलरेबिभूतिहित बत्तिसबर्षहजार ॥ बाधि असुरन करिरुधिरमय मही सुमन समुदाय । बिलसत भयेत्रिलोकपति महाप्रशंसा पाय ॥ बधत दुरात्महि लहतसो धर्मसुनो उपचार । लहत पापजो दुष्टकहँ पालतकरि उपकार ॥ नहिंइच्छित हे युद्ध तुम नाहिं आनत हेरोष । भयोयुद्ध क्षय भटनको दुर्योधनके दोष ॥ राज्यकरो तजिशोच नृपतुम हितनेकुकलंक । अश्वमेध मखकरहु जो गहत पापको शंक ॥ असुरन बधिसुर

पतिकिये क्रमसोंमख समुदाय। ताते शतक्रतु ख्यातह्वैविलसत ओजबढ़ाय ॥ तैसे तुमह्वै भूमिपति बिलसो सहितसमाज । नृप पुत्रन कहँदीजिये निजनिज पुरकोराज ॥ पुत्रपौत्रनहिंहोहिं जेहिताके कन्यनदेहु । आश्वासित करि नृपतियन मखकरिआनँदलेहु ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ कौनकर्मते होतहै पापकहो मुनितौन । कौनकर्मते छुटतहै पापहोतहैजौन ॥ व्यासउवाच ॥ रोला ॥ कियेअबिहितकर्ममिथ्या कहे कपट बढ़ाइ । उदितरवि औमुदित बेला किये शैनबनाय ॥ प्रथम ब्याह कनिष्ठकोअरु ज्येष्ठकोमापूर्व । तौन दम्पति होतप्राश्चित योग्ययह मतिगूर्व ॥ करत ब्रतको त्यागजो अरुमांसबेचत जौन । दानदेत अपात्रको अरु पात्र कोनहिंतौन ॥ आगिलावत ग्राममें जोकरत गुरुकुलघात । वृथामारत पशुहि जो बिश्वासघाती ख्यात ॥ महापातक लहत येसबसुनो नृपमणिदक्ष । लोकवेद विरुद्ध करिबे योगनहिंपरतक्ष ॥ त्यागकरब स्वधर्मको अरुगहब परकोधर्म । शरणआवेतासु त्याग अभक्षभक्षणकर्म ॥ भृत्यको नहिंकरब पोषण रसनकोक्रयनेम । वधब तिर्य्यगयोनिको नहिं उचितदेतअक्षेम ॥ पितासों जुबिबाद करिबो तियहि ऋतुदिनदोच । कर्मये करतव्यहैंनाहिं कियेबरधत शोच ॥ कर्मकितने लखत अनुचित कियेलखत न दोष । बधेद्विजजो बधन आवतलये शस्त्र सरोष ॥ रोगबशह्वै मरतमदिरा पिये औसर हेत । कियेपान अज्ञान बशतौ संसकार सुनेत ॥ कहेअनुचित कर्मइतने जौनतेसबभूप । छुटतप्रायश्चित्तकीन्हें शास्त्रमत अनुरूप ॥ और जनको आपनोंके प्राणरक्षण जानि । कन्यकाके ब्याहहितकै गुरुहिकोहितमानि ॥ जातसरबस आपनो जोकहै मिथ्याबैन । पापताको होतनहिं यहकहतहैंमातिऐन ॥ स्वप्नमें परदारसों रतिकिये धर्मनजाहिं । पुत्रहित गुरुबन्धु तिय केकहे रति अघनाहिं ॥ परे आपद लेइ गुरुधन बितरि तस्कर कर्म । नहींपातकहोत तासों महावेधसमर्म ॥ समयलहिकैदेइता-

कोअधिक धनकारिप्रीति । छुटत आपत दोषताको शास्त्रकी यह रीति ॥ दोहा ॥ तृणअंकुर लगि गउतहित बनदाहे नहिं दोष । सुनो भूमिपति करतहैं दान सकल अघ शोष ॥ अबसुनियेभूपालमणि प्रायश्चित्त विधान । ब्रह्मचर्य्यव्रत गहिरहे द्वादशबर्ष समान ॥ रहि अक्रोधकर पात्रह्वै भिक्षुकभ्रमि बहुठाउँ । एक बार भोजन करै रटि रघुबरको नाउँ ॥ होइ अपातक ब्रह्महा सुनो भूमिभरतार । कै कीन्हे तेहि षटबरष कृच्छ्रायन उपचार ॥ कैसरबस दै द्विजन कहँ फिरै तीर्थ समुदाय । होइअपातक ब्रह्महा रामराम रटलाय ॥ गो ब्राह्मणके प्राण को करत सुरक्षणजौन । गोब्राह्मण हितलरिमरै होतअपातकतौन । देइ सुपात्रन प्रेमकरि लाखगऊ नरजौन । ब्रह्मघातके दोषसों छूटिजात है तौन ॥ कपिलागऊ सबत्सजो देइ पचीस हजार । ब्रह्मघात के दोषसों छूटनको उपचार ॥ शतघोरे खांसे बने देत द्विजन कहँजौन । इतरपाप सों छुटतहै भूपसुनो नरतौन ॥ अर्थीमांगै देइसो सुनोभूप नरतौन । सकल पापसों छुटतहै ताकी समहै तौन ॥ सुरापियतजो आपसों तौनमरै मरुजाय । कैपावक मांधि धसिमरै तौपातक मिटिजाय ॥ एकबार पीवैसुराफेरिनपीवै जौन-संसकारकरि शास्त्रमत शुद्धहोतहै तौन ॥ शिलालोहकी तप्तकरि सोवैलिंग लगाय । गुरु तल्पग इमिदेहताजि शुद्धहोइअघजाय । परतियगामी बर्षभरि कृच्छ्रायन ब्रतधारि । शुद्धहोइ रहिनेमसों शास्त्ररीति निरधारि ॥ लघुसोदरके पूर्वगुरुब्याहिजातहै जौन । कृच्छ्रायन द्वादशदिवस कियेशुद्धहै तौन ॥ चारिमास गहिनेम करि अंत्रायन तियतौन । शुद्धहोत तिय अनुजके पीछूब्याही जौन ॥ परपतिके अभिगमनकी शंकातियमें होति । रज उद्भव लहि तरुणिसो निरभय शुद्धतनोति ॥ बधैजुतिर्य्यगयोनि अरु तरुबहु काटैजौन । बायु अशनकरितीनि दिनशुद्धहोतहै तौन॥ करै अगम्यागमन जो सुनोतासु प्रतिहार । ओदबसन रहि भ-

समपर करैमास षटपार ॥ यहिबिधि कुत्सितकर्मप्रति हैं प्राश्चित्त अनेक । आस्तीकनके हेतनहिं नास्तीकन कहँएक ॥ जप तप व्रत मखदान अरु तीर्थ गमन सबपर्व । लियेनाम सियरामको छूटत पातक सर्ब ॥ करिबो उचित सुकर्मनित कुत्सितको परित्याग । निशिदिन रहत सुकर्मरत तेनर पूरण भाग ॥ व्यासदेव मुनिराजके ऐसेबचन अनूप । सुनि चटपट बोलत भयो सुपटु युधिष्ठिर भूप ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ कौन पदारथ भक्ष्यकौन अभक्ष्य अपात्रको । कौनपात्रहै लक्ष्य कहौ तौनमुनि पितामह॥ जयकरी ॥ पूरब इहै प्रश्न सुनुभूप । स्वायम्भुव मनुपास अनूप ॥ मुनिगण कीन्हेतब मनुदक्ष । भाषे भक्ष्य अभक्ष्य प्रतक्ष ॥ पूरब को इतिहास महान । सोहम कहत सुनो मतिमान ॥ भक्ष्य अभक्ष्य कहैं मुनिजौन । पात्र अपात्र बताये तौन ॥ दोहा ॥ कमठ बिनाजल जन्तुसब बिप्रहिंसदा अभक्ष्य । कहतसल्लकी जाहिसो हैब्राह्मणकहँ भक्ष्य ॥ चकबककहंस सुपर्ण अरु शेन उलूकौ काग । चारिडाढ़के जन्तुसब हैं अभक्ष्य तजिराग ॥ उटिनी भेड़ी मृगीको दूधनब्राह्मण योग । द्वादशदिन बितगऊको पयब्राह्मणहि अभोग॥ प्रेतअन्न जोप्रगटअरु सूतिकान्नजोखात । बिनुपति सुतकी तियाकोअन्न अभक्ष्य कहात॥ खातपियाय नसकतजो ताकोअन्न अभक्ष । गणिका शूद्र सोनारको अन्नअक्ष्य प्रतक्ष ॥ प्रथम होमके होमकृत कोहैअन्न अखाद्य । अन्नपुंश्चली कोसदा हैअखाद्यकरिबाद्य ॥ अन्न ग्रामरखवारको औ बइद्यकोअन्न । रजक जुआरीचोरको होतअभक्ष्य अपन्न ॥ देवपितर अर्पणबिना है अभक्ष्यसबअन्न । उचितगृही भोजनकरैं तोषिअतिथिआपन्न॥ सुनोभूप अबजोकहे मनुप्रभु दान अपात्र । तिन अपात्रतेइतर द्विज तिनकहँ जानोपात्र ॥ भीतद अयशी कौतुकी नृत्यगीत कृतहास । अंगभंग जारज कुटिल अरुअब्रत अरुदास ॥ सेवक उपकारी भिषज दानपात्र येनाहिं । ब्राह्मण बिद्यामानसो

श्रेष्ठपात्र जगमाहिं ॥ बिद्याबिनुको बिप्रजिमि बारिबिनाको कूप। श्रोत्री ब्राह्मण क्रियायुत है अतिपात्र अनूप ॥ जैसेओदो काठ लहि पावकं बर्द्धत नाहिं। तिमि अपात्रके दानको सुफलनहीं सरसाहिं ॥ उदर भरेको पात्रहै क्षुधावान निरधारि। नहींक्षुधित के उदरमें पात्र अपात्र बिचारि ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ यहि प्रकारकी बारता सुनिकै धर्ममहीप। श्रद्धाधरि मुनिब्यास सों कहत भयो कुलदीप ॥ मुनिहम चाहत सुनोअब राजधर्म ब्यवहार। अरु आपत अरुदान अरु मोक्षधर्म ब्यवहार ॥ भूपतिके येबचन सुनि कहे व्यासमुनि दक्ष। सुनो भूप इनधर्म्मको ज्ञाता भीष्म प्रतक्ष ॥ भृगुगुरु जानत धर्मजो सो भीषम मतिभौन। मार्कण्डये मुनीशसों लह्यो धर्मसब तौन ॥ सर्ब ब्रह्मऋषि पूर्बहे जासु सभासद पर्म। सो भीषम सर्बज्ञपटु हैज्ञाता सबधर्म ॥ चलि ताकेढिग प्रश्नकरि सुनो धर्म्म समुदाय। शोकमोह तजिनीति गुणि पालो प्रजा सचाय ॥ ब्यासदेव के बचन सुनि मौन रहो क्षितिपाल। तब यदुकुलमणि कृष्ण प्रभुबोले बचन बिशाल ॥ कृष्णउवाच ॥ सोरठा ॥ शोक मोह त्यजि भूप ब्यास कहतजो सोकरो। शुचि करतब्यअनूप ब्यासकहतसो मंत्रमम॥ करिकैनगरप्रवेश इष्टग्राम्य कुलदेव द्विज। पूजिदानदेवेश राज्य ग्रहण बिधिवत करो॥ बन्धुप्रजा समुदाय मोदितकरि बिप्रनसहित। तदनु भीष्म पहँजाय सुनोजौन चाहतसुधा॥ महिखरी॥सुनिकृष्णप्रभु जगदीश के येबचनशुचि सधरममये। नृपधर्म क्षणक बिचारि बिप्रननौमि उठि अभरमभये॥ लखि कृष्णकेपदकंज कृष्णहिं सुरथपर थापि तकरे। धृतराष्ट्र नृपहि चढ़ाय शिविका सुरथचढ़ि आनँद भरे॥ तहँ भीम सारथिपनो कीन्हें छत्रगहि पारथलसे। सहदेव चामर व्यजनकीन्हें लयेकर रथपर बसे॥ सब सुभट सात्यकि औ युयुत्सहि आदि रथ चाढ़ि चाढ़ि चले। चढ़ि बाजि कुंजर सुरथ सांवत चले छावत मुदभले ॥ दोहा ॥ बन्दीजन अस्तुति पढ़त

द्विज स्वस्त्ययन अनूप। बजत शंख दुन्दुभि घने पसरो आनँद रूप ॥ गान्धारी धृतराष्ट्र कहँ आगे करि क्षितिपाल। हास्तिन-पुर प्रति चलतभे पूरण प्रभा विशाल ॥ कुन्त्यादिक रनिवास सब गये विदुरके संग। चले विदुर लीन्हें तिन्हँ शिविका सुरथ प्रसंग ॥ पुरजन आवत नृपहि सुनि लैलै कलश सुधार। तिय गावत ठाढ़ीभई वितरत मंगलचार ॥ रोला ॥ देत विप्रन दान मंगल सुनत अति अवदात। कियो नगर प्रवेश राजा शक्र स-रिस बिभात ॥ प्रजन पेखत देत आनँद सुनत श्रुति सुखबैन। जाय नृपगृह द्वार उतरो भूपदायक चैन ॥ नौमि बिप्रन सुनत आशिष जाय गृहमधि भूप । पूजिकै कुलदेव बाहर कढ़ो आ-नँद रूप ॥ धौम्य आदिक द्विजन कहँ तहँ नौमि विधिवत पूजि। बसन भूषण हेम गोमणि दये सुचकन कूजि ॥ सहित बंधुन भूप विप्रन भयो पूजत यत्र । पुण्य घोष महान नभलों भयो पूरित तत्र ॥ सखा दुर्योधन नृपतिको चारबाक अमान । रह्यो राक्षस तौन आयो गहे कपट महान ॥ नित्रिदण्डी द्विजन सँग लै जाय जहँ अवनीश। कह्यो ऋजुता गहे पूरित कपट बिश्वे बीश ॥ ज्ञातिघाती मूढ़नृप तू तोहिंधिक सबकाल । ज्ञातिक्षय करवाइ भोगन चहत भूमि कराल ॥ धर्मनृप यह बचनसुनिकै गहे शंका भूरि। कहे मोहिं न कहो धिक हमरहे करुणा पूरि॥ धौम्य आदिक विप्र गुणिकै ताहि राक्षस जानि। हुंकार करिकै किये भास्मित नृपतिको हितमानि॥ अधिक खेदित नृपहि लखि तब कहे केशव दान्त। खेदमति नृपगहो याको सुनो जो वृत्ता-न्त ॥ चारबाक कुनामको यह रहो राक्षस दुष्ट। सखा दुर्योधन नृपतिको छली पापी पुष्ट ॥ मित्र बधके बैर तुमढिग आइ ऐ-सो भाषि। कह्यो इमि तवराज्यपदमें विघ्न अति अभिलाषि॥ समुझि यह वृत्तान्त जाश्यो द्विजन यहि करि रोष। कहो याको गुणामति मातिमरेको कछुदोष ॥ बचो हो यह एक ताको सखा

सोऊ मूढ़ । मरो यहिविधि आय यह तो भाग्य महिमा गूढ़ ॥ राज सिंहासन बिमलपर गहो नृप अभिषेक । करो पालन प्रजनको करि नीतिधर्म बिवेक ॥ दोहा ॥ कृष्णचन्द्रके बचन ये सुनिकै धर्म नरेश । सिंहासनपर बैठिकै राजो यथा सुरेश ॥ कृष्ण भीम अर्जुन नकुल सात्यकि अरु सहदेव । यथाउचित बैठे सबै बिदुर युयुत्सु सुभेव ॥ गान्धारी धृतराष्ट्र अरु धौम्य आदि द्विज यूह । बैठी कुन्ती द्रौपदी अरु सब युवति समूह ॥ रोला ॥ तहां योजित देखि सब अभिषेकको सामान । कृष्ण धौम्यहि दये शासनजानि समय महान ॥ द्विजनसह उठि धौम्य वेदीबिरचि पूरबओर । बाघ चर्म बिछाय ताढिग सुनतमंगल शोर ॥ द्रुपदजा सहधर्म भूपहि तहां करिआसीन । कियेमंगल होम बिधिवत पढ़त सुबचन पीन ॥ कृष्णपूजित शंखगहि तब मुदित सहित बिवेक । बारिभरि भरि धर्मनृपको करतभे अभिषेक ॥ बजेतेहिक्षण शंख दुंदुभि आदि बाजन भूरि । वेद अरु स्वस्त्ययनकी धुनिरही नभलोंपूरि ॥ रजत भूषण बसन सुबरण सुमणि गायअमेय । पूजिबिप्रन्ह दयोबिधिवत भूमिपतिकौन्तेय ॥ करत अस्तुति सूत मागध लहे सादर मौज । हेम हय हथियार हाथी भूमि भूषण सौज ॥ देतदानमहान सुनिस्वस्त्ययन सुयश अमन्द । लसो शुभसिंहासनोपर शक्रसों कुलचन्द ॥ तहांभूपहि भयेपूजित बन्धुवर्ग समस्त । भानुसम नृपउदितभो करि शत्रुसगरब अस्त ॥ राजसिंहासन बिमलपर धर्म भूपति दक्ष । बन्धु सेवक पौरजनसों कहतभो परतक्ष ॥ महाराजधिराज नृपधृतराष्ट्र ममगुरु पर्म । प्राणराख्यो तासुसेवाहेत हम गुणि कर्म ॥ तासु शासनविषे थिरिकै रहेहुनिति तुमसर्ब । इहै मम प्रियहेत अतिशय नीतिधर्म अखर्ब ॥ पौरजनकहँ बिदा कीन्हें नियमकै यहकाज । तदनुभूपति भीमसेनहिं करतभे युवराज ॥ कियेनकुलहि सैनशिक्षक पुरनिरीक्षक बेश । आत्मरक्षक करतभे

सहदेव कहँ सबदेश ॥ शत्रुमर्दन काज सौंप्यो पारथहि कुरु भूप । दियेधौम्य पुरोहितहि द्विजदेव अर्चनरूप ॥ विदुर अरु संजयहिमंत्री कियेकरि अनुमान । नियमिभूपहि सदासेवतरहेहु सहित विधान ॥ तदनुभूपति कियो रंमन श्राद्धको गहिनेम । इरावाण बिराटको अरु द्रुपदको करिप्रेम ॥ द्रौपदेयन कर्णको अभिमन्युको करिगौर । धृष्टद्युम्न घटोत्कचादिक सुहित हे जे और ॥ द्रोणको करिश्राद्ध दीन्हेंदान सबकेहेत । पृथक् पृथक् उच्चारि करिकरि नाम गहि गहि चेत ॥ दयेभोजन भूरि बिप्रन धर्मकरि सन्मान । रहेआश्रयहीन तिनकहँ कियोआश्रयमान ॥ राजपत्नीरहीं तिनकोकियो अतिसत्कार । भृत्यगणको सविधि पोषणकियो भूभर्तार ॥ श्राद्धकीन्हे सुतनको धृतराष्ट्र नृपतिसुठौर । दयेभूषण वसन भोजन गाय वसु सबठौर ॥ नहींजिनके श्राद्धकर्ता रहोतिनको नाम । पिण्ड दैदै धर्मभूपति दयो दान अछाम ॥ श्राद्धकरि यहिभाँति सबसों उऋणह्वै क्षितिपाल । देव पूजन कियो विधिवत पूरि प्रेम विशाल ॥ दोहा ॥ राम कृष्ण की कृपा ते बिजय पाय नृपधर्म । लहि सुराज्य राजित भयो करता कौलिक कर्म ॥

श्रीमहाभारतेशान्तिपर्वणिराजधर्मेयुधिष्ठिराभिषेकोनामद्वितीयोध्यायः २

बैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ लहि अभिषेक महात्मा भूप युधिष्ठिर भूप । कह्यो श्याम घनरूपसों बचन समय अनुरूप ॥ कबित्त ॥ महाराज कृष्णचन्द्रजानो आपुकी कृपाते बिजय बानोपायो मानो आपनी धरीरही । आपुकीकृपाते तौन अग्निहूं बुतानी जौन वल्लभौन बन्धुनके हियमें बरीरही ॥ गोपीनाथ आपुकी कृपाते भूमिपाई ज्यों बिक्रमी प्रतापी क्षितिनाथकी हरीरही । आपुकी कृपाते भरी संपदा ज्योंपरीलाखिधरीसर्वदाकी भूरि संपदा भरीरही अपरं ॥ आपु बैकुंठ बिष्णु कृष्ण पुरुषोत्तमहौ हृषीकेश हरिहर हंसता गहतहौ । बृहद्भानु अग्नि औवराह उग्रसेनानीत्रिदिव

त्रिविष्टप त्रिनैनता लहतहौ ॥ अच्युत आदित्य औअखिल लोकपाल आपु आपु महाक्षत्री सबक्षेत्र मोरहतहो । आपुसाम दामयाम यामिनी दिवसधाम अभिराम रामकाम क्षामऔमहत हौ ॥ दोहा ॥ उत्पाति थिति पालन करन आपुजगतजगओक । वेद सिन्धुगिरि मंत्रविभु प्रभुतुम लोकपलोक ॥ यहिप्रकार श्री कृष्णकी अस्तुति करिनृपधर्म । नमस्कारकरि नमित ह्वै भयो कृतारथपर्म ॥ तदनुधर्म क्षितिपालमणि बन्धुन सहित सनेह । यथायोग लखिदेतभे भरेसंपदागेह ॥ लैआज्ञा धृतराष्ट्रकी दुर्योधनकेगेह । देइ वृकोदर कहँ दये पूरि हियेकोवेह ॥ दुश्शासनको गृहदये श्वेतवाह नहिंचाहि । दुर्मर्षणको गृहदये नकुलबन्धुजो ताहि ॥ दुर्मुखको गृहदेतभो सहदेवहि क्षितिरौन । भरे सम्पदा सकलघर यथा धनदकोभौन ॥ संजय बिदुर युयुत्सुअरु धौम्य सुधर्मा जौन । तिन्हें कहे भूषितकरो बसि बसि निज निजभौन ॥ सोरठा ॥ नृप आज्ञालहिसर्व जातभये निजनिजसदन । सात्यकि सह तेहिपर्व कृष्ण पार्थके गृहगये ॥ जयकरी ॥ यह इतिहास मनोरमरूप । सुनिबोले जनमेजयभूप ॥ ताकेपर प्रपितामहदक्ष । कियेकहासो कहोप्रतक्ष ॥ सुनिजनमेजय नृपकेबैन । बोलेब्यास शिष्य मतिऐन ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ अनुपम राज्यपाय नृपधर्म । सुनोकियेजो सुधरमकर्म ॥ आश्रम वर्णधर्म ब्यवहार । रक्षणकिये लिये अधिकार ॥ विप्रनको दीन्हेधनभूरि । आश्रित भृत्यनकहँ मुदपूरि ॥ नाट्यवाद्य कौतुकविद जौन । सबको पोषकियो क्षितिरौन ॥ जौन गुरुकी वृत्ति अमन्द । कृपहि दयेसो पूरिअनन्द ॥ यथा उचित सबको सतकार । करतभयो नृपधर्म उदार ॥ नृप तेहिदिनकी निशाबिताय । सानँद पास कृष्णके जाय ॥ ध्यानावस्थित कृष्णहिदेखि । यहिबिधि बूझतभे अवरेखि ॥ प्रभुपुरुषोत्तम आदि अनादि । तुमक्षर अक्षर कहत श्रुतिनादि ॥ तुम करता जगदीश बनाय । तुमक्यहि ध्यावत इमिमनलाय ॥ सुनि

प्रभुबोले वचन गँभीर। शरशय्यागत भीषमवीर॥ अविचल धारिरहो मनध्यान। तहां बसोमन मन कालिमान॥ मुनिवशिष्ट को शिष्य ललाम। भीषम ज्ञानधर्मको धाम॥ दोहा॥ वर्तमान अरुभूत जो अरु भविष्यहै जौन। सो सबजानत धर्मविद भीषम महिमाभौन॥ ताते ताके पासचलि भूपसुनो सबधर्म। कै है ताके दिनगये अस्तज्ञान जो पर्म॥ केशवके ये वचनसुनिकहे युधिष्ठिर भूप। नाथकृपा यहिभांतिकी मोपैकरतअनूप॥ तौरथ चढ़ि मोहिंसंगलै चलोतहांमतिरास। देहुसुदर्शन भीष्मकहँ सुनो धर्म इतिहास॥ कृष्ण सात्यकीसों कहे रथमम लावहु साजि। दारुक सात्यकि वचनसुनि ल्यायेसुरथ सलाजि॥ वैशम्पायनउवाच॥ उतै भीष्मकहँ घेरि कै बैठे मुनि समुदाय। नामललासु मंगलकरण सुनो भूपमनलाय॥ छप्पै॥ जैमिनिदेव स्थान व्यासनारद गुरुभृगुमुनि। असनक वात्स्य हरीतपौल लोमश मौद्गल्य गुनि॥ दुर्बासावाल्मीकि कपिल काश्यपक्रतुतुम्बरु। भार्गव सनत्कुमार पुलह पिप्पल पुलस्तिअरु॥ कचगालव गौतम धौम्रमुनि काश्यपअंगिरा तत्त्वधर। अरुविभाण्ड माण्डव्य मुनि भौतिकभाष्करि बिप्रवर॥ दोहा॥ पवनमरीच सुमन्तअरु मार्कण्डेयमहान। अरुसम्बर्तउलूक अरु अरु तृणबिन्दुसुजान॥ पर्वतधौम्यपराशर देवल आदिअनेक। बैठे चहुंदिशि भीष्मके सुनत सुबचन बिबेक॥ तहँभीषम श्रीकृष्णकी अस्तुतिकीन्हेंभूरि। सबथरव्यापीकृष्णप्रभु सोसुनि आनँदपूरि॥ रथचढ़िकै सात्यकि सहित चले प्रदायक क्षेम। एक सुरथचढ़िकै चले पाण्डवपूरितप्रेम॥ कृप युयुत्सु संजय बिदुर चलेसुरथचढ़ि तत्र। कुरुक्षेत्रमधि कै चले युद्धभयोहोयत्र॥ सोरठा॥ तहँमाधव अनुमानि नृपतियुधिष्ठिर सों कहे। भार्गव इतरणठानि शोणित पूरेपांचशर॥ केशवके सुनिबैन चैनभरे भूपतिकहे। कहोकृष्ण मातेऐन जन्मकर्मभृगु रामके॥ कृष्णउवाच॥ रोला॥ सुनोभूपति रहोपूरब जह्नुभूप महान।

सुवनताको वलाकाश्वो तासुकुशिक अमान ॥ शक्रताहि महान गुणिकछु अंशसुतभे तासु । गाधिनाम अगाध महिमा सुयश पसरोजासु ॥ सत्यवतीभई कन्या गाधिकी तपधाम । भूपताहि ऋचीकमुनिकहँ दईगुणि अभिराम ॥ कछूदिनमें सुमुनि तामें पुत्रउपजन हेत । गाधिनृपके पुत्रनाहिंहो तासुहित करिचेत ॥ दोयवेदि वनायातिनपै अग्निकरिकै दीप्त । दोयपात्र सुचरुवनाये मंत्रकरि अवलिप्त ॥ क्षात्रमंत्रन एकमंत्रितकियो मुनिमणिदक्ष । ब्रह्ममंत्रन एकमंत्रितकिये अतिशयस्वक्ष ॥ एकचरु निजतियहि दीन्हें भाषिकै परभाव । देहुयह निज जननिकहँ कहिदये एक बनाव ॥ भाषि इमि युगभाग चरुदै बिपिनगे मुनिराज । इतैमहँ तहँ गाधिआये सहित तियसहसाज ॥ बिप्रतिय युगभागचरु निजजननि आगेराखि । आपको यहभाग ममयह कही पुत्रद भाखि ॥ भूपतियकछुभेदगुणि निजभागदीन्हींताहि । भागताको आपुलीन्ही पुत्रअनुपम चाहि ॥ गयोभूपति धामअपने सुमुनि आश्रम आय । जानिकै वृत्तान्त तियसों कहतभे समुझाय ॥ भागतो तुवजननि अरु तुमलयो ताकोभाग । पुत्रह्वैहै तासु तापस परम पूरवभाग ॥ पुत्रतेरो महादारुण गहैक्षत्रीधर्म । होयगो यह चरुविपर्यय भयोताको कर्म ॥ बिप्रतिय यह बचनसुनिकै जानिभीषम रूप । कहीपगधरि करोप्रगटित पुत्रनिज अनुरूप ॥ वचनयह सुनिकहे मुनिनहिं मंत्रनिष्फलहोत । करीजामें जौनविधि तिमि तौनकरिहि उदोत ॥ विप्रतियतब कही इमि मतिहोइ मुनि शिरमौर । पुत्रमति इमि होउहोउ पउत्रबरु यहि डौर ॥ ऋचीकउवाच ॥ प्रियेबचन तथास्तु तौनहिंपुत्र पौत्रहिभेद । पौत्र तौ अनुरूप चरुके होयगो तजुखेद ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ भयो सुवन ऋचीकके जमदग्नि बरबशधाम । गाधिनृपके भयो विश्वामित्र तपनिधिश्राम ॥ भयोसुत जमदग्निके भृगुराम दारुण दक्ष । धनुर्वेद महानको जो लह्यो अन्त प्रतक्ष ॥ गन्धमादन

शैलपै बहुदिवस शिवहि अराधि। लह्यो शस्त्र अनेकजो अरु परशुबर व्रतसाधि॥ परशुपाणिअभिमानकै जोभयो लोकविख्यात। महाप्रज्वलित अग्निसम जमदग्निसुत अवदात॥ रह्यो पूरब भूमिपति कृतवीर्यनाम महान। पुत्रताको कार्त्तवीर्य्य महीप भो बलवान॥ सुमुनि दत्तात्रेयकी लहिकृपासों रणधीर। सहस भुज लहिहोतभो जगजैन अनुपमवीर॥ जीति सातोद्दीप सब थल कियोअगणित यज्ञ। नामसहसार्जुनौ हैहयनाथसो सर्वज्ञ॥ तासुबाणज अग्नि बढ़िकै एकदिन सुनुभूप। विपिनजारि वशिष्ठमुनिको कियो भस्मस्वरूप॥ कछूदिनमें आइ मुनि तहँ जरोआश्रमदेखि। शापसहसार्जुनहिंदीन्हें महाअघ अवरेखि॥ जरतआश्रम विपिनमेरो नहींवारे जौन। करैगो तौ बाहुछेदन राम बिक्रमभौन॥ कछूदिनमें भूपसुत जमदग्निके घरजाय। देखिअनुपमचले हरिलै बत्ससहित सुगाय॥ रामसों रणभयो ताहित गयो अर्जुनतत्र। रामकाट्यो तासुसहसौ भुजाकरिरण शत्र॥ भूपकोबधदेखि भाजे तासुसुत समुदाय। रामल्याये बत्स आश्रमबीच आनँदछाय॥ कछूदिनमें कार्तवीर्य महीपके सुत सर्व। जमदग्निमुनिके गयेआश्रम गहेअतिशय गर्व॥ समिध कुशहित विपिनमाधि कहुंगये हे भृगुराम। जायतब जमदग्निको शिर दयेकाटि निकाम॥ दोहा॥ भृगुपतिबनते आइ तब दशा जनककी देखि। क्षात्रबंशके नाशको प्रणकीन्हें अति तेखि॥ परशुपाणिचढ़िजायकैकार्तवीर्यकोबंश। पुत्रपौत्रतेगोत्रकोकरतभयो विध्वंश॥ सहसनहैहयसुभटबधि कियोरुधिरमयभूमि। कियोभूमि बिनु भूमिपति बधि सबक्षत्री घूमि॥ जयकरी॥ भूमि अराजक करि भृगुराम। कियोजाय गिरि कानन धाम॥ तेहिदिशिबीती बरसहजार। तब कौशिक को पौत्र उदार। द्वैशत असितकरणदैबाजि। प्रकट कियोजेहि कौशिक राजि॥ जौन रैभ्य नामक अभिराम। ताकोपुत्र परावसुनाम॥ सोभृगुपतिसों बोलो

तत्र । आपु कहत महिकियोनिक्षत्र ॥ मिथ्याकिये प्रतिज्ञातात । शतसहस क्षत्रीचढ़े बिभात ॥ तुमक्षत्रिन के भयइत आय । दिन बितवत अबिरल बनपाय ॥ बचन परावसु के सुनिराम । फिरिगहि शस्त्रचलो बलधाम ॥ जेक्षत्री हे भोगतभूमि । तिन्हें बधत भो सब दिशिघूमि ॥ बालप्रभृति बधि फिरि बनजाय । दीन्हो बहुशत बर्ष बिताय ॥ तब जे रहे गर्भमधिबाल । तेसब बढ़ि बढ़ि भे क्षितिपाल ॥ तबफिरिआइ बीर बलरास । लरि सब तिनकोकियो बिनास ॥ बधिफिरि जाइबसो बनमाह । फिरि गर्भस्थभये नरनाह ॥ सो सुनि फिरिआये बलभौन । कीन्हीं- भूमि बिनाक्षितिरौन ॥ यहिबिधिफिरिफिरि इकइसबार । कीन्हीं भूमि बिनाभरतार ॥ तबगुणि अश्वमेध मखतर्पि । भूमिकश्यपहि दई समर्पि ॥ कश्यपतासों लैमहिदान । क्षत्रिनको हितकरि अनुमान ॥ कहेरामसों सुनुमतिमान । उरबीमोहिं दयेतुमदान ॥ तुमकहँ उचित न यापैबास । जाहुयाम्यदिशि सागरपास ॥ सो सुनि रामउचित गुणिबैन । गो दक्षिणदिशि बिक्रमऐन ॥ तहां समुदसों महिलैदक्ष । रचि सुर्परिक देशअति स्वक्ष ॥ कीन्हे बास जानि रमनीय । महिमाजासु अनिरबचनीय ॥ इतकश्यप बिप्रनदे देश । तपहितकीन्हें बिपिन प्रवेश ॥ बिनुशिक्षक कछु दिनमें क्षुद्र । भरेप्रमाद वैश्य अरु शुद्र ॥ देनलगे बिप्रन दुख भूरि । तबक्षेपीड़ित भूरि बिसूरि ॥ रक्षकबिना बिकलता छाय । चली रसातल अतिअकुलाय ॥ सोलखिकश्यपमुनि मनमानि । ऊरूते धारयो हितमानि ॥ ऊरूतेधारयो मुनि आम । ताहीते भो उरबीनाम ॥ तब उरबीरक्षनकेहेत । मुनिसों बिनयकरी करि चेत ॥ नाथभयो हैहयकुल लुप्त । तामेंकछु बांचेरहि गुप्त ॥ ते ममरक्षण करेंसडौर । तोहसरहैं नाबिधिहैं और ॥ सोसुनिकश्यप करि स्वीकार । कीन्हें तिन्हैं भूमिभरतार ॥ दोहा ॥ जासुनाम महि कहिदई तिन्हैंल्याइ अभिषेक । निर्भयकरि क्षितिपतिकियेकश्यप

नीतिविवेक॥यहिप्रकारकीबारताकहतसुनतमतिऐन॥निकटजाइ भीष्महिलखे शरशय्या कृतशैन॥सेवतमुनिसमुदायजेहिविधि वतसब दिशिबैठि। मध्य भूमिगत भानुसम रहोतत्त्वमधिपैठि॥ दूरिहितेरथते उतरि केशव आदिक सर्ब। नमस्कार करिजाय ढिग बैठत भयेअखर्ब॥ चौपाई॥ मुनिगणधर्म सकृष्णहिपरखत। रंकपाइ धनजिमिमे हरखत॥ तहँक्षण बितय कृष्ण अनुमानी। भीषमसों इमिकेह सुबानी॥ हेगांगेय धीर जगजेता। सर्ब धर्म-बिद ऊरधरेता॥ तुम देवनकहँ शिक्षन लायक। तुमसब मति-मानन के नायक॥ भावी बर्तितभूत बिधाना। तोहियकरआम-लकसमाना॥ समदमदान सत्यमख सागर। धनुष वेदज्ञातन में आगर॥ वेद शास्त्रबिद तत्त्व बिशारद। तुम्हैं प्रशंसत भृगु गुरुनारद॥ अष्टबसुनकेअंश सुलक्षण। तुमबसु नवमबिख्यात बिचक्षण॥ परमभक्त तुम मम मनभाये। सुनौ जौनहित हम इतआये॥ जो जेठोसुत पाण्डु नृपतिको। धर्मशील सम दम सति अतिको॥ क्षात्रबंशको क्षय लखिभारी। शोकभयो ताको हियचारी॥ ताते कहिसब धर्म नियात्मक। लोपित करो शोक दुखदायक॥ सांख्य योग इतिहास पुराने। आश्रम बरणक धरम न माने॥ देशजाति कुलरीति बिधाना। वेदलोक श्रुति शास्त्रपुराना॥ भीषम तुमसब जाननहारे। नृपति युधिष्ठिरपौत्र तुम्हारे॥ होहिं अशोक कहो सो बानी। सुख दुख सम ज्ञाता तुम ज्ञानी॥ दोहा॥ तुमसमान नहिंजगतमें तत्त्वबुझावनहार। धर्मनृपतिके शोकको शीघ्रकरो संहार॥ कृष्णचन्द्रके बचन सुनि भीषम शुभदिन जानि। ईषद उन्मुख बदनकरि कहेजोरि युग पानि॥ जयकरी॥ नमः कृष्ण गोविन्द उदार। हृषीकेश अज जगकरतार॥ नमो विश्वआत्मा भगवान। योगीश्वर जगदीश महान॥ दिवतौ शीशभूमि तुवपाय। रबि तुवनयन जगत सुख दाय॥ दिशितौ भुजाकहत श्रुति वेद। घ्राण अश्विनीसुवन

अखेद ॥ अतसी पुष्परंग घनश्याम । पीत बसन तड़िता अ-
भिराम ॥ सदा निरखिहमहोत सनाथ । श्रेयदबचन कहो यदु-
नाथ ॥ यहसुनि कहेकृष्ण अनुरक्त । भीषमतुम मम अबिचल
भक्त ॥ ताते तुमदेखत ममरूप । नहिं अभक्तजन लखत अनू-
प ॥ चढ़िबिमान सुरबसु गन्धर्ब । सेवत तुम्हें गुप्तरहि सर्ब ॥
तुम्हैं गयेते ऊरध ओक । बिनुज्ञानी होई यहलोक ॥ तातेसब
आये तोपास । ज्ञानधर्म सुनिबेकी आस ॥ सोगुणि ज्ञान धर्म
सब भाखि । देहुभूप हियआनँद राखि ॥ कृष्णचन्द्रके ऐसेबैन ।
सुनि भीषम बोले लहिचैन ॥ तुम्हरे आगे भूभरतार । हमका
कहैं ज्ञानव्यवहार ॥ बैठोजहां गुरुतेहिठौर । शिष्य न कथत
ज्ञान यहतौर ॥ लहि गुरुशासन कहिबो योग । इततुम करत
निदेश प्रयोग ॥ दोहा ॥ तुम आज्ञालहि नाथनहिं कहिबेमें स-
न्देह । पै बाणनकेघातसों है बेधित सबदेह ॥ जीवहोत पीड़ित
महा मति न होति असफूर्ति । कथा पुरातन धर्मकी नहींगहति
है सूर्ति ॥ तपत मर्मलहि अति व्यथा जीवमहा अकुलात ।
भ्रांति बराधि घेरत मनहिं बचन नहीं कहिजात ॥ ज्ञानधर्मकी
बारता किमिभाषैं यदुराय । तुमअनन्त बैठेजहां अरु सबऋषि
समुदाय ॥ रोला ॥ भीष्मके ये बचनसुनिकै कहे यदुकुलचन्द ।
भीष्म धीरधुरीण तुम मतिमान बीरअमन्द ॥ देतहैं वरदानहम
नहिंरहैगो तनताप । मोहपीड़ा शिथिलता भ्रमकरहिंगेनहिंदाप ॥
सुमति तोअसफूर्ति ह्वैहैसूर्ति ह्वैहैसर्ब । कढ़ैगी तोबुद्धि गतह्वै
कथाजोनअखर्ब । भयेपूजत कृष्णके ये बचन ऋषिगणमोदि ।
किये सुरगण सुमनबर्षा गगनमध्य बिनोदि ॥ इतैमें सबअस्त
गिरिपै प्राप्तसूरहिदेखि । नौमिउठिउठि करिप्रदक्षिण भीष्मकहैं
अवरेखि ॥ कृष्णसों ह्वै बिदा ऋषिगण गये निज निज धाम ।
कृष्णपाण्डव सुरथ चढ़ि चढ़ि गये नगर अक्षाम ॥ करिअहार
बिहार आदिक क्रियारजनि बिताय । भोरफिरि सबभीष्मके ढिग

गये आनँद छाय ॥ जायतहँ लखि ऋषिनकहँ तेकिये सविधि प्रणाम । भयेबैठत भीष्मकेढ़िग कृष्ण पाण्डव आम ॥ बिदुर अरु धृतराष्ट्र संजय और नृपहत शेष । रहेजे ते भयेबैठततहां अति अवरेष ॥ जनमेजयउवाच ॥ तदनुबार्ता भईजो सोकहो मुनि परतक्ष । कियो किमिकोप्रश्न केहिबिधिकहे भीषमदक्ष ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ सुनोनृप जबभयेबैठत कृष्णभूप समाज । भूपसों तब कहेनारद मुनिनके शिरताज ॥ धर्म्मनृपजो सुन्योचाहो धर्मको व्याख्यान । प्रश्नकरि अबभीष्मसों सोलेहुसुनि मनमान ॥ बिना भीषम तासुबक्ता जगतमें नहिं और । होनचाहत अस्त रविसों भीष्मज्ञानी मौर ॥ कृष्णके येबचनसुनि नृपधर्म धरिकबिसूरि । कृष्ण प्रभुसोंकहे सुबचन परमआनँद मूरि ॥ प्रथम बूझि न सकतहैं हमधर्मगतिकी बात । प्रश्नकरिये प्रथम किमि यहहोत संशय तात ॥ आपुहौसर्वज्ञ कीजैप्रश्नयोग विचारि । आपुकर्ता प्रश्नवक्ताभीष्म तिमि निरधारि ॥ दोहा ॥ नृपति युधिष्ठिरकेवचन सुनि माधोअनुमानि । प्रश्नहेत उन्मुखभये जगउपकारकजानि ॥

इतिमहाभारतदर्पणेशांतिपर्बणिराजधर्मेतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

जयकरी ॥ कृष्णउवाच ॥ भीष्मगई सुखसों यहराति । मति बुधि कछू प्रकाशि बिभाति ॥ खेद मूर्च्छाभ्रमभोदूरि । ज्ञानप्रकाशित भो मुदमूरि ॥ यहसुनिबोले भीषमधीर । लहितोकृपा कृष्णयदु-बीर ॥ भ्रमगो भयोप्रकाशित चेत । ज्ञानपूर्बवत आनँद देत ॥ मन बुधि मति कीन्ही असफूर्ति । भईसकल बार्ताकी सूर्ति ॥ प्रश्नकरैंजो धर्ममहीप । कहबतौन जिमि निशिघर दीप ॥ यह सुनि कृष्णकहे सुनुदच्छ । धर्मभूपको हिय अतिस्वच्छ ॥ पूज्यन बधे राज्यके लोभ । तातेमनमें आनत क्षोभ ॥ कछूलाज कछु भय हियओलि । तौसम्मुखह्वै सकत न बोलि ॥ यहसुनिभीषम कहे बिवेक । रणमेंबधे दोषनाहिं नेक ॥ रणमें बन्धु गुरूके आ-न । प्रतिबादीसब शत्रुसमान ॥ बिप्रहिबर संध्यादिक कर्म । रण

में सरबक्षत्रिको धर्म ॥ तजिगलानि नृपधर्म सुजान । सुनैप्रश्न करिधर्म बिधान ॥ यहसुनि धर्मनृपति हर्षाय । उठिकैगहे भीष्म के पाय ॥ भीषमबोलि शीश करिघ्रान । कहे बैठुसुत नृप मति-मान । हेसुतत्यागिलाज भयमानि । प्रश्नकरो हियश्रद्धाआनि ॥ दोहा ॥ भीषमके येबचनसुनि मोदियुधिष्ठिर भूप । नौमि भीष्म अरु कृष्णकहँ कीन्हेंप्रश्न अनूप ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ हेशीक्षक सब धर्म्मको राजधर्म्म अभिराम । जिमि अंकुश मैगलनकहँ घोड़हि यथालगाम ॥ सोविचारि भाष्योप्रथम राजधर्म ब्यवहार । नृपहि उचित पहिलेसुनै राजधर्म अधिकार ॥ रोला ॥ नृपयुधिष्ठिरके वचनसुनि कहेभीषम दच्छ । नमोविप्रन नमोधर्मन नमःकृष्णहि अच्छ ॥ सुनियुधिष्ठिर कहत हैं हम राजधर्म्म अनूप । देवता अरु द्विजन अरचत रहैं गति अनुरूप ॥ प्रालब्ध अरु पौ-रुषै मानै श्रेष्ठ त्याज्यनएक । करैपौरुष सिद्धि नहिं तबगुणो कर्मबिवेक ॥ भूपतिहि है ऋद्धि धारण सत्यते नहिं और । लहत आनँद दुहूँदिशिजो सत्यरत नृपमौर ॥ दान्तधर्मी गुणी सुंदर मृदुजितेंद्री दच्छ । शान्तशील सुअहिंसक जोलोभजित हैस्वच्छ ॥ दानशील प्रसन्न मुखअरु शिखेसब गुणचोप । रहे निरखत रंध्रपर निजरंध्ररारवैगोप ॥ महामृदुता गहैनाहिंनहिंमहा उग्रसुभाव । महा मृदुता व्यर्थ शासन महाउग्रअचाव ॥ नीति बिधिते बधन लायककर्म द्विजकोचाहि । बधैनहिं निजदेशतेगहि करे बाहेरताहि ॥ पुरुष सञ्चनकरै करिकै दानमान यथेष्ट । आ-त्महित सबदुर्गते नर दुर्गजानै श्रेष्ट ॥ कोषगिरि गढ़ नदीबन दलदुर्गये षटनाम । दलहि सबतेअधिक जानैभूपसो मतिधाम ॥ पुरुषको गुणदोष परखैकरै तिमिसत्कार । बिरह बिषयाधीननहिं नहिंतजै आत्म विचार ॥ आत्मसंगम गर्बयुत तियतजै ताहिन भूप । क्षुद्रजनसों कहैकबहुं नहास्य वचन विरूप ॥ आपनोप्रिय तजैते जोप्रजनको हितहोय । तजैभूपति ताहि राखै धार धर्म

समोय ॥ रहैराखे शास्त्रको अरुशस्त्रको अभ्यास। रहै राखैकर्म करिकै चारिफलकी आस ॥ रहैरक्षत धर्मआश्रम वरणको मन लाय। वर्णसंकर होनदेइ न दंड भयअधिकाय ॥ कामसौंपैजाहि तामैंगहै नाअविश्वास। विश्वास अतिशयगहै नहिंनहिंकहै काहू पास ॥ भिरैछोटेहु शत्रुसों तौचलैओज बढ़ाय। रहैलाये भेदताके फौजमें मनलाय ॥ भारराखै भटनपैनाहिं रहैगाफिलनेक। आपु रहिचैतन्य नियमित रहैयुद्ध बिबेक ॥ रहै कर्षत सुधनु नययुत तथावर्षत पेखि। करैअर्जुन कोषको नृपनीति परमाविशेखि॥ वृद्ध सुगुणी सुबुधि धर्मी गणिक भिषजसयान। शकुन ज्ञातनसंगरा-खैभूपसो मतिमान ॥ शूरकवि निजभक्त अरु निजनात निजकुल जात। साधु विद्यामान नृपतिहि मान्यनितयेसात ॥ करै आत्म सहायताको करैअपुसहाय। पक्षनिजपर पक्षनिरखत रहैनितमन लाय ॥ रहैसबको बित्तसबकर रहैजो भयदेत। शीघ्रसो नृपक्रूर प्रकृती जायबधि तेहिहेत ॥ दगासहसा कर्मछल अनियाय कर्म बलात। सकैकरि नहिंप्रजाजाके तौननृपअवदात ॥ दोहा ॥ पुत्र पितुकेगेह मेंजिमि बिलसत बिनभीत। तिमिबिलसत जाकेप्रजा सोनृपसदाअजीत ॥ चारजासु सबठौर रहिगुप्त लखतव्यवहार। मंत्रजासुअतिगुप्तहै पटुसो भूभरतार ॥ पूर्वप्रचेतस मनुकहे षट बिनसत सुनुतौन। बिनबकता आचार्य्य अरु निपढ़ा ऋत्विज जौन ॥भूप अरक्षित भूपतिय अप्रिय बादिनिनास। गोपनशत गृहबासकरि नाऊकरि बनबास ॥ शत्रुहि दुर्बलदेखिकै भूपनजानै छाम। समय पायथोरो अगिनिबढ़ि जारत सबग्राम ॥ राजतंत्र अति कठिनहै नहिं निबहत अल्पज्ञ। ताते आलस त्यागिनृप रहतसदा सर्ब्बज्ञ ॥ भीषम यह नृपनीति कहि भाषे सुनु कुरु भूप। होइ कहूं संदेहतौ बूझौ बचन अनूप ॥ यह सुनि नारद आदि मुनि कृष्ण युधिष्ठिर आदि। साधु साधु भीष्महि कहे अतिऋजु सुबचननादि ॥ संध्यालखि कृष्णादितत्र द्विजननौमि

उठितत्र । करि सुप्रदक्षिण भीष्मकहँ रथ चढ़िगे गृहयत्र ॥ संध्यादिककरि निशिबितै प्रातकृत्यकरि सर्ब । रथचढ़ि चढ़िकुरुक्षेत्रकै गे जहँ भीष्म अखर्ब ॥ नौमिब्यास आदिकन कहँ बैठे सब मतिमान । बन्दि भीष्मकहँ कहतभे धर्म महीप सुजान युधिष्ठिरउवाच ॥ भोराजा यह शब्दबर सो काहे मतिभौन । तुल्य पाणिपदशीश कटिउरग्रीवा अरु श्रौन ॥ जन्म मरण ब्यापार समएकहि सेवत सर्ब । पालत सबकहँ एकयह कारणकौन अखर्ब ॥ कहो पितामह सबिधिज्यहि यह संशय मिटिजाय । यह सुनिकै भीषमकहे सुनहुभूप कुरुराय ॥ कवित्त ॥ पूर्बकृत युग मैं न राजाहो न रहीराज दण्डहो न रहो दण्डदायक जो कहिये। आपुस में प्रजाबूझि धर्म परस्पर रक्षण करत रहैं जहँ जैसो चहिये । कहै गोपीनाथ कछुदिनबीते बाढ़ोलोभ निज निज कारजकी सिद्धि कीन्हें सहिये । बिनादण्ड दाता निरभय ह्वै अनुमानै अबसोई करै जातेसुख शौर्य्य मोदलहिये ॥ अपरम् ॥ बाच्य औ अबाच्य भक्ष्याभक्ष्य औ अगम्यागम्य अपनो औ परको बिचार छोड़े सिगरे । दण्डदाता रहो नहिं लोकलाज छोड़ि दीन्हें स्वारथ के लोभलागि देखीदेखाबिगरे । गोपीनाथ देखि तौन सुरगण पीड़ित ह्वै जायपास बेधाको दशा समस्त निगरे । बेधा सुनि तौन घरी एकबूझि अनुमाने बिनादण्डदाता एकएकभे अदिगरे ॥ दोहा ॥ तबबेधा अनुमानकरि पदस हसन अध्याय । बिरचे जाकेमधिकहे सबफल साधन न्याय ॥ पृथक्अर्थ गुण सबकहे अरुत्रिगर्ब बिख्यात । स्थानवृद्धिक्षय के कहे देशकाल अवदात ॥ राजपुत्र लक्षण कहे अरु राजन की नीति । मंत्रकहे फलमंत्रके देनकहे अरुरीति ॥ यात्राकाल त्रिवर्गअरु पंचबर्ग साबिधान । बिरचे रचना शयनकी बिजय धर्मअनुमान ॥ शत्रु मित्रके गुणकहे कहे मार्गगुण तौन । अरु उत्पात निपातकहि कहे युद्धजतिजौन ॥ अस्त्रशास्त्र सहमंत्रकहि

कहे व्यूह व्यवहार। कहे अलभको लाभअरु लाभविबर धन चार॥ रक्षणविधि सब प्रजनको पुरगढ़ रक्षणठौर। बरणेविधि भगवान प्रभु जग प्रपंच सब और॥ नीतिशास्त्र अतिविमल सो महाअनूपम चाहि। प्रथम शम्भुकीन्हे ग्रहण जगत प्रशं-सत जाहि॥ सो लखिकै अतिमोदगहि कार्तिकेय बलरास। द्वै हजार अध्यायको करतभये अभ्यास॥ तदनु इन्द्र कीन्हेंग्रहण पांचसहस अध्याय। तीनिसहस अध्यायतब सुरगुरुगहेसचा-य॥ बार्हस्पत्य कहतसो जानत सबआचार्य्य। शुक्र सहस अ-ध्यायसों बरणे योगाचार्य्य॥ यहि प्रकार सबशास्त्रको उतपति भो सुनुभूप। अबसुनु जेहि विधि होतभो नरपति उत्पतिरूप॥ सुनु उतपति सब शास्त्रकी सुरगण आनँदपाय। जाय विष्णु के पासतिमि कहतभये समुझाय॥ सोसुनि हरिगुणि घरिकलों जग शीक्षणके हेत। प्रगटकिये निजतेज सों विरजनाय अति चेत॥ भयो प्रणीता तासुसुत कीर्तिमानभो तासु। कर्दम ताकोसुतभयो तपप्रभाव अति जासु॥ ताकोसुत क्षितिपालभो नामअनंग वि-शाल। नीतिमान सुत तासुभो मृत्युनाम क्षितिपाल॥ भई सुता नृप मृत्युकी नामसुनीथा एक। बेननाम सुत तासुभो सो धारयो अबिवेक॥ मुनिगण ताकहँ पकरिकै मन्थे दक्षिणजानु। क्षुद्रपु-रुष ताकहँ कढ़ो जो निषाद बनमानु॥ तब दक्षिणकर मथत भे ऋषिगण भरेउछाह। तहांशस्त्रसह शक्रसम प्रगटोपृथुनरनाह॥ सर्बवेद वेदांगअरु धनुर्वेदज्ञातार। पृथुबूझतभे मुनिनसों निज कर्तव्य अचार॥ तब ऋषिगण पृथुसों कहेपालोप्रजा सुनीति। बिनु शीक्षक अधरमगहे सिगरे प्रजाअभीति॥ इमिकहिसम्मत करिभये शुक्र पुरोधा तासु। बालखिल्य मंत्रीभये गर्ग गणिकभे आसु॥ अस्तुति हित प्रगटित भये मागध सूत अमन्द। बन्दी-जन परबीण अति करता सुयश सुछन्द॥ शिलाढेर सबथरपरे भूमिविषम अति देखि। पृथुमहीप बलवान प्रभु सम करिबो

अवरेखि ॥ शिलाटारि धनुषाग्रसों थरथर कीन्हें शैल । तबतें महियहि बिधि भई सम स्वरूप ऋजुगैल ॥ बिष्णुशक्र बिधि ऋषिन सह किये तासु अभिषेक । शक्रधनद तेहिदेत भे धन असंख्य सबिवेक ॥ हय गजरथ कोटिन पुरुष भये मानसिक तास । पृथु सुभूमिपति करतभो सिगरो धर्म प्रकास ॥ पृथुदोहे गोरूप महि सत्रह शश्यमहान । देव असुर आदिक सबैदोहिलये मनमान ॥ भूमितासु पुत्रीभई ताते पृथ्वीनाम । कीरति पृथु नरनाह की जग जाहिर अभिराम ॥ जनरंजन गुणतेभयो राजा शुद्ध अनूप । क्षतते त्राणकिये भयो क्षत्रीगुण अनुरूप ॥ राजामों बिलसत प्रविशि विष्णु तेजको अंस । ताते पालनगुण गहे राजा परम प्रशंस ॥ बिधिकीन्हे सबशास्त्रजो सो राजनके हेत । ताते राजनकहँ उचित सदाशास्त्र रतचेत ॥ सोरठा ॥ यह सुनिधर्म महीप भीषमसों फिरि कहतभे । अब कहिये कुलदीप धरम आश्रम बरणको ॥ राजधर्म मत जौन राजा बर्द्धत जौन करि । राज्य प्रजाधन भौन बढ़त कहा कीन्हेंकहो ॥ राज्यसहायी कोष मंत्री ऋत्विजत्याज्यकस । भरेकौनसोदोष त्याज्यअचार्य्य पुरोहितौ ॥ कैसो आरतपाय करबकेसु बिश्वासबर । केहिअवसर मनलाय निजरक्षण अतिदृढ़ उचित ॥ भीष्मउवाच ॥ मधुप ॥ द्विजन नौमि । बचन सौमि ॥ कहततौन । चहतजौन ॥ बिनाक्रोध । क्षमाशोध ॥ सत्यसोह । बिना द्रोह ॥ भृत्य पाल । शुचिरसाल ॥ निज सुदार । रतउदार ॥ धरम राग । कपट त्याग ॥ विप्रदेव । भक्तिभेव ॥ दोहा ॥ नृप साधारण ये सदा तीनिबरण के धर्म । अब ब्राह्मणबर बरणके सुनोधर्म अरुकर्म ॥ प्रथमकरै अध्ययनफिरि अध्यापन सुनुभूप । दान प्रतिग्रह यजन अरु याजनकरै अनूप ॥ ब्राह्मणके षटकरमये इनमें क्षत्रिहितीन । अध्ययन दानअरु यजनइमि कहतप्रवीण प्रवीन ॥ युद्ध प्रजापालन करब तस्कर बधकीचाह । पालन बरणाश्रम धरम राजनीति उत्साह ॥ दान

अध्ययन यज्ञअरु धनसंचन व्यवहार। पालन सिगरे पशुनको वैश्यधर्म अधिकार॥ पूर्वप्रजापति पशुन रचि भयेवैश्यहिदेत। ब्राह्मण क्षत्रिहि सबप्रजा दीन्हेंपालनहेत॥ सेवाकरब त्रिबर्णकी धर्मशूद्रकोपर्म। करिसेवा त्रय बरणकी गहै जीवकाकर्म॥ सेवा हितत्रयबरण की रच्यो प्रजापतिताहि। शूद्रहि उचित न जोरि धन आपु पुजावैचाहि॥ गहै सुश्रद्धायज्ञकी शूद्रपाइ जो गाथ। फलपावै तादृशैकरि सिद्ध बिप्रकेहाथ॥ भूपतिहै सब बरणकहँ यज्ञदान अधिकार। यज्ञदान सम औरनाहिं इतउत साधनहार॥ बेशम्पायनउवाच॥ वर्ण धर्म्म यहिभांति कहि भीषम ज्ञान विधान। कहत भये आश्रम धरम सुनोभूप मतिमान॥ लहि सँस्कारद्वि-जत्व लहि करै शास्त्रअभ्यास। तब सदारह्वैके गृही करै सुधर्म प्रकास॥ देव पितर अर्चनकरै अतिथिनको परिपोष। पालन करै कुटुम्बको यह गृह धर्म अदोष॥ कै सहदार अदारकै करै बिपिन मधिबास। तहां आरस्यक शास्त्रको सबिधि करै अभ्या-स॥ रहिसु जितेन्द्री तत्त्वबिद बानप्रस्थ बिधान। ऊरधरेता त्यागितन पावत पद निर्बान॥ ब्रह्मचर्य्य ब्राह्मणगहै रहै निरा-सन तौन। राखै भोजन वृत्तिसो प्राप्तहोइ जब जौन॥ मनन-शील अविकार निति इन्द्रीजित निष्काम। ब्रह्मचर्य्य ब्रत सिद्धकरि पावतपद अभिराम॥ परम धरम संन्यासको फिरि न ग्रहणकरि त्याग। यहिबिधि आश्रम धरम सब साधत पूरण भाग॥ गृही बिप्रकहँ उचितहै निति षटकर्म बिधान। करिबन-बास सनियमद्विज है कृतकृत्य महान॥ ग्राम्य जीविका कुटिल द्विज शूद्रपुरोहित जौन। असिजीवी वृषलीपती विप्र शूद्रसम तौन॥ कृषीकार हिंसक चुगुल लम्पट बिगत बिचार। बिप्रयज्ञ के गेहमो नहिं ताकोअधिकार॥ जेहिप्रकार त्रयबरणकहँ और आशरम चार। सुनौतौन भूपालमणि कहत पृथक व्यवहार॥ करिसेवा त्रयबरणकी करिपौराणिककर्म। पुत्रोत्पति करिभूनृपति

आज्ञालै त्याजि भर्म ॥ शूद्र और आश्रमगहै बिना अशिष सं-
न्यास। वैदिककरि संन्यास बिनु बैश्यहि आश्रमबास ॥ तिमि
क्षत्रिणकहँ उचितहै करिकैपुत्र प्रधान। गहैं और आश्रम तथा
बिनुसंन्यास महान ॥ बैद्यकर्मकरि नीतियुत प्रजापालि सबिधा-
न। कै अधिकीकै स्वल्प करि युद्धभूरिदैदान ॥ यज्ञअश्वमेधादि
करि पुत्रहिदै महिभार। पितृयज्ञ करि करि तथा देवयज्ञअधि-
कार ॥ भूरि दक्षिणा द्विजनदै प्रजनतोषि मतिरास। सुनहुभूप
भूपंहि उचित और आशरमबास ॥ हैसुधरम सबबरणके नृप
सुधरम आधीन। नीतिनिपुण नरनाह तब होत धरमसबपीन ॥
रोला॥पूर्बमान्धातामहीपति रह्यो अतिअभिराम। उग्रमखसोकियो
विष्णुहि लखनको करिकाम ॥ शक्रकोगहिरूप श्रीजगदीश प्रभु
तहँआय। कहेमान्धाता नृपतिसों सुनोनृप मनलाय॥ बिष्णुप्रभु
के लखनको तुम किये काम महान। तासु दर्शनहममहिं दुरलभ
लखैकोनृप आन ॥ और काम बिचार करिकै कही जो मनमान।
देबहमसो पूर्णकरि मति गहोहठ अनुमान ॥ मान्धाता शक्रके ये
बचन सुनि अनुमानि। कहेहम बनवास करिबो चहतनिजहित
जानि॥ बिष्णु सबसों कठिनकीन्हें राजधर्म ललाम। प्रजापालन
बिप्र रक्षण दुष्ट दण्डन आन ॥ बरण आश्रम धरमरक्षण दुर्ग
संचनसर्ब। यज्ञकरतब शास्त्र चिन्तन दानब्रत सबपर्ब ॥ बिना
रक्षण किये नृपके नशत सिगरे धर्म। धर्म बिनशे प्रजा बिनशत
धारि कुत्सित कर्म ॥ भूपके ये बचन सुनिकै कहे शक्र सुजान।
सत्यनृप के किये रक्षण रहत धर्म समान ॥ योग्य तुमसब धर्म
रक्षण करो नृप ब्रत राखि। उचित भूपहि प्रजा पालन जगत
हित अभिलाखि ॥ मान्धातोवाच॥ यवन शक्र काम्बोज बर्बर अरु
पुलिन्द तुषार। पौंड्रचीन किरात मद्रककङ्क अरु गान्धार ॥
करत तस्करकर्म ये सब बिदित जानत जौन। सहैं हम केहि
भांति ये सब लहैंगे गतितौन ॥ इन्द्रउवाच ॥ पिता माता गुरु

अरु आचार्य्य भूपश्रमान। तासुसेवन करत ते सब जानिधर्म महान ॥ करत पोषण गोत को अरु अतिथि को सतकार। दान बिधिवत देत बिप्रन समयके अनुसार॥ देतज्ञानिन अन्नभोजन पाक यज्ञबिख्यात। इहै उनको धर्म ताते लहत गति अवदात॥ मान्धातोवाच ॥ और तस्कर बहुत जगमें करत कुत्सित कर्म। तासुव्याख्याकह्यो सुरपति कौन जानत धर्म॥ इन्द्र उवाच ॥ होतभूपति शिथिलमति नहिं दण्डजानतदैन। बरण आश्रमधरमतब च्युतहोत बादतऐन॥ धर्मशास्त्र पुराणके बिनु सुने जनकैमूढ़। करततस्कर करमआदिक करमकुत्सितरूढ़॥ भूमिपति चैतन्य धारत दण्ड नीतिमहान। चलतनहिं तबधर्म ताते भूपधर्मप्रधान॥ श्रेष्ठगुरु यहिलोकको नृपजौन सुधरम पाल। तासुशासन नहींमानत मूढ़सो चांडाल॥ नीतियुत नहिं प्रजापालन भूपजानत जौन। शीघ्र बिनशत तौन जैसे अन्ध करि पथगौन॥ भीष्मउवाच ॥ भाषिऐसो शक्ररूपी बिष्णुगे निज धाम। भयो मान्धाता महीपति राज्य रत अभिराम॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सुने हमसब बरण करता सर्व आश्रम बास। कौन बिधि यह पितामह सोकरो सबिधि प्रकास॥ भीष्मउवाच ॥ धर्म नृपसरबज्ञतुम तुम नहीं जानतकौन। गुप्तबिधिगाहि धर्मबूझत कहतहैंहमतौन॥ जोअकाम अद्वेष सुमती ज्ञानगतिज्ञातार। सुबुधि समदर्शी सुदाता सावधानसुचार॥ क्षमाशमदमधीरता गुणदया साधनहार। जौन निग्रह अरु अनुग्रह कर्म कुशल उदार॥ सुहृद समदरशी अहिंसक अभयबर दातार। जौन पालत आगतन नितकरत परउपकार॥ मानमानिहि देत जो सत्कार करि सुखरास। सुनो भूपति करत सो सब आशरमको बास॥ दोहा ॥ करत आह्निक यज्ञजो देवपितृ मखजौन। देवार्चन रत पुरुषसब आश्रमबासिक तौन॥ देशधर्म कुलधर्म को पालन करताजौन। परधनपरातिय बिमुखसब आश्रमाबिलसत

तौन ॥ बरण आश्रम धर्म अरु सर्बधर्म चरितार। धर्मी पुरुष सदैवसब आश्रम बिहरनहार॥ वेदाध्ययन सुभावजे शास्त्रनिरीक्षणवान। तत्व मनन करता सकल आश्रम में परधान॥ गुरु सेवी करता सुजप सदाचाररतजौन। सतसंगतिरत पुरुषसब आश्रमबासीतौन॥ गृहआश्रम तेसधतहैं सबआश्रमकोबास। ताते गृह आश्रम सरस जो मतिरहै प्रकास॥ बैशम्पायनउवाच॥ सोरठा॥ बरण आश्रम रीति इमिकहि भीषम कहतभे। पाले सुधरमनीति राज्यप्रजाधन सबबढ़त॥ राज्य अराजक जौन कै अजान राजा जहां। अवशि त्याज्य है तौन तासु दोष मन दै सुनो॥ तहँ न नीतिको लेश सबलनिबल कहँदेतदुख। जिमि जलजन्तु बिशेश बड़ेलघुनकहँ खातगहि॥ तहँसब धर्मनशात बढ़त पाप दायक निरय। बिनशतगुणअवदात हाथनआवत धन कबहुँ॥ सदाबसाति सबपास घोरभीतिपर सयनकी। दिन लहिहोत बिनास घरधन दुरमति जननकी॥ राजाजहांअज्ञान ब्यर्थ तहां गुणगुणिनको। जिमि कामिनिकोमान ब्यर्थ नपुंसक पुरुषढिग॥ सुगुणी शूरसुजान सबको करतब ब्यर्थतहँ। जहँ भूपति अज्ञान बंध्यातिय मैथुनयथा॥ दोहा॥ इन्द्रयथा सुरलोक मधि भूपतथा यहिलोक। सुरपति पालत लोकसबतिमि भूपति सबओक॥ तातेसब बिधि प्रजनकहँ रक्षणीय क्षितिपाल। धन तन मनदै कपटबिनु आलसबिन सबकाल॥ पूर्ब प्रजनमनुसों कियो यहनिबन्ध गहिराग। हमसबसेइब नृपतिनितिदेत न मन धनभाग॥ युधिष्ठिरउवाच॥ परमदेवता नृपतिकहँ किमि भाषत मतिमान। कहोतौनसम पितामह तुमसर्बज्ञसुजान॥ भीष्मउवाच॥ अत्र पूर्ब इतिहासहम कहत सुनोनृपतौन। कियोजीवसों प्रश्न यह बसुमन उरबीरौन॥ जीवप्रश्नसो सुनिकहे नृपसुनु भूपप्रभाव। कोपिभूपके भयदये प्रजाहोत गतचाव॥ नृपति मूल सब धर्मको लघुवरगति दातार। परालब्ध जसप्रजनको नृपमहिस्थ

करतार ॥ बिनाउदय शशि सूरके यथारहत तमछाय। तथाभूप बिनुदेशमाधि बसत आपदाआय ॥ जिमि जलसूखेहोतहै विकल मीन समुदाय। नृपहिभये कृशप्रजनकहँ तिमि आपद नगिचाय ॥ गोपबिना गोयूथ जिमि जलबिन शालीभाव। भूपबिना तिमि प्रजा जिमि कर्णधार बिनुनाव ॥ छप्पै ॥ हरैनिबलको बित्त सबल जोभूपन रक्षै। चोरनिधन करिदेहि प्रजनजोभूप न रक्षै ॥ गुरुन न मानै मूढ़ धर्मजो भूप न रक्षै। प्रजाअपाप न होहिधर्म जो भूप न रक्षै ॥ लरि मरै सबल भिरिजो न भूप रक्षण करै। नहिंचलै बनिजव्यवहार मगजो न भूप रक्षणकरै ॥ वर्णआश्रम धर्म मिटैजो भूप न रक्षै। होहि वर्ण संक्रमितलोक जो भूप न रक्षै ॥ वेदउक्त मखकर्म मिटैजो भूप न रक्षै। शास्त्र लोक कुल रीति मिटैजो भूप न रक्षै ॥ बणिककरै दुर्भिक्षभावजो भूप न रक्षै। यज्ञ दान व्रत नहींहोयजो भूप न रक्षै ॥ मतिमान नृपति रक्षत रहै तौ न नेकु सुधरम टरै। समभाव धर्म सुकरमरहै ओकओक आनँद भरै ॥ अपरं ॥ भूप अग्नि रबि धनद मृत्यु यम बिष्णु सदृश निति। करत दण्डदे शुद्ध प्रजनसों नृप पावक मिति ॥ चारु चक्षुकरि लखतरहत परजनसों दिन मनि। बधत शत्रुसमुदाय जौनसो मृत्युसदृश बनि ॥ जोदेत अधर्मिन दण्ड अति धर्मिन पोषत तौन यम। धनदेत रहत नितधनद नृप परजन पालत बिष्णुसम ॥ दोहा ॥ मित्र पुत्र दौहित्र हित अरु पितृव्य सुभाय। भूप न इनको हितकरै लखिअन्यायकरि न्याय ॥ ऐसो समदर्शी नृपति सुमनसदृश नहिंभेद। जासुकृपाते दुख मिटत कोपे उपजत खेद ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ जीति लहत निति अरिनसों केहिबिधिको क्षितिपाल। कहो पितामह नीतिवह तुम मतिमान बिशाल ॥ भीष्मउवाच ॥ जयशत्रुसों लहत सब इन्द्रिय जितनृपजौन। आपुहि जीतिन सकतकिमि औरहिजीततताैन ॥ बन उपबन सबनगरमधि बन्धुआदिजे और। राखैहित अनहि-

तनप्राति गुप्तचार सबठौर ॥ समाचार जैसोसुनै तैसोरचै उपाय। गुप्त चारपरदेशके बसन नपावै आय ॥ आदिदिवान सुमंत्रबिद तिनसों मंत्रदढ़ाय । आपु समुझि सिद्धांत गुणि करैजौनसुख-दाय ॥ प्रबलशत्रु सों लरैतौ करिकैभेद उपाय । लखन नपावै आपनो भेद शत्रुदढ़घाय॥ दानमानदै भटनकहँ राखैसदाप्रसन्न। रहै मंगावत सैनमें तृणरस इन्धन अन्न ॥ परम्पराके सुभट हितशुद्धसुबुधि बलवान। राखैअपने पासदैहय हथ्यारसन्मान॥ निबल शत्रुकहँ निबलगुणि लरैन बिनाउपाय । प्रबलशत्रु पहँ चलैजिमितिमि निबलनपहँजाय ॥ निजअपकारी होहिंतेहिमारै अवसरपाय । उपकारी अवरेखिकैं पोषै प्रीति बढ़ाय ॥ निबल भूप करदेइतौ लरैन सहसाजाय । क्रमसों धनलै निधनकरितब महिलेय दबाय ॥ महा प्रबलअरि होयजो नहींलरन केयोग । सामदामकरि फेरितेहि करैप्रबल उतयोग ॥ जोनहिंमानै निबल गुणिलयोचहै महिमारि । तौधनद्वारा पौरजन दैइप्रथमहि टारि ॥ धनीप्रजा अरुकारणी बन्धु इन्हैं सन्मानि । टारैसबके संगकरि सँगदैभट अनुमानि ॥ नामीअपने अंगजे चाकरसखा दिवान। भेजैतिनके दारधन जहँ निजदार समान ॥ आपु बिपिन गिरि अगढ़गढ़ पकरिरहै थिरभूप। शत्रुयहरैनिजदेशको यहनृपनीति अनूप ॥ रहैलगाये शत्रुके दलमाधि चारअनेक। लेतरहैंसबस-मयकी खबरि बिचार बिबेक ॥ सामदाम आदिकनकी दये रहै पैगाम । धनदैताके सखनको करैपक्ष अभिराम ॥ चोरलायक-षतरहै हयहाथीहाथियार । ताहूके बधकोतिन्हैं दयेरहैअधिकार॥ लरै शतघ्नी लायकै नेकुनत्यागै धीर । समय देखिकै कढ़िलरै सोजयलहै गँभीर ॥ ऐसे दिन हितगढ़नमें सराजामको ढेर ॥ सुँचेरहे क्षितिपालनिति लगैनआयेबेर ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ केहिप्रकारचरिभूप लहत सुयशइति स्वर्गउत। सोआचार अ-नूप कहो पितामह परसपटु ॥ भीष्मउवाच ॥ छप्पै ॥ रागद्वेष बिनु

करै धर्म अरु कर्मसुभावन । बिनानिठुरता करैअर्थ संचन मन भावन ॥ ऋजु भाषै बिनुभीत दानपात्रनदै मोदत। दया न त्यागै कबहुं न निजगुण भाषि बिनोदत॥ गुणि बन्धुबिरोधन हियधरै नहिं अनार्य्यकहँ हितकरै । जेभरे लोभयशहीन नहिंन्यायभार तिनपहँधरै ॥ अहित मीठनहिंखाय करै नहिंतियसंगम अति। दयात्यागि नहिंगहै उग्रता कहैबचनसति ॥ बिनुपरखे नहिंलेइ दण्डनहिं मंत्रप्रकाशै।धननसाधुसोंलेइ असाधुहि देइनआशै॥ नहिंदेवन अरचैदंभसह लेइनकुत्सित धनकबहु।नितिदेशकाल परखतरहै रहिप्रसन्न दर्शैसबहु ॥ दोहा ॥ गुरुमान्यअरु गुणि-नमें गहैनमायाभाव। कलबलशत्रु सबर्गबधिगहैनहीं पछिताव॥ गहि ऐसो आचरण निति भूपति भोगै भूमि । तासु चन्द्रिका सदृशयश लसै जगतमें घूमि ॥ भूप प्रातही उठिधरै गुरू इष्ट को ध्यान। प्रातकृत्य करिकैकरै देवार्चन सविधान ॥ दानदेइ फिरि द्विजनकहँ सुनि आशिष स्वस्त्यैन। राजकाज फिरिनीति मग करै भूपमणिऐन ॥ आदि पुरोहित द्विजनको पूजन श्रीदा तार । बिप्रकृपाते नृपनकी बढ़ति बिभूति उदार ॥ बिप्रवदनते बाहुते क्षत्रियभयेअनूप । बैश्यउरूते होतभे पदतेशूद्रस्वरूप॥ बिप्रजेष्ठ सबतेगुरू सबबिधि पूजनयोग। प्रगटबिष्णुमुखमुदित सुख दायक सकल प्रयोग ॥ भोजनते तोषै द्विजहि तोषत प्रभु जगदीश। बिप्र पाणि सबजगतको गुरुलघु बिश्वेबीश ॥ यथा पुरोहित नृपतिको पापपुण्य परसूति। लहत पुरोहितनृपतिको पापपुण्य परसूति ॥ बाहुजक्षत्रिहि बिधिदये दण्डदान प्रति-पाल।द्विजक्षत्रिय निजधर्मगत तो अनंद सबकाल॥ इमिपुरू-रवा सों कहे पूर्बबायु समुझाय । सोईहम तुमसोंकहे बिप्रकृपा सुखदाय ॥ क्रियावान धरमी सुहद बहुश्रुतिशास्त्रीदच्छ । चही पुरोहित भूपकहँ मंत्राभ्यासी स्वच्छ॥ याहिबिधि महिमाबिप्रकी पुरूरवाके पास । कश्यपभाषै प्रश्नसुनि सुनोभूप मतिरास ॥

होत पुरोहित कुशलतब नृपहि कुशलसरबत्र । सुनोपूर्व इतिहास हमभूप कहतहैं अत्र ॥ चौपाई ॥ पूर्बभूप मुचकुन्दअमाना । जीति सकल पृथ्वी बलवाना ॥ भरोगर्ब अति धनपति जूपर । सैन सहित चढ़िगो गिरि ऊपर ॥ धनपति असुरन शासनदीन्हे । ते लरि नृपदल मरदित कीन्हे ॥ तब मुचकुन्द द्विजनसों भाषे । खरे लखतहो का अभिलाषे ॥ सो बशिष्ठ पूरोहित सुनिके । ये प्रभाव प्रगटतभे गुनिके ॥ तप बल असुरन लोपित करिके । पथ निर्म्मल कीन्हे प्रण धरिके ॥ धनपति तप प्रभाव यह ज्वैके । कहे भूपसों प्रगटित ह्वैके ॥ निज भुजबल प्रगटित करुराजा । दूरिराखि सब बिप्र समाजा । भुजबल बिजयलहेते कीरति । परबल बिजय न महिमाथीरति ॥ सोसुनिनृपमुचकुन्द रिसाई । कहे धनद तुम सुमति न पाई ॥ रचोस्वयंभु भूमि धुर धारण । ब्रह्म क्षत्रि जगपालन कारण ॥ बिप्र मंत्र तप बल सब लायक । क्षत्रिय अस्त्रबाहुबल चायक ॥ ब्रह्म क्षत्रि मिलि कारज साधत । सो हम किये दोषकत नाधत ॥ सुनि अलकेश मोद हिय आने । नृप मुचकुन्दहि अति सनमाने ॥ ह्वै मुचकुन्द बिदा धनपति सों । निजपुर आये आनँद अति सों ॥ बिप्रन पूजि कूजि मृदुबानी । भो कृतकृत्य भूमिपति ज्ञानी ॥ दोहा ॥ यहि बिधि बिप्र प्रसाद ते बिजय लहत क्षितिपाल । नित्य धर्म्म है नृपतिको द्विज सेवा सबकाल ॥

इतिशान्तिपर्वणिराजधर्म्मे युधिष्ठिरभीष्मसंबादोनामचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ भूपतिजो आचरणकरि बर्धतप्रजनसदैव । कहो तौनआचरण प्रभु तुम वक्ता जिमिदैव ॥ भीष्मउवाच ॥ दानशील मखशील नृप तपब्रतशील सुजान । धर्मशील बर्द्धित करत पर जन सहित बिधान ॥ भूप गहत आचरण जो प्रजा गहतिहै तौन । होत यथा राजा तथा प्रजाधूरि जित पौन ॥ नृप रक्षित परजा करत अधरम सुधरम जौन । तासु भाग चौथो लहत

भूप शास्त्रमत तौन ॥ चोर हरैधन प्रजाको चोरहिलहैं न भूप। तौ तितनो धनतेहि प्रजहि देइनीति अनुरूप ॥ ताते तस्कर गहनमें मनराखे नृपजात। गहि नहिं छोड़ै वधकरै तौन होइ उतपात ॥ हरै जीविका बिप्रको करै बिप्रसों बैर। ताहि निकासै देशते तौ न गहैखल मैर ॥ विद्यालक्षण साहितजे समदरशी मतिमान। कर्मकुशल अरुवेद विद सोद्विज ब्रह्मसमान ॥ जन्म कर्मते हीनजे विद्याहीन अजान। शूद्रसरिसते बिप्रहैं अरु नि-र्तन गुणवान ॥ जाहि ग्रामयाचककहत देवपुजेरूजौन। दाना-ध्यक्ष जहांजगत हीनशूद्रतें तौन ॥ जार ऋतिकमंत्री दूत अरु चारपुरोहित जौन। बिप्रतौन क्षत्रियसदृश सुनोभूप मतिभौन ॥ जे हयरथ घोरेचढ़े तेबइश्य समहोत। इनसों भूपति लेइकर जौं कृसको सतनोत ॥ ब्राह्मण तस्करतागहे लहिदरिद्रको बाध। गुणत सकल मतिमान तहँ भूपतिको अपराध ॥ बिप्र अकर्मी तासु अरु तीनिबरण जेसर्ब। भूपति तिनके बित्तके स्वामीनीति अखर्ब ॥ द्विजहिअकर्मी मतिचहैं कबहुंभूप सुनुभूप। नितपालै सबबरणकहँ बरण आशरमरूप ॥ अत्रपूर्ब इतिहास हम कहत सुनो नृपतौन। राक्षससों जोकहतभो केकय उरबीरौन ॥ ब्रत धारी केकय नृपहि राक्षसबनमधि पाय। गहतभयो केकयनृपति तब इमि कह्योसचाय ॥ नहिंमद्यप ममदेशमें चोर जुवारीनाहिं। नहिं बिश्वासघाती छली ममसुराज्य मधिमाहिं ॥ बिलसत निज निज धर्मगहि बरण ब्राह्मणहि आदि। तथा आश्रमी निजधरम नहिंतजि सकतप्रमादि ॥ यज्ञ दान तप ब्रत नियम लोकशास्त्र कुलरीति। यथा उचितमम सबप्रजा चरत देखि मम नीति ॥ शिष्य गुरुहि सेवत सविधि पुत्ररहत पितुभक्त। स्वामि भक्त सेवक तिया रहति पितहिअनुरक्त॥ बिप्ररहत षटकर्मरत क्षत्रिय शस्त्रप्रवीन। युद्धदान कीरतिगहे धरम नकरत मलीन ॥ बैश्य कृषी बाणिज्यरत गोरक्षणमें लीन। नहिंअसत्य भाषत कबहुं

होत न बिषय अधीन ॥ सेवारत त्रयबरणके गहत न मत्त सु-
भाव । निज सुकर्मरत शूद्र ममराखत धर्म बनाव ॥ देव पितर
अर्चतसबै पूजत द्विजपदकंज । दानमानदे गुणिनको करतसदा
मनरंज ॥ अरथी तापस अतिथि ये सब थरलहत सुपास । नि-
बल सबल मध्यम कबहुंकरत न बैरप्रकास ॥ नहिं परतियरत
पुरुष ममराज्य बिषे कहुंएक । नहिं द्विजद्वेषी पुरुष कहुं हैंसब
गहेबिबेक ॥ आत्मज्ञानीवेदविद तपकृतशास्त्रीदक्ष । ममपूरोहित
लोभ बिनुहै तिमि दानाध्यक्ष ॥ राक्षसका करिसकत मम जहँ
अनीति नहिं नेक ।जासुसहायी बिप्रबर ज्ञाता तत्व बिबेक ॥
राक्षसउवाच ॥ जासुराज्यमें नीति इमि है सबठौर अमेय । सोरा-
क्षस आदिकनसों है नृपसदा अजेय ॥ भीष्मउवाच ॥ इमिकहिकै
राक्षसगयो नृपआयो निजधाम । सुनोभूमिपति नीतिइमिदायक
बिजय अक्षाम ॥ सोरठा ॥ बरण आश्रम धर्म निशिदिन नृप
रक्षतरहत । बिप्रनहोइ अकर्मइतोमर्म निरखतरहै ॥ युधिष्ठिरउवाच ।
दोहा ॥ बिपतिपरे निज धर्ममें लखै नहीं निस्तार । क्षात्रधर्म के
करन को नहिं समर्थ अधिकार ॥ सो ब्राह्मण केहिभांतिके करि
बइश्य के कर्म । पालैनिज परिवार किमि प्रभु कहिये सो धर्म ॥
भीष्मउवाच ॥ कृषी करै तौ बिप्र बल गो संग्रह अनुमानि । और
बनिजब्यवहार सो करै जीविका जानि ॥ सुरा लवण तिल अश्व
पशु सिद्ध अन्न मधु मांस । इन्हें न बेचै द्विज कबहुं अरु नहिं
बेचै कांस ॥ इनके बेचे बिप्रको बिगरत है परलोक । ताते यहि
ब्यापारको बिप्रहि सब दिन रोक ॥ वेद देवता यज्ञ तप नहिं बेचै
द्विजराज । तातेभूपहि उचितहै पोखैबिप्र समाज ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥
कृशबल राजाहोइजो प्रजाहोहि बलवान । तौनृपकिमि शिक्षण
करै किमि पालै मतिमान ॥ भीष्मउवाच ॥ दानयज्ञ तप नियम
करि अरु लहि बिप्रसहाय । भूपति बल बर्द्धितकरै पालै प्रजा
सचाय ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ अब लक्षण ऋत्विजनके कहोतात पर-

हीन । सो सुनिकै भीषमकहे ऋत्विज कथाअहीन ॥ सकलवेद वेदांगविद शास्त्रकुशल मतिमान । सत्रसुकर्म आचारयुत सत्य वाक सुखदान ॥ बिनु अभिमान अद्रोह अरु शम दम साधन हार । क्षमावानह्रीवान अरु ब्रती अकाम उदार ॥ स्वच्छअहिं-सक ज्ञानमय शुद्ध सुभाव अनूप । ऐसे ऋत्विज सहितकरिकर्म बिबर्धित भूप ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ प्रति यज्ञनमें दक्षिणा भेद कहत हैं वेद । श्रद्धावान अद्रव्य किमि यज्ञकरै तजिखेद ॥भीष्मउवाच ॥ वेद कहत हित जननको नहिं माया अधिकाय । यज्ञ अंग है दक्षिणा फलदायक सुखदाय ॥ द्रव्य हीन जन मख करै यथा-शक्ति दे दान । द्रव्य हीन जन मख करै स्वल्पौ अधिक समा-न ॥ अति कृश धन श्रद्धा सहित लघुमति करि हेतात । पूर्ण पात्र दे लहतहै पूरण फल अवदात ॥ तप ब्राह्मण को यज्ञ है इहै वेद श्रुति पर्म्म । सत्य अहिंसा दम दया यह तप साधन धर्म्म ॥ वेद वचन मानैनहीं शास्त्र उलंघै जौन । निजमत मानै श्रेष्ठ जो आपुहि नाशैतौन ॥ ज्ञानी जननित करतहैं यज्ञब्राह्मण लाय । चित्त श्रुवा घृत समिध मन हविष ब्रह्मशिखि पाय ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ कैसोदेखि सुभाव सचिवकरैमतिमाननृप । कैसो देखि बनाव करै बिशास बिश्वासनाहिं ॥ भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ मित्र चारिबिधि होत हैं सुनो भूप मतिमान । ते सहार्थ अरु सहजऔ कृत्तिम अरुभजमान ॥ निजसहायहित मित्रता ठानत तौन सहार्थ । पिताबन्धु सुतश्वशुर ये सहज सुमित्र यथार्थ ॥ सेवत धनहित मित्रह्वै सोकृत्तिम नहिंआन । व्यवहारा पुरुष-नको तौनमित्र भजमान ॥ धर्मात्माहै पांचवों जाहियके बलप्री-ति । नहींलोभको लेशकछु गहै मित्रता नीति ॥ कृत्रिमको बि-श्वासनाहिं कबहूं करै नरेश । करैबिश्वास न तीनको जहँ कछु समय बिशेश ॥ धर्मात्मा जो मित्रहै सबथर तासु बिश्वास । नृप मित्रनकी वृत्तिमें करैप्रमाद न पास ॥ भूपनके आचरणते

मित्रशत्रु ह्वैजात । शत्रुमित्रता गहतहैं तथा साधु ह्वै धात ॥
जोअव्यवस्थित चित्तहै तासु बिश्वास अयोग । काहूमेंबिश्वास
अति नृपहि न उचितप्रयोग ॥ पुत्रबन्धु नायबवली तेहिएकंत
थलमाह । राजनीति मग देखिनाहिं बिश्वासैं नरनाह ॥ भूप
आपने निकटको तेहि न बिश्वासैभूप । ताकेहदको नृपति तेहि
मानैमित्र अनूप ॥ बकसीबैद्य दिवानअरु गणिक किलेबरदार ।
धर्माध्यक्ष खजानची येनृपप्रकृति उदार ॥ इनमें गहे बिश्वास
पर परखतरहे सुभाव । सबसोंरहै प्रसन्नमुख गहेदक्षता बाव ॥
शीलवान कुलवानअरु बुद्धिमान अतिधीर । धरमी सरमी
निरखिनृप सौंपैकाम गँभीर ॥ जितनेज्ञाति पराक्रमी अरुकछु
दायेदार । तिनमेंराखै दक्षता गहेनामित्र बिचार ॥ ज्ञातिहिनहिं
भावतकबहुं ज्ञाति बिभूत महान । ज्ञातिवर्ग पावत रहत रहि
चैतन्य सुजान ॥ आहुकिअरु अक्रूरसों बैरभयो होपूर्ब । तब
हरिनारद सोंकहे ज्ञातिब्यवस्था गूर्ब ॥ ज्ञातिबिनाशन होइजेहि
सोकरिबो नृपनीति । यथाभागदै पालिबो उचितप्रकट करिप्री-
ति ॥ तहँनारद प्रभुसोंकहे आपददोय प्रकार । आभ्यन्तरअरु
बाह्ययै तिनको सुनो बिचार ॥ बंधुबर्गसों होतदुख सो आभ्य-
न्तरनाम । शत्रुआदिसों होततेहि बाह्यकहतमातिधाम ॥ ताते
बन्धु सबर्गकहँ पालबहै नृपनीति । ज्ञातिहिमारे निजमरे दोऊ
विधि विपरीति ॥ ज्ञातिबर्ग्ग को आदरब परम शस्त्र है भूप ।
तिनपै शस्त्र समाज सब जानै निष्फल रूप ॥ सुबुधि सुधरमी
समुझिकै राखै डेवढ़ी दार । तिन्हैं सदा परखत रहे करतरहै
सत्कार ॥ जिन्हैंआपनो सखाकरि राखै निशिदिन साथ । तिन
कहँ धन मन मानदै कीन्हे रहै सनाथ ॥ आदि दिवान खजा-
नची जे आमात्य महान । जो नर तिनके कपटको परखनहार
सुजान ॥ नृप ताको रक्षण करै मनदै आप अवाब । नातरु ते
ताकहँबधैं कैकरिदेहिंखराब ॥ अत्रपूर्ब इतिहासहम कहतसुनो

नृपतौन । क्षेमदरश कोशल नृपति के गृहमधिभोजौन ॥ ऋजु स्वभाव भूपहि निरखि सबअमात्यगणनास । गुप्तकपट आचरणगहि लागे लहन सुपास ॥ काल वृक्ष नामक सुमुनि गुणिकै यहवृत्तान्त । पंजरमधि लैकागगो भूपतिके ढिगदान्त ॥ तहां जाइकै बैठिकरि कुशलप्रश्न व्यवहार । कहोभूपमम कागयह है सर्वज्ञ बिचार ॥ सुनोकाग यहकहतहैं तोअमात्य जेसर्व । तेसब मिलितो बहुतधन हरण किये मतिखर्व ॥ सोसुनि भूपति और जन ते बूझेयहभेद । तेऊभाषे बचनयह सांचन झूठोखेद ॥ तदनन्तर रात्रीभई मुनिकीन्हें बिश्राम । तवअमात्य तेहिकागको बधकीन्हेंमतिछाम ॥ भोरबिप्र कागहिनिरखि नृपते कह्योबुझाय । देखोमम कागहिबध्यो तोअमात्य अनखाय ॥ महाग्राह संकुल नदी ढिगतोसम ढिगबास । ताते अबहम जातहैं गहि निजबध कोत्रास ॥ अब तुमइन आमात्यसों नितिरहियो चैतन्य । कपट गहत आमात्यतब करत चहत जो अन्य ॥ भूपतिरुवाच ॥ भये एकमतये सकल कहो करैं बिधिकौन । यहसुनिकै ब्राह्मण कह्यो सुनोउचित अबजौन ॥ गोपिकछू दिनदोषयह क्रमसोंकरि बल हीन । एकएककहँ पकरिकै दण्ड दीजियोपीन ॥ कालवृक्ष सुनि इमिसिखै गो निजआश्रमओर । भूपति क्रमसों तौनकरि आनँद लहेअथोर ॥ भीष्मउवाच ॥ शुचिधरमी सर्वज्ञहित मंत्रिहिमित्रबनाय । करैकार्य्य सबमंत्रकरि देशकाल मनलाय ॥ सुरपति तेसुरगुरु कहे यहि प्रकारके बैन । जैसो मंत्री होतनृप तैसो पावत चैन ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ सुयशलहत क्षितिपाल प्रजनपालिकै कौन बिधि । सोशुभनीतिबिशाल कहोपितामह कृपाकरि ॥ भीष्मउवाच ॥ बितरिशुद्ध व्यवहार जोभूपति पालतप्रजा । सोइत सुयशउदार लहतलहत सुरलोकउत ॥ दोहा ॥ राखैमंत्री आठनृप कारजकरैं बिचारि । व्यवसाई धर्म्मी सुबुधि संग्रहकरै विचारि ॥ औरकरै अपराधलहि औरहिदण्डनदेइ । देइयथा अपराध तिमि दण्ड

न्यायलखिलेइ॥मंत्रप्रकाशितनाहिं करै करैपरमपटुजानि।जेमंत्र-
ज्ञ तिन्हैं रहै पोषकनिजसम मानि ॥ कच्छप छिपवत अंगनिज
तिमि छिपवै निजदोष। शत्रुदोष निरखतरहै करैगुणिनकोपोष ॥
मंत्रीजासु प्रवीणअति मंत्रजासु अतिगुप्त । मंत्रबिना नहिंकरत
कछु ताकोसुयश अलुप्त ॥ मंत्रसुनत शंकाकरै समाधान सुनि
फेरि । करिशंका उत्तरसुनै यहिप्रकार मतिमेरि ॥ निर्णय करि
मंत्रिनसहित अबिचल मत ठहराय । भूमिपाल कारजकरै सदा
तेज अधिकाय ॥ बधै न दूतहि कबहुंनृप कितनोकहै कठोर ।
बधतदूतकहँ नृपतिसो नरकलहत अति घोर ॥ सतिवक्ताअति
दक्षअरु कतिवक्तास्मृतिमान ।शुचिकुलीन सतसंगती दूतसदा
सुखदान ॥ धर्मशास्त्र तत्वज्ञ अरु ज्ञाता सन्धि बिधान । धीर
साहसी शूरअति कलाकुशल मतिमान ॥ व्यूहभेद ज्ञाताचतुर
हँसमुख सौम्य सुभाव । अरु कुलीन सेनाधिपति ऐसोदेत स-
चाव ॥ सबप्रकार धरमी निरखि करैअमात्य नरेश । अधरम
भरे अमात्यतिजु नृपहिदेत अधदेश ॥ करैअमात्य बिचारि नृप
चलै नीतिपथ देखि। कर्मकरैवेदोक्त लखिगहि सत्संगबिशेखि ॥
ऐसोनृप आनँदलहै कीरति अति अधिकाय । स्वर्गलहै संदेह
बिनु बरधैवंश सचाय ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ भूपतिसह परिवार
निवसैकैसे नगरमधि । रचनाकौनप्रकार करि परिखाप्राकारकी ॥
भूपतिकेयेबैन सुनिभीषमभाषतभये । सुनोतौन मतिऐन जनमे-
जय क्षितिपालमणि ॥दोहा॥ गिरिगढ़बननदनिकटलखि निरमित
नगर अथोर । बरपरिखा प्राकारदृढ़ जहँबिरचित चहुंओर ॥
चहुंदिशि यूथपनियमितहँ राखै ठौरबनाय । चारिद्वार राखैतहां
राखैभट समुदाय ॥ बिनाहुक्मजन बाहिरो नहिंआवै नहिंजाय ।
सधनीचारौ वर्णजहँ बिलसैं आनँदछाय ॥ बापी सरवर कूपबहु
बिरचैठौर निरेखि । घटन न पावैअन्नको कबहूंभाव बिशेखि ॥
संग्रहराखै अन्नको आपसाल प्रतिलेइ । सदाबरत शुचिअन्नको

सदायाम सहदेइ ॥ व्यापारिन रक्षतरहै करअधिकी नहिंलेइ। चोर लैभगे ठगनको लेश न वाचनदेइ ॥ शिल्पीगण सवतरह के राखै सविधि बसाय। भिषज ज्योतिषी शास्त्रविद राखै प्रीति बढ़ाय। गुणीदेश परदेशके आवैं याचनहेत। मानसहित धनदै तिन्हैं बिदाकरै करिचेत ॥ असिजीवी आवैंजिते प्यादेके अस-वार। नहिंराखैतौ देकछू फेरेकरि सत्कार ॥ हय हाथी हथियार गढ़ पुर परिखावनसैन। मास मासमधि भूमिपति आपु लखै मतिऐन ॥ सालभरेमें आपुकढ़ि लखै आपनो देश। हदवारे भूपति तिन्हैं दरशावै दलवेश ॥ यज्ञ दान को नगर मधि राखै अति अधिकार। घटै न पावै नगरमें देवाराधनचार ॥ निबल सबल मध्यम पुरुष रहैं यथा व्यवहार । कोऊ काहूको कबहुं करि न सकै अपकार ॥ विधवा तपसी आदिजे जिन्हैं न आमद डौर। दियोकरै निजकोषते तिन्हैंभूप शिरमौर ॥ राखै सबथर नगरमें हरकारे मतिमान। बनगिरि गढ़सब थरनकी खबरिसुनै सविधान ॥ यहिप्रकारके नगरमधि इमि बिलसै क्षितिपाल । निकट न आवै आपदा आनँद होइबिशाल ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ यहिबिधि भूप सुवेश यहिप्रकारके नगरवसि। किमि पालै निजदेश लेइसुधन किमिसो कहो ॥ भीष्मउवाच ॥ रोला ॥ धीर शूर सुजान धरमी शास्त्रविद मतिमान। नगरजनक सभासदन कै नात गोत महान ॥ तिन्हैं शतभट सहस भटद्वै सहस भटहै संग। भेजिचहुंदिशि ठौरठौरनि राखिसहित उमंग ॥ करैपालन प्रजनको अरुसुधन करषैभूप। वत्सगोपाहि लायपय जिमिलेत स्वामि अनूप ॥ खबरिलै तिनथरनकी नितिलिखै भूपतिपास । जमाकरिकै द्रव्यभेजै यतनते प्रतिमास ॥ लिखैआमद डौरते प्रतिग्रामको तेहिसाथ। प्रजापीड़ित होहिंनहिं तिमिलेहि सब सो गाथ ॥ भिन्नतिनसों चारराखै लिखैंते सबडौर। सुनैजो सो परखिकै फिरिकरै करतबतौर ॥ जमा आमद खरच निज प्रति

मासलाखि सुनिलेइ । द्रब्य करतब्र हाथजिनके तिन्हैं अभय न देइ ॥ सन्दारक्षण कोषकोयह परमहै नृपनीति । अन्न धन भट शास्त्र संग्रह देतभूपति जीति ॥ हद पैदलरहैं नियमित बसै दुर्ग बनाय। देशमें परचक्र भयनाहिं यथाब्यापै आय ॥ रहैरक्षत प्रजन तिमि जिमि निकटहोइ नखेद । अभय विलसै देशमेंब्यापार करताभेद ॥ बत्स जैसे पियत पय अरु मधुप जिमि मधु लेत । जिमि जलौका पियत शोणित नेकुदुख नहिं देत ॥ शुनी जिमि निजबाल मुखते पकरिकै लैजात । होतताके गातमेंनहिं दशनको कछुघात ॥ प्रजनसों धनलेइ तेहिबिधि भूपसहित बिवेक । रहें तेसब देतधन नहिं लहैं पीड़ानेक ॥ ग्रामग्रामन मुख्य जनजे मिलै तिनसों चित्त।तिन्हैं करिलै अंग्रभागी लेइसबसों बित्त ॥ देशमें धनमान तिनसों लेइधन गुणिनीति । मधुरतिन को बचनकहिकै करैमुदित सप्रीति ॥ प्रजनसों धनलेइ करि अनियाय दुखदैताहि । देइ बिधिवतदण्ड भूपहि प्रजनकोहित चाहि ॥ चोर खलते रहैरक्षत प्रजनगहिकै रीति । दान मखानित करै जिहि नहिंहोय ब्यापित ईति ॥ दोहा ॥ अनावृष्टि अतिवृष्टि अरु आखु शलभ शुक जौन । ईति कहावत शत्रुदल पाला पाथर तौन ॥ यहिप्रकार धनलेय नृप यहिबिधि पालैदेश । लखत रहै निजराज्यसब चारचक्षु करिबेश ॥ निजबल परबल शत्रुहित देशकाल बयवृद्धि । रहै बिचारत नृपति नित बरधै सदा समृद्धि ॥ धरमिनको संग्रह करै धरै धर्म ब्यवहार । बरण आशरम धरमानित पालै भूपउदार ॥ मान्धाता युवनाश्वसुत रहोभूमि भरतार । मुनि उतत्थ्यतासों कहे राजधर्म उपचार॥ धर्मात्मा क्षितिरमणजो अबिचल लक्ष्मीतासु । धर्महीन क्षितिरमणको लक्ष्मी गच्छति आसु ॥ भूप रूपसब जगतको कुत्सित रूप्य अनूप। पापपुण्यबर्द्धत नशत यथाआचरतभूप ॥ सब बर्द्धत सुधरम बढ़ेअधरमते सबजात । तातेजगपालक नृपतिपालै

धर्म विभात ॥ विप्र धर्मकी योनिहैं पूजैंतिन्हैंसदैव। विप्रअग्नि ये विष्णु मुख ईच्छितदाता दैव ॥ अनसूया करि विप्रसों भयो बिरोचनहीन । विप्रकोपते क्षीणसब विप्रकृपानेपीन ॥ पाखण्डी उनमत्तअरु अधम अधर्मीजौन । परद्रोही जे तासु नहिं संग करै क्षितिरौन ॥ अज्ञाता अरु स्वैरिणी बिनुब्याही जोनारि । वंध्या अरु परतरुणि सों रतिनाहिं करै बिचारि ॥ नृप प्रमाद जब गहत तब बिनशतप्रजा समाज । ताते भूपति धर्म हित पालै सुधरमसाज ॥ भूपति गहत अधर्मतब बढ़त उपद्रवभूरि। धर्मप्रजा सब पापरत श्री प्रमाद सो पूरि ॥ होत समय बरषी जलद धर्मचरत जो भूप । भरति सम्पदा प्रजनघर राज धर्म अनुरूप ॥ दण्डनीति करि प्रजनको पापदेत नहिं खोइ । सो भूपति जिमि रजक जो बस्त्र न जानतधोइ ॥ छप्पै ॥ पालै प्रजा सनीति बधै चोरनकहँ गहि गहि । युद्ध करै अरिदेखि द्विजन पूजैहित कहिकहि ॥ नहिंमेटैमर्य्यादकरै मखदान सरुचिअति। अतिथिन को सत्कारकरै नितिकहै बचनसति ॥ जो लोक वेद कुलशास्त्र मत बरण आश्रम धर्मगणि । नित नेम सहितरक्षण करै तौन बिचक्षण भूपमणि ॥ दोहा ॥ नृप अबिचक्षण प्रजनको करिनसकत प्रतिपाल । तातेलक्षण नृपनके कहेसमक्षबिशाल॥ मुनि उतत्थ्यके बचनये सुनि मान्धाता भूप । गहि सुधर्म यहि जगतमें बिलसो शक्रस्वरूप ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ धर्म बिषे थितिचाहि कौनआचरण नृपगहै। केहिबाधे केहिपाहिलहैसुयश इतस्वर्गउत ॥भीष्मउवाच॥ अत्रपूर्व इतिहास सुनोभूप हमकहतहैं। बामदेवके पास नृपबसुमन बूझतभये॥ मुनिवरकहोअनूप धर्म वारता नृपनकी । सो सुनि तेहिअनुरूप प्रजापालि हम मुदलहैं ॥ देवाऊचुः ॥ दोहा ॥ धर्मबिषे थितिकरहुनृप धर्मदेत फलचारि। धर्मदेतजय जगतमाधि बिलसौधर्म सिहारि ॥ जोअधरमचारी नृपति मिथ्या जलपनहार । थोरेदिनमें अवशिसो लहतआप-

दा भार ॥ सतिवक्ता धरसी सुबुधि दानीमख करतार । नीति सहित पालकप्रजा अरुइन्द्रिय जेतार ॥ मित्र पुरोहित बन्धुभट सम्बन्धी परिवार । अर्थीमानी गुणिनको करत उचितसत्कार ॥ सोभूपति बर्द्धतसदा छावतसुयश असन्द । सहसाकरमी अपटु नृप शीघ्रलहत है दन्द ॥ सहसा करमी पापरत झूठ अधर्मी जौन । नहिं गौरव इतलहत उत रौरव पावततौन ॥ भूप जासु अप्रियकरै अवशिकरै प्रियतास । तेजसुयश तेहिनृपतिको अति शयकरत प्रकास ॥ स्त्रीमृगया द्यूतखल मादकरत क्षितिपाल । नहिंजीतत इन्द्रियन सो लहत आपदा जाल ॥ गहत लोभ आलस तरफ न्यायलखत जो भूप । अति पातकसो लहत है नर वधके अनुरूप ॥ निजरक्षणकरि युगुति सों रक्षण रक्षत जौन । तासुप्रजा बर्द्धत सदा भरति सम्पदा भौन ॥ दूरिकरत निज वर्ग जो पर वर्गन सँगलाय । सो नृप टेरत आपदहि दोऊ भुजाउठाय ॥ आपुहि जानि अशत्रुकै शत्रुहि दूरि निहारि । क्षीणकरत दल नृपति सो लहत आपदा हारि ॥ शत्रु सैन वधियुद्धकरि भूमिजीति क्षितिपाल । धर्मसहित पालतप्रजा सो धर्मी सबकाल ॥ मंत्र चिंतवन युद्धबिधि अनुशासन अरु न्याय । धर्मप्रजा रक्षण कुशल भूप सदाअधिकाय ॥ सकल एकसों धरतनहिं तातेपुरुष प्रवीन । प्रतिकारजमें नियम नृप परखतरहै अहीन ॥ शास्त्रज्ञान बय वृद्धजे तिनके धारत बैन । तिन्हैं काम सौंपै नृपति तौ नित बरधैचैन ॥ जे सुबचन सुनि गहत नहिं निज लघुमति गुरुमानि । तिन्हैं काम सौंपै नहीं राजनीति अनुमानि ॥ तातेराजहि उचित है पुरुष परीक्षाभूप । परखि बुद्धि ब्यवसायतब कामदेय अनुरूप ॥ जेहि अमात्य कहँ बन्दिगृह मधिराखैगहिटेक । अरु स्त्री हयगज अहिहि नहिं बिश्वासैनेक ॥ सबशुभगुणपूरित पतिहि दुष्टातियदुख देति । तातेभूपहि उचितहैपुरुष परीक्षाचेति ॥ लरेबिना पावत अजय जे

भूपति दृढमूल। लरैविना पावतअजय अदृढमूललहि शूल॥ जासुसचिव मतिमान अरु जासुसुभट संतुष्ट। सोदृढमूलमही-पहै जासुप्रजा धनपुष्ट॥ सचिवमूढ़ भूखेसुभट प्रजादरिद्र स्व-रूप। आपु असति बादी सदा अदृढ़ मूलसोभूप॥ निजजन मधि भाषित असित देतभूपतिहिशूल। जिमिकुठार मधिदारु लागि छेदतहै निजमूल॥ भीष्मउवाच॥ बामदेवके बचनये सुनिबसु-मन क्षितिपाल। यथापालि सुधरमसहित पायो सुयशविशाल॥ इतिमहाभारतेशांतिपर्वणिराजधर्मेभीष्मयुधिष्ठिरसंवादेपंचमोऽध्यायः५॥

युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ करिसुयुद्ध लहिविजय जो अमल करै परदेश। कौनभांति तिनकेप्रजन पालै तौननरेश॥ भीष्मउवाच॥ जायतहां नृपप्रजनकहँ देइअभय बरदान। अबतुममम पालब तुम्हैं हम निज पुत्रसमान॥ यथा रहतहै तिमिरहो तुम सिगरे तजिखेद। यथादेतहैं कर तथा देहु न मानोभेद॥ बूझिसकल वृत्तान्त तहँ सदल सुअंगी राखि। आवैअपने राजप्रति नी-तिबारता भाखि॥ युधिष्ठिरउवाच॥ सोरठा॥ युद्धधर्म व्याख्यान जो क्षत्रिनको धर्मवर। कहोतौनसबिधान ज्ञानवान ममपितामह॥ भीष्मउवाच॥ दोहा॥ युद्धधर्म यहपरमहै लरैएक सोंएक। समबाहन भिरिभिरिलरैं गहैंजीतिकी टेक॥ हतबाहन जो सुभट अरु सुभट निरायुधजौन। तजैं न तापै अस्त्रयह युद्धधर्म क्षितिरौन॥ जानहारि आरत कहत जौनभगो ताजिखेत। ताहि कदापि न भटबधै युद्धधर्म करिचेत॥ धर्मयुद्ध करि जयलहत सोईबिजय प्रशस्त। जोअधर्मकरि जयलहत होततासु यशअस्त॥ धर्म राखिकै निधनको होब श्रेष्ठहैभूप। धर्मत्यागि जय लहब सो है पातक कोरूप॥ युधिष्ठिरउवाच॥ सोरठा॥ पैठिसमर माधि बीर देह तजतजे शूरभट। तिनको लोकगँभीर कहोजाय जहँ बसततै॥ रोला॥ पूर्वको इतिहास इतहमकहत सुनिधैभूप। अम्बरीषमहे-न्द्रको सम्बादजौन अनूप॥ अम्बरीषन भागको सुतशक्र पुर

में जाय । लखे शक्रहिसहित सुरगण ऋषिनके समुदाय ॥ लखे निज सैनेश कहँ तहँ चढ़ो चारु बिमान । धर्म्म सबके चरत सुखसों भरो तेज महान ॥ देखि तहँ सैनेश कहँ तहँ अम्बरीष महीप । शक्रसों इमिभयो भाषत सुनोनृप कुलदीप ॥ सागरांता भूमिको हमकिये बिधिवतभोग । वर्णआश्रम धर्मपालन कियो सहितप्रयोग ॥ किये मख व्रत अतिथि पूजन दक्षिणादेभूरि । वेदशास्त्र अभ्यास कीन्हे परम श्रद्धापूरि ॥ प्रजापालन किये बिधिवत राजनीति बिचारि । देवद्विज ऋषिपितृ पूजे भक्ति पूरणधारि ॥ सुनोमम सैनेशकीन्हों नहींऐसो कर्म । लसत हमसों उच्चपद लहिकौन ऐसोधर्म ॥ इन्द्रउवाच ॥ युद्धमखमें देहआहुति दयोयइ रणधीर । लसतताते उच्चपद लहिधारिदिव्य शरीर ॥ द्विरदऋत्विज जहांहयअध्वर्यु अतिबलवान । गृद्धकाग शृगाल सेन सदस्य तहँ अतिमान ॥ प्रासतोमर शक्तिइन्धन भूमिकुंड महान । बाणश्रुव जहँ रुधिर आज्यकृपाण ज्वलित कृशान ॥ मांस हविष अनूप यत्र कबन्धजूप बिभात । मारुमारचो मरचो धुनिसो रित्र धुनि अवदात ॥ भेरि उद्गाता जहां तन दक्षिणा जेहिठौर । रुधिरधारा जहांमज्जन सरित जहँ भयभौर ॥ करत ऐसोयज्ञजो ममलोक ताकोओक । चहैसोजहँ तहांबिलसै सकै कोकरिरोक ॥ बरतताहि बरांगना सोलहतप्रभुतापर्म । सुनोभूपतिलसत यहलहि युद्धमखकोकर्म ॥ अम्बरीष महीपसुनिकेशक्र के ये बैन । परम सिद्धि सुभटन की गुणिलहे अतिशय चैन ॥ भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ पूर्वप्रतर्दन काशिपति जनकभूप मिथिलेश । युद्धकियेतेहि समयकी बार्तासुनोनरेश ॥ लखिसभीत निजभटन कहँजनकयोग अवराधि । स्वर्गनर्क निजभटन कहँदरशाये बिधिसाधि ॥ शूरबीर लरिमरतजे तेपावत यहस्वर्ग । भीतिभागि जेमरतते ते पावतयह स्वर्ग ॥ सोलखियोधानृपतिके भरे बीररसआम । इमिबुझाय निजभटननृप कियो घोरसंग्राम ॥ सुनो

भूपभूपहि उचित भटन बांटिदैतोषि। व्यूह बिरचिकै अरिनसों लरैओज गहिरोषि॥ रथराजी मधिगजनके रथमाधि तुरग सवार। मधिमाधिरहै सवारके पैदर सुभट उदार ॥ दशपति शत पतिसहसपति यूथपधरे उमंग। आदरकरि तिनपैधरे युद्धभार परसंग॥ बोलिएकते भटनकहँ सौंपे दशा विभाग। गहे ज्ञाति की ईर्षा जातेलरै अदाग॥ रथीगजीभटघोर अरु यूथप यूथप गंभीर। अरुपैदर समुदाय लै सेनानायकधीर॥ दलके आगे रहिलरै रहैमध्यमें भूप। बहुबाहन बहुअस्त्रनिज राखै तहांअनूप॥ बन्धुमित्र आमात्यभट जिनको अति बिश्वास। हयगज पैदरतहँरहैं चहुं दिशि बिनु अवकास॥ वृद्धसुभट यूथप जिते राजपुत्रसरदार। सदल पृष्ठरक्षकरहैं पैदर सुभटउदार॥ इमि चहुंदिशि चतुरंगिनी व्यूहभेदरचि राखि। सबदिशैनै सरदार भटराखै सुबचनभाखि॥ निजथरसोंसब दिशनमें दल जैबेकी राह। यत्नसहित राखेरहै गहेजीतकीचाह॥ हरकारेसब थरनमें राखेरहैसनेम। अनुक्षण में सब थरनकी सुनै खबरिदुखक्षेम॥ आपुसदा चैतन्य रहिलखतरहै सबओर। लखैपराक्रम भटन को मध्यमगुरुअरुथोर॥ जहांलखै अतिभीरतहँ भेजैकछूसहाय। दबतलखै निजभटन तहँ आपुसैन सहजाय॥ सबदिशिकेयूथपनपहँ भेजतरहै संदेश। लरो मोहिं निजढिग गुणैगहौ नकछू अंदेश॥ शस्त्रपाणि क्षत्रियनकहँ युद्ध बिजय सुरलोक। जोजन्मतसो मरत निजकौन सकतकरिरोक॥ विजय लहेधन सुयश इतमरे बसनकहँस्वर्ग। भरेअयश धनहानिइत मरेमिलत अपवर्ग॥ याहीदिनलगि हमतुम्हैं सोंपोप्रीति बढ़ाय। हाथतुम्हारे शरममम जीवन मरणबनाय॥ लखतरहत सबभटन कहँहटन नपावैंनेक। कैजीतब कैलरिमरब गहेरहैयहटेक॥ होइनिरायुध सुभटकै होइअबाहनजौन। बाहन आयुध शीघ्रतेहि भेजिदेइ क्षितिरौन॥ रहैजहां सरदारते गहैंनीति यहिडौर। नृपसमजानैं

भटतिन्हैं भानैं शासनगौर ॥ बाजनबजवावत रहैंशंख दुन्दुभी आदि । जातेयोधा चावगहि मारैंमरैं प्रमादि ॥ लरनचलै जब नृपति तब लेइ सुदिनठहराय । कालयोगिनी चन्द्रमादिशाभेद मनलाय ॥ इष्टदेव कुलदेव अरु ग्रामदेव कहँ पूजि । दान देत बिप्रनभटन तोषत सुबचनकूजि ॥ सुनतसुभट स्वस्त्ययन अरु ध्यावत गुरुपदकंज । बजवावत बाजेघनेकरत सुभटमनरंज ॥ बन्दीजन गणबदनसों सुनतबिरदकेछन्द । लरन चलैंनृपतिमि लरैं पावैविजयअनन्द ॥ निशिनिवासजेहिथरकरै तहांरहैचैतन्य। चौकीराखै दूरिलों धसनन पावैंअन्य ॥ शतसह भटसन्नद्ध ह्वै फिरतरहैं चहुंओर । बहुबिधि हरकारे रहैं परदल मेंसबठोर ॥ सभा बिरचि बैठे तहाँ आवैं यूथप यूह । सेनापति सरदार सबआवैंजे खुशरूह ॥ युद्धव्यवस्था तहँ सुनैभटन प्रशंसैभूप । मंत्रकरै परदिवसके लरिबेको जयरूप ॥ मरेहोहिं जिनभटनके पिता बन्धु सुत आदि । तिन्हैं ग्राम हय द्विरददै तोषै सुबचन नादि ॥ होहिंसुभट घायलजिते तिनकोकरै उपाय । घायलजे सरदार तेहिलखैआपु तहँजाय ॥ चौकीदारन नियमि चहुंदिशि की खबरिमँगाय । शयनकरै क्षितिपालमणि रहिचैतन्यसचाय ॥ प्रातकृत्यकरि पूर्बवत चलै लरै क्षितिपाल । रामचन्द्रकी कृपाते पावै बिजय बिशाल ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ सोरठा ॥ यहिप्रकार रण नीति कराणि युधिष्ठिर नृपकहे । अब कहिये करिप्रीति लक्षण शूर सुबीरके ॥ सोसुनि भीष्म सुजान शूरनके लक्षणकहे । अब यहि समयबिधान करैशूरता शूरसों ॥ दोहा ॥ मृगपति गामीपुरुष जो मृगपति चखभटजौन । घनस्वर गजचख पुरुषजो शूरहोत हैं तौन ॥ होतप्रमत्त सुभावजो क्रोधितसो रुखजासु । केते मृदु प्रकृती पुरुष होतशूरतारासु ॥ पिंगनयन भृकुटीबिकट नकुल नयन नरजौन । जासुनयन उन्नतअरुण शूरबीर नरतौन ॥ उग्र प्रकृति अरु उग्रबपु उग्रतेज नरजौन । क्रोधवान अरु उग्रस्वर

शूरहोत नरतौन ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ अब कहिये मतिऐन शकुन बिजय अरु अजयके। सुनि भीषम लहिचैन कहतभये सुननृपतिसों ॥ रोला ॥ बिप्रआवैं कोपकीन्हें कछू कारण पाय। अजयजानै भूपतव मतिशत्रुसों है जाय ॥ होयजाके सुढकवाहन खिन्नमन रणजात। चण्डगति गहि जासु संमुख सुरज आवत बात ॥ इन्द्रको धनुकढ़त संमुख शब्दकरत शृगाल। गृद्धआवत उड़तसंमुख तासु अजयअचाल ॥ जासुयोधागहत आनँद चलतपीछू पौन। बामह्वै मृगजातपीछू जासुजीतत तौन ॥ साम बिधि करिलेइ पहिले करैपीछे युद्ध। लरत बिप्रन पूजिनृप सो बिजयपावत शुद्ध ॥ शुद्धशूर उदार बंशज अर्द्धशत रणधीर। एकमतह्वै मारिसहसन लेतबिजय गँभीर ॥ युद्धमति नहिंगहै मृदुतारहै तीक्षण भाव। शाम दान बिभेद लखि तबगहै दण्ड बनाव ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ कहां भूपतिगहै मृदुता कहां तीक्षणभेव। तौन कहिये पितामह अज्ञान धनके भेव ॥ भीष्मउवाच ॥ पूर्व्वके इतिहास इतहमकहत सुनिये तौन। सुमनपतिको प्रश्नसुनिकै कहेसुरगुरुजौन ॥ इन्द्रउवाच॥ अहितसों आचरणकैसो गहैउरबी पाल। कहोगुरुवी नीति सोप्रभुसहित परबीचाल ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ अहितलखतहि नहींठानै कलहक्रोध बढ़ाय। नहीं जानै सरिस मृदुह्वै रहैरीतिबढ़ाय ॥ विहँग गहिबेहेत जैसे रहत व्याधा मौन। तथातासों कहैनहिंनृप पुरुषबार्ताजौन॥ मंत्रविद आमात्यनिज जो तौन जानैभेद। और जनजो लखै तौ तेहि जीति दीन्ह उमेद ॥ रहैनिरखत समयताको छिद्रनृप मनलाय। रहैलायेतासु जनमें भेददान उपाय ॥ समय लहि आमात्य गण सह पकरि मारैताहि। त्यागि मृदुता तीक्ष्णता इमिगहै औसरचाहि॥ सदा मृदुता गहैनहिं नहिंसदा तीक्ष्ण सुभाव। गहेमृदुता दुष्टजनको होतचाव चढ़ाव ॥ इन्द्रयह सुनिकहे लक्षण दुष्टजनको जौन। दुष्ट जानो परैजाते तातकहियेतौन ॥ कहेसुरुगुरु सुनो लक्षण

दुष्टजनको येह । जहांप्रापति लखतनाहिं तहँ नहीं राखतनेह ॥ कहैपीछू अगुण सबको प्रगटगुण सोगोपि । और कोऊ कहै गुण तहँ रहै और अचोपि ॥ बक्र चखकरि हँसैकछु कछुग्रीव देत हलाय । सांच जो गुण कथन ताकहँ देत झूठ लखाय ॥ हँसत बातैं कहत हँसिबेको न कारणयत्र । औरको भलसुनै जहँ अति होत पीड़िततत्र ॥ लगनपावै कानसों तहँकरैपर अपराध । ठौर ठौरन आपनो गुणरहै कथत अबाध ॥ लगिसबानकमान के सम भूमिपतिके कान । रहतजीवनवृत्ति जनको बाण जैसे प्रान ॥ भूपभावैद्विज बधनतौ कहै सुधरमयेहु । सार्बभौमन को करम यह भूपयह ब्रतलेहु ॥ जासुऐसी बारता तुमतिन्हैं जानो दुष्ट। रहत परउपकारते जो साधु सोईपुष्ट ॥ दोहा ॥ सुरुगुरुको अरु शक्रको यहसंबादसुनीति । सुनोधर्मक्षितिपालमणिहै निति दायक जीति ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ धार्मिक भूपति जौन सो अमात्यके कपटसों । होइ अधन नृपतौन सुखचाहै तौ किमि लहै ॥ भीष्मउवाच ॥ जयकरी ॥ अत्रसुनो पूरबइतिहास । क्षेम दरश भूपति मतिरास ॥ कोशल पति सो परम प्रबीन । भो अमात्य छलते धनहीन ॥ कालकवृक्ष सुमुनि पहँजाय । कहतभयोनिज ब्यथाबुझाय ॥ निज अमात्यके कपट कुठार । हमतरुभये बिना धनडार ॥ धन बिनु भूप बिहँग बिनुपक्ष । करिन सकत करतव्य समक्ष ॥ मो मन माधि यह ब्याधि महान । प्राणहरण सम भई अमान ॥ तातै गहे शरण तुव तात । कहिये उचित मंत्र अवदात ॥ मुनिरुवाच ॥ भूपति प्रथम न कीन्हेचेत । अब कत शोचकरत ताहेत ॥ बर्तमानको रक्षण योग्य । गतकोशोच न उचित प्रयोग ॥ हैअनित्यसब सारसमस्त । नयनउदयको ह्वैबो अस्त ॥ कहँतोपिता पितामहपूर्ब । कहांगयेसब योधागूर्ब ॥ प्रगटतजिते होततेगुप्त । मूर्तिमाननहिं कबहुं अलुप्त ॥ रक्षण करो धर्म सबकाल । महिपालत अधुनो क्षितिपाल ॥ जेभूपतितुमसे

मतिमान । तिन्हैं न उचित शोच यहिमान ॥ जौनअनागत अरु गत जौन । उचित न तासुशोच महिजौन ॥ पुत्र पउत्र बन्धुधन भूरि । ज्ञानीत्यागत आनँद पूरि ॥ हैअनर्थको अर्थ स्वरूप । हैअनर्थमधि अर्थअनूप ॥ कहूंअधनतौ आनँद दानि । हित अनहित सबपरत पिछानि ॥ सदाअधनता रहत न छाय । सदा न धनै रहत सरसाय ॥ कितनेलहि धन सुख अतिमान । नहिं जानत दूजो कल्यान ॥ कितनेबर्सै जानतश्रेय । धन लघुजानत धर्म अमेय ॥ केते धनहित त्यागत प्रान । जीवनते धन गुणत महान ॥ केते धनलहि करत न भोग । नहिंजानत निज मरण प्रयोग ॥ धर्महि बरजानत तेश्रेष्ठ । अरु सब मध्यम अधम यथेष्ठ ॥ होतपुरुषते धनउत्पन्न । पुरुषसुधनजे धर्मापन्न ॥ इन्द्रिन मोषि पोषि संतोष । कछुदिन सहो अकिंचनदोष ॥ मझगृहआवत नृपबैदेह । तुमसों तासोंबढ़ी सनेह ॥ ताहिसहायी लहिकै भूप । होहुपूर्बवत धनीअनूप ॥ जेअमात्य कीन्हे अनियाय । पहिले तिनमें संधिकराय ॥ यथा बेलहनि फोरत बेल । तिन्हैं निपातो रचि सोखेल ॥ करि अमात्यधर्मी मतिमान । उरबीभोगौ सहित बिधान ॥ मुनिकेघर बैदेहनरेश । जबआये तब सुमुनि सुवेश ॥ क्षेमदरश कोशलपतितासु । करिसुप्रशंसा बोलेआसु ॥ नृप तुमइनसों प्रीतिबढ़ाय । उचित बूझिके करौसहाय ॥ इन्हैं अमात्य दयेदुख भूरि । तुमदुखतौन देहुकरिदूरि ॥ सोसुनिकै बैदेहमहीप । भूपहिबोलि मिलोकुलदीप ॥ सैनसहित निजघरलै आय । पूजनकियो प्रेमसरसाय ॥ बिधिपूर्बक निजकन्याव्याहि । धनअसंख्य दीन्हो हितचाहि ॥ कोशलेश अति आनँदछाय । निजपुरआयो ओजबढ़ाय ॥ पालोप्रजा धर्मअधिकाय । कीन्हे यज्ञदान सुखदाय ॥ दोहा ॥ इमि मतिमान सुपुरुषसों करिकेमंत्र बिचार । मोदसुधन भूपतिलहै सुनोभूमि भरतार ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ कहोतात यहमर्म काकोसेवन श्रेठअति । देहधरेकोधर्म

देनहार अति परमगति ॥ भीष्मउवाच ॥ चौपाई ॥ माता पिता गुरू को पूजन । यहिसमतात और जनदूजन ॥ येपरतक्ष देवसबही के । सेवनयोग्य पूज्य अतिनीके ॥ येत्रयअग्नि कहतश्रुतिमानो । गार्हपत्य अग्नि पितुजानो ॥ माता दक्षिण अग्नि अनूपा । आहवनीय गुरू सुनुभूपा ॥ पिताअग्नि यहि लोक उबारति । माता गिनि परलोक सुधारति ॥ ब्रह्मलोकमधि गुरूबसावत । इमि येत्रय त्रयलोक बनावत ॥ सन्तति सम्पति सुधरम बर्द्धत । तेज सुयशबाढ़ि कबहुं न अर्द्धत ॥ तिनमें अधिकगुरू हमजानें । जा की कृपा मोक्षपदठानें ॥ सिरजत देहजन्मदै पालत । अंकलगाय प्राणसम लालत ॥ बहुत सहत न गहत निठुराई । गुरुसमजननि जनक सुखदाई ॥ जो ये चरैं कुयुग अनुरूपा । तबहूंसेवन योग्य अनूपा ॥ धनदै पालैकरि सन्माना । सोप्रभु जननीजनक समाना ॥ तेहिप्रकार विद्यागुणदायक । जनक जननिसम पूजन लायक ॥ जेसुकर्म करिसुधरम ईक्षत । तिनकहँ वेदनीति यह शीक्षत ॥ गुणि गुरुजनकहँ पूजत जोई । सकल पदारथ पावत सोई ॥ करि अनुशासन सुबचन कूजत । जनक जननि गुरुजन को पूजत ॥ दोहा ॥ ध्यावत पूजत गुरुहिसो ब्रह्महि पूजतध्याय । चहतपरमपद गुरुहिसो सेवत मनबुधि लाय ॥ मातु पिता अरु गुरूको करत निरादर जौन । आदिभ्रूनहा तासु सम और पात की कौन ॥ मित्रद्रोही पुरुषजो पुरुष कृतघ्नी जौन । तियबध कृत गुरुघात कृत महा पातकी तौन ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ अब सुधर्म व्याख्यान सत्य असत्य बिधान सब । कहिये तात सुजान सत्य समान न और कछु ॥ चौपाई ॥ सुनिये तात धर्म व्यवहारा । सत्य असत्य बिधान अपारा ॥ सत्य समान न मख अवराधन । नहिं असत्य सम पातक बाधन ॥ सत्य समान पुण्य नहिं दूजा । सत्य समान न तीरथ पूजा ॥ है असत्य सम पातक मूला । रौरव आदि नरककर कूला ॥ कतहुं असत्य पुण्य

सरसावत। कबहूंसत्य पाप उपजावत॥ गातिहिंसा परपीड़ा आदिक। मेटत जौन असत्यप्रवादिक॥ तौन असत्य पुण्यप्रदराजा। भाषत सिगरे सुबुधि समाजा॥ जौनसत्य हिंसादिक साधै। सोपातक दैपरगतिबाधै॥ हिंसापरम अधर्म कहावत। हिंसाअगणित जन्म नशावत॥ हिंसायुद्ध यज्ञमधिकीन्हें। धर्म बढ़तनहिं अधरम लीन्हें॥ पर उपकार धर्म अतिपावन। परपीड़ाअधर्म अघछावन॥परमधर्म हैदानसोहायो। पुण्य पयोधि दानतेजायो॥ पापिहिदान देतजोकोई। धर्मनशत तहँअधरम होई॥ जातिधर्म अतिसुधरम जगमें। आश्रम धर्म पुण्य प्रद अगमें॥ परमसुधर्म प्रतिज्ञा पालन। अतिसुधर्म सतपथिमति चालन॥ सत संगति बरधर्म गोसाईं। पारससंग लोहकीनाईं॥

युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ गहि गहि भावअनेक नर बहुबिधि सहत कलेश। कहोपितामह सबिधि अब सो सबधर्म बिशेश॥ यथा उक्त आश्रमचरत त्यागिदम्भ छलजौन। सुनो भूप भवसिन्धु तरिपारलहत हैतौन॥ जेनहिंहिंसा करतनहिं जीवनपीड़ादेत। दानदेत नाहिंलेतजे तेनर परपद लेत॥ जेनर करत न पापकछु अतिथिन देतसुपास। जेअलोभ अरुसत्यवद तासुस्वर्गमधि बास॥ परतिय जानत जननिजे राजस तामस हीन। देवपितृ मखकरत जे तेपावत मतिपीन॥ युद्धमध्य अतिशूरजे जिन्हैं मरणभयनाहिं। बिजयचहत करिधर्म बिधि तेनर सुरपुरजाहिं॥ जो तपकरता बिप्रबर वेदभ्यासी जौन। अध्यापक जापकानिपुण तरतदुर्गयह तौन॥ निजसम जानत जगत सबराबरंक समभाव। तरतदुर्ग सबसारयह जोछल छूछोछाव॥ परिबिभूति लखिमुदितजे मानिनको सत्कार। तरतदुर्गयह करतजे मानिनकोसत्कार॥ सत्संगति रतपुरुषजो गहै सत्यगुणनेम। तरत सिन्धु यहगहतजो रामकृष्ण पदप्रेम॥

इतिश्रीशांतिपर्बणिराजधर्मेयुधिष्टिरभीष्मसंबादोनामषष्ठोऽध्यायः ६॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ सौम्यरूप असौम्यकहु सौम्यअसौम्य स्वरूप । किमिपिछानि तेपरत सोकहिये सुमतिअनूप ॥ भीष्मउवाच जयकरी ॥ अत्र कहत इतिहास अनूप । सुनोतौन कुरुनायक भूप ॥ पौरिक नामनृपति होपूर्व । सोहिंसारत होअति गूर्व ॥ समयपायतन तजिक्षितिपाल । द्वितिय जन्ममें भयो शृगाल ॥ तहँकरि पूरवपरगतिचेत । भयो अनामिष बरव्रतलेत ॥ गिरो परो फलपावै जौन । बितवै दिवसपाइकै तौन ॥ तासुवृत्ति यह अनुपमदेखि । और शृगालदुष्ट अतितेखि ॥ तासोंकहत भये छलबैन । यहमृगवृत्ति हमारीहै न ॥ हिंसाकरबमांसको खाव । मम सुजाति कहँ बड़ो सवाव ॥ मांसखाइबेको व्रतलेहु । आपु खाहुज्ञातिन कहँ देहु ॥ यहसुनि तौन शृगाल प्रवीन । इमि भाषतभो बचन अहीन ॥ तुमसब गहियह वृत्त कुराग । लाये जम्बुककुल में दाग ॥ हम चाहत सोवृत्त अचार । जातेपसरै सुयश उदार ॥ वंशहि करत प्रशंसित जौन । ध्रुव उत्तम गति पावततौन ॥ आत्महि अमलकरै अनुमानि । हम यहवृत्तिगहे हित जानि ॥ जाते ऐसो जन्ममलानि । फेरि न लेनपरै दुख-दानि ॥ जैसो कर्मकरै तनपाय । तैसो जन्मलहै फिरि आय ॥ स्वर्ग नर्क सुखदुख लघु पर्म । हैसब गतिकोकारणकर्म ॥ तेहि शृगालके सुनि ये बैन । मौनरहे जम्बुकअघऐन ॥ होतहँमृग-पतिसो सुनि तौन । जान्योताहि महा मति भौन ॥ गुणि इमि कहत भयो मनलाय । तुम मममंत्री होहु सचाय ॥ अति मति मान देखि करिप्रीति । सचिवकरब राजनकीनीति ॥ तातेतुम्हैं जानि मतिमान । सचिव करत हमदेखि बिधान ॥ यह सुनिकै गोमायु सुजान । मृगपतिसों बोलो अनुमान ॥ तुमयह उचित कहतमृगराज । भूपहि चाहत सुबुधि समाज ॥ जैसोहोत अ-मात्य सुभेश । तैं सो बर्द्धत बिभव बिशेश ॥ तो मंत्रीह्वैबे को चाव । नाहिंहमधारतजानि सुभाव ॥ तुमबनचर बलवानअपार ।

नहिं प्रशस्त सेवाज्ञातार ॥ पूर्व अमात्य तुम्हारेजौन । छली चुगुल कुत्सितमतितौन ॥ दुष्टहोत सहवासीयत्र । साधुप्रवीण न निबहत तत्र ॥ प्रभु अविवेकी साथी दुष्ट । तहँ साधुन कहँ कुशल न पुष्ट ॥ उनके बचन न मानैंनेक । हमैंन देहु दण्डअविवेक ॥ यह दृढ़प्रणकीजे स्वीकार । तो हममंत्री होहिं तुम्हार ॥ दोहा ॥ यह निबन्ध करिकै भयो मंत्रीतौन शृगाल । तासु रंध्र निरखनलगे जे जम्बुक वदचाल ॥ तेहि मृगपतिके खान को मांसधरो होताहि । घरमें साधु शृगालके धरिआये बधचाहि॥ कछुक्षणमें अति क्षुधितह्वै जागि उठो मृगराज । मांस कहाभो इमिकह्यो करिकै क्रोध दराज ॥ सोसुनि दुष्टशृगाल सब कहत भये मनमान । खायोमांस शृगाल जो मंत्रीसाधु सुजान॥ दरशावत है साधुता इबिधि करत है कर्म । क्षुद्र गुणत तुम कहँ सदा आनत कछू न भर्म ॥ सुनि प्रणतजि मृगराज वह गह्यो जातिके तौर । लियो साधु गोमायु के बधकरिबेकी डौर ॥ तेहि मृगपतिकी जननि तब बहुबिधि ताहि बुझाय । सादर साधु शृगालके प्राणहि दई बचाय ॥ तजि बाधहि गोमायुवह और बिपिन मधिजाय । कछुदिन में सो देहतजि लह्यो स्वर्ग सुखदाय ॥ ह्वै महीप करणीकियो जाते भयोशृगाल । करि संयम गोमायुह्वै सुरपुर लह्योबिशाल ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ अबकहिये मतिभौन होतकिये आलसकहा । दोष दिखावत कौन बिनु बिचारके करमजे॥ भीष्मउवाच ॥ अत्र पूर्व इतिहास सुनो आलसी ऊंटको । करि अविचार प्रकास नाश लह्यो जिमि बिपिन मधि ॥ जयकरी ॥ पूर्व रहो हो ऊंट उदार ।सो बनमधि तपकियोअपार ॥ बरंतप निरखि बिधि भयेप्रसन्न । तहँआये जहँ सुतरासन्न ॥ बरंब्रूहि बोले बरदान । तबइमि बोलो ऊंटनदान ॥ देहुकृपाकरिकै बिस्तारि । ग्रीवहमारिकोश शतचारि ॥ इतबैठे सागरमधिबारि। पियेंचरैं सब बिपिन निहारि ॥ सोसुनि बेधा गे निजधाम । शत

योजन करिग्रीव ललाम ॥ लहि बरग्रीव ऊंटअतिमोदि । लागो सबदिशि चरन बिनोदि ॥ बैठोरहि ताही थरधीर । चरै बदन करि सागरतीर ॥ एकदिवसचरि ग्रीवपसारि । सोयो बदनदरी मधिडारि ॥ तेहिथर दम्पति जम्बुकजाय । ग्रीवदेखि अतिआ-नँद पाय ॥ मांस काटिकै लागोखान । जगो ऊंट लहि क्लेश महान ॥ जौं लागिईंचै घींच बिशाल । तौ लगि दीन्हें काटि शृगाल ॥ यहि बिधि गहि आलस अबिचार । भयोनिधनइमि ऊंट अगार ॥ मूल मोदको बुद्धि अनूप । है अबिचार आपदा रूप ॥ आलसते सबहोत अकाज । व्यवसायी को सुधरतराज ॥ भूपकरत जो जैसोकर्म । प्रगटहोत तस ताकोमर्म ॥ दोहा ॥ करै सुकर्म बिचारिकै गहै न आलसलेश । सहबासिन तोषतरहै बरधै तौन नरेश ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ जाको प्रबल अमित्र गहै कौन आचरणसो । प्रभु यहनीति बिचित्र सुनो चहत है चित्त मम ॥ भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ अत्र पूर्व इतिहासहम उदाहरणमति मान । सागर अरु सरितानको जो इतिहास महान ॥ सबसरि-तन तनदेखिकै सागर कह्यो बिवेक । टूटिउखरि तौ धारपरि आ-वत वृक्षअनेक ॥ बेनु बेत आवतनहीं ताकोकहत निदान । सो सुनिकैगंगा कही सुनोभूप मतिमान ॥ धारचलत अति बेगसों तरुगण तासोंजूटि । करेरहत तेहि अगुणसों उखरिजातकैटू-टि ॥ जब प्रबाह मधिपरत हैं बेणु बेतसमुदाय । सुनोजात तब नम्रह्वै तातेबचत सचाय ॥ जबप्रबाह कढ़िजातहै तबफिरिहो-तउतंग । निंद्य कठिनता प्रबल सों सुगुण नम्रता ढंग ॥ भीष्मउवाच ॥ इमिकठोरता नम्रतागुण अवगुण दरशाय । गंगासा-गरको कियो समाधान सुखदाय ॥ प्रबल शत्रुसों नम्रता गहि नृप रहै सचेत । समय पायकै उच्चता गहिसो आनँद लेत ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ ह्वै प्रगल्भ हठठानि मूरख पण्डितसोंलरै । तहँपण्डित अनुमानि केहि बिधिकरै प्रवीणता ॥ भीष्मउवाच ॥

दोहा ॥ तहँपण्डितताके सहैं सिगरे कुत्सितबैन। ताकेबातन के सरिस बातैंआपुकहैंन ॥ निन्दैंकै अस्तुतिकरैं श्रोताजिते नदान। काकसंग जल्पतनहीं सुगुणीहंस सुजान॥निजसमबातैं करतसो तेहिक्षण श्रुतदुखदेत। प्राणघात नहिंकरतहैं यहविचारि करि लेत ॥ जानैमूढ़ मयूर सम निर्त्तत पूंछउठाय। निलज लाज आवत नहीं गुदादोष दरशाय ॥ कितनेआगे गुण कहत पीछे जल्पतदोष। पण्डित तिनके बचनसुनि कबहुंन आनतरोष॥ चलनी समगुण अधकरत दोष देखावत भूरि। तासों सरवर करतनहिं पटुनिति निवसतदूरि ॥ जेहि बिधि दोषी श्वानसों दूरि रहतनरजानि। तेहि बिधि ऐसे नरनकहँ पटु त्यागत अनुमानि ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ कहो पितामह दक्षअक्षनीति नर पतिनकी। जासुप्रभाव प्रतक्षआनँद लहतसमक्षनृप॥भीष्मउवाच॥ रोला॥ परमउत्तर राजबिधि हम कहत तुमसोंतात। होतनृपके अनुगजैसे तथाबिधि सरसात॥ वर्त्तमान भविष्यभूत त्रिकाल जाहिबिचार। देशअरु कालज्ञ जिनकी प्रकृति साधु उदार॥ शास्त्रबिद धर्मज्ञधर्मी शुद्धसरमी स्वच्छ। सावधान सुशीलसम दरशीसुज्ञान समच्छ॥ शूरब्यवसायी सुबुधिसर्वज्ञ सब गुणमान। सखासचिव सुमित्रसुहित अमात्य जासुमहान॥ प्रजाताके लहतसुख अरुरहत सुधरमपूरि। होतताके सुधन बर्द्धित तेज बर्द्धितभूरि॥ बढ़तदल चतुरंगिनी भटरहत मोदितसर्ब। शत्रु होत न कबहुं सम्मुख सुनत त्यागत गर्ब॥ होत ताके देश में नहिं पापको सञ्चार। बर्ण आश्रम धरम को नाहिं घटत नेकु बिचार॥ लहत आनँद दुहुं दिशि सो भूमिपति मतिमान। होत जासु अमात्य सिगरे कहत जौन बिधान॥ सुनो ताते नृपनकी यह परमनीति अनूप। लखि सुबंशज परखि सब गुण देखि शुद्ध स्वरूप॥ करै ताहि अमात्यसुधरै तासु सिगरो काज। नहिं सुबंशज कपट आनत नहीं बिगरत राज॥ करत कुटिल

कुवंशजहि आमात्य भूलि नरेश। अवशि सो बढ़ि कपट ठानत त्यागि सुधरम लेश ॥ पूर्व्वको इतिहास इत हम कहत सुनिये दान्त। कहे मुनिगण बिपिनमें भृगुरामको वृत्तान्त ॥ मुनिरुवाच ॥ महानिर्जन बिपिनमें तप करत हे मुनिराय। रहतहो तहँ ग्राम-वासी श्वान एक सचाय ॥ तहां आयो एक दिन जो मारि श्वा-नहिं खात। शास्त्रमें तेहि कहत द्वीपी इतै हाठा स्यात ॥ देखि ताकहँ श्वान मुनि सों कहो आरत बैन। सुमुनि तब करिदये द्वीपी श्वानकहँ बलऐन ॥ कछूदिनमें बाघ आयो डरोद्वीपी हेरि। सुमुनि तब करिदये द्वीपिहि बाघ अतिबल मेरि ॥ मत्त मैगल तदनु आयो बाघ डरपो चाहि। सुमुनि तासों प्रबल मैगल किये बाघहि चाहि ॥ कछू दिनमें तहां आयो सिंह अति बलवान। सुमुनि तब तेहिगजहि कीन्हें सिंह प्रबल महान ॥ कछू दिनमें तहांआयो शलभनामक जौन। आठपदको प्रबल सिंहहि बधत जो बलभौन ॥ देखि शलभहि सिंह डरपो सुमुनि तौन निहारि। कियो सिंहहि शलभ तासों प्रबल अतिप्रण धारि ॥ देखि मुनि कृत शलभकहँ डरि शलभ भागो तौन। लगो बिहरन बिपिनमें तहँ शलभ मुनिकृत जौन ॥ खायलीन्हों बिपिनके बधि मृगनके समुदाय। बचेहे ते बिपिन तजिकै दूरि निवसे जाय ॥ एकदिन मृग लह्यो नहिं अति गह्यो आमिष चोप। मुनिहि चाह्यो खान सो लखि सुमुनि कीन्हें कोप ॥ नीचजनकी नीचता नहिं जातबात बिसारि। फेरि ताकहँ श्वान करिकै किये बनते दूरि ॥ दोहा ॥ कुल हीनहिं बरधित करब नहिं कितहू नृपनीति। पुरुष परखि बर-धितकरत सो बिलसत जगजीति ॥ उपकारी सतसंगती क्षमा-वान मतिमान। भूपति करै अमात्य ज्यहि धर्मी कहे सुजान ॥ परखि बुद्धि व्यवसाय बल गुण ताही अनुरूप। कारज सौंपै जननकहँ सुचितरहै सोभूप ॥ जहां सिंहको काजहै तहँ जो नियमै श्वान। श्वान ठौर गोमायु करि लहै आपदा न्यान ॥ द्विरदभार

हयपर धरै हयको मेढ़हि देइ। अपटु कहावत नृपति सो आपु आपदा लेइ॥ जैसे होत अमात्य अरु सखासंगती सर्व। तैसी गति भूपति लहत मध्यम खर्ब अखर्ब॥ परदेशीजन सुभट पुर सखा अमात्य निरेखि। जानत मति गति नृपतिकी राजनीति अवरेखि॥ युधिष्ठिरउवाच॥ सोरठा॥ राजनीति अभिराम तात कहे बहुभांति तुम। अब कहिये करि आम राजनीतिको तत्त्व जो॥ भीष्मउवाच॥ दोहा॥ रक्षण सिगरे भूपकी परमसुलक्षण भूप। दक्षण को संगति करब पक्षन करब अनूप॥ उग्रप्रकृति ऋजुप्रकृति अरु निरदय सदय सुभाव। दुष्ट साधु रिपु हित मधी भूपति गहै बनाव॥ मोर अहिनकहँ खातहै जिमि गहि बहुरग पक्ष। तिमि बहुरग गहि खलन कहँ दण्डै भूपति दक्ष॥ शस्त्र शास्त्र बिधि मधि निपुण हय गज रोह प्रवीन। जल तरिबेमें दक्ष अरु बिप्रभगतिमें पीन॥ सफलवृक्षसम सुजनको करतरहै उपकार। दुष्ट मृगनपहँ बाघसम दयेरहै डरभार॥ निजरक्षणमें भूमिपति दये रहै नित चित्त। देश काल परखतरहै को बैरी को मित्त॥ मंत्रिनसों मंत्रित बिना कारज करै न नेक। सो मत निज मति लायकै समुझिलेइ सबिबेक॥ धर्म राखि भूपति करै सबही के प्रियकर्म। रहै सदा बराधित करत धन दल बिक्रममर्म॥ निर्लोभी शीक्षित सुबुधि धर्म्म शील पहिचानि। सब काजन थापितकरै सतबक्ता अनुमानि॥ दान धर्म्म अरु न्यायबिधि सौंपै जाहि नरेश। भले परखले प्रथम फिरि परखतरहै हमेश॥ वार्त्तान्तर में सखनसों बूझिलेइ वृत्तान्त। अधिकारी जे काजके तिनके शान्त अशान्त॥ निजपीड़ा सबकहत जो भूप सखनपहँजाय। छपत नहीं नृप सखनसों काहूको अन्याय॥ निशिदिन जे सँग रहतहैं मोदत यथाबिधान। नृपमनगतिज्ञाता चतुर तेई सखा नआन॥जासुअनुग्रह छपतनाहिं मंत्रप्रगट नहिंहोत। सोभूपति यशजयलहत प्रतिदिन बर्द्धितहोत॥ धनदल गढ़गजतुरगबन

प्रजादेशव्यवहार । आयुधअरु आमदखरच दानधर्मउपचार ॥
आमदवर्द्धन औरअब युद्धसमान स्वरूप । मनलाये निरखतरहै
विजयलहतसो भूप ॥ पालिप्रजन कहँधेनुसम दोहैधन पयपूर ।
राखैकोष सुपात्रमें तहांननिवसे कूर ॥ ताहि तहां पचवैसरुचि
शासनआंच लगाय । नित्यखर्च व्यवहारमें प्रथमदेइ उफनाय ॥
बढ़ि असंथाई रहैजोताकहँ देइजमाय । समयपाय तेहिमथिलहै
धर्मसखर सुखदाय ॥ अपटु अधर्मी लालचिहि कबहुं न सौंपै
काम । लेश न राखै अहितको चिन्तितरहि सबकाम ॥ बालवृद्ध
बलहीन लखि शत्रुहि तजै न शोच । रहै शत्रुके नाशकी बिधि
को करत सुलोच ॥ चारु सुबुधि बर्द्धित करै बुधिते बर्द्धतराज ।
बुधिते जीतत अरिन कहँ बुधि सब सुधरम साज ॥ बुद्धिमान
व्यवसायकरि लहत बिचारतजौन । बुधि विद्या व्यवसाययुत
बली भूमिपति तौन ॥ जासुअमात्य महानमति बढ़त शक्रसम
तौन । तातेपरखि स्वभावमति करै सुअमात्य सुरौन ॥ तप
बलविद्या धनबढ़त कियेबुद्धिव्यवसाय । सब सुधरत व्यवसाय
ते बुधिको लहे सहाय ॥ जाहि कहत उद्योग है सो व्यवसाय
सुनाम । महालोभ बिनु सो कियेहोत सुयश अभिराम ॥ लोक
शास्त्र कुलरीति को करत उलंघनजौन । धर्म छुटतहै जासुबश
महालोभहै तौन ॥ ताते दण्डस्वरूप गुणिसबदिनकरै सुकर्म ।
दण्डगुणे बर्द्धतनहीं लोभादिक सबमर्म ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥
सबथर थिति करि तासु आपु प्रशंसत दण्डको । सोअबकहिये
आसु रूपभेद गुणि दण्डको ॥ भीष्मउवाच ॥ रोला ॥ पूर्बमनुयहि
भांति भाषे दण्डको व्याख्यान । दण्डकीन्हे धर्म बर्द्धत दण्ड
धर्म महान ॥ प्रजापालन धर्मजासों दण्डहै अभिराम । श्याम
रूप अनूपआभा महाबलको धाम ॥ चारिभुजअरु चारिदांतै
आठपद चखएक । दोयजिह्वा तासुमुख मृगराजसम अतिटेक ॥
धनुषशर असिगदा मुद्गर मुशल आयुधजासु । प्रबलसबसों

क्रोध पूरित नामरक्षक तासु ॥ साधुजनको करत रक्षण खलन मर्दतजौन । भूप दण्ड न देत असतिहि दुहुन मर्दततौन ॥ लोकपाल दिगीश शिवप्रभुविष्णु ताकोनाम । जगद्धात्रीगिरा लक्ष्मी दण्डनीति अक्षाम ॥ दैवमोक्ष अमोक्ष भयदम अभय संयमदादि । नामअगणित दण्डके हैं तीक्ष्ण मृदुता आदि ॥ दण्ड बिधिकरि प्रजनरक्षत भूमिपति जोचेत । दण्डप्रभुनेहि करत बार्द्धित परमसुधरम हेत ॥ वर्ण आश्रम धर्मबर्द्धित दण्ड के परभाव । होनतपव्रत दानमखसब जासुजैसोभाव ॥ सहित सुरगणशक्र मुदलहि अन्नअतिशयदेत । प्राणरक्षण जगतको है अन्नते तेहिहेत ॥ दण्ड ब्रतगहि प्रजापालनउचित भूपहि रोज । दण्ड है ऐश्वर्य्य ईश्वर तेजदलबल ओज ॥ तुरगरथ हय पतितजन अरु भारबाहकपाठ । अस्त्र सब अरु देश जन परदेश जन ये आठ ॥ गणिक तंत्री कोष मंत्री मित्र धान्य सुसौज । अंगपन्द्रह भूपकेतिमि दण्डदायकमौज ॥ दयेईश्वर भूमिपति कहँ दण्ड उत्तमपर्म । पाप प्रगट न होत जाते करत बार्द्धित धर्म ॥ दण्डप्रत्ययजौन सो ब्यवहार आत्मकतात । वेद विषयात्मक बिदित ब्यवहार स्मृति जो ख्यात ॥ ब्यवहारस्मृति सो वेदहै अरु वेदसोई धर्म । धर्म सोई शुभद सतपथ नहीं अन्तरमर्म ॥ बिना नृप के दण्ड भयनहिं धर्म निबहत एक । उचित ताते भूमिपति कहँ दण्डधारण टेक ॥ पिता माताबन्धु भार्य्या अरु पुरोहित जौन । धर्मत्यागे दण्डभूपहि सुनो उरबी रौन ॥ पूर्बको इतिहास इतहम कहत सुनिये तौन । अंगपति बसुहोम भूपति रहो बलबुधि भौन ॥ सहित भार्य्या गयो सो नृप मुंजपृष्ठ सुशैल । तहां तपकरि लह्यो सोनृप देवऋषि सम फैल ॥ मान्धाता भूमिपति चलिगयो तहँ सुनुभूप । अर्घ्यदैबसु होम तेहि बैठायभो कृतरूप ॥ कुशल सुनिबसुहोमबूझे आगमनकोहेत । मान्धाताभूप तबइमिकह्यो आनँदलेत । मान्धातोवाच ॥

जीविकृत जोशास्त्र अरु औशनस शास्त्रमहान। तासुज्ञाताभूमि पति तुमबिदित अति मतिमान॥ सुनो चाहत तोन हम नृप नीति धर्म बिचारि। दण्ड प्रगटित भयो किमि कित कहो सो निरधारि॥ बसुहोमउवाच ॥ दण्ड उत्पति भयोजिमि सोसुनोउरबी रौन। आत्मसम बिनुलखे ऋत्विज गुन्यो बिधिकै मौन॥ शीश मधि धरिगर्बराखे सहसबर्ष बिचारि। तदनु प्रगटित कियेता-कहँ नामक्षुप निरधारि॥ कियेबेधा यज्ञऋत्विज ताहिकरिसबि धान। यज्ञरतबिधिरहे तबभोदण्ड अन्तरधान॥ दण्डअन्तर धानभो तबबढ़ो अतिअबिबेक। आत्म परधनधर्म हदकोरहो भाव न नेक॥ बूझिसो वृत्तान्तब्रह्मा विष्णुप्रभुहि अराधि। कहेफिरि मर्य्याद थापितकरो प्रभुव्रत साधि॥ बिष्णुतब निज आत्माते किये प्रगटित दण्ड। शूल आदिक धरे आयुध उग्र बपु अतिचण्ड॥ तदनु प्रभु भगवानकीन्हें अधिप पालनहेत। सुरनकेपति किये शक्रहि तेज सत्वनिकेत॥ पितृ बैवस्वतनके पति यमहि कीन्हें चाहि। अधिप कीन्हें यक्षगणके धनद कहि यतुजाहि॥ दोहा ॥ पर्बतपति मेरुहिकिये सिंधुहि सरितानाथ। जलपति अरु सुरपति कियेबरुणहिदे बरगाथ॥ कीन्हेरुद्रन के अधिप शम्भु प्रभुहि अनुमानि। किये बशिष्ठहि बिप्रपति लखि तपबर्चस खानि॥ कीन्हें अधिपति बसुनके जातवेदसहि देखि। तेजमानके पतिकिये प्रभुभास्करहि निरेखि॥ यहिप्रकार निर्मित किये सिगरेअधिप अमन्द। दण्डनीति करिते सकल पालत प्रजा अदन्द॥ क्रमसों सब भूपति लहेदण्डप्रभुहि सहनीति। क्रमसों पालत प्रजनकहँ पालि सुपूरुब रीति॥ भीष्मउवाच ॥ सुनि सुबचन बसुहोम के मान्धाता गेधाम। द-ण्ड नीति परभाव जो है नृपधाम अक्षाम॥ सोरठा॥ यहिबिधि दण्ड प्रभाव दण्ड कुशल सों कुशलनृप। रामचन्द्र गहि-चाव दीन्हें दण्ड दशान नहि॥ जोरि बानरीसैन सेतुबांधि

तरिघेरिपुर । कौणपदल बल ऐन मरदि वधेपरिवार सह ॥
इतिशांतिपर्वणिराजधर्मदण्डप्रभाववर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥
युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ अर्थधर्म अरुकाम अरु मोक्ष जौन सुखदाय । इनको कहिये मूलअरु प्रभवभेदसमुझाय ॥ भीष्मउवाच ॥ अर्थधर्म अरु कामको हैद्वैविधि वृत्तान्त । तौनकहत मनदैसुनोभूपयुधिष्ठिर दान्त ॥ ऋतुदिनलखि निजधरमगुनि पुत्रअर्थ अभिराम । करत जौन व्यापारसो अर्थधर्म अरुकाम ॥ मूल अर्थको धर्म है मूलकामको अर्थ । ऋतुक्षण तिनको प्रभव है सतमति करत न व्यर्थ ॥ करतधर्म परलोकके अर्थ जौन अभिराम । अर्थ धर्म सो तासुफल प्राप्त जौनसो काम ॥ अर्थ मूल वहधर्महै धर्ममूल वहकाम । प्रभवतासु संकल्प है प्रभु यहभेद अछाम ॥ मोक्ष विलक्षण रूपहै निरसंकल्पअमन्द । मिलतसच्चिदानन्द में ध्याय सच्चिदानन्द ॥ अर्थ धर्मयुत काम जो सो प्रशस्त सबकाल । अर्थ धर्म बिनु कामजो सोअतिनिंद्यकराल ॥ अंगरिष्ट नृप सोइविधि कहे सुमुनि कामन्द । अर्थ धर्म बिनुचरतजो कामतौन मतिमन्द ॥ मूढ़प्रकृति ऐसो नृपति अबिबेकी कृतपाप । सो दुखदायक प्रजनकहँ जिमिगृहबासी सांप ॥ निज अघगुणि हियग्लानि गहि सत्संगति लहितौन । सुनिसुबचन धरि नियमकरि फिरि सुधरत महिरौन ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ जयकरी ॥ जगतप्रशंसत धरमसुभाव । धरमप्रकृतिते बर्द्धितचाव ॥ सो हम सुनो चहत हेतात । जातेमिलै धर्म अवदात ॥ भीष्मउवाच ॥ नृपतो राजसुय मखमाह । गोधृतराष्ट्र तनय नरनाह ॥ तो बिभूति लखि अमरष पूरि । निज पुर आइमोह भरिभूरि ॥ शकुनि दुशासन कर्णसमेत । बैठि जनकढिग कुत्सितचेत ॥ निज परिताप कह्यो क्षितिरौन । सुनि धृतराष्ट्रकहे सुनोतौन ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ बन्धुबिभूति देखि अभिराम । कत गहि शोचहोत यहिछाम ॥ शील गहोजे हिबरधत राज । जो गहिबरधै भूप समाज ॥ धर्म शील जोभूप

अमेय । तीनि लोक नहिं ताहि अजेय ॥ धर्म शील मांधाता भूप । एक दिवस चरि दिनमणिरूप ॥ नृपययाति दिन तीनि अखण्ड । सात दिवस जो भाग प्रचण्ड ॥ सुरथिन सहितसकलदिशिघूमि । निज वशकीन्ही सिगरीभूमि ॥ सोआचरणगहो प्रणठानि । जो नृपबर धन आनँद दानि ॥ दुर्य्योधनउवाच ॥ केहि बिधि तौन शील सुखदाय । प्राप्त होत सोकहो बुझाय ॥ जौन कियेते भूमि समस्त । शीघ्रमिलति सोकहोप्रशस्त ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ अत्रपूर्व इतिहास महान । कहे सुमुनि नारद मतिमान ॥ नारदउवाच ॥ दोहा ॥ पूर्वदैत्य प्रहलादगुणि धारिशील शुभश्लोक । हस्योराज्यपद इन्द्रको बशकरि तीनों लोक ॥ तब सुरपति अति दीनह्वै जाइ वृहस्पतिपास । पाणिजोरिकै निजब्यथा कहतभये जिमि दास ॥ इन्द्रउवाच ॥ रोला ॥ तात कहिये कृपाकरिकै ज्ञान श्रेयद जौन । ज्ञानबार्त्ता शक्रते तब कहे गुरुमति भौन ॥ शक्र सुनिकै कहे कहहु बिशेष याते और । जीवभाषे कहैंगे सोशुक्र ज्ञानी मौर ॥ शक्रतबह्वै बिदागुरुते शुक्रके ढिगजाय । कहे कहिये तातजौन बिशेषज्ञान सुभाय ॥ शुक्रभाषे ज्ञानजौन बिशेष अनुपम रूप । तौन जानत एकजो प्रहलाद दैत्यअनूप ॥ शक्र तबहीं शुक्रसों ह्वै बिदा बनिकै बिप्र । दैत्यपति प्रहलादहो जहँ गयो तेहिथर क्षिप्र ॥ जायतासों कहतभो हमसुनोचाहततौन । ज्ञानधर्म बिशेषबार्त्ता परम श्रेयद जौन ॥ कहेतब प्रहलादइमि अवकाश मोहिं न आम । काममें त्रयलोकके आसक्त हम सब याम ॥ शक्रद्विज तबकहे जेहि क्षण लहोतुम अवकाश । कहो तेहिक्षण ज्ञानकरि आचार्य्य नीति प्रकाश ॥ दैत्यपति तब मुदित ह्वै लहि समय अनुपम ज्ञान । कहे सुरपति बिप्रसों गुणिशिष्य परम सुजान ॥ शिष्य समह्वै नमसबिनय समुझि तत्व बिधान । कहत भे प्रहलाद सों फिरि शक्रकरि अनुमान ॥ भये तुम त्रैलोकपति गहिपरम सुधरम जौन । सहित

कारण कहोप्रभु हमसुनो चाहत तौन ॥ विप्रके ये बचन सुनि प्रह्लाद आनँदऐन । कहेहम द्विजचरण लखिकै लहत अति-शयचैन ॥ द्विजहि क्रोधित करत नाहिं हमरहत मोदत नित्त । काव्य करता बिप्रके ढिग बसत नित ममचित्त ॥ विप्र बचन प्रभावते ऐश्वर्य्य बरधत पर्म । विप्र पूजन प्रजापालन शील श्रेयदधर्म ॥ भाषि इमि परसन्नकैकै कहतभो दैतेश । देत हम बरदानमांगौ चहो जो बरवेश ॥ दैत्यपतिके बचनसुनि सोविप्र आनँद पाय । दैत्यपतिहि प्रशंसिकै इमि कह्यो प्रीति बढ़ाय ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ दोहा ॥ देहुआपनो शीलजो देनचहत बरदान। यह सुनिकै शङ्कितभयो दैत्यनाथ मतिमान ॥ घरी एकलौं शोच-करि कहैतथास्तु बिचारि । शक्रबिप्र तब ह्वैबिदा गेनिजसुदिन निहारि ॥ पंकजबाटिका ॥ दैत्यनाथ करि निश्चल लोचन । लगे बिप्रको कारणशोचन ॥ ताक्षण तासु गातकरि मोचन। शील कढ़ो रुचिलै जिमि रोचन ॥ दोहा ॥ मूर्तिमान निजशील लखि कहत भयो दैतेश । को तुम इत प्रगटितभये जान चहत केहि देश ॥ शील कह्यो दैतेश ते हम तुम शीलअमन्द । दान दये जेहि बिप्रकहँ तापहँ जातस्वछन्द ॥ चामर ॥ शक्रपास आसु ता-सुशील यों महानगो । भासमानके समान तेजता बिधानगो ॥ मर्म देखि पर्म कर्म धर्म मूर्तिमानगो । देहधारित्यों पुकारिसत्य चारदानगो ॥ दोहा ॥ तदनु वृत्ति अरु बलगये तदनु कढ़ेश्री ताहि । देखि कह्यो दैतेश इमि शोचसिन्धु अवगाहि ॥ श्रीदेवी तुम सतिकहो रहो बिप्र वह कौन । श्रीबोली वहशक्र हो गयो शीललै जौन ॥ निशिपालिका ॥ शील शुभ भाव गहि आपु सब लोकले । देवपति ताहिकरि ऊनमुंद ओकले ॥ राजि सबराज शिरताज पदरोकले । जीतियश थीतिलिय धर्मकरि मोकले ॥ दोहा ॥ तातेसुरपति आयकै मांगिलई तुवशील । बसत सकल ऐश्वर्य्यतहँ शीलबसत जेहिडील ॥ त्यजतधर्म बलवृत्ति अरु

सत्यतुम्हैं अबत्यागि । गयेशक्रपहँ जातहम शोचो निशिदिन जागि ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सुरपति यहिविधि शीललहि बिलसेनिज पदपाय । यहिप्रकार सबनृपनकहँ शीलहोत सुखदाय ॥ भीष्म-उवाच ॥ यहसुनि दुर्योधनकहे अबकहिये हेतात । तत्वशीलको जेहि किये बढ़त शील अवदात ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ मनोरमा ॥ बिनुद्रोह रहै सब भूतनमें निति । सुदया अरुदान सुभाव करै थिति ॥ उपकारक बाणि गहै निश्चयचिति । करि पौरुष पालय राजनकी मिति ॥ दोहा ॥ धर्म नीति सहप्रजन को पालन करै सनेम । सुयश प्रभव के करम में निशिदिन रहै सप्रेम ॥ इन्हैं आदि सुकरम सकल गुणिगहुपुत्र सुजान । इन बिनु बरधत नृपतिसो नशत शरदघन मान ॥ भीष्मउवाच ॥ यहि प्रकार धृतराष्ट्र नृप कहे शीलव्याख्यान । शुद्धशीलगहि धर्म नृप बिलसो शक्र समान ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ शीलवानता जौन तौनकहे तुम पितामह । अबकहिये मतिभौन ब्याख्या आशा अमितकी ॥ आशाछुटति न नेकलासासी लपटीरहति । जौन रहति गहिटेकलासा फांसाजनमयह ॥ भीष्मउवाच ॥ दोधक ॥ पूरबको इतिहास लहो सो । नाम सुमित्र महीप रहोसो ॥ गो बनमें मृग हेतबहो सो । आशहिकेबरपास नहो सो ॥ दोहा ॥ जाय तहां मृगयूथ लखि मार्यो तीक्षण बान । तासों बेधित एकमृग भागिचलो अतिमान ॥ ताके पीछू नृप चलो चपल तुरगदौराय । चहूंओरभरमत फिरोआशा बशबौराय ॥ सुन्दरी ॥ भूपहि यों भरमाय बलीमृग । आवतभो जहँ हेसिगरे मृग ॥ बाण तजेनृपदेखि वहैमृग । भागिगये युगकोशसबैमृग ॥ दोहा ॥ बाणगिरोजब भूमिमधि तबराजा अकुलाय । मृगजितगेतित बिपिन मधिगयो मारुजकुलाय ॥ जायबिपिनमाधि दूरिलोंमृगहि न देख्योभूप । देखोआश्रम ऋषिनको अतिरमणीय अनूप ॥ उतरि तुरगलेऋषिनढिग जायनौमि क्षितिपाल । यथाउचितस-

नकारलहिबैठो सुमति बिशाल॥मुनिनृपसों बूझतभये देशबंश अरुनाम। सोसुनिकै.तिनमुनिनसों कह्योभूप मतिमान॥ मौक्तिक॥ हम हैहयके कुलजात नरेश। ममनाम सुमित्र सुभाव सुवेश॥ मृगयारत कीन्हअरण्य प्रवेश। लहिपूरब पुण्य लहेयहदेश॥ दोहा॥ मृगअनुआशा बद्धहम भ्रमिपाये अतिखेद। ताते प्रभु बूझततुम्हैं आशाबाशा भेद॥ मेरुमहोदधि गगनको यथा मिलतनाहिं अन्त। तैसेआशा प्रबलअति जानीपरति दुरन्त॥ तातेआशा सहितनृप तासुकहौं वृत्तान्त। सोसुनि नृपसोंकहत भो ऋषभनाम मुनिदान्त॥ तोटक॥ हमपूरब तीरथ हेतगये। बदरीबनमें अति मोदमये॥ जगदीशजहां युगरूपलये। तप उग्रकरैं अतिउग्रभये॥ दोहा॥ नृप हम कीन्हे बासतहँ मुनितनु नाम स्वछन्द। मम सन्मुख आवत भयो पूरितप्रभा अमन्द॥ लखिउठि करिदण्डवतहम आसनदीन्हेंपूजि। मुनिलागो तिरपित करन तबबारताकूजि॥ चंचला॥ आयगो तहाँतबहि बीरद्युम्न भूमिपाल। चारुबाजि पै सवार बेगजासुतेजचाल॥ सोमसूररूप देखि नौमिनौमि ह्वैरसाल। पासबैठिकै लगोदशा कहै महाकराल॥ बीरद्युम्नउवाच॥ दोहा॥ भूरिद्युम्न ममपुत्रसोलुप्त भयो बनमाहँ। आशाबश खोजतफिरत ताहि तरुनकी छाहँ॥ यहसुनिकै अधशीशकरि तनुमुनि रहोचुपाय। तबनृपतापसरूपगहिबैठत भयोसचाय॥ संयुता॥ नृपदेखिकै ऋषियोंकह्यो। हमखेद आशहिते लह्यो॥ यहहोतिहै कृशक्योंचह्यो। यहिशोचमोमनहै बह्यो॥ ऋषिरुवाच॥ दोहा॥ नहिं आशासम अवरणहि आशात्यागसमान।आशाबश जीवतपुरुष त्यागेचहत न आन॥ जो अलभ्य अरुजौन गतजौन अग्राह्य विधान। जहँ निरमित अपमान तहँआशहि तजत सुजान॥ आशायुत अर्थीनिरखि आशापूरितजौन।कैलाशीकाशीअधिपसम सुखराशीतौन॥पहिले आशादेइ फिरिकरै निराशाजौन।बारिबताशा होतितिमि बात

बताशातौन ॥ तारक ॥ कृशगात मुनीश्वरकी सुनिबातैं । क्षितिपाल लहे अति आनँदपातैं ॥ तेहि आशहि दूरिदियेकरितातें। बाढ़िशोक नजीक लगेनहिं जाते ॥ दोहा ॥ करि दण्डवत प्रणाम फिरि कहतभयो करजोरि । दूरिभई तो बचन सुनि जोकुत्सित मतिमोरि ॥ तब मुनितप परभावते भूरिद्युम्न सुततासु । करि आकर्षण भूपतिहि देतभये तहँ आसु ॥ पुत्रपाय नृप मुदितह्वै गयो आपनेधाम । भूपति हमइमि तहँसुने आशाकथा अछाम ॥ भीष्मउवाच ॥ नृप सुमित्र मुनिऋषभके सुनिकै बचन अमन्द । आशहि कृशकरि निजभवन आवतभयो सुछन्द ॥युधिष्ठिरउवाच॥ सोरठा ॥ धर्मसिन्धुको स्रोत तोसुबचन सुनि अमृतसम। मोमन तृप्त न होत तातेकहिये और कछु ॥ भीष्मउवाच ॥ स्वागता ॥ पूर्ब एक इतिहास लहेहे । गौतमेश मुनि जौन चहेहे ॥ सो यमेश अनुमानि कहेहे । तौन साधु सनमानि गहेहे ॥ ॥ दोहा ॥ पारियात्र गिरि बिशदपहँ गौतम मुनिबरजाय । सुबरिस साठिहजार तहँ तपकीन्हे मनलाय ॥ धर्म्मराज आयेतहां मुनिलखि बिधिवत पूजि । प्रश्न किये अनुमान करि कुशल बारता कूजि ॥ गौतमउवाच ॥ किमिचरि मातापितासों अनृण होत मतिमान । कौनकर्म करिलहतहैं उत्तमलोक महान ॥ धर्मराजउवाच ॥ मालिकदाम ॥ करैतप पूरसुशौच निबाहि । धरैब्रत दीननको गण पाहि ॥ सुधर्म बढ़ाय कहैसातिचाहि । करैमखदान कहै पटुताहि ॥ सोरठा ॥ सोपटु दुर्लभलोक लहतबात यह अमिटहै । मातुपितहि सबओक होतप्रशंसित करिअनृण। युधिष्ठिरउवाच ॥ जोनृप आपद पाय होतक्षीणधन तौननृप । करिकैकौन उपाय लहैराज्यधन धर्म्मसह॥भीष्मउवाच ॥ सुश्री ॥ भूपतिकै बूझेसुकठिननीतैं । जोपटुज्ञानी कहबनचीतैं ॥ आपदमेंजो सुधरमथीतैं । नाहककीन्हे अधरमकीतैं ॥ दोहा ॥ आपदलहि नृपप्रजन को करषैधन समुदाय। जिमिपावै तिमिलेय गुणिसोई सुधरमन्याय॥

जो परजनपर दयाकरि बसै बिपिनमें जाय । तौवहभूपतिमृ-
तकभो खोइबंशव्यवसाय ॥ न्यायप्रबल अरि लेइगो धन हरि
दुखदैभूरि । तातेआपुहि कर्षिधन अचल रहैबलपूरि ॥ सधन
प्रजानाहिं नृपतिको करत सुरक्षण जाय । सधनभूपरहि प्रजन
को रक्षण करत बनाय ॥ ताते धनलै प्रजनसों आपद मेटब
नीति । धनते बर्द्धत धर्म अरु धनते बर्द्धतजीति ॥ सारंगरूपक ॥
ज्यों यज्ञमें छाग आदिक जंतून । को घात कीन्हेनहीं होतश्री
ऊन ॥ कीन्हे बिना होतहै यज्ञसो शून । कीन्हेलसै यज्ञकोअर्थ
कै दून ॥ दोहा ॥ तिमिधनलै थिरि पालिफिरि शोभित होत सु-
भेश । आपद बशकै राजताजि जीवत मृतक नरेश ॥ तोमर ॥
यहसमुझि बर्द्धतकोष । नृपपरमसुधरमपोष ॥ लहिनिधनबर्द्धत
दोस । नित बढ़त अति अपसोस ॥ दोहा ॥ यज्ञदान करिसमय
लहिमेटै ताकोपाप । लघु करलै फिरि प्रजनके मनकोमेटै ताप ॥
महिंबरी ॥ नित सधन रहिबो नृपनकी अतिनीति हम सब थल
सुने । इमि कहतभे मतिमहत निरखेशास्त्र लौकिक श्रुतिगुने ॥
सियरामचाहत होतवहकै जौन बिधिगुण लखिबुने । पर भूप
हंसहि कुशलनिजनृपनीति निधिमुक्ताचुने ॥ दोहा ॥ रामकृष्ण
की कृपातेतुम सर्बज्ञसधर्म । प्रजनपालिहौ धर्मयुतसुयशचालि
हौ पर्म ॥

स्वस्तिश्रीकाशिराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणास्याज्ञाभिगा-
मिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथकवीश्वरात्मजेनगोपीनाथे
नकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिराजधर्मे
अष्टमोऽध्यायस्समाप्तः ८ ॥

शान्तिपर्व राजधर्म समाप्तः ।

महाभारतदर्पणे ॥

शान्तिपर्वआपदधर्मदर्पणः ॥

दोहा ॥ नमस्कार नारायणहिं करिनरोत्तमहि नौमि । बन्दिगिरा ब्यासहि रचत भारतभाषा सौमि ॥ सीतारामसुस्वामिप्रभु न्यामक अन्तर्यामि । सुजन अकामिहि सर्बप्रद सन्तत तिनहिं नमामि ॥ जापद तापदद्दै अतन थापद सुजन सुकर्म । आपद दरतापद सुमिरि बरणत आपदधर्म ॥ सूतउवाच ॥ राजधर्मइतिहाससुनि जनमेजय क्षितिपाल । वैशम्पायनसों कहेपूरितप्रीति बिशाल ॥ जनमेजयउवाच ॥ राजधर्मसुनि धर्मनृप कियेप्रश्नफिरि कौन । उत्तरदीन्हे भीष्मजो मुनिअब कहियेतौन ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ करिअराज सबराजथल राजसभा रचिपर्म । राजधर्म सुनिराज मणि बूझेआपदधर्म ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ कवित्त ॥ परम प्रवीण पर सिद्ध पितामहसुनो तुमसोसुवाणीको कहैया कौनजगमें । स्मृति धृतिमेधानित बरधति रावरेकी सरधति मोमति सुनतिज्योंज्यों अगमें ॥ तातेऔर बूझतनसूझत जोऔरैनाथ साथदुखशंपदा लिखीहैं करपगमें । तापद दुसह दुखआपद लहतजेते स्वपद लहतफेरिलागि कैसेमगमें ॥ दोहा ॥ क्षीणसैन धनहीनहितमित्र प्रवीण न जासु । मंत्र जासु परसिद्ध ते लहत आपदा आसु ॥ लोभी जासु अमात्य अरु शत्रुजासु बलवान । बिनु बिचार कारजकिये लहत आपदा न्यान ॥ दीर्घसूत्रता गहतजो भीत

वान नृप जौन । लहतआपदा फिरि लहत श्वापद किमि चरि तौन ॥ भीष्मउवाच ॥ रोला ॥ कहे अवगुण जौन तुमतेहि गहे बिन शत भूप । फेरि सम्पद लहत जेहि सो सुनो यत्न अनूप ॥ धर्म चिन्तनकरै शुचिरहि इष्टदेवहि ध्याय । जीतिबेकी बिधि बिचारै नीति मंत्र दृढ़ाय ॥ रहै नित चैतन्य बदन प्रसन्नधीरज धारि । तोषगहि नहिं यतन त्यागै सहमि हियसों हारि ॥ आत्मरक्षण करै खरचै धनहिं बिधि अनुमानि । रहै सञ्चय किये धन को समय भावी जानि ॥ शत्रुदलमें सन्धिलावै दान भेद उपाय । द्रव्य खरचै तजै आलस भीत अवसरपाय ॥ द्रव्य खरचै लहै महि तौ देइ आनँद जूमि । द्रव्यसंग्रहकरै फिरि नृपरहैजो गहि भूमि ॥ द्रव्यखरचै रहै जौलों आपदाको पार । आपु चढ़िनहिं लरब तौलौं भूपतिहि अधिकार ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ हिये पीड़ित बाह्यकोपित भयो भूपति जौन । आपदा सहि सकत नहिं सो करै कारजकौन ॥ भीष्मउवाच ॥ भेद दान उपाय कीन्हे सधै नहिं जब साम । भूपतबके प्रबल प्रकृतीलरे जययश काम ॥ शुद्ध सेवक सुभट थोरेहु लहत भूपति जीति । शूरता गहि लरतजो लहि बिजय बिधिकी नीति ॥ शत्रु बधकरि भोगवै महि परम जययश पाय । पाय बधकै बसब दिव मधि उभय बिधि सुख दाय ॥ लरैयह सिद्धान्त करिसो अवशि पावैजीति । मरेउत्तम लोक ताकहँ परमपावननिनीति ॥ देखि बिक्रमअधिक ताकोशत्रु प्रबलौ शोचि । देत ताकहँ भागमहिमें नीति सामहि लोचि ॥ प्रबलअरिगुणि मानिसामहिबसै नृपलैभाग । गहैनाहिंबिश्वास ताकोरहैजैसे काग ॥ कोषमंत्री सुभट सुधरम रहैसरधत यत्न । समयलहि करि मंत्रचढ़ि लरिलेइ उरबीरत्न ॥ नीतित्यागेबिना आवति आपदा नहिं भूप । नीति सेवनाकिये बिनशतआपदा को रूप ॥ दोहा ॥ नृपस्वराज परराजते करषिबढ़ावैकोष । कोष परमनृपधर्महै निर्द्धनताअतिदोष ॥ मूलराज्यको कोषहैराजहि

बर्द्धनहार। बर्द्धन पालन कोषकर नृपति नीति अधिकार॥ होइ न निस्पृह नहिं गहै अतिशय लालच रूप। मध्यम पद गहिकै करै संग्रह पालन भूप॥ होतअबलकहँ शोचनहिंशोच बिनाबलनाहिं। राज्यहोहिनाहिं बलबिना राज्यबिना श्रीनाहिं॥ गोपति नृपके पातकहि श्रीकरिपूरणचाव। तियतनकहँ गोपन करत बस्त्रयथातेहिभाव॥ उच्चवृत्तितेपतनजो सोहैमरणसमान। तातेधनदल मित्रहित बरधैभूपसुजान॥ रहैकोषदलवृद्धि को यत्न करतक्षितिपाल। चोरशत्रुनहिं क्षणलहै यथारहैसबकाल॥ करतरहै उपयोग नृपहै पौरुष उतयोग। कैमृगवत बनमधिबसै त्यागि सृष्टि संयोग॥ कवित्त॥ महाअरि प्रबलसों लागैनउपाय जौ तो संगतस्करन लैकै तस्करताकरै। दिनबसै बिपिनमें क्षण नयकत्ररहै निशि फिरि चारोंओर मारिसुधनैहरै॥ यहनहिं सधै तौपठायचोर ग्रामन में सुधनचोराय मांगिअरजन कैधरै। लक्षनहारि जोरिलक्षनसयन चारिपक्षन सुधारि ह्वैप्रतक्ष अरिसों लरै॥ दोहा॥ तीनिकर्म तस्करनहूं बर्जितहैं बिख्यात। जियधर्षण सर्बसहरण निंद्रित जनकोघात॥ ऐसेहु पैनृप द्विजनको वित्तन हरैकदापि। रहै धर्मपालन करत बिकलनहोइ उतापि॥ निरखै धर्मअधर्मके फलको जोपरिपाक। बरणआशरम धर्म को पालन परखैपाक॥ सुधरमते बल बढ़तहै बलते सबवश होत। दल अमात्यधन तेजश्री येबल करतउदोत॥ बलमधि सोहत धर्म जिमिजंगम धरणीधूम। तथाअनुगमत धर्म बल जैसे मारुत धूम॥ हैजनमहि द्रुमलता समबल सुधर्म परधान। दुराचाररत क्षीणबल लहतन कबहूंत्रान॥ सुधरम बशबलवानके यहपरमाण अशुण्य। भोगीकेबश सुखयथा दानीकेबश पुण्य॥ बलवानहिं सबसाध्यहै निबलहि कछूनसाध्य। बुद्धिमान बलवानसों करत असाध्यहि साध्य॥ दुराचार रततेलहत दुखहित अनहितसर्ब। जिमिपुरजन बनचरन बहुवृकदुखदेत अखर्ब॥ सदाचाररत पुरुष

को सुधरम दूनो लोक।सदाचारते हीनतेहि सबथरपूरितशोक ॥
नशतपाप आचार्यके सेवनते ध्रुवराहु । नशेपाप आपद नशत
यहश्रुति सम्मत लेहु ॥ बरण आशरम धर्मके पाले पापनहोत।
जोविचारि सुकरमकरै बरणआशरम सोत ॥ सहनशीलता मु-
ख्यमें दुखमें निस्पृह बानि। रामनाम सुमिरतरहै लहै नकबहूं
हानि ॥ सोरठा॥ अत्रपूर्वइतिहास कहतसुनोसोभूपमणि। जिमित-
स्करमतिरास दुहूंओर आनँदलह्यो ॥ जयकरी ॥ कामी क्षत्रीसुत
अभिलाषि । बहुदिनरमोनिशादिन राषि॥तासोंभयो पुत्रअभि-
राम । कियोतासु कापटच्य सुनाम ॥ बरधित ह्वैकापटच्य प्रबीन ।
कियोउभय कुलकोगुणपीन ॥ बिपिनबास करिमृगयासक्त । रहै
क्षुधित पोषण अनुरक्त ॥ वसै विपिनमें तापस जौन । मृगपल
तिन्हैंदेय नितर्तौन॥सँगलै तस्करज्ञाति समूह।तस्कर करमकरै
करिऊह ॥ निशिमें फिरिभ्रामन मनमान। दिनमेंपाय पथिकधन
मान ॥ अनधनकरषै सहितबिचार । पोषैज्ञाति स्वजन परिवा-
र॥ पालै बिप्रनकोगणभूरि । देयवसन भोजन मुदपूरि ॥ गहि
ताकोआश्रय तहँजाय । चहुंदिशि बसै बिप्रसमुदाय ॥ सोलहि
भोजन बसन स्वछन्दि । ताहि देहिं आशिष आनन्दि ॥ इमि
रहिकैकापटच्य सुचीति । रहैतस्करन शीक्षत नीति ॥ करोसुजाति
कर्मनाहिंदोष । मतकरियो हिंसागतिपोष॥मतसर्बस हरियोहित
हेति । सबथर द्विजहि बरायहु चेति ॥ बलते परातिय धर्षण
काज । मति करियो लहि समय समाज ॥ मतहरियो परअउव
कदापि । बिप्रभक्ति हितराखेहु थापि ॥ दोहा ॥ सुपत निरायुध
भगतडरि आरतकहत सभर्म । मृगहि छोड़ि पशुतिय बधब
जानहु हिंसापर्म ॥ देवपितर अर्चाकरब द्विजपोषब अतिधर्म ।
मोक्षद जानेहु ब्राह्मणहिशासन नाशककर्म ॥ गुरुशिक्षाआनँद
भरणताहित निर्मितदंण्ड । शिक्षहिबाधत तासुहै दण्ड बधबहै
चण्ड ॥ यहमतगाहिकै करतजे तस्कर कर्मअडोल । लहतनपाप

न सहत दुख ते गतिलहत अतोल ॥ भीष्मउवाच ॥ लखिकरतव्र कापटयको मानिसिखापन मर्म । तिमिचरिते सवलहतभे परम सिद्धितेहि धर्म ॥ यहचरित्र कापटयको नित सुधि करिहैं जौन । नहिं अरण्य आरण्यकन ते भयलहिहैं तौन ॥

इतिश्रीशान्तिपर्वणिआपदधर्म्मेकापट्यचरित्रोनामप्रथमोऽध्यायः १ ॥

भीष्मउवाच॥सोरठा॥ सुनोभूमिभरतार यहगाथापूर्वनकह्यो । कहततौन उपचार जिमि राजा संचत सुधन ॥ दोहा ॥ प्रजा सर्व क्षत्रियनके नाहिंऔरनकेनेक । बलमखहित करषै सुधन भूपति सहितबिबेक ॥ देवपितृ मखयाचकन नहिं अरचत धनजोरि । तेहिधनते न अनर्थकछु और अधिक सवथोरि ॥ जोरिसुधन जेसुथरमेंनहिं खरचत मतिमंद । हरैतासुधन भूमिपति रहनन देइ सुछंद ॥ हरैअसाधुनके धनहिंगुणि साधुनकहँदेइ । परम धर्मविद भूपवह दुहुंदिशिआनँदलेइ ॥ प्रगटतपाप अधर्मते अकस्मात तिमिभूप । यथाभूमिते होतहै प्रगटधूरिको रूप ॥ बढ़त पुण्य जनधरमते सुनोभूप तिहिभाव । प्रगटिबीजतेवृक्ष जिमि बरधत शाखाळाव ॥ कबित्त ॥ होततीनि बिधि के पुरुष सुनोक्षितिपाल दीर्घदरशी औप्राप्त कालज्ञ मतिमान । आनँद लहत तेन आपद लहत नेक लखत बिचारि जैसो तैसो करै सबिधान ॥ होतहै तृतीय दीर्घसूत्रीतौन मतिमंद आपदलहत न सकत आपनो कै त्रान । जैसे सरिता में यहितीनि बिधिके हैं मीनपीनहीन दशातेलहे सो सुनोउपख्यान ॥ गुरुतोमर ॥ बहु मीन सरिता सोतमें । परिरहे पूरित ओतमें ॥ कछुगारतामधि में रह्यो । मगमेलमें कृशता गह्यो ॥ सो दीर्घ दरशी देखिकै । यह सूखिहै अवरेखि कै ॥ पाठीन सबसों यों कह्यो । इत बास योगन मैं चह्यो ॥ मगसूखिहै दिनचारिमें । केहिभांति चालिहौ धारमें ॥ इतक्षीण जल लखि आइकै । बध करिहि धीवर पाइ कै ॥ अबकह्यो मेरोमानिकै । कढ़िचलो जीवन जानिकै ॥ है

उचित करिबो शोचिकै । मतिमानकी गति रोचिकै ॥ दोहा ॥
सुनत प्राप्तकालज्ञ इमिकहतभयो समुझाय । प्राप्तकाललहिकै करब जो कछु उचितउपाय ॥ कह्यो दीर्घसूत्री वृथाशोच करत करि गौर । होनी सबथर होतिहै कौन फिरैबहुठौर ॥ गमनदीर्घ दरशी कियो सुनि तिनके ये बैन । सरिता पूरि प्रबाहपरिपायो पूरण चैन ॥ वसुकला दिन पांचसात । जबभये जात ॥ रबिकिरण पूखि । मग गयोसूखि ॥ सो लखिनिषाद । लहि सुख प्रमाद ॥ तहँजालडारि । करष्यो सुधारि ॥ दोहा ॥ तौनप्राप्त कालज्ञलखि करत भयोअनुमान।जालकोरगहि दशनते रहिगोबझोसमान॥ जालहि ऐंचि समेटि जब धोवन लगो निषाद । तबहिं प्राप्त कालज्ञतजि जाल लह्यो अहलाद ॥ जौन दीर्घसूत्रीरह्यो मरो तौन बझिजाय । तातेआगम शोचिकै करिबो उचितउपाय ॥ देशकाल परखतरहै निशि दिन बारहमास । जानिपरेजामें कु-शल सो गति करै प्रकास ॥ चारों फलके अर्थ को करत रहै अनुमान । सिद्ध होहिं चारों यथा तिमि बिचरै मतिमान ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ सोरठा ॥ भीषमके ये बैन सुनि बोलतभे धर्मनृप । को जगमें मतिऐन तुम समान हे पितामह ॥ जयकरी ॥ अब यह बूझत समय बिचारि । उत्तर तासु कहो निरधारि ॥ एक भूपकहँ अवसरपाय । घेरत बहुतशत्रु नृपआय ॥ एक आपु अरि जुरैं अनेक । तौ किमि थिरैपालि प्रणटेक ॥ जौन समय अति बिषम बिभात । असती मित्रशत्रुह्वै जात ॥ शत्रुमित्र के अन्तरमाहँ । करैकौनचेष्टा नरनाहँ ॥ बिग्रह कासोंकरैअभीति । कासों करै सन्धि गुणिनीति ॥ नृपबलवानौंह्वै असहाय । किमि जीतै अरिदलसमुदाय ॥ तासु उपाय कहो हे तात । नहिं तुम समवक्ता अवदात ॥ भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ तातकहे तुमप्रश्नयह तेहि आपदको धर्म । कहत सुनो जो सुखदअति करिबे लायक कर्म ॥ कबहुं अमित्रौ मित्रहै मित्रन अरिकरिदेत । सो बिचार

करि देशपति भांतिकै रहै अचेत ॥ निज मित्रन हितलेइ करि करै अमित्रहि दूरि । निजपाक्षिन पोषतरहै दानमान दै भूरि ॥ सन्धि लगावैअरिनमें करिकै भेदउपाय । निजअंगिनमें सन्धि पर लगत न पावैआय ॥ करैशत्रुतें मित्रता मित्रहि अरिकरि देत । अवशि लहतसो आपदा यह आपदके हेत ॥ करैअमित्रहि मित्रनृप अवसरपरे बिचारि । बीतिगये अवसर अरिहि देत युक्तिसों टारि ॥ रोला ॥ प्रबल अरिको दापलहि युगशत्रु मिलिकै मित्र । करत बचिबेकोयुगुति निष्कपट कै निश्चित्र ॥ मिटे अरिको दाप तिनकोउचित नहिं विश्वास । सुनो कहियतु भूमिपति इतपूर्वको इतिहास ॥ मूषअरु मार्जारको संवादवन को जौन । होतभो वटवृक्षतर अबकहत सुनियेतौन ॥ रहो कानन बीचकहुं वटवृक्ष अतिकमनीय । चहूंदिशितें लतनछाजित निबिड़ अतिरमणीय ॥ बिहँगअगणित भांतिके तहँरमत बोलतबैन । मृगा आवत तासुतरते लहत अतिशयचैन ॥ पलितनामक मूषशतमुख बिवरकरि तरतासु । भयो निवसत अति बिचक्षण चपल लक्षण तासु ॥ बसत हो वटवृक्षपै मार्ज्जार लोमशनाम । गहिअनुछिन खातपाक्षिन कृतअदक्षिण नाम ॥ जातजाल पसारिव्याधा तहांसांझहिजाय । रातिनिवसत गेहमें फिर लखत भोरहिआय ॥ रहतबाझिजे मृगातामें तिन्हैं गाहिलै जात । रहो अमरष करम जाको शरमनहिं सरसात ॥ एकदिन मार्जार लोमश बझो तामधिपापि । परोव्याकुलकलपनो करि मरण अपनो थापि ॥ बझोलखि अखुभुकहि अखु कढ़ि लगोचरन निशंक । परेआपद प्रबल खलपै होत मोदित रंक ॥ जालबन्धन दण्डपै चढ़िलगो आमिष खान । प्रबल शत्रुहि बझो लखिकै हिये अति हरषान ॥ आइकै वटशाख पै तेहि समय ढूक उलूक । भरत भयमनु धरत निरखत करत भीषम कूक ॥ आइ उतमग रोंकि बैठो नकुलगहिबो चाहि ।

ताहिक्षण हियदाहि अखुरहि गयोयहि वहिचाहि ॥ उभयशत्रुन देखि कछुक्षण शोकसों रहिग्रस्त । भयोमनमें गुणत कैसे होइ आपद्‌ग्रस्त ॥ रहोंइत तोखातकौशिक नकुलमहि भगजात । जालमाधि जो दुरौंतौ मार्जार खाइअघात ॥ दोहा ॥ सबप्रकार नहिंबाचिबे कीकछुदशा देखाइ । ऐसेआपदमें कियो चहियेबुधि ब्यवसाइ ॥ जीवरहेलों जियबको करिबो उचितउपाय । बुद्धिमानतरि आपदा लहतपार सुखदाय ॥ तीनिशत्रु ममतीनि दिशि नहिंबचिबे कीराह । हैउपाय इतएकअब साधक सीतानाह ॥ हैंस्वछन्द येदोय अरि तीजो जो मार्जार । हैतापहँ आपद परो प्राणघात उपचार ॥ हैयहदोउनते प्रबल याढिगमोकहँ जोहि । आइ सकत ममनिकटनहिं नकुलउलूकौ कोहि ॥ बन्धनकाटि छोड़ाइबेकी बिधियाहिसुनाय । करौंमइत्री याहिसों तौसंशयमिटिजाय ॥ प्रकृति बिरोधी उभयजो होतआपदाधीन । मिलेलखत निजभलोतो करत बिरोधहिक्षीन ॥ नीतिज्ञानकी नीति यह है बिलारनीतिज्ञ । अबडर तजियाके निकटचलिबोउचितअदज्ञ ॥ इतैरहत येखातहैं औआपौ बचिजात । जोयह मूरखताकरिहि तौबधिजाइहि प्रात ॥ हैदढ़यहि मार्जारकहँ देशकालकहँज्ञान । ममभक्षण नहिंकरिहि यह समुझि आपनोत्रान ॥ पण्डितअरि सोंश्रेष्ठअति नहिंहित मूरुखजौन । नीतिसमुझि पण्डितकरत शठमन आवततौन ॥ सोरठा ॥ इबिधि शोचिवहमूष जायनिकट मार्जारके । बोलोबचन अदूष सीतारामहि सुमिरिकै ॥ चौपाई ॥ कछुदूरिरहि मूषप्रवीना । कहतभयो सुबचन अवलीना ॥ हेमार्जारराज मतिमाना । तुमकालज्ञ नीतिबिदजाना ॥ हमकछुकहत तौनहित जानहु । कहतकाकु इमिमति अनुमानहु ॥ हैममतुव जीवन बिधिजामैं । सोउपाय अब चहतकहामैं ॥ बाझिपरेन सकत निछुटाई । मोरहिबधी बधिकदुखदाई ॥ जोउपायममतुव बीचेबकी । सोहम जानतसुख साचिबेकी ॥ जो तुममोहिं बाधौ

मतिमोहीं। तोहम बचबबचाउबतोहीं॥ मम बिलओर नकुल रिसरातो। खानचहत ह्वै आतुरतातो॥ तरुपर बैठि उलूक भुखानो। मोहिंभोजन रुखराखि रुखानो॥ इनतेकरोमोर तुम रक्षण। येशठमोहिं न पावहिं भक्षण॥ इनके भयममति भइ भोरी। करिनहिं सकत युगुति जतिजोरी॥ जोतुम करहुमइत्री मोसों। होइअभयइनसों अरुतोसों॥ शत्रुनबंचिबचैहौंबचिहौं। सानँद प्रात नचैहौं नचिहौं॥ हौतुम परम प्रवीण विचक्षण। जानतदेशकाल कोलक्षण॥ अबमम मरेमरततुमभाई। तुममम हमतुम सखासहाई॥ बिनापरस्पर रक्षणकीन्हे। मरतउभयजन शठतालीन्हे॥ दोहा॥ हित रक्षणकरि परस्पर जीयबयुक्तिनआ-न। तरब आपदा आपगा नाविकनाव समान॥ पलित मूषके बचनये सुनिलोमश मार्जार। लहिजीवन आशामुदित कह्यो उचितव्यवहार॥ बिडालउवाच॥ चौपाई॥ हेमतिमान साधुताभूषि-त। कीन्हे जातिबिरोध अदूषित॥ तजिबिरोधमम जीवनईछे। नीतिबिधान गुरूसम शीछे॥ लहिवर बुद्धिबिचार तुम्हारे। हम प्रसन्नहिय आनँद धारे॥ नकुलहरित नामक बलहीना। चन्द्रक नामउलूकमलीना॥ येडारभगैंन तुमढिगजूटैं। जोहममित्रजाल सोंछूटैं॥ तुममम सखासहायकभाई। करोशीघ्र करतबसुखदाई॥ अबभयत्यागि लागुममधोरे। तुमसमद्वितिय सुहितनहिंमोरे॥ त्यागिनकुल कौशिकके भीतहि। ह्वैनिश्चिंत छोड़ावहुभीतहि॥ मार्जारकेबचन सोहाये। सुनिमूषक बोलोमनभाये॥ सत्यमित्र मोहिं करुप्रण करिकै। अभय दानदे दृढ़मति धरिकै॥ तौ तो निकट आइह्वै निरभय। काटब जाल रुदिहि अरिनिरदय॥ गुणि मूषकके बचन बिधाना। बोलतभयो बिलार सयाना॥ शीघ्रआउ हेसखा सयाना। प्राणदानि प्रियप्राण समाना॥ को शठप्राणदायकहि पीड़िहि। दैवहि बिसरिन लोकहि ब्रीड़िहि॥ हमतुव बुद्धिप्रसाद नभीवत। अबआपुहि जाने जगजीवत॥

संकटते छुटितोहित चाहब । जीवन प्रभृति सुप्रीति निबाहब ॥
दोहा ॥ उपकारीकेसरिस नहिं प्रत्युपकारी जौन । बिनकारण उप-
कारजो करतश्रेष्ठ अतितौन ॥ तजिसंशय आयो निकट करो
मित्रउपकार । हमसुमित्र सेइब तुम्हैं पालि प्रीति व्यवहार ॥
सुनिबिलारके वचनये देशकाल अनुमानि । ह्वै निशंक मूषक
गयो तासुपास हितजानि ॥ बरबीर ॥ तहँमूषजाय । संशयबि-
हाय ॥ सुतसम सचाय । पितुसरिस भाय ॥ बसितासु गोद ।
फिरि सकल कोद ॥ कीन्होबिधान । बनिप्राणदान ॥ यहमिल-
निदेखि । अचरज परेखि ॥ अवसर बिशेखि । हियहारि रेखि ॥
रहिघरिकमूक । फिरि करतकूक ॥ गोउड़ि उलूक । भरि हिये
दूख ॥ नहिं लहबजानि । हियआनि ग्लानि ॥ दोहा ॥ जानि
तिन्हैं मतिमान अति परम देशकालज्ञ । आशफांस फँसिथिरि
रह्यो नकुललालचीअज्ञ ॥ पलित लालितमुख लोमशहि कियो
हालित सुखसिन्धु । खालित पंगुकहँ चकितजिमि चाहिचढ़ायो
बिन्धु ॥ बीरबान ॥ दैइमिआनँद ॥ मूषकमानँद ॥ लाग्योकाटन ।
बन्धन ठाटन ॥ हरये काटत । लघुगतिठाटत ॥ इतउतजोवत ।
फिरिपरि सोवत ॥ लोमश जालस । ताकहँ शालस ॥ लखिकै
दोचित । बोलत शोचित ॥ मूषक आरज । करुतुर कारज ॥
मोहिं भितावत । राति बितावत ॥ दोहा ॥ दुखदजाल कहँशीघ्र
अब काटु मित्र मतिमान । भोरहोन चाहतबधिक आयकरिहि
गतप्रान ॥ लोमशके ये बचनसुनि बोलो पलित सुजान । तात
देशकालज्ञ हममति भयगहो महान ॥ चौपाई ॥ तुरताकरणकहो
मतिआरज । होत भलो नाहिं तुरता कारज ॥ बिनाकाज लहि
कारज कीन्हे । होतअनर्थ अहितबिनु चीन्हे ॥ समयलहे बिनु
काटे बन्धन । तुमते मोहिंहोय भय धन्धन ॥ तातेशुभदसमय
हमपरखत । थिरता लखितुम नाहकधरखत ॥ जबहमब्याधहि
देखब आवत । तब बन्धन काटब भय पावत ॥ तेहिलखि मुक्त

भूरिभयपैहौ । लैनिज जीवतुरित कढ़िजैहौ ॥ दौरि भागिबो तजिममधरिबो । तुमकहँ जानिपरी निजमरिबो ॥ निजरक्षण तजिकारज दूसर । करतदेखिहौ शिरपरमूसर ॥ जबतुम भीम जालते कढ़िहौ । आतुरभागि वृक्षपरचढ़िहौ ॥ तिमिलखिताहि नकुलभय पाइहि । अरु तुव कढ़ब देखिभगिजाइहि ॥ तबहम तुरितजाब बिलमाहीं । सुचितरहौ कछुसंशय नाहीं ॥ इबिधि मूषकीवाणी सुनिकै । लोमशकहतभयो इमिगुनिकै ॥ तातकहे तुम कारज जैसो । नहिं सतमित्र करतहैंतैसो ॥ मतिहमते निज कहँ भयमानो । निजसम गुणो न असतीजानो ॥ ममतुवभलो होइ जेहिकीन्हे । सोअबकरो शीघ्रता लीन्हे ॥ ममउपकार अवशिजो करिबो । तौ मतिगहौ गहरता धरिबो ॥ दोहा ॥ जौन अवशि करतव्यहै तौनशीघ्र करतव्य । गहरपियत करतव्यके रसहिबत्स जिमि गव्य ॥ जिमि जिमि बीतति रजनितिमि मम जिय सूखतजात । तातेदूषतयहि दशागहत न नीकीबात ॥ हमकीन्हे अज्ञानते जौनपूर्ब अपराध । सुधिमतिकीजैतौन अब करि सुमित्रतासाध ॥ बाम ॥ लोमशजौन । बोलोतौन ॥ सुनिवह मूष । भाष्योरूष ॥ दोहा ॥ सुनोमित्र परसिद्धयह अरथी लहत न दोष । निजरक्षण विधिसाधि सब करतऔरकोपोष ॥ आपुहि रक्षत रहत नहिं शत्रुहि करिकै मित्र । सो अपथ्यभोगी सरिस नाशलहत नहिं चित्र ॥ काहूको कोउमित्र नहिं सेवक सखा न स्वामि । सबअधीनहैं अर्थके अर्थहि सदानमामि ॥ अर्थ अर्थ सों बर्द्धत यथा पीलसों पील । बिनाअर्थ साधत अरथसो नर दैवी शील ॥ अर्थीकारज सिद्धिलौं करतरहत मनुहारि । काज सधेकरतहि गुणत सहजयथा जनचारि ॥ सिद्धिहोइ निजकाज तब कारजकरी अशेष । कारजआरज सुबुधिको साधब उचित बिशेष ॥ तातेचिन्ता करहुमति तबकाटब यहजाल । हम कहँ तुमकहँ बिघ्ननाहिं प्रापिहि जवनेकाल ॥ लीलावती ॥ लोमशपलित

कहतते यहिबिधि तौलगिभयो भोरजू सुनिये । रजनीभई व्य-
तीत शीततजिडरो बिलार जानबध जुनिये ॥ परिघनाम चां-
डालो तेहिक्षण लीन्हेंसंगश्वान अरुशुनिये । आयगयो सन्मुख
रुखबदले अति दुर्मुख दुखदायक दुनिये ॥ दोहा ॥ देखिताहि
लोमश डरपि बोलो आरतबैन । तात आयपहुंचो बधिकमोमन
गयो अचैन ॥ देखिताहि भागो नकुल तबतेहि निकटनिहारि ।
जालग्रन्थि काटतभयो मूषक समयबिचारि ॥ जालकटत सट
पटनिकसि भागोझपटि बिलार । मूषजातभो बिवरमधि डार
चढ़ो मार्जार ॥ काव्य ॥ देखिकढ़ि निज जाल घटिकलौं अति
पछितानो । ब्याधा जालसमेटि गयोघर बिस्मयसानो ॥ महा
भीतिते निछुटि बिलार हियेहरषानो । समुझिमूषको संगसमो
गुणिगुणि पछितानो ॥ कुण्डलिया ॥ आयोसन्मुख मूषके तबबि-
लार अनुमानि । प्रीतिभरे शब्दनलगो कहनचातुरी आनि ॥
कहनचातुरी आनि लगो बहुबिधिकी बातैं । बातैंकहत बनाय
कहत निजहितकी घातैं ॥ घातैंकरिबो जानि जाल जोरत मन
भायो । मनभायो हितसरिस साधुबनि सन्मुख आयो ॥ भाई
मूषक आवअब मिलिये अंकलगाय । हमतुम बाचेअरिन सों
तुम सुबुद्धि व्यवसाय ॥ तुम सुबुद्धिव्यवसाय बचेअब आनँद
कीजै । कीजै बिशद बिहार चारतारणको लीजै ॥ लीजै अब
गतितौन जौनसाधुनकी गाई । गाईममगतिजौन तौन हमत्या-
गे भाई ॥ भाईमूष निशंकअब रमुकुंजनमेंपैठि । सुखकरिबेकी
समय कत रहे बिवरमें बैठि ॥ बैठि बिवरमेंरहो कहा कढ़िबाहर
आवो । हमतुमसंगहिरमैं अवशिसुकरम फलपावो ॥ पावोअति
ऐश्वर्य्य डरैंतुव सबैअदाई । सबैअदाईदहैं रहैंसँग सिगरेभाई ॥
भोरीताजि विश्वासकरि जोरिमइत्री पर्म । जीवनदानकराय करि
अब कत आनत भर्म ॥ अब कतआनत भर्म मर्मका हिय में
आनै । आनैअधम बिलार सरिसका मोहुहिजानै ॥ जानैनिशि

रहिसंग कछूअसती मतिमोरी । मोरीको मतितोरि भई जाते अति भोरी॥ सोरठा ॥ पिता पुत्र हितमित्र हौंममविस्वेवीस तुम । गहेकौन गतिचित्र मित्र न जाते मिलत कढ़ि ॥ सुनिविलारके बैन श्रुतिचैनद भैनद दुखद । कह्योमूष मतिऐन हम तुम मित्र न कबहुँके ॥ गमक ॥ मित्रनर । शत्रुकर ॥ जाहिकहि । नामनहि ॥ नेमधरि । संगकरि ॥ चेतगहि । भेदलहि ॥ सधविधि । साधि गिधि ॥ मित्रअरि । चीन्हिचरि ॥ दूरिलग । शोधिमग ॥ जाहि सुख । ताहिरुख ॥ दोहा ॥ मित्ररूपकहुं शत्रु अरु शत्रुरूपकहुं मित्र । जानिपरत पायेसमय जोपवित्र अपवित्र ॥ सुनोमित्रता शत्रुता अमिटनामनहिंहोत । करतशत्रुता मित्रता कारणसरिस उदोत॥तौलगिनिबहतमित्रता जौलगिस्वारथआस ।स्वारथकी आशाछुटे कौनस्वामिको दास ॥ छप्पै ॥ मित्र शत्रुकैजात शत्रुकै मित्रबिराजत । स्वारथके परसंग दशासब स्वारथ साजत॥ बन्धु सखा सम्बन्ध स्वामि सेवकके भावहि । राखतसदा समर्थ अर्थ स्वारथदै चावहि ॥ तिमि कारणवश ममभई क्षणक मइत्री चित्र लागि । वहसमयभयोगत चहत कत स्वारथसाध्यो मोहिंठागि ॥ दोहा॥प्रबलशत्रुकहँ मित्रगुणि भूलिकरतबिश्वास । ताकहँकुशल न कबहुंसो अवशि लहतहैनास ॥ नहिंबिश्वास न योगकर नहिं करिये बिश्वास । मित्रनहूंमें नाहिंकरिय अति बिश्वास प्रकास ॥ रामगीतीलक्षण ॥ हमबचे तुमव्यवसायसों तुमबचे ममबल पाय । तहँ मित्रहे अब मित्रनाहिं अवगहे पूर्व्वसुभाय ॥ तुम क्षुधित कै इतआइके मोहिंमित्रकहि कहिभोरि । करिबिवर बाहरखान चाहत पीठि पांजर तोरि ॥ सुनु आत्मरक्षण करबसबकहँ उ-चित सुचित लगाय । मणि हेम धनदै ग्रामतजिकढ़ि देशतजि बढ़िजाय ॥ तुम मित्रता प्रतिपालहौ गहिखायगो तव भाय । नाहिं शत्रुकेसँग रहेकबहूं कुशल जानब न्याय ॥ सुनिमूषके ये बचन लोमश छपकि महिमेंलागि । बहुभांतिके करिशपथलागो

कहन अति अनुरागि ॥ ममिमित्र परमकृतज्ञ तुममम किये अति उपकार । हम आत्मरक्षण चहतचलि तवबुद्धिके अनुसार ॥ तुम परमधर्मी गुणी सुकृती सुजनअति मतिमान । यहसमुझिराखन चहततुमसों मित्रता सविधान ॥ हमसुज्ञानी धर्मबिद नीतिज्ञ सदया चित्त । तजिदये हिंसालये दृढ़व्रत जानिजगहिअनित्त ॥ दोहा ॥ सुनिबिलारके बचनये लखिछपकनि अनुमानि । मूष मूषभुकसों भयो कहत आतुरी आनि ॥ तूहिंसक चाण्डालशठ नाहकबकत बनाय । कौनाबिशासै तोहिंकहु छूटतजातिसुभाय ॥ हरिगीती ॥ सुनिमूषके ये बचन लोमशहिये अमरष आनिकै । जहँरहो तहँसों झपटि बिलपै गयोगहिबो जानिकै ॥ चलिमूष गो निजबिवरमधि रहिगयो तब अरसाइकै । हियगुण्यो कारज सधोनाहिं निजनीति इमि सरसाइकै ॥ इमि एक सुबुधी बहुतअरिसों लहतजय प्रण ठानिकै । जिमि पलित मूषक नीतिबिधि करिनीति विधि अनुमानिकै ॥ यह क्षात्रधर्म स्वरूप तुमसोंकहे बिधि उपचारिकै । लखिसमय अरिहित मध्यबिचरब उचित नीति बिचारिकै ॥ दोहा ॥ रामनाम सुमिरतरहै गहैनीति ब्यवहार । जीतैअगणित अरिनकहँ लहै आपदा पार ॥

इतिशान्तिपर्वणिआपद्धर्ममूषकबिलारसम्बादवर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः

वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ यहिबिधि मूष बिलारकर सुनिइतिहास अनन्द । फिरि भीषमसों कहतभे धर्मभूप कुलचन्द ॥ अपतालिकअपरांतिका ॥ आपुपितामह नीतिसिखायो । सोहम आनँददायक पायो ॥ शत्रुनको बिश्वास न गायो । भूपचरै किमिकै मनभायो ॥ भीष्मउवाच ॥ सवैया ॥ सुनुभूपतिभइ पूरबजोगाति ब्रह्मदत्त भूपतिके गेह । पूजिनि नामशकुनि अति चातुर नरपति पाले पूरिसनेह ॥ सोसर्बज्ञ तज्ञसब जानत नरसमबोलै बचनअबेह । होसुत तासुताहि नृपकेसुत बधो निरखि तेइँ कीन्हों तेह ॥ त्रिभंगी ॥ देखि मरोसुत अतिदुखपूरित रोदनकरत कही इमि

वानी । नहिं विश्वास क्षत्रियन को कछु निर्दय हिंसक अति अभिमानी ॥ पर अनहित निजहित करि डारत कुकरम करत न गहत गलानी । इमि कहि नृपसुत के चख नख करि उड़िरहो बसिनहिं नियरानी ॥ दोहा ॥ फूटिआंखि नृपसुतनकी शोर भयो घरमाह । सुनत तुरित आयोतहां ब्रह्मदत्त नरनाह ॥ पक्षीके पुत्रहि निरखि अरु निज पुत्रहिदेखि । निजकृतफल पावतभयो इमि मान्यो अवरेखि ॥ चक्र ॥ सुजान भूप या बोलो । नखेद नेकही ओलो ॥ डरैकहा नतैंबोलो । फिरो थिरो जियो जोलो ॥ दोहा ॥ उचित दण्डमम सुतहिदै कीन्हों मोहिं अदोष । आउ अभय बसु हम नहीं गह्यो सुनेको रोष ॥ पक्षिरुवाच ॥ पद्मावती ॥ करिकै अपराध नहींउचितै सुचितै विश्वासकरै अरिको । नहिं बैर बिसारतहैं अरिजे अरिबंशजते यहलैहरिको ॥ विश्वास करै अरिको जनजो नहिं बाचतसो कबहूं घरिको । अरिके बिश्वा-सहि में डरकोघर है न नशै तेहि मैं परि को ॥ दोहा ॥ तातेयहि कांपिल्लपुर अब न बसब नरनाह । हम पक्षी निबसब निविड़ बनवृक्षनकीछाह ॥ ब्रह्मदत्तउवाच ॥ सुतबधलखि कोरेचखहितोहिं न लगो कलंक । बैरभाव हमनहिंगह्यो पूजिनि निबसुनिशंक ॥ यहिप्रकार बहुबारकहि भूपदयोबिश्वास । थापिदोष बिश्वासमें पूजिनि कियो नबास ॥ सोरठा ॥ कथि बिश्वासमें दोस पूजिनि उड़ि अनतैगई । भूपकियो अफसोस सुमिरितासुमतिमानता ॥

इतिशांतिपर्वणिआपद्धर्मेब्रह्मदत्तपूजिनिसम्वादबर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ धर्म्मीनृप के राज्यमधि तस्करको उत-पात । होइमहा तब नृपकरै कौन नीति अवदात ॥ भीष्मउवाच ॥ नृपयह आपद तस्करीसुनो इहांकी नीति । पूरबको इतिहास यह आपद नाशिनि रीति ॥ रोला ॥ पूर्ब शत्रुंजय रह्यो सौवीर पुरको भूप । पायआपद तस्करी सो भयो पीड़ित रूप ॥ जाय भारद्वाज मुनिपै भयोबूझत तौन । युक्ति जातेहोइ प्रकटितउक्ति

सुअरथमौन ॥ किमि अलब्धहि लहै लब्धहिं करै बर्धितभूरि । करैबर्धित को सुपालन नीतिविधि किमिपूरि ॥ पालितहिंकिमि नमितराखै शमितहोइ न भूप । कहोदेश बिचारिमुनि उपदेश परम अनूप ॥ भूपके सुनि बचनबोले सुमुनि भारद्वाज । सुनो भूप उदण्ड साधत दण्ड सिगरोकाज ॥ रहै परखत प्रजनभृत्यन बन्धुबर्गन रोज । छिद्रलखिनहिं क्षमासाधै दण्डदेइसओज ॥ दण्डनीतिहि बुध सराहत दण्ड राखतधर्म । दण्डपालत प्रजन सब क्षणदण्ड लक्षण पर्म ॥ दण्ड भयहित रहताहित अरि सेइ चाहत छाहँ । दण्डदायक नृपतिको सबजगत पूजत बाहँ ॥ दोहा ॥ मंत्र पराक्रम समर अरुकबहुं पराजयरूप । समय देखि करिबो नृपहि शीघ्र नीति अनुरूप ॥ मंत्र चूकि आपत्य लहिं होइ शत्रु आधीन । पाणिजोरि अतिनमितह्वै जलपैनृपति प्रवीन ॥ चखजलढारै नीतिगुणि बोलै आरतबैन । दै बिश्वास आपुहि बचै निकट बसै मतिऐन ॥ समयपाय शत्रुहि बधै सधै आपनोकाज । सैन जोरिकै प्रबलबसिकरै पूर्ववतराज ॥ दृगकमल ॥ इबिधि । सुसिधि ॥ नृपहि । लिपहि ॥ मुग्धविलरस ॥ बकरूप रूपइ अर्थ । हरिरूप भूप समर्थ ॥ निज छिद्रराखैगोपि । परछिद्र देखै चोपि ॥ बरमा ॥ शंकत्यागि । अंकलागि ॥ भूपराति । सोउनाति ॥संमोहा॥ आनैभेदीबो । आपैलेलीबो ॥ धैराखैजीमें । नाखै हीमें ॥ दोहा ॥ पिता पुत्रकै बन्धु जो बांधै अपनो अर्थ । बधै ताहिनृप बरुतदनु रोवै सोवैब्यर्थ ॥ रहै सदा चैतन्य नृप रहै बिचारत मंत्र । चार चक्षु करि जगलखै काज न करै स्वतंत्र ॥ सदा अमात्यन धर्मयुत राखैभाखैनीति । मृदुता लखिते अभय ह्वै गहत कापटीरीति ॥ सुनि सुनीति नृपतीतिगुणि धर्म्मभूप सुख पाय । फेरि बराधि कृष्णहि किये प्रश्नहि कृष्णहि ध्याय ॥ झूलना ॥ पर्म्म जो धर्म्म सो गुप्त जब होयगो धर्म्महत हीनजग जीव ह्वैहै । पूर्व्वकी लीकसों गूर्व्वता त्यागि है भूप तजि नीति

शुभ रीति स्वै हैं॥ लोभ बश मोह बश क्षोभि नर भूलि थर कीर सम पीर लहि धीर ग्वैहैं। क्षीण मति दीनगति पाइ यहि भांतिकी चेतिहैं तौ युगुति कौन ज्वैहैं॥ दोहा॥ वंचकता लगि हैं करन आपुसमें जनसर्व्व। पीड़ितह्वैहैं विप्रगण वर्षाहोइहि खर्व्व॥ लहि ऐसी आपद दुसह नर किमि लहिहैं पार। कहो पितामह परमपटु परउपचर उपचार॥ सावित्री॥ हीमेंमोदैर खे। ऐसेप्रश्नै भाखे॥ सोकानैं दै लेकै। भीष्मौ बोले जैकै॥ भीष्म-उवाच॥ गोमती॥धर्मशास्त्रजेसुनैं। रामनामही गुनैं॥ कालतेसभय रहैं। नामते अभय रहैं॥ प्रमाणिका॥ रमेशको सदा जपै। महेश को हियेथपै॥ अभयरहैं प्रभय सहैं। सुखैलहैं सुजयचहैं॥ दोहा॥ देवाराधनते मिटत भूपति सकल कलेश। देवाराधन ते बढ़त धृतिमति ज्ञान बिशेश॥ तोमर॥ इतभूप और बिचार। सुनुतौन नीतिउदार॥ युगचारिजे अनुकूल। क्षितिनाथ ताकर मूल॥ विराट॥ राजा जोगति धारिकै चरै। सोईलै परजा सदा अरै॥ ताहीको समको समौ लसै। तैसोई सबके हिये बसै॥ दोहा॥समयपाय पलटै प्रकृति बसत दीनता आय। दीनदशा लहि करतसब हीनकाज दुखदाय॥ अत्रपूर्व्व इतिहासहमकहत सुनोनृप तौन। कौशिक अरु चाण्डालसों भईवारता जौन॥ त्रेता द्वापरकी रहीसन्धि तासुगति जानि। नृपभइ द्वादशवारषी अनावृष्टि दुखदानि॥ रह्योअवर्षण नववरस भूपसुनो तेहिकाल। अस्थिमयीह्वै मेदिनी भईमहा बिकराल॥ माहिवरी॥ मुनि त्यागि निज निज थान इतउत भ्रमत अति व्याकुलभये। लड़ि मरे अगणित गृहीपुर अरु नगर निरजन गनिगये॥ अतिभई भीषमरूप भूमि न भूपसब भाषतबनै। तरुभये बिनुरस पात गात सुजात जीवनकौ गनै॥ तेहिसमय विश्वामित्र ऋषिअति क्षुधित ह्वै पीड़ित महा। उठिभये भ्रमत अहार खोजत कछु अहार मिलैकहा॥ मुनिदूरिलौं भ्रमिफिरे नकुअहार नहिंकितहूं

मिलो । अतिक्षुधित आरत समितभे नहिंजात कहिनेकछु हि-
लो ॥ दोहा ॥ लखि ऐसी आरत दशालखे बिपिनमेंतत्र । अति
मलान चाण्डालको गेह अस्थिचय यत्र ॥ मुनिचलि ताकेगेह
माधि गिर दीनगति पाय । तहँलखि जंघाश्वानकी धीरज धरे
सचाय ॥ रोला ॥ कियेमुनि अनुमान मनमें होइकछु अँधियार।
श्वानजंघा लेइ भागों करोंजाइ अहार ॥ इतेमेंचांडाल बोलो
परोकोइत आय । बेगिनाम बताउ नातरु देतआयुध घाय ॥
सुनतमो डरिकहे मुनिमैं सुमुनि बिश्वामित्र । नामसुनिसो नि-
कसो हिय गुणतबात बिचित्र ॥ दूरिते करिदण्डवत उठिखरो
रहि करजोरि । कह्योमुनि तुवआगमनते दशाजागी मोरि ॥
आगमनको हेतकहिये देतआनँद मोहि । सुनतसो भगवान
ऋषि इमिकहे ताकहँजोहि ॥ क्षुधितहम अतिभये आरतमिलो
कछु न अहार । श्वानजंघा देहुतो हमकरैं भोजनचार ॥ सुमुनि
के सुनिबचनसो चांडाल हियरे पीड़ि । जायलियरे कह्यो सियरे
कौशिकहि इमिईड़ि ॥ उग्रतपकृत परमप्रभु भगवान ऋषितुम
ख्यात । छोड़िधीरज कहत कतइत महाअनुचित बात ॥ कहे
मुनि हम महापीड़ित कढ़न चाहतप्रान । दशायहिनहिं उचित
भक्ष्याभक्ष्यको अनुमान ॥ श्वपचबोलो ब्रह्मऋषि मुनि बिनय
मम सुनिलेहु । महातप निजश्वान जंघहि खाइ खोइ न देहु ॥
श्वान मलिन शृगाल ते अति मलिन जंघातासु । ताहिभक्षण
चहत प्रभु तुम राखि जीवनआसु ॥ महाकुत्सित कर्म त्यागब
धर्मको मुनिराय । और भोजन हेरिलीजै ग्रामजनपहँ जाय ॥
कहेमुनि नहिं और भोजन मिलत हारेहेरि । क्षुधाकाढ़नचहति
तनते प्राणपीड़ामेरि ॥ पाययहगति नहिंअभक्ष्यहि कियेभक्षण
दोष । बिप्रअग्नि समान भक्ष्य अभक्ष्य भक्षण तोष ॥ श्वपचउ-
वाच ॥ पंचसुनखी पंचबिप्रहि भक्ष्य पंचहि त्यागि । श्वानभक्षण
करहु मात द्विजधर्म ध्वंसन लागि ॥ यथा शास्त्रप्रमाण करिबो

उचित तुमकहँ रोज। पूर्वपूर्वज तजेसो मतिकरो अधरमभोज ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ क्षुधित कुम्भज मांसखाये असुरको जिमि पूर्व। क्षुधित हमतिमि श्वान जंघाहि खातदोष न गूर्व ॥ श्वपचउवाच ॥ बिनाजाने मांसखायो असुरको मुनिराज। श्वानलखि तुमखान चाहत महाअनुचितकाज ॥ इबिधिश्वपच बुझायहारो सुमुनि मानो नाहिं। अचल मनकरि लायराखे श्वानजंघा माहिं ॥ करत बार्ता श्वपचसों उठिखड़े कै मुनिराय। झपटिकै लै श्वान जंघा भगेआनँद छाय ॥ बिपिनमें परिपाक करिकै राखि पत्रन पाह। लगेअर्पणदेव पितृन सुनो भूपपनाह ॥ देवपितृन अरपि कीन्हे रुचोजो व्यापार। इन्द्र सो लखिडरतभे गुणि जगतको संहार ॥ दयेशासन लगे वर्षणमेघ महिपै बारि। भयो पूरित आपजगको ताप दाप बिदारि ॥ औषधी फलमूल प्रकटितभये सिगरे अन्न। समय लहि सुखलहे दुखजहि प्रजाभे सम्पन्न ॥ दोहा ॥ फिरि तपनिधि कौशिकलहे तपकरि पूरणसिद्धि। आपद गत मतिमानइमि बुधिबल साधतद्धि ॥ दैवदैवकरि परिहरत मरिजेनिपटनदान। बुद्धिमान व्यवसायकरि साधतकार्यमहान ॥ समयपरे जैसे बनै तैसे रखैप्रान। प्राणरहे हरिभजनतें सुधरत उभय बिधान ॥

इतिशांतिपर्वणिआपद्धर्मेबिश्वामित्रश्वपचसंबादोनामचतुर्थोऽध्यायः ४॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ शरणागतके पालबे को जो धर्म अहीन। सोकहिये ममपितामह जाहिर धर्मधुरीन ॥ भीष्मउवाच ॥ प्रश्नकियोनीको निपट सुनोयुधिष्ठिर भूप। शरणागतके पालिबेकोअतिधर्म अनूप ॥ अत्रपूर्व इतिहासहमकहत तोनअभि राम। कहेभूप मुचकुन्द ते भार्गववर तपधाम ॥ सोरठा ॥ जो सुप्रश्न अवनीपत्त हमसों कीन्हेसरुचि। सोमुचकुन्द महीप मुनिवर भार्गव सोंकहे ॥ सुनि भार्गव मतिऐन कहेसुनोसो भूपमणि। जोदायक अतिचैन सुनेगुने पातकहरण ॥ जयकरी ॥ यहसुप्रश्न

सुनिअतिअभिराम । कहत भयेभार्गव तपधाम ॥ निजसुप्रश्न कोउत्तरवेश । सुनो सरुचि मुचकुन्द नरेश ॥ रहो एकव्याधा मतिहीन । कालो कालसरिस अति पीन ॥ बनमेंजाय बिहंग बझाय । क्रयकरि लेइदाम बाँधिखाय ॥ यहि प्रकारकरि पाप अमेय । बितयो बहुतदिवस बनसेय ॥ फिरोएकदिन बनमेंथीति । मिलो न बिहँगगयो दिनबीति ॥ बीतत दिवस घेरिचहुं ओर । बारिद बरषेबारिअथोर ॥ तेहिक्षण भैव्याकुल बिहगाद । शीतारत ह्वैलह्यो बिषाद ॥ फिरिमिटि गोसब जलदपसार । उयो कलानिधि प्रभाअपार ॥ व्याधा कँपत मँझावत बारि । चलत भयो थलअजल निझारि ॥ मगमेंतहां कपोतएिक । भीजे पक्ष न साहस नेक ॥ थलगहि बैठि रही लखिताहि । लयो उठाय मोदअवगाहि ॥ मरणदशा कहँप्रापत आप । औरहिगहिबेको अतिथाप ॥ व्यालगलस्थ भेकजेहिभाव । किमिनगहन चाहत गहिंचाव ॥ पिंजर मध्य कपोतिहि डारि । गिरत उठतगोसुथल निहारि ॥ वृक्षतरे होनिर्जल ठौर । तहँगिरिपरो मृतककीडौर ॥ दोहा ॥ बिरहाकुल तेहिवृक्षपर व्याकुल बैठिकपोत । कहतभयो अतिदुखमयो बचनबिपति बश होत ॥ कपोतउवाच ॥ अजौंप्रिया आईनहीं रहीकहां केहिहेत । बातबायुबशमरीकै परी कहूं हत चेत ॥ बिनाप्रिया जीवनवृथा व्यथाहोति मनमाहँ । कामानल गतपुरुषकहँ नारी नदी पनाहँ ॥ बरवै ॥ गृहबनसम बिनुगृहिणी गृहिणीकाम । तियपति प्रियअरुगृहणी दायककाम ॥ नहिंगृह गृहगृह गृहिणी गृहिणीमोद । गृहबासिहियगृह गृहिणी गृही बिनोद ॥ चित्रांगी प्रियबैनी आयतनैनि । ममहियशय्याशयनी चौरनि चैनि ॥ मनरंजनि यहिरजनी आवति जौन । तो बिनु सबसुख सजनी जीवन कौन ॥ दोहा ॥ धर्मकर्म सुख शर्मकी साधकआनँद खानि । प्रिया भार्या कितरही हायपरत नहिं जानि ॥ यहि बिधिके निज सुपतिके सुनिकै बचन अनन्य । पिंजरस्थ पक्षी

कही जानिआपु कहँधन्य ॥ चौपाई ॥ हेपति हमैंगहे यहव्याधा । यइँनित इहैवृत्ति अवराधा ॥ आरत दशापाय यहिक्षनमें । तरु तर परचो मरणगुणि मनमें ॥ तरुअधीश तुमहौ यहिठाईं । अब यह तुव शरणागत साईं ॥ शरणागतको पालब सुकरम। परउपकार करब अतिसुधरम ॥ हेपतिसुनो अतिथिकोपूजन। धर्मगृहीको सुबचन कूजन ॥ अतिथिन पूजि मोद सरसावत । सो उत्तम उत्तमपद पावत ॥ निज शरीरको शोच न कीजै । आइकै व्याधहि आनँद दीजै ॥ ऐसे बचन प्रियाके सुनिकै । सुबुधि कपोत हियेमें गुनिकै ॥ तुरित उतरि तरुके तरआयो । टेरिकै व्याधहि बचन सुनायो ॥ हेखगाद अब शोच न करहू । दीनदशा तजि धीरज धरहू ॥ तुमयहिसमय शरण मम पाये। इमि मानहुंसन निज घरआये ॥ निजहित कहौ करैंहम सोई । अतिथिहि पोषब परमनिकोई ॥ सुनिअतिप्रिय कपोतकीवानी । व्याधा कहतभयो मनमानी ॥ यहिक्षण शीत देत दुखभारी । उचित उपायकरो उपकारी ॥ बातैं व्याधाकी ये सुनिकै । उड़ो बिहंग हियेमें गुनिकै ॥ जाय अगिनिकरसीके घरमें । लैसुअ-गिनि आयो तेहि थरमें ॥ दोहा ॥ कछु ईंधनधरि अगिनि धरि पक्ष आपनो राखि । बारितपायो बधिककहँ अतिप्रिय सुबचन भाखि ॥ अगिनितापि तनतपितकरि शीतभीत करिभंग। कह्यो बिहँगसों बिहँगहा अबमैंक्षुधित बिहंग ॥ सोरठा ॥ सुनिकपोतहा बैनहँसिकपोतइमिकहतभो। ममगृहसंग्रहहैन हमपक्षीउड़िफिरि चरत ॥ इमि कहि घरिकबिसूरि जानि क्षुधारत अतिथितेहि । महाशोच सों पूरि फिरि धरि धीरज कहतभे ॥ गमगीत ॥ ऋषि देवता पितृनको यहसुने सम्मतधर्म । जगआय पूजनअतिथि कोहै गृहिनको अति धर्म ॥ तन आपनो हम देत भोजन तुम्हैं लीजै तौन । मन आपने मत खेद कीजो अमर जगमें कौन ॥ इमिभाषि पच्छी भांति अच्छीअगिनि कहँफिरिबारि। करिपांच

परदक्षिण धसोरघुबरहि हियमेंधारि॥ तेहिदेखि प्रतपतआगि-
निमें बिहगाद पूरोखेद। लखितासु सुधरमअतिथि पूजनप्रकट
भो निर्बेद॥ गुणि निन्द अपनो कर्म नितको कियोमनते त्याग।
मनमें कपोतहिगुरु जान्यो गह्योदृढ़बैराग॥ गहिकपोती छोड़ि
दीन्हों करत खेदप्रलाप। छुटि कपोती बिनापति जग जिअब
जान्योपाप॥ करिपांच परदक्षिण सोबिधिधसि जरीपावकमाहँ।
तन त्यागि गहि तन दिव्य देखत भई अपनो नाहँ॥ सुर रूप
बैठि बिमानपहँ सुरनाथसरिस बिभात। तहँजायबैठीबामदिशि
अति प्रभापूरित गात॥ दोहा॥ निरखि कपोती को मरण धरि
अतिशय निरखेद। मोहत्यागि तेहिबिधिमरण गुन्योब्याधगहि
खेद॥ चितै तत्त्व रजनी बितै थितै ज्ञान घनसार। तितैचलो
अतिबन जितैटारतैमोह परिवार॥ दूरजाय बननिबिड़मधिदावा
लगोनिहारि। ब्याधातुर तेहिदिशिचलो निश्चय मरणबिचारि॥
जायदवामधि धसिमरो रामरामरटिलाय। उपकारीको संगलहि
लह्योस्वर्ग सुखदाय॥ यहिबिधिलों शरणागतहि पालबउचित
अनोत। जिमि ब्याधहि शरणागतहि पाल्यो सरुचि कपोत॥
सोरठा॥ पायोस्वर्गकपोत पालिबधिकशरणागतहि। दिवसागर
को स्रोत शरणागतको पालिबो॥

श्रीमहाभारतशांतिपर्वणिआपद्धर्मेब्याधकपोतोपाख्यानोनामपंचमोध्यायः

युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ मिटै पापको दापकिमि कहियेसो उप-
चार। यह सुनिकै भीषमकहे सुनो भूमिभरतार॥ भीष्मउवाच॥
अत्रपूर्व इतिहासहम कहतसुनो नृपतौन। जनमेजय क्षितिपति
रहे तो पूर्वज मतिभौन॥ हरिगीती॥ तेहि पाय कारणभई घेरत
ब्रह्महत्या आइकै। नृप अवशि भावी होतिहै नहिंटरति अवसर
पाइकै॥ तेहित्यागि दीन्हें बिप्रअरु उपरोहितौ अघ देखिकै। तब
राज्यतजि कढ़िगयो बन में भूप अघ अवरेखिकै॥ तहँ पेखि
शौनक मुनिहि नृप उतभयो उगरत धाइकै। लखिताहि गुणि

पापात्मा पुनि कहतभे अनखाइकै ॥ इतआउ मतितों अङ्गते दुर्गन्ध प्रगटित होतहै। नितसंगकीन्हें पातकीको बढ़तपातक सोतहै ॥ सुनि भूमिपति यह वचन मुनिसों कहतभो करजोरि कै। मतिनाथत्यागब मोहिंतुममम्ओरते मनमोरिकै ॥ सबविप्र की लहिकृपा सुधरत अवशि उबरत दोषते। अपराध समप्रभु क्षमाकरिकै सुगति दीजै तोषते ॥ सुनि भूपके ये वचन मुनि लखिरहे सुदया पूरिकै। ढिगजाइ नृप करिदण्डवत सो खरो अस्तुति भूरिकै ॥ तबदेखि सदया मुनिहिं नृप करजोरि बोलो प्रेमसों। त्रैताप कैसेमिटै मानस लहैसुख केहिनेमसों ॥ दोहा ॥ यहि प्रकार नरनाहके सुनिआति आरतबैन। कहतभये शौनक समुनि देत भूपतिहिचैन ॥ हियप्रगटे आरतदशा बढ़ेज्ञाननिर-वेद। अरुकीन्हें भगवत भजन मिटत पापको खेद ॥ यज्ञकिये दक्षिणादिये सेये द्विजपदकंज। काशिकादि तीरथकिये बढ़त पुण्य मनरंज ॥ काशीकाञ्ची द्वारका मथुरा अरुहरिद्वार। माया अवध अवन्तिका मेटतपाप पहार ॥ सुरसरि यमुना सरस्वती गोदावरीप्रयाग। पुण्यक्षेत्र मिलेहरत पापतापकोनाग ॥ लोभ मोह ममता करब कामक्रोधबेपाप। महापाप मिथ्या कहबदुहुं-दिशि बाढ़ततताप ॥ सत्य करब सुधरम गहब शुचिमन रहब सदैव। दानदया उपकार ये तीरथ कथातथैव ॥ सोरठा ॥ नृप ययाति मतिमान पूरवइमि गाथाकहे। कियेतीर्थ मखदान तप व्रतते पातक नशत ॥ सत्यवती तेहिरीति निज कुमारसों इमि कही। किये पुण्यसों प्रीति पुण्यहोत पातकनशत ॥ इमि सुर गुरु समुझाय पूर्व कहे है सुरन सों। मिटत पाप दुखदाय दानतीर्थ तपमख किये ॥ मलिहरी ॥ यहि भांति नृपहि प्रबोधि मुनि वर परम आनँद भरतभे। हयमेध मख करवाय द्विजन पुजायपातक हरतभे ॥ नृप धर्म जानो अवशि तपमखतीर्थ व्रत संयम किये। अरु दान पर उपकार कीन्हें दया अरु

सुधरस लियेलहि सुगुरु प्रगटे सुमतिगुणि निजपाप अतिआ-
रतभये । सत्संग कीन्हें साबिधि हरिहर रामरति रसरँग रये ॥
अरुअतिथि पूजनकिये क्षुधितनउदर भरिभोजन दिये । निज
नशतपातक मृत्युहिय सन्तोषमुद अमृत पिये ॥ दोहा ॥ कहत
पूर्व्वइतिहासहम सुनो तौनमतिरास । नैमिषार मधि गृध्र अरु
जम्बुकको इतिहास ॥ चौपाई ॥ मरोएक द्विजको सुतकोई । हो
अप्राप्त यौवनबय सोई ॥ लैतेहिरुदन करत अति आरत ।
गेमसान महि द्विज दुखभारत ॥ धरिमसान महि परतेहि गहि
गहि । रुदनलगे शिशुतासुख कहिकहि ॥ गहिगहि रुदन करैं
दुखपागी । नहिंघरजाइ सकैंतेहित्यागी ॥ सोलखिएक गृध्रतहँ
आयो । तिनसों कहतभयो मनभायो ॥ मृत्युलोक यहतुमनाहिं
चाचत । जेजनमत तेमरतन बाचत ॥ मरतभोगि जोबिधिलिखि
दीन्हें । मरोनजियत रुदनकेकीन्हें ॥ ताते मोहत्यागि घरजाहू ।
औशिहोत बिधिकीलिखि काहू ॥ इबिधि गृध्रकीबाणीसुनिकै ।
तेघरचले सुतहि तजिगुनिकै ॥ सोलखिकै जम्बुक अतिबोलो॥
बिलते निकासि द्विजन ते बोलो ॥ तुमसब कहे कौनके लागे ।
सुतसनेह तजिचले अभागे ॥ सुतसनेह त्यागतजनकोई । ता-
कर भला कबहुं नहिंहोई ॥ तातेपलटि पुत्रपहँ जाई । बदनबि-
लोकहु अंकलगाई ॥ सोसब सुनहु मोहबश ह्वैकै । पलटेरुदत
पुत्रकहँज्वैकै ॥ तिनसों कह्यो गृध्र इमितबलों । मरेसुतहि सेवहु
गेकबलों ॥ अलपबुद्धि जम्बुककीबानी । सुनि सुत निकट चले
सतिमानी ॥ दोहा ॥ जीवगयो काढ़िकाठसम परीअचेतनदेह ।
गलिजइहै कछुदिवसमें राखिसकतनहिंनेह ॥ भयोहोइनिर्व्वेदतो
नेहमोह भ्रमत्यागि । जायकरो तपज्ञानगहि जगयामिनि मधि
जागि ॥ तपतेपातक मिटतहै तपते बाढ़त धर्म्म । दीर्घायू सुत
मिलतहै तपतेसधत सुकर्म ॥ सोरठा ॥ इतनेमें तहँआय बोलो
छली शृगाल वह । अलपबुद्धि ब्यवसाय गृध्रतासु मानतबचन॥

दोहा ॥ देवपितर परिवारकर तोषक दायकचैन । पुत्रताहि चाहततजन सुनिकुजंतुके बैन ॥ सेवहु पुत्रहि नेहगहि जीहै हमैं बिशास । अर्थसधत उद्योग ते सिद्धि प्रदन केपास ॥ चौपाई ॥ सुनिश्रृगालकी बाणीऐसी । कह्योगृध्र गतिचाहतिजैसी ॥ वर्ष हजारहमैं भो पेखत । जन्मत युवावृद्ध अवरेखत ॥ जन्मतमरत करोरिन देख्यो । मरोनकबहूं जीवत पेख्यो ॥ माता पिता पुत्र अतिप्यारे । जेनहिं होतनैनते न्यारे ॥ मर्इहिं तिन्हैं गेहते काढ़त । ईंधन अग्निलाइ तन डाढ़त ॥ तजि मसान महिपै घर आवत । दुखसहि करत कर्मजोभावत ॥ जगअनित्य नित ते सबजानत । तुमगहिमोह अविधि विधिठानत ॥ तजिगोजाहि जीवतन सोई । तुमनाहिं तजतकौनविधि जोई ॥ गुणिममवचन जाहुनिजगेहा । मृतक न जियत बढ़ाये नेहा ॥ यहसुनि ते सब धीरज धरिकै । चलेमृतकको त्यागन करिकै ॥ सोलखिके जम्बुकभोबोलत । कततजि सुतहि गेहमुख डोलत । बर्द्धकबंशपिण्डजल दायक । सुतपदार्थ नहिंतजिबे लायक ॥ मरो विप्रको सुत मनभायो । सुनियतु ताकहँ रामजियायो ॥ हेराजर्षि श्वेत सुखदाई । मृतक पुत्रकहँ लियोजियाई ॥ सुमन सिद्धिऋषिमृतकजियावत । आरत दशा देखिते आवत ॥ सोसुनिते अति करुणा पागे । जायसुतहि गहिरोवन लागे ॥ दोहा ॥ जानतहै इमि गृध्रअरु भाषैरहन श्रृगाल । जायसके नहिंतेसबै फँसेमोह केजाल ॥ बीतिगयोदिन निशि रुदत भयोभोरज्योहि पर्ब । इतने में आयेतहां करुणानिधि प्रभुसर्ब ॥ रुदत देखि तिनकहँ शिवा शिवदाया बिस्तारि । बरंब्रूहि द्विजसों कहेबोलो विप्र विचारि ॥ कहोचिरायु सुवनयह शम्भु कृपाते तौन । उठिबैठो हर्षसकल किये शिवाशिव गौन ॥ लैपुत्रहि आनँद भरोबिप्र सरिस परिवार । तजिमसान निजनगर मधि कियोप्रबेश उदार ॥

इतिशांतिपर्वणिआपद्धर्म्मेगृध्रजंबुकसंवादवर्णनोनामषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ जासोंनित अभिरो रहतशत्रु महाबल वान। किमिबुधि बलकरि सोबचै तौनकहो मतिमान॥ भीष्मउवाच॥ अत्र पूर्व इतिहास हम कहत सुनोनृप तौन ॥ शाल्मलितरु अरुपवनसोंभई वार्त्ता जौन ॥ रोला ॥ बिपिनमधिहो महाउन्नत वृक्ष से बरनाम । कियेछाजित दूरिलों बढ़िजासु शाखादाम ॥ बिहग बहुबिधिके बसत जहँ मृगानिबसत भूरि । बणिक पंथी आइ जेहि तर करत श्रमपथदूरि ॥ सुमुनि नारद एकदिन तेहि वृक्षके तरजाय । कहतभे हे शाल्मली तुम परम उन्नतकाय॥ पौनसों कछु प्रीति तुमसों कहो कारण तौन । नहींतोरत तुम्हैं जाते रहत रक्षक पौन ॥ सदा तोरत रहतशाखा तरुन के अति गूर्ब । गिरिनहूको करत पीड़ित पवन प्रबल अपूर्ब ॥ एकशाखा भंग नाहिं तुवपरत तातेजानि । सख्य तुमसों पवन सों तेहिहेतु रक्षतमानि ॥ बचन नारदसुमुनिके सुनिकह्यो सुनि येएहु । पवनसों नाहिं सख्यहमसों नहींमनमें नेहु ॥ नहीं मम बलसदृश नारद पवनको व्यवसाय । हीनबलह्वै जात मारुत लागि मोपहँ आय ॥ सकतहैन प्रवेशकरि ममदलनमधि कर जोर । बलनलागत हारिकै तबजात औरी ओर ॥ नारदउवाच ॥ सुनो शाल्मलि कहत तुम बिपरीत बचन बिधान । इन्द्र बरुण कुबेर यमते पवन अतिबलवान ॥ होत चेष्टित जगत सो सब पवनहीको अंस । कहतहौं अज्ञानबश तुमपवन बलको ध्वंस ॥ वृक्षसों इमि भाषिनारद पवनके ढिग जाय । बचनताको कहो जो सोदयेताहि सुनाय ॥ सुमुनिनारदके बचन सुनि शाल्मली के बैन । जायतासों कह्योमारुत किये रातेनैन ॥ मारुतउवाच ॥ शालमली तुम गर्बसों ममबलहि निंदै जौन । जायममढिग कहे सो सब सुमुनि नारदतौन ॥ पवन हमपरभावनिज दरशाइयतु है तोहिं । देखुममबल बेगजाकहँ निदरि मोदे मोहिं ॥ जीवके बिश्रामहित बिधितोहिं निरम्यो अत्र । बूझि यहकरिदया हम

नहिं कियो चालन पत्र॥ दयामम नहिंगुणेतुम निजबलहिजाने पुष्ट। दयाजानत साधु निजपरभाव जानतदुष्ट॥ भीष्मउवाच॥ मरुतके येबचन सुनिकै कह्योतरुवर तौन। मोहिं कबहुं न आशही तुमदयाकीहैपौन॥ निबलको बलवानजिनकौ दयाचाहति आम। अधिक तुमसों बलीहम तुवदयाको नहिंकाम॥ करोजो बलहोइ तुममें करोजोकरतव्य। क्रोधकरि ममकहाकरिहौ जाहु सव्य असव्य॥ वृक्षके सुनिबचन मारुत कालबश तेहिजानि। गयेनिजथल भोरतेहि निर्मूल करिबो मानि॥ गयोमारुत तहां ते तबवृक्ष कीन्हों शोच। निबलहम अति प्रबलप्रभुते बैरकीन्होंरोच॥ करैगो निर्मूल मोकहँ पौनभोरहि आय। मूलघातन होइजाते तौन कौनउपाय॥ बड़ेसों हठिबैरकीन्हें लघुहिकुशल न होत। बड़ोजो सो दैव लघुको स्वामि सज्जनगोत॥ घरीलों इमिशोचि तरुवरचाहि राख्योमूल। त्यागिदीन्हें आपने फल पत्र शाखा फूल॥ त्यागिशाखा फूल फल दलभयो कुत्सितकाय। महतजनसों बैरकीन्हें मिलतफलसोपाय॥ भोरहोतहि पवनआये कियेबेग अमन्द। शाल्मलिकी देखिगति हँसिकहे सुबचनछन्द॥ शाल्मली करिबैरहमसों लहेकैसो हाल। रहेउन्नतकाय अतिबलवान शाख बिशाल॥ गयेह्वै यहिभांति कििमबिनु किये हमसोंयुद्ध। कहेगर्बितबचन तबकरिप्रगट खलताशुद्ध॥ गयोवहबलगर्बकित फल फूल शाखा पत्र। मूलमहिमें राखिबो गुणिभये ऐसेअत्र॥ पवनमान अमानको सुनिबचन शालमलि तौन। दीनगति लहि भयो लज्जित देइ उत्तरकौन॥ क्षीणगति लहिमहा लज्जितदेखि मारुत ताहि। गयेनिजथल त्यागि ताकहँ आपनीदिशि चाहि॥ भीष्मउवाच॥ दोहा॥ यहि प्रकार नृप निबलजो गहिकै गर्बगरूर। करतबड़ेनसों बैरसोलहत आपदा पूर॥ जिमि दुर्योधन मोहबश तुमसों लरोसगर्व। जासुसहायी कृष्णप्रभु कर्त्ता खर्ब अखर्ब॥

श्रीशान्तिपर्वणिआपद्धर्म्मेपवनशाल्मलीसंवादोनामसप्तमोऽध्यायः ७॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ अब बताइये पितामह जौन पापको मूल । पाप ताप कितते बरधि देतदुहूंदिशि शूल ॥ भीष्मउवाच ॥ एक लोभते अगुणहै मूल पापको तौन । पाप लोभते होतहै देत दुसहदुख जौन ॥ क्रोध लोभते होतहै होतलोभते काम । क्षोभ मोह भ्रम लोभते प्रगटत औगुण ग्राम ॥ दम्भ द्रोह अरु पिशुनता प्रगट लोभते होत । त्यागकराइ सुकर्मकर गधतअशुचता स्रोत ॥ लोभभये तोषत नहीं सिन्धु समान अथाह । है आकर सब अगुणको लोभसुनो नरनाह ॥ लोभ क्रोध भ्रम मोह मद हर्ष शोक अरु दम्भ । अबिवेकी अज्ञान के हिय घरके अस्तम्भ॥सदाचाररत पुरुषको अब कहियतु व्याख्यान। उभय लोकके भीतको जासु हियो अस्थान ॥ सुख दुख जिन कहँ सम सदा राखत इन्द्रीमोष । उपकारी दाता सुबुधि गहे रहत सन्तोष ॥ करतधर्म व्यापारनित साधुवृत्ति अवराध । लोभ क्रोध मोहादिकर करत नियमते बाध ॥ सत्संगति सेवन करत चरत वेद अनुसार । ते महान जन धरणिपहँ कर्त्ता तत्त्व बिचार ॥ ज्ञानवान मतिमान कर सुधरत सिगरो काज । अज्ञानी कहँ कुशल नहिं बिनशत सबै समाज ॥ मोषकरब इन्द्रियनको दम कहियतुहैताहि।दमसाधनते सधतसब साधुसमागमचाहि॥ काम क्रोध मद लोभ भ्रम हिंसा ममता मोह । दम साधन कीन्हें दुरत बर्द्धत सुधरम छोह॥परम धरमको मूलहैदम साधन शुभ कर्म। दम विशेषते बिप्रको परम सनातनधर्म ॥ दम सुतेजबर्धित करत मेटत सकल अनर्थ । मन प्रसन्न कृत दोषहर दमकल दानिन व्यर्थ ॥ दम साधन करि शुद्धमति ज्ञानीसर्बस त्यागि । त्यागि अबिद्यादिक क्रिया बिलसत आनँद पागि ॥ ब्रह्मलोक पर्यन्त लहि बिलसत योगी तौन । दम साधनकृत दांत कह अलभ लोक है कौन ॥ तप सबगति साधक नृपति तपबिनु सधत न एक । तप प्रभाव प्रभु पितामह बिचरत जगत विवेक॥

तपते पायेबेद ऋषि तपते भयेमहान। तपते कामद मंत्रसब तप सब सिद्धिनिदान॥ तपते मिलत अलभ्य अरु होत असाध्यो साध्य। नहिं अप्राप्य कछु तप कृतहि ईहा तासु अबाध्य॥ ऋषि सुर सुरपति पितरगण दिगपालक गन्धर्ब। तप करिकै पाये सुपद तपहि सराहत सर्ब॥ वैशम्पायनउवाच॥ दम तपकोपर भाव सुनि कहे युधिष्ठिर भूप। सत्य धर्मकी अबकहौं महिमा परम अनूप॥ परम धर्म सब बर्ण को सत्य सुनो नरनाह। सत्य सनातन सिद्धिप्रद धर्म सिन्धु अवगाह॥ सत्यत्रयोदश भांतिको होत भूमि भर्तार। सत्य क्षमा समता दया त्यागो तत्त्व बिचार॥ दम अक्रोध धृति ध्यान अरु आर्ज्जव लज्जा जौन। अन अमरष ये त्रयोदश सत्यसुनो मतिभौन॥ परम धर्महै सत्यनृप सबयज्ञनते श्रेष्ठ। ते योगी अतिधन्य जे सेवत सत्य यथेष्ठ॥ युधिष्ठिरउवाच॥ सोरठा॥ क्रोधादिक अरितौन जेहि प्रकार बर्द्धत प्रगटि। कहौपितामह तौन जेहिप्रकार फिरि नशतये॥ भीष्मउवाच॥ रोला॥ क्रोधप्रगटत लोभते सो नशत प्रकटे शांति। कामसो संकल्पते तेहिजहत प्रज्ञाकांति॥ क्रोध अमरष लोभ ये अज्ञाननताते होत। तत्त्व ज्ञान बिधान प्रगटे नशतहै सहसोत॥ प्रीति थीति बियोगपाये शोक बर्द्धत आय। गुणत ताहि निरर्थ जबहीं मूलते मिटिजाय॥ अतिअसूया बढ़तलहि कै क्रोध लोभ बिभाग। दयाप्रगटे भगतसों जिमि चोर जाने जाग॥ सत्यसेवनबिना ममता बढ़त हे नरनाह। नशतसोसतसंग कीन्हें बसे साधनमाह॥ बढ़तहै ऐश्वर्यते मद ताहि नाशत ज्ञान। तीव्रतहि आमर्ष प्रगटत दया ताकोभान॥ होति ईर्षा कामते बढ़िबुद्धि नाशत ताहि। लोभ कुमतिहि नशत जगहि अनित्यजानेचाहि॥ मोहप्रगटत जीवके अबिचारते सबकाल। नशत तौनविचार कीन्हें तत्त्वके क्षितिपाल॥ ये त्रयोदश दोष करता एक बहुत अनर्थ। हे सुयोधन मध्य येसब लरै कतनहिं

व्यर्थ ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ पितामहके बचन सुनिकै धर्मनृप सुख पाय । फेरि बूझतभये हियरे परम आनँद छाय ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ अब पितामह कहौ लक्षण निन्द्य जनको जौन । जासु संगति सुजन बरजत यथा कंटक गौन ॥ कृपी अयशी क्षुद्र हिंसत भोगरत सबयाम । पर सुनिन्दक दुष्टजन जोकरत कुत्सितका-म ॥ छली गर्बी पापरत परदोष प्रगटनहार । भलोकाहुहिगुणत नहिं निजभावके अनुसार ॥ भलोदेखत औरकोतोहिये पीड़ित होत । भलोअपनो बुरो सबको चहतत्यागे श्रोत ॥ करत जो उपकार ताकहँ ठगनचाहत आप । दानमान सुजान जनको करत कबहुं न थाप ॥ होत यहिबिधिके कुलक्षण निंद्यजनके भू-प । अब सुलक्षण सुनो जैसो उचित पावनरूप ॥ बेदबिद बे-दांगबिद द्विजनृपति राखइसेइ । करै सुरमख पितर पूजन दान बिधिवत देइ ॥ होइ बहुधन बिप्रजो नाहिंकरै मख अरु दान । भूप ताकोहरै धनतेहि छोड़ि शेष समान ॥ यज्ञघरमें शूद्रकबहूं नहीं पावैजान । करैपीड़ित द्विजहि क्षत्री हरै ताकोमान ॥ इष्टि बैश्वानरी प्रतिदिन करैभूप सुजान । परमधर्म गृहस्थकोहै अ-तिथि पूजन दान ॥ होत दुःसह तजतनृपको पाय बिप्रप्रसाद । यज्ञकीन्हें दानदीन्हें याचकन अहलाद ॥ बाहुबलते तरतआपद वीरक्षत्रीक्षिप्र । तरत धनबल बैश्य शूद्रोमंत्र बलतेबिप्र ॥ युवति अपुट अमंत्रबिद अरु असंस्कारी जौन । अग्निहोत्र न करै कब हूं किये निरयीतौन ॥ रहिजितेन्द्री करत मखजोदाक्षिणादे भूरि । दशहुंदिशिसो लहतईछित परमआनँद पूरि ॥ यज्ञकरिकै दक्षिणा नाहिंदेतजो साबिधान । प्रजापशु दिवहरतताकोयज्ञजानोन्यान ॥ कामबश परतियहि भोगत एकनिशि द्विज जौन । साधिनित ब्रततीनि बर्षअपापहू हैतौन ॥ कनकतेई बिप्रधन हरसुरापानी मूढ़ । अरु अगम्यागमन कर्त्तापतितहि पापीरूढ़ ॥ पायसतगुरु होयइनके ग्लानि जोगुणिकर्म । किये प्रायश्चित्त तीर्थब्रतबढ़त

इनको धर्म ॥धर्ममख व्रततीर्थ तपये हरतपातक सर्व। मिटत प्रायश्चित तेपातक त्यागि गौरवगर्व ॥ भ्रूणहा निजप्राणि नि-जतन काटिकीन्हें होम। होतहै शुचिशुद्ध सबमिटिजात पातक तोम ॥ गरम मदिरापान करिकै त्यागि तनगहि ग्लानि। लह-त मदिरा पिशुनगति मिटिजात पातककानि॥ लोहप्रतिमाग-रमकरिकै लपटि त्यागैदेह। लहैगुरु तल्पग सुगति तौधर्मसो करिनेह ॥ दोहा ॥ लिंगवृषन युगपाणि ते गहिचलि दक्षिणओर। जीलहुप्रानते काटिकै मरै ग्लानि गहिघोर ॥ कैआमिषतजिनाहि मख उत्तम करैसनेम। तौगुरुतल्पगको मिटत पापलहन्है छेम॥ ब्रह्मचर्य द्वादश बरष गहि तप करैअनूप। होत अपातक ब्र-ह्महातौजिमि पावन रूप॥ लगै सगर्भी ब्राह्मणी बधको पातक जाहि। दुगुण पापतेहि लगतहै दुगुण नेमव्रततााहि ॥ वधिवै-श्यहिद्वैवर्षमें एकवृषभ शतगाय। दैविप्रन कहँहोतहै अघगत शुद्धसुभाय॥ एकवृषभ शतगायदै आठवर्षमेंदान। होतअपा-तक शूद्रहा तजअघ करिबोठान ॥ श्वानबराह बिलार खर हिं-सेहत्याहोत। अहिअखु दादुर काकके मारेपातक सोत ॥ पशु बधको प्रायश्चित्त नरकरिहोतअपाप। धर्मशास्त्र में जोकहे सोई सबथरथाप॥ बिनुकारण मातापितहि तजेपातकी होत। अशन वसनलाजन साविधि दीबोधर्मतनोत ॥ बिनु व्यभिचारिणिभा-र्य्योहित्यजि परतिय तेभोग। करत तीन चान्द्रायणहि कीन्हेंहो-तअरोग ॥ नृपति देय अतिदण्ड तेहि गरम लोह धरि अंग। दुगुणदण्ड व्रततेहितियहि रमैजो परपतिसंग॥ मदिरापीकैकुल को गन्धलहै द्विजजौन। तीनिदिवस जलउष्ण पय पियै तीनि दिनतौन॥ यहिविधि पातकप्रति कहे प्रायश्चित्तमहान। तजि बिकार व्यवहार सियरामहि भजतसुजान॥

इतिश्रीशांतिपर्वणिआपद्धर्मेप्रायश्चित्तवर्णनोनामअष्टमोऽध्यायः ८॥

बैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ पायकथान्तर तेहिसमय खड्गयुद्ध विद

दक्ष । नकुल पितामह सोंभये बोलतवचनप्रतक्ष ॥ बिरथबिधनु ह्वैजातभट घेरि लेहि तेहिटूटि । गदाशक्तिधर धनुषधर बध करिबो गुणिजूटि ॥ सबसों भटकिमि खड्गगहि तिनसों लरैअ-भर्म । सोबताइये पितामह खड्गयुद्ध बिद पर्म ॥ बचन नकुलके सुनिकहे धनुषवेद पारज्ञ । जोतुमबूझत शिष्य सम सो हम कहतअदज्ञ॥ चौपाई ॥जगहितप्रगटि पितामह आरय।बिरचेमहि दिवऋषि आचारय ॥ रचेप्रजापति अति मतिभावन । वेदवेद बिदबिरचे चावन ॥ अस्थावर जंगमबहु बिधिके । सुर गन्धर्ब आदि सबसिधिके ॥ उद्भिज स्वेदज अण्डज जेते । औरजरायुज प्रगटित तेते ॥ क्रोधलोभ भयप्रगटित कीन्हे । मोहगर्व आदिक रचिदीन्हे ॥ बिरचे असुर हिरण्याक्षादिक । बिप्रचित्ति शुचि प्रभृति प्रमादिक ॥ तेसबधर्म अतिक्रम करिकै । बिहरन लगे पराक्रम भरिकै ॥ ऋषिमुनि प्रजन सतावनलागे । देवाधिपहि दबावन लागे ॥ भरेदर्प नहिं सतपथ बूझैं । सुरगणते उमदाय अरूझैं ॥ सोबिलोकि बेधागुणि मनमें । गेहिमवत गिरिपैऋषि गनमें ॥ उन्नत शृंगतरुणते छाजित । जलफल फूल बिशेषबि-राजित ॥ तहांऋषिनसह राजित ह्वैकै । कीन्हे यज्ञयुगुतिज-तिज्वैकै॥ तहांहजारबर्ष जबबीतो । यज्ञअनल तबअद्भुतथीतो ॥ भोतहँबिमल अग्निते प्रगटित । नीलोत्पल छबि छटाअरगटि-त ॥ तीक्षण बदन कृशोदर भीमा । छोटोगात बिभात अधीमा ॥ मास निशासम अशनिसमाना । तेजपुंज जग जैन अमाना ॥ दोहा ॥ ताकेउत्पाति होतभो भूमिकम्प तेहिकाल । तरुसीदनउ-ल्कापतन सिंधु क्षुभित दिशिलाल ॥ तेहिक्षण ऋषिगणसोंकहे बेधाआनँद देत । प्रगट कियोअसिनाम यह असुर बिनाशनहे-त ॥ इतोकहत बिधिकेसुनो वहस्वरूपतजितौन । तीक्षणतनह्वै लसतभो रूपप्रगट अबजौन ॥ तोमर ॥ निजपाणिमाधि सोआनि। अनुमानि हियमेंठानि ॥ बिधिदिये शिवके पानि । अति प्रबल

प्रभु अनुमानि ॥ गहिअमल असिअति रूप । प्रभुरुद्र अनघ अनूप ॥ करिचारि भुजअति ऊर्द्ध । दिनमणिहिं पर शरमूर्द्ध ॥ करिबंकचख भ्रूभाल । अतिसृजत चखतेज्वाल ॥ बहुमार्गाचिर-चिसनेम । भेचरतगहि रणप्रेम ॥ कियेघोरधुनि ह्वैचण्ड । गुणि खलन दीबो दण्ड ॥ प्रभु शूलधर तेहिकाल । भे काल सरिस कराल ॥ दोहा ॥ सुनीरौद्रता रुद्रकी दानवकुल भटसर्व । चलि निजथरते जायतहँ लड़नलगे गहिगर्व ॥ गदा शक्ति पाषाण शर पट्टिश भल्ल अनेक । डारनलागे रुद्रपहँ गहि गिरिटारन टेक ॥ चौपाई ॥ गहिअस्थान भेदविधिचरिकै । प्रभु असिपाणि चपलता धरिकै ॥ सबअसुरनके आयुध काटत । जूटिसबनसों सबकहँ डाटत ॥ काटत अगणित कर पग शीशा । लखि अ-सुरनको धीरज खीशा ॥ एक शिवहि अगणित करि जाने । काल कराल सरिस अनुमाने ॥ सबकहँ बधनचहतहैं क्षनमें । गुणिहत शेषभरे भयमनमें ॥ नहिं थिरिसके भगे तजिधीरज । बिप्रचित्ति आदिक जे बीरज ॥ कितने गये रसातल माहीं । किते दिगन्त न थीये नाहीं ॥ किते गगनमधि इत उत धाये । किते कन्दरन दुरि दुखपाये ॥ शंभु असंख्यन असुरनहतिकै । रुण्ड मुण्ड मय धरणी अतिकै ॥ रणमहि त्यागि रौद्रता तजि कै । शिवस्वरूपभे सुखमासजिकै ॥ सोलखि सुर ऋषि आनँद लीन्हे । महादेवको पूजन कीन्हे ॥ तबशिवसो असि विष्णुहि दैकै । गेकैलास बिजययश लैकै ॥ बिष्णुमरीचहि दीन्हेंसोई । दिये मरीच इन्द्र कहँ जोई ॥ दिये लोकपालहि सुरनायक । लोकपाल मनुकहँ गुणदायक ॥ असिदैकहे नीति करिलालन । यहि गहिकरो प्रजापति पालन ॥ दिह्यहुदण्ड अधरम करता-रण । हरेहु भूमिधन धरि असि धारण ॥ दोहा ॥ मनु निजसुत क्षुपकहँदये क्षुपतेलहे इक्ष्वाकु । तासोंआयू आयुते लहे नहुष भरताकु ॥ तासोंलहे ययाति फिरि तासोंपुरमहिरौन । यहिप्रकार

नृपवंशमें रही बहुतदिन तौन ॥ लहेताहि ऋषिदइके फिरिली-न्हे भारद्वाज । लहेद्रोण फिरि कृपलहे तासु प्रयोग समाज ॥ अब पाण्डव असिको सुनो आठ सुनाम रहस्य । असि बिष सम अरु खड्ग अरु नामदुरासदतस्य ॥ तीक्ष्णधार श्रीगर्व अरु धर्मपाल अभिराम । विजयसुनो माद्रीतनय ये बसु असिके नाम ॥ सोरठा ॥ ये बसु असिके नाम जे नितपढ़िहैं पूजि अ-सि । तेक्षत्री बलधाम जयकीरति लहिहैं सदा ॥

इतिश्रीशान्तिपर्वणिआपद्धर्मेखड्गोत्पत्तिर्नामनवमोऽध्यायः ९॥

वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ इमिवार्त्ताकहिजबरहे मौनभीष्म मतिखानि । तबभाषे नृपधर्मते बिदुर धर्म अनुमानि ॥ दया यज्ञ श्रद्धा क्षमा सत्य क्रिया अरु दान । बहु श्रुत सुधरम शील ये आत्म सम्पदाथान ॥ धर्म मूल कल्याणको सबकहँ बर्द्धतधर्म । धर्मवान सुकरम करत धर्मदेत पदपर्म ॥ अर्जुनउवाच ॥ बचन बिदुरके सुनिकहे अर्जुन बचन प्रशस्त । कर्म भूमि यहभूमिपति इतकढ़ि बढ़त समस्त ॥ कृषीबणिज गोरक्षण अरु शिल्पादि अखिन्न । येसबहीके अर्थहैं नहींकर्मते भिन्न ॥ अर्थवान बिषयी सुबुधि साधत सदा सुधर्म । धर्मकाम ये अर्थके अबधे किये सुकर्म ॥ तजिहियते सुख दुख ग्रहण त्यागि खुलाशा जौन । अर्थ धर्म कामादिमहँ चरत कितेमतिभौन ॥ अर्थ धर्म अरु कामकहँ त्यागिकिते मतिमान । सोअहेतबन गिरिगहन चिन्तत ते सुखदान ॥ जालिबर्णके कर्मरत कितेतकत नाहिं और । किते चहत केवल अरथ गुणत न ठौर कुठौर ॥ कितेहोत आस्तीक अरु कितेहोत नास्तीक । करतकर्मजो जौनसो भोगत नीक अनीक ॥ नकुलउवाच ॥ चलतसुपथ बैठे खरे करत उचित जेकर्म । अर्थयोग्य साधन करबहै गृहस्थकोधर्म ॥ सहदेवउवाच ॥ अर्थध-र्मसों युक्तजहँ धर्म अर्थते युक्त । तेमधु मिश्री मिलितसम देत स्वाद सुखउक्त ॥ भीमसेनउवाच ॥ भूपति काम विशेषहै सबसाधत

निजकाम । ऋषिसाधत तप कामवश शास्त्रपढ़त द्विजनाम ॥ गोरक्षण वाणिज्य अरु कृषीआदि व्यापार । यज्ञदान आदिक क्रिया कामसिद्धि उपचार ॥ कितेकाल लगि उदधिमें धसतकिते बनशैल । परअधीन कितने रहत कितेचलत नितिगैल ॥ अर्थ धर्मते कामकहँ साधतहैं मतिमान । जिमि पयते नवनीत घृत काढ़त सहित विधान ॥ श्रेष्ठतेल तिलतेसुना दधिते घृत अभिराम । श्रेय पुष्प फल काठते अर्थ धर्मतेकाम ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ सुनिगुणि बन्धुनके बचनकहे युधिष्ठिरभूप । होतुमसब मतिमान अति जानत यतन अनूप ॥ धर्मशास्त्रमत तुमकहे सुनो तत्त्व सुखदान । लोह कनकसम भावजेहि सोनर अति मतिमान ॥ पाप पुण्य सुख दुखजिते अर्थ धर्म अरु काम । एकोमें रतिजासु नाहिं सोज्ञानी अभिराम ॥ खंजा ॥ कर्त्ताआपुहि गुनत न कबहूँ गुनत सदा यहभेव । चरत चरावत जिमिहृदिस्थ प्रभुजो निति न्यामकदेव ॥ सुनि ऐसे सुबचन भूपतिके बन्धुनकिये प्रणाम । क्षण रहिमौन भूप भीषमते किये प्रश्नअभिराम ॥ दोहा ॥ मित्रद्रोही दुष्ट जोहोत कृतघ्नीजौन।तिनकी वार्त्ताअबकहौ जेहि निन्दत मतिभौन ॥भीष्मउवाच॥ अत्रपूर्व इतिहासहम कहतसुनो नृप तौन । उत्तर दिशिमहँ विप्रशठ कियो दुष्टता जौन ॥ रोला ॥ मध्यदेशी रहोकोऊ विप्र विद्याहीन । बहुकुटुम्बी रहो सो फिरि भयो धनतेहीन ॥ गेह ताजिकै विप्रसो कढ़िगयो उत्तर ओर । निकट गिरिके ग्रामपायो बसतहैं तहँचोर ॥ चोरपतिमतिमान अतिहो जानि द्विजहि कुलीन । बसन भोजन दियो त्यहि दै सदनचारुनवीन ॥ बांधिभिक्षा बार्षकी तेहिराखि सुबचनभाषि । दियेप्रोषित मत्रिका त्रिय सुभगसुत अभिलाषि ॥ पायभोजन बसन गृहतिय विप्र गौतम मोदि । लगोतहँ वसि दिवस बितवन तरुणिसंग बिनोदि ॥ बाणविधि शिखिलगो बनमें चरनलै धनुबान । लगोमारनमृगा तस्कर संगतिन्हहिं समान ॥ बहुत

दिन तहँकियो हिंसा निवसि तस्करसंग । एकदिन तेहि ग्राम आयो विप्रबुद्धि सुढंग ॥ देखि सबगृह त्यागि गौतम बिप्र को गृहदेखि । प्रविशि भीतर भयो ठाढ़ो बिप्रको गृहरेखि ॥ इते में चक्रांगपक्षी मारिलीन्हे तत्र । भयो आवत बिप्र गौतम भये उभय एकत्र ॥ रुधिरसों सबगात पूरित लिये धनुषा बाण । मृतकपक्षी धरेकांधे बनि किरात समान ॥ देखिताकहँ बिप्रतपसीकह्यो सुबचनमर्म । मोहबश परि गहि कुसंगति करतकौन कुकर्म ॥ वेद शास्त्र सुभाव श्रुति निजबंशको गुणितौन । त्यागि कै यह वृत्ति गह्युद्विज वृत्ति जाहिरजौन ॥ बिप्रको सुनि बचन गौतम कहतभो समुझाय । क्षीणधनहम हीनबिद्या बसे यहि थरआय ॥ आपु यहिनिशि रहोइत हम चलब तुवसँगभोर । रातिबासि द्विजभोर त्यहिलै चलो उत्तर ओर ॥ गयेकहुँ अति बिपिन मधिकढ़ि दैवबश तहँआय । बध्योतपसी द्विजहिगहि कै मत्तमैगलधाय ॥ देखि गौतम बिकलभाग्यो जाइउत्तरकोद । लख्यो गिरिढिग बिपिन जहँबसि बिहँग करतबिनोद ॥ पनस तालतमाल साल रसाल आदिउतंग । फलेफूले वृक्षफूलेमधुप अद्भुतरंग ॥ दिव्यथल अवलोकि सो तहँ बसो गौतम जाय । होत संध्या तहां आयो बिहँग अनुपमकाय ॥ देवकन्या पुत्र सेबकराज अति मतिमान । नामनाड़ी जंघ कश्यपको सुवनसुखदान ॥ सखा बिधिको तासुदूजो राजधर्म सुनाम । होतसंध्या तौनपक्षी राजसुखमा धाम ॥ आइकैनिज आश्रममेंदयो परमा पूरि । निरखि ताकहँ बिप्र हियमें गह्यो बिस्मय भूरि ॥ मणिन के आभरण भूषित राजधर्म सधर्म । देखिबिप्रहिकह्यो सुबचन देत आनँद पर्म ॥ बिप्र आइ सुआश्रम मम किये पावनरूप । हमाहिं तुम सत्कार करिबो उचित धर्म अनूप ॥ भाषि इमि सुरसरिततेते पाठीन पीन मँगाइ । अग्नि में परिपाककरिकै दियो द्विजहि सचाइ ॥अशनबास कराय बिप्रहि पासबैठि स-

प्रेम। भयो बूझत बिप्रको द्विज नामगोत्र सनेम ॥ नामगोत्र बताय अपनो कह्यो बिप्र अधीर। हमदरिद्रीद्रव्य अर्थी जात सागरतीर॥ बिप्रके सुनिबचनबोलो पक्षिपति मुदमौन। चारि बिधिको होतधनसो कहत सुनियेतौन॥ परंपरिक सुपूर्व कर्मज काम्य मैत्र महान। मित्रममतहँ जायलेहु सुमैत्रधनसुखदान॥ तीनि योजन इहांतेहै मेरुब्रज वरग्राम। तहां राक्षसराज रहत विरूप अच्छ सुनाम॥ मित्रममसो जाहुतहँतुम लेहुधन मन मान। सुनत द्विजकेबचन द्विजतहँचलो पुलकितप्रान॥ खात पथमें सुफल निरखत बिपिन शोभावेश। लख्यो राक्षसराज को पुरद्वार अनुपमदेश॥ जानि सो वृत्तान्त राक्षसराज करि अनुमान। भृत्यभेजि बोलाय बिप्रहि पूजि दीन्होंमान॥ दोहा॥ पूजि सबिधिफिरि कहतभो बिप्र बसत केहिदेश। पठै कहाको तवतिया कहिये क्रियाबिशेश॥ बिप्र कह्यो हम बसत हैं मध्य देशमें भूप। हैंद्विजगोतम गोत्रहम जोजग प्रगट अनूप॥ हम अभाग्यबश नहिंपढ़े गहेन क्रियासुवेश। तिया लहेहैं शूद्रिनी सत्य सुनो दनुजेश॥ सुनि राक्षसपति गुणतभो श्रेष्ठगोत्रकुल मात्र। निर्विद्या शूद्री रमण यह द्विज महा कुपात्र॥ दान पात्र तौहै नहीं पै भेज्यो मम मित्र। अवशि याहि दीबोपरयो मित्र प्रभाव बिचित्र॥ चौपाई॥ मित्रसाधुनाहिं यहिलखिलीन्हों। यह कुत्सितकर्मी हम चीन्हों॥ इमिगुणि सावधानता गहिकै। भोर कार्त्तिकी पूनोलहिकै॥ मणि माणिकको ढेर लगायो। सादर अगणित द्विजन बोलायो॥ पूजिकह्यो उमगाइ सनेहू। जासों जौनचलै सो लेहू॥ इतनो सुनत बिप्रसबहरषे। युग हाथन मणि माणिक करषे॥ बसनपसारि मोटरी बांधे। चले बिदा कै धरि धरिकांधे॥ तेहिक्षण बोलो राक्षसराजा। बेगि जाहु कढ़ि विप्र समाजा॥ भोर जाय राक्षस ढिगपैहै। बिनुबिचारताकहँ धरिखैहै॥ सुनिब्राह्मण अतिपायल डगरे। नांघिराक्षसी सीवा

अगरे ॥ गौतम बिप्र मोटलै मनिको । आयो बिहँगपास बनि धनिको ॥ देखिसधन तेहिखगपति मोदो । सादर ढिग बैठाय बिनोदो ॥ फल मँगाय भोजन करवायो । निजसमीप आसन धरवायो ॥ करत वार्त्ता प्रेमसमोयो । निद्रितह्वै पक्षीपति सोयो ॥ सोइगयो पक्षीपति जबहीं । सोशठबिप्र बिचारयो तबहीं ॥ होइ-हिभोरदूरि पथचलिबो । मगमें कहूं न जनपथ हलिबो ॥ नहिं अहार कछुपाइब मगमें । मोटोमोट लहब दुखअगमें ॥ दोहा ॥
इबिधि चिन्तिसो बिप्रशठ फिरिइमि गुन्यो बिचारि । मांसराशि ममढिगपरो पक्षीपति तेहि मारि ॥ याहीक्षणलै भगिचलैं मगमें करब अहार । इमिबिचारि उठि बिहँगपति कोकीन्हों संहार ॥ रोमपक्ष सबकरि जुदो चलो कन्धधरि ताहि । दुष्टकृतघ्नी बिप्र वह करि कुकर्म मलचाहि ॥ चौपाई ॥ उतैभोर राक्षसपति जागो। खगपतिके छोहन अनुरागो ॥ निजसुपुत्रकहँ निकटबुलाई । क-हतभयो इमिमोह बढ़ाई ॥ मोकहँ जानिपरत यहिनिशिमें । भयो अनर्थ मित्रकी दिशिमें ॥ होवह ब्राह्मण शूद्राचारी । अतिमू-रखअर्थी अबिचारी ॥ मित्रबिहँगपति साधुमहाना । तासुदोष गुणनाहिं पहिचाना ॥ करिबिश्वास निकटतेहि राख्यो । सोअर्थी अनरथ अभिलाख्यो ॥ तातेतहां जाहुतुम आसू । देखिखबरि लैआवहु तासू ॥ सुनतहि सोअनुचर सहधायो । खगपतिबसत रहो तहँआयो ॥ तहांन राजधर्म कहँदेख्यो । रोमपक्ष लखिकैअ-तितेख्यो ॥ जान्यो राजधर्म कहँबधिकै । गयोबिप्रलै मांससरधि कै ॥ दियो अनुचरन कहँअनुशासन । धायधरो बिप्रहि करिआ सन॥सुनत अनगिने अनुचर धाये । बिप्रकृतघ्निहिं धरिलै आ ये ॥ शिरमणिमोटकांधपर पक्षी । ल्याये ईंचि असुरपतिपक्षी ॥ तिमिलैअसुराधिप पहँ आये । लखि कौणपपति अतिदुख पा-ये ॥ मित्रबिहँगपतिको तनलैकै।रुदनाकियोअतिकरुणाकरिकै॥ कश्यपतनय सुरभि तेजायो। तेहिबधिगात कृतघ्नी खायो॥ दोहा॥

पाल । सोई सब परितापको आपत करत बिशाल ॥ तजिदेजो जो कामना सोसो देनिश्चनन्द । कामहिं पीछे नशात जन जौन समान नरेन्द्र ॥ जौन कामनाको शरम लोकमाहिं यहि सर्व । स्वर्ग माहिं अरु आहिको जोहै शर्म अखर्व ॥ पै तृष्णाक्षयते परम होतशरमहै जौन । षोड़शांश सम तासुये होत नहीं बुधि भौन ॥ जैसे पूरबदेह कृत कर्म अशुभ शुभ भूप । तैसे भोगत भीरु भट सुखदुखसङ्ग अनूप ॥ चन्द्रायणवृत्त ॥ जीवनदै सुखऔदुख निनहीं । किमन प्रकाश कियेहैं आनिहीं ॥ यह गुणिकै बुध जन हिय माहीं । बैठे रहत सुचित्त सदाहीं ॥ दोहा ॥ सब कामन के वृन्दको निन्दि निन्दते सर्व । करतपीठि पीछेपरम दुःखदजानि अखर्व ॥ देहिन में यह कामजो जानहु सोई क्रोध । देहि होत जिमिदुग्धको जानतजानमबोध ॥ लेशकेलि सबकामजबजिमि कूरम तन स्वक्ष । आतमज्योति तबहोतहै आपुहिमाहिं प्रतक्ष ॥ डरैआपु काहूनसों अरु न आपुसों कोय । ऐसी बिधि सेतीरहै कामादिक को गोय ॥ भुजंगप्रयात ॥ नराखे बिरोधै न कामैहिराखै । कबौंहू नहींझूठ औसांच भाखै ॥ सबै छोड़िदे शोक आनन्द थोके । तजैप्रीय अप्रीय इन्द्रीय रोकै ॥ जबै सर्वप्राणीनमें पाप भावे । करैकी कबौंहूं मनो मैं न लावै ॥ तबै जातहै होयजूब्रह्म प्रानी । निसन्देह मानोकहैं ब्रह्मज्ञानी ॥ दोहा ॥ कुबुद्धीनसोंजाति है छोड़ि दुःखसों जौन । वृद्धहोत जिमिमनुज तिहिहोतिसुपौढ़ी तौन ॥ महारोग प्राणांतजो तृष्णा ऐसीभूरि । ताहितजसोंरहत जन महत मोदसों पूरि ॥ रामगीती ॥ बरकही गणिका पिंगलाकी कथाएक अनूप । मैं कहतयहि परसंगहीमें तौनतोको भूप ॥ सुनि पिंगला अतिकष्टवारो भयेप्रापतकाल । शुभसनातन धर्म को सोभई लहति बिशाल ॥ नृप अर्थ रहिता भयेते संकेत में बिनपीय । गतकष्टमेंह्वैकै अनन्तर शांतिमति गहिहीय ॥ गुणि पिंगला जो कह्यो सो मैं कहतहौं सुनुभूप । हियरमण अति

रेत को । यहि जगतीके बीच लखे मैं केतिको ॥ हरिगीती ॥अति अहंबुद्धिज क्लेश जो लोकर्षिकरिकै प्रेमसों । उत्पत्ति मृत्युहि चक्रमाहीं रहित करि कै क्षेमसों ॥ इहिभांति पेरत तिलन को जिमि तैलकार नृपालहे । यहकह्यो मैं तिहिमाहिं करु थिरिचलहि मनहिं बिशालहे ॥ सुवनादिपोषण अर्थमानव करतजौन कुकानहे। दुहुँलोकमाहीं सोयपावत क्लेशको अतिमामहे ॥ शुक्र पंक सागर माहिं परि सुवनादिमें रत जौनहैं । दुखलहतहैंइमि बिपिनको जिमि वृद्ध मैंगलतौनहैं ॥ सोरठा ॥ सुतवित ज्ञातिसुबीर नष्टभये ते अज्ञते । अतिही पावतपीर हायहाय करिरुदन बहु ॥ दोहा ॥ सुखदुख अरुउत्पत्ति अरुनाश भूप ये सर्व । भाग्यहिके आधीनहैं निश्चयजानु अखर्व ॥ जेजनहैं बहुशत्रुअरु जेजन हैं बहुमित्र । अरु जेहैं सहअज्ञअरु जेसहप्रज्ञ पवित्र॥ आभीर ॥ भाग्यहिते ते सर्व । दुखसुख लहत अखर्व ॥ दुखसुख दीबेमाहिं । कोऊ समरथ नाहिं ॥ दोहा ॥ धनसुखकारकहै नहीं बुद्धि द्रव्य भूपाल । यामें संशयहैनहीं भनत बुद्धि सु बिशाल॥ तोमर ॥ नाहिं लाभ होत महान । बर बुद्धिसों बुधिमान ॥ अरु मूर्खता करि होत । नहिं हानि है बुधि पोत ॥ सब भोग्य बस्तु सुजान । तिनको सु जो निर्मान ॥ तिहि माहिं निश्चय जौन । बरप्रज्ञ जानत तौन ॥ बलवान औ बलहीन । अरु शूरभीरु प्रवीन ॥ जड़मूढ़ पण्डित जौन । तिनमाहिं हैबुधिभौन॥ दोहा ॥ सुखभागी हैं जौनजन ते सुखलहत महान । दुखभागी हैं जौन जन ते दुख लहत सुजान ॥ बछरास्वामी गोपअरु लोभीचोर अखर्व । यक सुरभी को कहत ये अपनी अपनीसर्व ॥ पै इन सबहिन माहिं जोपावत दुग्धप्रवीन । सुरभी ताहीकीगुणौऔरै काहू कीन ॥ ऐसेहि माता कहतिसुत अपनोकरिकैप्यार । पिता कहत अपनोसुवन करिकै प्रीतिअपार ॥ भगिनीअपनोकहति है भाई करि अति प्रेम । इमि कुटुम्बके और सब अपनोकहत

सहेम ॥ सोरठा ॥ पै इनसबमें जौन तासों जोमुदलहतहै । ताही को बुधिभौन जानो वह नहिं अन्यको ॥ दोहा ॥ ब्रह्मज्ञान को प्रातभे जे निश्चय करि पर्म । अरु जे मानत मूढ़अति जगके माहिं सुकर्म ॥ तेई अति आनन्द को प्राप्तहोत भूपाल । और दुःखको लहतहैं कहत सुप्रज्ञ बिशाल ॥ ब्रह्मज्ञान में रमत हैं मन थिर करिकै जौन । अरु सुषुप्ति में रमत जे अन्तर मति नहिंतौन॥प्रापति ज्ञान सुषुप्तिकी ताहि कहत आनन्द । अन्तर इनदोऊनको ताहि कहत बुधवन्द॥परम ज्ञानके मोदको सुनोलहत है जौन । काहूसों नहिं ईर्षा करत तौन बुधि भौन ॥ अर्थ अनर्थ न देतहै तिनको श्रेय अश्रेय । महत प्रज्ञते कहतहैंमनहिं ज्ञानमें देय ॥ प्राप्तभये नहिं ज्ञानको तजै मूढ़ता जौन । अतिहि मोद सन्तापको प्राप्तहोत जनतौन ॥ अरिल ॥ तिनहीं रहत मूढ़हैं मुदमय । ज्योंसुरलोक माहिं सुरकेचय ॥ महतगर्ब सोलहत अनादर । तबहूं ज्ञान गहतनहिंसादर ॥ तोमर ॥ नाहिं मूढ़ हैं जनजौन । रतज्ञान में बर तौन ॥ मन नित्यराखतभूप। सुखदाय जानि अनूप ॥ दोहा ॥ सुखको देखि दुखान्तअरु दुख को देखि सुखान्त । प्राप्तहोनको ज्ञानवर साधन करै नितान्त॥ बसति विभूति सुदक्षमें श्रियसमेत मतिऐन । निश्चय जानहु भूपवर बसति आलसी मैन ॥ प्राप्त जौन हैं दुःखसुख अप्रिय प्रियभूपाल । तिनसबहिनको भोगिये धीरज धारिबिशाल ॥ सह सन लक्षण शोकअरु साध्वसके हैं गेह । तिनकोप्रापत होतहै मूढ़नहीं बुधिगेह ॥ अरिल ॥ ज्ञानवान वेदज्ञ सुमति मत । अनसूयक अरु इन्द्रिय चित जित ॥ जे जन हैं तेजनकबहूंनहिं । प्राप्त होत हैं शोक थोक माहिं ॥ दोहा ॥ बरबुधजन यह जानिकै कामादिक जेसर्ब । तिनसों मनको गुप्तकरिचलत नरेशअखर्ब॥ जिहि कारणते होय दुख शोकताप श्रम भूरि । सोअँग में जो होयतौ अंगहु कीजैदूरि ॥ ममतासों कल्पितकछू बस्तुहोय भू-

युधिष्ठिरउवाच ॥ जयकरी ॥ धनके नष्ट भये अरु पूत । पित अरुदार मरे अनकूत ॥ होतशोकजो जासोंदूरि । सोगति कहोकृपाकरि भूरि ॥ भीष्मउवाच ॥ नष्टभये तेधनअरुदार । पिता पुत्र के मरे अपार ॥ दुख बिचारमैं जगको सर्व । जानि अनित्य सुप्रक्षअ-खर्व ॥ हरण शोककी करै उपाय । चिन्ता चितकीसर्व बिहाय॥ यह जो प्रश्न कियो तुमजौन । ताके माहिं तातवुधिभौन ॥ यक इतिहास कहतहौं आम । वर प्राचीन ज्ञानको धाम ॥ एकहो भूपसेन जित नाम । कष्टित पुत्र शोकसों माम ॥ ताको मिल्यो एक वरविप्र । सुहृद दूरि कर शुकसों क्षिप्र ॥ दोहा ॥ पुत्रशोक सों लखिभयो बिकल औ अतिक्षीण । जानि मूढ़मन भूप के ऐसे कह्यो प्रवीण ॥ करिल ॥ कातू शोच करतहै भूपति । हैतू मूढ़ शोच्यतो तुहिअति ॥ तुमकोशोच करत लखि हैं डरि । बान्ध-वादि सब तब शोचैं करि ॥ रामगीती ॥ सुनु आत्मा तोमो सबै औ देह इन्द्रिय जौन । सब जहांसो आगमन कीन्हों तहींजैहैं तौन ॥ यह जानिकै तुमगहौधरिज धारि तजिकै शोक । सुख हेतुहै तुमबसोयातें ज्ञानवारेओक॥ सेनजितउवाच ॥ बरकौनसीवह बुद्धि है अरु कौनसो तपविप्र । अरु कौनसो है ज्ञान उत्तम कहो हमको क्षिप्र ॥ श्रुतिभई तुमको कौनसी है प्राप्त है द्विज-राज । कबहूं न तुमको व्याप्त तासों शोकथोक दराज ॥ ब्राह्मण उवाच ॥ तुम अहो भूपति लखो सबसंसार मेंजे भूत । हैं किते उत्तम किते मध्यम किते अधम अकूत ॥ फलकर्मको सोदुःख करिकै युक्त है भूपाल । निजहृदय स्वच्छ सुठौरमें यहकैबिचार बिशाल ॥ हैकर्मदाता दुःख सुखको करत शोक नहर्ष । एक औरो मैं कहत कारण सुनहुनृप उत्कर्ष ॥ दोहा ॥ यहजो आत्मा सो नहीं है मेरो सुनुभूप । अच्युतको आभास है सोही नित्य अनूप ॥ आत्माही जो मोनही तौ पृथ्वी सुतदार । कैसे अपने जानिकै तिनसों करत पियार ॥ आत्मामें जौ तौ सबै मैंही हौं

भूपाल । ज्योंममत्योंहीं अन्यको जानोसत्य बिशाल ॥ ऐसीमति प्रापतभये हमको शुक औ हर्ष । होत न कबहूं सेनाजित सुनो भूपउतकर्ष ॥ सवैया ॥ जिमिद्वैकाष्ठ सुबहतबहत मिलिजातसमुद में । कछूदूरि मिलि बहत फेरि परि लहरि बिहद में ॥ भिन्नभिन्न ह्वै जात तिमिहिहैं भूतसमागम । ऐसेहि पुत्रपउत्र ज्ञातिबान्धव जानो तुम ॥ दोहा ॥ तिनसों नेह न कीजिये सुनुहु भूपमो बैन । पुत्रादिक जेते सबैध्रुव दुःखहि के ऐन ॥ सोरठा ॥ रह्यो पुत्र तव जौन अच्युतते आयो हुतो । तहहिं गयो पुनितौन शोच करत तू क्यों नृपति ॥ तेहि न जानतजौन रह्योपुत्रहो भूपतव । अरु जानत बुधिभौन तुहूंताहि क्यों करतशुक ॥ दोहा ॥ शोच करत है कौनको पूछतहौं मैं तोहि । अच्युत के आभास को कीशरीर को जोहि ॥ शोच करत है देहको तो सुनु जड़ है देह । काष्ठादिकहूको करो शोच परम करिनेह ॥ अच्युतके आभास को शोचकरत जो भूप । तौसुनु अच्युत एकहै होयरह्यो जग रूप ॥ रामगीती ॥ दुखहोत तृष्णा नाशतेहै भये दुखको नाश । सुखहोतहै पुनि दुखहु पछिकरत दुःखप्रकाश ॥ दुखके अनन्तर होतसुखहै होतपुनि दुखबक्र । सुख दुःख दोऊ मानुषनके फिरत इमि जिमि चक्र ॥ याहि हेतुते दुखभयो तुमको सुख अनन्तर भूप । सुखहोयगो जूतुम्हैं प्रापत फेरि परम अनूप ॥ जन लहत हैं नहिं नित्य आनँद लहत नित्य न दन्द । सुख दुःख कोयह में शरीरहि धाम भूप बिलन्द ॥ सुनु जौन जौन सुदेह करिकै करत देही काम । निश्चयहि भोगत तौन तौन शरीरही सों आम ॥ नृपहोतहै उत्पन्नसंगहिअल्प थूल शरीर । करि बिबिध रूप प्रकाश संगहि रहत जगमें धीर ॥ सोरठा ॥ संगहि होत बिनाश अल्पस्थूल शरीरको । जिनके ज्ञानप्रकाश भयो तौन जानत मनुज ॥ प्लवंगम ॥ सुवनादिक के नेह रज्जुसों जौनहै । बन्धु रहत जन अकृतारथहि तौनहै ॥ नष्ट जातह्वै इमिजिमि सेतसु-

ब्राह्मण तौन । अन्तकाल रौरवलह्यो लहत कृतघ्नी जौन ।
पूर्व कृतघ्नीको कह्यो नारद यह उपखान । नृप हमसो तुमसे
कह्यो ऐसो दुष्ट न आन ॥ सबपापिनते सरिसहै मित्रन द्रोही
दुष्ट । मित्रद्रोहीते न विधि देइ मित्रता पुष्ट ॥ सोरठा ॥ मर्य्यादा
को धाम मित्रमिलै विधि देइतिमि । सुग्रीवहि जिमि राम मिले
पारथहि कृष्ण जिमि ॥ वैशंपायनउवाच ॥ यहिविधि आपद धर्म
भूपतिते भीषम कहे । सुमिरि व्यासपद मर्म नृपसो हम तुमसों
कहे ॥ पाइकृपा अनुकूल सीतापति रघुनाथकी । सरस सम्पदा
मूल बर्णे आपद धर्म इमि ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगा
मिनाश्रीवन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथकवीश्वरात्मजेनगोपीना
थेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेशांति
पर्वणिआपद्धर्मेदशमोऽध्यायस्समाप्तः १० ॥

इति शान्तिपर्वआपदधर्म समाप्तः ॥

मुंशीनवलकिशोर (सी,आई,ई) के छापेखाने में छपी ॥

मार्च सन् १८८१ ई० ॥

महाभारतदर्पण ॥

॥ शान्तिपर्व मोक्षधर्मदर्पणः ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ रामगीती ॥ बरराजधर्म बशिष्ठ अतिशुभस्वच्छ आपद्धर्म । सुनि पितामह तुमकह्यो पूरब कृपाकरिकैपर्म ॥ अब कहोजो आश्रमिन कोहै श्रेष्ठधर्म अनूप । हौआपुकहिये योग्य याते कहौ भीषमभूप ॥ भीष्मउवाच ॥ शुभधर्म ज्ञान सुकह्यो सब आश्रमिनमें शुभवेद । मैंकहत तिनको तुम्हैंफलहौं सुनहुतौन अखेद ॥ हैंदेत औरै लोकमें फलधर्म अपनो स्वक्ष । शुभज्ञान सों फल देतएही देहको परतक्ष ॥ नृपभईकैहै शंकतेरेहिये सुनि मोबात । नाहिं धर्मको फल दृष्टिकै है ज्ञानफल बिख्यात ॥ है ब्यर्थ करना धर्मयाते ज्ञानही है सार । यहिलोकमें जोदेतएह देहको फलचार ॥ नृप सुनहु सोशुभ धर्म कीन्हैं कामनाकेहेत । यहि लोकही में धर्महू यह देहको फलदेत ॥ सुनु धर्महैबहुद्वार शंका नेक करिहै तून । बर कहतहैं बुध क्रिया बिफला होति है कबहून ॥ दोहा ॥ कामस्वर्ग पुत्रादिके अरु वेदान्त बिचार इन । बिच जिहिमें होतहै निश्चय जाहिसुढार ॥ तिहिकोही कल्याण कर जानत है वहभूप । समुझत है नहिंअन्यको दायक मोद अनूप ॥ जानततृणकी तुल्यहै जिमिजिमि जगको सर्ब । तिमि तिमि होत बिरागहै प्रापत सुखद अखर्ब ॥ बुद्धिमान सबलोक को जानिदुःख मयभूरि । मोक्षहोनके यत्नकोकरै ज्ञानसों पूरि ॥

यहिबिधि कहिकहि रुदन करि पुत्रहिदियो निदेश। कह्योयाहि बधि खाहिंसब असुर भयानकभेश॥ यहसुनि सबराक्षस कहे जोरि जोरि युगहाथ। मांसकृतघ्नी दुष्टको हम न खाइहैंनाथ॥ तब राक्षसपति कहतभो खण्ड खण्ड करि याहि। देहुकिरातन खाहिं लै मांसबिप्रको चाहि॥ खण्ड खण्ड करिताहि ते दये किरातन आनि। नहिंखाये तेऊ असुर दुष्ट कृतघ्नी जानि॥ चौपाई॥ तबराक्षसपति चितासजायो। चन्दन अगर सुगन्ध धरायो॥ जेतकर्म करिबो अनुमान्यो। यहगति सबदिवबासिन जान्यो॥ सत्यराम राक्षसपति भाख्यो। लैबकपतिहि चितापहँ राख्यो॥ ऊपर तासु सुरभि तेहिक्षनमें। आवतभई छोहकरि मनमें॥ लखि पयाइविनी भईसुमाता। बकपति मुखपय दयो बिधाता॥ पयपरसत बकपतिभो तैसो। सुन्दरगात रह्यो नहिं जैसो॥ तुरित चिताते बाहरआयो। राक्षसपति हँसिअंकलगा- यो॥ तेहिक्षणतहँ अतिआनँद छायो। बकपति नयोजन्म फिरि पायो॥ तेहिक्षण सुरनायक तहँआये। अन्तरिक्ष रहि बचन सुनाये॥ बकपति बिधिकी सभा न जाई। तबबिधि दीन्हेंशाप रिसाई॥ जो बकपति ममसभा म ऐहै। तौखलके करते बधि जैहै॥ शापभाव तेहिबकपति धरते। इमि बधिगयो दुष्टके कर ते॥ जीवतभो अमृतके सींचे। भोहगई सुरभीके ईंचे॥ यहि बिधि गिराइन्द्रकी सुनिकै। बिप्रहि मरोपरो लखि गुनिकै॥ बक पतिकह्यो बिनय अति करिकै। नाथकृपामोपहँ हियधरिकै॥ यह ममसखा बिप्र बधिडारो। तेहिजियाइ ममजन्म सुधारो॥ दोहा॥ बकपतिकी बाणीबिमल सुनिसुरपति सुखपाय। सींचि अमृत ते ब्राह्मणहिं तुरतहिदये जियाय॥ बकपति बिप्रहि लाइउर मिलो प्रेम अधिकाय। मिलोबिप्र चखनत किये कहा कनौड़ी जाय॥ तेहि बिप्रहि मणिमोटसह करिकैबिदा सप्रेम। जायसभा बिधि की बिहँग आदर लह्योसनेम॥ क्रमते शूद्रहिके सदन आयो

आनंदरूप सुविद्यमान अनूप ॥ च्युतहोतनहिं कबहूंन ऐसोकांत जोहैताहि । मैं दयोढपि अज्ञानसों जान्योनहीं अवगाहि ॥ इक थूण है अज्ञान ताकेमाहिं ऐसो आम । यह जो शरीर अगार पार्थिव दुखद अतिहीमाम ॥ मैं नासिकादिक द्वारताके ढांपि देहौंसर्व । उत्पन्नजोभो ज्ञानतासों सुखदपरमअखर्व ॥ हियरमण मुदमय नित्यजो है कांतताको जानि । अबकौन अज्ञज कान्त कान्ता भावको है मानि ॥ अबठगि न सकिहैं मोहिंत्तटसोंनरक-रूपी पर्म । मैं भई ज्ञाता औ अकामा जगतिहौं सहशर्म ॥ वर पूर्वकृतसों किधौं सुरकी कृपाते अभिराम । जौनअर्थ अनर्थ हम को अर्थभोसो माम ॥ अब विषयरहिता ज्ञानरूपा भईहौं अति-स्वक्ष । वशभईं मेरेसर्व इन्द्रिय भये ज्ञान प्रतक्ष ॥ नित सोवते हैं श्रेयसो है रहित आशाजौन । यहि हेतुते नैरास्य जान्यो महा आनँद भौन ॥ दोहा ॥ आशाको तजि पिंगला प्राप्तभये ते ज्ञान । निर्भय ह्वै सोवतिभई आनँद सहित महान ॥ ज्ञानभये ते परमये सुनि सुविप्र के बैन । पुत्रशोकतजि सेनजित होतो भयो सचैन ॥

इतिमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेप्रथमोऽध्यायः १ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ आशाजीति महान करैं सुइच्छामोक्ष की । यहतुम कह्यो सुजान तातपूर्व अध्याय में ॥ दोहा ॥ सुन्यो तौनथिर करि मनहि अबये कारण और । पूछतहौं मैं तौन तुम कहौतात करिगौर ॥ जयकरी ॥ सबकोनाशहोत जिहिमांहि । होत व्यतीत कालको ताहि ॥ कौन श्रेयकर कीजै तौन । कहौ पिता-मह प्रज्ञाभौन ॥ भीष्मउवाच ॥ यहिप्रसंगके माहींभूप । कहतएक इतिहासअनूप ॥ पितापुत्रको तामेंपर्म । हैसंवाद अमन्दसुकर्म ॥ रामगीती ॥ वरएक द्विजहै परम धर्मी वेदपाठी माम । भोहोतताके पुत्रउत्तम महामेधा धाम ॥ अभिधानताको होत मेधावी भयो भूपाल । सोलोक कारजमें हुतो मतिओकदक्ष विशाल ॥ अरु

मोक्षधर्महु माहिंसोहो बिचक्षण अवदात । गुणिभयोपूंछतपिता को इहिभाँतिसों हेतात ॥ पुत्रउवाच ॥ सुनुपितर हेजबअसदसद को होयप्रापतज्ञान । तबकहा करियेकहौमोको आपुप्रज्ञमहान ॥ मैंजानोतिहिको करौंजूआचरणसुनि बिख्यात । निजुमनुष्यनकी आयुजो सोनशतक्षिप्र हितात ॥ पितोवाच ॥ सोरठा ॥ पूंछ्योतुम यह जौन सो अतिउत्तम प्रश्नहै । सुनहुतात बुधिभौन गुणिकेतुमसों कहतहौं ॥ दोहा ॥ ब्रह्मचर्य्य ब्रतकरिसबिधि पढ़ैप्रथमही बेद । करै फेरि पितृकार्य्यको करिकैमनहिअखेद ॥ तदनन्तरइच्छाकरै पुत्र प्राप्तिकी तात । बिधि सों अग्निस्थापिपुनि करैयज्ञअवदात ॥ बसै बिपिन में जायपुनि होयसुमुनि अभिराम । यहि धर्महि को गहतसो लहत मोदहै माम ॥ पुत्रउवाच ॥ सोरठा ॥ ताड़ितहै यह लोक अरुचहुंधासों ग्रसितहै । आयुहरणि बुधिओक जामेंपरति प्रतक्षयह ॥ दोहा ॥ आपु स्वस्थसे ह्वैकहत ह्वैकैमहतसुजान । याते अचरज होतहै मोहिय माहिं महान ॥ पितोवाच ॥ कासों ताड़ित लोकअरु ग्रसित कौनसोंतात । आयुहरणि है कौनतुम कहो मोहिं बिख्यात ॥ पत्रउवाच ॥ ताड़ित है यहमृत्युसों ग्रसित जरासों लोक । आयुहरणि तामें परति निशातात बुधिओक ॥ आभीर ॥ जानतहौ तुम कौन । तात परम बुधि भौन ॥ दोहा ॥ नितही आवति जातिहै आयुहरणि निशि जौन । मृत्युजानिबे में कहा तौ संशय बुधिभौन ॥ सोरठा ॥ आगे करि है धर्म यहि ते किमिइच्छाकरै । यहहेतात सशर्म हमसब छादित प्रकृतिसों ॥ अरिल ॥ सुनो निशाबीतति है जिमि जिमि । आयुष अल्प होति है तिमि तिमि ॥ जादिन नहीं श्रेयकर. कारज । होततौन दिन को बत आरज । निष्फलकहत उदासीसोअति ॥ पलऊलहत न आनँद की गति ॥ प्रापत कामहोत जनकोजब । थोरेजलके मच्छकलौं तब ॥ कोऊसुखको होत प्रापतनाहिं । कहत सुबुध है ज्ञान परमगहि ॥ काम्यकर्म फलजौन बिचारत । शास्त्रदृष्टि

सों होय महारत ॥ काम्य कर्महीं में मनथापत । तिनको मृत्यु होय कै प्रापत ॥ लेयजात ऐसे हैं गहिकरि । जैसे वृकी उरण को धरि करि ॥ दोहा ॥ ताते जू शीघ्रहिकरो श्रेयकारगे काज । खोवोव्यर्थ न कालयह गहिकै ज्ञानदराज ॥ जयकरी ॥ अकृत कार्य्यहींमें सुनुतात । अन्तक प्राणीको लेजात ॥ ताते करनो प्रातःकाल । जोकारजसो करियेहाल ॥ आपराह्णमें कीजैजौन । पूर्वाह्णहिमें कीजैतौन ॥ जनको कियो अनकियो काज । मृत्यु विचारत नहिं बुधराज ॥ दोहा ॥ मृत्युकालकेहै अबहिं किहिको जानतकौन । यातेशीघ्रहि कीजिये धर्म मार्गमें गौन ॥ सोरठा ॥ कियेधर्म अवदात होतिकीर्ति यहिलोकमें । निश्चयजानो तात होतश्रेय परलोकमें ॥ दोहा ॥ पिता मात औभ्रात सुत तिनके पोषण काज । मोहि मोहि पगिकै महत जोजनकरत कुकाज ॥ बरवै ॥ जातमृत्युहै ऐसेलैकै ताहि । व्याघ्र सोवते मृगको जैसे चाहि ॥ जौनकामनासों जनतृप्त न तात । नितहीकरतकुसंग्रह अति हर्षात ॥ जातमृत्यु तिनकोहू लै इमि आय । पंचाननगहि पशुको लै जिमि जाय ॥ इच्छा सुख शक्तहै अरुजन जौन । फलहि कर्मके प्रापत होत न तौन ॥ अरुजे रहत गृहादिकहीं में पागि । पुत्र पौत्रन बारि सुरतिमें लागि ॥ मृत्युजात तिनको हू लै करितात । क्षिप्रहि गुणिकै कहतसबुध अवदात ॥ दोहा ॥ मृत्युबिचारै दुर्बलहि नहिं बलवतहि न अज्ञ । नहिंमूर्खहिनहिं कादरहि नहींशूर नहिं प्रज्ञ ॥ हरिगीतो ॥ हैजरा औबहु व्याधि दुःखअनेक कारणदेहमें । तुमस्वस्थलोंबैठे कहाहौ तात सुनिये गेहमें ॥ दोहा ॥ जराकाल अरु जननको कीवेकाज बिनाश । सोहै आवन लगत है जन्मतहीं बुधिराश ॥ इन दोउनसों युक्तहै जीव चराचर सर्व । यहबिचार हियमेंकरै प्रज्ञावान अखर्व ॥ ग्राम जननकी प्रीतिजो सोहैअन्तक थान । सभासदन आरण्यहै देवनको मतिमान ॥ प्रीतिबन्धनी रज्जुहै ग्रामजनन

की तात । याहिकाटि धर्मातमा मुक्तिलहत अवदात ॥ जोजनहै पापातमा काटिसकत नहिं तौन । प्रीतिरज्जुमेंबँधि खिंचत इत उत दुर्मति भौन ॥ जोजन मन बच कर्मसों हिंसाकरत कबौन । बन्धनमें नहिं परतहैसोजन प्रज्ञा भौन ॥ रामगीती ॥ जोचली आवति मृत्यु वारी चमूबुद्धि अगार । सुनु सकत मारि न ताहि कोऊ कहत करि निर्धार ॥ अति जौन उत्तम ज्ञानसो हनि सकतहै अवदात । बरज्ञान माहीं रहतहै अमरत्व निजुहेतात ॥ जोब्रह्मप्रापति होनको जनकरतहै जप नेम । अरु ब्रह्म माहीं मिलनकी जोक्रियाकरत सप्रेम ॥ श्रुति औ गुरूके बाक्यको हैसत्य मानत जौन । निज सुनहुपितुवर ज्ञानसों अन्तकहि जीतत तौन ॥ अमरत्व मृत्यु सुरहतदोऊ देहहीमें तात । अमरत्व प्रकटै ज्ञानते अरु मृत्युसों मोहात ॥ ह्वैकै अहिंसक सत्यबादी क्रोधतजि अरुकाम । सुख दुःखको समजानि करिकै ज्ञानसों शुचिमाम ॥ निजु छोड़िहौं इमि मृत्युको जिमिदई तजिसुर ज्येष्ठ ॥ इन्द्रियनको सब जीतिहौं ह्वैज्ञान सों मैं श्रेष्ठ ॥ बर मोक्षपथ अभ्यास में नित निरत रहिहौं तात । अरु मनन शील सुहोय के श्रुतिपढ़न में अवदात ॥ नित स्नानादिक क्रिया में निरतह्वैहौं दक्ष । अरु गुरू वारी भक्तिमाहीं सहित प्रीति प्रतक्ष ॥ दोहा ॥ पशुमखमें कैसेकरों सुनहुतात सबिबेक । मोमें अरुपशुमाहिंमें जानत आत्मा एक । आभीर ॥ जाकेहै आधीन । मन औ बाकप्रबीन ॥ योगत्याग तपपर्म । सोजनलहत सशर्म ॥ जयकरी ॥ चक्षुनहींहैज्ञान समान । औन सत्यसम तपस महान ॥ रागसमान दुःखनहिं तात । त्यागसमान आनँद अवदात ॥ करतबिचार नित्य यह प्रज्ञ । कबहुं बिचारतहै नहिंअज्ञ ॥ ब्रह्मरूपकरि ब्रह्महि माहिं । भयो न पितसों मातामाहिं ॥ अरु मैंब्रह्महि माहिं सुजान । ब्रह्म रूपकरिकै सुखमान ॥ ह्वैहौं पुत्ररूपसों नाहिं । निश्चय हे नारीके माहिं ॥ रामगीती ॥ जोबास

निर्जनथानमें औ सबनमें समभाव। आचरणमें अरुजोप्रशंसा योग्यबर बुध राव॥ अरु त्याग हिंसाको महा अरु सत्यभाव अखर्व। बरक्रिया जेतीकरी उत्तम त्याग तिनको सर्व॥ हैवित्त जैसो बिप्रके यह हैनतैसो और। सिद्धांत जानो महत यह तुम कहत हम करि गौर॥ दोहा॥ जोतू मरिहैंतात तौ कहा द्रव्यसों सिद्धि। अरु दारादिकहूनसों कहासिद्धि बुधि निद्धि॥ बुद्धिमाहिं जो प्राप्तहै ब्रह्ममोद मयपर्म। करिकै तासु बिचारको होहुतात सह शर्म॥ चरणाकुलक॥ मेरोअन्तकाल किमि जानो। जो तुम ऐसे मोहिं बखानो॥ तौमैंकहत तुम्हेंहो सुनिये। मेरेबचन हिये में गुनिये॥ दोहा॥ गयेपितामह तबकहां अरुतबपिता सुजान। यहिते जानत तुमहुँ निज मरिहौ गुणहु न आन॥ भीष्मउवाच॥ पिताबचन ये सुवनके सुनिकै बर बुधिगेह। ज्ञानभये करतोभयो मोक्षधामसों नेह॥ सोरठा॥तिमिही कुन्तीनन्द मोक्षधर्मसों नेह करु। गहिकै ज्ञान बिलन्द तजिप्रमादताको परम॥

इतिशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेपितापुत्रसंवादोनामद्वितीयोऽध्यायः २॥

युधिष्ठिरउवाच॥ चरणादोहा॥ युवा अवस्थाहीमें साधनकरै मोक्ष को स्वक्ष। पिता पुत्रके संबादैकहि तुम यहकह्यो प्रतक्ष॥ सो बिन यज्ञन होत है धनबिन होतनयज्ञ। याते निधनी पाय है मोक्षकहौ किमिप्रज्ञ॥ भीष्मउवाच॥ कह्यो मोहिं सम्पाक ऋषि यकइतिहास अनूप। यहिप्रसंगमें कहतहौं सो मैं तुमकोभूप॥ संजुगिता॥ धनहीनसो द्विजपर्महौ। अरु बुद्धिमान सुधर्महौ॥ बरतेजको बहुधामहौ। अरुसत्य मान ललामहौ॥ अति भूषण बस्त्र मलीनसों। दुखयुक्त दारिद पीनसों॥ इमि मोहिंसो द्विज चाहिकै। कहतो भयो अवगाहिकै॥ ब्राह्मणउवाच॥ उत्पन्नजेयहि लोकमें। सुखमाहिं कबहूं शोकमें॥ सब होत प्रापत हैं सुनो। यहि माहिं संशय ना गुनो॥ मतिमानते यह जानिकै। बरबुद्धि सों अनुमानि कै॥ दोहा॥ हर्षित तौ नहिं होतहै प्राप्त होय जो

शर्म । दुखप्रापत जो होय तौ कष्टित होत न पर्म ॥ कामना न तुम करतहौ तऊ मुक्तिपद जौन । ताके सोंहें चलतहौ क्यों न आपु बुधिभौन ॥ गहिसुप्रतिज्ञा सर्वदाधीरज धारिमहान । क्यों न करत बशआपने मनको हे मतिमान ॥ त्यागी जन चहुंधा फिरत महत लेतकल्यान । सुखसों सोवत उठतहैं लहतनभीति सुजान ॥ याते हे गंगासुवन त्याग सोयआनन्द । त्यागहिहैबर मोक्षको मार्ग चारु निर्द्वन्द ॥ यहमारग को लहतहैं योगीजन अवदात । लहत कबहुंभोगी न निजु जानो गंगातात ॥ अरु कामीजन जौनते लहत न पथयह पर्म । यहिमारगमें चलतजे कामीहैंन सशर्म ॥ रहित रागसोंजौन जन तासम और न कोय । परम ज्ञानगहि रहतसोमहामोदसों भोय । त्यागभाव अरुराज को तोलत भो मैं दक्ष । कौनश्रेष्ठ यह जानिबे बुद्धि तुलामेंस्वक्ष ॥ गरू भयो अतिराससों त्यागभाव सों पर्म । मैं निश्चय करिकै कहत गंगासुवन सुकर्म ॥ सोरठा ॥ यतो बिशेष महान त्यागभाव अरुराज्य में । नित क्लेशित धनवान मृत्युबदनगत लौं रहत ॥ चरणादोहा ॥ अग्नि चोर भय मृत्युभय इन्द्रिय पीड़ा जौन । जगतआशधन त्यागिको येसु होत कबहौन ॥ जयकरी ॥ सदा कामचारीहैं जौन । अरुभूसाईंजेबुधिभौन ॥ जाकीशान्ति प्रकृति अति होय । तिन्हैं सराहत हैं सुरजोय ॥ क्रोधलोभसों युतधनवान । नितही रहत सुनो मतिमान ॥ सूखे बदन रहत हैं नित्य । तिनके बोलत रहत असत्य ॥ चलैंबक्र कै तिनके नैन । बसेरहत पापहि के ऐन ॥ अरिल ॥ टेढ़ी भृकुटी नित्यहि राखत । कुत्सित वचन नित्यही भाषत ॥ तिनके पास जात नहिं बुधबर । रहत दूरिही जानि दुष्टतर ॥ दोहा ॥ कमलाऐसे हरति मन मूरखको मतिमान । बारि बाहकोलेतहैं जैसेहरि पव मान ॥ अविचक्षणके चित्तको जब कमला हरिलेत । गहिकैधन कुल रूपको गर्बहि गहत अनेत ॥ गहिकै गर्बहि कहत इमि

मैंहौं महाकुलीन । चाहौं जो मैं सो करौं मैंहौं परमप्रवीन ॥ सोरठा ॥ धनं स्वरूप कुलगर्व प्रापतहोत जब अबुधको । सुनियै अतिहि अखर्व प्रापतहोत प्रमादहै ॥ दोहा ॥ कै मदांधपुरुषान के धनकोकरिकै महान । भये दरिद्री चोरिमहिकरत प्रवृतिअज्ञान ॥ तजि मर्यादको जहँ तहां लेत द्रव्यअज्ञान । पावतखेदसो भूपसों ज्यों मृग बधिकके बान ॥ जयकरी ॥ लहनपीर इमि और अनेक । तऊ न छूटत है अविवेक ॥ यातेध्रुव भावी दुख जौन । दूरि करनके काजेतौन ॥ निन्दितदेह इन्द्रियकोसर्व । करै उपाय सुपर्म अखर्व ॥ त्याग बिनानाहिं कोऊहोत । सुखकोप्राप्त सुनो बुधि पोत ॥ त्यागबिना नाहिं ब्रह्म अनूप । प्रापत होत अनन्द स्वरूप ॥ त्याग बिना नाहिं निर्भय कोय । कबहूं कहूं सकत नाहिं सोय ॥ याते सबही को तुम त्यागि । सुखी होहु मो मतिमेंपागि ॥ सोरठा ॥ जबसों यहइतिहास श्रवणकियो वा विप्र सों । तबसों आनँदरास जानतहौं मैं त्यागको ॥

इतिमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेसंपाकगीतानामतृतीयोऽध्यायः॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ त्यागमोक्षको हेतुहै कहौमोहिंतुमतात ॥ ताकोगुणि निश्चय कियो मैं मनमेंअवदात ॥ सोरठा ॥ यकसंशय मैं और पूछतहौं तुम तौनहू । कहियै करिकैगौर बुद्धिगेह सन्देह हर ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ रामगीती ॥ बरकृषी आदिक द्रव्यप्रापतिहोन की सुउपाय । लागिकरै तिनको तऊकबहूं द्रव्यहाथ न आय ॥ नितरहै तृष्णाद्रव्यकी सो अतिहि पीड़ितजौन । जनकहाकीन्है होय सुखकोप्राप्त भूपति तौन ॥ भीष्मउवाच ॥ बरवादोहा ॥ कर्म माहिंईहा अभाव अरुसबमें भावसमान । अरु द्रव्यार्थ माहीं जोहै आश्रमभाव सुजान ॥ दोहा ॥ सत्य और निर्वेद ये पांचौ जाके होय । सुखीसोय जनरहतहै और सुखी नहिंकोय ॥ चामर ॥ मोक्षके स्थान पञ्चये सुजान मानुहै । शर्मकार भूरिदुःख दूरिकार मानुहे ॥ धर्महै इन्हैं नरेश जे महान प्रज्ञहै । धारिते सकैं

नहीं कबौंहु जौन अज्ञहै ॥ दोहा ॥ कहत एक इतिहासहौं यहि प्रसंगमेंभूप । प्राप्तभये निर्वेदऋषिमंकी कह्योअनूप ॥ रामगीती ॥ वरऋषीमंकी द्रव्यकाजै करै बहुत उपाय । पैहोयसिद्धि न एक पुनि पुनि व्यर्थही ह्वै जाय ॥ जो रह्यो बाकी द्रव्य तासों बत्स लीन्हे दोय । दृढ़ बांधिकरिकै तिन्हैं शिक्षाकाज निकरयोजोय॥ बलवान दोऊ बत्स पथमें ऊंटबैठोदेखि । चकिभये धावतमध्य में कैरह्यो मंकीपेखि ॥ ते भयेप्रापत कंधमें अनशील उष्टरहोय। अतिभयो धावत शीघ्रगति लैबच्छरनको दोय ॥ गरऊंटके में तहां मरते बच्छरनको देखि । इमिकहत भोसो ऋषीमंकीचित्त में अवरेखि ॥ धन जो नहींहै भाग्य में बरदक्षहू को तौन । हम को सुनिश्चयभयो प्रापत होतहै कबहौंन ॥ फलकी सुप्रापति माहिं करिनिश्चय सुभांति अनेक । लगिकर्मकेतेकरो पैहै होत सिद्धि न एक ॥ भो द्रव्यके व्यापार में मोपूर्वहौ परिभाव । करि समाधान सुचित्त को हमकियो फेरि उपाव ॥ अबऊंट औबछ-रानके सम्बन्ध करिकै मोर । हा दैवकृत यह लखौजोभोहै उप-द्रव घोर ॥ हे कहा मेरेबत्स अरु यह कहा उष्टर होय । दैव कृत परसंगसों मोदुओ बत्स उठाय ॥ धावतो है कुपथमाहीं बिषमगाहिकै चाल । बत्समेरे परमप्यारे ऊंटदुखद बिशाल ॥ ऊंटगरमें बत्सझूलत चारुमणिलौ दोय । भाग्यमें जो लिख्यो सोईहोत और न होय ॥ तोटक ॥ पुरुषारथसों धन होत कहैं ॥ जनजे जगमेंवर अज्ञनहैं ॥ धनहोत नहीं पुरुषारथसों । हम जानिलियो मतिकेपथसों॥ दोहा ॥ पुरुषारथसों धनमिलै भाग्य माहिं जोहोय । भाग्यमें न जोहोयतो पैरैनहीं कहुंजोय॥तातेजो बैराग्यहै धारणकीजै ताहि । जोधारत बैराग्यसो सुखसों रहत सदाहि ॥ धन साधनके माहिंमन सोजन लावतहैन। जौनधरत बैराग्यको करतसदाहै चैन ॥ सर्ब कामनासों छुटे श्रीशुकदेव सुजान । महत ब्रह्मज्ञानीहुते धारे मोदमहान ॥ मौनी ॥ तिनयह

भांतिकह्यो है करि सिद्धान्त । जोजनमो सबकामहि प्राप्तनि-तान्त ॥ अरु कामन को त्यागे जो जन सर्व । तिन दोउनमें त्यागी श्रेष्ठ अखर्ब ॥ अन्त सर्व कामनको जोहै ताहि । प्राप्त भयो है कोऊपूरब नाहि ॥ जबलग जीवत मानव मूढ़अखर्व । तबलग बाढ़ति तिनकी इच्छा सर्ब ॥ अरिल ॥ कामी निर्वेद गहु तू अब । निबरत होत कामनासों सब ॥ कितीबार तव भयोअनादर । तऊ वैराग्य चहत नाहिं सादर ॥ अविनाशी मोको जोजानत । मोसह जोतु विहाराहिठानत ॥ तौ मतिलोभ संग मोको करि । कहत वित्तकामुक तो सों अरि ॥ तें संचित धनकीन्हों जबजब । होयगयो है नष्टहि तबतब ॥ धनकामुक कबहूं ज्ञानैगहि । धनेच्छाहि तजिहै की तूनहि ॥ दोहा ॥ मेरोहै मूढ़त्वयह जासों तैं करि ख्याल । राख्योकरिबश आपने मोको दुखद बिशाल ॥ जयकरी ॥ कामवानजो होतो तून । परकाजमाहि करतो को ऊन ॥ पूरब अपरसमयके माहिं । काम अन्तगोकोउ नाहिं ॥ यातेधनउपाय सबत्यागि । मैंप्रतिबुद्धि भयोअबजागि ॥ है तव हियरो बज्रसमान । मैं निश्चयहै कियोमहान ॥ युक्तअ-नर्थ बहुनसों जौन । तउ बनहोत बिदीरण तौन ॥ जैसो तू है तैसो आम । अबहम जानि लयो है काम ॥ बार ॥ और जौन तेरे प्रिय तेऊ हमजाने । जैसो तूतैसे तवप्रियहू सबमाने ॥ तेरे प्रिय जे हैं तिनमाहीं नितिपागे । आतम सुखके नकबौं निकटै हमलागे ॥ जयकरी ॥ मूल तिहारो अबहैआम । जानि लियो है सुनु हे काम ॥ मनसंकल्प करत अवतार । तेरोहै हे दुखद अ-पार ॥ करिहौं संकल्पहि अब नाहिं । जासोंतू नहोय मोमाहिं ॥ धनइच्छासो दुखद महान । लब्ध करेधन चिन्तावान ॥ धनकी प्रापति मृत्यु समान । भूरि दुखदहै कहत सुजान ॥ धनप्रापति हैहै की नाहिं । संशय तासु उपायहि माहिं ॥ लाभ्यहुकीन्हें मि-लत न जौन । तासम दुखद औरहै कौन ॥ लब्धद्रव्यसों तो-

षतनाहिं । धनकीरहैउपायहिमाहिं ॥ धनसोंतृष्णाकार बिशाल । जैसे गंगाको की लाल ॥ नाशयज्ञको जाके माहि । ऐसो द्रव्य दुखदहै ताहि ॥ अबहम जानि लयोहैश्राम । तातेहमैं छोड़िदे काम ॥ मोशरीर आश्रितहै जौन । दारापुत्रादिक सबतौन ॥ बसै जहां मनआवै जाहि । हमसों कछूकामहैनाहि ॥ पितापुत्रअरु पौत्र सुदार । तिनमें है नहिं प्रीति हमार ॥ ताते सबकामनको त्यागि । रहिहौं सत्व सुगुणमें पागि ॥ सर्बभूतमय आतमजौन । हृदय कमलमें लखिकै तौन ॥ चरणाकुलक ॥ मतिको योगमाहिं में धरिकै । श्रुति में चित्त एकाग्रहि करिकै ॥ मनको ब्रह्ममाहिं में धरिहौं । रागद्वेष सबही परिहरिहौं ॥ हरिगीती ॥ सुख सहित मैं करिहौं बिहारहि काम तोकोत्यागिकै । नहिं प्राप्त ह्वैहौं फेरिदुख में कामतामें पागिकै ॥ जो योगमाहीं धरी मेधा तिहि बिना न उपायहे । हे और तोसों छुटनकी हम कहत निजु दुखदायहे ॥ श्रमशोक अरु जो महत तृष्णा तासु तूही धामहै । जेतजत तोको प्राप्तते जनहोत सुखको मामहै ॥ हमको परोअब जानि धन दुखदाय अतिही होतहै । जबनाश ताको लहतहै तबकरत क्लेश उद्योतहै ॥ कमला ॥ धन गहनाहिं जानिकै । चोरबहु आनि-कै ॥ पकरि धनवानिको । बांधिकै पानिको ॥ महत अति मार दै । शिर उपर भारदै ॥ देतबहु क्लेशहै । खैंचिकै केशहै ॥ तोमर ॥ यहि हेतुतेधनमाहिं । मनमैं लगैहौं नाहिं ॥ अरुकाम तोहुन-गीच । मनहौंन देहुँ न नीच ॥ शोभा ॥ बहुत दिननसोंतेरे । जान-तहौं गुणएरे ॥ दुखअरु चञ्चलता है । तोमें और कहाहै ॥ अरिल ॥ जगमें जोतूबस्तु निहारत । तिनसबको तूलेन बिचार-त ॥ अनलअघात नहीं कबहूं जिमि । कबहुंअघात नहींहै तू तिमि ॥ रामगीती ॥ हैसुलभ दुर्लभ बस्तु तिनको तू बिचारत ना-हिं । तूअसन्तोषी परमहै सन्तोष नहिं तवमाहिं ॥ जिमिभरत काहूकोभरो कबहूंनहींपाताल । तिमिभरतहै कबहूंनतूहू अरेका-

मविशाल ॥ दोहा ॥ युक्त मोहिं तू दुःखसों किया चहतहैंफेरि। सो अबमैं कहौंनहीं कहततोहिं हौं टेरि ॥ चरणादोहा ॥ अबप्रवेश की बेकी मोमेंशक्ति न तोमेंकाम। तोहिंतजेते मोको एरे प्रात भयो सुख माम ॥ जयकरी ॥ दुःख पायहौ मोबिन माम। ऐसे कहे मो- हिं जोकाम ॥ तौसुनु एरे दुखद अखर्ब। महत कलेश सहोंगो सर्ब ॥ पै अब अमति मानलों भूरि। नहिं चहिहौं तोको रहुदू- रि ॥ धन बिनशेहानिंदित पर्म। पै सो बहौंगोमैं सह शर्म ॥ मैं चितकी गति ताजिकै सर्ब। तोहिं तजतहौं काल अखर्ब ॥ ताते कबहुं न संग हमार। बसिहै तू सुनु दुखद अपार ॥ चरणादोहा ॥ मैं सुनिकैं अपमान कारके बचन न करिहौं क्रुद्ध। क्षमा धरेही रहिहौं निति अब कीबेको मनशुद्ध ॥ सारंग ॥ सुनु मारिहै जौन जन मोहिंअब आय। मैंमारिहौं ताहि नाहिं क्रोधधरि धाय ॥ करि श्रवण अप्रीय बैरीन केबैन। गुणि हौं न अप्रीय मैं कहत- हौंऐन ॥ बैरीनको कहोंगो मिष्टमैं बोल। कबहूं न धरि हौं हिये भावकोलोल ॥ अरु दयासब जीवकी धारिहौंमाम। नहिं चाहिहौं ताहि हे कबहुं मैं काम ॥ दोहा ॥ इन्द्रियको जो जीतिबोसुख अरु क्षमाअक्रोध। शांतितृप्तिनिर्वेदअरु अरुजोहैवरबोध ॥ इनसब- हिनकोप्राप्तभो मोहिंजानुहे काम। तातेहोहु न पासमम लोभा- दिक सबमाम ॥ तोमर ॥ अबछोड़िदे तू मोहिं। सुनुहे कहौ हौं तोहिं ॥ अब सत्वगुण अभिराम। तिहि प्राप्तकै करि आम ॥ दोहा ॥ ब्रह्मनगरकोमैं किया परमथान तजिसर्ब। अबलोभादिक के नहीं मैं बशमाहँ अखर्ब ॥ कमला ॥ अज्ञ जिमि भूरिहै। रहत दुख पूरिहै ॥ तिमि न दुखपायहौं। काम दुखदायहौं ॥ कामना जौनहै। सर्बदुख भौनहै ॥ छोड़िदे जौनही। देतिसुखतौनही ॥ रंगिका ॥ महत रजोगुणको परकारा परमदुखद हमजानो। ताते अमरष कामविशाल हो निजुहि अनुमानो ॥ दोहा ॥ तिहिते छोड़ि रजोगुणहि ब्रह्मनगरके माहिं। बसिहौं मैं रहौंनहीं कामा-

दिकके माहिं ॥ रंगिका ॥ ग्रीषममें पावतनहिं ताप हृद अगाधमें जैसे । छोड़े सबकामादि कलाप दुख न लहतहै तैसे ॥ मौनी ॥ कामादिकको छोड़ेलह्यो अनन्द । नष्टगयेके मेरेसब दुखवृन्द ॥ मोद कामको जो है यहि जगमाहिं । अरु जो प्रापतको है देवन पाहिं ॥ तृष्णा बिनशे जोसुखकरत उदोत । षोड़शांशसमताके सो नाहिं होत ॥ याते तृष्णा जाने दुखदा पर्म । दईछोड़ि तिहि ते मैं भयों सशर्म ॥ कबित ॥ अन्नमय प्राणमय मनमय ज्ञानमय आनन्दमय पांचकोष ये बखानेहैं । षष्ठम समाधि ताते सप्त हैं काममास दुखदायी ताहिछोड़ि अरिलों महाने हैं ॥ मंकीइमिक हतमहतमोद भयोहोय प्रापतअबध्य ब्रह्मपुरको पुरानेहैं । भूपलों महान होयके प्रतापमान अति सुखको निदान पायबैठे हरषाने-हैं ॥ भीष्मउवाच ॥ सोरठा ॥ ऐसो मतिकोहोय प्रापत मङ्कीसुऋषिब र । महामोद सोमोय निर्वेदहि पावत भयो ॥ तजि कामनको-पाश पायो ब्रह्मज्ञानको । भये बन्धनको नाश अमृतत्वहि पावत भयो ॥ इच्छा वृक्ष अमूल कीन्हों ज्ञान कुठारसों । तासों भयो अतूल प्रापत मंकी मोदको ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

भीष्मउवाच ॥ चरणादोहा ॥ उदाहरण यक और देतहैं यहिप्रसंग में प्रज्ञ । कहि इतिहास जनकभूपतिको कह्यो परम धर्मज्ञ ॥ जनकउवाच ॥ सोरठा ॥ द्रव्यादिकहैंजौन तिनको अपनो जानिबो । भ्रान्तिमात्रहै तौन रज्जुमाहिं ज्यों उरगकी ॥ प्राप्तभये तपज्ञान मोकोहोत न दुःखहै । लागेअग्नि महान जरतिदेखि मिथिला पुरी ॥ दोहा ॥ बुधजन यहिप्रसंगमें उदाहरणयक और । देतबो-ध्यबर बिप्रको कहिवृत्तान्त सगौर ॥सुनोयुधिष्ठरकहतहौं तुमको सोउदहार। नहुषभूप पूंछतभयो बौद्धहि बुद्धिअगार॥भयोशान्ति को प्रातसो लहिनिर्वेदमहान । शास्त्रमाहिं प्रज्ञानजो तासों तृप्त सुजान ॥ नहुषउवाच ॥ अहोबौद्धबर मोक्षको करहुमोहिं उपदेश।

कौनसुमति वहआपुसों पूंछतहौं शुभवेश ॥ ताको प्रापत होय तुम सहितशान्ति आनन्द। रहतनित्यसो मोहिंतुम कहिये बुद्धि बिलन्द॥ बौद्धउवाच ॥ उपदेशन हमकरतहैं काहूको भूपाल। औ काहूको करतहैं शिक्षानहीं विशाल ॥ मोक्षको सुउपदेशजो ताको लक्षण जौन । आपुहिलेहु विचारि नृप कहत तुम्हें हम तौन ॥ अहिसारँग औ पिंगला वेश्या औ सरकार । औकुमारिका कुररये हैंषटगुरू हमार ॥ सोरठा॥ गृहारम्भ दुखदाय सुखदायककबहूंनहीं। परकृतगृहमेंजायबसेरहत सुखसोंउरग॥ अरिल्ल॥ भिक्षावृत्ति आश्रितहैं जे मुनि। सुखसहजीवतते भूपति सुनि ॥ छोड़िद्रोह सबजीवनको जिमि । सुखसों रहत विहँग सारँग तिमि ॥ दोहा ॥ आशासों अतिकष्टहै सुखनैराश्य महान। सूती वेश्या पिंगला आशातजे सुजान ॥ बिरचतहौं एकतीरको तीर कार मनलाय। जान्योवैनाहिं निकटह्वै ताकेगोनरराय॥ सोरठा ॥ कुमारिकाके धामसंन्यासी कहुंते चले। आये तपके माम तेज भरे औ सत्व मय ॥ तिनके भोजनकाज लगीवनावन धानको। करमेंचुरी समाज कीन्हों शब्द दराज अति ॥ तब सब डारी फोरि राखीकरमें एक यक। भयो न शब्द बहोरि लगी वनावन शंकतजि ॥ ऐसे आपुहि एक रहे लहै तो मोदको। करिकै परम विवेक सुनहुनृपति तुमको कह्यो ॥ सुख नैराश्यमहान वेश्या सों सीख्यो सुयह। सुनोनृपति मतिमान त्याग भावसो कुरर सों ॥ नित्यहि परकृत धाम रहिबे सोंहै होतसुख। सुनो नहुष अभिराम यहमत सीख्योउरगसों ॥ द्रोहन राखतजौन काहूसों सोरहतहै। महामोदके भौन यहसीख्यो सारंगसों ॥ मनलगाय बो भूप सीख्यो हम सरकारसों । प्रज्ञावान अनूप धामशील शुभधर्मके ॥ रहब अकेलोजौन ताहीसों सुखहोत है। सीख्यो है हमतौन कूमारीकी चुरनसों ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशांतिपर्व्वणिमोक्षधर्मेपंचमोऽध्यायः ५ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ जयकरी ॥ ऐसोस्वच्छ सुव्रतहै कौन। सुनहुपितामह कीन्हेतौन ॥ रहित सर्वशोकनसों होय। रहैमहीमें सुखसों भोय ॥ औऐसोहैकौन सुकर्म। ताहिकिये उत्तमगतिपर्म ॥ ताको प्रापत प्राणी होय। कहिये ज्ञाननैनसों जोय ॥ भीष्मउवाच ॥ वर इतिहास अत्रमें एक। कहत सुनहुसो नृपसविवेक ॥ अजगर सुमुनि और प्रहलाद। तामेंहै तिनकोसंबाद ॥ होकोऊ एकविप्र सचेत। तिहिद्विजका प्रहलाद सहेत ॥ पूछतभो ऐसेमतिमान। करिकै आदरतासु महान ॥ प्रह्लादउवाच ॥ अरिल ॥ तुमदम्भादिक को नहिं धारत। स्वस्थ रहतबरबाक उचारत ॥ करत असूया काहूकी नहि। कुत्सित बचनरहत सबकेसहि ॥ धेररहतहौबाल सुभावहि। लाभ मार्गमें देतन पांवहि ॥ नितिहि तृप्तसेतुमको देखत। काहूको न अनादर लेखत ॥ चरणादोहा ॥ कामादिकजल के प्रवाहमें बहति प्रजाको आप। देखिदेखिकै लेखिलेखिकैहोत सहित सन्ताप ॥ हंस दोहा ॥ अर्थ धर्म अरु कामना तिनमाहीं व्यापार। करतनहींहो कबहुंतुम लहिकै यहसंसार ॥ चतुरानन ॥ लगन देतनहिंविषय माहिंतुम परिभव इन्द्रियकोकै। साक्षीलों रहतेहो नित्यहि छोड़िहर्ष औशोकै ॥ कौनशास्त्र अरुकौन बुद्धि वह कौनवृत्तिहै जाको। प्रापतहोय भयेहौऐसे धारज्ञानमहाको ॥ मधुभार ॥ सुनिये सुबैन। बरबुद्धि ऐन ॥ सोविप्र दक्ष। बोल्यो प्रतक्ष ॥ हरिगीती ॥ लखिजगतमें प्राणीनके ह्रसह्रासवृद्धिविनाश को। नहिं धरत हैं पगलाभ मगमें भूरिधरिकै आशको ॥ अरु पुत्रपौत्रादिकनको संयोगताको देखिकै। निजुहैवियोगहि मुख्य ताके अन्तमें अवरेखिकै ॥ अरुऔर सञ्चय सर्वतिनको अन्त नाशहि जानिकै। मनमें न लावतहौं कबौंहूं दैत्यपति अनुमानि कै ॥ हेह्रास वृद्धिविनाशताको सुनोजानैजौनहै। जनसोयदेखत अन्तवत जन सगुणको बुधिभौन है ॥ दोहा ॥ ह्रासवृद्धि अरु नाशको जो जानत दैत्येश। तिहि जनसों नहिंरहत है कारज

कौनौंशेश ॥ जंगम थावर भूतसब लोकनमाहिं जितेक। समय पायसब मृत्युको प्रापत होततितेक ॥ मोहा ॥ सबभूतनको देखिकै । मृत्युयुक्त अवरेखिकै ॥ मैंनकरत व्यापारको । औनहिंदुःख अपारको ॥ जगमें जीवति तेकहैं । जोगति लहत तितेक हैं ॥ सोईमैंहौं पायहौं । यह विचारिकै रायहौं ॥ सोवतरहत अनन्दसों । रहितहोयकै दन्दसों ॥ कबहुं अनेकप्रकारके । भोजन अन्न सुढारके ॥ कबहुंमिलतहैंनाकवौं । शोचकरतहमनातवौं ॥ नरेन्द्र ॥ कबहूं कोऊजन आयकै । लखिमोहिं दयासोंछायकै ॥ बहुभोजन मधुरसुल्यायकै । देजातप्रेम सरसायकै ॥ दोहा ॥ कबहूं अल्पहि मिलत है कबहुं जीविकाकाज । कनाहिं चुनतहं विज्ञवर हम हे दानवराज ॥ प्लवंग ॥ कबहूं मांस अरु ओदन उत्तम खात हैं । कबहूं मध्यम कबहूं क्षुधित रहिजात हैं ॥ कबहूं भोजन प्राप्त होतहै जोवरै । पुनि प्रापतिकी तृष्णासोमनतोकरै ॥ कबहूंहमहे सोवत पलँग सुठानपै । कबहूं धरणीमाहिं कबहुं पाषानपै ॥ कबहूंसोवत चित्रितचारु अगारमें । पुष्पसुगंधित बारीसैसुढारमें ॥ कबहूं बसनहम ओढ़तसुखद विशालको । कबहुं चीरवलकलहि कबहुं मृगछालको ॥ दोहा ॥ कबहूंसनकेबसन अरु कबहुंरेशमी चारु । धारतपै निर्लोभता राखत बुद्धिअगारु ॥ चउपकरी ॥ अचल अशोक अनाशित जौन । पावन परम श्रेयको भौन ॥ सुबुधनके मतमाहिं अमन्द । प्रापत अच्युतको निर्दन्द ॥ जानत मूढ़ न नीकोजाहि । ऐसो अजगर ब्रतजो ताहि ॥ मैं हौं करतसुनो प्रहलाद । बुद्धिअचलको छोड़ि प्रमाद ॥ सारंग ॥ लोभादिके वृन्दको सर्बमें त्यागि । वरआजगर सुव्रतको करत हौं लागि ॥ धरतजे धीर्य्यको करत तेयाहि । सकतकरि कादर न याहि अवगाहि ॥ दोहा ॥ नियत न यामेंभक्षको औफलको नहिं दक्ष । ऐसो जोव्रत आजगर ताकोकरत प्रतक्ष ॥ रामगीती ॥ यह करौं मैं यहकरौं यहितृष्णाहिते अभिभूत । नहिंहोत प्रापत

द्रव्य ताते लहतक्लेश अकूत ॥ सुनु प्रज्ञ दानव नाथ ऐसो
द्विजनको लखिहाल । व्रतज्ञानसों मैं जानिकै यहकरत सुखद
बिशाल ॥ अतिदीन ह्वैकै द्रव्यकाजै भये आश्रितदेखि । बर
बुधनको अति अबुधजनके बुद्धिसों अवरेखि ॥ ह्वै चित्तजित
अरु शांतिगहिकै परमउज्ज्वल होय । व्रतआजगरको करतहौं
लोभादिको मैंमोय ॥ रतिअरति लाभअलाभ ये आनंद औना-
नन्द । अरुमरणजीवन जौनहै प्रह्लाद प्रक्षविलन्द ॥ सबजा-
नि भाग्याधीनये बरज्ञान ते अवदात । व्रत आजगरको करत
हौं मैं धीर्यता गहिख्यात ॥ दोहा ॥ अहि अजगर को देखि मैं
रागादिकको त्यागि । सुव्रतआजगरको करत धीरजतामेंपागि ॥
सत्य चित्तकी शुद्धता इन्द्रियनिग्रह जौन । इनसबसों हम युक्त
हैं दानवपति बुधिभौन ॥ चरणादोहा ॥ नियतनमेरे शयनाशनको
जानहु तुम सिद्धांत । सर्वव्रतनके संचयसों हमछूटैं दानवकांत ॥
मनोहर ॥ छूटो चिदानन्दतेजौन । रूपादिक इच्छासों तौन ॥
अन्तकालमें दुखदमहान । तेहिसोंचपल न कोऊआन ॥ नित्य
रहत है जौन सकाम । ताहि दुखद जानत बुध माम ॥ ऐसो जो
मम दानव राज । ताहि सथावर कीबेकाज ॥ करत आजगरव्रत
हम स्वक्ष । अति सुखदायक जानि प्रतक्ष ॥ रामगीती ॥ जिन क-
ह्यो ग्रन्थनिमाहिं निरणय ब्रह्मकोअतिस्वक्ष । अवगाहि तिनको
जानि निरणय तौन सुनु बरदक्ष ॥ मत आपने औ औरके मत
सों बिचारत जौन । बरप्रज्ञ ऐसेकह्यो तिन यह आजगर व्रत
तौन ॥ दोहा ॥ नाशलहत जामेंसकल भिन्न ब्रह्मतेजौन । अन्तर
हित अरुदोषसों भरो भूरि है तौन ॥ ऐसो जो है जगत यह
ताको देखि प्रतक्ष । तृष्णासों अरु दोषसों रहितहोयकै दक्ष ॥
रहत सदा हौं नरनसँग पै तिनके जो कर्म । तिनमें लावत हौंन
मन सुनु दानवपतिपर्म ॥ भीष्मउवाच ॥ रहितहोय रागादिसों अज
गरव्रतकोजौन । प्रज्ञबिचारतबुद्धिसों सुखीरहतहैंतौन ॥ मधुभार ॥

पूछौ सुजौन। तुमबुद्धिभौन॥ हमकह्योतौन। सुनु भूमिरौन॥
इतिश्रीशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेअजगरमुनिप्रह्लादसम्वादेपष्ठोऽध्यायः६॥
युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ रहितहोय रागादिसों अजगरलौं थिति जौन। करै सोय सुखलहत है कह्यो आपु बुधि भौन॥ सो पूछतहौं आपुसों जन मनकीथितिजौन। कहौ मोहिं अवगाहि कै ताको साधनकौन॥ बांधवहैकी वित्तहैकीप्रज्ञाकीकर्म। यहिमेरे तुमप्रश्नको गुणिये मतिसों पर्म॥ भीष्मउवाच॥ जयकरी॥ जनके मनकीहै थितिजौन। ताको साधन मति मतिभौन॥ सोइसाधनहु मतिहीजानु। याते अतिश्रेष्ठा अनुमानु॥ दोहा॥ प्रज्ञाहीसों प्रातभो परमपदहि बलिभूप। औप्रह्लाद सुनमुनिसों मंकी सुऋषिअनूप॥ आभीर॥ प्रज्ञाकेसमतात। औरकछुन अवदात॥ जानहु यहसिद्धांत। सुनहु प्रज्ञ क्षितिकांत॥ दोहा॥ कहतएक इतिहासहौं यहिप्रसंगमें भूप। काश्यपको अरु इन्द्रको हैसंवाद अनूप॥ तोमर॥ एकवैश्यहो धनवान। अतिगर्ववान महान॥ रथपैचढ़ो सहहर्ष। कहुंजातहौउत्कर्ष॥ दोहा॥ पथमेंतिहिरथसों दयो काश्यप ऋषिहिगिराय। तिहिते काश्यप क्रोधयुत होतभयो दुखछाय॥ अतिही आरत होयकै मनके माहिं विसूरि। कहत भयोयहि भांतिसों परमग्लानि सों पूरि॥ निधनीको निर्वाहनहिं माहिंलोकके हाय। तातेमैं तनञोकको देहौं निजुहि विहाय॥ करि मरिवेकी कामना वैठो ह्वैकै मौन। धरि चितमाहीं दुचितई पथमाहीं बुधिभौन॥ धरिकैरूप शृगालको देवतेश तेहिपास। आयकहत ऐसेभयो करिकै बुद्धिप्रकास॥ मोदक॥ मानुष योनि महासुखदायक। या सम औरनहीं मतिनायक॥ राखत कोनहिं हैयहिकी तट। भाषतहैं हम सत्यहितो टट॥ दोहा॥ करतप्रशंसा सर्वहैं मनुज योनिकी पर्म। ताहूमें ब्राह्मणयकी अतिहूकरत सुकर्म॥ चर्पाकुलक॥ मनुजयोनि सुखदा तुम पाई। ताहूमें ब्राह्मण्य सुहाई॥ ब्राह्मण्यहु लहि श्रोत्रियनीके। भयेआपुहौश्र-

रुशुभअंगके ॥ यह दुर्लभता लहि मनमाहीं। आपुबिचारतहौ ऋषि नाहीं ॥ अल्पदोषहै दारिद बारो। ताते तुमहौ मरणबिचारो ॥ चरणदोहा ॥ लाभहोतसब साभिमानहै जानतहौ ऋषि दक्ष। करत नहींहौ याते जान्यो हौप्रज्ञावत स्वक्ष ॥ सोरठा ॥ सिद्धिहोतहै अर्थ तिनसों जिनके पाणिहैं। तेई परमसमर्थ तिन सम कोऊनऔर है ॥ दोहा ॥ तिनकी इच्छाकरतहौं मैं जिनकेहैं पानि। पाणिवानको देखिकै मुदिता लहतमहानि ॥ निधनीजैसे करतहैं धनकी इच्छापर्म। पाणिनकीमैं करतहौं इच्छा तिमिहि सुकर्म॥ पाणिलाभकी समनहैं औरलाभ मतिमान। काढ़िसकत कंटहु नहीं हम दुखलहत महान ॥ दशतजीव लघु अलघु जब मेरे तनमें आय। बिनपाणिन साहि रहतनाहिं सकत खुजाय उड़ाय ॥ हैंदशांगुली पाणिबर जिनके तौनसदाहि। रक्षाकोनिजुअंगकी करतयत्न अवगाहि॥ अन्नबसनके सुखन कोभोगत हैंतेपर्म। अरु चाहैं अश्वादिकनपै पावतहैं अतिशर्म ॥ मैगलादिको करतहैं बशकरि बहुतउपाय। और कार्यबहुकरतहैं सिद्धि परम सुखदाय॥ जिनकी जिह्वा होतिहै बाकशक्ति बिनविप्र। प्राप्तहोतहैं दुखनको तेऊपुनिपुनिक्षिप्र॥ सोरठा॥ अरुजेजनहैं दीन अल्पबली अरुपाणिबिन। तेईरहत मलीन सहिदुखबिबिध प्रकारके॥ तैसे तुमहौ नाहिं काश्यप सुनिये बिप्रबर। दुखसागर के माहिं क्यों बूड़त उतरात हौ ॥ दोहा ॥ प्राप्तभये कृमियोनिमें औनाहिं भयेशृगाल। पशुपक्षी मण्डूकआहि भये नाबिज्ञबिशाल॥ पापयोनि जेऔर हैं भैनप्राप्ततिनमाहिं। उत्तमकैके बिप्रतुम हर्षलहत क्यों नाहिं॥ देखिअवस्था आपुमम गुणिये हियकेमाहिं। याशरीरको काटिकै कृमिदुखदेतसदाहिं ॥ काटिसकत नहिंपाणिनाहिंतकतरहत मतिमान। पैशरीरत्यागतनहीं गुणिकै कलुषमहान ॥ चरिल॥ यहितेपापयोनि में औरन। पाऊंयहसुनु करिकैगौरन ॥ तजतदेहहौं पावतदुखतर। सुनुहे

काश्यपविप्र सुबुधबर॥ रामगीती॥ हमलही योनिशृगाल कीहैपाप योनिनबीच। हैंयहूते हे ओर काश्यप योनि केतो नीच॥ दुख लहत प्राणीजन्महीसों किते आनँद पर्व। इनमें क्यों काहूके निरन्तर नहीं पावतशर्म॥ जनकृपण कोज्यों द्रव्यप्रापत होय तौमतिमान। हैकरत इच्छा राजकी सन्तोष नाहिंअज्ञान॥ जो प्राप्तकबहूं दैवते बरराज्यपदहू होय। तौकरतहैं पुनिदेवपदकी कामनाको सोय॥ जो देवपदहू होयकबहूं भाल हैवरविप्र। तौ करनलागत इन्द्रपद की कामना को क्षिप्र॥ तुमद्रव्य को जो पायहौतौराज्य नाहिंअभिराम। अरु राज्य पदहूपायहौ तौदेवपद नललाम॥ बरदेवपदहू पायहौ तौ देवतेश नच्छाहु। जो देवतेशहु होहुगे मिटिहैनकामकलापु॥ जनतृप्त नाहींहोतकबहूं लोभमेंद्विजराज। जिमिशान्त होतननीरसोंहैतृष्णा सुपरमदराज॥ सोबढ़ति ऐसो नीरसो जिमि समिध सोंसुकृशान। मैं कहतहौं अवगाहि तुमको विप्रवर मतिमान॥ है तुमहिं माहीं हर्ष औ हैतुमहिं माहीं शोक। अरु मोह परमविवेक तुमहींमाहिं दुखसुखओक॥ तुमकरत क्योंहोदुःखयाते विप्रविज्ञ महान। तवबशालखिकै भयो अचरज मोहियै मतिमान॥ सबकामना अरु कर्मको जोहेतु इन्द्रियग्राम। यहिभांति रोकैताहि जिमिपक्षीहि पंजर धाम॥ सोरठा॥ कामकर्मको हेत यह जो इन्द्रियग्रामहै। रोकेताहि सचेत साध्य सहोत न निजुगुणो॥ यह जो इन्द्रियग्राम सोईभयको हेतुहै। औरन हैबुधिधाम भयकारण निजुकै कहत दोहा॥ शीतादिकहै औरहू डरकेहेतुअनेक। जोतुमयह गुणिकै कहौ तौ सुनिये सविवेक॥ जयकरी॥ बुद्ध्यादिकको कीन्हे रोक। शीतादिकवारो जो थोक॥ तेहिते होतनहीं है त्रास। यहनिश्चय जानो बुधिरास॥ दोहा॥ याते करिकैरोधतुम बुद्ध्यादिक को सर्व। दूरिकीजिये ग्लानिको प्रज्ञावान अखर्व॥ आभीर॥ एक हेतु मैं ओर। कहतसुनो करि गौर॥ पाणिवान बलवान। होत

सोइ धनवान ॥ यामें संशयनाहिं । कहत सुगुणि तो पाहिं ॥ जयकरी ॥ केते पै सपाणिप्रभुहोत । केते दासहोत बुधिपोत ॥ याते भाग्य जानु बलवान । निश्चयकरिकै बर मतिमान ॥ चरणा-कुलक ॥ बधबन्धन क्लेशनसों भारे । जेजनपुनिपुनि होतदुखारे ॥ तेईफेरि बिहारकरतहैं । हँसतरहत बहुमोद धरतहैं ॥ और लखो जेबलवन पानी । हैं जिनकी बरबुद्धिमहानी ॥ पाप वृत्ति करतेहैं भारी । जैसे करत महत अबिचारी ॥ पावनवृत्ति करनके काजै । उदित रहतहैं सकुलसमाजै ॥ पै भवितव्य कर्मते जोई । निश्चय बिप्रहोतहै सोई ॥ चण्डालहु मरिबेकीनाहिं । करतकामनाहै मनमाहिं ॥ अपनी योनिहि माहिं रहतहै । मोदित कबहुंन ग्लानि लहतहै ॥ यह माया प्रभुकी तुमदेखो । अपनेचित्तमाहिं अवरेखो ॥ रोगग्रसित प्राणिनको देखे । औ चखपाणि हीनकोपेखे ॥ रोगरहित चखपाणि सहित जे । जानत लब्धहि लाभ महतजे ॥ दोहा ॥ रोगरहितहौ आपुअरु अंग शुद्ध तव सर्व । रहतवेद में नित्य हौ तत्पर प्रज्ञ अखर्व ॥ याते हौ तुम बिप्रनहिं धिक्कृत जगमें दक्ष । आपु बिचारत आपुको क्योंहौ नहींप्रतक्ष ॥ लाग्योअनृत कलंकजो अरु जो भो अपमान । देहत्याग कोऊकरत ताते नहींसुजान ॥ चरणाकुलक ॥ गुणिहौ जो तुम बचन हमारे । शुद्ध बिबेक परमसों भारे ॥ अरु सुनिकै जो श्रद्धाकरिहौ । तौ तुम महामोदको धरि हौ ॥ जो वेदोक्तधर्म है पावन । तासु पायहौ सुफल सोहावन ॥ पढ़न पढ़ावनमें तुमरतहौ । अग्नि होत्र ताको प्रापतहौ ॥ अप्रमत्त ह्वै पालो सत्यहि । रोकोइन्द्रियको तुमनित्यहि ॥ निन्दास्तुती नकाहूकेरी । कीजै यहलहु शिक्षामेरी ॥ जेरतपढ़न पढ़ावनमेंहैं । ते काहे को शोचकरैंहैं ॥ औ जेयज्ञकरनमेंरतहैं । तेऊशोचसों रहत बिगत हैं ॥ अरुजे बिधिवत यज्ञकरावत । तेउनशोचकरत मुदपावत ॥ करत असंगलकी सुधिनाहीं । कबहूंकिये सुकर्म सदाहीं ॥

दोहा ॥ इच्छाकरै विहारकी तेकबहूंजौविप्र । होतविहार आनन्द को प्रापत तौवैक्षिप्र ॥ सुन्दर तिथि सुनक्षत्रमें औ सुमुहूरत माहिं । उद्भवतिनको होतहै यामेंअनृत नाहिं ॥ जयकरी ॥ शक्ति पूर्वक देतसुदान । बिधिवत यज्ञकरत मतिमान ॥ सुनकी ईहा में अभिराम । करतयत्न बहुबिधि बुधिधाम ॥ करतरहतहैं नित्य सुकर्म । करतनहींहैं कबहुं कुकर्म ॥ सोरठा ॥ पढ़न पढ़ावनमाहिं करन करावन यज्ञमें । जेजनप्रापतनाहिं सुनहुव्यवस्था तौन की । योनिआसुरी बीच कुतिथिमुहूरत नखतमें । जनिसो लेत नगीच कबहूंहोत न धर्मके ॥ दोहा ॥ न्यायशास्त्रमैंहौं पढ़ौरहो कुपण्डित पर्म । निन्दा नित्यहि वेदकी मैंहौंकरत कुकर्म ॥ जयकरी ॥ वेदज्ञनको करिअपमान । बचनकहतहौं होयअपमान ॥ नास्तिकहौं औमूर्ख महान । मानतहौं मैंपरमसुजान ॥ शृगालत्व प्रापत जो मोहि । ताहीको फलहै यहजोहि ॥ कबहूं जोसुनु सुमति अगार । मनुजयोनिमें जन्महमार ॥ ह्वैहैतौतपमें अति प्रीतिराखौंगोमैंसहितसुनीति ॥ दैहौंदानसुकरिहौंयज्ञ । अप्रमत्त ह्वैके सुनुप्रज्ञ ॥ ह्वैसचेतमैं पढ़िहौं वेद । त्याज्य त्यागिकैहोय अखेद ॥ सुनिशृगालकी बाणीविप्र । अचरज मानि उठो अति क्षिप्र ॥ कहतभयो इमिसुनहु शृगाल । हैतूपण्डित परमविशाल ॥ ज्ञाननयनसों द्विज मति भौन । देखन लगो शृगालहि तौन ॥ देखै तौहै निर्जरपाल । बाढ़ोअतिही मोद विशाल ॥ जानिइन्द्र को काश्यप विप्र । पूजा कीन्हीं विधिसों क्षिप्र ॥ फिरि मघवाकी आज्ञापाय । गयोगेहको वरद्विजराय ॥

इतिश्रीशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेइन्द्रकाश्यपसम्वादोनामसप्तमोऽध्यायः ७॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ अरिल ॥ जनके मनकी तिथिको कारण । कह्यो बुद्धितुम करि निरधारण ॥ पूछतहौंएककहेतु औरबर । कहौतात तुम तौन सुमतिबर ॥ दोहा ॥ यज्ञ तपस्या औ गुरू शुश्रूषाअ-

रुदान । कालान्तर में बुद्धि के एईहोत निदान ॥ कै कछुकारण औरहै परम बुद्धिको स्वक्ष । कहो पितामहमोहिं तुम सरलरीति सों दक्ष ॥ भीष्मउवाच ॥ सुनोयुधिष्ठिर बुद्धिहै कामादिकयुतजौन। तासों करत प्रवेश है मनकल्मष के भौन ॥ कवित्त ॥ जेते जग माहिं पापकारी जीवतेतेसब दुरभिक्षताते दुरभिक्षको लहतहैं भयताते पावत हैं भयको महानआति औकलेशताते लहिक्लेश को सहत हैं ॥ औजे शुभकारीते धनाढ्यताको पायकरिउत्सव ते उत्सवको लहत महतहैं । आनन्द ते पायकरि आनन्द बिलन्द फेरि आनन्द के पायबेको गैलको गहतहैं ॥ सोरठा ॥ त्रिदशालयते होत त्रिदशालय को प्राप्त पुनि । सुनहु सुमति के ओक पाण्डुपुत्र पालकधरम ॥ दोहा॥ जामेंबहु उन्मत्तगत चौर व्याघ्रबहुसर्प । ऐसोजोआरण्यहै तामेंभूपसदर्प ॥ नास्तिककेकर बांधि कै दूरिहिदे पहुँचाय । तहांलहत बहुदुःखहैं नास्तिक भय सों छाय ॥ सोरठा ॥ सुनुपाण्डव मतिमान सत्यमान बरधर्मधर। यहिते दुःखमहान औरकहा है लोकमें ॥ दोहा ॥ जाको प्रिय है देव अरु साधु अतिथि नित भूप । अरुउदार जो लहत सो मारग सुखद अनूप ॥ पायगर्त की ऊषमा नष्ट अन्नभो जौन । ताके समहैं मनुजजे धर्म करतनाहिं तौन ॥ उक्था ॥ किये कर्महैं जौन । संगरहत नित तौन ॥ पलक न छोड़त साथ । जानहु निजु नरनाथ ॥ चरणाकुलक ॥ शीघ्रचलत ताहू के पाछे । लागो रहत कर्महै आंछे ॥ सोयजात तौ अपहुसोवै । उठिजोवै तौ आपहु जोवै ॥ चलन लगैतौ साथहिचालै । बैठे तौ बैठतनाहिं हालै ॥ प्राणी कर्म करै जो कोई । आपहुकरत छांहलों सोई ॥ जे जे कर्म पूर्व जनमाहीं । कीन्हें तिते रहत सबपाहीं ॥ अरिल ॥ यहप्राणी तिनको है भोगत । तिनहीं की रति में कैकैरत ॥ जब बीतत है कर्मनको फल । तबहिंलगावत नहिं एकोपल ॥ काल चहूंदिशि ते है करषत । भूतग्रामको फेरिन परषत ॥ जैसेवृक्ष

लता अप्रेरित। फूलै फलै समयकी जोमित ॥ ताकोकबहूंकरत उलंघन। तैसे करमहु छोड़त संगन ॥ कर्म अशुभशुभ जिहि जिहि बयमहि। करत होत प्रापत तिहि तिहि महि ॥ आभीर ॥ जिमि गो सहसन माहिं। माता अपनी पाहिं ॥ पहुंचन वत्स सुधर्म। तिमिहिं पूर्वकृतकर्म ॥ जैसे बसनअमन्द। होतपंकसों मन्द ॥ सोसुवारिसों स्वक्ष। होततिमिहि सुनुदक्ष ॥ महत कलुष सों जोन। मे मलीनजन तोन ॥ विषय त्याग सो पर्म। निर्मलहोय सुकर्म ॥ मोक्ष शर्मकोहोत। प्रापतते सतिपोत ॥ मधुभार ॥ वरबिपिनबीच। कैके निभीच ॥ तपजोबिलन्द। कीन्हों अमन्द ॥ बहुकालभूप। तिहिसोंअनूप ॥ भेस्वक्षजोन। मानव सुतोन ॥ बरलहत ज्ञान। मोदत महान ॥ दोहा ॥ ज्ञान लाभ जबहोत तब सद्य मोक्षजोभूप। ताकोप्रापत होतहै मानव बिज्ञअनूप ॥ पक्षिनके आकाशमें जिमिनाहिं पांवदिखात। तिमिहीगति ज्ञानीनकी जानीजाति न तात ॥ होतिहिये सद्वासना किये भूप सत्कर्म। सत्कर्महि हैं बुद्धिको कारणबिमल सुकर्म ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेअष्टमोऽध्यायः ८ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ अरिल ॥ हैं सत्कर्म बुद्धिको कारण। कह्योमोहिं तुमकरि निर्द्धारण ॥ सुन्योतोन एकप्रश्न और हम। करतकहौं अवगाहि तोनतुम ॥ रामगीता ॥ यहभयो किहिते जगत है बर चराचर मयसर्ब। अरुहोतहै किहिमाहिं प्रापत प्रलयमाहिंअखर्ब ॥ सब सहित सागर गगनसह सहशैलसह घन थोक। बरसहितअचला अग्निमारुत सर्बजायहलोक ॥ हैभयोनिर्मित कौनसो कहिये कृपाकरि आपु। अरुभयो है किहि भांति सो यहसर्ब भूपकलापु ॥ दोहा ॥ औभोवर्ण बिभागकिमि शौच अशौच सुजान। तिनको कहिये मोहिं तुम करिकै गौरमहान ॥ औजो धर्म अधर्म बिधि बर्णकिहै हेतात। परमतिसों अवगाहि कै कहौमोहिं बिख्यात ॥ तिनको कैसोजीवहै प्राणीजीवतजोन।

जात कहां यहि लोकते जौन मरतहै तौन ॥ भीष्मउवाच ॥ यहि प्रसंगमें कहतहौं इक इतिहास अनूप। सो अतिही प्राचीनहै मनथिरि करि सुनुभूप॥ मनोहर ॥ गिरि कैलास शृंगपै स्वक्ष। बैठेहुते सुऋषि भृगुदक्ष॥ तिनको लखिकैभारद्वाज। करतभये यह प्रश्नदराज॥ रामगीती ॥ यह लोक केहितेभयोहै बरचराचर भवसर्व। अरुहोतहै किहिमाहिं प्रापत प्रलयमाहिंअखर्व॥ सब सहित सागर गगन सहसह शैलसह घनथोक। अरु सहित अचला अग्नि मारुत सर्व जो यहलोक॥ है भयोनिर्मित कौन सोहै कहौमोको आपु। अरुभयोहै किहिभांति सों यह सर्वभूत कलापु॥ दोहा ॥ औभो वर्ण बिभागाकिमि शौचअशौचसुजान। सो तिनको कैसे भयो कहुकरि गौरमहान॥ औजो धर्मअधर्म बिधि वर्णकि है हेतात। भई कौन बिधि सों कहौ आपु मोहिं बिख्यात॥ तिनको कैसो जीवहै प्राणी जीवतजौन। जातकहां यहि लोकते मरत जौनहैतौन॥ भरद्वाजकोप्रश्न यहसुनिऋषि भृगुमतिमान। भरद्वाजको कहतभे इमि भृगुभूपसुजान॥ भृगुरुवाच ॥ सुन्योएकइतिहास है हम ऋषीनसों दक्ष। इहिप्रसंगमें कहतहौं तुमसों तौन प्रतक्ष॥ आदिअन्तसों रहितहै अजरअमरहैपर्म। ऐसोसबते पूर्वअरुजगको हेतुसशर्म॥ रहतनिरंतर है महत कीन्हेपरम प्रकाश। है अव्यक्त अभेद्य अरु निर्बिकार बुधिराश॥ ताकोमानस नामहै तातेहीसबभूत। होतप्राप्त पुनिहोतमरि ताहीमाहिं अकूत॥ महातत्वको सृजतभोतौनदेव भरद्वाज। अहंकार को सृजतभो महातत्व बुधराज॥ अहंकार नभको कियो अरु नभतेभो बार। भये बारते दोयशिषिमारुत तथाउदार॥ तिनदोउनके योगतेभई भूमिभरद्वाज। तदनुस्वयम्भूतेभयो होतोपद्मसुसाज॥ हरिगीती ॥तिहिपद्मते उत्पन्नब्रह्मा होतभो श्रुतिमामहै। सुनुलोकपति हैसोइसोई अहंकार सुजान है॥ हैपंचतत्वहु सोय सोई भूतकारो पर्म है। हैशैलताकेअस्थि

सब अरु अवनि आमिषचर्महै ॥ हैरुधिरजाको सरित्पति अरु उदरसों आकाशहै । अरु नदी नाडीतेज हुतभुक वायुजाको श्वासहै ॥ हैभानु औ सितभानु जाके दुऔ लोचन भुजदिशा । है ऊर्ध्वकोआकाशजाको शीशऔ पदहैरशा ॥ सुनुसुऋषिभारद्वाज जिहिको सकल सिद्धन जानिहै । हैविष्णु सोई शम्भुसोई कहतबुध अनुमानिहै ॥ दोहा ॥ सोईसबभूतस्थहै सुनुहेभारद्वाज। तिहिकीन्हों अहंकारसब भूतहोनके काज ॥ भयो विश्वउत्पन्न है अहंकारसों सर्व । जानिसकल कोऊनहीं तासुप्रभावअखर्व ॥ सोरठा ॥ जोतुम पूछ्यो तौन यहिप्रसंगमें हमकह्यो । सुनहुसुऋषि बुधिभौन औरकहाअब पूछिहौ ॥ भरद्वाजउवाच ॥ दोहा ॥ गगनभूमि दिशिबायु अरुतिनकोकहाप्रमान । कहौमोहिंअवगाहिअबयह तुमभृगुमतिमान ॥ भृगुरुवाच ॥ रामगीती ॥ सुनसुऋषिभारद्वाजयह आकाशको नहिंअन्त । बरयुक्तनानाश्रयनसों है रम्यअतिगति वन्त॥हैनित्य सेवित सिद्धऔ निर्जरनसों आकाश । गहिलहत कोऊअन्तहै आकाशकोमतिराश॥अथऊर्ध्वमेंरविचन्द्रकेकरकी नहीं गतियत्र । अतिभरेतेजसचण्डभारे देवताहैंतत्र ॥ वरस्वयं ज्योतिसुभास्करसे अग्निऐसेचण्ड । नहिं लहत अंतअनंतताते तेऊ देव उदण्ड ॥ हैसिंधुभूके अन्तमें औसिन्धुको जोअन्त । तुमतौनमें तिमरातमेंहै नीर बिज्ञअनन्त ॥ हैरसातल अन्तमाहीं सलिल भारद्वाज । औअन्तमाहीं सलिलकेहै परमपन्नगराज ॥ है पन्नगांते पुनह नभऔ नभांतेकी लाल । परमाण है यह सलिलको वर सुनहु बिज्ञबिशाल ॥ वर अग्नि मारुत तोयके आवर्णभारद्वाज । सुरवरहु जानत कष्टसोहै कहतबिज्ञसमाज ॥ क्षिति अग्नि मारुत तोयको आवर्णहैबुधजौन । सोहैअकाशहि सदृशजानत महत मतिके भौन ॥ जबहोत ब्रह्मज्ञान तबआवर्णभियत सर्व । वर बिबिध शास्त्रन माहिं वर्णन करत सुमुनि अखर्व ॥ त्रैलोक्य सागरको कह्योहै मुनिन जौन प्रमान । हम

कह्यो तुमको तौनहै गुणिभरद्वाज सुजान ॥ बरसिद्ध अरु नि-
र्जरनको जो भोगव्योममहान । सोहै अगम्य अदृश्य याते कहै
कौनप्रमान ॥ जोपरे मितहै जानियाकीसुनहु प्रज्ञाभौन । तौ
होय जाय अनन्तकी आनंत्य निश्चयगौन ॥ तुमनामके अनु-
रूपही भरद्वाज जानहु याहि । यहिमाहिंसंशयहैनहीं हमकहतहैं
अवगाहि ॥ सोरठा ॥ मूर्तिमान सर्वज्ञ भो चतुरानन कमलते ।
भरद्वाज सुनुप्रज्ञ सोकर्त्ता सबजगतको ॥ भरद्वाजउवाच ॥ जयकरी ॥
भयो पद्मते जोलोकेश । पद्महितोहै ज्येष्ठसुवेश । अग्रजकहत
द्रुहिणकोसर्व । यामें संशयहोत अखर्ब ॥ भृगुरुवाच ॥ मानसजाको
नाम सुजान । सोयह भयो ब्रह्म भगवान ॥ आसन हेतु तासु
भूपद्म । सुनोभयोहै प्रज्ञासद्म ॥ दोहा ॥ मध्य भाग तिहिपद्मको
हैसुमेरु भरद्वाज । सोब्रह्मा तिहिमें स्थित बिरचत जगतदराज ॥
इतिमहाभारतेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेभृगुभरद्वाजसंवादोनामनवमोध्यायः ९

भरद्वाजउवाच ॥ दोहा ॥ मानस जाको नामहै परब्रह्म भगवान । सोई
ब्रह्मा हैभयो कह्यो आपु मतिमान ॥ जगजो बिबिधप्रकार को
किमि बिरचतहैताहि । चतुरानन मतिमानभृगु कहो मोहिंअव-
गाहि ॥ भृगुरुवाच ॥ जगजोबिबिधप्रकार को तिहिका श्रीलोकेश ।
मनसों बिरचतहै सुनो भारद्वाज सुवेश ॥ चरणादोहा ॥ रक्षाकाजै
सब भूतनकी प्रथमतोय बिधि कीन । प्राणसर्ब जगकोहै सोई
निश्चय मानुप्रबीन ॥ प्रजाबढ़ति है तोयसों तोय बिना मिटि-
जात । बाढ़ित भूत सब जगतहै तोयहिसों अवदात ॥ पृथ्वी प-
र्वत मेघअरु मूरतिमान जितेक । बारिजही सबजानु तू भारद्वाज
तितेक ॥ भरद्वाजउवाच ॥ भूमिअग्नि मारुतसलिल ये उतपन्नसु-
जान । कहो भये किहिभांतिसों मोको आपुमहान ॥ भृगुरुवाच ॥
ब्रह्म कल्पकेबीच यकसमय माहिं सुनुदक्ष । होतो ब्रह्मऋषीन
को भयो समागमस्वक्ष ॥ मनोहर ॥ होतभयो तामें संदेह । यही
कियो जोतुम बुधिगेह ॥ तेसुब्रह्म ऋषि ध्यान लगाय । पौनपै

होय मौन बुधराय॥ बैठतभये तिन्हैं शतवर्ष। देवनके गनभये सहर्ष॥भईव्योमबाणी यहपर्म। भरद्वाज सुनुसुऋषि सशर्म॥
पूरव तमसों युतहैव्योम। भये तदुपरि मारुतसोम॥लोचनशोभा शतभो दक्ष। होतो भयोतदनु जलस्वक्ष॥ जलकोजो उत्पीड़ महान। ताते उठत भयो पवमान॥ जलको फोड़ि करत सोध्यान। प्राप्त होयकै नभहि सुजान॥ शान्तिकोन पावत उतकर्ष। वायुनीरकोजो संघर्ष॥ ताते होतो भयो कृशान। तौन मरुतयुत होय सुजान॥ जलहि उशासत भो नभवीच। होय मरुत सों दीर्घ निभीच॥ दोहा॥ केलथूल नभसे गिरै शिखिसों जोकी लाल। भयो सोय भूमित्वको प्रापत विज्ञ विशाल॥ सर्व पदारथ होतहै तिहि भूमिहि के माहिं। भूमि योनि सब जानु तू यामें संशय नाहिं॥

इतिमहाभारतेशांतिपर्वणिमोक्षधर्म्मेभृगुभरद्वाजसंवादेदशमोऽध्यायः १०

भरद्वाजउवाच॥ दोहा॥ सुनहु महाऋषि प्रथमही पंचधातु संधात। तिनको विरचत भो द्रुहिण जगत्कार विख्यात॥ तिन धातुनहीं सो सरब वलित भूतहैं लोक। महाभूत संज्ञिक परम तेहैं बुधिओक॥ भूत सहस्रन रचतहैं नित्य नित्य सुरज्येष्ठ। महाभूत ये पांचही कैसेभे बुधश्रेष्ठ॥ भृगुरुवाच॥ सर्वभूत उत्पन्न ये इनभूतनतेहोत। ताते इनको योग्यहै महा शब्द नतिपोत॥ नासाकान अकाश है श्वास बायु द्रवबार। उष्मा शिखि भूमांसहै भौतिक देह उदार॥ पञ्चभूतसों युक्तहै जंगम थावर सर्व। इन्द्रिय संज्ञा इनहिंकी हैमतिमान अखर्व॥ भरद्वाजउवाच॥ पंचभूतनसों युक्तये जो थावरहूहोत। थावरहुनमें परतलखि पंचभूत नतिपोत॥ अनुष्म है चेष्टा रहित निविड़ सर्व ये वृक्ष। इनमें देखि न परत है पंचभूत भृगुदक्ष॥ सुनत न देखत स्पर्श रस गन्धाहि जानत नाहिं। कैसे अचर भये कहौ भौतिक गुणि हियमाहिं॥ भृगुरुवाच॥ निविड़ वृक्ष तउ व्योमहै वृक्षनमें मतिपोत। फूल फलनको

नित्यही देखो उद्भवहोत ॥ वृक्षनमेंआकाशनाहिं जोहोतेसुनुदक्ष। फूल फलन में पहुंचतो तौ कैसे रसस्वक्ष ॥ सब वृक्षनके फूल फल त्वक अरु पर्ण प्रवीन। उष्मा जो होती नहीं तौ किमिहोत मलीन ॥ फेरि लखो सब तरुन के भरत फूल फल पात। कैसे भरते तरुनमें जोनाहिं होतो बात ॥ बज्रघोषसों तरुनके भरत फूल फल पात। सुनतहु है तरु बिप्रबर याते जान्यो जात ॥ लपटत चढ़ि चहुंओर सों तरुपै बेलिसमाज। लखति नहीं तौ चढ़तिहै कैसे भारद्वाज ॥ वृक्षनको जवहोतहै रोगकौनहू आय। गन्ध धूप तबदेत जन विविध भांतिकी ल्याय ॥ गन्धधूप सां होयकै रोगरहित तरुस्वक्ष। फेरि लगत फूलन फलन भरद्वाज सुनुदक्ष ॥ याते जान्यो जातहै सूंघतहूहैं वृक्ष। जो नहिं सूंघत धूपसों होत अरोगित स्वक्ष ॥ पीवतहैं जल पादसों पादप सुनु बुधि भौन। जौन पियत तौ होत किमि व्याधि जलोद्भव तौन ॥ किये चिकित्सा व्याधिकी होति निरोगित काय। याते जान्यो तरुन के जीभौ है सुखदाय ॥ ज्योंजन नीरज नालसों नीरहिंखैंचत उद्ध। तिमिही पादप पियत हैं परम सलिल को शुद्ध ॥ सुखदुख दोउनको करैं ग्रहण सर्ब येवृक्ष। याते जान्यो जीव हैं वृक्षनमें सुनु दक्ष ॥ भरि आवत जहँ होतहै क्षीण सुनो भरद्वाज। जड़ताते जान्यो नहीं जात जीवको साज ॥ ग्रहण करतहैं जौन जल पादपबल्ली तौन। अग्नि बायुको करतहै शा-न्त सुनो बुधिभौन ॥ तौनै जल आहार है वृक्ष लतनको सर्ब। ताते चिकने होतहैं वृद्धिहि लहत अखर्ब ॥ सर्ब बरणकी देहमें पंचधातु संघात। तौनै चेष्टित करतहै यहतौ है बिख्यात ॥ त्वचामांस औ अस्थि औ मज्जा नाड़ी पंच। ये बिकारहैं भूमि केहैं नहिं संशयरंच ॥ तेज क्रोध अरु जठर की अग्नि ऊष्मा नैन। ये बिकारहैं दहनके पंच सुमति के ऐन ॥ उदर कोष्ठ औ हृदयअरु वदनश्रोत्र अरु घ्रान। येदोहिनकी देहमें पंच अकाश

सुजान ॥ पित्त स्वेद श्लेषमा अरु चरबी शोणित जौन। ये बिकार हैं सलिलके पंच सुनहु बुधिभौन ॥ प्राण वायुते लेतहैं श्वास शरीरी दक्ष। ब्यान वायुते करतहैं सब उद्योग प्रतक्ष ॥ सो अपान अधको चलत हियमें रहत समान। ऊपर चलत उदानसो भारद्वाज सुजान ॥ उदानही के भेदसों बोलतहैं हैं दक्ष। देहिन को चेष्टित करत पंचवायु ये स्वक्ष ॥ गन्धहि जानत भूमिसों औ मारुत सों स्पर्श। जलसोंरस अरुतेजसों जानतरूप सहर्श ॥ गन्ध रूप रस शब्द औ परस पंचगुणयेह ॥ तिन में गन्धप्रकारही कहत सुनो बुधिगेह ॥ इष्ट अनिष्ट सुमधुर अरु कटु निर्हारी रुक्ष। हसत बिशद सानिग्ध ये हैं सुगन्ध नव स्वक्ष ॥ चरणादोहा ॥ इष्ट गन्ध कस्तूरिकादिकी मुरदादिकी अनिष्ट। पुष्पादिक की मधुर गन्धकटु मरिच्यादिक की श्रेष्ट ॥ दोहा ॥ हिंग्वादिक की गंधको निर्हारी है नाम। औ सर्षप तैलादि को रुक्ष गंध बुधिधाम ॥ बहुपदार्थकी गन्धजो ताकोसंहत नाम। गन्धशालि अन्नादिको बिशद नाम बुधिधाम ॥ सद्य सुतप्तघृतादिको गन्ध सानिग्ध सुजान ।नव प्रकारके गन्धये करिहम कहे बखान ॥ अबआगे मैं कहतहौं सुनौ सुरसकोज्ञान। रसहै बहुत प्रकार को ऋषिन कह्यो मतिमान ॥ मधुर लवण कटु तिक्त अरु अम्लकषाय सुजान ।षटबिधिको रसहोतहै कहत सुबिज्ञ महान ॥ तीन सुगुणहैं ज्योतिके शब्द स्पर्श स्वरूप। अबआगे मैं कहत हौं कहत सुतौन अनूप ॥ज्योति लखति है रूपको सोहै बहुत प्रकार । चतुष्कोण अरु दीर्घलघु वृत्त सुथूल सुढार ॥ श्यामल अरुहै नील अरु रक्तपीत अरुश्वेत। चिक्कन पिछिल सुमृदुल अरु दारुणरूप सचेत ॥ कठिन सुलक्षण रूपये षोड़श है भरद्वाज। शब्द स्पर्श समीर के हैं गुण सुबुध दराज ॥ उष्णशीत खर मृदुल लघु और सानिग्ध महान । सुख दुख गुरु लक्षण बिशद बारह पर्श सुजान ॥ है अम्बर को एक

गुण शब्द सात परकार। पञ्चम धैवत रिषभ अरु मध्यम अरु गांधार ॥ अरु निषाद अरु षंजबर सप्त सुबुधिसों पर्म । रहत शब्द पटहादिमें ब्यापित सुनहुसुकर्म ॥ भेरीशंख मृदंग रथअरुघनको जोध्वान । औ जोसबप्राणीन का सातहिमाहिं सुजान॥ जयकरी ॥ शब्द माहिंजो सातप्रकार । षड्जादिकते बुद्धि अगार ॥ भारद्वाज कहे हम आम । तुमको सरल रीति सोंमाम ॥ रामगीती ॥ करिकं सुइच्छा बोलिबे की आतमा सर्बज्ञ । मिलि बुद्धिसों मनमें लगावत अर्थकाहे प्रज्ञ ॥ मनअर्थसों अरु बुद्धिसों मिलि होतहै सामर्थ। जठराग्नि को सो देतहै मन ताड़ना सह अर्थ॥ सोकरत बायुहि प्रेरणाहै बायु प्रेरिततौन । उरमाहिं चरि के मंदस्वर को करत है बुधिभौन ॥ उरमाहिं तेकढ़ि मूरधाके माहिंलगिके पर्म । मुखमाहिं प्रापत होयबर्णहिं करत व्यक्त सशर्म ॥ सोरठा ॥ रुकोबायुनाहिं जौन शब्द करतहै तौनबर ।रुको बायु है तौन शब्दनहीं करि सकत हे ॥ दोहा ॥ सुनिये भारद्वाज बर मारुतजेप्राणादि । तिनसों चेष्टित होतहैं इन्द्रिय सर्ब स्वगादि ॥ बरवै ॥आपअग्नि अरु मारुत तनुके बीच। जाग्रत रहत सदाहै सुबुधनिभीच ॥ उक्छा ॥ येशरीरके हेत ।हैंहेबुद्धिनिकेत॥

इतिमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिभृगुभरद्वाजसम्बादेएकादशोऽध्यायः ११॥

भरद्वाजउवाच ॥ सोरठा ॥ भूबिकार यह देह ताको प्रापतह्वै अगिनि। सुनिये बरबुधि गेह किहि प्रकारसोंरहतहै ॥ दोहा ॥ औ किमिकरत शरीरको चेष्टितहै पवमान। कहौ आपु अवगाहिकै मोकोभृगु मतिमान ॥ भृगुरुवाच ॥ सोरठा ॥ पावकको वृत्तान्तकहि पुनि कहिहैं बायुको। भरद्वाज सुनुदान्त धर्मधाम बरमाति सदन ॥ दोहा ॥ देहनको प्राणीनकी जिहिबिधि सों बुधिधाम। चेष्टायुत मारुत करत कहत तुम्हैं हमआम॥ चिदाभास के रहतहै आश्रित अग्नि सदाहि। करि परिपालन देह को कहत सुगुणि तवपाहि ॥ चिदाभास औ अग्निमें प्रापतह्वै पवमान। देहन

को प्राणीनकी चेष्टित करत सुजान ॥ जयकर्री ॥ इन तीनहु को जो संघात। जीवप्रज्ञ सोई अवदात॥ सोयसनातन पुरुष अ-मन्द। अहंकार मन बुद्धि विलन्द ॥ सोई औ सुभूत गणसर्व। औ सुविषय सबसोयअखर्व॥ माया सहित होतजब दक्ष। जीव कहावत है सुनस्वक्ष॥ माया रहित होत जबपर्म। ब्रह्मकहावत सोय सशर्म॥ दोहा ॥ करत देहकी पालना बाहिर भीतर प्रान। फिरि समान ह्वैकै सुनो सोयप्राण पवमान॥ पहुंचावत रुधि-रादिको निजनिज गतिकोपर्म। सोई मारुतप्राणजो होय अपा-नसुकर्म॥शिखिकेआश्रय होयकै अन्नादिकहि पचाय।मूत्रपुरी-षहिदेतहै निजनिजथानपठाय॥यत्नकर्मजिहिवायुसोंकीन्होंजात सुजान। औजो बलमें रहत बुध ताकोकहत उदान॥ मनुजा-दिक कीदेहमें सन्धिनमाहीं जौन। रहत बायु ताकोकहत व्यान मनीषाभौन॥ सोरठा ॥ यातु त्वगादिक जौन पावक तिनमें व्या-प्तजो। प्रेरितह्वैकै तौन बर समान पवमान सो॥ दोहा ॥ अन्ना-दिक रसजौन अरु धातु त्वगादिक जौन। अरु पित्तादिक दोष जे तिनको बरबुधिभौन॥ करत बिकारितहैसुनो कहत प्रज्ञप्रा-चीन। सब देहिनकी देहमें भारद्वाजप्रबीन॥ चरणादोहा ॥ चलति आस्यते गुदिकालों नाड़ीएक महान। ताते और चलतिहैं केती लघुनाड़ी मतिमान॥तिन नाड़िनसों होत सबवायुनको संयोग। अरु अग्निहु को होतहै कहत प्रज्ञबरलोग ॥ करत प्रकाशित बायुको अग्नि अग्निकोवाय। लागतवायु गुदांतमें अग्नि बेग सोंजाय॥वायुवेगसोंअग्निसों ऊपरउठतसुजान।रहतदेहकेबीच है इमिपवमान कृशान॥औदरभय नहिंहोतहै कीन्हेंवायु निरोध। बायु रोधते होतहै इन्द्रियरोध सबोध ॥ नाभि उर्द्धको भागसो थान अन्नकोतौन। अधको जोहै भागसो मलस्थान बुधिभौन॥ मारुत सूक्षम रूपसों रहत नाभिके माहिं। कारज तिनसोंहो-तसो कहत तिहारे पाहिं॥ प्राणसमान उदान अरु व्यान अपान

सुजान। देवदत्त कूरम कृकल नागपरम पवमान॥ औ सुधनं-जय बायुये दशहैं इनसोंपर्म। नाड़ीप्रेरित होयकै तनके माहिं सुकर्म॥ प्राप्त करतिहैं अन्नके रसको नित्यप्रबीन। गुणिकैतो सों हैकह्यो हैयह संशयहीन॥ बरवै॥ मुखते लैकै गुदलों नाड़ी जौन। जानु परम योगिन को मारग तौन॥ मूर्द्धामें यहि पथसों योगी पर्म। प्राप्त करत हैं आत्मा को सह शर्म॥ सोरठा॥ कीन्हें प्राण निरोध होतप्रकाशितब्रह्महै। जानतजिनको बोधभयो परमहै प्रज्ञबर॥

इतिमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिमोक्षधर्म्मेभृगुभरद्वाजसंवादेद्वादशोध्यायः

भरद्वाजउवाच॥ दोहा॥ जीवत बोलतबायुही चेष्टाकरतअनन्त। श्वास लेतजो बायुही तौ निरर्थ यहजन्त॥ अन्नादिककोउदर मेंशिखिहि पचावतपर्म। तौनिरर्थहै जीवभृगु प्रज्ञावानशसर्म॥ बायु न चेष्टा सकतकरि शिखिनहिं सकतपचाय। जो तुम यह गुणिकै कहौ तोसुनिये बुधराय॥ ताकोजीवन परतलखि जौन होतहै नष्ट। नशति ऊषमा तजत तन बायुहि कहत सपष्ट॥ याते बायुबियोग जो मर्ण जानियेसोय। जीवहै न अनुमान ते कहततुम्हैं हौं जोय॥ मिल्यो मरुतसों होयजो तौ मारुतसह-पर्म। जीव चलत जान्योपरै भृगुबरप्रज्ञ सशर्म॥ और सुनहु भृगुमरुतसों मिल्योहोत जो जीव। पृथकहोत जब मरुत सों परतदेखि बुधिसीव॥ जिमिजलमाहीं उपलसह डारीतुम्बी-तौन। जबबन्धन गरिजात तब पृथक्होति बुधि भौन॥ पंच भूतसों रहतिहै ऐसी जो यहदेह। जीवकहांतिमि माहँहैकहिये बर बुधिगेह॥ सोरठा॥ मञ्चाको यक देश ताको भयेबिनाश जिमि। नाहींरहतबुधेश होतनाशसब मंचको॥ दोहा॥ इमिहि भूत संघातमें यकको भये अभाव। निश्चयहोत अभावहै सब हिंनको बुधराव॥ सोरठा॥ पुरुष मंचमेंजौन नाशहोतजबमंच को। देखिपरतहै तौन पृथक्मंचते प्रज्ञबर॥ ऐसेही जो जीव

होतभूत संघातमें। परतोलाखि मतिसीव भयेनाश संघात को॥ दोहा॥ जौनहेतु सों होतहै नष्टभूतसंघात। तौनहेतु मैंकहतहौं तुमको बुधबिख्यात॥ सलिलपियेबिन सलिल अरु वायुरोध ते बाय। वायुभरे नभउदरको नष्टहोतबुधराय॥ बिनभोजन कीन्हें सुनो पावक सो नशिजात। नष्ट होति अरु व्याधि सों भूमि सुबुधअवदात॥ इनपांचहुमें एकजो पीड़ितहोयअशेश। पृथक्पृथक् ह्वै जायतौ सबही भूत बुधेश॥ पृथक्होतजबभूत तब कहिके पीछेजात। जीवकहा जाननसुनन बोलनकहु बिख्यात॥ याते जो संघातहै सोई जीवसुजान। भिन्न और नाहिं जीवहै निश्चयाकियो महान॥ और जीवनहिंतो सुनो नाहिं परलोक समर्थ। जो परलोक नतो सरब दानादिक हैं व्यर्थ॥ यहसुगऊ परलोकमें करिहै मो उद्धार। यह बिचारिजो देतजन भृगुऋषि बुद्धिअगार॥ सोदैकरि मरिजातहै गोतारनिहैकाहि। प्रज्ञावान महानप्रभु कहोमोहिंअवगाहि॥ दातागोप्रतिगृहीता अत्रहिं सब मरिजात। कहा समागम होतहै तिनको कहु बिख्यात॥ जौनजीव मरिजातहै होतकहा पुनितौन। पर्वत सों गिरिअग्निसों जरि करिकै बुधिभौन॥ सोरठा॥ कटोजौनहैवृक्ष तासुमूलनहिं लहतफिरि। ताकेबीच प्रतक्ष प्रवृत्तहोतहैप्रज्ञबर दोहा॥ होतबीजते बीजहै मृतक मृतक सबनष्ट। होयजात है सुऋषिभृगु मैं हौं कहत सपष्ट॥

इतिमहाभारतेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेभृगुभरद्वाजसंवादेत्रयोदशोऽध्यायः १३

दोहा॥ दानादिक औ जीवनाहिं नष्टहोतबुधिगेह। देहान्तर को लहतहै जीव नशतहै देह॥ नष्टभयेते देहनहिं जीवनष्ट ह्वै जात। दग्धभयेते काष्ठजिमि पावकनहीं नशात॥ भरद्वाजउवाच॥ दग्धभयेते काष्ठजिमि नष्ट न होतकृशान। तिमिहिं नशेतेजीव को नष्ट न होत सुजान॥ कहतआपुइमि तौ सुनहु इन्धन जब जरिजात। पावक नहिं लखि परतहैसुनहुप्रज्ञ अवदात॥ देह-

द्धानुबर होतहै काष्ठ बिना जबशान्त । जानत ताको तष्ट भो तासुगति न हमदान्त ॥ भृगुरुवाच ॥ बिनआश्रय जबहोत शिखि सूक्षमङ्के नभमाहिं । प्राप्तहोत यातेबिना काष्ठपरत लखि नाहिं ॥ सोरठा ॥ तिमिहि नशेते देह जीवरहत है व्योमवत । जानौ सो बुधिगेह जात अल्पतातेनहीं ॥ दोहा ॥ प्राणनको धारण करत शिखि आत्मामयजौन । देहनशेसो नहिं नशत शिखि आत्मामय तौन ॥ आत्मामय जो अग्निजब तनहि तजतहै दक्ष । तबसो तनमिलि जातहै भूकेमाहिं प्रतक्ष ॥ चर अचरणके मरुतनभ अग्निमहा नभमाहिं । प्राप्तहोत अरुभूमिजल भूके माहिं समाहिं ॥ जहँ अ-काश तहँ पवनहै पवनजहां सुकृशान । हैं अमूर्ति ये देहमें होत सुमूरतिमान ॥ भरद्वाजउवाच ॥ जलभू नभ शिखिमरु तही जो शरीरके माहिं । तौ लक्षणहै जीवको कहा कहौ मोपाहिं ॥ पञ्चभूतसों जो बन्यो पञ्चाबिषयरत जौन । ज्ञानेन्द्रिय हैं पञ्चबर जिहिमाहीं बु-धिभौन ॥ ऐसो जौनशरीरहै तामेंजोहै जीव । ताहि जानिबेकी करत इच्छाहौं मतिसीव ॥ देहखण्ड खण्डहु किये जीवपरतनहिंदेखि । मांस अस्थि शोणितबसा मेद परतिहै पेखि ॥ जो हम भौतिक देहमें जीवहिमानैंनाहिं । तौजानतहै दुःखको को शरीरके माहिं । जीवसुनतहै बैन जो कहौ सुनहु तौपर्म । होतव्यग्रजब चित्ततब जीवन सुनत सशर्म ॥ मोदित मन युत चख लखत सबहि ज-गतके माहिं । व्याकुलमन जबहोत तब लख्यो लखतहै नाहिं ॥ निद्रावश जबहोततब लखत न सुनत नबैन । सूंघत बोलत र-सपरश जानतनाहिं बुधिऐन ॥ कौनक्रोधऔ शोचको करतकौ-नकोहर्ष । इच्छा दोषहि करतको बोलतको उत्कर्ष ॥ भृगुरुवाच ॥ अंतरात्मा जीवजो सोय चलावत देह । नहीं चलावत भूतऔ मनतनको बुधिगेह ॥ सोईजानत गन्धरस सोअरपर्श स्वरूप । सोई जानत शब्दको अन्य न सुबुध अनूप ॥ मनजिहि इन्द्रिय के निकट होतसुइन्द्रिय तौन । ग्रहणकरतिहै बिषयको कहत

आपु बुधिभौन ॥ ताकोकारण यह सुनो अन्तरात्मा जौन ॥मनके निकटै रहतहै इहितै सुनुबुधिभौन ॥ मनबारे सहभावसों इन्द्रियसर्ब सुजान । ग्रहण करतिहै बिषयको जानो निजुहिमहान ॥ अंतरात्मा जीवबिन मनइंद्रिय सों सर्ब । बिषयग्रहणकरवायनहिं सकत सुप्रज्ञ अखर्ब ॥ स्वक्षसुषुप्तिससाधि में अन्तरात्मा पर्म । प्राप्त होत ब्रह्मांड में है वर प्रज्ञ सशर्म ॥ तव मन औ इन्द्रीय सब रहतेहैं एकत्र । पै न बिषय को करि सकत ग्रहण न संशय अत्र ॥ उकक्षा ॥ जब शरीरकी शान्त । अग्नि होत है दान्त ॥ नष्ट होति तब देह । आत्मा नहिं बुधिगेह ॥ चरणा दोहा ॥ आत्मा सो क्षेत्रज्ञ कहावत गुण संयुक्त सुवेश । निर्गुणभये कहावत सोई परमातमा बुधेश ॥ दोहा ॥ रहत देहके माहिं सो ऐसे हैं क्षेत्रज्ञ । रहत कमलके पत्रमें जैसे जलकण प्रज्ञ ॥ भेदेदेहहि जीवको होत नहीं है नाश । कहत अबुधजन तौन है मिथ्या सुनु बुधिराश ॥ देहान्तरको होतहै प्राप्त जीव भरद्वाज । जानतहैं तब जीवको नाश अप्रज्ञ समाज ॥ सब भूतनमें फिरतहै जीव गुप्त ह्वै पर्म । सूक्षम मतिसों लखतहै ताको प्रज्ञ सशर्म ॥ योग निरन्तर करत जे लब्धाहारी होय । आत्माको बरबुद्धिमें तौन सकतहै जोय ॥ जासु बिमलहै हृदयसो कर्म शुभाशुभ त्यागि । रहत निरन्तर महत है मोक्ष मोद में पागि ॥

इतिमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेचतुर्दशोध्यायः १४ ॥

दोहा ॥ पूरब पूछो आपहौ भूतभये किमि सर्ब । औभो बर्ण बिभाग किमि सुनिये तौन अखर्ब ॥ अरिल ॥ मरीच्यादि वरविप्र प्रजापति । तेजोमय शिखि सविता सम अति ॥ तिन्हैं बनावत भयो प्रथम बिधि । तदनु सुनो भरद्वाज सुमतिनिधि ॥ सत्य वेद अरु तपस धर्मतर । स्नादिक आचार सर्ववर ॥ शौचसुप्रायश्चित्तादिक पुनि । स्वर्ग प्राप्तिके काज द्रुहिण गुनि ॥ करतो भयो तदनु सुर दानव । राक्षस यक्ष नाग अरु मानव ॥ तिमिहि

पिशाच भयोसो बिरचत। बहुत रूप धारणमें तेरत॥ दोहा॥
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यअरु शूद्र चारिये बर्ण। तिनको करतबि-
भागभो तदनु द्रुहिण मतिधर्ण॥ ब्राह्मणको सितबर्ण है अरु
क्षत्रिय को लाल। पीतवैश्यको शूद्रको श्याम सुप्रज्ञ बिशाल॥
ब्राह्मणकेहै सत्त्वगुण रज क्षत्रियको पर्म। श्वेत अरुण यातेव-
रण हैंहे प्रज्ञ सशर्म। रजतम मिश्रित वैश्यहै तमहि शूद्रमेंहोत।
पीतश्यामहैं बर्णहे याते प्रज्ञापोत॥ भरद्वाजउवाच॥ श्वेतादिक जे
बर्ण हैं तिनसों कियो बिभाग। बिप्रादिक सब बर्णको तौसुनिये
बड़भाग॥सबबर्णनमें बर्णको शंकर देखोजात। किमिबिभागभो
बर्णसो बर्णको कहुबिख्यात॥ और सुनोजे बर्णसब बिप्रादिक
बुधिधाम। तिनमें भय चिन्ता क्षुधा लोभक्रोध श्रम काम॥ ति-
मिहि शोक लखि परतहै क्षण क्षण माहीं पर्म। कैसेबर्ण बिभाग
भो कहिये प्रकट सशर्म॥ और सुनो तुम सबहि के तनते शो-
णितस्वेद। गिरत मूत्रपूरीष किमि बर्ण बिभाग सबेद॥भृगुरुवाच॥
ब्रह्मा कीन्हो जगत यह याते ब्राह्मण सर्व। हैनाहिं बर्णबिभाग
यह जानो प्रज्ञ अखर्ब॥ बर्ण ताहि प्रापतभयो कर्मनसोंसंसार।
याते बर्ण बिभाग को कारण कर्म उदार॥ काम भागहै प्रियजि-
नाहिं क्रूर क्रोध बशपर्म। रज गुण मयह्वै तजि दियो अपनो जो
है धर्म॥ सहसा करिकै करतहै कर्म सदाही जौन। ब्राह्मण ऐसे
होतहै क्षात्रिय बर बुधिभौन॥ सुरभी सों अरु कृषी सों वृत्तिजे
करत सदाहि। रज तम मयह्वै करत जे अपने कर्महि नाहि॥
ऐसे ब्राह्मण जौनहैं होत वैश्य हैं तौन। जानहु भारद्वाज यह
निश्चय बर बुधिभौन॥ जिनको प्रिय हिंसा अनृत लोभी तममय
पर्म। करत जीविका आपनी जौन सर्व करि कर्म॥ शुचिता सों
परिभ्रष्ट हैं ऐसे ब्राह्मण जौन। शूद्रताहिते लहतहैं जानो निज
बुधिभौन॥ चरणादोहा॥ इन कर्मन सों बर्णान्तरको होतप्राप्त
द्विजदक्ष। बर्णान्तर की प्राप्ति को हम हेतु कह्यो परतक्ष॥ धर्म्म

जौन बेदोक्त है तामें तत्पर जौन। नीच जातिमें होतहै प्रापत ब्राह्मणतौन ॥
इतिमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिभृगुभरद्वाजसंवादःपचंदशोध्यायः १५ ॥
भरद्वाजउवाच ॥ दोहा ॥ ब्राह्मण उत्तम होतहै कौन कियेते कर्म। कौनकर्मते होतअरु क्षत्रिय कहौसशर्म॥ औसुनु बैश्यक शूद्रते कौन कर्म ते होत। कहो आपु अवगाहिकै मोको प्रज्ञापोत ॥ भृगुरुवाच ॥ प्रथम जन्मतहि होतहै संसकार जो स्वक्ष। जातकर्म तिहिको कहत तिहि आदिक सुनुदक्ष ॥ चत्वारिंशत अष्ट औ संसकारहैं पर्म। युक्तहोय तिन सवनसों औ शुचिहोय सुधर्म ॥ स्नान देवपूजन परम होम अतिथि सत्कार। सन्ध्या जपये नित्यके हैं षटकर्म उदार॥ युक्तहोय तिन सबन सों बिधिवत पढ़ै सुवेद। रहैगुरूकी भक्तिमें तत्पर होय अखेद॥ सत्यमाहिं तत्पर रहै नित्यहि लोभ बिहाय। ताको कहिये विप्रवर भरद्वाज बुध राय ॥ युद्धमाहिं तत्पर रहै पढ़ै वेद अवदात। दानदेय बर द्विजनको आदर सह बिख्यात॥ प्रजा पालिकै नीतिसों लेयआपनोभाग। क्षत्रिय ताको प्रज्ञबर कहिये सुनु बड़भाग॥करैंजीविका पशुनसों तिनहिं कृषीसो जौन। बेद माहिं तत्पर रहै बैश्य कहावततौन॥ सदा सर्ब भक्षणकरै तिमिहि करै सबकर्म। बेद रहित आचार सों शूद्र कहावत पर्म॥ चंचला ॥ बिप्र माहिं बिप्रके न कर्म जोपरैं लखाय। शूद्र माहिंकर्म शूद्रके परैंनहीं दिखाय॥ बिप्रको सुबिप्रतो कहीन शूद्र शूद्रकौन। मैं कह्यों बिचारिकै तुम्हैं सुनो सुबाद्धि भौन॥ रामगीती ॥ वर विप्र ताको मूल कारण कहतहौं अब अत्र। तुम मनहिं थिरकरि सुनहु सो भरद्वाज प्रज्ञपवित्र॥ नित करै निग्रह कामको अरु क्रोधको अतिमाम। येकरत दोऊघात सुखकी परम प्रज्ञाधाम॥नितकरै रक्षा लक्ष्मीकी क्रोधताजि भरद्वाज। तिमि छोड़ि मत्सर करै रक्षा तपस की सुख साज॥ तजि औरको अपमानको औ आपनो अभिमान। नितही सुरक्षण

करै विद्याको महा मतिमान ॥ कबहूं प्रमाद न करै मांगै कछूकाहू सोन । नित कामना बिन होम दानहि करतहै बुधि जौन ॥ है सोयत्यागी सोय प्रज्ञावानहै अवदात । है तासुसम नहिं और कोऊ जगतमें विख्यात ॥ नहिंधरै हिंसा भावको भोरहै सबको मित्र । अरु बुद्धि सों इन्द्रियनको गण जीति प्रज्ञ पवित्र ॥ बर होय आत्मध्यान माहीं प्रज्ञ तत्परपर्म । तजि सुतादिकको मोह करिकै स्वस्थ चित्त सशर्म ॥ दोहा ॥ अजित जौन कामादि हैं तिन्हैं जीतिबे काज । इच्छाजो मनमें करै तौ सुनिये भरद्वाज ॥ पुत्रादिकके संगमें रहै असंगीसोय । हर्ष शोक कबहुं न करै तिनके सुखदुख जोय ॥ अजित जीतिबेकी करै जौन कामना स्वक्ष । तौन करैजो योगबर सो हम कहत प्रतक्ष ॥ बरवादोहा ॥ जाको होत ग्रहण इन्द्रिय सों तौन कहावत ब्यक्त । अरु जाको नहिं होतग्रहणहै ज्ञानहु सो अव्यक्त ॥ गुरु औ श्रुतिके बाक्यमें राखिये सुबिश्वास । अबिश्वासमें राखिये कबहुं न मन बुधिरास ॥ ताहि जानिबेकी परम इच्छा हियमें राखि । रहै गुरूकी भक्तिमें तत्पर मिथ्यानाखि ॥ प्राण बायुमें धारिये मनको अरुजो प्रान । तिहिको धरिये ब्रह्म में करिके योग महान । बिन बैराग्य न होतहै प्राप्त ब्रह्ममेंप्रान ॥ यातेबर बैराग्यको साधन करै सुजान ॥ वैराग्यहि सो लहतहै ब्राह्मण ब्रह्महि पर्म । बिन बैराग्य न लहतहै जानु सुनिजुहिं सुधर्म ॥ होत शौचसों युक्त अरु सदाचार सों स्वक्ष । अरु सब भूतनमें दया धारैजो द्विजदक्ष । सोअधिकारी योगको होय विज्ञ भरद्वाज । और योगको होत नाहिं अधिकारी बुधराज ॥ अधिकारी जब होतहै परमयोगके स्वच्छ । तबअधिकारीहोतहै ब्रह्मप्राप्तिकोदक्ष ॥

श्रीमहाभारतशांतिपर्वणिमोक्षधर्म्मेभृगुभरद्वाजसंवादःषोडशोऽध्यायः १६

दोहा ॥ शुक्लविप्रको धर्महै कृष्ण शूद्रकोधर्म । कह्योपूर्वअध्याय मेंतुम यहप्रज्ञसशर्म ॥ तिनदोउनके रूपकोपृथक् पृथक्अभि-

राम । करिविवर्णहमको कहौ भृगुबर ऋषि बुधिधाम ॥ भृगुरुवाच ॥
अरिल ॥ वेदब्रह्मकोप्रात करावत । औस्वधर्महू मतिबरगावत ॥
येहीदोऊ लोकहि धारत । इनहीसों जनदिवहि पधारत ॥ सत्य-
रूप येदुश्रो सुमतिघर ।शुक्कधर्महै बिप्रनको वर ॥ धर्मशूद्रको
जोहै श्यामल । सुनहु तौनश्रब सो प्रज्ञाबल ॥ उक्कहा ॥ वपुअ-
सत्यको श्याम । तिहिते मानवमाम ॥ जातनरक के माहिं । ल-
खतस्वर्गको नाहिं ॥ शुक्कस्वर्गकोस्वक्ष । श्याम नरकको दक्ष ॥
कहतेहैं भरद्वाज । प्रज्ञामान दराज ॥ रामगीती ॥ सितअसितसत्य
असत्य दोऊ होत समजवप्रज्ञ । तव मनुज योनिहि जीवपावत
भनतहैं बरबिज्ञ ॥ तहँकरत सत्यअसत्य सेती धर्मऔर अधर्म ।
सुख दुःखकोहै होतप्रापत भरद्वाजसशर्म ॥मल्लिका॥ सत्यतेसुहात
धर्म । धर्मते प्रकाश पर्म ॥ जोप्रकाश है अमन्द । होततौन ते
अनन्द ॥ औअसत्य तें महान । होतहै अधर्मभान ॥ औअध-
र्मते नितान्त । होतहैसुजान ध्वान्त ॥ दुःखध्वान्तते अशेश ।
प्राप्तहोतहैं बुधेश ॥ दोहा ॥ तनमनके जेदुःख सुख तिनसोंयुत
जगसर्ब । ताहिनिरखि मोहनकरैं प्रज्ञावान अखर्ब ॥ लोकनमें
जोश्रेयहैं दुःखहि ताके अन्त । मोक्षारथ साधन करैं याते प्रज्ञ
भनन्त ॥ एकश्रेय शारीरहै औहैमानसएक । श्रेयदोयपरकार
के होत सुनो सबि वेक ॥ तिन दोउनकी प्राप्तिको यत्न करत
हैं सर्व । अर्थमोक्षके करतहैं कोउ न यत्न अखर्ब ॥ भरद्वाजउवाच ॥
अर्थश्रेय की प्राप्ति को यत्नकरत सबकोय । कह्यो आपुयह सो
नहीं कहत तुम्हैं हम जोय ॥ बड़े बड़े हैं सुऋषिजे तिन्हैं
तपस्या माहिं । प्राप्त रहत सबश्रेय हैं पै चाहत हैं नाहिं ॥
और सुनो सब लोक कृत ब्रह्मा जो सर्बज्ञ । एकाकी सो रहत
नहिं चहत काम सुखप्रज्ञ ॥ भस्मदयो करि कामको महादेव
भगवान । कामश्रेयजो चहततौ क्यों जारतमतिमान ॥ चहत
काम सुख महत नहिं याते मोमन माहिं । आवति नहिं जो तुम

कही सुऋषि हमारे पाहिं ॥ और सुनो जो कहततुम सुखते कछू न अन्य । सुख औदुख द्वै परत हैं देखि जगतमें धन्य ॥ लहत पुण्यते श्रेयअरु अघते दुःखमहान । यह तुमको अवगाहि मैं कहत सुऋषि मतिमान ॥ भृगुरुवाच ॥ होततमोगुण अनृतते ताते हैयुत जौन ॥ महत अधर्माहिं माहिं नित प्रवृत रहतहैं तौन ॥ प्रापति भये अधर्ममें दोऊ लोकन माहिं । बिबिध भांतिके सह-तदुख श्रेयलहतहैं नाहिं ॥ अरिल ॥ युक्त तमोगुणसों नहिंजेजन । सुखको प्राप्तहोतहैं तेजन ॥ जौनतमोगुण माहिंरहत रत । तौन दुःखहीमाहिं रहतगत ॥ स्वर्गलोकमें हैसुखहीत्र्वर । मारुत बहत महा शीतलतर ॥ छायोरहत गन्धहै सुन्दर । जड़ितहेमके हैंजहँ मन्दिर ॥ जहँनहिं जरा पिपासा क्षुतश्रम । ब्यापतहै निश्चय जानोतुम ॥ दोहा ॥ सुखऔ दुख यहिलोकमें ब्यापितहैं बरप्रज्ञ । दुःखहि केवल नरकमें महत कहतहैं बिज्ञ ॥ जानि अल्प यहि लोकके सुखको मानव दक्ष । करैंयत्न अवगाहिकै स्वर्ग प्राप्तको स्वक्ष ॥ स्वर्गहुको सुख जानिकै तुच्छ दक्षबरजौन । करतमोक्ष के यतनको भरद्वाज बुधि भौन ॥ आभीर ॥ जौनमोक्षको शर्म । नि-त्यजानुसोपर्म ॥ लोकान्तरको जौन ॥ नित्य शरम नहिंतौन ॥

श्रीमहाभारतेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेभृगुभरद्वाजसंवादःसप्तदशोध्यायः १७ ॥

दोहा ॥ कहासुफल है दानको कहा होमको पर्म । तपको अरु अध्ययन को फलहै कहा सधर्म ॥ अरु कीन्हों जोधर्महै तासु कहा फलचारु । कहोमोहिं अवगाहिकै भृगुऋषि बुद्धिअगारु ॥ भृगुरुवाच ॥ भोगामिलत है दानसों नशत होमसोंपाप । तपसों प्रापत होत दिव निश्चय जानहु आप ॥ बिषयमें नमन लगत है कीन्हेते अध्ययन । यामें संशय है नहीं भरद्वाज मतिऐन ॥ दानदोय परकार को कहत मनीषी पर्म । तेदोऊ हम कहत हैं तुमको सुनहु सधर्म ॥ जयकरी ॥ सुबुधनको दीन्हींजोदान । तिहि ते मिलत स्वर्ग मतिमान ॥ औ अबुधनको दीन्हों जौन । ताते

सुनहु सुऋषिबुधिभौन ॥ कहहिं लोकमेंकछु सुखहोत । प्रापत कहत सुप्रज्ञापोत ॥ देत सुमानव जैसोदान । तैसोफल पावत मतिमान ॥ अपने धर्ममाहिं जनजौन । युक्तरहतहैं प्रज्ञाभौन ॥ तेजन जात स्वर्गके माहिं । यामें नेकहु संशयनाहिं ॥ भरद्वाजउवाच ॥ सोरठा ॥ चारिहु आश्रम जौन कहे ऋषिनके प्रज्ञवर । तिनको तुम बुधिभौन मोहिंकहौ आचरण सब ॥ भृगुरुवाच ॥ हरिगीतो ॥ बरधर्म रक्षणहेतु ब्रह्मा रचेआश्रम चारिहैं । तिनसबन कोआचरण तुमसों कहत हम निर्द्धारिहैं ॥ जोबास गुरुकुल माहिं कीबो प्रथमआश्रम तौनहै । तिहिंमाहिं शौच सुनियम ब्रत गहिरहत बरबुधि भौनहै ॥ रबि अग्निकी अरु और देवनकी खराक्के प्रेम सों । नितदुओ संध्या माहिं स्तुतिहि करैमनगाहि नेमसों ॥ अरु स्नानतीनिहु काल माहींकरै आलस त्यागिकै । गुरुदेव कोनिति नौमिबेदहि पढ़ै मतिमें पागिकै ॥ सुनि बारताबर धर्मबारी स्वन्न अन्तहकरणको । गुणिकैकरैअरु करैहोमहिनित्यकल्मष हरणको ॥ नितकरैसेवा गुरूकी धरिहियेमाहींप्रीतिको । अरुगुरुआगेधरै भिक्षा ल्यायगुणिकै रीतिको ॥ गुरुकी कृपाते प्राप्तभो अध्ययन नित्यहि तौन में । रतरहै मनको लायकै यह कह्यो निज बुधि भौनमें ॥ दोहा ॥ गुरुको जो आराधि कै पढ़त वेद अवदात । स्वर्गलोकमें प्राप्त ह्वै सो जन समुद बिख्यात ॥ करै जौन संकल्पहै होत सिद्धिहै सर्ब । यामें संशय हैनहीं सुनिये सुबुधअखर्ब ॥ कहत सुमुनि गार्हस्थको आश्रम दुतिय अमन्द । ताको जो आचरण सो सुनहु सुऋषि निर्द्वन्द ॥ ब्रह्मचर्य आश्रमहि करि पूरण बिधिवत पर्म । फेरि गृहाश्रमको करै कीबे तियसह धर्म ॥ आभीर ॥ धर्म अर्थ अरुकाम । त्रिवर्ग इनकोनाम ॥ इनके साधन काज । सुनिये भारद्वाज ॥ संजुगिता ॥ बिधिसों सुयज्ञ करायकै । अथवा सुजनहि पढ़ायकै ॥ अथवा प्रतिग्रह लेयकै । अथवा सुदेवहि सेयकै ॥ अथवा सुसागर माहिंते ॥ अथवासु

पालैपाहिते ॥ धनलै गृहाश्रमकोकरै।कबहूंनधर्म तजै बरै॥दोहा॥ सबआश्रमको मूलहै गृहस्थाश्रम मतिमान । यामेंसंशयहैनहीं बरबुध भनतमहान ॥ त्रिभंगी ॥ जेगुरुकुलबासीअरु संन्यासीनेम बिलासी औरतिते । गृह आश्रमनीको धर्मगतीको तासोंनिबैहैं सर्बतिते ॥ यामें मतिआनो संशय जानो निजुहि बखानो सत्य तुमैं । जेमतिसोंछाये बरबुध गाये कहतेआये तौनहमैं ॥ दोहा ॥ बिनबोये जे अन्नहैं तिनकोखात सदाहिं । रहैनिरत अध्ययनमें करै क्रोधकोनाहिं ॥ चरखादोहा ॥ ऐसे बानप्रस्थसे मतिबर सुनिये भारद्वाज। फिरन लगतहै पृथ्वी माहीं तीरथयात्रा काज ॥तिन्हैं लखै जोदूरिसों तोउठि सोहैं जाय । लखै निकट तौ शीघ्रउठि आदर करै सचाय ॥ आभीर ॥ कहै सुकोमल बैन । अतिहीउज्ज्वलऐन ॥ तामेंचारु बिछाय।आसनअति सुखछाय ॥ बैठावैतिनमाहिं । करै असूया नाहिं ॥ चरखादोहा ॥ अतिथि निराश होय कै जाके गृहतेफिरै सुजान । तासुपुण्य तौ लेयजातहै कैकैपाप महान ॥ नरेश ॥ गृह आश्रम माहिं सुजानहे । मखसों सुरवृन्द महानहे ॥ लहि तृप्ति प्रसन्नसोंहोतहैं । सुखवृन्द बिलन्द तनोत हैं॥ अरिल ॥ लहत श्राद्धसों पितर तृप्तिबर ।अरु बिद्याव्रत बरसों बुधिधर ॥ होतप्रसन्न सुनहु बुधि सागर । अरुअपत्यसों द्रुहिण उजागर ॥चरखाकुलक॥ दयासर्ब जीवनमें राखै । बचन मधुर सबही को भाखै ॥ काहूको जो है दुख दीबो । अरु बिनाश काहूको कीबो ॥ अरुकुबैन जे क्रोध समेते । निंदित कर्म गृहीके येते ॥ अरु जो अहङ्कार हिय धरनो । अरुकाहूको परिभव करनो ॥ येऊ निन्दित परम गृहीको । कहत तुम्हैं मति में करिजीको ॥ रामगीती ॥ अहिंसा औ सत्य औरे अक्रोध येत्रयजौन। परमतप हैं सर्ब आश्रममाहिं सुनु बुधिभौन॥ बिबिध बिधिकेबसन भूषण नृत्यबाजन पर्म । श्रवणको सुख कर्णिबार्त्ता दर्श पर्शअभर्म ॥ बिबिध बिधि के चारु भोजन चन्दनादि सुगन्ध । काम अरु

व्यवहार जेबहु औ सुरागप्रबन्ध॥ और बरइनसबनहींको गृहा-श्रमहीमाहिं। और आश्रम में नहीं है अत्र संशय नाहिं॥ धर्म अर्थ सुकामको जिहि गृहीके आनन्द। श्रेष्ठजनकीगतिहिपावत गृहीसो निर्द्वन्द॥ सोरठा॥ पशुनगृहस्थ सुजौन उंछवृत्ति को गहतहैं। तिनको बरबुधिभौन स्वर्गलोक नहिंदुर्लभ॥ आभीर॥ कणचुनिवो हैं जौन। उंछकहावै तौन॥

इतिश्रीमहाभारतेशांतिपर्वणिभृगुभरद्वाजसंवादेऽष्टादशोऽध्यायः १८॥

भृगुरुवाच॥सोरठा॥बानप्रस्थहैं जौन पगेधर्ममें निशिदिवस। पुण्य तीर्थहैंतौन स्नानजाय तिनमें करत॥हरिगीती॥ मृगमहिष औवा-राहगज शार्दूलहैं बन जौनमें। बरबानप्रस्थ सुफिरतहैं तपकरत अतिबन तौनमें॥ तजिवस्त्रकोहैं करतधारण चीरवल्कल चर्म-को। अरुचारु भोजन छोड़िभक्षत मूल अरु फल पर्मको॥ नख रोमकेशहि दुष्यको सहि कियेधारण रहतहैं। अरुस्नान तीनहु काल माहीं करतदाया गहतहैं॥ महिमाहिं अरु पाषाणमें अरु भस्म बालूमेंपरे। कबहूं सुकंकर युक्तभूमें करैंशयन सुमतिभरे॥ निति करत बलिअरु होमको विक्षेपको नाहिं करतहैं। कुशस-मिध कुसुम सुमूल फलके काज बनमें चरतहैं॥ सुनुयहीहै विश्रामतिनको दिन बितावनको महा। बहुशीत उष्ण सुपवन वर्षा सहत धीरजसों नहा॥ दुखसहेते शीतादिकोत्वच उपाड़ि तिनके रहतहैं। तबहूं धरेहैं रहत धीरज ज्ञानमान सुमंहतहैं॥ आहारलघु पञ्चाग्निसाधन कियेभारद्वाजहे। अरुफिरै शोणित मांसतिनकेसूखिअस्थि सुसाजहे॥त्वचअस्थिही रहिजातबाकी सर्बतिनकी देहमें। गुणसत्वतेतिनको निबाहत कहत सतिबुधि गेहमें॥ दोहा॥ बानप्रस्थआश्रमहि जोकरत नेमसोंपर्म। शिख लौं दोषनको दहत निश्चय तौन सधर्म॥ अतिही दुर्लभलोक जे तिनमें प्रापतहोत। यामें संशयहैनहीं भरद्वाज मतिपोत॥ जयकरी॥ संन्यासिनको जो आचार। सुनहुतौन अब बुद्धि अ-

गार ॥ रामगीती ॥ अग्नि धन अरु भार्य्यादिक छोड़ि तिनाहिं अभर्म । भोगसामग्री जिती सब तिती छोड़िसधर्म ॥ नेहफांसी काटिकरिकै कढ़ैंगृहते दक्ष । लखैं कंचनढेल औ पाषाणसमहि प्रतक्ष ॥ धर्म अर्थ सुकाम साधन माहिंहोय अशक्त । उदासीन सुमित्रअरि समभाव माहीं रक्त ॥ भूतथावर जंगमनमेंकरैं द्रोहैं नाहिं । कहूंस्थान न करैं जंगम रहैं भूकेमाहिं ॥ फिरैंपर्बत माहिं औ तटनदीके बुधिधाम । देवतनकेथानमें अरु बिपिनमेंअति-माम॥ बासकीजै ग्राम अथवा नगर पासैजाय।पांच रजनीनगर माहीं रहैंसुनु बुधराय ॥ ग्राममाहीं एक निशि कै बास जाय अन्यत्र । जायभोजन काजद्विजके जानि परमपवित्र ॥ पात्रमें जो करैंभिक्ष्या लेयसानँद ताहि । कबहूंकाहूपाहिंमाँगैं आपुभि-क्षा नाहि॥ दोहा ॥काम क्रोध अरुलोभ अरु मोहदर्प अभिमान । औहिंसा निन्दारहैं इनसों बिगत सुजान॥ सबभूतनको अभयदै फिरतेहैं मुनिजौन । सबभूतनते भीतिका प्राप्तहोत नहिंतौन ॥ देहमाहिंजो अग्निसो अग्नि होत्रकोमानि । तौन अग्निमाहींहु-तै भिक्षाहबि अनुमानि॥भिक्षाकोजो भक्षिबो भक्षणसमुझैनाहिं। होमकरब समुझैं परम अपनेहियके माहिं ॥ जयकरी ॥ ऐसेसंन्या-सीहैंजौन । भरद्वाजसुनु ब्रह्माभौन ॥ यज्ञकारकै लोकहिपाय । रहतपरम आनँदसों छाय॥ दोहा ॥ संन्यासाश्रममें रहत बिधिव-तजे जनप्रज्ञ । ब्रह्मलोकमेंप्राप्तते होत सुनहुधर्मज्ञ॥भरद्वाज उबाच॥ सुनतेहैं हमब्रह्मको पैजानतहैं नाहिं । ताहि जानिबेकी कहौ तुम उपाय मोपाहिं ॥ भृगुरुवाच ॥ रामगीती ॥ नासिकाको भागउ-त्तर मध्यभ्रूको जौन । ब्रह्मप्रापत होनकोहै थानउत्तम तौन॥ ब्रह्मको तहँ लखतहैं बुधसाधि प्राणायाम । कहत निजुकै तुम्हैं भारद्वाज मेधाधाम॥ रहितजे पापादिसोंहैं पहुंचिकैते तत्र । निरउपद्रव होत हैं सुनु हैन संशयअत्र ॥ ब्रह्म प्रापति होन को जो परम उत्तमथान । रहत हैं नितताहां जे बुध सुनहुबर

मतिमान ॥ ब्रह्महीमें रहत तत्पर नित्यही सानन्द। अन्य में मनलीन देत न सुनहु सुऋषि अमन्द ॥ तृप्ति नित्यहि रहतहैं तहँ महत सुखसों पूरि। करतहैं अशमारिकी इच्छान याते भूरि॥ ब्रह्मप्रापति होनको भ्रूमध्यजो है थाम। भयेप्रापत तहां हे पै जौनहैं सहकाम ॥ फेरि आगम होततिनको जगत माहीं दक्ष। जे सकाम न ब्रह्ममें ते लीनहोत प्रतक्ष॥ साधि प्राणायामको जन किते लहिकै सिद्धि। करत पर उपकारको हैं सुनहुवरबुधिनिद्धि॥ राखतनहीं हियमाहिं ममना हेतुयानेनौन। होतलिप्ति न कर्म फलसों कहत प्रज्ञाभौन॥ सिद्धिलहिकैकिते स्वारथ माहिं तत्परहोत। कहतहौं अवगाहि तुमको सुनहुप्रज्ञा पोत॥ सिद्धिकोजे प्राप्तह्वैकै करत पर उपकार। होत हैं आनन्द काते प्राप्तबुद्धिअगार॥ स्वार्थहीमें रहततत्पर सिद्धिलहि कै जौन। दुःखको हैं होत प्रापत सुनहु निश्चयतौन॥ क्षुधाशर्म भयमोहअरु बहुलोकसों अतिमाम। बुद्धिथिरनहिंरहततिनकी सुनहु मेधाधाम॥ बात धर्माधर्मकी सुनि जौन गुणिहियमाहिं। धर्महीमें रहततत्पर करत अधरमनाहिं॥ पापसोंतेहोतलिप्तिन सुबुधभारद्वाज। धर्मके परभावकरिकै कहतप्रज्ञसमाज॥ चरणाकुलक॥ निन्दापरम कपटअरुचोरी। अरुचुगली दुखदायअथोरी॥ दोषारोप सुगुणके माहीं। अरु बोलब मिथ्या सब पाहीं॥ हिंसा पर अपकारहि करिबो। महत दम्भको हियमें धरिबो॥ इन सबहिंनसों स्वक्ष महानी। होति तपस्या नष्ट सुठानी॥ जोइ-नमाहिं लगत है नाहीं। तासु तपस्या बढ़ति सदाहीं॥ दोहा॥ कर्म भूमिके माहिंवर कर्म करत शुभ जौन। शुभफलकोते होत हैं प्रापत सुनु बुधि भौन॥ अशुभ कर्मजे करत ते अशुभहि फलको लेत। यामें संशयहैनहीं ऋषिवर बुद्धि निकेत॥ अरिल॥ ब्रह्मादिकसुर अरुऋषि बुधिधर। कर्मभूमि में करिकै तपवर॥ भये सुब्रह्मलोक में प्रापत। हिये परम आनँदको थापत॥ जय-

करी ॥ होय बृह्मचारी गहिनेम । सेवागुरुकी करब सक्षेम ॥ जोसो सब लोकनको चारु । जानत मारग बुद्धि अगारु ॥ चरणाकुलक ॥ जासों जाय बृह्मपद जान्यो । तौन धर्म तव पास बखान्यो ॥ धर्म अधर्महि जानत जोई । बुद्धिमान है जानहुसोई ॥ भीष्मउवाच ॥ भरद्वाज भृगुकी सुनिबानी । पूजतभये भृगुहि बरज्ञानी ॥ सुनहु युधिष्ठिर भूप सयाने । तुमबूझो हमतौन बखाने ॥

महाभारतेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेभृगुभरद्वाजसम्बादोनामोनबिंशोध्यायः १९

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ होति बुद्धि आचरणसों विमला परम ललाम । याते तुम आचरणबर कहो मोहिं बुधिधाम ॥ भीष्मउवाच ॥ नित्य दुष्ट आचरणमें प्रवृत रहत है जौन । अरु साहस करिकै करत मनआवतहै तौन ॥ अरु जिनकी मतिमें रहै कीबो पर अपकार । मानव तौन असाधुहै भूपति बुद्धि अगार ॥ तत्परजे आचरणमें ते मानव हैं साधु । कहत सुबुध अवगाहि कै जिनको सुमति अगाधु ॥ गंभीर ॥ प्रातैउठै नित्यही नेमधारै । ध्यावै गुरूको हिये प्रेम भारै ॥ स्नानादि क्रियाहिकै और कामै । नित्यै करै हैधरै सत्य मामै ॥ चालै न छोड़ै कबौं वंशवारी । देखै कबौंहू नहीं अन्यनारी ॥ उपदोहा ॥ बिष्ठा मूत्रनकरै कबहुं सूरयके ओरै । राजमार्ग अरु गोनमाहिंनहिं सुरगृहधोरै ॥ सदाआचमन लेय सुउतरै पार नदीके । दया धरेही रहै सर्वदा माहींहीके ॥ पाणि पांव मुखधोय न पोछै भोजन कालै । करै सुभोजन पूरब मुख है शेष है प्रीति बिशालै ॥ सदा भक्षिये मधुर मधुर कहि निन्दाकबहूं । कीजै नाहिं जोबनो होय नीको नाहिं तबहूं ॥ दोहा ॥ दोय काल भोजनकरै करै बीच नहिं फेरि । लहत तौन उपबास फल कहत सुबुध है टेरि । कर्म सुजिहि तिहि कालके तिहि तिहि कालहि माहिं । कीजै मनहि लगायकै आलसकीजै नाहिं । तोटक ॥ नख काटत जो जनदन्तन सों । अशुभैन बिचारतहै मनसों ॥ अरु जो तृणको नित तोरत है । जनजोअरुलो-

छुहि फोरतहैं ॥ नहिं आयु महा नहिं तौन लहै। वरमानवविज्ञ विचारि कहै ॥ मंजुगिता ॥ गुरुको सुआसन दीजिये। उठिकैप्रणामहि कीजिये ॥ गुरुको सप्रेम सुपूजिये। गुणतास बहुविधि कूजिये ॥ नगनानपरतिय देखिये। अरु भानु उवत न पेखिये ॥ रामगीती ॥ देव के आगार में औ गौन में भूपाल। और उत्तम क्रियामें औ तिमिहि भोजन काल ॥ कीजिये कै सव्यकारजकहत आरज पर्म। औतिमिहि शुभकार्य्य कीजे होयकै आमर्म॥ दोहा ॥ छिक्काके अरु छोरके तिमिहि स्नानकेअन्त। अरु भोजनके अन्तमें प्रज्ञावानभनन्त ॥ वड़ोआयुयहमनुजको कहिये वचनसदाहि। यहैवचन कहियेसदा व्याधिनहूकेपाहि ॥ कोक ॥ बड़ेजनहि ना कबौं तुकारिये। औकबौंननाम को उचारिये ॥ औ कनिष्ठ औसमान जौन है। भूपहे तुकारयोग्य तौन हैं ॥ दोष नाहिं सतनामलेनमें। प्रज्ञ पास ये सुनै सुबैनमें ॥ दोहा ॥ जौन छपावत पापहै जनमहानकेपास। ते विनाशको लहत हैं क्षिप्र सुनहु बुधिरास ॥ करिकै कल्मषको महत छपवत जौन अजान। लखत नताको मनुज जो सुरतो लखत सुजान ॥ हरिगीती ॥ सुनु भूप हेमतिमान याते कियो अघन उपायये। वर विज्ञ जन जे महत तिनके पास जाय सुनाइये ॥ सुनिये सुकल्मष छूटिबेकी सुबिधि तिनके पासमें। करिये सुकल्मष दूरि गुणिकै देखि सुमति प्रकाशमें ॥ अघजो छपायो सोकरावत पापहीकी बासना। मति मौन सुनसो धर्मको बर होन देत प्रकाशना ॥ अरु जो छपायो धर्मसो सुनु धर्म धर भूपाल है। नितही करावत धर्मवारी वासनाहिं विशाल है ॥ यहि हेतुते अघ कियोजोहै ताहि परगट कीजिये। अरु धर्मको नहिंप्रगट कीजे यह सुमति गुणि लीजिये ॥ जन मूढ़ जो अघ कियो ताको करत सुमिरण नाहिं है। अघ समय लहिकै तौन निश्चय होत प्रापत पाहिं है ॥ जिमिशीत भानहि होतहै सुरभान प्रापतनृप

सुनो । तिमिकियो जो अघहोत जनको प्राप्त संशय नागुनो ॥
दोहा ॥ जान बटोरो द्रव्यहै आशासों नरराय । जियके माहिं बिचारि यह यह कहु बीति नजाय ॥ भोगत ताको दुःखसों मानवमूढ़ बिशाल । करत प्रशंसा हैं नहीं तिनकी प्रज्ञनृपाल॥ तिनकेभोग अपूरणहि औधन जोहैताहि । काल बिचारतहैनहीं तुम्हैं कहत अवगाहि ॥ आभीर ॥ मनसों कीन्हों जौन । मुख्य धर्म हैतौन ॥ चरणा दोहा ॥ याते सब भूतन कोदीजै मनसों अभय सदाहिं । नृप बिचारिये भैको दीबो कबहूं तिनको नाहिं॥ जयकरी॥ अग्निहोत्र आदिकजे कर्म । तिनके माहीं भूप अधर्म ॥ भार्य्या दिक कीचही सहाय । अरुजोध्यान परम सुखदाय ॥ ताकेमाहिं सहाय प्रबीन । चहिये कबहूं काहूकीन ॥ ध्यानहु कोजानो तुम धर्म । मनको कीन्हों भूप अधर्म ॥ दोहा ॥ सुरता और मनुष्यता कोहै कारण पर्म । धर्महि निश्चय जानुतू मतिबरकहत अधर्म॥
इतिमहाभारतेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेभृगुभरद्वाजसंवादोबिंशोध्यायः २० ॥
युधिष्ठिरउवाच ॥ जयकरी ॥ आत्माकोहै जौन बिचार । तासनाम अध्यातमचार ॥ किहिबिधि मानव चिंतनतास । करै कहोमोको बुधिरास ॥ चरणाकुलक ॥ अरुयह बिश्व चराचर भयो । सोउतपन्न कौनते भयो ॥ प्रलय होत जबकेहिके माहीं । प्रापतहोत कहौ ममपाहीं ॥ भीष्मउवाच ॥ जयकरी ॥ अध्यातम कोजोवृत्तांत । पूछो मोहिं सप्रीति नितांत ॥ सोतुमको हम कहिहैंतात । प्रज्ञावान सुनहु अवदात ॥ हरिगीती ॥ सबभूतकी उत्पत्ति जिहिते होति है बुधिधामहे । अरुहोतजामें प्राप्त सबही प्रलय माहीं मामहे ॥ सुनब्रह्म नित्यानन्द ऐसो ताहि जानै सोमहा । सुख परम प्रापत होत जनको अत्र संशय नाकहा ॥ अबवायु भूआकाश तेजस पञ्चभूत महानहै । इनमहाभूतनतेहि सब उत्पन्नहोत जहानहै ॥ पुनि इनहिंमाहीं होत प्रापत कहतविज्ञ नरेशहै । मैंकहत हौं ता माहिं संशयको नहींहै लेसहै ॥ अरु महाभूत सुब्रह्मते उत्पन्न

कै सरसातहैं । पुनि प्रलय माहीं ब्रह्महीमें लीनकै सब जातहैं ॥ जिमिहोय सागरते महा उत्पन्न लहरि अनेकहैं । पुनि समुद्र हीमें होत प्रापत सुनहुनृप सविवेकहै ॥ यक औरहू दृष्टांत तुम से कहतहौं मैंसोसुनो । सुनि तौन अपने हिये माहीं बुद्धिको तनिकैगुनो ॥ जिमि कूर्म अपने अंगको फैलाय स्वेच्छासों सबै । आपुही लेत बटोरिहै मनमाहिं आवत हैतबै ॥ इहिभांति भूतातमा आकाशादि भूतनको महा । विस्तारिलेत बटोरिहै पुनि अत्र संशयना कहा ॥ दोहा ॥ शब्दजौन भूतातमा ताको जोहै अर्थ । सोमैं तुमसे कहतहौं भूपति सुनहु समर्थ ॥ सोरठा ॥ भूतहि जाकोरूप तासनाम भूतातमा । बरमातिमान अनूप जीवतौन है प्रज्ञबर ॥ चरणा दोहा ॥ भूतकार सब भूतन माहीं महाभूत जे पंच । तिनको करतभयो सुन मतिबर अत्र न संशयरंच ॥ दोहा ॥ शब्द श्रोत्र अरुछेद्रये नभते भेहैंतीन । श्रमणादिक चेष्टा परश अरु त्वक सुनहु प्रवीन ॥ इनतीननको हेतु है बायु सुनहु बुधिधाम । हम बरविज्ञन सों सुन्यो यह वृत्तांतललाम ॥ जठराग्नि सुरूप अरु चक्षु सुनहु येतीन । इनको कारण तेजहै सुमति कहत परवीन ॥ जिह्वा रस अरुक्लेद ये त्रैजलके हैंपर्म । गन्ध घ्राण अरु देहये भूके सुनहु सुधर्म ॥ महाभूत ये पंच हैं छठयो मन बुधि धाम । महत प्रज्ञ धर्मज्ञ सुनु कुन्तीसुत अभिराम ॥ मनसों औ इन्द्रियनसों होतजीव को ज्ञान । औ सु सतमी बुद्धि है निश्चय करणि सुजान ॥ अष्टमहै क्षेत्रज्ञ सो कर्म साक्षी तौन । भूमिपाल अरिजालदर सुनहु तात मतिभौन ॥ क्षेत्रदेहको नामहै ताकोजानतजौन । ताहि कहतक्षेत्रज्ञहै सुबुध जीवहैं तौन ॥ जिह्वा त्वकअरु श्रोत्रअरु चक्षुघ्राण बुधिधाम । ज्ञानेन्द्रियहैं पंच ये बिषयकहतअबआम ॥ रस स्पर्श अरु शब्द अरु रूप गन्ध सुनु भूप । ये इन्द्रिय के बिषयहैं पंच सुप्रज्ञ अनूप ॥ चक्ष्वादिक इन्द्रिय सकल रूपादि-

कको जौन । ग्रहण करत तामें करत संशय मन बुधिभौन ॥ निश्चय को मति करतिहै अरु जोहै क्षेत्रज्ञ । तौन कर्मको लखत है साक्षीवत हे प्रज्ञ ॥ साक्षी जो क्षेत्रज्ञ है बर चैतन्य अनूप । सब शरीर में रहत है जैसे व्यापत भूप ॥ सर्ब जगत में रहत है तैसे ब्यापत सोय । यामें संशय है नहीं भनतसुबुधबर लोय ॥ बुद्ध्यादिकको साक्षी महाभूतयुत जौन । ब्रह्मभावतामें कह्यो जगब्यापक हैतौन ॥ श्रुति मनसों औयुक्तिसों सुनहुजानिये ताहि । ताकोजाने होतसुख कहत तोहिं अवगाहि ॥ चक्ष्वादिक इन्द्रीयजे तौनजानिये तात । तिनकोजाने सत्वरज तमऊ जानेजात ॥ मनजिहि इन्द्रियके निकट रहत सुइन्द्रिय तौन । ग्रहण करतिहै बिषय को और न इन्द्रिय जौन ॥ चौपाई ॥ यह बिचारहै कीबोजोय । इन्द्रियको जानबहै सोय ॥ आभीर ॥ जिहि सों देख्यो जात । तौनचक्षुहै तात ॥ सुन्योसु जिहिते जाय । श्रोत्र तौन नरनाय ॥ दोहा ॥ जाते सूंघोजातहै घ्राणकहावे तौन । जीभ कहावै तौनहै रसको जानाति जौन ॥ जान्यो जात परश है जाते त्वकताको है नाम । जोबिकारको लहति तौनहै बुद्धि सुनहु बुधिधाम ॥ आभीर ॥ करत सुइच्छा जौन । जानहु मनहै तौन ॥ दोहा ॥ जिनको भिन्नसुअर्थ हैअरु मतिके आधार । तिनकोइन्द्रिय कहतहैं जेहैं बुद्धि अगार ॥ करत जीव चैतन्य है तिनको चेष्टित पर्म । जैसे चुम्बक लोहको चेष्टित करतसुधर्म ॥ रामगीती पुरुषमें है बुद्धिजो सोकबहुं सात्विक माहिं । होति कबहूं रजोगुण औ तमोगुणके पाहिं ॥ लहति कबहूं मोदकोहै कबहुं शोचहिपाय । प्राप्तकबहुं मोह माहीं होतिहै नरराय ॥ नरनके मनमाहिं ऐसे प्राप्त मेधाजौन । प्राप्तसात्विक आदिकनको होति है बुधि भौन ॥ रहाति तीनहुं गुणनमें पै भिन्न है महिपाल । रहाति है ज्यों बेलि बृक्षपै सिन्धु पृथक बिशाल ॥ भिन्न तीनहुं गुणनसोंपै रहति गुणहिन माहिं । परम सूक्षमरूप करिकै अत्र

संशय नाहिं ॥ रजोगुणको प्राप्तकैकै बुद्धिसुनु नरनाह । लावती इंद्रियन को है विषय निज निज माह ॥ विषयमें जो दोष लखि कैप्राप्त सत्वहि होय । होय भ्रम नाहिं परै जैसोहोय तैसोजोय ॥ तमोगुणको प्राप्तजो मति होयता बुधिधाम । वस्तु जैसी होय तैसी परतलखि नहिंभ्राम ॥ शान्ति अरु इन्द्रियनको जो रोकिबो है तात । सत्व गुणसों प्राप्त तिनको होहिमति अव-दात ॥ रजोगुण सों कामको अरु क्रोधकोसो पाय । होतितमसों खेद भयको प्राप्तमति नरराय ॥ दोहा ॥ कही सर्वगति बुद्धिकी तुमको हमहे भूप । सब इन्द्रियकोजीतिये भनतसुप्रज्ञअनूप ॥ बरवै॥ सत्व सुरज तमगुण ये तीनहु जौन । रहत माहिं देहिनके सुनु बुधिभौन ॥ दोहा ॥ सुखकी जोहैप्राप्ति नृप सत्व तौनही जानि । अरु दुखकी जो प्राप्तिहै रज तौनाहिं अनुमानि ॥ प्राप्त जौन अज्ञानकी सोईतमहै भूप । सुनहु युधिष्ठिर धर्मधर मतिवर कहत अनूप ॥ प्राप्तहोय शुभकर्ममें जौन समयके माहिं । तौन समयमें जानिये सत्वहि अपने पाहिं ॥ अपनेको नहिं प्रीतिकर औ दुखसों युतजौन । प्रवृती ऐसे कर्मकी होय जबै बुधिभौन ॥ तबै रजोगुणकी प्रवृति जानी अपने माहिं । हम यह वर वृत्तान्त को सुन्यो सुबुधजन पाहिं ॥ युक्त जौन अज्ञानसों करम सुनहु नरनाह । आयसकै अरुजो नहीं मन विचारके माह ॥ प्रवृती ऐसे कर्मकी होय समयमें जौन । प्रवृति तमसकी जानिये भूपसमयमें तौन ॥ हर्षप्रेम आनन्द ये सात्विकके गुण पर्म । कबहूं प्रापत होतहैं भूपति सुनहु सधर्म ॥ असंतोष परि-ताप अरु लोभ अक्षमा शोक । रजगुणके ये चिह्न हैं कहत सुमतिके ओक । आलस निद्रा मोहअरु तैसेही अपमान । तमके गुण येहोतहैं प्रापत कबहुं सुजान ॥ जयकरी ॥ जाकेहोय महान बिचार । दीनवचन भाषै न उदार ॥ अरु उत्तम सुपदार्थ अनेक । जिनकोजानै सहितविवेक ॥ सो दोऊ लोकनकेमाहिं ।

पावत आनँद संशय नाहिं ॥ दोहा ॥ बुद्धि और क्षेत्रज्ञ को अन्तरहै यह प्रज्ञ । करै अहंकारादिको बुद्धिनहीं क्षेत्रज्ञ । जैसेमिले सुरहत है मसक उदुम्बर तात । तिमिहि बुद्धि क्षेत्रज्ञहै मिले रहत अवदात ॥ है पै भिन्न स्वभावसों बुद्धि और क्षेत्रज्ञ । जैसे जल मच्छी मिले रहत भिन्नपै प्रज्ञ ॥ देह अहङ्कारादिको जानत आत्मा पर्म । आत्माको जानत नहीं ते सब सुनहु सधर्म ॥ देह अहंकारादिको दृष्टाजो क्षेत्रज्ञ । जानत है बुद्ध्यादि को मिले आपुमें प्रज्ञ ॥ हम गोरे हमसांवरे हम अन्धेहम कान । हम कुरूप हैं परम अरु हम स्वरूप बलवान ॥ दृष्टामें अरु दृश्यमें इन वचनन सों दक्ष । जान्योजात अभेद है तुमको कहत प्रतक्ष ॥ आभीर ॥ दृष्टा ताको नाम । जो देखत है आम ॥ योग्य देखिबे जौन ॥ दृश्यकहावे तौन ॥ दोहा ॥ बुद्ध्यादिक है दृश्यसब दृष्टाहै क्षेत्रज्ञ । तौन निरंतर लखत हैं बुद्ध्यादिकको प्रज्ञ ॥ इंद्रिय मन अरु बुद्धि ये सब जड़हैं सुनु भूप । इन्हैं प्रकाशित करत है आत्मा परम अनूप ॥ इनकेसँगमें प्राप्तहै आत्मा नहिं जड़ होत । पैइनके सँगमें मिल्यो रहत सुनहु बुधिपोत ॥ मनको करति प्रकाश मति मनगुणको परकाश । मतिके आश्रय रहत नहिं आत्मा सुनु बुधिराश ॥ सोरठा ॥ मनसों कीन्हेरोक इन्द्रिय वारी वृत्तिको । सुनहुतात बुधि ओकआत्मा करत प्रकाश है ॥ हरिगीती ॥ तजिकर्मको इन्द्रियनकेजो आतमामेंरतिकरै । अरु नित्य आत्माके बिचारहि आपने हियमेंधरै ॥ तबहोत उत्तम गतिहि प्रापत अत्र संशय नाहिंहै । सुनु भूमिपति धर्मज्ञबर हमसुन्यो बुधजन पाहिं है ॥ जिमि बारि चरणहिहोतपक्षीलिप्त बारि सुपर्महै । तिमि आतमामेंनिरतजेतेलिप्तहोत न कर्महै ॥ सुनुआत्मा नहिंकर्म माहीं लिप्तकबहूं होतहै । यहजोसुनिश्चय तासकरिकै हियेमाहिं उदोतहै ॥ तजि शोच हर्ष सुलोभ क्रोधहि मोहकाम मदैतथा । अरु तिमिहि मत्सरछोड़ि करिकैरहै बर

ज्ञानी यथा ॥ दोहा ॥ कोऊ ऐसेकहत बुध नाशितहैं गुणजौन। नष्ट नहींते होतहै सुनहुतात बुधिभौन॥कोऊ ऐसेकहत हैं नाश गुणनको जौन । जान्यो नाहीं जातहैचेष्टा करिकैतौन ॥ ग्रहण करतिहै बिषयको जबये इंद्रियसर्व।ताते तब सुखदुख नहीं प्रापत होत अखर्व ॥ तब हियमाहीं जानिये गुणमेरे है जौन। सुख दुख कर्त्ता मोह अरु नष्टभये सबतौन ॥ सोरठा ॥ येदोऊ मन जौन तिनमाहीं बरविज्ञजन । नीको देखैतौन ग्रहणकरै सुनुभूपवर ॥ तप्तलोहहैजौन तामाहीं अरु अग्निसें । भिन्नभावहैतौन जान्यो नाहींजातहै ॥ दोहा ॥ ऐसेहीक्षेत्रज्ञ जो साक्षीहैं अवदात । तेहि माहीं अरु बुद्धिमें भेद न जान्योजात ॥ जयकरी ॥ इनदोउन में एकीभाव । जानिपरतहै सुनुनरनाव ॥ एकीभाव दुहुंनकोजौन। समुझब हृदय ग्रन्थिहै तौन ॥ दोहा ॥ खोलत जे यहि ग्रन्थिको ते हैं जीवनमुक्त। यामेंसंशयहै न जेकहत ज्ञानसोंयुक्त ॥ जैसे उज्ज्वल करततन पुरुष नदीमेंन्हाय । तैसे बुध यहिज्ञान सों अंतःकरण सचाय ॥ महानदी के पारको जनजानेहू तात । पारकरन नौकाबिना केहू जाय न जात॥अरु यहजोहै जगनदी तासु परात्मापार । ताको जानेहीतरत साधन बिनहु सुढार ॥ अर्थ धर्म अरु काम जे तिन्हैं जानि क्षयमान। छोड़त जेतेहोत नहिं फेरि बासनावान॥इन्द्रिय करिकै आत्मा नाहीं देख्योजात। अपनी अपनी बिषयमें लगीरहतहै तात ॥ यहजानेसो होत बुध और न कारणजानु। सुबुधहोनको कहतहैं जेहैंसुबुध महा-नु ॥ सोरठा ॥ आत्माको जोज्ञान जाहि होतहै प्राप्तनृप। ताहिकह-त मतिमान होत न दृष्टादृष्टभय ॥ दोहा ॥ शत्रु आदिको जौन भय दृष्टतौन दुखरूप। नरकादिकको जौनभय सोअदृष्टहै भूप॥ हरिगीती ॥ सुनु देहको अभिमान जाकोहोय छूटो ज्ञानसों । नहिं होत ताको प्राप्तहै भयसबजगत महानसों॥ बरआत्मज्ञानीजौन पूरब जन्मके जेकर्महै। तिनकोसुभोगन काज कर्महि करतकहत

सुधर्महै ॥ यहिहेतुते यहिजन्ममाहीं करत कर्महि जौनहै॥सुनुकर्म सो परलोकमें फलदेतनहिं बुधिभौनहै ॥ दोहा ॥ आत्मज्ञानीजे नहीं करतकर्मते जौन। तिनते दृष्टादृष्टभय प्राप्तहोत बुधिभौन॥ कामादिकमें पगि करत अहंभावसों कर्म । तासु असूया करत हैं जेबरप्रज्ञ सुकर्म ॥ आत्मज्ञानीजेनहीं अहंभावसों तौन ।कामादिकमें पगिकरत कर्म सुनहु बुधिभौन ॥ तेहिते दृष्ट अदृष्ट भय प्राप्तहोतहैपर्म।जेआतमज्ञानीनहींतिनकोजानुसुकर्म॥चरणादोहा॥ मरण भये पुत्रादिकको अरु नष्टभये धनभूरि । अज्ञानी जन जौनसर्ब ते रहत दुःख सों पूरि ॥ आभीर ॥ अरु ज्ञानीहैंजौन । लहत दुःख नहिंतौन ॥ पुत्रादिकोनाश । भयेसुनहुबुधिराश ॥ दोहा ॥ जानत यहि वृत्तान्तको जे जन हैं अवदात । ज्ञानवान तेईपरम सुनहु धर्मधरतात ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिमोक्षधर्म्मेएकविंशोऽध्यायः २१ ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ ध्यानचारिपरकारको कहत तेहिहौंतात। जेहिसों ऋषिबर लहत हैं परमासिद्धि अवदात ॥ भ्रमरावली ॥ नहिंकामाहि आदिक जे जिनके मनमें। हिमआदिक सर्ब सहैं बसिकै बनमें ॥ जगको तजिकै जगमें पुनि आवतना । रतज्ञान-हिमें मनवेग बढ़ावतना ॥ दोहा ॥ कीन्हें मनगत मोक्षमें ऐसे हैं जनजौन । यथायोग्यते करतहैं ध्यानसुनहु बुधिभौन ॥ इंद्री सर्ब बटोरिकै मनथिरिकरिकै पर्म । काष्ठवत बैठे सुमुनि हैं जे तजिकै भैभर्म ॥ सुनैशब्द नहिं कानसों जिह्वासों रसनाहिं। जानै अरुजानैनहीं स्पर्शत्वचा के माहिं ॥ रूप नजानै चक्षुसों अरुनासा सों गन्ध । करिकै ऐसी भांतिसों सब इन्द्रियको ब-न्ध ॥ मनके माहिंबटोरिकै बिधिसों इन्द्रिय सर्ब । आत्मामाहिं लगायदे ज्ञानी परमअखर्ब ॥ प्रथम हृदयाकाशमें ध्यानमार्ग के माहिं । मनलगायदे स्वस्थह्वै अंतलगनदे नाहिं ॥ मनको औ इन्द्रियनको हैबटोरिबोजौन । मुख्य ध्यान यह भूप है कहत म-

नीषाभौन ॥ जयकरी ॥ इन्द्रिय सह रोक्यों जो तात ॥ चंचल सुमन अलग ह्वै जात ॥ जिमि घनते ह्वै अलग विशाल। चमकत चपला सुनु भूपाल ॥ जिमिजलविंदु पातके माहिं। लोल होत हैं ठहरत नाहिं ॥ इमिही ध्यानमार्गमें पर्म। होत लोल चित कहत सुधर्म ॥ दोहा ॥ ध्यानमार्गके माहिंरहि मन क्षणमात्र सुजान। होयजात पुनिवायुवत चञ्चल तातमहान ॥ चंचल तासों चित्तकी नहींअधीरज होय। फिरि लगायदे ध्यान में ज्ञान नयनसों जोय ॥ ध्यानकरण जो लगतहै ताको प्रथम विचार। प्रातहोतपुनि होत है प्रातविवेक सुढार ॥ प्रात बितर्क सु होतहै फेरि सुनहु महिपाल। जाननते हैं यह क्रमहिं जिन की सुमति बिशाल ॥ ईश्वरको जो रूप है अति सूक्षम अभिराम। तामें मनहि लगायबो हिय अकाशमें आम ॥ अधिकारी जो ध्यानको मध्यहिमें सुनुभूप। तासु विचारक नामहै यह जो ध्यान अनूप ॥ चरणा दोहा ॥ थूल रूप जो ईश्वरको है तामाहीं भूपाल। मनलगायबो जौनहै कहत सुबुद्धि बिशाल ॥ दोहा ॥ अधिकारी जो ध्यानको अधम तास यहपर्म। ध्यान विचारक नाम है निजु मैं कहत सुधर्म ॥ क्रमसों आत्मा जानिबो तजि अज्ञान अपार। है उत्तम ध्यानीनको यह बर ध्यान बिचार ॥ ईश्वरकी जो मूर्त्तिहै तास अकारहिचारु। मन जब प्रापतहोयबर कीन्हें ध्यान बिचारु ॥ तब छुटाय आकारसों ईश्वरको परकाश। तामें मनहिं लगायबो सो विवेक बुधिराश ॥ जयकरी ॥ मध्यमध्यानी को यहतात। ध्यान विवेक कह्यो अवदात ॥ अब उत्तमध्यानी को जौन। ध्यान विवेक सुनहु तुम तौन ॥ दोहा ॥ निर्गुणमाहिं लगायबो चंचलमनाहिं अपार। सो उत्तम ध्यानीनको ध्यान विवेक सुढार ॥ गुरुसों पाई युक्ति जो तासों क्रमते पर्म। निर्गुणको जो चीन्हबो तौन बितर्क सुधर्म ॥ सोरठा ॥ यह जो बितरकध्यान सोमध्यम ज्ञानीनको। अब बितरक मतिमान

सुनु ध्यानी उत्तमनको ॥ दोहा ॥ आत्मामाहिं लगावनो मनको जौन सुजान । ताते छूटे देहको जो अभिमान महान ॥ प्राप्त भयो आनंद जो तौनहु तजिके पर्म । मनको जो न लगावनो निर्गुणमाहिं सुधर्म ॥ सोरठा ॥ यह जो बितरकध्यान सोउत्तम ध्यानीनको । कह्यो तुम्हैं मतिमान हम सुबुधनके पाहिं सुनि ॥ रोला ॥ होय मनको ध्यानमें जो प्राप्त क्लेश सुजान । ऊबितो तजिधीर्य्यताको छोड़िये नहिंध्यान ॥ धूरि भस्म करीषमें जो भोरि शीघ्रहि नीर । जो बनायो चहै कछु तौ बनै नाहीं धीर ॥ राखिये कछुकाल जो जलमाहिं इनको डारि । जो बनावो बनै सो तब कहतहौं निर्धारि ॥ इमिहि इंद्रिय इकट्ठी मनमाहिं करि अवदात। सहज सहज लगाइयेमन आत्मामें तात ॥ सहित इन्द्रिय मनहिंराखे ध्यान मारगबीच । नित्यके अभ्याससों मनशान्त होत निभीच ॥ दोहा ॥ मनरोकेसों जौनसुख प्राप्त होतहै पर्म । तासम दोऊलोकके सुख नहिं भूप सधर्म ॥ तासुखसो है युक्त जे ध्यान कर्ममें तौन । होत परम परसन्न हैं संशय नहिं बुधिभौन ॥ सोरठा ॥ यहि बिधि कीन्हें ध्यान योगी मोक्षहि लहतहैं । सुनहु भूप मतिमान संशय अत्र नरंच है ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्बणिमोक्षधर्म्मेद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

इति अध्यात्म समाप्तम् ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ मनहिं लायबो ध्यानमें कह्यो पूर्व तुम तात । हम यकाग्रकै चित्तकै सुन्योतौन अवदात ॥ चंचलमन बिन जपकिये लगत ध्यानमें नाहिं । याते जपकी बिधिकहौ आपु हमारे पाहिं ॥ चारिहु आश्रमके धरम मोहिं सुनाये पर्म । और सुनाई बहुकथा सह इतिहास सुधर्म ॥ नरेश ॥ हम सुनी तौन मलायकै । अरुगुणी हिये बहुभायकै ॥ अब जापके फल पर्म को । तुम मोहिं कहौ तजिभर्मको ॥ आभीर ॥ जापकहैं जनजौन । कहां रहत हैं तौन ॥ कहौ मोहिं अरुतात । जपकी बिधिअव-

दात ॥ दोहा ॥ जापक कहिये काहि नृप अरु जपकहिये काहि । यह सब मोको करि कृपा कहो आपु अवगाहि ॥ भीष्मउवाच ॥ याहि प्रसंगमें कहतहौं इक इतिहास अनूप । यमको द्विजको कालको है संवाद अनूप ॥ जयकरी ॥ कह्यो योग वेदांत विचार । मोक्ष दरशिन सुमति आगार ॥ जपको त्यागहिं तिनके माहिं । हम यहसुनो बुधनके पाहिं ॥ दोहा ॥ लिख्यो वेदके माहिंहै ब्रह्महिको सुविचार । याते जपको त्यागहै सुनु नृप बुद्धि अगार ॥ जगत माहिं जो ब्रह्मको है विवेक सुखदाय । ताहि कहत वेदान्त हैं जे वरबुध नरराय ॥ आभीर ॥ मन निरोधको योग । कहत विज्ञ वरलोग ॥ दोहा होत सु अन्तःकरण है जप कीन्हेतेशुद्ध । होत नहीं साक्षात है आत्माको नृपबुद्ध ॥ योग और वेदान्तमें यहि कारण ते पर्म । उपकारी है औ नहिंहु जप बुधकहत सुधर्म ॥ जयकरी ॥ यहिके माहिं सुकारणएक । है सो सुनु भूपति सविवेक ॥ इन्द्रीजीतब अरु मनरोध । सत्यबोलिबो तजिबोक्रोध ॥ अग्निहोत्र को करिबो जौन । अरु एकांते रहिबोतौन ॥ अरु पवित्रभोजन को कर्ब । हियमें निति अनसूया धर्ब । अरु सुजीति इन्द्रियको पर्म । सत्वसुगुण के माहिं सुकर्म ॥ जोलगायबो है भूपाल । अरु जोधरिबो क्षमाविशाल ॥ अरु नकामना करिबो जौन । अरु जो मनरोकब बुधिभौन ॥ जपके अंगसर्ब एतात । कहत सुबुधमतिके अवदात ॥ बरवै ॥ सिद्धिहोत नहिं जपहै इन बिनभूप । इनको धारण करिये प्रथमअनूप ॥ जेसकाम जन तिनको जप अभिराम । कारण स्वर्गादिक कोहै बुधिधाम ॥ अरु सकाम नहिं जेहैं जन अवदात । साधन मोक्षहि कोहै तिनको तात ॥ पैन्हिपवित्रा कर्म सुकुशकी चारु । अरु शिरमाहिं धारिकै कुशा सुढारु ॥ बैठि सुआसन कुशके पैअत स्वक्ष । और सु बहु कुश धरिकै चहुंदिशि दक्ष ॥ दोहा ॥ मनको कर्षि सुविषय ते जीव ब्रह्म करि एक । करै जपहि सुनुभूपवर कहत सुबुध

सविवेक ॥ मनको करिएकाग्र तजि वार्ताको अधिकार । जानै एकहिब्रह्मको अरुआपहि सुउदार ॥ रामगीती ॥ ब्रह्ममें अरुआपु माहीं एक जानै भाव । ताहितजि कामादिमें पुनि परैनहिं नर-राव ॥ होतहै तब ब्रह्म सूक्षम देहतजिकै तात । है नहीं सन्देह यामें भणत बुध अवदात ॥ चरणादोहा ॥ चहै भिन्न जो रह्यो ब्रह्मको प्राप्त होयकै पर्म । रहै भिन्न तौ ब्रह्मलोक में लहत न जन्म सुकर्म ॥

श्रीमहाभारतशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेजापकोपाख्यानेत्रयोविंशोऽध्यायः २३

युधिष्ठिरउवाच ॥ चरणादोहा ॥ जो उत्तमगति पावत जापककही तौन तुमतात । यहै एकही गतिपावन की औरहु गति अव-दात ॥ भीष्मउवाच ॥ उत्तमगतिहूकोहै पावतजापक परमअनूप । और अनुत्तमहूगति को सुनुप्राप्त होतहै भूप ॥ आभीर ॥ जापक जैसेजात । नरकमाहिं हेतात ॥ तैसे तू सुनुआम । छोड़िदुचि-तई माम ॥ दोहा ॥ पूर्वकही जैसीक्रिया जापककी अभिराम । करैन तैसी जायतौ तौन नरकमें माम ॥ मोहा ॥ करै जौन जपप्रेमसों । अरु जो करै न नेमसों ॥ जो जापक सुनु तातहे । निश्चय नरकहि जातहे ॥ जयकरी ॥ गर्ववान अरु जापकजौन । परअप-मान करत अरु तौन ॥ निश्चय निरय लहत है तात । कहत सुबुध मतिके अवदात ॥ दोहा ॥ जहँ जहँकी करिकामना करत जपहि जनजौन । निश्चयतहँतहँ जातहैसंशय नहिंबुधिभौन ॥ प्राप्त होब परब्रह्मको है उत्तम गतिजौन । तासोंहै स्वर्गादि की प्राप्ति निरय समतौन ॥ आभीर ॥ जे जापक ज्ञानी नाहीं । प्रापतहोत मोहिंमाहीं ॥ तातेनारद दुखकारी । लहिशोच करभारी ॥ चरणा-कुलक ॥ उठिहैं हमयहकारज करिकै । हठ बिस्तावी नेमकोध-रिकै । करतजौन जपनारक माहीं । परततौनहै संशय नाहीं ॥ दोह ॥ जपनहिं पूरणहोतहै तिनसोंप्रण भूपाल । कोईउपद्रव होतहै प्रापत आयविशाल ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ ब्रह्ममाहिं जो प्राप्तभो करत

करतजप पर्म। सोपुनि कैसे देहको प्रापतहोत सुधर्म ॥ भीष्मउवाच ॥ जपतौ परमप्रशस्तहै पैकीन्हें सहकाम। प्राप्तहोत जन निरयको कहत सुबुध बुधिधाम ॥

इतिमहाभारतशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेजापकोपाख्यानेचतुर्विंशोध्यायः २४

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ जापक कैसे निरयको प्राप्तहोतहैतात। कहौ मोहिं अवगाहिकै आपुविज्ञ अवदात ॥ सुनेरावरे बचन ये भो आश्चर्य महान। सुकरमकीन्हे मिलतकहुं कुत्सित फल बुधिधाम ॥ भीष्मउवाच ॥ भयो धर्मके अंशते तू उत्पन्न नरेश। है तेरी थिति धर्म में बरसुभाव ते बेश ॥ आभीर ॥ धर्म जास आधार। ऐसो बचन सुढार ॥ तोहिं कहत हौं तात। सुनहु तौन अवदात ॥ चंचला ॥ देवतानके सथान जौन हैं प्रकाशमान। रंगसों भरेउतंगहैं अनूप रूपमान॥सर्बदा आनन्ददाय हैनरेन्द्र हेसुजान। स्वच्छभासके उदास भावहर्ण हैं सुठान ॥ दोहा ॥ इच्छाजहँकी होय तहँ शीघ्रलेयहै जात। ऐसेचारु बिमानहैंतिन के माहिं बिभात ॥ जयकरी ॥ लोकलोकपालनके पर्म। शुक्रतथा गुरुके सहशर्म ॥ बिश्वेदेवनको बरलोक। तथा मरुतको सुनु बुधिओक ॥ तिमिहि रुद्रको रबिको पर्म। औसुबसुनको सुनहु सशर्म ॥ ब्रह्म प्राप्तिसोंहैं ये सर्ब। जानहुनरक समान अखर्ब ॥ आभीर ॥ सुनहु ब्रह्मपद जौन। बरनिर्भयहै तौन ॥ सत्वादिकगुण तीन। तिनसों रहित प्रवीन ॥ जयकरी ॥ महाभूत मनइंद्रियसर्ब। बुद्धिवासना कर्मअखर्ब॥ वायुतिमिहि अज्ञानमहान। इनआठहु सोंरहित सुजान॥ प्रिपता अरुप्रियता जौन। रहित इनहुंसोंहै बुधिभौन ॥ सुखदुख शोकहर्षसों भूप। रहित नित्यहै परमअनूप ॥ आदिअंतसों रहित नृपाल। तहांसमर्थ नहींहै काल ॥ है सबको प्रभु तौन महान। ताहि भये तेप्राप्त सुजान ॥ रहत शोच नहिं महत अनेक। औजितक हैं दुःख तितेक ॥ कहो

ब्रह्म पद तोहिं बखानि। हम नीके मति सों अनुमानि ॥
इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेपंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥
रामगीतो ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ कालको इक्ष्वाकुको अरु बिप्रको बुधिधाम। मृत्युको अरु धर्मको संबाद तुमको आम ॥ कहैंगे हमकह्योहो तुमतात ऐसे मोहि। कहो सो अब कृपाकरिकै आपु मोतन जोहि ॥ भीष्मउवाच ॥ कहत यहि परसंगमें इतिहासहो इकतात। सुनहुसो तुम चित्तको एकाग्रकरि अवदात ॥ सूरसुत इक्ष्वाकुको अरु बिप्रको अभिराम। कालको यम मृत्युको संबाद अति शुभ आम ॥ हुतोब्राह्मण एक अति अभिराम बरबुधि धाम। धर्ममेंहो प्रबृत शुचि यश हुतोजाको माम ॥ कल्प अरु ब्याकरण ज्योतिष औ निरुक्ति सुछंद। औ सुशिक्षा वेदके षट अंग ये मनुजेंद ॥ हुतो जानत तौनहो इनषटहुको सुनु भूप। पैप्यलादि सुनामताको हुतो परम अनूप ॥ वेद अर्थहु माहिं सो बर हुतो बिप्र प्रवीन। शृंग पै हिमवानके सो हुतोरहत कुलीन ॥ नेमकरिकै कियोजप तहँ बर्षएकहजार। छोड़िकै सबकामनाको मामबुद्धिअगार॥ जयकरी॥ जपसोंगायत्री साक्षात। ह्वैकै ताहि कह्यो इमितात ॥ मैंप्रसन्नहौं तोपरपर्म। लखितेरीजपबिप्र सुधर्म ॥ उकछा ॥ गायत्रीके बैन। सुनिकै द्विज बुधिऐन ॥ बोल्यो कछूहू नाहिं। निरत रह्यो जपमाहिं ॥ दोहा॥ तातेभई प्रसन्नअतिकरिकै कृपाबिशाल। पुनिपुनि भईसराहती द्विजकेजपहि नृपाल ॥ जबजप बिधिसंपूर्ण भो तब उठिकरिकै क्षिप्र। शिरदेवीके पांयपै धरतो भयोसुबिप्र ॥ हरिगीती ॥ तिहिके अनन्तर कहतभो सोताहि ऐसेबैन। तूमोहिं आई लखन ताते भयोदेवि सचैन ॥ देदेवियहबरदान हमको तूकृपा करिकैमहा। मैंरहौं तत्पर जपहिसे रतप्रीति बंधन सोंनहा ॥ साबित्र्युवाच ॥ जपमाहिं तोबर लगोइहै चित्ततेरो बिप्रहे। कछुऔर इच्छाहोय जोसो मांगुदेहौं क्षिप्रहे ॥ दोहा सावित्रीके बैनये सुनिइमि कह्यो

सुजान। बढ़ोलालसा जपाहिमें ममचाहिये नहिंआन॥ अरिल ॥ रहै चित्त एकाग्रनित्यमम। देहुदेवियह चाहतहैंहम॥ सावित्रीतिहिके सुबचनसुनि। कहत भईइमि मधुरबचनगुनि ॥ उल्लाला ॥ जिनलो- कनमें जात अन्यऋषि तिनमें तूनहिं। प्रापत ह्वै है विप्र प्राज्ञवर करुनिजु हियमाहिं॥प्रापत ह्वै है ब्रह्मपदहि तू आनँदमेंपगि ।रहो चित्त एकाग्र नित्ततव जपहि माहिंलगि॥ सोरठा ॥ धर्मस्मृत्यु यम- काल ऐहैं तेरे पास द्विज। धर्म बिवाद बिशाल तोसों उनसों हो- यगो॥तोमर॥अब जातिहौं निजधाम। सुनु विप्र हेअभिराम॥इमि बिप्रको कहिबैन। नृपसों गई निजु ऐन॥तिहिके अनन्तर तौन। जपमाहिं लगि वुधिभौन ॥ सुरवर्ष शतलों पर्म। भोगहत तत्र सुधर्म ॥ दोहा ॥ पैप्प्यलादि को पूर्णभो जब जप बिधि सह भूप। तास पास साक्षात तब आयो धर्मअनूप ॥ धर्मराजउवाच । चरणाकुलक ॥ सुनोबिप्रबर मतिसोंछाये। तोहिं लखन काज हम आये॥ तोहिं मिली जपको फलऐसो। बहुतन अबलों लह्योन तैसो॥ दोहा ॥ देवलोक नरलोक अरु जोतेते मतिमान। गृह उलंघि तूसुरनके लहिके उत्तमथान॥ मौनी ॥ देहत्याग तुमकरिकै विप्रसुजान। इच्छित लोकहि जावहु गुणहु न आन॥ देहतजे तुम लहिहौ इच्छित लोक। और कहैं का तुम हौ वर वुधिओ- क॥ चरणाकुलक ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ दुखसों मिश्रित सुख जिनमाहीं। तिनलोकन को जैहौं नाहीं ॥ जाहुधर्म तुम अपने गेहै। तजिहैं हम नाहीं यहिदेहै ॥ स्वर्गादिक लोकनके काजै। करु निश्चय हियमाहिं दराजै॥ तनतजिहैं तब मुक्तिहिजैहै। नहिंहमस्वर्गादि- कमें जैहैं। पैप्प्यलादिकी वाणी सुनिकै।धर्म कहतभो ऐसेगुणिकै॥ धर्मउवाच ॥ दोहा ॥ तब अवश्यहीछूटिहै है नहिं संशयअत्र। अरु सुब्रह्मपद पायहै तूबरविप्र पवित्र॥ बीचत्व स्वर्गके वासकोक्यों छोड़त आनन्द। यह तोकोमैं कहतहौं गुणु ममवचन अमन्द ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ बिना बृह्म नहिं रुचतहै हमैं स्वर्ग हेधर्म। याते

श्रद्धा स्वर्गकी हैनाहिं मो हिय पर्म ॥ धर्मउबाच ॥ तनमें मन तुम लाउ मति तजितन होहु सशर्म । बिना रजोगुण लोक जे तिन में जाहु सुकर्म ॥ ब्राह्मणउबाच ॥ चरणा दोहा ॥ होय कामना जैबेकीजो सतन स्वर्गके माहिं । जपके फलते जाय सतन तौ यामें संशय नाहिं॥ दोहा ॥ स्वर्ग जायबेकी नहीं मो हिय इच्छा धर्म । यातेहम जैहैं नहीं निश्चय जानहुपर्म ॥ धर्मउबाच ॥ पैप्पलादि तुम कहत यह हम तन तजिहैं नाहिं । लखो मृत्यु अरु काल तब आये हैं तवपाहिं ॥ भीष्मउबाच ॥ तदनन्तर यमकाल अरु मृत्यु बिप्रको बैन । कहतभये ऐसे सुनहु भूप मनीषा ऐन ॥ कालउबाच ॥ कियो चारु आचरण ते अरु जप साबिधि महान । ताके फलकी प्राप्तिबर है द्विज तोहिं सुजान ॥ मिल्यो तोहिंफल सुजप को जाहु स्वर्ग तू आसु । जैबे को है समय हौं काल कहत तव पासु ॥ मृत्युरुबाच ॥ पाय प्रेरणा कालकी सुनहु बिप्र बुधिरास । तोको लीबे काज हौं आयोमैं तवपास ॥ जयकरी ॥ यमअरुकाल मृत्युके बैन । सुनिकै बिप्र मनीषा ऐन ॥ कहत भयोइमि बचन सुजान । आदर करिकै परममहान ॥ करौं काजमैं कौनतुम्हार। तुम सब आज्ञा करौ सुढार ॥ भीष्मउवाच ॥ धर्मवान पांडव बुधि-धाम। तीरथयात्रा करतललाम ॥ आयोनृपइक्ष्वाकुपवित्र । तिही समयके माहीं तत्र ॥ सबको करिइक्ष्वाकु प्रणाम । कुशलप्रश्न पूछत भोआम ॥ अर्घ्यपाद्य दैताको विप्र । बैठाये आदरकरि क्षिप्र ॥ पूछि कुशल तदनन्तर चाहि । बचन कहतभोऐसेताहि॥ कहोभूप इक्ष्वाकु उदार । करौंकौन तव काजसुढार ॥ सुनियेबैन भूपइक्ष्वाकु । कहत भयोबिप्रहि इमिबाकु ॥ राजोवाच ॥ हमराजातुम ब्राह्मणपर्म । याते तुमको कहत सधर्म॥ लीबोहैद्विज कार्य तुम्हार। अरु दीबोहै कार्य हमार॥ यातेकछु हमहीं सोंलेहु। सुनहु बिप्रतुम बरबुधिगेहु॥ ब्राह्मणउवाच॥ दोहा॥ द्वैप्रकारके होतहैं बिप्रभूप बलवान। कितेप्रतिग्रह में प्रवृत कितेनिवृत धीमान। सोरठा ॥ तिन्हैं देहु

तुमदान जौन प्रतिग्रह में प्रवृत। हमहैं निवृत सुजान यातेलेहैं नाहिं कछु ॥ दोहा ॥ तपसों साधैंकौन तब कारज हमहैं भूप। कहा देहिंहम तोहिं अति प्रियहै कहा अनूप ॥ राजोवाच॥ सोरठा ॥ हम क्षत्रियहैं उद्ध सुनहुबिप्र धर्मज्ञबर। मांगैंतौ हमयुद्ध जानत और नमांगिबो ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ दोहा ॥ जैसेतू निज धर्ममेंहै प्रसन्न सुनु भूप। तिमिहि आपने धर्ममें होहु प्रसन्न अनूप ॥ राजोवाच ॥ देहिं कहा निज शक्तिसों तोको हम भूपाल। मोहिं कह्यो तुम पूर्वहो ऐसेविज्ञविशाल॥ जयकरी ॥ सोतुम सों मांगतहैं पर्म। जपको फल बरदेहु अभर्म ॥ ब्राह्मणउवाच ॥दोहा ॥ जानत युद्धहि मांगिहम तुम इमिकह्यो समर्थ। सोमोसंगन होयगो जानत होकिहि अर्थ ॥ राजोवाच ॥ चरणदोहा ॥ बाक युद्धके कर्त्ता होतुम याते याचततोहिं। देहु बुद्धिबर शुद्धद्विज बाकयुद्ध तुम मोहिं ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ मन सुप्रतिज्ञा छोड़िहो सुनहु भूप बुधिभौन। देहमें अपनी शक्तिभर कहो जौन तुम तौन ॥ राजोवाच ॥ तोमर ॥ तुम कीन्ह जप शत बर्ष। मनलाय होय सहर्ष ॥ फल तास जो अभिराम। तुम देहु तौन ललाम ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ जप कीन्ह जो हम भूप। फल तास अर्द्ध अनूप ॥ तुम लेहु हैं हम देत। सुनु पर्म प्रज्ञ सचेत ॥ तुम जो प्रसन्न न होत। लहि अर्द्धफल बुधि पोत ॥ सब लेहु तौ अभिराम। हम देतहैं नृपमाम ॥ सुनि बिप्रके बरबैन। इमि कह्यो भूप सचैन ॥ तुम दीन औ हम लीन। फल जापको सु प्रवीन ॥ कहु मोहिं विप्रप्रतक्ष। हमहैं सुपूछत दक्ष ॥ हम फलहि जानत नाहिं। सति कहतहैं तव पाहिं ॥ जपकीन्ह जो सो सर्ब। हम दीन्ह तोहिं अखर्ब ॥ यम मृत्यु काल सुधर्म। सब साक्षियेहैं पर्म ॥ राजोवाच ॥ फलबिना जान्यो जौन। तव जापको बुधि भौन ॥ मम कहा करिहै काज। सुनु बिप्र विज्ञ दराज॥ फल जापको जो होय। हमको कहो जो सोय ॥ हम तौ लहैं फल तौन। सुनु बिप्र प्रज्ञा भौन ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ दोहा ॥ बहुत बारता कथन हम करि जानत

नाहिंभूप। तुमफल मांग्यो जापको सोहम दयो अनूप ॥ उल्लाला ॥
तुम औ हम दोउनको सत्य पालिबो उचितहै। बिना सत्य पाले
सुमो जीव होत अति दुचितहै ॥ दोहा ॥ करी कबहुं नहिं कामना
मैंजप माहिं सुढार। यातेकैसे जापको जानो सुफल उदार ॥
चरणादोहा ॥ देहु जाप कोफल तुम हमको यहतुम कह्यो नरेश।
अरुदेंगे हम जपको फलबर यहहम कह्यो सुबेश ॥ दोहा ॥ अपने२
बचनको रक्षण उचित सुजान। बिन कीन्हे रक्षानृपति कैहै दोष
महान ॥ सोरठा ॥ कहत जौन मैं बैन तिनको जोनहिं मानिहौ।
तौतुम भूपति ऐन लहिहौ पापअसत्यको ॥ जयकरी ॥ उचित नहीं
तुमको भूपाल। झूठ बोलिबो प्रज्ञ बिशाल ॥ अरु हमकोहु
उचित है नाहिं। होनो प्रवृत झूठकेमाहिं ॥ तुमजपमो मांग्यो
हमदीन। करौ ग्रहणतुम तौन प्रबीन ॥ तुम मेरेसुस्थानमें आय।
जपको फल मांगो नरराय ॥ सो तुम लेहुसत्यके माहिं। पगिके
करिये नाहीं नाहिं ॥ यज्ञ तिमिहि औ नेम नृपराय। सत्य समान
नहीं सुखदाय ॥ दोहा ॥ करतभूप परलोकमें जैसी सत्यसहाय।
तैसी नाहींकरि सकत यज्ञ नेम नरराय ॥ मोतीदाम ॥ अनेकनबर्ष
कियोतप जौन। सुनौनृप सत्य समान नतौन ॥ करै रबि सत्यहि
सों परकाश। रहैतम तुंगहि हेबुधिराश ॥ बहे अरु सत्यहिसो
पवमान। प्रकाशित सत्यहि सो सुकृशान ॥ सो सत्यहि बोलत
जौन हमेश। लहै दिवमें सुखतौन अशेश ॥ दोहा ॥ धरिसुतुला
में सत्य औ धर्महिं द्रुहिणसशर्म। तोलतभो सो धर्मते सत्य
गरू भोपर्म ॥ बरवै ॥ सुन्यो पूर्वहौ हम यह बुधजन पाहि। सत्य
होतहै ऐसो तजहु न ताहि ॥ दोहा ॥ जहां सत्यतहँ धर्म है बढ़त
सत्य सों सर्ब। क्यों तजिसत्य असत्यकी इच्छाकरत अखर्ब ॥
सत्य भावको गहहु तुमतजो अनृतको भाव। अनृत समान न
औरहै पातक सुनु नरराव ॥ मैंदीन्हों फल जापको ताको लेहौ
नाहिं। छूटिधर्म सोंबिचरिहौ तौलोकनके माहिं ॥ राजोवाच ॥ कै

क्षत्रियकेधर्महैं सुनहुविप्रमतिमान । पृथ्वीकी रक्षाकरनअरु बर-युद्ध महान ॥ क्षत्रियकोदाताकहत बुधजन सुनुबुधपर्म । याते तो फलजापको कैसेलेहिंसुकर्म ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ रामगीती ॥ अपनेमनसों न तुमको कह्योहमन्नपदेन । औसुनोइक्ष्वाकु हमनहिंगयेनेरेगेन ॥ आपुही सों आयके नरराय तुम मोपाहिं । मांगिके फलजापको अब लेतहौ क्योंनाहिं ॥ धर्मउवाच ॥ हौं तुम्हार धामआयो मोहिं जानहुधर्म । करोतुम मतिवाद दोऊ दुओ सुनहुसधर्म ॥ सत्य को फललहौ भूपति दानको तुमविप्र । तजोदोऊ तुलविवादहि कहेमेरेक्षिप्र ॥ स्वर्गउवाच ॥ धारिकैमैं रूपआयो स्वर्गजानोमोहि । करोतुम मतिबाद दोऊ सुनो मोतनजोहि ॥ तुल्यफलतुमलहौ औचुप रहोसुनि मोबैन । बैनसुनिये स्वर्गके इमि भयो कहत सचैन ॥ राजोवाच ॥ बरवै ॥ सुनहुस्वर्ग तुमसोंनहिं कामहमार । जिमिआये तिमि जावहु करहुन बार ॥ होयकामना द्विजके जो अभिराम । तुम्हैं प्राप्तहोने की सुनुदिव्र आम ॥ लेयपुण्य को फलतो चारुहमार । यह सुनि बोल्यो सोद्विज बुद्धि अगार ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ अज्ञभावसों लरिकइ नाहींहाथ । कबहुं पसारोकैहै हम नरनाथ ॥ यज्ञकरन आदिकहेंजे षटकर्म । विप्रन के सुनु भूपतिपर्म सुकर्म ॥ याजनादि जे तिनमें सुकरमतीन । तिन सों जानहु हमको निवृत प्रवीन ॥ निवृत धर्मको सेवतरहतहमेश । मोहिं लुभावत क्योंहौ आपुनरेश ॥ अपनोकारज करिहैंहमहीं भूप । तव सुपुण्यको चाहत फलन अनूप ॥राजोवाच । जयकरी ॥ जो अपने जपको फलपर्म । हमको दीन्हों विप्रसुधर्म ॥ तौमम तवकछुहै फलजौन । संगहिं रहौनित्य द्विजतौन ॥ लेनोहैद्विज कार्य तुम्हार । अरु देनोहै कार्य्यहमार ॥ पैमांग्यो जपहमतव पाहिं । ताकेफरे भोगके माहिं ॥ अब यक कहत तुम्हैं हौं बैन । सोमानहुतुम द्विजबुधिऐन ॥ ममतव फलराखौएकत्र । अबतुम कहौ कछू मतिअत्र ॥ दोहा ॥ आपुकहौ यहबचन जो प्रज्ञावान

सुढार । कहा कहाफल भोगिहैं हमफल संगतुम्हार ॥ तौ मम फलको लेहुतुम तवफल को हमलेत । मानोमेरोबचन तुम यह बर बुद्धिनिकेत ॥ भीष्मउवाच ॥ सोरठा ॥ तिही समयके माहिं लरत लरत द्वै पुरुषनृप । आयेतिनकेपाहिं गहेपरस्पर फेटको ॥ दोहा ॥ नाम एकको बिकृतहो एककोनाम बिरूप । धारे बस्त्रमलीन हे ते दोऊ सुनुभूप ॥ चरणाकुलक ॥ सुनो बिकृत हमपै ऋणतेरो । है इमिकहत बिरूपघनेरो ॥ कहत बिरूपहि बिकृतसकोपै । ऐसे मम नहिंहैऋणतोपै ॥ कहिकहि इमिते भगराकरते । ऐसे कह्यो परस्पर अरते । नृपइक्ष्वाकु हमार तुम्हारे । करिहैंदूरिबिवादहि भारे ॥ कहिसुपरस्परइमिऋषिपागे । ऐसेकह्योभूपकेआगे ॥ तुम हौप्रतिपालक धरणीके । निपुण नीतिके माहींनीके ॥ भगराजो हमदोउनवारो । न्यायसहितताकोतुमटारो ॥ बिरूपउवाच ॥ हरिगीती ॥ हमहिंधरावत बिकृतको गोदान फलसुनु भूपहे । नहिंलेतताको बिकृत हेहम फेरिदेत अनूपहे ॥ बिकृतउवाच ॥ कछुना धरावत हैं बिरूप हमार हमनिजु कहतहैं । नहिंसत्यजानो बैनये यहकहत मिथ्या महतहै ॥ राजोवाच ॥ सोरठा ॥ कहुहे मोहिं बिरूप कहाधरावत बिकृतको । सुनिहम हियेअनूप कहिहैं तोहिं बिचारिकै ॥ सुनिबिरूप येबैन भूपति बर इक्ष्वाकुके । सुनहुतात बुधिऐन भूपहि कहत बिरूप भो ॥ तोमर ॥ हमहैं धरावतजौन । ऋण कहत तुमकोतौन ॥ मनलाय सुनहु नृपाल । तजिकै प्रमाद बिशाल ॥ दोहा ॥ बिकृत दईही धेनु यक ब्राह्मणको अभिराम । मांग्योहो हमतास फल जायबिकृत केधाम ॥ रंगिका ॥ बिकृत सहित आनंद महान धेनुदानको नीको । देत भये फलहमैं सुजान सोभन कियो नजीको ॥ मोनी ॥ तासअनन्तर लैहमकपिला चार । दुग्धवती बरबत्सा दोय उदार ॥ दई उंछवृत्ती बरद्विज को तौन । बिधि सह आदर करिकै सुनु बुधिभौन ॥ जयकरी ॥ तिनको सुफल बिकृतको देत । करत हठहिसो फलनहिंलेत ॥

जैसे हम लीन्हों फलस्वक्ष । तिमिहि बिकृतहू लेय प्रत्यक्ष ॥ चरणादोहा ॥ लीन्ही एक धेनुको फलहम पै दिन बीतेभूरि । याते हैगोदानको सुफल देत याहि सुखपूरि ॥ सोरठा ॥ हैऐसो वृत्तान्त याको मतिसों बिचारि कै । सुनिये श्रीक्षितिकान्त न्याय आपु करिदीजिये ॥ दोहा ॥ यासों हम गोदान फल जैसेलियो सुजान । तैसेहमसों लेतनहिं यहहठ करत महान ॥ सोरठा ॥ तुम बिचारि कै न्याय झगराहम दोऊनको । सुनिये बरनरराय शीघ्रदूरि करि दीजिये ॥ आभीर ॥ राजोवाच ॥ दीन्होंहै ऋण जौन । तैंबिरूप को तौन ॥ फेरिलेत तूक्योंन । कहो बिकृतबुधिभौन ॥ जैसोहोय करार । तैसो करो सुढार ॥ रामगीती ॥ विकृतउवाच ॥ हम दियो नहिं यहिभाव सों गोदान कोफल याहि । तिहिते नहीं कछुचहत मो- मन होय यत्रहि जाहि ॥ राजोवाच ॥ यहदेत औतू लेत नाहीं बिकृत सुनु मोपाहिं । बिनभये ऋण हेदेत जगमें काहु काहुहि नाहिं ॥ सुनि बिकृत याते अनृत भाषत तूहि सत्य बिरूप । है दण्ड केतू योग्य निश्चय कह्यो ऐसे भूप ॥ विकृतउवाच ॥ हमदीन्ह भूप बिरूप को गोदानको फल पर्म । पुनि दियोकैसे लेहिं हम नृप कहो आपुसुधर्म ॥ जो दण्ड बरबस देतहौ तौ देहु हेभूपाल । पै दण्ड के हमयोग्य हैं नहिं नीतिसों सु बि- शाल ॥ बिरूपउवाच ॥ हमदेत हैं तूलेतनाहीं बिकृत सुनुमत जोहि । बरधर्मपालक भूपमणियह दण्ड देहैंतोहि ॥ विकृतउवाच ॥ दोहा ॥ मांग्यो तुम गोदानको फल मेरे गृह आय । तोहिंदयो हम फेरिसो कैसे लेहिंसचाय ॥ पुनि लीबे गोदानको दयोसुफल नाहिं तोहिं । याते सुनो बिरूप तू कहाकहत हौमोहिं ॥ सोरठा ॥ बोल्यो पुनिन बिरूप सुने बारता बिकृतकी । तवबर बिप्रअनूप कहत भयो इमि भूपको ॥ तोमर ॥ इन दुहुनके तुमबैन । नृप सुने बर बुधिऐन ॥ फलजापको हमदेत । तुमलेहु तौनसचेत ॥ तुम अत्रऔर बिचार । जिनि करौ सुमति अगार ॥ आभीर ॥

भीष्मउवाच ॥ ब्राह्मण कोसुनिबाक । भूपति बर इक्ष्वाक ॥ मनके माहिं बिचार । यहभो करत उदार ॥ दोहा ॥ इनदुहूनको न्याय जोभयो अबहिं नहिंतौन । बीचहि देनो करत दृढ़ जापक बर बुधिभौन । बिप्रदेत फल जापको मोको बर अभिराम । ताहि नहीं जोलेहु तउप्राप्त होत अघमाम ॥ जयकरी ॥ जप कोमांग्यो हमहीं अत्र । तिहिते द्विजक्यों देन पबित्र ॥ यह बिचारिकै नृप बुधि ऐन । कह्यो दुहुनको ऐसे बैन ॥ दोहा ॥ तुम दोउन को न्याय निजु होय चुकै जब अत्र । तुमदोऊतब जाइयो मन आवै जहँतत्र ॥ सोरठा ॥ करौं जौनमैं न्याय नीति सहित दोऊनको । राज धर्म नशिजाय तौयामें संशय नहीं ॥ आभीर ॥ स्वधर्म पालन जौन । उचित नृपनको तौन ॥ जेनृप पालत नाहिं । परत नरकके माहिं ॥ दोहा ॥ मोकोमो अज्ञानसों कठिन बिप्रकोधर्म । प्रापत भो याते नहीं हैमोमन सहशर्म ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ दीन्हींजो फल जापको तुमको हम अभिराम । ताहि धरैहैं भूप हम ऋणकी नाईं माम ॥ उक्ता ॥ ग्रहण करो तुम तास । सुनहु भूप बुधिरास ॥ जो नहिं लैहौ आप । तौमैं देहौंशाप ॥ येसुबिप्रके बैन । सुनि ह्वै भूप अचैन ॥ कहत भयो इमिबात । बर बिप्रहिअवदात ॥ हरिगीती ॥ राजोवाच ॥ सुनु बिप्रबर यहि राज धर्महि नित्यहै धिक्कार । जिहि में प्रति ग्रह लेनकोहै परम दोष अपार ॥ हमकरैंका हमको प्रतिग्रहपरो लेनो अद्य । किमिहोय नाहीं प्रतिग्रह कोदोष मोको सद्य ॥ इहि भांति मनमें शोचिकै द्विजको कह्यो इमि बैन । सुनु पैप्पलादि सुबचन मेरो परम प्रज्ञा ऐन ॥ तुरलेय करिकै देन काजै हम प्रतिग्रहलेत । नहिं राखबे की कामना करिलेत बिप्र सचेत ॥ इमि बच्न कहिकै बिप्रको पुनि कहतभो इमि भूप ॥ तुम मोहिं देनो कह्योसो अब देहु शीघ्र अनूप ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ बर संहिता के जापसों हमको मिल्यो फल जौन । तुम लेतसो हमदेत तुमको सर्ब प्रज्ञा भौन ॥ इहि भांति कहिजल छोड़ि दीन्हो भूपके कर

माहिं। नृप लेयसो संकल्प ऐसे कह्यो द्विजके पाहिं॥ हमलयो तुमसों जौन अबहीं देत तुमको तौन। तुम लेहु सोवर धर्मधर द्विज परम प्रज्ञाभौन॥ फल देय नृपको जापको द्विज भयो रहित बिषाद। फिरि भूपको कछुकह्यो नाहीं समुझि व्यर्थ बिवाद॥ विरूपउवाच॥ चरणादोहा॥ कामक्रोध हम दोउनको तूजानु नृपाल महान। तुममें हम परवेश करि यह सब कियो सुजान॥ लेय प्रतिग्रह ब्राह्मणको तुम देन कह्यो पुनि भूप। याते तुम दोऊवर लहिहौ लोक समान अनूप॥ दोहा॥ तजी प्रतिज्ञा बिप्र नहिं औ न लोभ तुमकीन। पाल्यो क्षत्रियको धरम नृप इक्ष्वाकु प्रवीन॥आभीर॥ याते लोक समान। लहिहौ दुओसुजान॥काव्य॥ द्विजसों जप फल मांगि आपु नहिं लेनलगे जबातब समुझावन काज कियो झगराहमने तब॥ सोजपको फललीन्हे आपुपुनि हठनाहिं कीन्हो। अरु वरजानि लुभायनहीं तिहिमें मनदीन्हो॥ दोहा॥ यातेजौने लोककी करिहैंइच्छा आप। तौन लोकको जाय हैं नृपइक्ष्वाकु सदाप॥

शान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेकालमृत्युइक्ष्वाकुपैप्पलादिसम्वादेपड्विंशोऽध्यायः

भीष्मउवाच॥चरणाकुलक॥ जापकको सुत होत फल जैसो। वर्णि सुनायो तुमको तैसो॥ पढ़त संहिताको द्विजजेहैं। प्राप्तहोत बि-धि लोकहि तेहैं॥ अथवा सूर्य्य लोकमें नीके। अथवा अग्नि लोकमें श्रीके॥ करैकाम बसिबे तिनमाहीं। लहैवास तौ रबि शि-खिपाहीं॥ रबिशिखि केहि सुगुणको धारैं। परम प्रचण्डसु तेज पसारैं॥ दोहा॥ इमिहीं औरहु लोकजे उत्तम परमाबि-शाल। तिनमें जो इच्छाकरै जैबेकी महिपाल॥ चरणादोहा॥ तौतिन लोकनमें ह्वै प्रापत सानँद सुनुवर भूप। तिन लोकन के बासिनको फल लहिकै रहै अनूप॥ सोरठा॥ ब्रह्मादिक को लोक तिनमें होय न जासरति। सोजनवर बुधिओक प्राप्त ब्रह्मको होतहै॥ दोहा॥ ब्रह्मपदहुकी प्राप्तिकी इच्छाकरै न जौन।

तौ जैसी इच्छाकरै तैसी पावै तौन ॥ जापक जैसीगति लहत बार्णि सुनाइ ताहिं । अबआगेका पूछिहो भूप पाण्डुसुत मोहिं ॥

इतिमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्व्वणिमोक्षधर्मेसप्तविंशोऽध्यायः २७ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ सुनि बिरूपके बैन ब्राह्मण औ भूपाल बर । सुनहु तात बुधिऐन कहा सुउत्तर देतभे ॥ दोहा ॥ सद्य मुक्ति क्रममुक्ति ये दोय भांतिकी मुक्ति । औ उत्तम लोकहि लहब कीये पुण्य सयुक्ति ॥ इन तीनहुमें काहि वे प्राप्त भये भूपाल । कहा करत सम्बादभे दोऊ बिज्ञ बिशाल ॥ भीष्मउवाच ॥ रामगीती ॥ धर्म यम अरुकाल मृत्युहि यथा स्वर्गहि पूजि । औरजे द्विजरहे तिनको पूजि सुबचन कूजि ॥ कहतभो भूपाल को इहि भांतिसों द्विजबैन ।लेहुमेरे जापकोफल आपु प्रज्ञा ऐन ॥ सुनोलेहों फेरि मैं करिजाप अपने अर्थ । मोहिं साबित्री दयो बर यह सुभूप सशर्थ ॥ रहैगी श्रद्धा तिहारी जापमाहीं पर्म ।फेरिया ते सकतहोकरि जापहोय अभर्म ॥ राजोवाच ॥ पैप्पलादि सुबिप्र तुमफल दयो जपको मोहिं । दयेते जपदान भोबर पुण्य प्रापत वोहि ॥ होतजोमैं बिप्रतो जपदानको फल जौन । अधिक तुमको प्राप्तहोतो बिप्र प्रज्ञाभौन ॥ हौंसुक्षत्रिय भयोयाते दानसम फल तोहिं । भयोमम तवपुण्य मैं सबभाव तातेजोहिं ॥ पुण्यके सम भावसोंतुम बिप्रपर्म सुजान । चलौउत्तम लोकको ममसंग दक्ष महान ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ कहत हौ जो भूप हमको चलौ मेरे साथ । सामुहेधर्मादिकेतौ सुनोबर नरनाथ ॥ योग्य ममतव पुण्यकेजो लोकहोय अमन्द । चलौतौने लोकमाहीं भरेभूरि अनन्द ॥ भीष्मउवाच ॥ जानिनिश्चय दुहुनकी मतिको सुरेश सुजान । आवतो भो पासतिनके सुरन सहित महान ॥ साध्यसब अरुमरुत त्योंही लोकपालक सर्ब्ब । नदीशैल समुद्र तीरथ जितेस्वक्ष अखर्ब्ब ॥ तिमिहिं तप धरिरूप आवत भयो तिनके पास । सर्ब्ब औहाहादिबर गन्धर्ब्ब सहित हुलास ॥ सिद्धऔ सुनि

वेदसह बिधिभयो आवत तत्र । विष्णु आवत भये तिमिहीं करन जनहिं पवित्र ॥ बिबिध विधिके बाद्यबाजन लगे नभके माहिं । भावकरि बहुलगीं नाचन अप्सरा तिनपाहिं ॥ हर्षसेती लगे वर्षण फूलदेवत स्वक्ष । बिप्रको तिहिसमयमें इमिकह्यो स्वर्ग प्रतक्ष ॥ धन्य तुमहो विप्रवर औधन्य तुमहूँ भूप । पुण्य के परभावसों तुमलही सिद्धि अनूप ॥ तदनुनृप इक्ष्वाकु औ बर पैप्यलादि सुबिप्र । भयेकर्षत विषयते इन्द्रियनको सब क्षिप्र ॥ प्रान ब्यान अपान तिमिहि समान अरु सुउदान । थापि हियके माहिं पांचहु बायु एमतिमान ॥ वायुप्राण अपान माहीं मनहिं धारणकीन । कियेप्राण अपानको भ्रूमध्य दुहुंन प्रबीन ॥ तत अनन्तर आतमाको प्राणसहित सुजान । कर्षिकै भ्रूमध्यमें ते हर्ष सहित महान ॥ धारि मस्तकमाहिं दोऊ परम क्रमसों भूप । फेरिकै ब्रह्माण्डको भेजात दिवहि अनूप ॥ होत भो सब दिशन माहीं महत हाहाकार । जातभो बिधि पास द्विजको तेजस्वक्ष उदार ॥ देखिकै लोकेश ताको ताससोंहैं आय । सहित आदर लेतमे अति हर्ष हियमें छाय ॥ तद अनन्तर भये ब्रह्मा कहत ऐसे बैन । जापकन को तथा औ योगीनको मति ऐन ॥ होतहै परतक्ष दर्शन देवता कोपर्म । होतपै जापकन को फलइतो अधिक सुधर्म ॥ चरणा दोहा ॥दर्शन ही परतक्ष होतहै योगिनकोअभिराम।प्रत्युत्थानऔदर्शनपावत जापकजौनललाम॥ जयकरी ॥उठिसादर जो लीबोआम।प्रत्युत्थान है ताकोनाम ॥ प्रत्युत्थान पावत है जौन । जानो परम श्रेष्ठ है तौन ॥ आभीर ॥ ब्रह्माके येबैन। सुनिकै द्विजमति ऐन ॥ ब्रह्मा के मुखबीच । प्रापत भयोनिभीच॥ दोहा ॥ ऐसेही इक्ष्वाकुनृपबिधि के मुखमें भूप । प्राप्तहोतभो विप्रसंग कीरतिमान अनूप॥ मै०नी॥ तदनन्तर ब्रह्माको करिपरणाम । बचनकहतभे ऐसेदेवललाम॥ प्रत्युत्थान जापकको अधिकपबित्र ।जापक काजे हमसब आये

अत्र ॥ लख्यो सुफल जापकको हमअतिमाम ॥ लहत तिहारे पदकोजापकआम ॥ नांघि सर्व लोकन को जापक पर्म । जात जहांमन आवै होय सशर्म ॥ ब्राह्मणउवाच॥दोहा ॥ पढ़तजौन मनुके स्मृती अरुसुवेदकेअंग।शिक्ष्यादिककोपढ़तजेधारेसुमतिउतंग। ऐसिहि बिधिसों तौनहू लोक हमारे माहिं । आय लहत आनन्दको यामें संशय नाहिं । प्रवृत रहतजे योगमें तेऊ इहिबिधि आय। रहत हमारे लोकमें महत मोदसों छाय ॥ जयकरी ॥ अब तुम जावो निज निज धाम । इहि विधि बिधि देवनको आम ॥ कहिकै भयो सुअन्तर्द्धान । देवहुगे सब निज निज थान ॥ कालादिक आये हेजौन । पास बिप्रके प्रज्ञाभौन ॥ धर्मको सु करिकै सतकार । करिकै बहुबिधि स्तुती अपार ॥ पीछे लगे धर्मके सर्व । जातभये सुनु भूप अखर्व ॥ दोहा ॥ कियेजाप जो मिलत फल सोहम कह्यो अनूप । अब इच्छाहै सुननकी कहा युधिष्ठिर भूप ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेअष्टाविंशोऽध्यायः २८ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ जापकको फल मिलत जो तौन सुन्यो हम तात । अबकछु पूछत औरहू कहौतौन बिख्यात ॥ आभीर ॥ जपके फल सँग स्वक्ष । योगहुको फल दक्ष ॥ कह्यो मोहिं बिख्यात । सुनहु बिज्ञ बर तात ॥ तासु कारण एक । पूछतहौं सविवेक ॥ तौन हेतु तुममोहि । कहौ कृपाकरि जोहि ॥ दोहा ॥ ज्ञान सहित जो योग है तासु कहा फल चारु । अरु बर ज्ञानहिं सहित जो वेदाध्ययन सुठारु ॥ अरुसुअग्निहोत्रादि को फलहै कहा अनूप । औकिमि जान्यो जातहै जीवकहौ बरभूप ॥ भीष्मउवाच ॥ कहत एक इतिहासहौं यहि प्रसङ्गमें भूप ॥ मनुको अरु बागीशको हैसम्बाद अनूप ॥ हरिगीती ॥ इतिहास यहअभिराम मनुको बृहस्पति पूछतभयो । परणाम करि करजोरिकै बुधिधाम अति रतिसों रयो ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ जिहिहेतु सुकरम काण्ड है

अरु हेतु जगको जौनहै । और ज्ञानसों उत्पन्न जो फल होत वरबुधभौनहै ॥ नहिं सकत ताहि जनाय वेदहु तौन तुम प्रगटै कहो । कहि मोहिं तुममनु अन्नमेरे हियेको संशय दहो ॥ अरु प्रज्ञवर करियज्ञ अरु गोदान करिकै नेमसों । हैंकरत इच्छा जौनकी हैतौनका कहु प्रेमसों ॥ सो मिलत है किहि भांतिसों अरु कहौसो कहँरहत है । अरु भूमि भूमिज वायु नभ जल जन्तु अरु जल महतहैं ॥ दिव औ दिवौकस सर्व्व ये उत्पन्न जाते होत हैं । तुम तौन प्रगटै कहौ मोको आप प्रज्ञा पोत हैं॥ वरप्रज्ञ जाके ज्ञानकी इच्छा सुहीमें करतहैं । शुचिज्ञान ताको भये प्रापत महत आनँद धरतहैं ॥ वरज्ञान ताको भये ताके प्राप्तकीहै जोक्रिया । तिहि माहिं मानव लहतहैं बुध अत्र मैं निश्चय किया ॥ मैं ताहि जानतहौं नहीं बिनु ताहि जानेते सुनो ।किहिभांति ताके मार्गमाहीं लगौं मैं हिय मैं गुनो ॥ हम बेदशास्त्रहि पढ़ेहैंपै ब्रह्मको जानत नहीं । तुमतौन मोहिं बताय दीजै आपु विज्ञमहा सही ॥ अरु कहाहै फल ज्ञानमें औ कर्म माहीं महतहै । अरु कहौदेही देहको तजि देह पुनि किमि लहत है॥ मनुरुवाच ॥ उक्का ॥ आपुकोन प्रिय जौन । दुःख कहावत तौन । आपुहि जो प्रियधाम । सुख ताकोहै नाम ॥ दुखको कीबे दूरि । औसुख लीबे भूरि ॥ कर्महिं जानो प्रज्ञ । वाचस्पति धर्मज्ञ॥ जौन अर्थहै कर्म । तौन कह्यो हमपर्म ॥ ज्ञानको सुफल जौन । सुनहु प्रज्ञ अबतौन ॥ दोहा ॥ अप्रिय प्रियको दुःख सुख होय नप्रापत मोहिं । ज्ञान सबुधि यहि अर्थहै सत्य कहतहौं तोहिं ॥ कवित्त ॥ जगमें महतप्रज्ञहैं जेजन । ब्रह्म जानिबेको वरतेजन ॥ यज्ञादिककोकरत सहित बिधि । यह सिद्धांत कहतहौं बुधिनिधि॥ बहुविधि केजे कर्म बृहस्पति । करत सकाम तिन्हें जे लघुमति ॥ तेजन चरण निरय कोधारत । कहतज्ञान सोंजौन निशुरत ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ सोरठा ॥ महत प्रज्ञहैं जौनकरत यज्ञआदिक करम । ब्रह्मजानिबे तौन

कहत आपुऐसेसुबुध॥ जगकेमाहीं सर्व दुःखनिवारणकोमहत ।
अरु सुखलेन अखर्व करत सविधि यज्ञादिहैं ॥ मनुरुवाच॥दोहा॥
लोकनके जेदुःखहैं तिन्हैं निवारण काज । अरु सुखकी प्रापति
अरथ अर्थ सुकर्म समाज ॥ नरक स्वर्गके माहिंते फिरत रहतहैं
सर्व । ब्रह्मपदहिते लहतनहिं कहत सुबुद्ध अखर्व ॥ स्वर्गादिक
फल कर्म्म के तास कामना जौन । ताहि छोड़िजे करतहैं कर्म
परम बुधिभौन ॥ ब्रह्मपदहि ते लहतहैं जानु महत सिद्धान्त ।
करत प्रज्ञजे रहत रतशास्त्रहि माहिं नितान्त ॥ दुष्टकर्म कबहुं
न करै निशिदिन करै सुकर्म । पै हियमें राखै नहीं फलकी ईहा
पर्म ॥ जे ईहा राखत न ते ब्रह्महि प्रापत होत । राखत ईहा
जौन ते जगमें करत उदोत ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ निश्चय बन्धक
कर्महै तौन अबन्धक होय । कैसे कहिये मोहिं तुम ज्ञान नैनसों
जोय ॥ मनुरुवाच ॥ विधि मनसों अरु कर्म्मसों प्रजाबनाई सर्व ।
दोय प्रजा उत्पत्तिके येहैं हेतु अखर्व ॥ मनमें ईहा राखिकै कर्म
कियो है जौन । फलहि देतहैं कर्मसो जानहु निज बुधि भौन ॥
कण्टकादि जिमि लखत जन रबिकेभये प्रकाश । तिमि बिज्ञान
भये लखत अशुभ कर्म बुधिराश॥सोरठा॥अति उत्तम फल देत
ज्ञान महान सुजानसुनु । अरु अज्ञान सचेत अधमहि फलका
देतहै ॥ तोमर ॥ जन जौनहै सहज्ञान । जनतौन सुनुमतिमान॥
सर्पादिको पथमाहिं । लखि तास पासन जाहिं ॥ अरु जेन ज्ञान
समेत । सर्पादिते भयलेत ॥ दोहा ॥ फल सुज्ञान अज्ञानको ऐसो
होत सुजान । कहूं दुःख नहिं लहत जन प्राप्त भयेते ज्ञान ॥
सविधि जाप अरु सबिधिमख और दक्षिणा चारु । मनसमाधि
अरु अन्नको दान सुबुद्धि अगारु ॥ पांच कर्मये पर्म हैं इनको
करै सदाहिं । पै ईहा राखै नहीं अपने हियके माहिं ॥ जयकरी ॥
सात्विक राजस तामसपर्म । होत तीनिबिधि केहैं कर्म ॥ होत
मंत्रहू बिधिकेतीन । सुनहु बृहस्पति परमप्रवीन ॥ कर्ताहू त्रय-

विधिके होत। सत्वरज तमको करत उदोत॥ दोहा॥ ज्ञानको सुफल दृष्टहै दृष्ट कर्मको नाहिं। यातेज्ञानहि कर्मते श्रेष्ठगुणहु मनमाहिं॥ आभीर॥ जैसे जैसे कर्म। करतमनुजहै पर्म॥ तैसे तैसे तौन। पावत फल बुधिभौन॥ दोहा॥ जानेभो सब जगतहै ताहि ज्ञानसों स्वक्ष। ज्ञानी पावत तौनहै कहत तोहिं हौंदक्ष॥ आपु विषयते रहितहै नित्यानन्द दराज। विरक्तनहै सब विषय को प्रजा भोगके काज॥ नहिंनारी नहिंपुरुषहै नहीं नपुंसक तौन। नहीं सूक्ष्म नहिंथूलहै अक्षर आनँद भौन॥

इतिश्रीशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेमनुबृहस्पतिसंवादेएकोनत्रिंशोऽध्यायः२९॥

मनुरुवाच॥दोहा॥ अक्षरतेभोव्योमअरु भयोव्योमतेवाय। भयो बायुतेतेजअरु तातेजलबुधराय॥ जलतेभईवसुन्धरा तामेंभो जगसर्ब। यहजानोउत्पत्तिको क्रमवागीशअखर्ब॥ हरिगीतिका॥ जिहि भांतिअक्षरतेभयो उत्पन्न यहजगसर्ब है। तिहिभांति बिधि विपरीतसो संहारमाहिंअखर्ब है॥ मिलिजात अक्षरमाहिं जैसे नार माहीं नौनहै। है महत जिनकी मनीषा याहिकनहि जानत तौन है॥ बुधभूमि जलमें तेजमेंजल तेजसों पवमानमें। पवमाननभ में मिलत नभ अक्षर सु आनँदवानमें॥ दोहा॥ अक्षर जान्यो जातहै योगाभ्यास बिनान। यह तुमसों मैं कहतहौं वर सिद्धांत महान॥ अक्षर मृदु न कठोरहै नहीं उष्णनहिं शीत। नहिं कषाय नहिं अम्लहै नहीं मधुर नहिं तीत॥ नहींशब्दवत गन्धवत नहीं रूपवतपर्म। केहूजान्यो जातनहिं वर वागीशअभर्म॥ तोमर॥ विधि योगकी अभिराम। सुनु वृहस्पति बुधिधाम॥ तुम को कहैं हमआम। सुखदायहै अतिमाम॥ दोहा॥ इन्द्रियनिज निज विषयको जानति है मतिमान। जानि सकति नहिं अक्षरहि जोहै नित सुखदान॥ विषयमाहिं ते कर्षि के त्वगादि इन्द्रिय सर्ब। करसकजो इन्द्रियनको ताको सत्बुध अखर्ब॥ अक्षर ते जानै पृथक करिकै महतविचार। योग शास्त्रको स्वच्छहै यह

सिद्धांत सुढार ॥ कर्ता सुकरण कर्म अरु आधेये आधार । सो अक्षर इन सबनको जानोहेतु अपार ॥ रहत मंत्रलौं गुप्तहैसर्ब जगतमें तौन । सोई हेतुहै और सब कार्यजानु बुधिभौन॥ कर्म जन्य जोदेहहै ताकेमाहिं अनूप । परम प्रकाशित रहतहै ज्ञान ब्रह्मकोरूप ॥ होत प्रकाशित दीपसों जिहिबिधि गेह अखर्ब । तिमिहि प्रकाशित ज्ञानसों होत सु इन्द्रिय सर्ब ॥ जिमि भूपति के रहत हैं सदाभृत्य आधीन । तिमिहिं ज्ञानके इन्द्रियां हैंआ-धीन प्रवीन ॥ यक आवत यक जात जिमि बायुबेग बुधिगेह। तिमि आवति यकजातिहै सब देहिनकी देह ॥ ज्ञान देहकेसँग रहत नशत देह सँग नाहिं । नित्य ज्ञानहै ब्रह्मको रूप जगतके माहिं ॥ काष्ठमाहिं शिखि रहतहै परत नछेदे देखि । तिमिहिं देह में रहतहै ज्ञानपरत नहिं पेखि ॥ मथन किये ते काष्ठमें परतधूम जिमि देखि । तिमिहिं योगसों देहमें परतज्ञान बुधि पेखि ॥ दे-हांतरको होतजब प्राप्त जीव तबज्ञान । जातजीव सँग देहसँग नष्ट नहोत सुजान ॥ जयकरी ॥ उतपति वृद्धि घटन अरुनाश। ये शरीरकोहै बुधिराश ॥ हैन शरीरीकोये सर्ब । जानो यहसि-द्धांत सखर्ब ॥ दोहा ॥ जड़है इन्द्रिय सर्बअरु आत्मानित चैत-न्य । यहि सिद्धांतहि योगबिद जानतहैं नहिं अन्य ॥ आत्मा को जानति नहीं त्वगादि इन्द्रियसर्ब । जानत सबइन्द्रियनको आत्मा सबुध अखर्ब ॥ द्वितिय देहकी प्राप्तिजो पहिली देहबि-हाय । तुम को तास प्रकारहौ कहत सुनहुबुधराय ॥ अरिल ॥ छो-ड़त देही प्रथम देहजब । पंचभूतके अंश प्रज्ञतब ॥ लैयजात संग द्वितिय देहमाहिं । यह सिद्धान्त जानु संशयनाहिं ॥ दोहा ॥ पञ्चभूत के अंशते द्वितिय देहमें जाय । अपने अपने गुणन सों युक्तहोत बुधराय ॥ अरिल ॥ मनआधीन रहत इन्द्रियगन। अरु मतिके आधीन रहत मन ॥ आत्माके आधीन रहतमति। जानत जिनकी शास्त्रमाहिं गति ॥ दोहा ॥ किये पूर्वके अशुभ

शुभकर्म रहत मनमाहिं । यहौ जन्ममें होतहै ताते आवत पाहिं ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ नित्य बासना कर्मकी रहती है मनमाहिं । जौंतो कबहूं जीवकी मोक्ष होयगी नाहिं ॥ मनुरुवाच ॥ मैंहौं अक्षरआत्मायह जो ज्ञानअमन्द । तासोंमनकोजाननिटि कर्मबासनाद्वन्द ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेत्रिंशोऽध्यायः ३० ॥

बृहस्पतिरुवाच ॥ दोहा ॥ बुद्धि सहितजो आत्मा निर्विकार है तौन । पूर्व कह्यो बहुबारतुम यह हमको बुधिभौन ॥ बुद्धिसाहित जो आत्मा होत विकारी सोय । सोईहोत स्थूल अरु दृश्यहु सोईहोय ॥ पै हम जानत आत्मा बुद्धिबिना नहिंभूप । याते कहिये फेरि तुम प्रज्ञावान अनूप ॥ मनुरुवाच ॥ इन्द्रिय मनसह आत्मा जाग्रतमाहींजौन । बस्तु उपतहै स्वप्नमें फेरि लखतहैतौन ॥ इन्द्रिय औ मन रहतहै आत्मासंग न तत्र । पै जाग्रत ये बस्तु जो लखी लखतहै यत्र ॥ इन्द्रिय मनबिन स्वप्नमें देखत जोहै ताहि । आत्मा जानो ज्ञानसों कहत तुम्हैं अवगाहि ॥ कहत आप बुधिबिन न हम जानत आत्मा और ॥ सोजड़ है किमि स्वप्न में देखै करिये गौर ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ रहति मनोरथमाहिं ज्यों इन्द्रिय बास्ना रूप । तिमिहिं स्वप्नमें रहति है बास्नारूप अनूप ॥ इन्द्रिय बास्ना रूपते लखति स्वप्न के माहिं । याते निश्चय होतहै आत्माको मनुनाहिं ॥ मनुरुवाच ॥ भूत भविष्यत कालको जाहि होतहै ज्ञान । ताको जानो आत्मासुर गुरु प्रज्ञमहान ॥ भूत भविष्यत कालो नशति न इन्द्रियप्रज्ञ । ज्ञान होतहै दुहुनको बाचस्पति धर्मज्ञ ॥ चरणा दोहा ॥ जाग्रत स्वप्न सुषोप्तिये थानबुद्धिके तीन।रजतमसों अरु सत्यसों तीनिहु युक्त प्रवीन ॥ सुखदुःखादिको आत्मा जानत तीनहुमाहिं । पै भोगतिहै बुद्धिही आत्मा भोगत नाहिं ॥ अरिल ॥ स्वप्न सुषोप्ति अवस्थामें जिमि । बुद्धि सुखादिक को भोगतातिमि ॥ इन्द्रिय द्वाराहूसों भोगति । सुखदुखादि को सुनहु बृहस्पति ॥ रामगीती ॥

जिहिभांति इंधन माहिं जोहै अग्निताको बाय । करिसो प्रकाशित देति जारति है नहीं बुधराय ॥ तिहिभांति आत्माकैप्रकाशित बरबुद्धिको करिदेत । सोकरति भोगहि करत आपनभोग सुमतिनिकेत ॥ चरणा दोहा ॥ कह्यो तोहिंहम आत्मा भिन्नबुद्धि सो जौन । इन्द्रिय को बिषयन है ताते जानिपरत नहिंतौन ॥ आत्माहै यहिमाहिं दिखायोहम सिद्धांत महान । अब निषेध को आत्माके हम कहत अभाव सुजान ॥ सोरठा ॥ भूधर जो हिमवान ताकोउत्तर भागजो । अरु शशिकी मतिमान देखिपरति नहिं दृष्टिहै ॥ दोहा ॥ देखि परेबिन दुहुंनको है है नहीं अभाव । तिमिहिं अभाव न होयगो आत्माको बुधराव ॥ चन्द्रमाहिं जो जगतको चिह्नपरत है देखि । पै काहूको जगतमें परत नहीं अवरेखि ॥ ऐसेही है आत्मा पैजानत नहिंकोय । ताहिजांनिये शुद्धकै प्रवृत्तज्ञानमेंहोय ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ नरेश ॥ लखि परत जो नआँखियाँनसों । तिहिको सुप्रज्ञ अनुमान सों ॥ जानतहैंवाचस्पति सुनो । मतिअत्र आपु संशय गुनो ॥ दोहा ॥ रूपमान जे चरअचर तिनको प्रज्ञ अनूप । आदिअंत में लखत हैं सुबुध मृत्युको रूप ॥ सोरठा ॥ अतिहि दूरितेहितैन देखिपरति गति भानुकी । पैजानत बुधिऐन देहान्तर की प्राप्तिसों ॥ ऐसेही बर प्रज्ञ ज्ञानदीपसों लहतहैं । आत्माजो सर्वज्ञ ताहिसुनो बागीशबर ॥ दोहा ॥ बिना उपायनहोतहै बस्तुकौनहूंसिद्धि । यहसिद्धांत महान है कहत परम बुधिनिद्धि ॥ सोरठा ॥ जलकेमाहिं अथाह सदारहत जलजन्तु हैं । तिनको लेत मलाह गाहि सु सूत के जालसों ॥ अरिल ॥ अहिके चरणहि जानतहैं अहि । जगमेंजानत और कोयनहिं ॥ इमिहिंआत्माकोहै जानत । ज्ञानहिं और नहींअनुमानत ॥ दोहा ॥ आत्मायो चैतन्यजो रहतदेहके माहिं । पै घटादिके लखति तिमि ताहि लखति मतिनाहिं ॥ आत्माहै यह ज्ञान जोजानतिहै मतिताहि । पैआत्माको लखति नहिंक-

हत तुम्हैं अवगाहि ॥ सोरठा ॥ नशै अमाके माहिं कला नशत नहिंचन्द्रहै। इमिहिं नशतहै नाहिं देहीं संगमें देहको ॥ दोहा॥ नशतन देही देहसँगजानि परतहो क्यौंन। जोइमि तुमसुरुगुरु कहो तौ सुनुप्रज्ञाभौन ॥ सोरठा॥ कलाभये तेक्षीण शशिनअमामें परतलखि। देही इमिहिं प्रवीन जानि परत बुध देह बिन॥ फेरि कलाकोपाय देखिपरत जिमिचंद्रमा। जानि परत बुधराय देही पायेदेह तिमि ॥ दोहा ॥ पैऐसेते कहतहैं महत प्रज्ञहैजौन। आत्माको अरु देहको हैसम्बन्ध कवौन ॥ जयकरी ॥ घटमेंधरो सुदीपक जौन। तासों अरु घटसों बुधिभौन ॥ है सम्बन्धन तिमिहीं देह। अरु आत्माको नाहिंमतिगेह ॥ दोहा ॥ हैसम्बन्ध नपै सुनो देहीबिन जोदेह। तास प्रकाश नहोतहै निश्चयहेबुधिगेह ॥ सोरठा ॥ देही हू बिन देह प्राप्त नहोत प्रकाशको। सुनहु परम बुधिगेह यामें संशयहै नहीं ॥ दोहा। जैसे राहु अदृश्यहै रबिशशि संग लखाय। परत तिमिहिं सँग देहके देही जान्यों जाय॥ जिमिरवि औशशिसों छुटे राहुपरत नहिंदेखि। तिमिहिं छुटेते देहको देही परत नलेखि ॥ अरिल ॥ छुटत देहसों देही है जब। द्वितिय देहको पावतहै तब ॥ कर्मनके फलसो सुरगुरु सुनु। अत्र नहीं संशय निश्चयगुनु ॥

इतिमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेएकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥

बृहस्पतिरुवाच ॥ सोरठा ॥ देहीतजिकै देहफेरि लहत यातेभयो। निश्चय यह बुधिगेह छुटत देह सम्बन्धनहिं ॥ रामगीती ॥ सुनु जौनहीं सम्बन्धछूटत देहको हे भूप। तौ मोक्ष अर्थी को भयो सब यत्नव्यर्थ अनूप ॥ तुमकहौ याते देहकी जो निवृति ताको हेतु। हौ आपुही यह हेतु कहिवेयोग्य बुद्धिनिकेतु ॥ मनुरुवाच ॥ सोरठा ॥ लख्यो स्वप्नहै जौन व्यर्थ तौन तैसहि सुनो ॥ है शरीर बुधिभौन व्यर्थ नित्यमति जानिये ॥ जयकरी ॥ थूललिंग ये तन हैं दोय ॥ जात सुषोप्ति माहिं जिमि सोय ॥ रहत भिन्न ह्वै कै

है ज्ञान । तैसेहि मोक्ष जानु मतिमान ॥ जैसे निर्म्मल जल जो होय। परै अवश्य तौ तामैं जोय ॥ ऐसेही जो इन्द्री सर्ब। होहिं बिलम तौ सुबुध अखर्ब ॥ आत्मा परै ज्ञानसों जानि। यह निश्चय मनमें अनुमानि ॥ रहे स्वच्छ जो मन हे दक्ष। तौ इन्द्रियहु रहैं सब स्वक्ष ॥ रहैंस्वच्छ सुरगुरु मन जौन। इन्द्रिय रहैं स्वच्छ सब तौन ॥ दोहा ॥ होत कुबुधि अज्ञानते ताके संगम दुष्ट। होत ताससँग इन्द्रियहु होति दुष्टहै पुष्ट ॥ बिषयमाहँ जो मग्न अति धरे महत अज्ञान। तौन जीव पुनि देह को प्राप्तहोत मतिमान ॥ प्राप्तभयेते देहको तृष्णा होति महान। सोतृष्णा तब मिटतिहै जब अघनशत सुजान ॥ उल्लाला ॥ जेपरम ज्ञानको छोंड़ि नितबिषयमाहिं रतरहतहैं। तेनहींहोतहैं ब्रह्मको प्राप्तमहत बुधकहतहैं ॥ तोमर ॥ जब पाप मानसिजात। तबज्ञान जो अवदात ॥ उतपन्नहोत सुजान। सुखदान पर्म महान ॥ जब ज्ञानहोत अमन्द। तब बुद्धिमें निर्दन्द ॥ परमातमा सुखदाय। लखिपरत है बुधिराय ॥ दोहा ॥ इन्द्रिय जेरत बिषयमें तिनतेदुःखमहान। प्राप्तहोतहै जीवको नित नित सुनहु सुजान ॥ चरणा दोहा ॥ बिषय माहिंते खैंची इन्द्रिय तिनसों अति आनन्द। प्राप्त होतहै जीवकोहोति सुबुद्धि अमन्द ॥ ॥ अरिल ॥ कारणमाहिं मिलतहै कारज। लयके माहिं करतहै आरज ॥ अरुउत्पन्न होत जबगुरु सुनु। कारण तासोंहोत कार्य्य गुनु ॥ जयकरी ॥ लय जब होत बिज्ञ अवदात। तब इन्द्रिय मनमें मिलिजात ॥ अरु मन बुद्धि माहिं मिलिजाय। बुद्धि जीवकेमाहिं समाय ॥ परमात्माजो नित्यानन्द। तामेंजीव मिलत निर्दन्द ॥ लयको हेतु कह्यो हम ऐन। अबउत्पतिको सुनहु सचैन ॥ माति अव्यक्त ब्रह्महै जौन। तातेजीव होतहै तौन ॥ ताते मातिको होत उदोत। मतिते मनको उद्भवहोत ॥ मनते होति सुइंद्रियसर्ब। बिषय माहिंते लगति अखर्ब ॥ अरिल ॥ उत्पतिको तुमकोहमकारण। कह्यो प्रगट करिकै

निर्द्धारण ॥ हेतुमोक्ष को जोहै बरम्राति । कहत तुम्हैं अवसो बाचरुपति ॥ दोहा ॥ शब्दादिक जे बिषयहैं आकाशादिक माहिं। प्रथम छोड़ि तिनकोन पुनि लागैं तिनके पाहिं ॥ शब्दादिक को छोड़िपुनि आकाशादिक सर्ब । तिनहूंको छोड़ै समुभि गहि कै ज्ञान अखर्ब ॥ सोरठा॥ आकाशादिक जौन तिनको जो आभावहै । हिय अकाशमें तौन रहत देहतजि तौनहूँ ॥ आभीर ॥ फिरिजो सूक्ष्म देह।नाहितजै बुधिगेह ॥ सूक्ष्म छोड़ेपर्म। लहत मोक्षको शर्म॥ मधुभार ॥जिमि मारतराड। लहि उदय चराड॥ करकोपसार। है करत चार॥ फिरि अस्त होय। करलेत गोय ॥रवि आपु बीच। सुनु गुरु निभीच ॥ हरिगीता ॥ यहि भांतिही सों देहको आतमा प्रापत होयकै।बिस्तरत हैइन्द्रियनको सबफेरि तिनको गोयकै॥ जोआपनोहै रूपताको होतप्रापत तौनहै । यह बारताहै गुप्त तुमको कहीजो बुधिभौन है ॥दोहा॥पुनि पुनि कर्म प्रभावसों प्राप्त होतहै देह।आत्माविद हैं जौनजन तिनहूँको बुधिगेह॥चरणादोहा॥ पुनि पुनि जोहै प्राप्त देहकी तास निवृतके काज । निवृत धर्मको कहततुम्हैं हम सुनिये प्रज्ञदराज॥ मौनी ॥विषय माहिं इन्द्रियको लगन न देय।लगे बिषयमें देहैदुख यहज्ञेय॥देतजि भोजन धरि कै धीर्य्य महान। इन्द्रिय निर्बल ह्वैकाज सुजान॥ रहत सबलहैं जबलौं इंद्रिय सर्ब।कर्म होतहै तबलौं खर्ब अखर्ब ॥ निवलभयेते इंद्रिय कौनहु कर्म । होत नहींहै केहू कबहूँ पर्म ॥ तजे भोजनहु जिह्वा निवल न होय। कीजै निर्बल तिहिको आतमा जोय ॥ध्या-नमाहिं आत्माकोजो येप्रज्ञ । निवल होतिहै जिह्वा वर धर्मज्ञ॥ दोहा ॥बिषय संगसोंरहित मति जबजिय माहिंसमाय। प्राप्तहोत तब ब्रह्मको जीवजीव बुधराय ॥

महाभारतेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्म्मेमनुबृहस्पतिसम्वादेद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२

जयकरी॥मनुरुवाच ॥ योगमाहिं जे बाधाकार । बहुतभांतिके दुःख अपार॥देखै तिनको कबहूँ नाहिं।लागोरहै योगके माहिं॥हरिगीता॥

करनो बिचार न दुःखको जो चित्तमें मतिमान । नहिं दुःखप्रा-
पतहै मुनीको यही हेतु महान ॥ बरज्ञान जैसो दूरिकारक दुःख
के समुदाय । दुख दूरि कारक और ऐसो हेतुनहिं बुधराय ॥ बय
रूप यौवन द्रव्य सञ्चय औ निरोगितअंग । अरु दास प्यारे
पासजो है प्रीति सहित उतंग ॥ ये सर्वनाहीं नित्यहैं यह हेतुते
इनमाँहिं । कबहूँ न इच्छा राखिये करिज्ञान कोमनपाहिं ॥ इ-
न्द्रियन के जे बिषय तिनमें निरतहैं जनजौन । सुख लहतहैं
लघुकबहुं बहुदुख लहत दीरघतौन ॥ यहिलोकके सुखदुःखको
जन जौन हैं तजिदेत । सोब्रह्मपदको होत प्रापत सुनहु बुद्धि-
निकेत ॥ दुख निवृतिको जोहेतुहै सो कह्यो हमतव पास । अब
जीवको अरु ब्रह्मको यकभाव सुनु बुधिरास ॥ जो ब्रह्मभो
संसारहै सोज्ञानइन्द्रिय पास । जबहोतहै तबहोति विषयाकार-
मति मतिरास ॥ सुनुप्रज्ञ जब मनबुद्धिकोहै होत एकीभाव ।
तबध्यानसों परब्रह्म जानो जातहै बुधराव ॥ सोरठा ॥ गिरिते
जिमिकीलाल कढ़त तिमिहि अज्ञानते । प्रज्ञाकढ़तिबिशाल सो
लागतिहै बिषयमें ॥ नगस्वरूपिणी ॥ अज्ञान नाशकालमें ।सुसेमुखी
बिशाल में ॥ सुप्रज्ञ आतमा जबै । सुप्राप्तहोतहै तबै ॥ चरणादोहा ॥
चीन्हिपरतहै ऐसे जैसे हेमकसौटी माहिं । प्राप्तभये मतिमें आ-
त्माको जानो जड़ तुमनाहिं ॥ दोहा ॥ मनमतिके सहभावसों जो
तुमकहो सुजान । ऐसेमतिमें प्राप्तभो आत्माजौन महान ॥ ताहि
लखै मनसों नहीं सकत देखिमन ताहि । द्रष्टाहै मनविषयको
कहततुम्हैं अवगाहि ॥ चरणादोहा ॥ थूल देहके नाशकालमें सत्वा
दिक गुण जौन । आकाशादिक भूतनकोलै निवृतहोत सुतौन ॥
दोहा ॥ ऐसेही इन्द्रियन सह मतिमनमें मिलिजात । लयको हैऐ-
सोहुक्रम सुनहुप्रज्ञ अवदात ॥ मतिजब मनमें मिलति तब मति
मनहीं हैजाति । मनसों भिन्न न रहतिहै सह इन्द्रियकी पाँति ॥
बृहस्पतिछन्द ॥ पूर्वकह्योतुम आतमा प्राप्तहोत मतिमाहिं । अबमति

मनकी एकता कही हमारेपाहिं ॥ यातेमन अरु आतमाको कैहै सहभाव । मनजोहै सोत्रिगुण मय हैसुनु मनुवरराव ॥ मन के अरु आतमाको संगभावतेपर्म । आत्मामाहीं होयगो मनको जोहै धर्म ॥ मनुरुवाच ॥ संगभयेते आत्माको अक्रमति को हैमाति मान । आत्मामें नाहिंहोतहै मनको धर्ममहान ॥ रामगीती ॥ हैव्या-नते उतकर्ष जामें सत्वगुण बुधिधाम । मनजौन ऐसोहोत प्रकृ-तिहि प्रातजब बुधिधाम ॥ तब छोड़ि प्रकृतिहि तथा गुणसब निराकारहि पाय । बरनिराकारहि माहिंसो मिलिजातहै बुधिरा-य ॥ दोहा ॥ निराकार लखि परतनाहिं हैतुमकै दृष्टांत । सोहिंदेखा-वोजो कहौ इमितौसुनु सिद्धांत ॥ कहिवेमें आवतनहीं परतनहीं जो देखि । ताहि बतावैकौन बिधि दैदृष्टान्तै लेखि ॥ यातेजो अ-व्यक्तहै आत्मारहितअकार । श्रवणमननसों होयथिरि ताकोकरै बिचार ॥ ब्रह्मज्ञानको प्राप्तभो निश्चयहै जन जौन । ब्रह्ममाहिं अरु आपु में भेदन जानत तौन ॥ अरिल ॥ जो सत्वगुणसों होयर-हितमति । होयब्रह्मको प्राप्तवृहस्पति ॥ निश्चय जौन मनीषा सहगुन । होति ब्रह्मको प्रापत कबहुंन ॥ दोहा ॥ इन्द्रियरहति बि-मुक्त कर्मसों जिमि सुषुप्तिके माहिं । तिमिहि रहत है प्रकृति सों ब्रह्मबिमुक्त सदाहिं ॥ आभीर ॥ युक्त प्रकृतिसों जौन । रहत जगत मेंतौन ॥ भयेज्ञानकोद्योत । रहित प्रकृतिसों होत ॥ जोजनतौन सुधर्म । मिलत ब्रह्ममें पर्म ॥ चरणादोहा ॥ होत प्रलय तबमिलत प्रकृतिमें अज्ञानी जनजौन । मिलत जौनवर ज्ञानवानहै निरा-कार में तौन ॥

महाभारतेशांतिपर्वणिमोक्षधर्ममनुबृहस्पतिसंवादेत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३॥

मनुरुवाच॥दोहा ॥ जैसे मालामें रहत सूत्रछप्यो हेप्रज्ञ । तिमिहि रहत है जगतमें परमात्मा सर्वज्ञ ॥ मनमतिसों जब होययुत सविषय इन्द्रिय सर्व । ब्रह्मज्ञान तबहोतहै मनतसुबुद्ध अखर्व ॥ चरणाकुलक ॥ परम हंसकी मालसुढारी । तिमिही माला मोतिन

वारी ॥ अरु प्रवालकी माला भाकी । तिमिही जोमाला मृतिकाकी ॥ तिनमें सूत्र रहतहै जैसे । सुनहु बृहस्पति आत्मातैसे ॥ रहत मनुज गोमयगल हयमें । तिमिही पशु पक्षिनके चयमें ॥ चरणादोहा ॥ जैसे जैसे तनसों जोजो जीव करतहैकर्म । तैसे तैसे तनसों भोगत सोसो कर्म सुधर्म ॥ कर्म भेदते बिबिध देह को जो संयोग सुजान । मैंदृष्टान्तदेतहौं तामें तुमकोकरि अनुमान ॥ सोरठा ॥ ब्रह्मभये क्षेत्रज्ञ जैसे जैसे करत हैं । कर्म सुनहु बरप्रज्ञ तैसे तैसे तन लहत ॥ जैसे धरणी माहिं जैसो बोयोजात है । यामें संशयनाहिं अन्नहोत है सोइहै ॥ हास ॥ होति प्रथम इच्छा पुनि होत सुउद्योग । सिद्धि होत कर्मफेरि कहत सुबन्धु लोग ॥ कर्म भये सिद्धिफेरि ताकोफल होत । जानतसोजाकेहिय मतिको है द्योत ॥ प्रथम हेतु इच्छाहै जानो तुमप्रज्ञ । लगे रहतयाहीमें जे जनहैंअज्ञ ॥ जेहैंजनप्रज्ञरहैंइच्छासोंदूरि । दुःखदायजानि हिये धारि ज्ञानभूरि ॥ दोहा ॥ योग्यजानिबे होयसो ज्ञेय कहावत दक्ष । जासों जान्यो जातहै ज्ञेयज्ञानसों स्वक्ष ॥ ज्ञेयजौन परमातमा ज्ञानचक्षुसों ताहि । लखतसुबुधहैअरु अबुध ताहिलखतहै नाहिं ॥ श्लोक ॥ पृथ्वीते नीरमहत है सुनो । नीरते सुतेज महतहै गुनो ॥ तेजसते महत पवन जानिये । पवनहु ते महत ब्योम मानिये ॥ दोहा ॥ ब्योमहुते हैमन महत मनते बुद्धिमहान । महत बुद्धिते कालहै कालहुते भगवान ॥ तोटक ॥ यहसर्ब महा जगहै जिहिको । जनकोउन भेव लहै तिहिको ॥ जिहिको बुध जे नितध्यावत हैं । मनकोनाहिं अन्तलगावत हैं ॥ चरणादोहा ॥ आदिमध्यअरु अन्तन जाकोयाते अब्ययमाम । हैश्रीबरभगवान कोसुनु सुरगुरु बुधधाम ॥ सैनिका ॥ ताहिप्रज्ञ प्राप्तहोतजौनहैं । कालसों बिमुक्त होततौनहैं ॥ ताहिजौन प्राप्तहोतहै नहीं । तौन होत प्राप्तदुःख कोसही ॥ दोहा ॥ इंद्रिय निग्रहआदिजे हैंउपाय मतिमान । तिनसों प्रापतहोतहै ब्रह्महि मनुज सुजान ॥ चरणा-

कुलक ॥ आदि मध्य अन्तनहैं जाको । नाम सुअव्यय यातेताको ॥ दुःखरहितहै अव्ययताते । सबजग होतप्रकाशित जाते ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ मौनी ॥ ब्रह्मज्ञानी केसुखको नाशनहोत । कहत आपु हैंऐसे प्रज्ञापोत ॥ ब्रह्मज्ञानमेंतौ सबलागत क्योंन । तुमबिचारि कै कहिये बरबुधिभौन ॥ मनुरुवाच ॥ ब्रह्मदृश्य नहिंयाते मानवसर्व । ब्रह्मज्ञानमेंलगतनसुबुध अखर्व ॥ जेलागतहैं तेजनसोंसुखलेत । कहत तुम्हैं मैंनिश्चय सुमति निकेत ॥ दोहा ॥ जनको मनसो रहतहै लगो विषयकेमाहिं । यातेजनको ब्रह्मपर जानिपरतहैना-हिं ॥ नरेश ॥ जे अबुध मनुज हैं लोकमें । तेसर्व विषयके थोकमें ॥ जो देखताहीकोकरैं । इच्छा न और हियमेंधरैं ॥ अरिल ॥ बिषयहि माहिंनिरतहैं जेजन । बिषय रहितकी इच्छा तेजन ॥ करत नहीं हैं सुनहु वृहस्पति । बिषयहि माहिं रहत रतिसोंअति ॥ दोहा ॥ बिषयमाहिं रतरहतहैं निशिदिन मानवजौन । बिषयरहित पर-ब्रह्मको जानिसकै किमितौन ॥ सारंग ॥ करैशुद्ध बरज्ञानसों बुद्धि को स्वक्ष । करै बुद्धिसों शुद्धमन परम हे दक्ष ॥ इन्द्रियनको स्वच्छ मनसोंकरै बिप्र । सुनो होत है ब्रह्मको प्राप्तत्व क्षिप्र ॥ दोहा ॥ सुनत वारता ब्रह्मकी अरु सुबिचारत जौन । निर्गुण जो परमातमाताहि लहतहैतौन ॥ आभीर ॥ कामवान जनजौन । परमात्माकोतौन ॥ प्राप्तहोतहैं नाहिं। सत्यजानु मनमाहिं ॥ जयकरी ॥ काष्ठान्तरगत जौन कृशान । प्राप्तन होत ताहिपवमान ॥ जिमि तिमिकामवान जनजौन । प्राप्त ब्रह्मकोहोत न तौन ॥ दोहा ॥ जो बिचार अव्यक्तको करतै रहत सदाहिं । अव्यक्तहि ह्वै जातसो अन्तकालके माहिं ॥ प्लवंगम ॥ जोइन्द्रिय लागिजाय विषयकेवृन्द में । तौजन निजुपरजाय कामके फन्दमें ॥ कामफन्दमें परेदुःख अतिहोतहै । अति दुर्लभ ह्वैजात श्रेयको द्योतहै ॥ दोहा ॥ आ-त्मा सूक्ष्मदेहको प्राप्तभये वागीश । पंचभूतके रहतहै आश्रय कहत मुनीश ॥ भूताश्रय जबहोतहैताहिकै सूक्ष्मदेह । परमात्मा

कोभाव तब रहतनहीं बुधिगेह ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ सोरठा ॥ प्राप्ति देहकी जौन सोतौपुनिपुनि होतिहै । कैसे सुनु बुधिभौन आत्मा छुटिहै देहसों ॥ मनुरुवाच ॥ दोहा ॥ अरणवमाहिं जहाजजो ताहि हिलावत बायु । कबहूं ताको बायुही पारदेतिहै लायु ॥चरणा दोहा॥ भवसागरमें जीव जहाजहि कर्म बायुहैजौन । देतसहाय प्रबल है कबहूं पारलगावत तौन ॥ दोहा ॥ शुद्धहोत अंतःकरण तेजे बिषय को सर्ब । प्राप्तहोततब ब्रह्महै नितिअव्यय सुअखर्ब ॥ ब्रह्मज्ञानहै मोक्षको कारणहै नहिंऔर । कह्योतुम्हैं सिद्धांत यह मैंमनमें करिगौर ॥

इतिमहाभारतदर्पणेशांतिपर्बणिमोक्षधर्म्मेचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ३४ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ ब्रह्मज्ञानहैमोक्षको कारणहैनहिं और । कह्योपूर्ब अध्यायमें ऐसे तुम करिगौर ॥ निर्गुणको जो ज्ञानसों सुगुणबिना जानैन । होतसुनो महिपालबर तातसुमतिकेऐन ॥ यातें तुम श्रीकृष्णको कहौतत्व पुनिमोहिं । कौनलहत आनंद है महत तिन्हैं जब जोहि ॥ भीष्मउवाच॥कला ॥ परशुराम अरु व्याससुनारद । बालमीकि अरु परमबिशारद ॥ नारायणको चारुमहातम । है इनसबतें सुन्यो प्रज्ञहम ॥ सोरठा ॥ यहजोबर भगवान केशव प्रभु आनन्दमय । सोई सब तू जान महतमहा तम जासुहै ॥ जयकरी ॥ शारँग पाणि कृष्ण को कर्म । जानत हैं बरसुबुध सुधर्म ॥ तुम्हैं कहत हौं ते बिख्यात । सुनहु धर्मधर कुन्तीतात ॥ महत भूतजे आकाशादि । बिरचितभेहरि तिन्हैं अनादि ॥ भूमि बनाय शीघ्रही शैन । करतभयो श्री आनँद ऐन ॥ अहंकार को बिरच्यो तत्र । छाय रह्यो सोहै सर्बत्र ॥ भूत भबिष्यत जेहैं भूत । धारतसो तबतौन अकूत ॥ दोहा ॥ नारायणकी नाभिमें तदनुहोत भोपद्म । तौनपद्ममें होतभो ब्रह्मा बरमति सद्म ॥ मौनी ॥ तदनु होतभो दानव मधुबलवान । करत भयो पुरुषारथ तौन महान ॥ चतुराननकी रक्षाकाजै ताहि ।

हनतभये श्रीमाधव रटसों चाहि ॥ ताहि हतेते नरमुर दानव सर्ब । कहतभये मधुसूदन हरिहि अखर्ब ॥ तदनन्तर बिरचत भो श्रीलोकेश । सप्त मानसिक पुत्र सुभ्रातिहि सुभेश ॥ दोहा ॥ पृथक् पृथक् मैंकहतहौं तिनके नाम सुजान । सुनहु तौनतुम भूपवर कुन्तीसुत बलवान ॥ मरिचि अंगिरा अत्रिवर अरु पुलस्त्य मतिधाम । सुबुध पुलह क्रतुदक्ष अरु स्वक्ष दक्षसो माम ॥ अरिल ॥ कश्यप भयो मरीचीके सुत । मनते परम महत मेधायुत ॥ ब्रह्माके अंगुष्ठते उपजत । दक्षभयो सुनुभूप सुमति मत ॥ चरणाकुलक ॥ भईदक्षके तेरह कन्या । तिनमें दिती सुज्येष्ठा धन्या ॥ कश्यपको सुब्याहिते दीन्ही । तिनको कश्यप मोदित कीन्ही॥फेरिभईदशसुतासुढारी । दईधर्मको तेमुदकारी॥भयेधर्म केसुवनसुढारे । तिनमें अतिहीबल गुणवारे॥ दोहा ॥साध्य रुद्र-गण अष्टवसु अरु सुमरुत गणपर्म । औबिश्वेदेवा लहे येसुत तिनमें धर्म ॥ सत्ताइस कन्याभईं और दक्षके चारु । दईचन्द्र को ब्याहिते करिकै प्रीति अपारु ॥त्रिभंगी॥ कश्यप कीनारी परम सुढारी बरतनवारी सुगुणरई।गोतरु गन्धर्वा तुरग अखर्बाहिय सुखसर्बा जनत भई ॥ अरु अमर अनूपा अति शुभरूपा मोदितादिति उत्पन्नाकिये । तिनके प्रभुबामन विष्णु सचावन होय सुहावन मोददिये ॥ चरणा दोहा ॥ प्रभुबामनके पुरुषारथते देवनकी श्रीपर्म।बढ़तिभई अरु भई पराजय असुरनकी शुभकर्म॥ तोटक॥ दिति दैत्यनको उत्पन्नाकिये । दनुदानवको सृजिमाद लिये ॥ बलवान भये सबते अतिही । पुरुषारथ करतभये नितही ॥ सोरठा ॥ दिनरजनी अरुकाल पूरवाह्न अपराह्ण अरु । ऋतु षष्ठहु अरु साल मधुसूदन बिरचत भये ॥ जयकरी ॥ थावर अरु जंगम सब भूत । औपृथ्वीसह जगत अकूत ॥ अरु मेघनके जूह सुजान । बिरचे नारायण भगवान ॥ तदनन्तर माधव सबि वेक । अपने मुखते विप्र अनेक ॥ बिरचतभे तेजो मय

भूरि । तिनको सुयश रह्यो जगपूरि ॥ चरणा दोहा ॥ बाहुनतें क्षत्रिय बिरचे बहु बैश्य उरुनतें भूप । अरु सुपदनतें शूद्र बहु केशव रचे अनूप ॥ रामगीती ॥ उत्पन्न चारिहु बर्णको करि रमानाथ सुजान । बिधिको सुतिनको कियो अधिपति प्रीति सहित महान ॥ सब भूतगण अरु योगिनिनिको अधिप शिव को कीन्ह । अरु यक्षराजहि परम धनकी अधिपताई दीन्ह ॥ जनपातकी हैं जौन तिनको दण्ड दाबेकाज । हरिअधिपताई दई यमकी सुनहु बहु नरराज ॥ अरुकियो अधिपति बरुणको जल जीवगण को सर्ब । सब देवतनको कियो इन्द्रहि अधिप बिष्णु अखर्ब ॥ दोहा ॥ सतयुग माहीं नरनमें हुती न मैथुन धर्म । हो-तीरही अपत्यही संकल्पहिते पर्म ॥ चरणाकुलक ॥ जन जीवनकी इच्छा जबलौं । करतरहे जीवत हेतबलौं ॥ यमकृत भयहि लहत हेनाहीं । नित्य रहत हेआनँद माहीं ॥ दोहा ॥ त्रेतामाहीं होतही किये अपत्य स्पर्श । मैथुनधर्म न होतहे सुनहु भूप उतकर्ष ॥ द्वापर में मैथुन धरम होतभयो भूपाल । कलियुगहूमें होतहैं मैथुन तिमिहिं बिशाल ॥ दक्षिणबासी जौनजन तिनके माहिं पुलींन्द । गुह अन्धक चूचुक सबर मद्रकनीच नरीन्द ॥ उत्तरमें जे बसतजन तिनमें सबर किरात । गान्धार अम्बोज अरु तिमि जौनक बिख्यात ॥ बायस गृद्ध स्वपाकको भूपसधर्म हे जौन । सोई हे इनसबनको धर्मसुनहु बुधिभौन ॥ आभीर ॥ पूर्ब प्रजापति जौन । भयोकहौ बुधिभौन ॥ दिशा दिशाके स्वक्ष । ऋषी कौनहैं दक्ष ॥ भीष्मउवाच ॥ प्रश्नकियो तुम जौन । तुम्हें कह-तहौं तौन ॥ सुनिये प्रश्न नरेश । धर्मवान शुभवेश ॥ चरणाकुलक ॥ चतुरानन भोपूर्ब प्रजापति । तदनु तासु सुतसप्त महापति ॥ बर मरीचि अरुअत्रि अंगिरस । अरु सुपुलस्त्य पुलहक्रतु बरजस ॥ परम बशिष्ठ श्रेष्ठसम बिधिसम । तसु प्रजापति भयेसुन्यो हम दोहा ॥ इनते आगे और जे भये प्रजापति भूप । ते मैं तुमको

कहतहौं प्रज्ञावान अनूप ॥ हरिगीती ॥ नृपभयोश्रीप्राचीन वरही अत्रि ऋषिके वंशसें। वर प्रज्ञ जनसों सुन्योहै सुनु भरत कुल अवतंश मे ॥ प्राचीनबरही के भये दशपुत्र वर बलवान है। भोप्रचेता अभिधान तिन दशहूंनको मतिमान है ॥ भोपुत्र तिन दशहूंनके यक दक्ष ताको नामभो। अरु परम सुऋषि मरीचिके कश्यप सुबर मतिधामभो ॥ भोनाम कश्यप एकनामुअरिष्ट-नेमीदूसरो। अरु अत्रिकेभोसोमसुत तिहिमृगनको बाहनकरो ॥ दोहा ॥ कश्यपके सूरयभये तेजोमयबलवान। भुवननकेयेअधिप हैं सर्बसुनहु मतिमान ॥ चरणाकुलक ॥ श्रीशशबिन्दु नृपतिकेरानी। होतिभई दशसहस सुजानी ॥ सहस सहस यकएकके नीके। होतभये सुतभो अतिहीके ॥ परजापति आपुहिको जाने। और प्रजापति तिननहिं माने ॥ बरप्राचीन बिप्रमतिधारी। तिनयह बात कहीबहुवारी ॥ दोहा ॥ प्रजाभूप शशबिन्दुकी है यह सर्व महान। कुलमेंयादव वृष्णिके भयो जौनबलवान ॥ महतप्रजा-पतितौनहो और न तासुसमान। कहे प्रजापतिसर्वये तुमकोहम मतिमान ॥ जयकरी ॥ त्रयलोकनके देवततौन। अवमें कहत सु-नहु बुधिभौन ॥ भग अरु अंश अर्य्यमा मित्र। सविताधाता परम पवित्र। बिवस्वान त्वष्टाअति चण्ड। पूषातेजस भरोअ-खण्ड ॥ इन्द्र वरुण अरु बिष्णु सुजानु। ये कश्यपसुत बारह भानु ॥ दोहा ॥ दस्रऔर नासत्य ये अष्टम रबिकेतात। त्वष्टासुर को सुवनहै बिश्वरूप बिख्यात ॥ जयकरी ॥ अहिर्बुध्न अरुअजै-कपात। बिरूपाक्षरैवत बिख्यात ॥ अम्बक है रजयन्त बहुरूप। अरु अपराजित आनँद रूप ॥ अरुसावित्र पिनाकी पर्म। ये एकादश रुद्र सशर्म ॥ अरु वसु अष्टदेव येसर्व। पहिले मनुहैं केसुअखर्ब ॥ दोहा ॥ अर्वावसु अरु परावसु औषिज कक्षीवान। यवक्रीट अरुरैभ्यबल येजेदेव सुजान ॥ नाम इनकोहै आंगिरस सबयेब्राह्मण वर्ण। क्षत्रियहैं आदित्यसब देवनमेंमुदधर्ण ॥ वैश्य

मरुतगण आश्विनी सुवनशूद्रहैं भूप। देवनकेचारिहुबरणतुमको कहेअनूप ॥ सोरठा ॥ इनको लीन्हें नाम प्रातकाल उठिभूपबर। होतिदेह दुतिमाम पापसर्ब्ब काटिजातहैं ॥ दोहा ॥ कण्व बर्हिषद आदिऋषि प्राची दिशिके पर्म। उन्मुच बिमुच सुप्रमुच अरु स्वस्त्यात्रेय सशर्म ॥ इध्मबाहु अरु दृढ़व्रत बीरजमानमहान। अरु सुप्रतापीपरमबर सुऋषि अगस्त्य सुजान॥ दक्षिणदिशि में रहत हैं येऋषि बीरजवान। एकतद्विजत्रित सारस्वत धौम्य उषंग सुजान ॥ परिव्याध अरु कवष येसुऋषि प्रतापी भूरि। पश्चिम दिशिमें रहतहैं महत मोदसोंपूरि॥ दत्तात्रेयबशिष्ठ अरु कश्यपविश्वामित्र। भरद्वाज गौतम परमऋषि जमदग्नि पवित्र॥ उत्तरदिशि में रहतहैं येऋषि उत्तम पर्म। दिशि दिशिके जेसु-ऋषिहम तुमको कहेसशर्म॥ पापपुण्य जेकरतहैं जगमेंजनगण सर्ब्ब। तिनके साक्षीभूतहैं येऋषि परम अखर्ब्ब ॥ आभीर ॥ इनको लीन्हें नाम। जात छूटि अघसाम॥ परमो होतिअमन्द। प्रापत होतअनन्द ॥

इतिमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्व्वणिमोक्षधर्म्मेपंचत्रिंशोऽध्यायः ३५ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ पूर्व्वप्रजापति जौनहै कहे तौनतुममोहि। और दिशनके सुऋषिउ कहेकृपासों जोहि ॥ अब कहिये पुनि कृष्णके तेजसको वृत्तांत। औ कीन्हें जेकर्महैं पूरब महतनितांत॥ अरुधारो किहि कार्य्यको माधव पशुको रूप। कहौतौन अव-गाहिकै प्रज्ञावान अनूप ॥ भीष्मउवाच ॥ रामगीती ॥ इक समय में हम गये मृगया काजको बनमाहिं। अतिमहत तामें रहत हे सिंहादि जीवसदाहिं॥ बहुवृन्द बिहरतरहे जामें बिहंगनकेचारु। फलफूलसों युतवृक्षतामें हुतेस्वच्छअपारु ॥ दोहा ॥ तहांमार-कण्डेयको हुतो थान अतिस्वक्ष। हमतामें देखतभये वृन्दमुनिन के दक्ष॥ अरिल ॥ तदनु तिनं सुपूजा कीन्हींमम। तातेपरम प्रसन्न भयेहम॥ कश्यप कथाकही तहँइकबर। तुम्हैं कहतहौंतौनसुमति

बर ॥ नरकादिक दानव अति बलमय। क्रोध लोभ युततिनके बहुचय ॥ तिमिहिऔर दानव बहुबरबल । अनिहिभ्रमन्तलहत तिनकेदल ॥ चरणादोहा ॥ देखिनसकेसुम्रद्धि सरनकी तेसब सुनुभू पाल। दलि मलिडारे कोपि महत अति करिकैयुद्धबिशाल॥चरणाकुलक॥ हारीदानवनसों रणमाहीं।केहूधीर सके धरिनाहीं ॥ फिरत भयेते इतउत छपते। दानवानको बलगुणि कपते ॥ भीर दानवनकी अतिभारी। तासों धरणी भईदुखारी॥ जलकेमाहीं बूड़न लागी। दानव भीर भारसों पागी ॥ देवसमूह देखि कै ताको। कहत भये ऐसे ब्रह्माको ॥ दानवमर्दन कीन्हहमारो। ताते हमको भो दुख भारो ॥ भूमि भारसों आरतह्वैकै। बूड़ि जातिभो हर्ष को ग्वैकै ॥ सुनिकै यह देवनकी बानी।बोलेचतुरानन बरज्ञानी ॥ विष्णुरूप शूकर को धरिहैं ।नाश सर्ब दनुजनको करिहैं ॥ श्री अव्यक्तबिष्णुको नाहीं। जानतहैं अपनेमनमाहीं ॥हैमदान्धसब बर बल धारी। बसत भूमि तरहैं रणकारी ॥ दोहा ॥ तहांजायकै मारिहैंसब दनुजनकोबृंद। शूकरको बपुधारिकै श्रीहरि नित्यानंद॥शोभा ॥ ब्रह्माकी यहबानी। सुरगुण सुनि सुखखानी॥ आनँद हियमें धारो। शोचसमूह निकारो ॥ दोहा ॥ तदनन्तर श्रीविष्णु बरधरि बराहको रूप। गेतित भूतल पैठिकै जितहे दनुज अनूप ॥ लखि बराह वपुबिष्णु को दनुज सिकलिकै सर्ब। गहत भयेते आयकै करिकैवेग अखर्ब ॥ नरेश ॥ सब खैंचतभे चहुंओर सों। हरिशूकररूपहि जोरसों ॥ थकगे सबकै कछुनाशके। विषम लहिआपुसमेंतके ॥दोहा॥ तदनन्तरवाराहवपु बिष्णुभयंकर भूरि। करते भये निनादसों गोलोकननें पूरि ॥ चंचला ॥ त्रासमान होतभे महान शक्रआदि देव। केहुतौन नादको सुपाय तेननेक भेव॥ सर्बलोक माहिंज्ञान काहुकोरह्यो न स्वक्ष। जीवद्वन्दभूरि भीतिसों भरेपरे प्रतक्ष ॥ तोमर ॥ तिहिनादसों डरिपर्म। सबदैत्य होय सभर्म ॥ सबलौपरे भुवबीच। पुरुषारथै तजिनीच ॥ तब

बिष्णु शूकररूप । सुर दुःखहर्ण अनूप ॥ बरवादोहा ॥ तिनके आमिष अस्थिमेदके संचयको तहँभूप । भये बिदारत खुर अपने सों श्रीहरि शूकररूप ॥ तदनन्तर सब देवता गेचतुराननपास। चतुराननको कहतभे ऐसेबचन उदास ॥ देवाऊचुः ॥ अरिल ॥ कैसो नादभयो यह जगपति । कियो कौनयह नाद महत अति ॥ बिकल भयो जगत जिहिको सुनि । हमको कहौ कृपाकरिकेगुनि ॥ दोहा ॥ इतनाहिं में बाराह बपु बिष्णुजगतके हेत । महिमें ते निकसत भये सुनुनृप बुद्धि निकेत ॥ पितामहउवाच ॥ दोहा ॥देखोयह बाराहबपु बिष्णु महाबल पर्म । आवत दानवपतिनको हतिको उग्रसशर्म ॥ इनहिंकियो हो नादअति दनुजनकेबधकाज । तुम न डरो हिय में धरो आनँद परम दराज ॥ भीष्मउवाच ॥ जिहि काजै बाराह बपु धार्‍यो श्रीभगवान । कह्यो तुम्हैं हम तौन अब सुनिहौ कहा सुजान ॥

इतिशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेश्रीकृष्णबाराहरूपमाहात्म्येषट्त्रिंशोऽध्यायः ३६

युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा ॥ सुन्योमहातम आपुसों शूकरबपुकोपर्म। अबकहियेतुममोक्षकी मोहिंउपायसशर्म ॥ भीष्मउवाच ॥ कहतएक इतिहासहौं यहि प्रसङ्गमें भूप । तामाहीं गुरु शिष्यको हैसम्बाद अनूप ॥ एक बिप्रहो बिज्ञ अति ताहि शिष्यबर तास। पाणि जोरिके कहतभो ऐसे सहित हुलास ॥ भये कहांते आपु औहम हे तात सुजान। कहौमोहिं अवगाहिकै बक्ताआपुमहान॥ अरिल॥ और कहो यक करिनिर्द्धारण । पंचभूतहैं सबके कारण ॥ श्रेष्ठ अश्रेष्ठ ताहि कैसे जन । पावत संशयमें हैमोमन ॥ गुरुरुवाचदोहा ॥ सुनहु शिष्यमें कहतहौं तोहिं गुप्तयक बात । तूहूं गुप्तहि राखियो मनमाहीं अवदात ॥ भयो सुयादव वृष्णिके बंश माहिंअवतार । बार्ष्णेय ताते भयो तासु नाम सुखकार ॥ ऐसो जो परब्रह्म है बासुदेव भगवान ।पुरुष सनातन ताहि बुध जानत हैं श्रुतिमान ॥ करत्ता उत्पति प्रलयको सोई और नकोय ॥ ताहीते हम

तुम भयेऔ सबजग यहजोय ॥ वासुदेव भगवानजो श्री परब्रह्म सशर्म । तिनको जामें अंशहै अधिक श्रेष्ठसो पर्म ॥ आपगोंघ भगवानको चारु महातम स्वक्ष । सुनो तोहिंमें कहतहौं दायक मोदप्रतक्ष ॥ चक्रारूढ़ पिपीलिकाघूमतिहै जिहिभांति । वासुदेव के माहिं तिमि त्रयलोकनकी पांति ॥ महाप्रलय जबहोत तब अव्ययविष्णु महान । फेरि प्रकृति को सृजत हैं जगके काज सुजान ॥ छपे वेद युग अन्तमें तिनको सुऋषिमहान । आज्ञा विधिकी पायकै धारत भये सुजान॥वेदांगनको वृहस्पति धारत भयो सप्रीति । नीति शास्त्र को धारतो शुक्रभयो सहरीति ॥ नारदभो धारत परम स्वच्छ शास्त्र गांधर्व । धनुर्वेद धारतभये भारद्वाज अखर्व ॥ वैद्यकको धारतभयो कृष्णात्रेय सुप्रज्ञ । न्याय शास्त्रको और ऋषि धारत भे धर्मज्ञ ॥ वेदशास्त्रकोधारते भये सुऋषि सब स्वक्ष । पै जान्यो अव्यक्त जो ब्रह्म ताहि नहिं दक्ष ॥ भयो व्यक्त अव्यक्त जो नारायण भगवान । सोई आपु अव्यक्तको जानत हैं नहिं आन ॥ नारायणते औरऋषि जानत हैं बुधिधाम । नित्यानंद सुब्रह्मको सुनहु शिष्य अभिराम॥ सोरठा ॥ नारायणभगवान तिनकी इच्छाते प्रकृति । सुनुहेशिष्य सुजान करति महत तत्त्वादिको ॥ चरणाद्दोहा ॥ होत प्रकृति ते महातत्त्व है महातत्त्व ते होत । अहंकार औ अहंकार ते नभ कोहोतउदोत ॥नभते बायु बायुते तेजस तेजस ते बुधिधाम ॥ उद्भव जलको होत कहत हैं महत प्रज्ञ अभिराम ॥ पांच कर्मेन्द्रिय औ पांचहि ज्ञानेन्द्रिय अति स्वक्ष ।इनतेहोत विषय औ पांचहि मनषोड़श हो दक्ष ॥ ज्ञानेन्द्रिय ये श्रोत्र त्वक् चक्षु सु जिह्वाघ्रान । कर्मेन्द्रियये लिंग गुद करपदवाक सुजान ॥ बरवै ॥ गन्धरूप अरु रसऔशब्द स्पर्श । प्राप्तसर्ब इनमें मन रहत सहर्ष ॥ दोहा ॥ मनजिहि इन्द्रियके निकट रहत सुइन्द्रियसोय। ग्रहण करतिहै विषयको औरन इन्द्रिय कोय ॥ दशइन्द्रियसब

भूत अरु षोड़शहो मन जौन । आज्ञामें क्षेत्रज्ञकी रहत देह में तौन ॥ जिह्वा जलको सुगुणहै पृथिवीको गुण घ्रान ॥ चक्षु अग्निको श्रोत्रहै नभ गुणको मतिमान ॥ सोरठा ॥ मारुतको गुण पर्श महाभूतके सगुणये । सुनुहे शिष्य सहर्ष सब भूतनमें जानिये ॥ दोहा ॥ होत चित्तहै सत्वते सत्व प्रकृतिते पर्म । ईश्वर में सोरहतहै कहत सुप्रज्ञ सशर्म ॥ ईश्वर माहीं रहतहै सत्वसुगुण अवदात । यहीहेतुसों सत्व सों ईश्वर जान्यो जात ॥ जयकरी ॥ भाव सर्ब मायादिक जौन । सर्ब जगत के कारण तौन ॥ चिदानंद तिनको आधार । प्रकृति परे साबुद्धि अगार ॥ दोहा ॥ मायादिक सों युक्तजो जामें हैं नवद्वार । ऐसो तन तामें रहत आत्मा सुमति अगार ॥ बरवै ॥ पुरुष कहावत हैं जनयहि ते जानु । जानत ते जिनको भो मति को भानु ॥ आभीर ॥ लघु दीरघ जे देह । तिनमाहीं बुधि गेह ॥ आत्मातुल्यहि जानु । संशय मति अनुमानु ॥ देखिपरतहै पैन ॥ छेदे ते तनऐन । अग्नि काष्ठ के माहिं ॥ देखिपरति जिमिनाहिं ॥ दोहा ॥ मथन किये ते काष्ठको परत अग्निहै देखि । तिमिहीं योगाभ्याससों परतआतमा लेखि ॥ आत्माको अरु देहको पृथक् भावहै जौन । तन सम्बन्धन छुटत हैं जानि जात जबलौन ॥ सरिता माहिं नयो नयो आवत जिमि जलचारु । तिमिहीं देही देहको पावत बुद्धि अगारु ॥ सेन्द्रिय आत्मा देहताजि स्वप्नमाहिं जिमिजात । इमिहिं देहतजि द्वितियको प्राप्तहोत है तात ॥ ह्वै कै प्रेरितकर्मसों करत कर्मलहिदेह । कर्महिसों पुनिलहतहै द्वितियदेह बुधिगेह ॥ भूतचारि परकारके होत शिष्यसुनु दक्ष । पृथक्पृथक् में कहत हौं ते सब तोहिं प्रतक्ष ॥

इतिमहाभारतेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेगुरुशिष्यसंवादेसप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७

गुरुरुवाच ॥ चरणा दोहा ॥ अण्डजस्वेदजऔर जरायुज औउद्भिज ये भूत । जानेजात नजनन मरणहैतिनके तात अकूत ॥ दोहा ॥

तनकोजो संयोगहै औवियोग हेतात। मनहै ताको हेतुबर कहत प्रज्ञ अवदात ॥ सोरठा ॥ मनहैमायारूप जनन मरण को हेतुसो। यहिते प्रज्ञअनूप जानिपरत जननादिनहिं ॥ रामगीती॥ जड़लोह जो सोलोह चुम्बक के भयेतेपासु। चैतन्यलों सोतास सोहै धावतो है आसु ॥ तिमिहिं मनके लगे पीछे इन्द्रियादिक सर्व। मनजात जहँजहँ जात तहँतहँ कहत प्रज्ञअखर्व ॥ हैं कर्मकेबश वासना अरु बासनाबशकर्म। यहवासना अरु कर्म कोजो चक्रप्रज्ञ सशर्म ॥ तिहि माहिं परिकै जीव अरु मन इन्द्रियादिसमेत। हैंभ्रमत तवलों चक्र जबलों रहतबुद्धिनिकेत॥ फल बासनामें लागिकरिकै कर्मकीन्हे जौन। सुनुदेह प्रापतहोन को है हेतु आगेतौन ॥ कर्मजोहै हेतुअरु मायादि जेहैं सर्व ॥ होतजब क्षेत्रज्ञसोंहै युक्तप्रज्ञ अखर्व ॥ परस्पर मिलिजातहै ये मिलतहैं जबदेह। दृश्यजग में होत तासों करतहैं जननेह ॥ चरणादोहा ॥ ईश्वरके आश्रय में ह्वैके जीवपूर्वतजिदेह। लोकान्तर को प्राप्त होतहै सुनहु शिष्यबुधि गेह ॥ अरिल ॥ लोकान्तर को जात जीवजब। रज औतम नहिंजात संगतब ॥ स्वच्छ सत्व गुण जात जीवसँग। तेजानत जेगहतज्ञानमग ॥ दोहा ॥ जात संगपै पृथक्है जैसे रजअरुवायु। तिमिहिं संग ये जात पै जीवपृथक् है सोउ ॥ आपोजान्यो जात है प्राप्तभये ते ज्ञान। आपोजाने फेरनहिं देहलहत मतिमान ॥

इतिमहाभारतेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेगुरुशिष्यसंवादेऽष्टत्रिंशोऽध्यायः३८ ॥

दोहा ॥ उदय क्लेशको जौनहै तासुहेतु जो माम। सोमैं यहि अध्याय में कहत तोहिंहौं आम ॥ रामगीती ॥ जनप्रवृत्तजेहैं कर्म माहीं तिन्हैं प्रियहै कर्म। अरुप्रवृत्त जे विज्ञानमाहीं रहतनित्य सशर्म ॥ प्रियलगत है विज्ञानही तिनजनन को नहिं और। सुनु शिष्य तोसों कहत हौं यह बारता करि गौर ॥ बर कर्म मारग मोक्ष मारग कहे श्रुति में पर्म। तिनमाहिं जे हैं प्रवृत्त

तेई बुद्धिमान सशर्म ॥ तिन दुहुनहूँ में मोक्षमारग माहिं रत हैं जौन । सो श्रेष्ठतर हैं तासु सम जन और नाहिं बुधिभौन ॥ तुम कहो जो यहिभांति मेरे प्रगट सुनिये वैन । जन रहैं जीवत करै तबलौं कर्मबर बुधिऐन । यह वेदमाहीं लिख्योहै तो सुनहु मेरीबात । जनकरै कर्म न होय जबलौं ज्ञानबर अवदात ॥ नहिं ज्ञान प्रापत होय जो तो कर्मको फल त्यागि । अतिस्वच्छ कीबे चित्तको जनकरै कर्महि पागि ॥ जिमि न कञ्चन लसत मलसों परम जो बिज्ञान॥तिमि प्रकाशित बासना सों होतनहिं मतिमान॥ लगि काम क्रोध अरु लोभमाहीं करतजौन अधर्म। नशिजात सोहै लहतहै नहिं ज्ञानको बरशर्म ॥ अनुराग सेती पञ्च जे हैं बिषय तिनके माहिं। मनको न लावै बैठिके बरबिज्ञ जनके पाहिं ॥ मनको लगाये बिषय माहीं क्रोध हर्ष बिषाद । नित होतहैं जन कहत हैं ते तजे जौन प्रमाद ॥ जनअज्ञ जे ते बिषय माहीं लगे रहत हमेश । जनप्रज्ञ कबहुँ न लगत तिनमें जानि महत कलेश॥ जिमि मृत्तिकासों जातलीप्यो मृत्तिका को गेह । नहिं गिरत है तिहि भांतिहीसों प्रगट जो यह देह ॥ है पारथिव यहिहेतुते पृथ्वी बिकारहि पाय । नहिं नष्टताको होत प्रापत कहतबुध सुखदाय॥ जयकरी ॥घृतगुड़ तैलदुग्ध अरुनोन। आमिष धान्य मूलफल तौन ॥ येसब जानहु भूमि बिकार । नशतन इनते देह सुढार ॥ दुर्घट मारगमें जिमि पर्म । जो संन्यासी जात सुकर्म ॥ मधुर सुभोजनको ललचाय । मिलत न तब सुनि बाहन काय ॥ रहै खायकै ग्राम्यअहार ॥ तैसेही सुनु बुद्धि अगार । जगतहि जो दुर्घट पथभूरि । तामेंरह्यो भीति बहुपूरि॥ सुनिबे को निशिदिन बेदांत । प्रापत ह्वैज्ञान नितांत ॥ मिलै अन्नहै सोई खाय । प्रज्ञावान निबाहै काय ॥ दोहा ॥ सत्यक्षमा अक्रूरता अरु धीरजताधारि । मनकी चंचलताहि अरु कुत्सित बचन बिसारि ॥ रोकै सब इन्द्रियनको क्रमसों बर मतिमान।

तपस्वीन के संगरहि करितप परममहान॥ युक्त होयके गुण-नसों प्राणीजगकेमाहिं। घूमतहै अज्ञानते चक्रसमानसदाहिं॥
॥ आभीर॥ याते जो अज्ञान। दायक दुःख महान॥ तजिबे ताहि सदाहिं। बैठे प्रज्ञन पाहिं॥ मनोहर॥ महाभूत अरु इन्द्रिय सर्बे। अरु तीनहुँ गुण सुबुध अखर्बे॥ इनसों युत लोकन को हेत। अहंकारहै बुद्धि निकेत॥ दोहा॥ प्रवृत करावत ऋतुन की जैसे काल सुजान। प्रवृत करावत कर्मकी अहंकार तिमि मान॥ अ-हंकार के भेद त्रय तुम्हें कहत हौं तौन। मन थिर करिकै सुनहु तुम महत मनीषा भौन॥ मनोहर॥ तामस अहंकारहै एक। अरु यक राजसहै सविबेक॥ सात्विक अहंकार यक पर्म। अहंकार ये तीन सुकर्म॥ तामस अहंकार है जौन। तमसों श्याम बरण है तौन॥ ताको कारणहै अज्ञान। मोह करावत तौनमहान॥ राजस अहंकार को लाल। बरण तौन दुखकार बिशाल॥ श्वेत बरण सात्विक को स्वक्ष। प्रीतिकार सोहै बर दक्ष॥ कला॥ अब बिशेष तीनोंके गुण सुनु। सुनिकै तू तिनको हियमें गुनु॥ असंदेह अरु प्रीतिस्मृति धृति। अरुप्रसन्नता परम महामति॥ ये बिशेष सा-त्विकके गुण बर। अब राजसके गुण सुनु मतिधर॥ काम क्रोध अरु लोभ मोह भय। अरु प्रमाद यह राजसु गुणचय॥ दोहा॥ मान कुटिलता दर्पता अरति बिषाद सुशोक। ये गुण तामस के कहे तुमको हम बुधिओक॥ ये जे गुण तीनहुँनके तिन्हैं धरतहैं जौन। तिनको दोषहि होतहैं ये सब सुनु बुधिभौन॥ इनदोषन में कौन लघु औ है कौन महान। करिकै यहअनुमान बर हियके माहिं सुजान॥ क्रमसेती इनसबनको छोड़नलागैप्रज्ञ। इन्द्रिय-गणको कर्षिकै मनसह बर धर्मज्ञ॥ इन दोषनमें कौनसो छूटो दोषकितेक। यहबिचार करतैरहै नित्यहि जन सबिबेक॥ युधिष्ठिर उवाच॥ जयकरी॥ मनसों छोंड़ि दियेहैं जौन। शिथिल किये अरु मतिसों तौन॥ ऐसे दोष कौन तिन माहिं। छोड़े छूटि सकत जे

नाहिं॥ अरु ऐसेहैं कौनसुदक्ष। छूटिछूटि पुनि होत प्रतक्ष॥ यहसंशय मोमनमेंपूरि। रह्यो ताहि तुम करिये दूरि॥ भीष्मउवाच॥ दोहा॥ जौन जात निर्मूल ह्वै तौन नहीं पुनि होत। जासु लेश रहिजात सो पुनिपुनि करत उद्दोत॥ महत होत अज्ञान है रज तमते भूपाल। क्रोध लोभ भय होतहैं ताते दुखद बिशाल॥ इनकोदाबे होतहैं पावन मानवधर्म। येई अघके हेतुहैं बुद्धिनिकेत सुधर्म॥ मायाते भगवानको नष्ट भयोहै ज्ञान। जिनकोतेई क्रोधको प्रापतहोत सुजान॥ होतक्रोधते कामको प्रापतमानव मूढ़। अहंकार अरुदर्पको लोभहि तिमिहि अगूढ़॥ अहंकारते होतहै कर्म कर्मतेनेह। होतनेह सम्बन्धते शोक महान अछेह॥ क्रियापापअरु पुण्यकी ताकोजोआरम्भ। जनन मरण कोलहत है ताते मनुज सदम्भ॥ शोणित मूत्र पुरीषको तामेंहै संघात। गर्भबास इहिभांतिको तामाहींसुनु तात॥ प्राप्तहोतहै जौनजन पाप पुण्यमें शक्त। पापपुण्यमें हूजिये याते नहिं अनुरक्त॥ सोरठा॥ जगतचक्र यह जौन ताहि चलावतिनारिहैं। यहजानो क्षितिरौन निश्चय संशय नात्रहैं॥ दोहा॥ मंत्रमयी जो शक्ति है शत्रु सँहारण हेतु। ताको कृत्या नामहै तामस बाम सचेतु॥ सोरठा॥ अबिचक्षण जन जौन तिनके मनको हरति तिय। जे जन बरबुधि भौनते इनको सँग करतनहिं॥ दोहा॥ मूरति जो इन्द्रियनकी छपी रजोगुण माह। तातेहोत अपत्यहै नारिन में नरनाह॥ अपनी छोड़ि अपत्यदे परकी ऐसीजानि। ऐसेदेहज कृमिनको तजत बीनि अनुमानि॥ लावें मनन अपत्यमें कबहूं हेभूपाल। रतिमें पगे अपत्यकी लहतनज्ञान बिशाल॥ जौन स्वर्गिबे योग्यते कहेताहिं हमआम। योग्य जानिबे जौन सो सुनहु भूप बुधिधाम॥ तममें रज अरु सत्वगुण होय जात है लीन। प्राप्त होततम ज्ञान में भूपति परम प्रवीन॥ प्राप्तभयो है ज्ञान में भूप तमोगुण जौन। अहंकार अरु बुद्धिसों युक्त

होतहै तौन ॥ प्राप्ति देहकी जौनहै सोयतासु है हेत ॥ काल युक्त जो कर्म है तासों बुद्धि निकेत ॥ जीवहि यहि संसार में रहत फिरावत सोय । जानत यहि सिद्धान्तको जेहैं बरबुधि लोय ॥ चरणादोहा ॥ रमतजीव मनसों देहीलों स्वप्नमाहिं जिमि दक्ष । जीव तिमिहिं गर्भहुके माहीं लगतविषयमें दक्ष ॥ दोहा ॥ बीजदेहको कर्मजो तो करिकै भूपाल । जे जे इन्द्रिय होतिहैं प्रेरित प्रज्ञ बिशाल ॥ युक्तहोय अनुरागसों ते ते इन्द्रिय भूप । अहंकारते होतिहैं सबउत्पन्न अनूप ॥ जयकरी ॥ सुनिवेकीइच्छा सों कान । देही लहत सुनो मतिमान ॥ इच्छाकिये रूपकी भूप । देहीपावत चक्षु अनूप ॥ कियेगन्धकी इच्छा घ्रान । देहवान पावत मतिमान ॥ अरु स्पर्श इच्छासोंपर्म । प्राप्त होतिहैं त्वचा सुकर्म ॥ दोहा ॥ कर्मबिना नहिंहोतिहै इच्छा कौनिहुंभूप । याते कारण कर्मही जानो प्रज्ञ अनूप ॥ प्रान अपान उदान अरु मारुत ब्यान समान । इन पांचहु सों चलति है देह भूप मतिमान ॥ आदि अन्त अरु मध्यमें दुःखहि जिनके माह । ऐसे कर्मज गात्रयुत जीव होत नरनाह ॥ सोरठा ॥ कीन्हे अंगीकार देहेन्द्रिय को गर्भमें । भूपति बुद्धि अगार जीवहि जान्यो जात दुख ॥ दोहा ॥ दुःखबढ़त अभिमानते तिमिहिं मरण तेभूप । यातेदुखके हेतुको कीजै रोध अनूप ॥ दुख कारणकेरोध को जानत जौन सुजान । सोई छूटत दुःखसों कहत सुविज्ञमहान ॥ प्रलय प्रभव इंद्रियनको रजगुणहीमें होत । याते रज रोके नहीं इन्द्रिय करतिउद्योत ॥ सोरठा ॥ तृष्णा सों जन हीन तासु नइन्द्रिय चलतिहैं । इन्द्रिय जानु प्रबीन करण देह की प्राप्तिको ॥ दोहा ॥ हीनकरण जब होत तब देहीलहत न देह । यहि सिद्धांतहि योगबिद जानतहैं बुधिगेह ॥

इतिशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मवार्ष्णेयोपाख्यानेएकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ इन्द्रियकोजो जीतिबो ताकेमाहिं उपाय ।

शास्त्र चक्षुसोंदेखिहौं कहत सुनहु नरराय ॥ तिहिउपायकोहोतहै प्रापत जौन सुजान । उत्तमगतिको पायकैहोततौन सुखमान ॥ मोनी ॥ श्रेष्ठसबैभूतनमें मानवभूप । मनुजनहूँमें द्विजहै श्रेष्ठअनूप ॥ विप्र श्रेष्ठहै द्विजनहुंमें माहींपर्म । वेद शास्त्रको जानतजौन सुकर्म ॥ सोरठा ॥ नेत्रहीन जनजौन मार्गमाहिं जिमि लहतदुख। ज्ञानहीनहै तौन तिमिहिं जगतमें लहतदुख ॥ करिकै शास्त्र बिचार धर्महिं धारण करतहै । याते बुद्धिअगार विप्र द्विजनमें श्रेष्ठहै ॥ दोहा ॥ सत्यक्षमा अरु शौचधृति धर्मनमाहीं सर्व । जन पावतहैं धर्मबिद ब्राह्मण दक्षअखर्व ॥ सोरठा ॥ योग धर्म जो भूप सोप्रापकहै ब्रह्मको । यातेप्रज्ञअनूप और धर्मतेश्रेष्ठहै ॥ दोहा ॥ उत्तमबिधिसों करतजो योगधर्मकोपर्म । तौन ब्रह्मकोहोत है प्रापत विप्र सुकर्म ॥ मध्यम बिधिसों करतजो योगधर्म को स्वक्ष । सत्यलोकको लहतहै विप्र तौन बरदक्ष ॥ जौन अधम बिधिसों करत होत बिप्रही फेरि । कह्यो तोहिं सिद्धान्त यह योगशास्त्रकोहेरि ॥ आभीर ॥ दुखसों कीन्हों जात । योग धर्म अवदात ॥ तिहिकेमाहिं उपाय । मैं हौं कहत नृपराय ॥ दोहा ॥ बढ़े जौन कामादिहैं रोंकै तिन्हैं हमेश । नारिनकी न कथा सुनै औ नहिं लखैनरेश ॥ कथा सुने नारीन की औ देखेते रूप । प्रापतरजोगुण होतहै दुर्बलहूको भूप ॥ मनमाहीं उतपन्नजो भूपरजोगुण होय । प्रायश्चित द्वादश दिवस करै ज्ञान सों जोय ॥ जयकरी ॥ भोजनकरै तीनादिन प्रात । सायंकाल तीन दिन रात ॥ करैनहीं भोजन दिनतीन।देयकोऊ तौकरै प्रवीन॥ करै तीनादिनलौं उपवास । धीर्य्य धारिकै बर बुधिरास ॥ दोहा ॥ यहहै प्रायश्चित्तबर प्राजापत्य सुनाम । यहिसों रजउतपन्नको दोष जात मिटिमाम ॥ पीड़ित शुक्राधिक्य सों होय अतिहि जो भूप । करैनीरमें स्नानतो पैठिसुप्रज्ञ अनूप ॥ शुक्रपात जो स्वप्न मेंहोयतौ सुत्रयबार । बर अघमर्षणमंत्रको जलमें जपै सुढार ॥

जौन रजोमय पापहै दाहै यहिविधि ताहि । करिविचार कौ दक्ष बर ज्ञानचक्षुसों चाहि ॥ मलबन्धनहै देहको जैसे तिमिहीं देह । आत्माको बन्धन सुदृढ़ जानो बरबुधिगेह ॥ व्यापत कफपित बातसों हैशरीर यह भूप । यहिमें रसनाड़ीन सों पहुंचत प्रज्ञ अनूप ॥ गुणपांचौ इन्द्रियन के प्राप्त करावति जौन । ऐसी दशहैं नाड़िका देहमाहिं मतिभौन ॥ तिन दशहूंनाड़ीनसों होति सहस्रन और । चलदल दलकी नोकसम सूक्षम नृप शिरमौर ॥ नदिका जलसों भरतिहै सागरको जिहिभांति । पोषित तैसेहि देहको रससों नाड़ीपांति ॥ हृदयमध्य यक नाड़िका मनोवहाहै नाम । प्राणविकार जबहोतहै तब्बै भूप बुधिधाम ॥ मनोबहा सोशुक्रको सर्बदेहते कर्षि । करिउपस्थकै देतिहै सन्मुख समयो पर्षि ॥ है शरीरमें नाड़िका बरमहिपाल जितेक । मनोवहा अरु नयनमें लागी सर्बतितेक ॥ स्वप्नहुमें मनबीच नृप रजको भयेप्रकाश । मनोबहासी शुक्रको छोड़िदेतिहै आश ॥ शुक्रहि कारण जातिके शंकरको यह जौन । जानतहै संसारमें करत राग नहिं तौन ॥ दोषसर्ब जरि जातहैं तिन मनुजनको सर्ब । फेरि जन्म के दुःख कोपावतनहीं अखर्ब ॥ औरहु देह अप्राप्तिको कारण परम अनूप । तुम्हैं कहतहौं सो सुनो महत ज्ञानमय भूप ॥ निर्बिकल्प जोज्ञानहै ताहि मनहिंसों स्वक्ष । प्राप्त होय तनकोतजे फेरिलहतनहिं दक्ष ॥ जीवनमुक्तहि जोकरै ऐसोज्ञान अमन्द । तासुमार्ग मैं कहतहौं प्रज्ञाराशि नरेन्द ॥ मनहीं बिषयाकारहै यह जोज्ञान नरेश । मनहीं को सोहोतहै प्रापत भणत बुधेश ॥ निवृतकर्म कीन्हें मनस होत न बिषयाकार । प्राप्त होतहै मोक्ष को जो बर सुख आगार ॥ मारग दुर्ग उलांघि जन पावत सुख ज्यांहिभांति । तिमिहिं मोक्ष जन लहत हैं लांघि दोषकी पांति ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्बणिमोक्षधर्म्मेचत्वारिंशोऽध्यायः ४० ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ दुखद अन्तमें बिषय अति तिनमाहीं रत

जौन । कहत सुबुध जन लहतहैं महत खेदकोतौन ॥ जे अशक्तहैं बिषयमें तौन परमगति लेत । जे जन ज्ञाता मर्मके जानत बुद्धि निकेत ॥ चरणा दोहा ॥ जन्म मृत्यु अरु आधि व्याधि सों युक्त जगत निति देखि । काजमोक्षकेयत्न करतहैं बुद्धिमान अवरेखि ॥ दोहा ॥ मनसा बाचा कर्मसों रहैंनित्यही शुद्ध । करैगर्वको नाहिंधरैं शांतिहि होय अक्रुद्ध ॥ दायाहू सों भूतसँग बन्धहोत हैपर्म । धरेदयाहू नाहिंकरै याते संग सुकर्म ॥ करै कर्म जोतौ शुभहि करै अशुभको नाहिं । दोऊ भोगे जालहैं यह गुणिकै मनमाहिं ॥ उदासीन सबमेंरहै शत्रु मित्रता त्यागि । परमगहे यह धर्म जन रहतशर्ममें पागि ॥ चरणाकुलक ॥ करैकामना कौनिहुंनाहीं । गुणै न परअनिष्ट हियमाहीं ॥ भार्य्यादिकके मरे न रोवै । कालव्यर्थ कबहूं नहिं खोवै ॥ मनकै स्वच्छज्ञानमें लावै । बिषयमाहिं कबहूं न लगावै ॥ सूक्षम परम धर्मजो नीको । अरु सुबचन सुखदायक हीको ॥ इन दोउनकी इच्छाहीमें । करै सुगुणिजो बिमलाधीमें ॥ कहै बैन तौ सत्य सदाहीं । दुखदहोहिं जे काहुहि नाहीं ॥ जामें चुगुली काहूकेरी । होयनहीं दुखदाय घनेरी ॥ अरु कठोरतासों बिलगानी । ऐसीजोहै सुन्दरिबानी ॥ तजि प्रमादता बोलै थोरी । कबहुं न कहै भरीबरजोरी ॥ बहुत बारता कीन्हे जगमें । मन रँगिजात बिषय रस रँगमें ॥ दोहा ॥ इन्द्रिय रजगुण युक्तसों करत जौन जन कर्म । तौन नरक को लहत है अत्रपाय दुखपर्म ॥ ताते आत्माको सदा राखै धीरज माहिं । लगनदेय कबहूं नहीं दुखद विषयके माहिं ॥ कर्मन्यास हम कहत हैं तुम्हैं सुनहुसो भूप । जानत ताको सुखदहै जे बर प्रज्ञ अनूप ॥ चरणाकुलक ॥ जैसे तस्कर चोरी करिकै । लोभमाहिं पगि शिरपै धरिकै ॥ भागत लगत कुसंग को लहिकै । बांधत तिन्हैं ग्रामजन गहिकै ॥ तिमिहिं अबुद्धन को दुख भारी । कुकरम देत बांधि बहुबारी ॥ बस्तुहि छोड़ि

चोर जो भागै। तौ बन्धन दुखसों नहिं पागै॥ इमिहि कुकर्म छोड़ि जो देई। तौ अशर्मको मनुज न लेई॥ गृह आदिक संग्रह कोतजिकै। एकान्तस्थल कोलखि व्रजिकै॥ रहै तहां कै अल्प अहारी। नाशिज्ञानसों क्लेशहि भारी॥ रहै तपस्यामेंनित तत्पर। तौन लहत जन पावन पदपर॥ धीरजमान महतहीकै कै। दुःखद कामादिक कोग्वैकै॥ मन चञ्चल कोरोकैमतिसों। लगन न देय विषयमें रतिसों॥ तिहिको महत जानियोगीश्वर। करत प्रशंसा अतिताकीसुर॥ ह्वैके प्रगट तासु नट आवत। भरे शरम परमासों भावत॥ दोहा॥ मिलो जासु मन सुरनमें ऐसोजो जनताहि। ब्रह्मज्ञान बरहोतहै प्राप्त चहत सुरनाहि॥ छूटिजात जबविषय तबपावत ब्रह्मज्ञान। याते विषयनकोतजै दुःखद जानि महान॥ जबलौं ब्रह्मज्ञान नहिं प्रापतहोयअनूप। तबलौं गाफिलनहिं रहै साधन सों सुनुभूप॥ चरणाकुलक॥ शाका-दिक को भक्षण करिकै। वितवै काल सुमतिसों धरिकै॥ करै तपस्या अपनी नाहीं। जाहिर राखै गुप्त सदाहीं॥ करैसात्विक-हि नेमअहारै। कालदेशलखि करिसु विचारै॥ प्रवृत्त कर्म सों योगैमाहीं। विघ्न होनदे कबहूं नाहीं॥ अल्प आगि जैसे सुल-गावै। तिमिहिं ज्ञानमें चित्तबढ़ावै॥ ऐसो जोजन हैवरधीको। ज्ञानप्रकाश लहतसो नीको॥ जौन प्रकाश ज्ञानकोपावत। प्राप्त होय अव्ययकोभावत॥ दोहा॥ पावतज्ञानप्रकाश जोतिहि समा-न नहिंऔर। गावत जाके यशहि सुर सुनहु सुजान सगौर॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेएकचत्वारिंशोऽध्यायः॥४१॥

भीष्मउवाच॥ दोहा॥ औरहु साधन कहत इक सुनहु तौन तुमभूप। थिर करिकै चंचल मनहिं कुन्तीसुवन अनूप॥ निष्फल मखइच्छाकरै ब्रह्मचर्य्यकी जौन। स्वप्नदोषको समुझिकै निद्रा तजिदे तौन॥ चरणाकुलक॥ रजऔ तमसों स्वप्नेमाहीं॥ आपु आपुको जानतनाहीं॥ देहान्तरको लहिकै जैसे। डोलतपग्योलो

भमें तैसे ॥ ज्ञानाभ्यास कियेतेजागै । निद्राबीच कबहुं नहिंपागै ॥ स्वप्न माहिंकैसे बिनुदेहै । चेष्टा करत कहौकरिनेहै ॥ जोतुमक-होतात यह हमको । तौतुम सुनो कहतहैं तुमको ॥ यहिवृत्तांत हि ईश्वर जानै । ऐसे ऋषिवर वृन्द बखानै ॥ मनके व्यापारहि तुमजानो । स्वप्नन और भूप अनुमानो ॥ कारज माहिं युक्तमन जाको । थिर नरहत कबहूं हैताको ॥ जगतहोत संकल्पहिजैसे । स्वप्नहु माहिं मनोगत तैसे ॥ जगमें कामवानहै जोजन । जन्म असंख्य लहतहै सोजन । मनमें जोजन जगको जानत । उत्तम पुरुष तौन दुख मानत ॥ किये जौनहै कर्म पुराने । कहत सु-बुधहैं परममहाने ॥ तिनसों सत्वादिकगुणमाहीं । जोजोप्राप्तहोत हैपाहीं ॥ तौन दिखावत स्वप्नेमें है । भूतआतमाको नगिचैहै ॥ दोहा ॥ सत्व सुगुण सों देवता रजसों नारिअनूप । तमसों राक्षस स्वप्नमें देखि परत हेभूप ॥ बहुप्रकारकी परत लखि अपनीहू जो देखि । सत्वादिक गुणयोगते कहतमनीषा पेखि ॥ करतजौन सं-कल्पहै जाग्रतमें मनमाहिं । स्वप्नमाहिं सो परत लखि मन को अपने पाहिं ॥ निति अरोक मन रहत है सबभूतन के बीच । ताको आत्मप्रभावते जानैभूप निभीच ॥ स्वप्नअवस्था हमकही तुम्हैं भूप अनुमानि । अब सुषुप्ति हमकहत शुभ थिरतामेंमन आनि ॥ प्रापत होत सुषुप्ति में साक्षीमाहीं सर्व । बुद्धि अहंका-रादि नृप जानत प्रज्ञअखर्व ॥ चरणादोहा ॥ स्वप्नसुषुप्ति अवस्था तुमको कही भूप अनुमानि । संप्रज्ञात अवस्था तुमकोअब हम कहत बखानि ॥ मन बारे संकल्पते ईश्वरको गुण जौन । ताकी जो इच्छाकरै स्वच्छ परमजन तौन ॥ चरणाकुलक ॥ विषयगणन को नित्यनवीना । निरखेते मन होत मलीना ॥ विषयगणनको छोड़े नीको । भासमान सो सो हलश्रीको ॥ चरणादोहा ॥ कहत दोयबिधि को देहीको ब्रह्मभाव अभिराम । जगको कारण एक महतहै ब्रह्म सुनो बुधिधाम ॥ दोहा ॥ दूजो निर्गुण ब्रह्महै रहित

बिकारअनूप। सगुणतौनहीहोतहैं निर्गुण जानोभूप॥ चरणादोहा॥
तपस अग्निहोत्रादि बताये देवन कोलें केश। असुरन को तम
महत बतायो दुःखद परमअशेश॥ दोहा॥ निर्विकारजो ब्रह्महै
राख्योताहि छपाय। सुर असुरनके सगुणहैं मतवाउ तम नर-
नाय॥ असुरनके रज तम सुगुण सत्व सुरनको जानि। ब्रह्म
गुणनके हेपरे परत नहीं पहिचानि॥ निग्रहने इन्द्रियनके ब्रह्म
परतहैं जानि। निग्रह बिनकीन्हें नहींपरत ब्रह्म अनुमानि॥
महाभारतशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेवार्ष्णेयाध्यात्मेद्विचत्वारिंशोऽध्यायः४२॥

भीष्मउवाच॥ दोहा॥ औरहुसाधनकहतहम सुनहु नौनभुपा
ल। जानिपरतहै ब्रह्मवर साधनकिये बिशाल॥ है सुअवस्था
जीवकी स्वप्नसुषुप्ति सुदोय। ब्रह्महुकी निर्गुण सगुण कहतप्रज्ञ
बर लोय॥ इनचारिहुको जो नहीं जानत जाग्रत माहिं। नि-
र्विकार परब्रह्मको जानि सकतसो नाहिं॥ तत्वव्यक्त अव्यक्त
कोकह्यो ऋषिनहैं भूप। व्यक्तमृत्यु मुखगत अमृत है अव्यक्त
अनूप॥ अरिल॥ वेद कह्योहै प्रवृत धर्म्मबर। तौनहिंमें हैं शि-
थिल चराचर॥ निवृत धर्मसो है नृप व्यक्त न। जानत प्रवृत
माहिं जेशक्तन॥ प्रापत प्रवृतधर्म्ममें जे जन। जनन मरणको
पावत तेजन॥ निवृतधर्म में जोजन भावत। सोजन महत पर-
मपद पावत॥ दोहा॥ माया अरु क्षेत्रज्ञते भिन्न ब्रह्महै जौन।
तासु बिचारकरै सदा बुध थिर करि मन गौन॥ कारणहै उत्पत्ति
को माया त्रिगुणसमेत। निर्गुणहै क्षेत्रज्ञसोजानतबुद्धिनिकेत॥
हैं सुमहत तत्वादि नृप प्रकृति विकार जितेक। दृष्टाहै क्षेत्रज्ञ
सो तिनको बर सबिबेक॥ माया अरु क्षेत्रज्ञको भेदकह्यो हम
पर्म। अब ईश्वर अरु जीवके सुनो भेदको मर्म॥ जीव औ सु-
ईश्वर परम निराकारहै भूप। होयसकत तातेनहीं तिनको ग्रहण
अनूप॥ चरणादोहा॥ बिनमाया सों ब्रह्मकहावत सह माया सों
जीव। इनदोउन में इतोभेद है पाण्डुसुवन मतिसीव॥ सोरठा॥

सत्वादिकगुण तीन तिनसों छादित जीवहै । अरुजो ब्रह्मप्रबीन आच्छादित गुणसों नसो ॥ चरणाकुलक ॥ इच्छा ब्रह्मज्ञानकी जाके ऐसे जेजन बरमेधाके ॥ बाहर भीतर उज्ज्वल ह्वैकै । द्वन्दबिलन्द कलुषके ग्वैकै ॥ करैंसुतप ह्वैकै निहकामैं । धारेरहैं दयाहिय मामैं ॥ महतप्रकाश लोकमें जोहैं । भूत तपस्विनहीको सोहैं ॥ भानु और शितभानहि देखो । तेजतपस्याको अवरेखो ॥ रज अरु तमको नाशबजोहै । लक्षण तीन तपस्याको है ॥ ब्रह्मचर्य्य अहिंसा जो है । तपशारीरिकजानो सोहै ॥ रोकब जोहैमन बाणीको । मानस तीन तपसहैनीको ॥ धर्मवान बरबिप्रनवारो । अन्न प्रसन्न सुलेय सुठारो ॥ ऐसोअन्न लियेते भारी । राजस पाप नशत दुखकारी ॥ उदरहिकाजै लेय सुअन्नै । अधिकलेय नहिंरहै प्रसन्नै ॥ दोहा ॥ ऐसो साधन कीजिये ताते भूपनिभीच । ज्ञानहोय मनमेंमहत अन्तअवस्था बीच ॥ सोरठा ॥ देहवानसों देहको तजिअभिमान नरेश । रहैसदा रतज्ञानमें बर अतिहरणकलेश ॥ दोहा ॥ देहरहै जबलौंरहै सावधान ह्वैभूप । पावतहै देहान्तमें पावनमोक्षअनूप ॥ भूतनके जननादिकोजानु कर्महै हेत । मोक्ष सुधर्मनको महत यह सिद्धान्त सचेत ॥ मन इन्द्रियको खैंचिकै विषयमाहिं ते सर्ब । धारेयोगी धीर्य्यसों देहै रहत अखर्ब ॥ जानिशास्त्र सिद्धान्तको ज्ञानमार्गकेबीच । किते चलत जानत न पै ब्रह्महि परम निभीच ॥ ज्ञानमार्गके बीच बर किते लेतहैं जानि । बिमलभएते हृदयअति तुम्हैं कहतअनुमानि ॥ करिकै तासु उपासना जानतकेते भूप । जानतहैं अभ्यास करिकेते सुबुध अनूप ॥ एतेसर्ब महातमा पावतहैं गति पर्म । किल्बिषसों ह्वैकै रहित कीन्हेंसो तपकर्म ॥ सूक्ष्मताको ब्रह्मकी शास्त्रचक्षुसों पर्म । देखैत्याज्य सथूलता हियमें समुझि सुकर्म ॥ ईश्वर में मन लायबो तासु धारणा नाम । तामें जो आशक्त है ऐसो योगी नाम ॥ परब्रह्मको हृदय में जानत मति

बिस्तारि । मृत्युलोकते जातहैं छूटि गुणनको टारि ॥ रागादि-कसों छूटिजन पावन गतिको लेत । कह्यो बेदविदं बुधन यह भूपति बुद्धि निकेत ॥ ज्ञानभयोहै शास्त्रते जिनको परम अल-न्द । भयो नसाक्षात्कारहै ऐसे जौननरेन्द । तौनहुंजन वैराग्यसों पावन गतिकोलेत । मृत्युलोक सों छूटिकै धर्म सुधर्म निकेत ॥ जौन ज्ञानसों तृप्तअरु तजै कामना सर्ब । तौनहु अव्यय बिष्णु को प्रापत होतअखर्ब ॥ आतमस्थ परब्रह्मको जोजानतहैं तात । तौन छूटि संसारते पावत गति अवदात ॥ तृष्णासोंजगबद्धहै घूमत इमि जिमि चक्र । जोयामें तत्पररहत तौनलहत दुखचक्र ॥ जिमि मृणालको तंतुसों सर्बनालमें पूरि । रहत तिमिहि तृष्णा महति रहति देहमेंभूरि ॥ जो माया अरु जगतको जानत असत नरेश । सतजानै परमेश्वरहि सो सुख लहत अशेश ॥ यह वर साधन मोक्षको कह्यो प्रगट अभिराम । नारायण करिकै कृपा भूतन पै अतिमाम ॥

श्रीमहाभारतेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेवार्ष्णेयाध्यात्मेत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३

बैशम्पायनउवाच ॥दोहा॥ सोसाधनहै मोक्षको तृष्णाको जोत्याग । कह्यो पूर्ब अध्यायमें यह भीषम बड़भाग ॥ सोरठा ॥ यहसुनिकै भूपाल धर्मधुरन्धर धर्मसुत । तृष्णात्यागि बिशाल दुर्लभहै भूप-तिनको॥ यह बिचारि हियमाहिं मेधाको बिस्तारिकै । गंगासुतकै पाहिंफेरि प्रश्नयह करतभो ॥ युधिष्ठिरउवाच॥दोहा॥ जनककौनआच-रणकरितजि भोगनको सर्ब । भयोमोक्षको प्राप्तवर प्रज्ञावान अ-खर्ब ॥ भीष्मउवाच ॥ चरणाकुलक ॥ जनकसुभूप मोक्षपद पायो । जौन आचरणसों मनभायो ॥ सुनहु तौन हम तुम्हैं कहतहैं । थिरकै चंचल मनहिं महतहैं ॥ मोक्षधर्मके परम बिचारैं । करन लग्यो नृप जनक सुढारैं ॥ पृथक् पृथक्वरधर्म सुतिनके । अतितेजस्वी कल्मष बिनके ॥ ऐसेसत आचारय ताके । गृहमें हुते महामेधा-

के ॥ तिनके प्रवृतधर्मको सुनिकै। होत प्रसन्ननहीं नृपगुनिकै ॥ निभृत धर्मकोगुणि हियमाहीं । तामेंलागो रहतसदाहीं ॥ कपिला नामा बिप्राताको । पुत्रमहा मुनि भूरि प्रभाको ॥ तासु पंचशिखनाम सुमेधा । अन्तरज्ञ जैसोबरबेधा ॥ फिरतो तीन भूमिके माहीं । जातभयो मिथिलाकेपाहीं ॥ आसुरि नामाद्विज कोनीको । पहिलोशिष्य हुतोबरश्रीको ॥ सहस वर्ष द्विज आसुरिनामा । मनमें कियोध्यान अभिरामा ॥दोहा॥ ब्रह्मज्ञानबिचारसों हुतो युक्त मतिमान । औतपसों हो युक्तवर वेद उक्तशुभठान ॥ क्षेत्र और क्षेत्रज्ञको जोहै भेद अनूप । ताहि भयो जानत सुद्विज आसुरि सुनु बरभूप ॥ सगुण भयेते रूपबहु निर्गुणभये न एक । आसुरि ऐसे ब्रह्मको जानतभो सबिवेक ॥ तासु शिष्य हो पञ्चशिख तेजस्वी धीधाम । कोईही यक ब्राह्मणी कपिला ताको नाम ॥ प्राप्त तासु पुत्रत्वको होतभयो सो भूप । कांपिलेय ताते भयो ताको नाम अनूप ॥ ज्ञानवती जो बुद्धिहै प्राप्त होत भो ताहि । कह्यो मारकण्डेय है मोको यह अवगाहि ॥ बहुधर्म्मी आचार्य्य जे तिनमें लखि समभाव । मिथिलाधिप को पञ्चशिख गुणिकै बरबुधिराव ॥ सबआचार्य्यन को महत ज्ञानबादके माहिं । करतपरासतभो सुमुनि जनकभूपकेपाहिं ॥ तासु दरश ते जनक सब आचार्य्यन को त्यागि ॥ पञ्चशिखहि को अनुगगुणि होतभयो अनुरागि ॥ जनक नृपहिंसों पञ्च शिख मोक्ष कहत भो आम । स्वच्छ समुझि ताकोहृदय दक्ष परम अभिराम ॥ मोह बिनाशी दुखदहै अरु चल जनकनरेश । कीजै नाहिं बिश्वासको यामें जानि कलेश ॥ कर्मनको फल चहत हैं मोहहि ते जन सर्व । होय फलाशा माहिं रत धर्म्महु करत अखर्व ॥ नाश परत परतक्ष है देखि जगतके बीच । है यह मिथ्या जानतउ धारे होय निभीच ॥ आत्माको जो देहते भिन्नमानिबोजौन । मोहभयेते सोनहींनीकोमतहै तौन ॥सोरठा॥

लोकायतहै जौन मानतहैं तेलोकही। तिनको हैं वुधिभौन तुम सों जोयह मतकह्यो ॥ दोहा ॥ लोकमाहिं जोहै नहीं ताको कहिबो जौन। अजर अमर जिमि भूप को कह्यो बचन श्रुति तौन॥ भूपति श्रुतिके बैन ते अजर अमर नहिं होत। यहि प्रत्यक्ष बिरोधते मिथ्याश्रुति मतिपोत॥ अनुमानहुमें है नृपति दुःखन सुनियेतौन। तहँ अनुमान नहोतहै व्याप्ति न जहँ वुधिभौन॥ पावकके अनुमानकी व्याप्ति धूमहै जानु। लखे धूम बिन होत नहिं पावकको अनुमानु॥ सोरठा ॥ हैंधों नहीं अभाव गतिको ताराचन्द्रमें। लखिनपरत नरराव याते गुरयो अभावहै॥ दोहा॥ देशान्तरकी प्राप्तिसों कीन्हें लेअनुमान। शशिउड़ को गतिभाव सो जानि परत मतिमान॥ देखे बिना पदार्थके होतनहीं अनुमान। अनुमानहु सो परत नहिं जानि अदृश्य सुजान॥ और एकवृत्तान्तमैं कहतभूपतौपाहिं। भिन्नदेहसों जीवनहिं नास्तिक मतके माहिं॥ दूषत हौं मैं ताहि यह नास्तिकको मतजौन। आस्तिक के मतसों महत भूप मनीषा भौन॥ देह भिन्न सों आतमा जानि परत इमि जौन। जौन देह को तजत है चेष्टा करति न तौन॥ औरहु एक प्रमाण है यामें विज्ञनृपाल। सो गुणि तुमको कहतहौं तिनके वुद्धि विशाल॥ आत्मामाने देहको जौन देहके कर्म। ते नशिजैहैं देहके संगहि भूप सशर्म॥ भिन्न देहते आतमा याते जान्योजात। आत्मा पावतकर्मसों दुतियदेह बिख्यात॥ नास्तिकहीके भेदमें सौगतहै मततास। खण्डन काजे कहत हौं सो सुनिये वुधिरास॥ तृष्णा अरु अज्ञान जो अरु जोहै नृपकर्म। फेरि देहकी प्राप्तिको सो कारण है पर्म॥ सोरठा॥ अरु लोभादिक सर्व तौनहु पुनि तन प्राप्ति के। कारण गुणोअखर्व सोमत ऐसे कहतहै॥ दोहा॥ कहत क्षेत्र अज्ञानको बीज किये जो कर्म। तृष्णाको जलकहतहै भूपतिप्रज्ञ सुधर्म॥ अज्ञानादिक सर्वजे तिनते पुनि पुनिहोत। वहुप्रकार

की देहजो ताको भूपउदोत ॥ सोरठा ॥ अज्ञानादिक सर्व नष्टभये तेज्ञानसो । पावतमोक्ष अखर्ब फेरिदेह नहिं होतहै ॥ दोहा ॥ यह है मत सौगतन को दूषतहौं मैंयाहि । बिमला मति बिस्तारि कै तासुबीच अवगाहि ॥ सोरठा ॥ सौगत मतके माहिं ज्ञान रहतहै एकक्षण । फेरि रहतहै नाहिं ताते यह दूषण लगत ॥ नष्टहोत जो ज्ञान नशिहै अज्ञानादि किमि । अज्ञानादि महान नशेबिना नहिं मोक्षहै ॥ सौगत के मततैन याते कैहै मोक्षनृप । यह जानो तुम ऐन गुणिकै सूक्षम बुद्धिसों ॥ दोहा ॥ कर्महु क्षणभर रहत है सौगत मतके माहिं । क्षणभरहीजो कर्मतौ दानादिक फलनाहिं ॥ बीज देहको कर्महै कह्यो पूर्बयह जौन । सौगत मतमें जानिये याते ब्यर्थहि तौन ॥ नहीं दुःखसुख होतबिन पूरब कर्मसमर्थ । याते क्षणभर कर्मको कहत तौनहू ब्यर्थ ॥ तिनते दुखसुख लहत अब किये पूर्बजे कर्म । करत जौन अबतौनते आगे लहिहैं पर्म जौन मरत सो कर्मसों फेरि जन्म है लेत । याते धारा कर्मकी जानोबुद्धि निकेत ॥ ज्ञानहु धारामहतिहै ताको पाये पर्म । जन पवित्र ह्वै लहतहै मोक्षहि भूप सुकर्म ॥ क्षणिक ज्ञान बादीनकी मोक्षहु भये सुजान । होयजात च्युतहै परम बिनानिरंतर ज्ञान ॥ जैसे फल यज्ञादिको जबलौं रहत अनूप । तबलौं जन स्वर्गादिमें रहत तदनु नहिं भूप ॥ बहुमतकी बहुतर्कना मनमें आवति भूप । होतनहींहै एकको पैनिर्द्धार अनूप ॥ जेबिचारजन करत हैं तिनकी मेधायत्र । लगति तहांहीं जातिह्वै जीरण भूप पवित्र ॥ बहुप्रकारकेशास्त्रजे तेजनको भूपाल । खैंचेखैंचे फिरतहैं मत मतमाहिं बिशाल ॥ जेजे मत तेते महत बादहिकेहैं सर्ब । साधनब्रह्मज्ञानके हैं नहिंब्रह्म अखर्ब ॥ मतबादहिकरते सबै बादी है मरिजात । पावत ब्रह्मज्ञानको कबहुं नहीं अवदात ॥ सबको तजिकै जातमरि फिरि आवतहै नाहिं । मोह कियेतौ है कहा पुत्रादिक के माहिं ॥ सुमुनि पंचशिखके बचन सुनिये जनक

नृपाल। फिरि पूछनको उदित भो लहिकै मोद विशाल॥
इतिशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेपंचशिखोपाख्यानेचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४॥
भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ सुमुनि पञ्चशिखको जनक प्रज्ञावान नितान्त। फेरि मोक्षसंसारको पूछतभो वृत्तान्त॥ जनकउवाच ॥ जैसे मूर्छा सुप्तिमें पूर्वस्मृतीरहै न। मोक्षहुमें तिमि रहति नहिं पूर्वस्मृति बुधि ऐन॥ होत सुमुनि अज्ञानसों मूर्छा सुप्तिमहान। होतमोक्ष है ज्ञानसों महतकहत मतिमान॥ मुनोज्ञान अज्ञान में तौभो कहा विशेष। कहौमोहिं जासों हिये रहैन संशयरेष॥ ज्ञान और अज्ञानमें जो विशेष नहिंपर्म। तौज्ञानारथ क्लेश जो व्यर्थहि गुणो सुकर्म॥ भीष्मउवाच ॥ बैन जनकके येसुने सुमुनि पंचशिख प्रज्ञ। कहत भयो अवगाहि कै यहि विधिसों धर्मज्ञ॥ निर्णय ज्ञाना ज्ञान को कहत तुम्हैंहौं भूप। सुनिये थिरता माहिं करि चञ्चल मनहि अनूप॥ आरोपित अज्ञानसों आत्मा माहिं अनूप। बुद्ध्यादिक गणहोत जब तासु अभाव सुभूप॥ तब अनर्थ मिटिजात सब जानत आपुहि आप। निर्विकार आनन्दमय ब्रह्म सुबुद्धि कलाप॥ बुद्ध्यादिकको होतहै नहिं अभाव विज्ञान। याते ज्ञान उपायमें क्लेशन व्यर्थ सुजान॥ देहादिकहि अनात्मा कहिबेको भूपाल। देहादिकके मूलको प्रगट कहतहौं हाल॥ पञ्चधातुजे देहमें तेतबलौंहि एकत्र। प्राणी जबलौं जियतहै हैनहिंसंशयअत्र॥ देहादिककोमूलहै पंचधातुसंघात। जानो इन्हैं अनातमा जनकप्रज्ञ अवदात॥ सोरठा ॥ बुद्ध्यादिक सब जौन तौनहुसर्व अनातमा। इनमाहीं क्षितिरौन आत्म भावसों दुखद अति ॥ दोहा ॥ जाने इन्हें अनातमा मैं अरु मम यह भाव। जौन बुद्धि सों कहत हैं रहत सोन नरराव॥ सांख्यशास्त्र अभिरामजो तासुविचार अनूप। सोअति उत्तम अत्रहै तुम्हें कहत सोभूप॥ करिहौजो भूपालतुम तिहिविचार को पर्म। प्राप्तहोहुगे मोक्षको तौतुम सुबुधि सुकर्म॥ जोजन

चाहै मुक्तिसो करैत्यागको सर्व । त्यागबिना मोक्षहि चहत सो दुख लहत अखर्व ॥ सर्बकर्म ह्वैजातहैं त्याग किये ते द्रव्य । होयजातहैं सर्बव्रत भोगत्यागते भव्य ॥ औसुख त्यागेहोत है औतपयोग बिशाल । सर्ब त्यागतेहोतहैं सबही येभूपाल ॥सर्ब त्यागके मार्गको जेजन जानत भूप । तेतापै चढ़ि लहतहैं मानवमोक्ष अनूप ॥ मतिके ऊपररहत मन ज्ञानेन्द्रियन समेत। इनहूंको मति त्यागमें यातेगुणो सचेत ॥ कर्मेन्द्रिय सहबल रहत मनपै चपल बिशाल । यातेमतिके त्यागमें सबको रहत नृपाल ॥ कर्णशब्द अरु चित्तये हेतु श्रवणमें तीन । रूपपरश रस गन्धके ज्ञानहु माहिं प्रबीन ॥ कर्णादिकहैं कर्णसब अरु शब्दादिक कर्म । अरु कर्त्ताहै चित्तनृप जानो प्रज्ञ सुधर्म ॥ व्योमाश्रितहै श्रोतअरु श्रोताश्रितहै राव । जिह्वाश्रित रसजलाश्रित जिह्वाहै बुधराव ॥ ऐसेहि इन्द्रिय औरसब महाभूत श्रितभूप । इन्द्रिय आश्रितबिषयहै जानोप्रज्ञ अनूप।इन्द्रियसब मनमेंरहति यातेमन आधार । हैतिनको महिपालबर प्रज्ञावान उदार ॥ नृप दशहूं इन्द्रियनके ज्ञानकर्म हैजौन । जानतयाही हेतुते हैमन धिषणाभौन ॥ द्वादशहौ जो बुद्धिहै मनको जानत तौन । इनते जानत भिन्नहै आत्महि ज्ञानीजौन ॥ जाग्रत में देखी सुनी बिषय जौनहै भूप । सुनु सूक्षम इन्द्रियनसों तिनको जीव अनूप ॥ युक्तहोयके गुणनसों स्वप्न अवस्था माहिं । देखत है प्रत्यक्षलों दक्षहोयकै पाहिं ॥ तमसों युक्तसुचित्तजो सबइन्द्रिय तेस्वक्ष । देत आतमहि भिन्नहै करि सुषोप्तिमें दक्ष ॥ भिन्नभये इंद्रियन सों नृप सुषोप्तिकेबीच । होतजान सुख नामहै तामस तासुनिभीच ॥ जैसेशरम सुषोप्तिमें तैसो मोक्षहु माहिं । पै सुमोक्ष सुखरहतहै निति सुषोप्ति सुखनाहिं ॥मोक्षहु माहिं सुषोप्ति लौं अहँकारादिक सर्ब । रहतनहीं भूपाल मणि प्रज्ञावान अखर्ब ॥ भूतादिक समुदाय को नामक्षेत्रहै भूप । जो अधार

समुदायको सोक्षेत्रज्ञ अनूप ॥ मिलेसुकर्म प्रभावसों क्षेत्रऔर क्षेत्रज्ञ। इनमें सत्य असत्यनृप कहिये केहिको प्रज्ञ ॥ जबलौं कर्म प्रभाव है तबलौंहीं ये सर्व। रहत फेरि नहिं कहतहैं जे हैं प्रज्ञ अखर्व ॥ जिमि नदिका नद सिन्धु में तजत नाम अरु रूप। प्राप्तभयेते ब्रह्ममें तैसेहि ये सब भूप ॥ मोक्ष मनीषाको नृपति जानत है जन जौन। आत्माको सो होतहै प्रापत सुनु क्षितिरौन ॥ लगत कमलके पत्रमें जैसे नहिंकी लाल ॥ मोक्षमतीतिमिकर्मफल सोनाहिं लिप्त नृपाल ॥ लखतनहीं तजिजात जिमि निर्मोकहि सुभुजंग। तिमिविमुक्त सोदेतहै दुःखहि छोड़ि उतंग ॥ सुमुनिपंचशिखकेसुने ये भाषण अभिराम। जनकभूप भूमें चरतभयो मोदसोंमाम ॥ भीष्मउवाच ॥ यहजो निश्चय मोक्ष को पदिहैताकोजौन। उपद्रवनसों छूटिकै लहिहै आनँदतौन ॥

इतिशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेजनकपंचशिखसंवादेपंचचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥

युधिष्ठिरउवाच॥दोहा ॥ कहाकियेसुखहोतअरु कहाकियेदुखहोत। कहा किये निर्भय फिरै लोकमाहिं मतिपोत॥ भीष्मउवाच ॥ निग्रह जो इन्द्रियनको ताकोहै दमनाम। तासु प्रशंसा करतहैं बेदवान बुधिधाम॥दमको साधनसबकरैंब्राह्मणकरै बिशेश। अदमवान सों होतिहै सिद्धिन क्रिया नरेश ॥ क्रियासत्य अरु तपसयेदम हीमें हैसर्व। दमहिं बढ़ावत तेजको दमहिं पवित्र अखर्व ॥ ह्वै अपाप निर्भयदमी लहत ब्रह्मपद पर्म। जगहूमें जबलौं रहत तबलौं रहत सशर्म ॥ प्राप्तहोत नहिंतेजको क्रोधीहैजन जौन। जनकोभय अदमीनते महतहोत बुधिभौन ॥ तासुनामक्रव्याद जो कच्चे मांसहि खात। तिहिते भय जिमि होत तिमि अदमीते बिख्यात ॥ मेटनको अदमीनके उपद्रवहिं लोकेश। बिरचत भो भूपालको गुणिकै बर अचलेश ॥ आश्रमवारे धर्म्म ते होत जौन फल पर्म्म। ताते अधिकी होतफल दमते भूप सुकर्म्म ॥ जिनके दम को उदयहै तिनको चिहन अनूप। मनिमों

मैं अवगाहि कै तुम्हैं कहत हौं भूप ॥ गर्व्व अभार अदीनता औ सन्तोष महान । आस्तिक बुद्धि अनूप औ मृदुता अरु ठ सुजान ॥ औ तजिबो अभिमानता गुरुपूजा अभिराम । अनसूया अरुबहुदया भूतनमेंबुधिधाम ॥ अस्तुति निन्दा छोड़िबो अनृतबाद बहुबात । रागादिककीबारता तिनको तजिबोतात ॥ सर्व कामना छोड़िबो औकरिबे नहिं बैर। शीलधरण सुब्रतकरण औतजिबो सबबैर॥ औतजिबो पैशून्यको गुणिकै दोषमहान । येलक्षण दमवानके हैं हे भूप सुजान ॥ लोकमाहिं सतकारको प्राप्तहोय दमवान । प्राप्तहोत देहान्तमें स्वर्गहि समुदमहान ॥ चरणाकुलक॥हितहिगुणै सबभूतनवारे।धरिकै सरलसुभाव सुढारे॥ काहू जनसों द्वेष न राखे । मधुर बचन सबही सों भाखे ॥ देत त्रास भूतनको नाहीं । आपहु डरत न तिनके माहीं ॥ सबही भूतदेखि दमवानै।धारिप्रेमको परममहानै॥करतप्रणाम आयकै पाहीं । चहुंधा खरेहोय नगिचाहीं ॥ महत अर्थ में हर्षनपावै । औ अनर्थसें शोच न लावै ॥ सुनुभूपाल दमीहै सोई । तासम प्रज्ञावत नहिंकोई ॥ अनसूया अरु क्षमा महानी। औसन्तोष शांतिप्रिय बानी ॥सतदान अरु इनकोजे हैं। दुष्ट मनुज पावत नहिंतेहैं ॥दोहा ॥ बिनाकाल कोउ मरतनाहिं यह गुणिकै हिय बीच । दमीलोकमें फिरतहै ह्वैकै परम निभीच ॥

इतिमहाभारतेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेदांतकथनंषट्चत्वारिंशोऽध्याय: ४६ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ बिना अहिंसा धर्म भूतगणनको अभयता । जातिनदई सुकर्म सुनहुपितामह प्रज्ञबर ॥ कीजैदेवत अर्थ पशुकोबध मखमाहिं नृप । कहत सुबेद समर्थ औ सब स्मृतिहु कहतिहै ॥ यातें भो सन्देह मेरेमनमें महतअति । कहो तात बुधिगेह दोऊ किहिबिधिसों सधैं ॥ भीष्मउवाच ॥ बेदउक्तब्रत जौन तासोंजे जन युतनहीं । खाये आमिष तौन महत दोषको लहतहैं ॥ दोहा ॥ बेद उक्तब्रतको गहे जेजन प्रज्ञअनूप । खाये

आमिष तौनहूं गिरतस्वर्ग ते भूप ॥ परपीड़ा करयज्ञ जो याते निन्दिततात । तनपीड़ाकर जौनहै सोऊअनिन्दित ख्यात ॥ चौपाई ॥ निवृतिधर्ममें जौन । तत्परहैं बुधिभौन ॥ तिनको यह वृत्तान्त । कहोतोहि क्षितिकान्त ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ अधकरी ॥ चान्द्रायण आदिक उपवास । तपस कहत तिनको बुधिराम ॥ केजन कहु नृपशिरमौर । यहही तप के है तपऔर ॥ भीष्मउवाच ॥ जातेदेह जायह्वैक्षीण। तिहिको तप मतिगुणी प्रवीण॥मोक्षारथ साधनहै जौन । सकत न होय निबलसो तौन॥ रामगीता ॥ नृप त्याग अरुजो नम्रता है तौनही तपधर्म।वरकरत जो यहितपहि सोई सुमतिमान सुधर्म ॥ है लहत सोईमोक्ष मार्गहि त्रासमों ह्वैदूरि । यह गुणतहै जनलोकमाहीं मनीषाके भूरि ॥

इतिमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ लोकमाहिं जे कर्म्म ते आपुहि सों होतहैं । कै हैकर्ता धर्म्म इनको पुरुष सुजानवर ॥ भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ इहि प्रसंग में कहतहौं यक इतिहास अनूप । सुरपति अरु प्रहलाद को प्रश्नोत्तर है भूप ॥ परमभक्त प्रहलाद जो परमेश्वर को प्रज्ञ । इन्द्र ताहि पूछत भयो यह सुप्रश्न धर्मज्ञ ॥ समदरशी प्रहलाद की बुद्धिजानिबे काज । नम्र होयकै जायतट पाणिजोरि नरराज ॥ चरणाकुलक ॥ थोरेहि गुणसों जनजगमाहीं । होयप्रतिष्ठित रहत सदाहीं ॥ सबगुणहैं थिर तुममेंनीके । हैंजेतेवर माहिं महीके ॥ पैशिशुलौं तुमरहत सदा हौ । मानादिकहि विचारतनाहौ ॥ औ तुमहौ वर आतमज्ञानी । यातेपूछत सुखदसुठानी ॥ साधनता तुमकहा बिचारी । अथज्ञान के आनँदकारी ॥ परीफांसितव ग्रीवामाहीं । छुटेगेहत तवश्रिय नाहीं ॥ तबहूं शोचकरत नाहिं मनमें । निशि बासर बिच एको क्षनमें ॥ कौनहेतु याकोहै कहिये । मोसंशय ताकोतुम दहिये ॥ धीरजताको धरिकै भारी । कैमतिलाभ भये सुखकारी ॥ यहसु-

निके सुरपतिकी बानी । बोलतभो प्रह्लादसुज्ञानी ॥ प्रह्लादउवाच ॥
माया परमप्रवृतिको कारण । कहत तुम्हैं हौंकरि निर्धारण ॥
आत्महि भिन्न प्रकृतिते जानै । जेजन तेसुखदुख नहिं आनै ॥
आत्माहैबर नित्यानन्दी । कबहूंहोत नहींहै द्वन्दी ॥ जानतहै नाहिं
यहिवृत्तान्तहि । गुणत आत्मामाहिं नितान्तहि ॥ धर्मप्रकृतिको
सुरपति जोजन । प्राप्तहोत अभिमानहि सोजन ॥ कहौआपुजो
जड़हैमाया । चलत न बिनआत्माकीछाया ॥ प्रवृतिहोतिहै किमि
तोसुनिये । कहत तुम्हैंहौं सुरपति गुनिये ॥ मौनी ॥ होतजौनहै
तौनकहावत भाव । होततौन आपुहिसों सुनुसुरराव ॥ काहूके
कीन्हेंसों तेनहिं होत । जानतते जन जिनके मतिकोद्योत ॥ दु-
ग्धहोत आपुहिसों गोस्तन बीच । जैसेयत्न बिनाही सुरपनिभी-
च ॥ दोहा ॥ अपनेहि होति सुभावसों माया प्रवृतिहमेश । आत्मा
केपुरुषार्थसों होतिनहींस्वर्गेश ॥ मायाके परभावसों होतआपुही
सर्व । करतनभोगत आतमा नित्यानन्द अखर्ब ॥ सोरठा ॥ आत्म
को करतार भलेबुरेको गुणतजो । ताकीबुद्धि अपार दोषवतीमैं
गुणतहौं ॥ दोहा ॥ आत्माको कर्त्तागुणै है बिरोध सुरराज । सोमैं
तुमसों कहतहौं तनिकै बुद्धिदराज ॥ आत्माकर्त्ता होयजो तौता-
के सबकाज । सिद्धिभये चहिये बिघन रहित सुनो सुरराज ॥
प्रापतहोत अनिष्टहै किये इष्टब्यापार । आत्माको पुरुषार्थसो है
तहँकहा सुढार ॥ आभार ॥ यातेनहिं कर्तार । आत्माबुद्धि अगार ॥
आपुहिसों सबहोत । अज्ञन संशयद्योत ॥ दोहा ॥ जो आपुहि
सोंहोतहै सुखदुःखादिक सर्व । तौकारण अभिमानकोहै कासुनो
अखर्ब ॥ आपुहिसों सबहोतहै यह मेरे सिद्धांत । आत्मज्ञानहु
औ तिमिहि मोक्षहुसुखद नितांत ॥ सोरठा ॥ भलेबुरे जेकर्म सुख
दुखादिके हेतुते । जोयहकहौ सशर्म तौनिषेधइनकोसुनो ॥ दोहा ॥
सुखदुःखादिहि देतहै कर्म प्रकाशि सुरेश । होत प्रवृत तौ आ-
पुही जानोनिजहि बिशेश ॥ काहू काहुहि देतनहिं सुखदुःखादिक

सर्व । आपुहिसों सबहोतहै यहसिद्धांत अखर्ब ॥ आपुहि कर्तागुणतजो तौनकरत अभिमान । आपुहिकर्ता गुणतननहिं सोनकरत पवि मान ॥ नष्टताहि मैंसबकी जानतहौं सुरराय । यातेशोचन करतहौंदुःख समय कोपाय ॥ सोरठा ॥ अंतवानहै जौन तासुशोच क्योंकीजिये । हियबर मतिको भौन तामें यहगुणतैरहौ ॥ ममता औ अहँकार औआशा मोमेंनहीं । औ जो बन्ध अपार तिन सबहिनसों मुक्तहौं ॥ दोहा ॥ जाते भूतनको प्रभव अरुलय जा केमाहिं । ऐसो जोपरब्रह्महै ताकोगुणत सदाहिं ॥ काहूमेंद्वेषनकरत औकाहूमें प्रीति । शत्रुमित्रनहिं गणतहौं काहूहियहनरीति ॥ स्वर्गादिक की कामना मैं राखतहौं नाहिं । तत्पर आत्मज्ञानमें मैंहौं रहतसदाहिं ॥ शक्रउवाच ॥ सोरठा ॥ जिहिउपायसों होयशांति प्राप्तिअरुबुद्धितव । कृपादृष्टिसों जोय कहो मोहिं प्रह्लाद तुम ॥ प्रह्लादउवाच ॥ दोहा ॥ सेवाकिये बड़ेनकी गहिकैकोमलभाव । अप्रमादताको धरे मनमें बरसुरराव ॥ औजीते इन्द्रिय सकल औमाति किये अमन्द । ज्ञानपायके लहतहै मानवमोक्ष अद्वन्द ॥ तोमर ॥ सुरराज येसुनि बैन । भरिहर्षसों हियऐन ॥ अतिभो सराहततताहि । हियमाहिंसो अवगाहि ॥ दोहा ॥ पूजिइन्द्र प्रह्लादको आज्ञा लेयसशर्म । जातभयो निजधामको भूपतिसुनहु सुकर्म ॥

इतिमहाभारतेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेइंद्रप्रह्लादसंवादेअष्टचत्वारिंशोऽध्यायः

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ निग्रह सबइन्द्रियनको त्याग गर्वको आपु । कह्यो पूर्वअवगाहिकै मोकोबुद्धि कलापु ॥ चञ्चलवय अतिसम्पदातासु प्राप्तिअरुनाश । तामें कबहूं होयनहिं हर्षदुःखपरकाश ॥ जिहिमतिसों सो मतिकहो औजिहिमतिको पाय । लहिविपदा धरिधीर्य्यको महिमेंरहै नृराय ॥ भीष्मउवाच ॥ कहत एकइतिहास हौं यहिप्रसंगमें भूप । तामेंहै सम्वादबलि अरु वासवकोभूप ॥ रामगीती ॥ सुरराज हनिसबअसुर गणको पि ामह पैजाय । इमि भयोपूंछतकहांहै बलिदेहु मोहिंबताय ॥ नहिंघटतहै कबहूं न

जाके हस्तसों धनदेत । सो गयोकित बलिकहौ हमको कृपाम-
हत निकेत ॥ हौबनो आपुहि बायु आपुहि बरुण आपुहिभान ।
शितभानु आपुहि अग्निआपुहि आपुजल बलवान ॥ तजि
आलसै सोहुतो बर्षत समयलहिकै नीर । लखिपरतहैनहिंगयो
बलिकित महत अति बलबीर ॥ ब्रह्मोवाच ॥ यहि समयमाहीं
सोधबलिको उचित तुमकोनाहिं । हमदेत बलिहि बतायमिथ्या
कहेंकिमितवपाहिं ॥ हयवृषभ उष्टर खरनमाहीं श्रेष्ठदेखोजाहि ।
तुमजानियो बलिताहि तुमको कहत हमअवगाहि ॥ शक्रउवाच ॥
बलिमिलैजो कहुँशून्यथलमें बधौंकीनहिंताहि । तुमकहौ श्रीलो-
केश हमसौं सुमतिको अवगाहि ॥ ब्रह्मोवाच ॥ बलि योग्यबधकेहै
नहीं बधियो न यातेआप । जो मिलैतासों पूछियो तौ परैनीति
कलाप ॥ येबैनसुनि लोकेशके अमरेशगजहिमँगाय । चढ़िचलो
ढूँढ़न बलिहि भूमें बलीबज्र उठाय ॥ खररूपको धरिखरोहैबलि
शून्य थलके माहिं । अतिश्रेष्ठ लखिबलि जानिताको जातभो
तिहि पाहिं ॥ शक्रउवाच ॥ खरयोनि जोअति अधम ताको प्राप्ततू
बलिहोय । हियमाहिं शोचहि करतहै कीनाहिं मोतन जोय ॥
बश शत्रुके हौपरे कबहुँन परो अबतू आय । गोरहित ह्वै कै
सबहि तुमसों गयोबीर्य्य नशाय ॥ बहुदैत्य तवसँग रहतहैंअरु
बहुत बाहन पर्म । सबलोकमाहीं भरेहौ तू निजप्रताप सशर्म ॥
तवरहत आज्ञामाहिं हेसब दैत्य जोरेपानि । तवराज्य माहींबिना
जोते भूमिमाहिं महानि ॥ बहुहोतहै बर अन्न ऐसे भाग्यवान
अनूप । तूहुतो अब यहयोनि गर्दभ कीलही दुखरूप ॥ गुणि
ताहितू हियमाहिं शोचहि करतहौ कीनाहिं । जब देतहौज्ञातीन
को धन महत सागर पाहिं ॥ तब हुतो तेरोमनस कैसो कहोहम
कोतत्र । अरुकहो अब खरयोनि पाये हैसुकैसो अत्र ॥ देवां-
गना बहुनाचतीही निकट तव बहुबर्ष । बररत्न भूषित हुतोतोपर
छत्र अतिउत्कर्ष ॥ तव अग्र गावत रहेहे षटसहसबर गंधर्ब ।

तव दापते होहोत जयजय ध्यानपरम अखर्ब ॥ मखमाहिं तेरे गड़ेहो अतिनिर्मल कंचन जूप । दशसहस्र मखमें दईही वर गऊपरमअनूप ॥ बरनापमें छत्तीस अंगुल दंडखड्गाकार । है नामसम्या तासुसो बलिमहीमाहिं उदार ॥ जहँगिरै अतिबल- वानके फेंके सुबलसों पर्म । थलहोत तहँलौं यज्ञको है कहत अज्ञ सुकर्म ॥ सबभूमिमें तुम यज्ञकेथल कियेहे जन स्वक्ष । फिकवाय सम्या बलीजनसों भलीविधिसों दक्ष ॥ तबहुनोंकैसो मनस तव बलि दैत्यपति बलवान । अबकहौ कैसो अत्रहै मन भये खर मतिमान ॥ नहिंछत्र चामर परत लखि अरु दईविधि कीमाल । अरु हेमभाजन कहांहै तव मणिन जटित बिशाल ॥ बलिरुवाच ॥ हैगुप्तममछत्रादि तिनको तूसुपूछत मोहिं । जबसुखद ऐहै समय मम तबपरैंगे लखितोहिं ॥ यहिसमयमें यहि भांति पूछब उचिततोको नाहिं । गजराजपै चढ़ि आयकै खररूप मैं तिहि पाहिं ॥ नहिंदुःख माहीं करत शोचहि ऋद्धिमें नहिंहर्ष । जेरहतहैं जन निरत निशिदिन ज्ञानमें उत्कर्ष ॥ दोहा ॥ सोऐसो जब होयगो तूहे सुनु सुरराज । कहि साकिहै इमि नहिंवचनतस करि गर्वदराज ॥

इतिशांतिपर्वणिमोक्षधर्मबलिवासवसंबादेएकोनपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ४९

भीष्मउवाच ॥ चरणाकुलक ॥ फेरि प्रश्न पूछतभयो बलिसों यह सुरराज । कीबेबाग बिलासबर तनिकै बुद्धिदराज ॥ शक्रउवाच ॥ तोमर ॥ तवसंगमें बहु अश्व । जवमाहिं जेप्रषदश्व ॥ सम हे सु चढ़त अनूप । बलवान बीर स्वरूप ॥ हमकोन तूमनबीच । गुणतो हुतो सुनिभीच ॥ सबलोकमाहिं प्रताप । भरिदेतहौ सु अमाप ॥ अबतू दशा यह पाय । दुखदा महाबरराय ॥ जियमाहिं शोचमहान । अतिकरत कीन सुजान ॥ बलिरुवाच ॥ हम अन्त तव गुण सर्व । नहिंकरत शोच अखर्ब ॥ मतिमान हैंजनजौन । नहिं करत क्लेशहितौन ॥ दोहा ॥ जानत जेन अनित्यता जग-

वारी सुरपाल । मूरखतासों लहतहैं तेजनक्लेशबिशाल ॥मधुभार॥ जन सुमति पाय । किल्विष नशाय ॥ लहि सत्वपर्म । हैं लहत शर्म ॥ गुण सत्वनाहिं । जिनजनन माहिं ॥ तेजन्म लेत । फिरि फिरि अचेत॥हमकामनान । कौनहुं सुजान ॥ हिय माहिंकर्त । सुख सहित चर्त ॥ अरु रागद्वेश । करतन सुरेश ॥ हमअनृत पाहिं । तव कहतनाहिं ॥ दोहा ॥ मारत मरो मरेहिहै मारत जो अरुमर्त । जानत आपुहिमरे हम यह सत्वत उच्चर्त ॥ मारि जीतिकै अरिनको जौन करतहै गर्ब्ब । सो कर्ता नहिं औरही कर्ता जानु अखर्ब्ब ॥ प्रभव नाशजो जगतको मन कर्ताहै तास । मनको कर्ता औरही है कोऊ बुधिरास ॥ पंचभूतमय सर्व हैं हैं नहिं नेको भेद । यह गुणिकै नहिं कीजिये जियके माहीं खेद ॥ काल सबहिको करतहै अपने बशके माहिं । जानत यह वृत्तान्तजे करत शोचते नाहिं ॥ कालसिन्धु यह जौनहै ताको वारन पार । औ द्वीपहु तामें नहीं बासव प्रबल उदार ॥ महतहि करत बिचार है पैपावतनाहिं अन्त । काल समुद्र बिशालको सुनिये बर सुरकन्त ॥तरणाकुलक॥ काल ग्रसै भूतनकोनाहीं । मम देखत जोतो मनमाहीं ॥ करौं शोच मैं सुरपति भारी । कह्यो बुद्धिसों सुगुणि सुढारी॥ शूनो गृहमें गर्द्दभ ह्वैकै । मैंहौं खरो स्वतनुको ग्वैकै ॥ तहां आयतू निन्दा मेरी । धरि गरूरता करत घनेरी ॥ जो अपने मनमें मैंआनों । रूपअनेकन बिधिकेतानों॥ जिन्हैं बिलोकि इन्द्रतू आनै । साध्वसमनके माहिं महानै ॥ तूतो अनृत पराक्रम गावै । कालस्वभाव नमनमें लावै॥ करत करावतहै सबकाले । और नहीं सिद्धान्त बिशाले ॥ बासवमें जब क्रोध कियोहो । कांप्यो सबको तब सुहियोहो ॥ यातेजानत याहिवृत्तांतहि । सबल देखि सबडरत नितांतहि ॥ इन्द्रतुहूंकरु इहि सुबिचारै । मनमें ल्याउ न गर्ब्ब अपारै ॥ है आधीन आपने नाहीं । करिबोभूति प्रकाश सदाहीं ॥ वय कुमारमेंहीं मतिजैसी ।

अबहूं हैबासव तवतैसी॥ ज्ञानवती जो बुद्धि महानी। अबलों मनमें ताहि न आनी॥ दोहा ॥ सुर नर राक्षस उरग अरु पितर तिमिहिं गन्धर्व। जानतहैतू हे सबै ममवशमाहिं अखर्व॥ देखि सकतहैं जे नहीं मम ऐश्वर्य्य महान। जिहिदिशिमें मैं रहतहौं तिहि दिशिको बलवान॥ करतेहुते प्रणाम सब ऐहोहो मैं बीर। तिहिको गुणिकै शोचमें करतन हौं रणधीर॥ होयप्रतापी परम जो दर्शनीयकुलवान। होयजीविकातासुजो दुखमों परममहान॥ ऐसोही भवितव्य है याको यह मनमाहिं। गुणिकै ताको देखिकै बासव औरै नाहिं॥ होयनीच कुलवान अरु मूढ़ कुरूप महान। रहै महत सुख सहित जो भृत्यन सहित सुजान॥ ताहि निरखिकै यह गुणै अपने मनके बीच। ऐसोही भवितव्यहै याको इन्द्र निभीच॥ मैं भो गर्द्दभ तू चढ़ो मैगल ऊपर भव्य। ताते हे मति जानुतू जो मम तव करतव्य॥ यहि दशाहि लहि समयको प्राप्त होतहैं सर्व। यातेतू सुरराज मति करु अभिमान अखर्व॥ सदा दरिद्री रहत नहिं औ न सदा धनवान। समय पाय सब होतहैं निजुहि जानु परिमान॥ सामर्ग ती॥ लहि बज्र करसें चढ़ो गजपर मढ़ो सजसों भूरि। मनजौन आवत कहत सोई महत मुदसों पूरि॥हमसुनत हैं ते वचन तेर समय के परभाव। नहिं मुष्टिका सों मारि तोको करत नत सुरराव॥ नहिं समय विक्रम करनको यहि हेतुते मैं शान्ति। धरि खरो गर्द्दभ होयकै हौं गोय अपनी कान्ति॥सुर असुर सों मैं पूज्य हौं बरबल प्रतापी दक्ष। अति धाक मेरी रही धावति चहूँओर प्रतक्ष॥ जो प्राप्त मोको भयोहै यह महत कुत्सित काल। तौ गुणत हौं किहिको न ह्वैहैप्राप्त यह सुरपाल॥ तुम बारहों आदित्यजे हौं बली बर्चस धाम। तिन सबनको मैं हुतो एकहि धरे तेजस माम॥ हौं मैंहिं कर्षत मैंहिं बर्षत जलहि हे जलदेश। अरु मैंहिं करत प्रकाशहौं तिहुँलोक माहिंअशेश॥ हौं लेत मैंहीं देतमैंहीं

हुतोबलसों भूरि ।अरु लोककीहौं करतरक्षामैंहिं दुखकरिदूरि ॥ अरु मैंहिं हौं त्रयलोक को पितु मो समान न और । मैं गुणत काहूको नहींहौं सुनोसुर शिरमौर॥मैंहुतोऐसो गयोसोयहिसमय में मम सर्ब।कछु परत देखि न मोहिं लहि यह दुखद काल अख-र्ब ॥ है तू न कर्त्ता औ न मैं हौं समय लहि सुरपाल। जन दशा सुखदा दुःखदा को प्राप्त होत बिशाल॥दोहा ॥ निशि बासर अरु मास ऋतुबर्ष जासुहैं अंग । अरु माया आधार है ताको सुनु बर स्वंग ॥ ऐसो जोहै काल सो दौरत जोहैं तास। पीछे दौरत औ खरो रहत खरो तिहि पास ॥मुहूर्तादिक नाम सब कालहि के हैं दक्ष। ताहीके बशमाहिं यह जो लखि परत प्रतक्ष ॥सोरठा ॥ पूर्बकाल के माहिं होय गये बहु सहस हैं । जानो मिथ्या नाहिं तोसम इन्द्र महाबली ॥ दोहा ॥ अन्तकाल जब आयहै तेरो है सुरपाल । तब तूहू रहिहै नहीं गुनु सिद्धान्तबिशाल ॥ आभीर ॥ ग्रासि लेतहै काल । सबको सुनु सुरपाल ॥ यातेतू अभिमान । हीमें करु न महान॥ दोहा ॥ राजश्रीको प्राप्तहै तूजानतमनमाहिं । रहिहै इमिहीं सर्बदा सो यह रहिहै नाहिं ॥ तजि सहसन सुर पतिनको आई मेरे पास।राजश्री सुरराज यह कीन्हे परम प्रका-स ॥ मोहूं को अब छोड़िकै गई तिहारे पाहिं। राजश्री यह चं-चला ऐसी गुणु मनमाहिं॥ सोरठा ॥ मति कहु बचन सगर्ब तोहू को यह छोड़िकै । राजश्रीय अखर्ब जैहै कौनहु कालमें ॥

महाभारतेशान्तिपर्बणिमोक्षधर्मेबलिबासवसंबादेपंचाशत्तमोऽध्यायः ५० ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ श्रीकरिकै जो दर्पभो तासुशमनकेकाज । कहत एक इतिहास हौं तुमसों हम नरराज ॥ लक्ष्मीको अरु इन्द्रको तामें है सम्बाद । सुनहु तौन भूपाल बर तजिकै सर्ब प्रमाद ॥ निकसति बलिकी देहते लक्ष्मी भई सुभूप। तेजमयी अति चञ्चला परमा भरा अनूप॥ संयुता ॥ सुरराज ताकहँ देखि कै ।हिय माहिं बिस्मय लेखिकै॥ बलिको सुपूछत भोबली । यहि

भांतिसों मतिसोंक्षली॥ शक्रउवाच ॥ दोहा॥तव तनुते यह जो कढ़ी मढ़ी प्रभासों स्वच्छ। कहौ कौनहै मोहिं तुम बलि सुदैत्यपति दक्ष॥ तोमर ॥ बलिरुवाच ॥ हमयाहि जानत हैं न। मम सत्यमानहु बैन॥ तुम इन्द्र पूंछहु याहि। मनहोय तोन्हिंनाहि॥ शक्रउवाच ॥ उकवा॥ बलिके तनते आम। कढ़ी भामईमाम ॥ मोदिशिआवति नारि। कहुतू कौन सुढारि॥ अरिल ॥ श्रीरुवाच ॥ जाननहीं नहिं मोहिं बिरोचन। औनाहिं जानत बलि वैरोचन॥ हैयकनाम दुः सहा समबर। दूजो नाम बिधत्सा पविधर॥ दोहा ॥ तीजो लक्ष्मी नामहै हैं ऐसेबहुऔर। जानत मोको सुरहुनहिं औतुहु सुर शिर-मौर॥ शक्रउवाच ॥ बलिहि तजनको हेतुहै कहा रमा कहुमोहि। आवनको ममपासकी बलिऊपरतूकोहि॥श्रीरुउबाच॥ आयोकाल अनिष्टहै बलिको यातेयाहि। छोड़तिहौं सुरपालसुन और कछु नअवगाहि॥ शक्रउबाच ॥ बलिको तू जिहिबिधि तज्यो तजियो तिमि मतमोहि। जिहि उपायसों नहिं तजै सोकहु पूछततोहिं॥ रामगीती॥ श्रीरुबाच ॥ बरसत्यमें अरु दानमें अरु तपस्यामें पर्म। ब्रत औ पराक्रम धर्म में हौं रहित शक्र सशर्म॥ हौपूर्व ब्राह्म-णभक्त अरु बर सत्यबादी स्वक्ष। बहु यज्ञ करिकै करत पूजा हुतोमेरी दक्ष॥ अबब्राह्मणनकी करत निन्दा धारिकै बहुगर्ब। यह परमदुःखसुलोकजनको लग्योदेन अखर्ब॥ यहिहेतुततजि बलिहि आई पास तव अमरेश। मैंरहौंगी जोराखिहै तजिकै प्रमाद हमेश॥ शक्रउवाच ॥ नहिंकोऊ ऐसो लक्ष्मी सुनुसर्वभूतन माहिं। जो एकराखै तोहिं मैंहौं कहत साति तवपाहिं॥ श्रीरुवाच ॥ सुनुकहतहैं तूसत्यहै सुरपाल बिज्ञविशाल। नहिंसकत कोऊ राखिमोको एककौनेहु काल॥ शक्रउवाच ॥ तूरहै जिहि विधिपास मेरे मोहिंकहु बिधितौन। मैंकरौं जातेमोहिं तजितू करै अनत नगौन॥ श्रीरुबाच ॥ दोहा ॥ मोको राखै सुरपजो करिकै चारिवि-भाग। तौतव पासरहौं सदा जाउं कहुंन बड़भाग॥ शक्रउवाच ॥

तव बिभागमैं शक्तिभरि करिहौं देबिसुढारि । तासु उलंघनकीजियो मैंजोकहौं बिचारि ॥ महति चराचर धारिणी भूमि एक तव पाद । धारण करिहैं कहतहौं मैंनिजछोंड़ि प्रमाद ॥ श्रीरुवाच॥ राख्यो भूमें पावँमें एक दुतियको ठौर । गुणिकै तूकहु मोहिं अब सुनु बरसुरशिर मौर ॥ शक्रउवाच ॥ दुतिय पावँ तब धारिहैं जलयाते जलमाहिं । धारण करुहे लक्ष्मी करु बिचार तूनाहिं ॥ श्रीरुवाच ॥ दुतिय पावँजल बीच में राख्यो हेसुरराव । और ठौर कहु मोहिं जहँ राखौं तीजोपावँ ॥ शक्रउवाच॥ देव यज्ञअरुवेद ये रहत अग्निकेबीच । यातेचौथो पाव तव धारणं करी निभीच ॥ श्रीलक्ष्मीरुवाच ॥ अग्निमाहिं पद तीसरो राख्यों मैं सुरपाल । अब तुम चौथे पदहि मम ठौर बतावहुहाल ॥ शक्रउवाच ॥ बिप्र जितेन्द्रिय प्रज्ञ बर सत्यमानहैं जौन । लक्ष्मी चौथो पावँ तव धारणकरिहैं तौन ॥ श्रीलक्ष्मीरुवाच ॥ राख्यो चौथोपावँ मैं बिप्रन माहींपर्म । जानहुचारिहुठौरमम चारिहुपावँ सशर्म ॥ बित्ततीर्थ अरु यज्ञ अरु बिद्या येमम पाव । चारि चारिहू ठौर में राखेहैं सुर राव ॥ शक्रउवाच ॥ तेरे चारिहु पावँकोजो जन हनिहैताहि । हनिहौं मैं सुनु लक्षमी परम अघीअवगाहि ॥ भीष्मउवाच ॥ दैत्यनकोराजातदनु बोलतभो अचलेश । सुरपतिसों यहिभांतिसों धीरजमान बिशेश ॥ बलिरुवाच ॥ बैवस्वतमनुके सुनो अन्तमाहिं सुरपाल । ह्वैहै जब सावर्णिमनु तब फिरि युद्ध कराल ॥ सुर असुरनको होयगो जीतैं गे हम तोहि । भानु स्थिति मध्याह्न में ह्वैहै जबयत जोहि ॥ शक्रउवाच ॥ चरणाकुलक ॥ मोहिं बिरञ्चि मन करिदीन्हो। तातेमैं तवबध नहिंकीन्हो ॥ नातो तोहिंबज्रसों हन तो । प्रबल प्रताप आपनो तनतो ॥ दोहा ॥ छोंड़िदयो मैं तोहिं बलि शीघ्र यहांते गच्छ । भानु स्थिति मध्याह्न में ह्वैहै कबौं नस्वच्छ ॥ आज्ञाते लोकेशकी फिरत रहतहैं भानु । लोकनमाहिं प्रकाश बर करत महाबलवान ॥ उत्तरऔ दक्षिण

अयन सूर्यके हैं दोय । तिन में तत्पर रहतहैं दैत्यराज बलि जोय ॥ भीष्मउवाच ॥ बलिदक्षिण दिशिजातभो वासव के सुनि बैन । बोलो कछुनाहिं बासवहु उत्तर गोबुधिऐन ॥ बलिको तजि कैलक्ष्मीगईइन्द्रके पास । यातेलहिलक्ष्मीनहींकीजैगर्वप्रकाश॥
महाभारतेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेइन्द्रस्यश्रीप्राप्तिर्नामैकपंचाशत्तमोध्यायः ॥
भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ गर्वनकीजै लक्ष्मीको लहिकै भूपाल । कह्योपूर्ब अवगाहिमैं अबबर बिज्ञ बिशाल ॥ मैंहौं कहत अशोच में यकइतिहास अनूप । तामाहीं सम्बादहै सुरप नमुचिकोभूप ॥ सोरठा ॥ लक्ष्मी सोंकै हीन नमुचि दनुजबैठो हुतो । तासों बली प्रबीन पूछत भोसुर राज इमि ॥ भये रमासों हीन आच्युत भये सथानते । शोच करतहैं कौन नमुचि दनुज हमकोकहो ॥ नमुचिरुवाच ॥ अरिल ॥ शोक आयकै होत प्राप्त जब । शत्रुमहत अति लहत हर्षतब ॥ केहूंतास होतनाहिं वारण । लहे सहायहु आनँद कारण ॥ दोहा ॥ ताते शोचन करतहौं सुनहु प्रबल सुरराज । अंतवान मैं गुणतहौं यहसब जगतसमाज ॥ नशाति रमा संतापते तिमिहिं नशत है रूप । बयहु नशाति संतापते औ बर धर्म अनूप ॥ याते आपतकालमें कीजे नाहिं संताप । यहो जायगो नष्टह्वै गुणि यहशक्र सदाप ॥ अरिल ॥ जब जन हर्ष माहिं मनराखत । सिद्धि होत तबजो अभिलाषत ॥ शक्र अत्रमति संशय अनाहु । है सिद्धान्त शास्त्रको मानहु ॥ आज्ञा करत जौन परमेश्वर । हमहैं करत सोय स्वर्गेश्वर ॥ परमेश्वरहीआज्ञा कारक । हैयह बर सिद्धांत बिचारक ॥ शुभ औ अशुभहि जानत हैंजन । पैनहिं करत लायशुभमें मन ॥ करत रहत है निशिदिन पापहि । गुणततासुनाहिं भयके थापहि ॥ याते गुणिये सुनोशचीपति । महतिमनीषा सूक्षमसों अति ॥ जन पावत जैसो प्रभुशासन । सोइ करत यह निज संभाषन ॥ रहत तहांहीं जहँप्रभु राखत । रहत नतहां जहां अभिलाषत ॥ करतहिये में यह गुणि

शोचन। साति जानो सुखदुःख बिमोचन ॥ दोहा ॥ जोजो मम भवितव्यहै सोसो प्रापत आय । भयेगुणत यहजौन नहिं शोच करत सुरराय ॥ आवतजे सुखदुःखहैं समयपाय सुरराय। तिन कोसबसंसारमें सकत नकोइछुड़ाय ॥ जयकरी ॥ नरअरुअमरादिक सुरपाल । कोन लहतहै आपतकाल ॥ यहगुणि सदसत बिदहैं जौन । होत भीति कोप्राप्तनतौन ॥ करत बिज्ञ जनहैं नहिं कोह । औनकरत काहूमें द्रोह ॥ कबहूं शोच न कबहूंहर्ष । करत नहीं सुरपति उत्कर्ष ॥ धर्मतत्वको करि सु बिचार । करत जौनजनबुद्धि अगार ॥ धर्मधुरन्धर सोइ सुरेश । धर्म प्रवक्ता कहत हमेश ॥ हूवेप्राप्तयोग्य नहिंजौन । प्राप्तहोत नहिं कबहूं तौन ॥ यहगुणिके ज्ञानीजनजौन । भयकोप्राप्त होतनहिंतौन ॥ नरेश ॥ बर मानुष जेमतिमानहैं । गुणिकामहि दुखदमहानहैं ॥ तनुतेनिकारि तेदेतहैं। नितिरहतअनन्दसमेतहैं ॥ दोहा ॥ जैसीजैसीहोतिहै प्राप्त अवस्थाआय । तैसीतैसीछोड़िभय भोगतहैंसुरराय ॥ सोहा ॥ धर्मतत्वअवगाहिकै । प्राप्तहोतजोचाहिकै ॥ धर्मधुरंधरसोइहै । और नजानो कोइहै ॥ प्रज्ञनके जेकर्महैं । तिनके जेफलपर्म हैं ॥ ते नहि जाने जातहैं । कहत सुबुध अवदात हैं ॥ गृह आश्रम सों होयकै । च्युतगौतम दुख जोयकै ॥ नहीं मोहको ज्यों लह्यो । तिमिहिं मैंननिजहैकह्यो ॥ चरणादोहा ॥ सुखदुखजितेप्राप्तहोनेको तितेहोतहैं आय । तेटारेतेटरत कबहु नहिं जानो निज सुरराय ॥ हंसा दोहा ॥ यह बिचारिकै मोहको प्राप्तहोत नहिं जौन । रहत सर्बदा सुरप सुनु महत कुशल सों तौन ॥

महाभारतेशान्तिपर्बणिमोक्षधर्म्मेशक्रनमुचिसंबादेद्विपंचाशत्तमोऽध्यायः॥

युधिष्ठिर उवाच ॥ दोहा ॥ आवैकालअनिष्टतब कीजैशोचहिनाहिं । कह्यो पूर्व अध्यायमें आपु हमारेपाहिं ॥ बंध्वादिकको नाशअरु भयेराजकोनाश । कष्टहोत तिहिमाहिं जेमग्न मनुजमतिराश ॥ होय श्रेयको प्राप्तिबर कहा किये ते फेरि । कहो आपु अवगाहि

अब ज्ञानचक्षुसों हेरि ॥ भीष्मउवाच ॥ बंध्वादिककोनाशऽरु भये राज्यकोनाश। जौन कष्टगतहैं तिन्हैं शरमद धीर्य्य प्रकाश ॥ मनोहर ॥ धीरज धारे सदाप्रवीण। होतशरीर नहीं है क्षीण ॥ धीरजताते होत अनन्द। रहत सदा आरोग्य नरेन्द्र ॥ रहेशरीरा योग्य नरेश। श्रियको पावै फेरिसुवेश ॥ धारतवृत्ति सात्विकी जौन। धीर्य्य ताहिपावतहै तौन ॥ अत्रएक इतिहास अनूप। तुम्हैं कहत हौं सुनिये भूप ॥ पुनिबलि वासवकोहै स्वक्ष। नामाहीं सम्बाद सुदक्ष ॥ देवासुर संग्राम महान। होयचुक्यो जब भूपसुजान ॥ चतुर्दन्त ऐरावत पर्स। तापै चढ़िकै शक्र सशर्म ॥ फिरतभयो तिहुंलोकनबीच। लीन्हेंकर मेंबज्र निभीच ॥ कबहूं सरिता पतिके पाहिं। उन्नत गिरि गह्वरके माहिं ॥ बलिको देखि भयो तटजात। बासव महावीर्य्य बिख्यात ॥ सह ऐश्वर्य्य इन्द्र कोदेखि। मनमें बिथानकी अवरेखि ॥ निर्बिकारबलिको सुरराज। देखिखरो करिकै गजराज ॥ कहत भयो सो ऐसे बैन ॥ बलि दानव पतिको मतिऐन ॥ सहऐश्वर्य्य मोहिंलखि पाहिं। बलि चिन्तान करीमनमाहिं ॥ दोहा ॥ ताको कारणहै कहा कहौमोहिं दैत्येश। अनैश्वर्य तूनें महासह ऐश्वर्य्य सुवेश ॥ तोमर ॥ तिहुं लोकको बरराज। नशिजात जासुदराज ॥ नहिंतौन त्यागत प्रान। बलिदैत्य राजसुजान ॥ दोहा ॥ तूशोचहुनाहें करतहैकारण काहै तास। निर्बिकार तूहैखरो सोहैसाहित हुलास ॥ तोमर ॥ सुर राजके सुनिबैन। बलिदैत्यराज सचैन ॥ मनमाहिं गुणि करि तौन। कहतोभयो बलभौन ॥ बलिरुवाच ॥ सुनिबैन मोपविमान। बहुकर्तका अभिमान ॥ बशसैं भयो नवमाहिं। लखुहोखरोतब पाहिं ॥ नहिंतोहिं आवत लाज। अतिधारि गर्बदराज ॥ बहु अत्र बोलत बैन। गजपैचढ़ो सहचैन ॥ दोहा ॥ महत बली मैं पूर्वहों तूहै निबल सुरेश। ताहि गुणत तूहै नहीं ह्वैकै निलज अशेष ॥ रामगीती ॥ जोआपु अति बलवान ह्वैकै अरिहि बशमें

पाय। तजिदेत ताकोकहत हम पुरुषारथीसुरराय॥ द्वैलहतहैं रण माहिं तिनमें लहतहै जयएक। बरसमय ताको भाग्यकरि कै होतसो सबिबेक॥ सबभूतको जोईश सोतौ हारिही हैजात। सुनु गजारूढ़ सुरेशबरहै कहामम तवबात॥ हैहोनवारो जो अनर्थ न मिटत होसुरपाल। बिनबुद्धि बिमला जानुयह सिद्धान्त बिज्ञबिशाल॥ जबहोत जनको आय प्रापत अति अनिष्ट अनेह। तबफटी नौकाजातिज्यों जलमाहिं बूड़िअछेह॥ तिमि सुमति सोअज्ञान माहीं जातिबूड़ि सुरेश। नहिं सकति होयउपायकौनहुं कियेहु भूरिकलेश॥ जिमिनष्ट गेहवै इन्द्र पूरब बहुत तौनाहिं भांति। हम तुमहुं औजे और हवै हैं इन्द्रबहुबर कांति॥ सबजायँगे ह्वै नष्ट हेसुरश्रेष्ठगुणसिद्धान्त। ह्वै गजारूढ़ सुमूढ़लौं काकरत गर्ब नितान्त॥ हैभये ताते इन्द्र पूरब बहुत हे सुरपाल। अरु पृथ्वी में पृथु आदि राजा भये बहुत बिशाल॥ तेगये सबहीनष्टह्वै लखि परत एकहु नाहिं। तिमि तुहूं जैहै नष्टह्वै यह जानु निज मनमाहिं॥ जिहि दशाको मैं प्राप्तभो तिहिदशाको सुरराज। तबपायहै सकिहै न तू तबधारि धीर्यदराज॥ बर राज्यवार नाशमाहीं तुहूं कबहुं शोक। निज लहैगो अभिमान कातू करत है बलओक॥ उद्योग कारक बहुत मैंहौं मोहिंहूं यहकाल। अति दुखद प्रापत भयोहै हेदेखु बर सुरपाल॥ बहु क्षमा तूहू पायहै यहि समयको दुखदाय। नहिं रहैगो यहसमय जोहै प्राप्तअब सुरराय॥ मैं बधोहौयहि हेतुते बलवान आपुहिजानि। बहुबार ताको करतहैं अभिमान ताको तानि॥ जब करतहौं मैं क्रोधको तब सामुहे ममआय। नहिं खरो कोऊ होतहै बलवान ओज बढ़ाय॥ दोहा॥ आपने यशके कहतये मोहिं होतिहै लाज। पै कहवावै तूखरो सोहेमम सुरराज॥ चरणाकुलक॥ युद्ध बीच पुरुषारथमेरो। तेरोलख्यो पूर्व बहुतेरो॥ मैंआदित्य द्वादशो जीते। हेबलसोंदीन्हें करिरीते॥

तिमिहिं साध्यगण मारुत बलमें । जीतिकिये हे पूर्व विकलमें ॥ औआठहु बसु जीतेमैंहे । गुणतनहीं ये शचीपति तेंहे ॥ तूजानत पुरुषारथ जैसो । हैमेरा स्वर्गाधिप तैसो ॥ शिखरतोरिकै भारेभारे । तोऊपरमें हैं बहुडारे ॥ ऐसोहौं मैं अबकछु नाहीं । करिहौं सकत खरो तवपाहीं ॥ यहमेरे पुरुषारथ वारो । कालन याते धीरज धारो ॥ वात कहत स्वर्गाधिप जैसी । तूहैं कहत सहतहौं तैसी ॥ दोहा ॥ सुनिकै बलिके येबचन बज्रीक्रोधहिगोय । कहत भयो अनिमेषह्वै सोंहैं ऐसे जोय ॥ बज्रसहित ममकर उठो ऐसोमें जोताहि । त्रासमान नहिं होयको दैत्यप सोहैचाहि ॥ तूनबिथा नेकहु करत यामें अचरज भूरि । जान्योमैंतू हैं रह्यो महत धीर्य्यसों पूरि ॥ देहमाहिं औ द्रव्यमें कीजै नहिं विश्वास । दोऊये थिरहैंनहीं जानतज्ञान प्रकास ॥ कालबहानिके माहिंयह परो जगतहै सर्व । जानत मन में मैंहुहौं दैत्यप प्रज्ञ अखर्व ॥ महतहु तोबलवानतू अबयहिपायदशाहि । नेकहुग्लानिनकरत है बलिमनमें अवगाहि ॥ अरिल ॥ नष्टताहि तूजगकी जानत । याते हर्ष शोक नहिं आनत ॥ बलिबिद्वान महाहैतूवर । कालहि जानततूउन्नतकर ॥ दैत्यपशुभऔअशुभनमेंगुनि । लेतहंसलौं शुभहीको चुनि ॥ तेजीतेलोकनको तनिमति । तोसम और न ज्ञानमानअति ॥ रहतजहांलागतनाहिं तोमन । कमलपत्रमें जैसे जलकन ॥ कबहुं नहींछूटत रजऔ तम । तोकोयाते कोउन तो सम ॥ प्रीतिअप्रीति नहीं तूराखत । काहूमें नसत्यानिति भाखत ॥ दया तोहिं लखि मोको आवति । तोहिं हनन की रटनाहि भावति ॥ दोहा ॥ दुखद बरुण की पाशसों तेरो बंधो शरीर । करिहि प्रजा अपचार जब छुटि जैहै तब धीर ॥ रूपमाला ॥ सुनु भार्या सब सासुसों करवाइकै गृहकाम । अरुपितासों करवाइहैं सुतकाम गृहके आम ॥ पद धुवावैंगे शूद्रहू बरबिप्रसों सहहर्ष । अरुब्राह्मणीको राखिहैं गृहमाहिं बलिउत्कर्ष ॥ सबपुरुष कुत्सि-

त योनिमाहीं छोड़िहैं निजबीर्य । तजिबर्ण देहैंधर्म अपनो दैत्य राज सधीर्य ॥ अरु करैंगे हे सर्बभोजन कांस्य भाजनमाहिं । परस्पर संकोचको कबहौंहु करिहैं नाहिं ॥ दोहा ॥ ऐसोह्वैहै काल जब तो शरीरते सर्ब । क्रमसोंजैहैं छूटिय पास सुप्रज्ञ अखर्ब ॥ तोमर ॥ हमते न तू करुत्रास । नितिहीं रहो सहुलास ॥ हमजो बतायो तोहि । तिहिकालकोतू जोहि ॥ कहिदैत्यसों इमि बैन । सुरराज गोनिजऐन ॥ जयपायकै उत्कर्ष । लसतोभयोसहहर्ष ॥ ऋषि तासु सुस्तुति स्वक्ष । करतेभये बरदक्ष ॥ सुनि तौन श्री सुरराज । अतिलह्यो मोद दराज ॥

इतिशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेबलि बासवसंबादेत्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः ५३ ॥

युधिष्ठिरउवाच॥दोहा॥ बंध्वादिकको नाशअरु भये राज्यको नाश । धीरजधारेलहतजन आनँदकोपरकाश ॥ बलिवासवसंबाद कहि कह्योपूर्ब तुमतात । करिकैकृपा महानबर परमप्रज्ञविख्यात ॥ प्राप्त होयगो सिद्धिको जो जन पूरब तास । औ ह्वैहै जिहि पुरुषकी महत वृद्धिको नास ॥ ताको पूर्ब सुभावसो कैसोहोत सुजान । अबयह मोहिं कहोनृपति करिकैकृपामहान ॥ भीष्मउवाच ॥ वृद्धि अवृद्धिहि लहनकी चेष्टाको सुनुभूप । पूर्बहि मनकहि देत है लहिमुद अमुद अनूप ॥ कहत एक इतिहासहौं मैं यहि में तवपाहिं । है संबाद सुरेश औ श्रीको ताके माहिं ॥ चरणाकुलक ॥ फलसों परम तपस्याबारे । ज्ञानी नारद सुऋषि सुढारे ॥ फिरत तिहूं लोकनके माहीं । संशय कहूं लहत हैं नाहीं ॥ बर ध्रुवद्वार वहां गंगाको । धरिकै हियस्नान इच्छाको ॥ जाते भये मोदसों पागे । नारद सुऋषि महा बड़भागे ॥ तौ नहिं समय इन्द्रहू आयो । सुर गण सहित ओजसों छायो ॥ तहां स्नान करतभे दोऊ । औजेसंग अमरहे ओऊ ॥ करनलगेजप स्नानहि करिकै । हुओ तदनु बार्ता बिस्तरिकै ॥ इतनहिं माहिं भानु भो उदित । उठिकै स्तुति करतभे मुदित ॥ दोहा ॥ उदितभयो रविजिहि समय

तिहहि समयमें दक्ष ॥ नभमें तिनको रबिहि सम तेजपरयो लखि स्वक्ष॥ बेगगरुड़ अरु भानुको तैसोही तिहिमाहिं। नारद औ सुरराजके सो आवत मोपाहिं॥ अपनी भासों करतजो लोकन माहिं प्रकास। ताके बिचबर कमलमें लक्ष्मीभरी हुलास॥ देखि परी तिनदुहुनके शिखिकीज्वाल समान। धारण कीन्हे भूषणनि भासोंभरे महान॥ चरणाकुलक॥ श्रीलक्ष्मी अति तेजस छाई। ब्योम जानते अति सुखदाई॥ सुरपति औ नारदकेसोहैं। आई सुरपहु ह्वै बिहसोहैं॥ गयो सनारद सोहैं श्रीके। नमस्कार भो करत नजीके॥ तदनु सबिधिसों पूजा करिकै। ऐसे कहत भयो मुद धरिकै॥ शक्रउवाच॥ कोहैतू कितसों इतआई। जेंहैकहां हर्षसों छाई॥ श्रीरुवाच॥ तिहुंलोकनमें प्राणीजेते। मोको चाहतहैं सबते ते॥ बिकसितकंज भानुकेकरसों। दलको सहस भरोभाबरसों॥ लक्ष्मी आदिक नामहमारे। हैंबहु हेसुरराजसुढारे॥ बिजय होनबारी जिनबारी। रहति ध्वजामें हों तिनबारी॥ धर्मशील जनके गृहमाहीं। सुनु सुरपति हों रहति सदाहीं। औनहिं भजत कबहुं जेरनमें। रहतीहों मैं तिनके तनमें॥ औहैं जिनमें उदारताई। रहति सदाहों सुनु सुरराई॥ दोहा॥ औजेजन मतिमान हैंतिनमें रहतिसदाहिं।औजेजन हैंनम्र अति बर तिनहूंके माहिं॥ चरणाकुलक॥ धर्मसत्य हेअसुरनमाहीं। याते रहतीही तिनपाहीं॥ अबतिन धर्मसत्य सबत्यागे। अधर्म औअसत्यमेंपागे॥ यहिते मैंअब तिनको तजिकै। आईपास तिहारे ब्रजिकै॥ अबमें रहिहों बासव तोमें। निश्चय जानुकह्यो यहजोमैं॥ शक्रउवाच॥ कैसेहुते दैत्यहे आगे।अबते कैसेभये अभागे॥ तिनको तजि आई मो पाहीं। मोहिंसत्य कहुगुणि मनमाहीं॥ श्रीरुवाच॥ पूरब दैत्यधर्म हेधारे। धीर्य्यहिं छोड़तनहेसुढारे॥ दानादिकहि करतहे नीके। पूजत हे गुरु चरणहि सीके॥प्रेमभक्त हेबिप्र नवारे। राखत गृह हे स्वच्छ सवारे॥राखतहुते अक्षमा नाहीं।रहतजितेन्द्रिय हुते

सदाहीं ॥ मंत्री औ सेवककोराखत । हुतेप्रसन्न सत्यहेभाखत ॥ यथायोग्यसन्मानकरतहे । औकाहूको नहिंनिदरतहे ॥ सोवतहे संध्यामेंतेना । होतेगर्बकनिकटेंहेना ॥ स्नानादिकसुक्रियाहेंजेती । रतिसोंकरतहुते सबतेती ॥ उठिकेंप्रातहिब्रतकेमाहीं । लखतहुते निजमुखहिसदाहीं ॥ शयनकरत बासरमें हेना । औसुअर्द्ध रजनीलौं तेना ॥ रक्षाकरतहुते दीननकी । खबरिलेतहे धनहीनन की ॥ ताकतहे कबहुन परनारी । करत दयाहे भूतनवारी ॥ दोहा ॥ ऐसे गुणवारेहुते जब सबदैत्यसुबेश । तबमें तिनकेपासमें रहत हुती स्वर्गेश ॥ सृष्टिभई उत्पन्नहे जबसों तिनके माहिं । युगलों रही अनेकमें आनँद सहित सदाहिं ॥ जब लहि कुत्सित समयको तज्योधर्म तिनसर्ब । काम क्रोधके बशभये जबमें लखे अखर्ब ॥ लागे करन बड़ेनको नितिहि अनादर तौन । करनलगे परिहास अरु सभासदनके भौन ॥ रामगीती ॥ प्रत्युत्थान बड़ेन को नहिंलगे दीबेतौन । अरुपिता सों कहनलागे बचन दुर्मति भौन ॥ तजि हयाको जे योग्य कबहूं नाहिं कहिबे दक्ष । अनधर्म करिकें प्राप्तजोहे होतअर्थ प्रतक्ष ॥ तिहिमाहिं श्रद्धा करन लागे भरेदुर्मति भूरि । अरु नारि तिनकी सर्बते बेहयापनसों पूरि ॥ कटु बचन लागीं पतिनसों बहुकहन नित्यसुरेश । नहिं करन आदर लगे गुरु को धरि प्रमाद अशेश ॥ बिन दिये भिक्षा बलि सुभाजन करन लागे सर्ब्ब । अपवित्रही जिनकी रसोई सूदअज्ञ अखर्ब्ब ॥ निति करनलागे भयहि त्यागे सुनोहे अमरेश । श्वानादिको उच्छिष्ट भोजन लगेकरन हमेश ॥ अरु नारितिनकीदियेतजिसब धामवारेकाज । गृहपशुनकेते अनादर को लगीकरन दराज ॥ बिन दियेहीते शिशुहि भक्षण लगोभक्ष पदार्थ । अरुअनूपादिक चारुभक्ष बनाय करिकें स्वार्थ ॥ तेदैत्य आपुहिलगे भक्षण करन तजिबर रीति । मख बिनहि भक्षण करनलागे मासधारि अनीति ॥ अरुलगे गृहगृह माननित्याहि

कलह करन अखर्ब। सतकार नीचन करनलागे बड़ेन कोधरि
गर्ब ॥ जन अधर्मी धर्मीनकी निन्दाहि लागे कर्ण। अरु होन
संकर लगो तिनमें परम धर्महि दर्ण ॥ जन धर्मबिद्ते लगेकीबे
दासिकामें भोग। बरधर्म पत्नीमाहिं रतिसों दियोतजि संयोग ॥
धरिनारिबारे बेशको नरबेश नरको नारि। बिच सभा केते लगे
नाचन भावको बहुधारि ॥ अरुशूद्र कीबे लगे ब्राह्मण कर्मको
अवदात। राज्यमें तिनके सुताश्रित भये पितु अरु मात ॥
बरबेदबिद ते जीविकारथ कृषी ल्यायो कर्ण। गुरुकी सुआज्ञा
भंग लागे करन दुर्मति धर्ण ॥ अरु श्राद्ध माहीं मूर्ख विप्रहि
लगे भोजन दैन। तिमिही अभक्षहि लगेभक्षण महादुर्मति
ऐन ॥ इहिभांति कीबे अनाचारहि लगेदानव सर्ब्ब। तब भई
तिनको छोड़िबेकी मम सुबुद्धि अखर्ब्ब ॥ अब इन्द्र मैं तवपास
आई राखुमोहिं सशर्म्म। जो पूजिहै तू मोहिं तौ सब देवताहू
पर्म्म ॥ धृति शान्ति आशा क्षमा श्रद्धा बिजिति संतति वृत्य।
येअष्टदेवी रहतिहैं मैं रहतिहौं तहँनित्य ॥ दोहा ॥ तुमको गुणि
कै धर्ममें तत्पर सहित हुलास। आईहैं स्वर्गेशहम सर्वतुम्हारे
पास ॥ सोरठा ॥ लक्ष्मीके ये बैन सुनिकै श्री स्वर्गेश बर। सह
नारद मतिऐन अतिही हर्षित होतभो ॥ जयकरी ॥ बहनलगे
शीतल पवमान। मन्द मन्द तहँ सुरभी बान ॥ सह लक्ष्मी
सुरपति को सर्ब। आये देखन देव अखर्ब ॥ तदनु सलक्ष्मी
श्रीसुरराज। सह ऋषिनारद देव समाज ॥ भये पधारत दिव
कोभूप। भरे दीप्तिसों परम अनूप ॥ स्वर्गमाहिं जब श्रीस्वर्गेश।
पहुंचतभो तिहि समय सुबेश ॥ वृष्टि सुधाकी भई अमन्द।
बजन दुन्दुभी लगी नरेन्द ॥ दिशो सुहावनि लागीसर्ब्ब। समय
पायकै वृष्टि अखर्ब ॥ करत भयो भूमें सुरराज। बढ़तभयो बर
धर्म समाज ॥ रत्नसों भूषित अभिराम। होतिभई भूनृप बुधि
धाम ॥ दोहा ॥ लक्ष्मी सह सुरराजकी यहजोकथाअनूप। पढ़िहैं

ताकोजौनसो सम्पतिलहिहैं भूप ॥ लक्ष्मीको जो भवअभव ताको धर्म्माधर्म्म । है कारणतुमको कह्योसो हम भूप सुकर्म्म ॥
इतिशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेश्रीबासवसंबादसमाप्तश्चतुःपंचाशत्तमोध्यायः ॥
युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ किये कौन आचार अरु किहि बिद्या सों पर्म्म । औ सु पराक्रम कौनसों श्रीबर बीर सुकर्म्म ॥ परमात्मा के थानको प्राप्त होत जनदक्ष । कहौ आपु अवगाहि कै मोको प्रश्न प्रतक्ष ॥ भीष्मउवाच ॥ मोक्षधर्मके माहिंजो तत्पर रहत सदाहिं । होय जितेन्द्रिय लघ्वाहारी बैठि सुप्रज्ञन पाहिं ॥प्रकृति परे जो ब्रह्म है नित्यानन्द अनूप । ताको प्रापत होतहै सो जन श्रीबर भूप ॥ कहत एक इतिहासहौं यहि प्रसंग में दक्ष । जैगीषब्य महा सुबुध ब्रह्मज्ञानी स्वक्ष ॥ औ श्यामल देवल सुऋषि तिनको है सम्बाद । तामाहीं सो भूप तुम सुनिये छोड़ि प्रमाद ॥ देवलउवाच ॥ नमस्कार जो करतहैं तिहिते खुशी न होत । औ निन्दा जो करतहैं तापै क्रोध उदोत ॥ करतनहीं हो कबहुं तुम जैगीषब्य सुजान । कैसी तवमति है कहा ताको मूल सुठान ॥ भीष्मउवाच ॥ सुनिकै जैगीषब्य ऋषि देवलके ये बैन । कहतभये इमि महातपशील सुमतिकेऐन ॥ जैगीषब्यउवाच॥ सोरठा ॥ पुण्यकर्म है जौन तिनकी जो गति शान्ति अरु । तुम्हैं कहत हौं तौन श्यामल देवल सुऋषिसुनु ॥ दोहा ॥ हृदयग्रंथि को छोड़ि जे सुख सह फिरत हमेश । जिनके बन्धुन काहु के बंधुनतेसुबुधेश ॥ पुण्यसुकर्मा प्रज्ञबरतेई औरनकोय । सुस्तुति निन्दाको सुनेज्ञान चक्षुसों जोय ॥ होत खुशीनहिं औ करत क्रोध कबहुं मनमाहिं । सबहीको सम दृष्टिसों देखतरहत सदाहिं ॥ जे जनह्वै धर्मज्ञबर नित्य करत हैं धर्म । निन्दा सुस्तुति ते सुने लहत न क्रोध अशर्म ॥ पुण्य सुकर्मा जौन जन तिनको मारग जौन । तामें मैं नित चलतहौं करत अनत नहिं गौन ॥ निन्दा औ सुस्तुति सुने लहत न मैं रुटहर्ष । श्यामल देवल

सुऋषि वर प्रज्ञावत उत्कर्ष ॥ उक्कछा ॥ हमको पूछो जौन। कह्यो तुम्हैं हम तौन ॥ अब ज्ञानिनकी बात। कहत तुम्हैं हौं स्यात ॥ दोहा ॥ खुशीहोति ज्ञानीनके भये परम अपमान। खेद महाही चित्तमें होतभये सन्मान ॥ करतजौन अपमानहै जाको ताकोपाप। प्राप्तहोतहै आयकै तिहि जनको सहदाप ॥ जिनके परपद लहनकी इच्छारहति हमेश। तेयहव्रत धारणाकिये रहत सदा तजि क्लेश ॥

शान्तिपर्वणिमोक्षधर्म्मेजैगीषव्यासितदेवलसंवादेपंचपंचाशत्तमोऽध्यायः॥

युधिष्ठिरउवाच॥दोहा॥ युक्तसर्बवर गुणनसों प्रियलोकनकोसर्व। ऐसो कोहै लोकमें कहु बरप्रज्ञ अखर्व ॥ भीष्मउवाच॥ कहत एक इतिहासहौं यहिप्रसंगमेंभूप। उग्रसेन अरु कृष्णको है सम्वाद अनूप ॥ उग्रसेनउवाच ॥ जाकेसुनिकै नामको खुशीहोत सबलोक। बहु गुणसों सम्पन्न वर नारद प्रज्ञा ओक ॥ कहोमोहिं श्रीकृष्ण तुम तासु सर्ब वृत्तान्त। तुमज्ञाता हौसर्वके वासुदेव श्रीकान्त ॥ बासुदेवउबाच ॥ नारद केगुण सर्वते तुमको कहत प्रतक्ष। यादव पति सुनु तौन तुम उग्रसेन वरदक्ष ॥ नारदमें सुचरित्र गुणहैं बहुपैअहँकार। करतन याते लोकमें पूजित रहत उदार ॥ रामगीती ॥ चापल्य भय अरु अरति औ नहिं क्रोध नारद माहिं। अरु करत जो सो शीघ्रताके माहिं पागिसदाहिं ॥ बर शूरहै औ सत्यबादी तजे सबकामादि। बरज्ञानसोंजो गुणतहै निति तत्त्व जौन अनादि ॥ जोतपस्या औ ज्ञानसों अरु तेजसों परिपूर्ण। अरु भणत सुन्दर बचनहै कल्याण कारक तूर्ण ॥ इतिहास करिकै ग्रहण सुन्दर अर्थको जो कर्त। अरु क्षमा धारे रहत है निति नहिं कुबैन उचर्त ॥ बहु करत नीकी बारताअरु बहुत श्रुत है दक्ष। नहिं लालसा को करत कौनहु परम पण्डित स्वक्ष ॥ है अदीन अक्रीध औसुअलुब्ध औ निष्काम। है सुहरि की भक्ति जाके हृदयमें दृढ़ माम ॥ सब दोष सों अरु मोहसों

सो रहित है बिख्यात । नहिं नेक संशय हृदय माहीं जासु अति अवदात ॥ सबसंग माहिं अशक्तहै पै लगत शक्त समान । मनको लगावत है न कौनहुं कार्य माहिं सुजान ॥ सोमनहिंजानत सबहिके पैकरत निन्दा नाहिं । है कुशल अतिही सुऋषि नारद सर्ब बिद्यामाहिं ॥ अरु देत कालहि ब्यर्थ जानन जितेन्द्रियहै पर्म । निति योग माहीं रहत तत्पर अप्रमत्त सशर्म ॥ नहिं दूसरेके लाभ माहीं करत द्वेषहि तौन । अरुधरे लज्जा रहतहै निति परम प्रज्ञा मौन ॥ दोहा ॥ याते पूजित सुऋषिबर नारदहै सर्बत्र । सबहीको प्रिय लगतहै यत्रजातहै तत्र ॥

इतिशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेबासुदेवोग्रसेनसंबादोनामषट्पंचाशत्तमोऽध्यायः

जनमेजयउवाच ॥ दोहा ॥ बहुप्रकारकी जेकथा सहइतिहास अनूप । तिनकोसुनि पश्चातका पूछोश्रीबरभूप ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ अधिकारी जो मोक्षको तासुस्वरूप अमन्द । बहु इतिहासन माहिं सुनि भूपति कुन्ती नन्द ॥ लखिकै तत्त्वज्ञानके अधिकारहि निज माहिं । सुनीजौन सोई कथा पुनि भीषमके पाहिं ॥ सुनिबेकी बिस्तारित करि इच्छा हियकेबीच । पूछतभोपाण्डव नृपति अरिदल दमन निभीच ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ ध्यान कर्म अरुकाल अरु युगयुग कीजो आयु । आदि अन्तजो सर्बको अरुजोहै नरराय ॥ लोकतत्त्वसब औसुनो भूतनवारी सर्ब । आगति गति हमको कहो प्रज्ञावान अखर्ब ॥ भृगु अरु भारद्वाज को पूर्बकह्यो इतिहास । सोसुनिकै बिमला भई मेरी मति मतिरास ॥ तौनहि पुनि बिस्तारिकै कहो मोहिं बड़भाग । सुनिबेकी है लालसा मोहियसह अनुराग ॥ भीष्मउवाच ॥ कह्यो ब्याससुनि पुत्रको जो इतिहास अनूप । यह प्रसंगमैं कहतहौं तुमको सोमैं भूप ॥ सब भूतनको कौनहै कर्त्ता उत्तम पर्म । अरुजो कालज्ञान सों जानो जाय सुकर्म ॥ पढ़ि अंगन सह वेदको श्रीशुकबर बुधिधाम । ब्रह्मचर्य्यमें रहनकी आनिश कामनामाम ॥ करिकैहियमें ब्यासको

पूछत भो संदेह। महाप्रज्ञ धर्मज्ञ वर परम शीलको गेह॥
शुकउवाच॥ ब्राह्मण के जोकर्महैं कहौतौन तुममोहि। तुमसोंवक्ता
और नहिं कहूंपरत हैं जोहि॥ भीष्मउवाच॥ मुनिके शुकके बैन
ये व्यासविज्ञ अवदात। गुनिके हियमें कहत भो तिहिको इमि
विख्यात॥ व्यासउवाच॥ अव्यय अजर अनादिअज स्वच्छ
सनातन पर्म। ऐसो जोहै ब्रह्मसो सुनहु सुतात सुशर्म॥ सब
भूतनको सोयहै कर्ता आनँद रूप। ज्ञानीहू दुर्लभकहत ताको
परम अनूप॥ तुमको कालस्वरूप अब कहतसुनहु शुकख्यात।
दशअरु पञ्च निमेषको काष्ठा नामक तात॥ कला कहत हैं
तीसजो काष्ठा जिनको नाम। कला तीसऔ कलाको दशम
भाग बुधिधाम॥ तासुमुहूरत नाम है अरुमुहूर्तको तीस।
बासर होत यथा निशिहु भणत महान मुनीश॥ निशिवासर
जे तीस हैं तासु महीना नाम। अयन नाम षटमासको दोय
अयनको आम॥ बर्ष नाम इनको सुनो करत विभाग दिनेश।
मर्त्यलोक की बर्षलौं संख्या कही अशेश॥ पितरन के दिन
रातिको अबहौं कहत प्रमान। पितरनको यक मासको निशि
दिन होतसुजान॥ शुक्लपक्षको होतदिन कृष्णपक्षकी राति।
जानत तेजन शास्त्रमें जिनकी धिषणा भाति॥ देवनके दिन
रातिते एक बर्षको होत। बासर उत्तम अयनको जानोशुक
बुधिपोत॥ रजनी दक्षिण अयनको जानो अबमैं अग्र। ब्रह्माके
दिन रातिको कहत प्रमाण समग्र॥ चन्द्राउहा॥ सतयुग त्रेता
द्वापर कलियुग तिनकी जोहैआयु। पृथक्‌पृथक्मैं कहत तुम्हें
हौं सुनहु तौन मनलायु॥ सुरके चारिसहस्र बर्षनको सतयुग
होत सुजान। संध्यासोशत चारिबर्षकी औ संध्या शसुठान॥
आदिसंधिजो युगनकी ताको संध्यानाम। हैं सन्ध्यांसहअन्त
सन्धिको नाम सुनो बुधिधाम॥ तीन सहस बत्सरका त्रेता औ
संध्याशततीन। बत्सर कोहै औ संध्यांशहु होततात परवीन॥

दोयसहस बत्सरको द्वापर औ संध्याशत दोय । बत्सरकी हैं औ संध्यांशहु द्वै शतहीको होय ॥ एक सहस बत्सरको कलियुग औ संध्याशत एक । बत्सर कीहैं औ संध्यांशहु तासुहोत सबिबेक ॥ दोहा ॥ ऐसो जो यह काल है ताहि ब्रह्मविद पर्म । कहत निरन्तर ब्रह्म है गुणिकै जात सशर्म ॥ सतयुग माहीं रहत है चतुष्पादवरधर्म । सत्यहिरहत अधर्मकी प्रवृति नहोतिसुकर्म ॥ और युगनमें होतहै एकएक पदक्षीन । चौर्य्यकामअरु अनृत अरु मायाते सुप्रबीन ॥ बढ़ती होति अधर्मकी जानोनृप सिद्धान्त । सतयुगमें नहिं होतहो रुजजनको क्षिति कान्त ॥ सिद्ध होतहैं अर्थसब आयुचारिशत बर्ष । होतिजननकीही रहै बली होत उत्कर्ष ॥ और युगन में आयुमें एकएक पदक्षीन । होत सुन्यो मतिमान जन केतटभूप प्रबीन ॥ सुनिबे कोअरुपढ़नको वेदनको फलजौन । उत्तर उत्तर युगनमें न्यूनहोत बुधिभौन ॥ सोरठा ॥ पृथक पृथकहैं धर्म सतयुगादि चारौनके । सतयुगमें तपपर्म त्रेतामाहीं ज्ञानबर ॥ द्वापरमाहींयज्ञ कलियुगमाहींदान नृप । येचारिहु केप्रज्ञ कहेतुम्हैंहम धर्मबर ॥ दोहा ॥ देवनकेद्वादश सहस बर्षन माहिं अनूप । सतयुग आदिक जातहैं चारोंयुगसु नुभूप ॥ इन चारिहुकी जौनहै आवृत एकहजार । ब्रह्माको दिन एकसो जानोबुद्धि अगार ॥ येतिहि दीर्घा होतिहै रजनिहु बिधि की भूप । प्रलय होत जब शयनको ब्रह्माकरत अनूप ॥ फेरि निशाके अन्तमें जागि प्रजापति पर्म । करतसृष्टि उत्पन्न है क्रमसों भूप सुकर्म ॥

इतिशांतिपर्बणिमोक्षधर्म्मेब्यासशुकसंबादेसप्तपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५७॥

व्यासउवाच ॥ दोहा ॥ जिमिजन जलके माहिं परि बूड़त औ उतरात । जननमरण को देखिदुख तिमि जगमेंबिख्यात ॥ रुचै जनहि कैवल्य जो ज्ञानवान तो होय । लहै ज्ञानजन ब्रह्मपद पायरहै सुखभोय ॥ अबुधनको जन सबुधते भवसागरते पार ।

ज्ञानवान उपदेशसों करत निशंक उदार ॥ नष्टभयो है दोष शुक जिनको ऐसेजौन । सुमुनि छूटि दारादि सों दुखद जानि अतितौन ॥ देशादिक बारहनको गुनोजानि सुखदाय । लहिबे काजैयोगकी सिद्धि सुमनहिलगाय ॥ देशकर्म अनुराग अरु अर्थ अहार उपाय । निश्चय चक्षु सुद्वार अरु अरुसंहार अ-पाय ॥ मनदर्शन देशादि ये बारह करै बिचार । इनमेंप्रथमहि देशको सुमती पुरुषसुढार ॥ होयपवित्र अनूप अति होयजासु तट तोय । बालूजामें होयनहिं औ जिहिको शुकजोय ॥ होय खुशीमन कंकरन जामें एकहु होय । नत उन्नत नहिंहोय अरु परै कण्टकन जोय ॥ योग्य सुयोगाभ्यास के ऐसो होतसुदेश । अब मैं कहत बिचार हौं कर्मनको शुभवेश ॥ सम अहारकरिकै रहै औश्रम बहुतकरैन । सोवैजागै समय लहि आलसकवहुंधरै न ॥ राखै शिष्य सुशीलमें गुणिकै बर अनुराग । अभअभावके काजको करैअनत नहिं लाग ॥ राखै धनहिं अभावको चिन्ताके दुखदाय । आसनादिको करबजो ताको कहतउपाय ॥ करबदूरि रागादिकोताको कहत अपाय । गुरुके अरु वरवेदके वचनमाहिं सुखदाय ॥ मानव जौन प्रमाणहै निश्चय ताकोनाम । नेत्रादिक इन्द्रियनको राखै बशमें आम ॥ शुद्धहिकरै अहार निति प्रवृत्ति विषयके माहिं । ताको जौन अभावहै सो संहार सदाहिं ॥ प्रवृत रहत संकल्प औ बिकल्पमें मन नीति । शुद्धाचार समदर्शि है करे भक्तिवी नीति ॥ जन्ममृत्यु अरु व्याधि अरु जरादुःख अरु शोक । इनको जौन बिलोकिबो दर्शनसो मतिओक ॥ जा-के इच्छा मोक्षकीहोय तौन मतिमान । द्वादशहू इनमाहिं सो प्रवृतरहै गहि ज्ञान ॥ जोजन उत्तम ज्ञानकी इच्छकरै हमेश । बाणी मनको बुद्धिसों रोकै तौनबुधेश ॥ जोचाहै कैवल्यसो ज्ञान परम अवदात । तासों आत्माको करै भिन्न बुद्धिसों तात ॥ जो जन जानत आतमहिं सोभवसागर पार । होत जनन औ

मरण के दुखसों छूटि अपार ॥ जो बर योगाभ्यास में प्रवृत भयो जन होय । नित्यकर्म जो नाहिं करै लगत दोषनहिं कोय ॥ योगसुरथपै बैठिकै योगीजन अभिराम । ब्रह्मनगर को जातहैं आनँद सह अतिमाम ॥ ब्रह्मनगरको जायबेकी जोबिधि हैतात । सोमैं तुमसों कहतहौं सुनो तौन विख्यात ॥ सोरठा ॥ प्रथम होइकै मौन सप्त धारणा कीजिये । तदनुकरै बुधिभौनजन प्रधारणाको सुगुणि ॥ दोहा ॥ पदसों कैलै जानुलौं जौन अंगहै ताहि । जानो भूतिहि माहिं शुक थापि मरुत अवगाहि ॥ भूकै बीज लकार सह करै द्रुहिण कोध्यान । पांच घरीलौं बुद्धि सों थिर ह्वैकै मतिमान ॥ हैयहपृथ्वी धारणा सबिधि किये ते याहि । पृथ्वीकी जय लहतहै महत सुबुध अवगाहि ॥ गुदलौं लैकै जानुसों जानो नीरस्थान । तामें मरुतहि थापिकै पांच घरीमतिमान ॥ जलके बीज बकार सह नारायण कोध्यान । करै लहत जलकी जयहि अरु जहोत शुभठान ॥ गुदसोंलैकै हृदयलौं अग्नि स्थानअनूप । तामेंमरुतहि थापिकै पांचघरी मतिरूप ॥ शिखिके बीजरकार सह करैशंभु कोध्यान । जीतैअग्निहि रोगसों रहित होय मतिमान ॥ लेय हृदयसों मध्यलौं भृकुटीके अवदात । जानो सोसुस्थानहै मारुत कुलकोख्यात ॥ तामेंबायुहि थापिकै पांचघरीलौं दक्ष । मारुत बीजय कारसह ईश्वरको अतिस्वक्ष ॥ किये ध्यानबरहोतहै नभचारी बुधिधाम । जीति बायुकोलेतहै योगी शुक अभिराम ॥ भृकुटी को जो मध्यहै तिहि सों लैकै स्वक्ष । थान जौन ब्रह्माण्डलौं सोनभको हैदक्ष ॥ बायुहि तामें थापि कै नभको बीज हँकार । तासह शंकरको परम दोय घरीहु उदार ॥ जीति गमनको लेतहै कियेध्यान अवदात । योग माहिं जोरहतहै तत्पर बिधिसहतात ॥ अहंकार अव्यक्तकी सुनोधारणा जौन । सुनहु तात अब कहतहौं तुमको दोऊ तौन ॥ स्थूल देहते भिन्नहो मैंहींहौं यहसर्ब । अहंकार बर धारणा जानो याहि

अखर्व ॥ मैंहींहौंसबजौनशुक यहअभिमानमहान । ताकोकरिबो नाशजो ताहि परम मतिमान ॥ वर अव्यक्त सुधारणा कहत ज्ञानसों पर्म । कही तुम्हैंहम धारणा सातहुतात सशर्म॥ सोरठा॥ योगयुक्त जन जौन ताको जो जो होतहै । बिक्रम प्रापत तौन सो सोतुमको कहतहौं ॥ औआत्माको ध्यान कीन्हे अन्तःकरण में । योगहि सिद्धि सुठान प्राप्तहोत सो कहतहौं ॥ प्रकाशात्मा जौन कहिहैंताके रूपहम । तिन्हैंलखैं मतिभौन अहन्ताहितजि देहकी ॥ दोहा ॥ अहन्ताहि छोड़तनहीं थूल देहकी जौन । प्रकाशात्मा केनहीं लखत रूपको तौन ॥ अहंभावजोदेहकोछूटिजात हैजास । पूर्वरूप कोहोतहै प्राप्ततौनमतिरास ॥ सोरठा ॥ प्रथमहो-तरँगश्याम तदनुहोतहै रक्तरँग । तदनुपीत अभिराम तदनुहोत हैरँगासित॥ दोहा ॥ श्वेतरंगलहि होतहै सूक्षम बायुसमान । तदनु लहतहै जौनफल सोमैंकहत महान ॥ करतसृष्टिउत्पन्न है बिधि-लौंयोगीतौन । भूको देतकँपायहै लहिमारुत गुणजौन ॥ नभकी शक्ति अदृश्यजो ताहि लहत नभमाहिं । ऐसे औरहुकी सकति पावतसंशयनाहिं ॥ सोरठा ॥ अहंकारको एकजीते पांचहुभूतजे । जानतहैं सबिबेक तेऊ जीतेजातहैं ॥ दोहा ॥ जीते इनषटहूनको अति निर्मल जोज्ञान । ताकोप्रापतहोत है योगीजौन सुजान ॥ सगुण भयो जोआतमा व्यक्तताहि अव्यक्त । जानत योगीजौन सोभयो ज्ञानमें रक्त ॥ परम बोध अव्यक्तको ताके पूरवस्वक्ष । सुनु वृत्तान्तहि व्यक्तके मैंहौं कहत प्रतक्ष ॥ है पचीसवर तत्व शुक योगमाहिं अभिराम । औसांख्यहुके माहिंते तुम्हैंकहतहौं आम ॥ चरणाढोहा॥ मूल प्रकृति अरु महातत्वअरु अहंकार गु-णतीन । ज्ञानेन्द्रिय औ कर्मेन्द्रिय औ मन अरु चित्तअपीन ॥ दोहा॥ महाभूत अरुबुद्धिअरु पुरुषकहे ये तत्व । तोहिं पचीसों सांख्यके मतसों तात ससत्व ॥ होय बढ़े जीवैमरै व्यक्तजानि तू ताहि । कह्यो व्यक्तको रूपहम तोहिं तात अवगाहि ॥ इन

चारिहुसों रहित जो ताहिजानु अव्यक्त । जानत हैं द्वै आतमा जौन ज्ञान में रक्त ॥ ईश्वर कारण रूपहै जीव सुकारज रूप । जानतयहि सुविभाग को श्रुति मतसों मतरूप ॥ जीवसुभोगत कर्मफल ईश्वर भोगत नाहिं । दुओआतमा रहत ये तात देहके माहिं ॥ तत्वज्ञानी जौन है जीवनमुक्त अमन्द । ताको लक्षण अबकहत तोहिं तात निर्द्वन्द ॥ ममताको रागैनहीं रहै सदानिर्द्वन्द । अहंकारछोड़ै कहै कटुनवचन दुखकन्द ॥ अहं कार त्यागेरहै औ रुद्ध द्वेषिहिसर्ब । जो अपमान करैगुणै अशुभ न तासु अखर्ब ॥ मनबाणी अरु कर्मको रहै दबाये नित्य । सब भूतन में समरहै कहै न कबहुं असत्य ॥ इच्छानेच्छा ना करै भोजनहीके काज । करै उपाय निबाहिसब देह सर्बतजिसाज ॥ प्रापतहोय अनिष्टजब व्यथितहोय नहिंनेक । राखे मनएकाग्र निति ह्वैअहिंस सबिबेक ॥ कह्योतोहिं सिद्धान्तहम सांख्य शास्त्रको स्वक्ष । योगशास्त्रको कहतहौं अबसिद्धान्त प्रतक्ष ॥ परम योग ऐश्वर्य्यको प्राप्त होतहै जौन ॥ यहि भवसागर महतको लहतपारहै तौन ॥ भये योगसे प्राप्तजे अणिमादिक बसु सिद्धि । तिनमाहीं बैराग्य सों जोन लगत बुधिनिद्धि ॥ पावत योगैश्वर्य्य को योगी और न कोय ॥ कह्यो तुम्हें सिद्धान्त यह योग शास्त्रको जोय ॥ योग मतहि अरु सांख्य के एकहि जानत जौन । ह्वै करिकै निर्द्वन्द जन लहत ब्रह्मपद तौन ॥

इतिमहाभारतेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेशुकानुप्रश्नेअष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥

व्यासउवाच ॥ चरणादोहा ॥ सांख्यमार्ग अरु योगमार्गसो दुओब्रह्म पद देत । सांख्यमार्गते योगमार्गसो हैअतिक्लेश निकेत ॥ सोरठा ॥ यातेदोउन माहिं सांख्यमार्ग सो श्रेष्ठहै । सो मैं तेरेपाहिं फेरिक- हत हौं तातसुनु ॥ दोहा ॥ या भवसागर माहिं जो बूड़त औ उतरा त । आश्रयज्ञानजहाज को करैतौन अवदात ॥ शुकउवाच ॥ आ- श्रयकीजै ज्ञानको जगते ह्वैमुक्त । कहत आपुसों ज्ञानको कहो

रूपमाति युक्त॥ जासोंजान्योजातहै वस्तुतत्वअभिराम। कहत मनीषावानहै ताकोविद्यानाम॥ ताहिकहतहौ ज्ञानतुम प्रज्ञासो अवगाहि। की प्रापक जोध्येय को परमधर्म है ताहि॥ आत्मा को उच्छेदहै जिनके मतके माहि। लोकायत ऐसेसुनो सम्मत तिनको ताहि॥ कहतज्ञानहौं आपुकी तातप्रज्ञ अवदात। कृपादृष्टिसों जोहि कै कहोमोहिं विख्यात॥ छूटिजातहै दुःखसब जनन मरणको जौन। जासों सो हमको कहौ तातज्ञानके भौन॥ व्यासउवाच॥ आत्माको सु अभाव तौ किहिपै ह्वैहै ज्ञान। याते लोकायतमतहि ब्यर्थ कहत मतिमान॥ आपुहिसों जगहोतहै जौनकहत यहिभांति। प्राप्तहोत कल्याणकोकबहुँन तिनकी पांति॥ कर्ताहै संसारको आपुहि सों नहिंहोत। जैसे कर्ता कृषीको कृषीकार मतिपोत॥ भूतनको पररूपहै ब्रह्मसुनित्यानन्द। और रूप मायापरम जानत सुबुध अमन्द॥ भूतचारि परकारके अण्डज उद्भिजतात।होतजरायुज औ स्वेदज ते देखिपरत हैं ख्यात॥ स्थावरनसों श्रेष्ठहै तिनमें जंगम पर्म। बहुविशेष जोचेष्टा करति हमेशसशर्म॥ जंगमदोय प्रकारके बहुपद औद्वैपाद। तिनमें श्रेष्ठद्विपादहैंजानो यहनिर्बाद॥ खेचर औपार्थिवसुनो द्विपदहु विधिकेदोय। तिनमेंपार्थिव श्रेष्ठहै भक्षत अन्नहि जोय॥ पार्थिव दोयप्रकारके मध्यमउत्तम पर्म। निर्णयको उत्तमनके तुमको तात सशर्म॥ कहतभेद मध्यमनको सुनहुतौन तुमसर्व। जातिधर्म धारण करत यातेश्रेष्ठ अखर्व॥ मध्यमहै धर्मज्ञ यक औधर्मज्ञ नएक। तिनमें जोधर्मज्ञसो श्रेष्ठ गुणोसबिवेक॥ धर्मज्ञहु द्वैवेद बिद एकएक हैऔर। तिनमें जेहैं वेदविद तौन श्रेष्ठसहगौर॥ वेदज्ञहु द्वैहोतहै एक प्रवक्ता पर्म। एक औरहै दुहुनमें वक्ता श्रेष्ठ सशर्म॥ बक्ताहू द्वैहोतयक आतमविद यक और। तिनदोउनमें श्रेष्ठहै आतम बिदसह गौर॥ सोरठा॥ आतम बिदहैं तौन सोई जानहु सर्वबिद। सोइ सत्यको भौन सोईत्यागीशुचि

परम ॥ दोहा ॥ जोबर ब्रह्मज्ञानमें तत्पररहत हमेश । ताको ब्राह्मण कहतहैं सुमनस हरण कलेश ॥ सर्बव्यापक जौन हैं आत्मा नित्यानन्द । तेईब्राह्मणहैं परम जानततांहि अमन्द ॥ तिनके चारुमहात्म सन कछू नहींहै और । जेब्राह्मणहैंमें कह्यो तुम्हैं तात करिगौर ॥ जोप्रापकहै ध्येयको परम धर्मअवदात। ताकोजानो ज्ञानतू निश्चयकरिकै तात ॥

इतिमहाभारतेशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेशुकानुप्रश्नेकोनषष्टितमोऽध्यायः ॥

व्यास उवाच ॥ दोहा ॥ ब्राह्मणको आचरणयह कह्योतुम्हैंहम जौन। सिद्धिकर्मकी लहतहैं ज्ञानवानहैं तौन ॥ कर्ममाहिंजे करतनाहिं संशयको बुधिनिद्धि । तौन लहत निश्चयसुनो तातकर्मकी सि-द्धि॥ कर्ममाहिं केतेकहत पुरुषारथहै हेतु । किते सुभावहि कह तहैं भाग्यहि कितेसचेत ॥ सर्बमतनको खण्डिकै योगीजे अव दात । परब्रह्मको कहतहैं निश्चयकारणतात ॥ त्रेता द्वापर माहिं अरु कलियुगमें जो होत । तिनजनके मन माहिं शुक संशय करत उदोत ॥ सतयुगमें जनहोतजे सत्वगुणी अभिराम । सम-दरशी समदेहसों रहित होत मतिधाम ॥ ह्वैकै तत्पर वेद में साबिधिकरत तपपर्म । कामद्वेषसों होयकै रहित स्वच्छसहशर्म॥ तप सोंऔ बरधर्मसों जेजन युक्त सुजान । सर्बकामकीलहतहैं तेजन सिद्धि महान ॥ तपसों ब्राह्मण होयकै जगताहिं करत अखर्ब । ब्रह्माह्वै प्रभु होतहैं भूतनकेरो सर्ब ॥ सोरठा ॥ बेदवान हैं जौन तिनबरबेद बिचारमें । नित्य ब्रह्म हैं तौन कह्यो परम दुर्ज्ञेयहै ॥ दोहा ॥ कह्योब्यक्त वेदान्तमें तौनयोग अति स्वक्ष । कीन्हें जान्योजातहै यहजानत बरदक्ष ॥ वेदयज्ञ अरुवर्णअरु आश्रमको अवदात । हुतो बिभागन बीचमें त्रेतायुगकेतात ॥ द्वापरमाहिं बिभागभो बेदादिकको सर्ब । आयुभये तेतातसुनु मनुजन वारीखर्ब ॥ द्वापरवारे अन्तमें तिमिहीं कलियुगमाहिं। नाशवेद कोलगतहै हौनकहत अवगाहि ॥ कलियुगवारेअन्तमें

कहूंरहत कहुं नाहिं। प्रवृत अधर्मभये धरम रहत नहीं भू
माहिं ॥ औषधको अरु गऊको नष्ट सुरस ह्वै जात। जनश्रुति
बेचन लगत अरु धर्म जौनकछु तात ॥ पोषत जैसे वृष्टि है
शुकभौमनकोसर्ब। वेदाध्यायिनकोतिमिहिंवेदमप्रीतिअखर्व ॥

इतिमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेशुकानुप्रश्नेषष्टितमोऽध्यायः ६०

भीष्मउवाच॥दोहा॥ परमसुऋषि श्रीव्यासके सुनिकै शुकयेबैन।
भूरि प्रशंसा व्यासकी करिकै सोमतिऐन ॥ धर्मारथ अरु मो-
क्षसों युक्त परम अभिराम। फेरिप्रश्न यह करतभो समुदहोय
बुधिधाम ॥ शुकउवाच ॥ चरणाकुलक ॥ वेदमान मतिमत मखकारी।
अनसूयक बरशुभ ममचारी ॥ ऐसो जोजनब्रह्महि कैसे। प्रा-
पतहोत कहोतुमजैसे ॥ व्यासउवाच ॥ विद्याबिना सुब्रह्माचारी।
औगृहस्थ तपबिन सुखकारी ॥ बानप्रस्थ इन्द्रिय बिनरोके।
औसंन्यासी सब बिनमोके ॥ केहूंसिद्धि लहत है नाहीं। मैं
अवगाहि कहत तव पाहीं ॥ परत न देखि ब्रह्मचखसोंहै। ति-
मिहिं और इन्द्रिय सबसोंहै ॥ केहूं परत नहीं है जानो। परत
मनहिं सोहै अनुमानो ॥ ज्ञानदीपसों जोहत जोहै। ब्रह्महि
प्राप्तहोत जनसोहै ॥ सब भूतनमें ब्रह्महि देखै। ब्रह्ममाहिं तिनको
अवरेखै ॥ ब्रह्महि प्राप्तहोतहै सोई। निश्चय जानहु और न
कोई ॥ परको औ अपनेको जानै। एकहि और नहीं अनु-
मानै ॥ देवहु ताके मारगमाहीं। सुनुहेतात सकत चलिनाहीं ॥
इच्छा करत तासु पदबारी। जानि मोददा परम सुढारी ॥ अ-
णुहूते सो सूक्षम जानो। औ महतहुते महतबखानो ॥ अन्तसर्ब
भूतनको सोई। हैपै देखत ताहि न कोई ॥ दोहा ॥ ऐसो नित्यानन्द
बर ब्रह्म होतहै तात। ज्ञानीहूको तासुगति दुखसों जानीजात ॥
आत्मा के द्वै रूपहैं क्षर एक अक्षर पर्म। क्षर भूतनमें रहतहै
अक्षरनित्य सशर्म ॥

इतिमहाभारतेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेशुकानुप्रश्नेकषष्टितमोऽध्यायः ६१॥

व्यासउवाच॥दोहा ॥ योगतत्त्व मैं कहतहौं तुमको अब अवतात। जासोंयोगी ब्रह्मपद पावत है अवदात ॥ जोजन है शुचिकर्म अरु इन्द्रिय निग्रहकार। योग्य जानिबे तासुहै ज्ञानपरम सुखकार ॥ स्वप्नलोभ भय क्रोध अरु कामपञ्च ये पर्म । बिघ्न योगमें हैं तिन्हैं करैसुदूरि सुकर्म ॥ चरणाकुलक ॥ जीतै रुटहि शान्तिसोंभारी। मन संकल्पहि तजि दुखकारी॥ जीतै कामहि शुभ मग चारी। सत्वहि धारि अशुभ गणहारी ॥ जीतै निद्राको प्रणधरिकै। औजीतै लोभहि धृति करिकै ॥ अप्रमादता धारि सुहाई। जीतै भयहि जानि दुखदाई॥ ऐसे इनदोषनकोजीतै। जोयोगी निज शुभको चीतै॥ इनको जीतैते यशपीनै। होत पापमाहैं अतिक्षीनै॥ सिद्धि होतहै सब उद्गाढ़ै। आनँद दायक ज्ञान सुबाढ़ै ॥ निशिके आदि अन्तके माहीं । मनहि लगावै आत्मा पाहीं॥ एकहु इन्द्रिय जो अलगाई । तौमति कढ़ति मसक जलनाई ॥ याते सब इन्द्रियके थोकै। अतिही सावधान ह्वै रोकै॥ चंचल मीनहि धीवर जैसे॥ पकरत है पहिलेही तैसे॥ पूर्वहि करिकै सबमें मनको। पीछे नेत्रादिकके गनको॥ मनसह जब षट् इन्द्रिय लागैं। बीच आत्माके नहिं भागैं॥ आत्मा करत प्रकाश महा है। इमिजिमि पावक धूमबिना है॥ गिरि उतंगके शृंग सुहाये। तिनपै औ तरुतर छबिछाये॥ योगाभ्यासहि धीरज सेती। करै सुकरि प्रज्ञाहि सचेती॥ योगतेन उद्वेग करावै। मनको नीकी बिधिसों लावै॥ रहै सुदेवता यतन माहीं। औजिहि गृहमें कोउनाहीं॥ योगीकरै बास वरतामें। औशून्यापर्वत सुगुहामें॥ दोहा ॥ ऐसोयोगी जौलबर षट्मासहि के माहिं। प्राप्तहोत है ब्रह्म को यामें संशय नाहिं॥ शूद्रहु औ नारीहु जो यहि मारगको पर्म। प्राप्तहोहिं तौ परम गति लहिकै होहिंसशर्म॥

इतिमहाभारतेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेशुकानुप्रश्नेद्विषष्टितमोऽध्यायः ६२॥

शुकउवाच ॥ दोहा ॥ सुन्योयोग वृत्तान्तमैं तुमसों अनुपम सर्व्व । यक संशय अवतातभो कीजैदूरि अखर्व्व ॥ कह्यो कर्मको करव अरु कह्यो कर्मको त्याग । वेदमाहिं सो त्यागते ज्ञानहोत बड़ भाग ॥ लहत ज्ञानसों कौनगति कर्म किये अरुकौन । गतिको प्रापतहोत है मानववरबुधिभौन ॥ कर्म तजन अरु करनमें है बिरुद्ध हे तात । कहोमोहिं अवगाहिकै बक्ता तुम अवदात ॥ भीष्मउवाच ॥ मधुभार ॥ सुनिये सुबैन । वरज्ञान ऐन ॥ अवगाहि ताहि । भेकहत चाहि ॥ व्यासउवाच ॥ लहि ज्ञान तात । जिहि गतिहि जात ॥ अरु किये कर्म । जिहि गतिहि पर्म ॥ वर बुद्धि पोत । जन प्राप्त होत ॥ सो कहत तोहि । सुनुतात जोहि ॥ उक्का ॥ कर्म त्याग है जौन । निवृत धर्महै तौन ॥ करम करव जोतात । प्रवृत धर्मसो रुयात ॥ चरणाकुलक ॥ बँधे जातजन कर्महिं कीन्हें । तजेकर्म बरज्ञानहिं चीन्हें ॥ छूटत याते जे सुमती हैं । गुणिकै कर्महि करत नहीं हैं ॥ वारम्वार लहत हैं देहै । कर्मकिये करि परम सनेहै ॥ कर्महि छोड़ि भयेते ज्ञानी । लहत ब्रह्मपद ताहिसुठानी ॥ जिनकी बुद्धिमैंन महताई । करत कर्मकी तौन बड़ाई ॥ ज्ञानहि प्राप्तभये जनजे हैं । कर्महि नहीं सराहतते हैं ॥ जो जलपियत नदीके माहीं । कूंपहि तौन प्रशंसत नाहीं ॥ दोहा ॥ कर्म कियेते अरुतजे जिहि गतिको जन जात । सोगति बिधिसों वर्णिकै कहौतोहिं बिख्यात ॥

इतिमहाभारतेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेशुकानुप्रश्नेत्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३ ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ सुने व्यासके बैनबर प्राप्तभयो जोज्ञान । ताहि जनावन ब्यासको गुणि शुकवर मतिमान ॥ सुनीवार्त्ता जौनहै पूछतहै पुनिताहि । वरा बुद्धिसों बुद्धिवर हियेमाहिं अवगाहि ॥ शुकउवाच ॥ माया आदिक सबभये आत्माते हे तात । सुन्यो आपुसों पूर्वमैं प्रश्नोत्तरमें रुयात ॥ साधुनको आचार मैं सुन्योचहतहौं अब । तातकृपा करिकै महत कहो मोहिं सोसब ॥

तजिबो करिबो कर्मको कह्यो वेदके माहिं । कौन कीजिये कर्म अरु कौन कीजिये नाहिं ॥ मैंभोतवउपदेशते पावन परम सुजान । लोकहुके वृत्तान्तमें तुमहौ बिज्ञ महान ॥ व्यासउबाच ॥ सोरठा ॥ जैसे बर आचार चतुरानन पहिलेकहे । ऋषिबरबुद्धि अगार तैसे धारण करतभे ॥ दोहा ॥ ब्रह्मचर्य्य सों परम ऋषि उत्तम लोकहि जात । कीन्हेते बिधिवत सुनो निर्मलमन करितात ॥ शुकउबाच ॥ सोरठा ॥ करोनहीं येकर्म परम वेदके बचनये । तिनमें तात सशर्म अतिही महतबिरुद्धहै ॥ दोहा ॥ मोक्ष होयगी तात किमि बिन छूटेते कर्म । यह इच्छा है सुननकी कहो मोहिं गुणि मर्म ॥ भीष्मउबाच ॥ गन्धवती सुत बिज्ञबर सुनि सुत के येबैन । भयो सराहत ताहिगुणि ज्ञान परम मतिऐन ॥ व्यासउबाच ॥ फल चारों आश्रमनको ब्रह्म जानिबो जौन । यातेकीन्हे बिधि सहित लहत मोक्ष बुधभौन ॥ चारों आश्रम जौनते सिढ़ीपरमहैस्वक्ष । इनपैचढ़िकै ब्रह्मको प्राप्तहोत जनदक्ष ॥

इतिमहाभारतेशान्तिपर्बणिमोक्षधर्मेशुकानुप्रश्नेचतुःषष्ठितमोऽध्यायः ६४

व्यासउबाच ॥ दोहा ॥ देहादिकजे सर्बहैं हेसुत प्रकृति बिकार । तिनसों युतक्षेत्रज्ञहै जानत प्रज्ञ सुढार ॥ जानत है क्षेत्रज्ञशुक तिनको अरुतेसर्ब । जानत नहिं क्षेत्रज्ञको जड़ताते सुअखर्ब ॥ सोमनसह इन्द्रियन सों सर्ब करतहै काज । निज सत्तासों तिन सबहि करि चैतन्य दराज ॥ श्रेष्ठसुइन्द्रियते बिषय विषयहुते मनपर्म । मनतेश्रेष्ठा बुद्धिहै निश्चयकरी सशर्म ॥ आत्माश्रेष्ठसुबुद्धिते ताहूतेअब्यक्त । श्रेष्ठ परम जानतसुबुधजौन ज्ञान में शक्त ॥ सब भूतनमें आत्मा छप्यो रहतहै तात । अतिही सूक्षम बुद्धिसों सोहै जान्यो जात ॥ ध्यान परमकरि विषयते चंचल मनहिं छुड़ाय । अहं ताहि जोदेत तजि धरिकै शान्ति सुभाय ॥ पावतसो कैवल्यपद गावत जाहिबुधेश । भावत जासु कथासुने ललचावत सुहमेश ॥ चरणाकुलक ॥ मनकी निर्मलतासों आछी ।

पांति शुभाशुभ वारी पाछी॥ कीन्हे जीति अनिश सुख भारो। ताहि लहतहै सुबुध सुढारो ॥ जिमि निर्वातस्थलके माहीं। दीपहोत कम्पितहै नाहीं॥ तिमि निर्मलता सों मनवारी । जन नहिं खेद लहत सुखकारी॥ आपुमाहिं आत्माको देखै। दोऊ कालमाहिं अवरेखै॥ दश हजार बेदकी खासी । ऋचा तिन्हैं माथि मतिसों भासी॥ यह सिद्धान्त सुढार लह्योहै। जोतव आगे प्रगट कह्योहै॥ शुक नवनीत दहीते जैसे । भिन्न करत जन तुमको तैसे॥ वेद बीचते करिकै न्यारो। यह सिद्धांत दयो कहि भारो॥ तत्पर होय धर्मकेमाहीं। स्नातकादि जन तिनके पाहीं॥ कहिये यह औरनके सोहैं । कबहूं ज्ञान चक्षुसों जोहैं ॥ वेद विहित ब्रत धारत जोहैं। स्नातक बिप्र कहावत सोहैं॥ दोहा॥ अन्तमयी पुहुमीदिये होत जौन फल स्वक्ष । होत सुताहूते अधिक याको कहेप्रतक्ष॥ दूरिकरनके काजमैं तोमनकोसन्देह औरहु पूछौसो कहौं तोको सहितसनेह॥

इतिमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेशुकानुप्रश्नेपंचषष्टितमोऽध्यायः॥

शुकउवाच॥ दोहा॥ धर्मऔर जिहिधर्मते होय श्रेष्ठनहिंकोइ। तौन धर्म हमकोकहौ कृपादृष्टिसों जोइ॥ व्यासउवाच॥ सर्वधर्मते श्रेष्ठअति कियोऋषिन कोस्वक्ष। मनकोकरि एकाग्र सुनु तोको कहत प्रतक्ष॥ चरणाकुलक॥ मतिसों इन्द्रिय गणको रोकै। तासों तजै बिषयके थोकै॥ समन इन्द्रियनको जोलगिबो। बिषयमाहिं सो दुखमें पगिबो॥ याते तात रोक इनकेरो। श्रेष्ठसर्व धर्मनते हेरो॥ सह मन इन्द्रिय गणको मतिसों। रोकैसावधानता अति सों॥ रहैतृप्त जबआत्मा माहीं। करैऔर व्यापारैनाहीं॥ छूटिविषयते इन्द्रिय तेरे। लगिहैं आत्मामें सुत मेरे॥ तब आपुहितू देखन लगिहै। आत्माहीमें शमदम पगिहै॥ बिनाधूमको पावक जैसो। तेजोमय आत्माहै तैसो॥ ताहि मनीषी ब्राह्मण जेहैं। ह्वैकै निर्मल देखत तेहैं॥ जिमि सुफूल फल युक्त सुढारो। महावृक्ष बहु

शाखा वारो ॥ सोजानत नाहिं फूल कहाहै । मेरे औफल मधुर महाहै ॥ इमिहिन आपुहि आत्मा जाने । धारे बहुलघु बपुष महाने ॥ दोहा ॥ ताको भये प्रकाशबर ज्ञान दीपजो स्वक्ष । आपुहि देखत आपहे आत्मा तात प्रतक्ष ॥ चरणाकुलक ॥ नदी दुःख रूपा अति भारी । क्रोध पंकसों भरी करारी ॥ इन्द्रिय पंचग्राह जिहि माहीं । महति सर्ब दिशि फिरति सदाहीं ॥ मन संकल्प कूल जिहिकेरे । काम सर्प जिहि माहिं बड़ेरे ॥ लोभ मोह तृणसों है छाई । पापात्मासों तरी न जाई ॥ मायाते सो भई महानी । तास नत्वरिता जाति बखानी ॥ जग जलनिधिको प्रापत होहै । होती घोर स्रोत तिहि कोहै ॥ हैयतनादि भौंर जिहि माहीं । अधीपरत तिनमाहिं सदाहीं ॥ ताको महति मनीषा वारे । तरत परम धीरजको धारे ॥ तरत तात यहि सरितहि जोहै । जात ब्रह्मही ह्वै जन सोहै ॥ लहत पारतोयहि सरिताकी । जोजन करत बड़ाई ताकी ॥ धर्म धुरन्धर जौनमहाने । धीरजमानन माहिं बखाने ॥ गुप्तकथायहतोहिं कहीहै । अघिहि कहनके योग्यनहीं है ॥ दोहा ॥ सब धर्मनते श्रेष्ठअति पूछ्यो जोहो धर्म । तौनधर्म अवगाहि कै तोको कह्योसशर्म ॥

इतिमहाभारतदर्पणेशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेशुकानुप्रश्नेषट्षष्टितमोध्यायः ६६

दोहा ॥ भिन्नस्थूल शरीरते अल्प शरीरीजौन । योगी ताहि समाधिमें प्रगट करतहैंतौन ॥ नाम चित्तएकाग्रता कोसमाधि है तात । तासों योगीलहत है आनँदको अवदात ॥ सोरठा ॥ जे योगी अभिमान छोड़ै अपनी देहको । तेजगमाहिं महान निर्मोही ह्वैकै फिरत ॥ दोहा ॥ लिंगशरीरको पृथक् सब सब देहनकेबीच । योगमार्ग में जो प्रबृत तेहैं लखत निभीच ॥ भास्वतके प्रतिबिंबको जिमि जलमाहीं तात । देखतहैं संसारमें मानवते बिख्यात ॥ सोरठा ॥ लिंगदेह आधीन योगिनके नित रहतहै । कामादिकजे पीन तिनको देत छुड़ायकै ॥ जयकरी ॥

स्वप्नहुमें योगीजनजौन। लिंग देह को जानत तौन॥ भिन्न स्थूल देहते तात। पगे योगमें निति अवदात॥

इतिश्रीशान्तिपर्वणिमोक्षधर्म्मे शुकानुप्रश्नेसप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७॥

व्यासउवाच॥ दोहा॥ आत्माहै अज्ञानते भिन्नतात अवदात। सो मैंयहि अध्याय में तोहिं कहतहौं ख्यात॥ गमनीति॥ हिय क्षेत्रमें उत्पन्न मोहै कामतरु अतिभाम। है मोह ताको बीज जानत जौन हैं बुधिधाम॥ अज्ञान ताको मूलअरु है शोष शाखा तास। कीलाल सींचन काजताके जो प्रमाद प्रकास॥ है ईर्षा शुकपत्र ताके पाप अन्तरछाल। है भयहि अंकुर तासुओं चिन्ताहि बिटपाबिशाल॥ बहुमोहनी लतिकान सों है बलित भूत महान। हैतासु धर्माधर्म फलजन चहत जौन अजान॥ दोहा॥ यहि वृक्षहि तजिदेतजो जन सुख दुखकोअन्त। ताको प्रापतहोतहै ज्ञानीपरम भनन्त॥ सोरठा॥ अज्ञानीहैंजौन काम वृक्षपै चढ़तते। डारत है करितौन तिनको क्षिप्रहि नष्ट द्रुम॥ दोहा॥ लहेज्ञानबल कामद्रुम जात उपारयो तात। ताहि उपारत योगबिद धीर्य्यवान अवदात॥ सोरठा॥ यह शरीर पुर जौन तासुस्वामिनी बुद्धिहै। चञ्चलताको भौन मन हैतासुअमात्य शुक॥ दोहा॥ पुरजनहैं तिहि माहिंशुक इन्द्रियजेहैंसर्व। मनबारीते रहतिहैं आज्ञामाहिं अखर्व॥ तिहिपुर में द्वै दोष हैं राजस तामसपर्म। तिनमें पौरुष स्वामिनी लागेरहत सुकर्म॥ अहंकारराजस औतामस कुत्सित पथसोंतात। भोगत है सुख दुःख महतको जानत बुध अवदात॥ सत्वमयीहै बुद्धिशुक तिहिते निजवशमाहिं। राजस औतामस कवौंतात सकतकरि नाहिं। राजस तामसलेतकरि मनको निज वशमाहिं॥ मनकी समता गहति मतिहोत जवै मनपाहिं॥ स्वामिनि भई अमात्यके जो सँगमाहिं मलीन। तौ मलीन क्यों होहि है सुन शुक पुरबासीन॥ मनको प्रापत होतहै खेदसुभये कुकर्म। मनसँग

खेदित होतिहै बुद्धिहु तात सशर्म ॥ बुद्धिमाहिंशुक रहतहै आत्माको आभास। यहिकारण ते तीनहूं पावत खेद प्रकास ॥ मनही याते जानिये महादुःख को हेत। राजस तामस माहिंजो कीन्हें रहत निकेत ॥ ज्ञानहोय जिनको सुने ऐसे मैं इतिहास। तोहिंसुनायेबहुतहैं तिनकै बुद्धिप्रकास ॥ तिनको गुणिबश माहिंकरि मनइन्द्रिय सहतात। गुणि अनित्यसंसार सों रहित होहु अवदात ॥ भीष्मउवाच ॥ सोरठा ॥ कहेज्ञानके काज शुकहि ब्यास इतिहास जे। तेतुमको नरराज कहेतिन्हैं हियमें गुणो ॥

इतिमहाभारतेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेशुकानुप्रश्नेअष्टषष्टितमोध्यायः ६८ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ मनको कीबो शान्तिजो सो है जनको श्रेय। कह्यो पूर्ब अवगाहिकै मोकोयह गांगेय ॥ अन्तसमय में शान्तिमन आपुहिसों ह्वैजात। शान्तिकाज क्यों कीजिये याते साधन तात ॥ जो तुम इमि हमकोकहो मतिसोंगुणिहिय माहिं। तौथिरकरिकैमनहि तुम सुनो कहत तव पाहिं ॥ गत प्राणजे भूमिमें परे भूतबलवान। मृतक शब्द कैसे भयो तिनको प्राप्त सुजान ॥ प्राप्त होतहै शान्ति जो अन्त समय के माहिं। मनको सो भूपाल सुनु रहत निरंतर नाहिं ॥ मृत्युकौन किहि ते भई कैसी बिधिसों तात। करति प्रजा संहार किमि कहो मोहिं बिख्यात ॥ भीष्मउवाच ॥ शान्तिकाज याते करै साधन सबिधि सुप्रज्ञ। शान्ति लहत मन तब महत होत शरम धर्मज्ञ ॥ यहिप्रसंग में कहतहौं यक इतिहास अनूप। तामाहीं सम्बाद है मृत्युद्रुहिण को भूप ॥ मनोहर ॥ सतयुग में अनुकंपक भूप। महापराक्रम वान अनूप ॥ होतभयो सो सत्वाधीन। महत समरके माहिं प्रवीन ॥ हरिनामा ताको सुतपर्म। हरिसमान सो बली सुकर्म ॥ ताहिहनत भे शत्रुअखर्ब। युद्धमाहिं लरिक्रुद्ध सगर्ब ॥ पुत्रशोक तासों अतिपीन। होतभयो अनुकंपक क्षीन ॥ मिलतभये नारद ऋषिताहि। तिनको अनुकंपक नृपचाहि ॥ बर्णियुद्धको सब

वृत्तांत । कहतभयो सुतशोक नितांत ॥ नारदमुनि भूपनिकेबैन । कहत भये यक कथा सचैन ॥ पुत्रशोककीबेकोदूरि । अनुकंपक भूपतिको भूरि ॥ नारदउवाच ॥ भूपतितोहिं एक आख्यान। अत्र कहत बिस्तरित सुठान ॥ प्रजा बनावतभो लोकेश । बढ़नि भईसो बहुत नरेश ॥ तिनमें मरैसु कोऊनाहिं । भूरिभरिभी भू के माहिं ॥ प्रजाहोतिभी विकला सर्ब। विधिकरि चिन्ता देखि अखर्ब ॥ प्रजानाशको मनकेमाहिं । विधिकेकारण आयोनाहिं ॥ कियो बिचार बहतबहुबार । तातेबाढ़ोक्रोध अपार ॥ कढ़तभयो इंद्रियते ज्वाल । सो जारतभो प्रजहि विशाल ॥ देखिप्रजाको पीड़ित ईश । भये द्रुहिण पैजात महीश ॥ ब्रह्मादेखि शंभुको बैन । कहतभयो ऐसे बलऐन ॥ जो तुम कहो करैं हम तौन । शंकर पशुपति गिरिजा रौन ॥

इतिशान्तिपर्वणिमोक्षधर्ममृत्युप्रजापतिसंवादेएकोनसततितमोऽध्यायः

स्थाणुरुवाच ॥ बरवादोहा ॥ प्रजातुम्हारी विरचीहैं यह्यापैक्रोध करौन । तबकोपानल सों है पीड़ित धीरजजातधरौन ॥ ब्रह्मोवाच ॥ इच्छाप्रजानन हौनकीहै मोमनमें नाहिं। क्रोधकियो लखि बहुप्रजा सत्यकहत तव पाहिं ॥ भारप्रजाकोपायबहु धरणी जब जलमाहिं ।बूड़नलागी प्रार्थना करी आयमोपाहिं ॥ तबमें प्रजा सँहारको भयो विचारत हेतु । देखिपरो एको न तब कियो क्रोध वृषकेतु ॥ स्थाणुरुवाच ॥ करहु क्रोध लोकेश मति प्रजानाश के काज । तव रुष्ट शिखसों जायगी जरि सब प्रजादराज ॥ सर्ब प्रजाको चाहिये नाश नहीं लोकेश । याते क्रोधानलहि तुम देहु दबाय अशेश ॥ जाते होय नहीं सुनो नाशप्रजाको सर्ब ॥ ऐसी और उपाय तुम हियमें गुणो अखर्ब ॥ बरवै ॥ उद्भव होय प्रजाको बारम्बार । द्रुहिण प्रार्थना यह मैं करत उदार ॥ नारद उवाच ॥ दोहा ॥ महादेव के बैन ये सुनिकरिकै लोकेश । कर्षतभे जिन तेजजो बगरचोहुतो विशेश ॥ कर्षि तेजको प्रजाके जनन

मरणके काज। भये कल्पना करत श्री द्रुहिण देव शिरताज॥ छिद्रनते लोकेशके तदनु मृत्यु कढ़ि बाम। कृष्ण रक्त पैहैं बसनभूषणधरे ललाम॥ धारे कुण्डल दिव्यअति श्यामललो- चनताश। खरीभई दक्षिण दिशाहिसो बहु भरीप्रकाश॥ जयकरी॥ देखत भे बिधि औ हरताहि। भरी तेजसों अति अवगाहि॥ ब्रह्माताको निकटबुलाय। कहतभये इमि बचन सचाय। करुतू नाशप्रजाको माम। मेरीआज्ञासों हे बाम॥ बचन द्रुहिणके ये सुनिबाल। रुदन कराति सो भई बिशाल॥ क्रमसों प्रजानाश के काज। अश्रुमृत्युके सुरशिरताज॥ लेतभयोआनँदसोंछाय। सुनु अनुकंपक बर नरराय॥

इतिशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेप्रजापातिमृत्युसंवादेसप्ततितमोऽध्यायः ७०॥

नारदउवाच॥ दोहा॥ सुनि ब्रह्माके बैन ये मृत्युजोरिकै पानि। कहतभई बाणीसुइमि ऋजुताभरीमहानि॥ धर्महोयजिहिकर्ममें ऐसोकहियेमोहिं। लोकनाथ मोओरतुम कृपादृष्टिसोंजोहिं॥जामें अधरमहोतहै ऐसोजोहैकर्म। तासोंअतिही डरतिहौं मैंहौंद्रुहिण सशर्म॥ नाशप्रजाको होयगो मोसोंनहिं लोकेश। मोहिं करो आज्ञा नयहकरिकै तुमसबिशेश॥ संबंधी जिन जननके हनिहौं तिनकोशाप। तातेधारणकरातिहौं साध्वसअतिहिअमाप॥ चरणा दोहा॥बहिहैंआंशू दीनजननकेते बहु दिनलौं मोहिं। दाहैंगे याते शरनेमें राखहु रतिसों जोहिं॥ दोहा॥ ओइच्छाहै तपकरनमोको हेलोकेश। आज्ञामोकोदीजिये करिकैकृपाबिशेश॥ पितामहउवाच॥ रामगीती॥ सुनुप्रजाके संहारबेको हमबनाई तोहि। करु औरतू न बिचारहियमें मृत्युहे इतजोहि॥ जोकह्यो हमहै तोहि कै है अन्यथा नहितौन। ममबचन यातेमानिकै संहार कोकरिगौन॥ येबैन सुनिकै बिधाताके कछुन बोलीबैन। अति नम्र ह्वैकै भई सोहैं खरीसुनु बलऐन॥ सो भईहोती प्राणगतसी तत्र भूप उदार। करुप्रजाको संहारये सुनिबचन बारंबार॥ लखिमृत्युबारी

दशाबिधि पुनि कछूबोले नाहिं। सबलोक देखत भये मोदित होयकेमनमाहिं। जबक्रोधबिधिको दूरिभो तबगई नहँनेबाल। गो तीर्थको बिधि बैन अंगीकारके न नृपाल॥ तहँ जायकरिकै तपस्या सो भई करति महान। यकपावँ सों ह्वै खरी पन्द्रहपद्म बर्षसुजान॥ तहँ जायकरिकै ताहि ऐसेकहतभे लोकेश। ममबैन अंगीकार करु तू मृत्यु हे शुभवेश॥ येबैन बिधिके तिन्हैंलाई मृत्यु सो मनमैन। पुनि बीसपद्म सु एकपद सों कियोतप बल-ऐन॥ दशसहस पद्म सुरहीसो पुनि पशुनमें भूपाल। द्वैअयुन बत्सर कियो बायुअहार हेतिहिबाल॥ नृप तदनु ग्यारह सहस बत्सर कियो तप जलमाहिं। बर कौशिकी जो नदी ताके भई जाती पाहिं॥ तहांहू रहतीभई जल बायु भक्षिनरेश। सोतदनु जातीभई श्री सुरसरी को शुभ बेश॥ तहँ भई रहती दारुवत ह्वै रहितचेष्टा बाल। सोतदनु गिरिहिमवान ऊपर जायकेमहि-पाल॥ जहँ किये देवन यज्ञ हे तहँ कियोतप अभिराम। बर बर्षएक निखर्बलौं बिधि सह अखर्ब ललाम॥ तहँ करिप्रसन्न सुबिधाता को कहति भी इमिबैन। सुनु प्रजाको संहार मोसों होयगो नहिं ऐन॥ इमि बचन कहिकै भई परती बिधाता के पायँ। बिधितदनु ऐसीभांति मृत्युहि कहत भो समुझाय॥ सुनु मृत्यु तोको होयगो न अधर्म करु संहार। यहकर्म माहीं प्राप्त ह्वैहै तोहि पुण्यअपार॥ हम रहैंगे सहसुरन तत्पर नित्य तव हित माहिं। मैंदेतहौं बरदान तोको जानुमिथ्यानाहिं॥ बहुब्याधि वारेब्याजसों नहिंतोहि देहैं दोष। सबप्रजा याते आपने मन मैंन करु अपसोष॥ तूपुरुषके तट पुरुष ह्वैहैनारिके तटनारि। औनपुंसकमें होयगीतू नपुंसकहि सुढारि॥ येबैन सुनिकै बिधाताके जोरि मृत्यु सुपानि। इमि कह्योये मति कहोमोको बचन हठको ठानि॥ येबचन सुनिकै मृत्युके बिधिकह्यो इहि बिधि भूप। नहिंतोहिं ह्वैहै दोषप्रापत निजुहि जानु अनूप॥ तब

अश्रुजेहे गिरे पूरब धरेतेहैंसर्ब । सुनु मृत्यु ह्वैहैं रोगते दुखदाय परमअखर्ब ॥ यहप्रजाजोहै नाश माहीं तासु तिनकोनाम । ह्वै हैं नतेरो होयगो करु हिये निश्चयमाम ॥ सब प्रजापीछे कामक्रोधहि मृत्युदेतूलाय । क्रमसों सुअन्त अनेह माहीं मम सु आज्ञापाय ॥ डरिशापसेती बिधाताके कह्योऐसीभांति । तव लहे आज्ञा हनोंगी मैंप्रजावारी पांति ॥ सोप्रजा अन्त अनेह माहींकाम क्रोधलगाय । मृत्यु हनतीभई क्रमसोंप्रजाको नरराय ॥ दोहा ॥मृत्यु अक्षिके अश्रु जे तेई हैं रुजसर्ब । प्राप्तिहोति है तिनहिंसो दुख कोप्रजा अखर्ब ॥ बिधिकी आज्ञापायके या बिधिसों अचलेश । मृत्यु हनतिहै प्रजाको यातेकरुन कलेश ॥ अंतकाल जबहोतहै जनकोप्रापत आय । निश्चयताको करति है नाशमृत्यु नरराय ॥ यह गुणिकैतुम शोचको प्रापत होहुन भूप । तव सुत दिवमें प्राप्तह्वै पावत मोद अनूप ॥

इतिशान्तिपर्बणिमोक्षधर्ममृत्युप्रजापतिसंवादेएकसप्ततितमोऽध्यायः ७१

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ मृत्यु हनति है प्रजाको रोग व्याजसों तात । कह्योपूर्ब अध्याय में यहगुणिकै बिख्यात ॥ रोग निरन्तर रहत हैं तनमें कीन्हे बास । निवृति होति तनकी सुनो भये सुधर्म प्रकास ॥ याते मोको धर्मको कहो स्वरूप बखान । धर्म प्रबक्ता आपुही हौभू बीच महान ॥ इहिहि लोकमें करत है जनकी धर्म सहाय । परलोकहु में करतकी दुओ लोकमें राय ॥ भीष्मउवाच ॥ सदाचार अरु स्मृतिअरु बेद सुअरु बरअर्थ । ये लक्षण हैं धर्मकेचारि महीप समर्थ ॥ सोरठा ॥ जासों जानो जाय ताको लक्षण नामहै । पर उपकार सचाय कीबोधर्म महान अति ॥ भुजंगप्रयात ॥ दुहूंलोकमें देत है धर्मशर्मै । महा पापसों देत है दुःख पर्मै ॥ सुनो है करै धर्म याते सदाहीं । नहीं पांवदे पापके मार्गमाहीं ॥ सभामें महीपालकी ह्वै निशंकै । सदाजात धर्मीधरै हीन शंकै ॥ अधीजात है नित्यही शंकधारे ।

कंपै भूपकीबंक भौंहें निहारे ॥ दोहा ॥ लक्षण जोहैं धर्मको कह्यो तोहिंसो आम । ऋजुतामें तुमनित्यही प्रवृत्तरहो बुधिधाम ॥

इतिशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेधर्मलक्षणकथनोनामद्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२

दोहा ॥ बरसूक्ष्मजोधर्मको लक्षणअति अभिराम । नाहिकह्यो अवगाहि महि कै सुपितामह आम ॥ आपुकह्यो सिद्धान्तहैं पै कुतर्ककरि एक । पूछतहौं शंकाभई मोमनमें सबिवेक ॥ उत्पत्ति थिति संहारये आपुहिसों सबहोत । धर्मकहाहै करत नहिं अनुभव तासु उदोत ॥ अज्ञानीते धर्मगुनि करतअधर्माचर्ण । ज्ञानी तेसु अधर्मसोंधर्म करतशुभकर्ण ॥ बेदविहित जो धर्महै युगयुग माहीं तास । एकभाव नाहिं रहतहै होतजातहौ ह्रास ॥ औरसुनो यकधर्मको करत दोय तिनमाहिं । एक लहत आनन्दको एक लहतहै नाहिं ॥ याते मनमानै कहो कैसे धर्म प्रमान । अप्रमाण जो धर्मभो तोहे तात सुजान ॥ अप्रमाण भोवेद औ स्मृतिहूको अवदात । मूलधर्मको श्रुति स्मृति यहिकारणते तात ॥ पूरबते आये करतधर्ममहत जनपर्म । याते करनोहैनपै धर्मप्रमाणसुकर्म ॥

इतिमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेत्रिसप्ततितमोऽध्यायः ७३ ॥

भीष्मउवाच ॥ यहि प्रसंगमें कहतहौं यक इतिहास अनूप । जाजलिनामा सिद्ध यक तेजोमय अतिभूप ॥ बणिकएक मतिमानबर तुलाधार तिहिनाम । तामें हैं संबाद तिन दोउनको बलधाम ॥ चरणाकुलक ॥ जाजलि नामा द्विज बनचारी । तेजोमय मतिमत शुभकारी ॥ करतरह्यो तपसागर पाहीं । मनको करिकै थिरता माहीं ॥ होय जटाधर धरि मृगछाला । कियो सुतपबहु वर्ष बिशाला ॥ कछूकाल रहतोभो जलमें । महा सुधीवर अति निर्मलमें ॥ लोकनकोसो जलके माहीं । देखतभो इमि जिमि निज पाहीं ॥ लखि इमि कहतभयो गुणि मनमें । मो सम और न बर द्विजगनमें ॥ तब पिशाच इमि बोले तासों । इमि न बचन कहुगुणि मेधासों ॥ तुलाधार यकबणिक सुहाबो । काशी

माहिं रहत गुण छायो ॥ कहतै नहीं बणिक सों ऐसे। बचन कहत तू सगरब तैसे ॥ यह सुनिकै भूतनकी बानी । कहत भयो जाजलि अभिमानी ॥ तुलाधार हम देख्यो नाहीं । ये भाषण सुनि ताके पाहीं ॥ आय निकारि नीरते नीको । भये दिखावत पथकाशीको ॥ जाजलिसो काशीमें आयो । तुला-धारतट गुणसों छायो ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ कहाकर्म कीन्होंहुतो जाजलि उग्र महान। परमसिद्धिको प्राप्तभो जातेबर मतिमान॥ भीष्मउवाच॥ चरणाकुलक ॥ करतोभयो तपस्याभारी । जाजलि बिप्र वेदमगचारी ॥ धर्मबीच सो नितिही पागो । अधरममें न कबहुँ अनुरागो ॥ तपतमाहिं पंचागिनितापै । बर्षामाहिंसहैसोआपै॥ ऋतुहिमन्तमें जलमें ठाढ़ो। रहै धारिधीरज कोगाढ़ो ॥ कियो तपहि यहिभांति महानै। पैंआन्योन हिये अभिमानै ॥ एक सम-यमेंसो भूसाईं । बनमें खरो काष्ठ कीनाईं ॥ ताकी घनी जटोंमें अच्छी। नृप कुलिंग नामाबरपच्छी ॥ नीड बनावतभये सुठानो। जाजलि द्विजबर तिहिको जानो ॥ भयो नेकहूं चञ्चल नाहीं। पक्षीरहत भयेतिहि माहीं ॥ भूपसुनो जब बीतीबर्षा। तब तिन अण्डदये बेधर्षा ॥ अण्डदये जाजलि द्विजजाने। चञ्चलभो नधीर्य्यको ताने ॥ रक्षाकरत भये तिनकेरी। तेपक्षी करि प्रीति घनेरी ॥ जब सुअण्ड फूटेपकि नीके। अण्डज दोयभये शुभ श्रीके ॥ बढ़तभयेते तत्रहि दोऊ। बिप्रन अंग हलायोकोऊ ॥ समयपायते परम सुढारे । भयेसपक्ष होत बलवारे ॥ दोहा ॥ आतम जनको लखिबढ़े हुओ कुलिंग सहर्ष । तासु जटा में रहत भे सुनहु भूप उतकर्ष॥ चरणाकुलक ॥ प्रातहिते बन में उड़ि जावैं। सांझभये ते फिरितहँ आवैं ॥ पक्षी एकसमयके मा-हीं । पांच दिवस लौं आयेनाहीं ॥ तबहुँ न जाजलि अंग हलायो। खरोरह्योधीरज सों छायो ॥ षष्ठ दिवसते पक्षीआये। रहेजटा में मुदसों छाये॥ तदनु गये उड़ि फिरिबनमाहीं। एक

भासलों आये नाहीं ॥ अबऐहैं न इहांते पच्छी । तिनको जगह मिली कहुंअच्छी ॥ यह जाजलि गुणिकै निजमनमें । तहँते जातभयो सो बनमें ॥ भयोविचारत मनमें पूरी । आपुतपस्या अपनी रूरी ॥ आपुसमान औरजगमाहीं । तपस्वी और सु जानत नाहीं ॥ एकसमयमें नदीसुढारी । ताहिप्राप्त ह्वै सोवनचारी ॥ करिस्नान तर्प्पणको करिकै । रबिकी स्तुति करी मुदधरिकै ॥ तदनु कहत भो इमि मनभायो । धर्मको सुफल सुमैंअब पायो ॥ तदनुभई ऐसेनभबानी । जाजलि कहाभयो अभिमानी ॥ तुलाधारके सम भूमाहीं । धर्मी अबहिं भयो तू नाहीं ॥ तुलाधार कबहूं नहिं ऐसे । कहत कहत तू जाजलितैसे ॥ सुनिकै नभ वाणी बनचारी । करिउत्पन्न क्रोधअतिभारी ॥ तुलाधारको देखन काजै । फिरतभयो भूमाहिं दराजै ॥ दोहा ॥ कछू दिवसमें काशिका मेंभो प्रापत आय । बैठोहुतो दुकानमें तुलाधार नरराय ॥ वेचतहुतो घृतादिको ताहिलखतभो बिप्र । लेतभयो जाजलिहिसो सादर उठि कै क्षिप्र ॥ तुलाधारउवाच ॥ चरणाकुलक ॥ तुम आवोगे मेरेपाहीं । हम न तजा है निज मनमाहीं ॥ जोहम तुम्हैं कहतसो सुनिये । ताहिआपने मनमें गुनिये ॥ प्रथम सिन्धुमें तपतुम कीन्हों । पैसुधर्मको रूप न चीन्हों ॥ जब तब जाजलि भोतपपूरो । तबतेरेशिर ऊपररूरो ॥ पक्षिन नीको नीड बनायो । सुखदायक अतिपरम सुहायो ॥ अण्डजभये तौनमें आछे । भये प्रौढ़ बहुदिन करिपाछे ॥ तिनको तेजाने मनमाहीं । चञ्चलकरी देहनिज नाहीं ॥ तेउड़िगे पक्षीतब जानो । सिद्धिभयो मो धर्म महानो ॥ बोल्यो जबतेह्वै अभिमानी । तबहे तोहिं भई नभबानी ॥ सो सुनि भूरिक्रोध सों छायो । ढूंढ़तमेरे निकटै आयो ॥ जाजलि बिप्र कहतहौं तोको । अबमैंकरौंकहै जो मोको ॥

इतिशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेजाजलितुलाधारसंवादेचतुःसप्ततितमोऽध्यायः

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ श्री जाजलि बरबिप्रये तुलाधारके बैन ।

सुनिकै ऐसे कहत भो ताहि मनीषा ऐन ॥ जाजलिरुवाच ॥ बेचतहै तू सर्वरस औ हैं गन्ध जितेक । औबेचतहैं औषधी हैं भूमाहिं तितेक ॥ ऐसीमतिको प्राप्तभो तूकिमि कहु अवगाहि । तुलाधारसुनु बनिकभो अचरज तोको चाहि ॥ भीष्मउवाच ॥ चरणाकुलक ॥ जाजलिकी सुनिकै यह बानी । तुलाधार बर बनिक सुज्ञानी ॥ धर्मतत्त्व सूक्षम अतिताको । कहतभयो तनिकै मेधाको ॥ तुलाधार उवाच ॥ जनमहान जानत जिहिधर्मै । जानत ताको मैंहूंपर्मै ॥ द्रोह सोय भूतनको नाहीं । अथवा अल्प होय जिहि माहीं ॥ ऐसी जोहै वृत्ति सुढारी । ताहिकरतहौं मैं बनचारी ॥ काष्ठन सों औरनके काटे । मैंआपने सदनको पाटे ॥ चंदनादि बरगंध सुआछा । बेचतहौंऔ सुनुद्विज लाछा ॥ औ लवणादिक रसको लैकै । तास मोलतजि कपटैहैकै ॥ उचित नफालै बेचतताही । कपट छोड़िकहि गाहकपाही ॥ मन बच कर्मसों न अपकारै । परवार जो कबहुँ बिचारै ॥ धर्महिसोय जगत में जानै । और नहीं कोऊ अनुमानै ॥ कौनिहुं मैं न कामना राखौं । मिथ्याकबहुं नहींहौं भाखौं ॥ जोजन मोहिं बचन कटुभाखै । तास द्रोह मोमन नाहिं राखै ॥ दोहा ॥ नस्तुति काहूकी करत काहूकी निन्दान । जानतहौं संसारको मैं अनित्य मतिमान ॥ चरणाकुलक ॥ सोना औ मृतिकामें मानो । हौं मैं एकभाव निजजानो ॥ पुत्र पिताके धर्महि धारै । जैसी बिधिकरि परमबिचारै ॥ धर्महि तिमिहि अहिंसकबारे । धारतहौं मैं परमसुढारे ॥ अभयदेत सबभूतहि जोहै । आपहु अभय लहतजनसोहै ॥ यहगुण सबभूतहि जगमाहीं । मैंहौं देत सुअभय सदाहीं ॥ प्राणी देखि डरतहै जाको । होत न धर्म प्राप्तहैताको ॥ चन्द्रादित्य बायुअरु धाता । औयम भूतनमें अख्याता ॥ बसतसुनो जातेभय नाहीं । दीजै भूतनको सुसदाहीं ॥ अजशिखि मेष बरुणहै जानो । औहै अश्व अर्य्यमामानो ॥ धरणीधेनु बत्सनिशि राजा । जानो जो करि

लोभदराजा ॥ इनकोबेचतसोनहिं पावै । कबहुंसिद्धि अतिदुख सों छावै ॥ इमिमैं महतजननसों सुनिकै । यहनहिंकर्म करनहों गुनिकै ॥ दोहा ॥ जानत लोकाचारसों नृधर्महि द्विजपर्म । कहा कियेका होतहै यहनहिं गुणत सम्मर्म ॥ कीजे तोन विचारिकै ज्ञानदृष्टिसों जोय । बिनाबिचार न कीजिये कारज कबहूंकोय ॥ जो निन्दा मेरी करत अरु जो सुस्तुति स्वक्ष । राखनहौं सम भावातिन दोउनमें मैं दक्ष ॥ धर्मकह्यो यहतोहिंजो नामुसनीपी पर्म । करत प्रशंसाहैं महा जाजलिविप्र सशर्म ॥

शांतिपर्वणिमोक्षधर्मेजाजलितुलाधारसंबादेपंचसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥

जाजलिरुवाच ॥ दोहा ॥ धर्मकह्यो यह जौनते प्रबल भये तिहि माहिं । सिद्धिहि दोऊलोककी लहिहैं मानवनाहिं ॥ जीवतपशु अरु अन्नसों मनुजहोत औ यज्ञ । नास्तिकलौं तूकहतहै कहा बणिक बरप्रज्ञ ॥ बिना जीविका कौनबिधि रहिहैं यहमंलाम । होयसकति नहिंजीविका किये धर्म तवचारु ॥ तुलाधारउवाच ॥ नास्तिकहौं नहिं बिप्रमें तोहिंकहतहौं दक्ष । हिंसासों जोरहित हैं चारु जीविका स्वक्ष ॥ करत न निन्दायज्ञकी यज्ञ विष्णुको रूप । दुर्लभहै जनयज्ञविद जाजलि प्रज्ञ अनूप । विप्रयज्ञ भगवानहै छोड़तहै जनताहि । जाजलि विप्र अनूप वुध करत नहींअवगाहि ॥ अग्निष्टोमादिक सुनो क्षात्रयज्ञहै जौन । हिंसा सो तिनको करत पगिजन दुर्मतिभौन ॥ यज्ञनको स्वर्गादिफल लिख्यो वेदके बीच । पै आत्माको जानिबो फल सिद्धांत नि-भीच ॥ ताहि विचारत हैं नहीं बर मतिसों अवगाहि । मिथ्या फल स्वर्गादि में लगेरहत हैं चाहि ॥ आत्माको जो जानिबो ताकोजे वुध यज्ञ । करतनहीं स्वर्गादिकी राखि कामना प्रज्ञ ॥ द्रव्य प्राप्तभो सुकृतसों तासों सुमन सपर्म । नमस्कारस्वाध्याय सों तुष्टित होत सुकर्म ॥ जानो इन तीनहुनको ब्राह्मण मखके हव्य । अतिउत्तम तुमविज्ञवरजाजलि विप्रसुभव्य ॥ परमेश्वर

की प्रीतिबिन जौन करतहै यज्ञ । कुत्सितताकी होति है प्रजा बिप्रबर प्रज्ञ ॥ लुब्धहि सन्तति होतिहै लुब्धनके बुधि धाम। प्रजा अलुब्ध अलुब्धके होत परम अभिराम ॥ करतयज्ञजन जौनहै फलमें करि संदेह । ताको फल नहिं यज्ञको प्राप्त होत मतिगेह ॥ जाजलिरुवाच ॥ कह्योधर्म यह गुप्तते हम न सुन्यो अब लौन । सो काहूके बदनसों तुलाधार बुधि भौन ॥ कौन कर्म कीन्हे महत सुखको प्रापत होय । प्राणी कह्योफिरि मोहिंतू ज्ञान चक्षु सों जोय ॥ मेरेश्रद्धाहै महति सुनिबेकीतोबैन। महामुनिन की होति मति तैसीहै तवऐन ॥ तुलाधारउवाच ॥ यज्ञ जौन जन करत हैं हियमें करि अभिमान। ते नहिं फलको यज्ञके प्रापत होत अजान ॥ एक गऊहीसों लहत यज्ञनको फलचारु । जे जन श्रद्धावान हैं सुमती परमउदारु ॥ शृंगनमें सुरभीन के तीर्थ रहतहैं सर्ब । गोशृंगोदक स्नानते यातेप्रज्ञ अखर्ब ॥ सर्ब तीर्थके स्नानको होत प्राप्त फलपर्म। गोपद रजऊपरपरे कल्म-षनशत सुकर्म ॥ श्रद्धा सह जाजलि किये धर्मपर्म अभिराम। शुभलोकनको होतहै प्राप्तमनुज बुधिधाम ॥ भीष्मउवाच ॥ सोरठा॥ तुलाधार जे धर्म कहेस्वच्छ अवगाहिकै । साधुनसोंतेपर्म सेवि-तहैं निर्दोष अति॥

इतिशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेतुलाधारजाजलिसंबादेषट्सप्ततितमोऽध्यायः ॥

तुलाधारउवाच ॥ दोहा ॥ सुजनकुजनके मार्गजेतिनको तूद्विज देखि । देखैगोतबपरैगो भलोबुरोअवरेखि ॥ येपक्षीबहुजाति केचहूंओरकोधाय । अपने अपने नीडमें प्राप्तहोतहैं जाय॥ तव शिरमाहिंकुलिंग जे भयेहुते हे बिप्र। तिनको तोशिरनीडहै तिन्हैं बुलावहुक्षिप्र ॥ तुलाधारके बैनसुनि जाजलिबिप्र सचैन । भयो बुलावतभूपतिन पक्षिनको मतिऐन॥ जाजलिके प्रियबचनसुनि बोलत भयेबिहंग । धर्ममये बरबचन अति ऋजुता भरेउतंग ॥ हिंसासों जे रहितजन तिनके कर्म सुढार । रहतप्रकाशित लोक

में दोऊप्रश्न उदार ॥ हिंसाजो सोधर्मकी नष्टकरति श्रद्धाहि। बिनश्रद्धा बिश्वासबर रहत धर्मके नाहि ॥ यातेहिंसा त्याग ते सिद्धिहोतहै सर्व। हिंसामें रत जेनहीं तेहैं प्रज्ञअखर्व ॥ श्रद्धा सों सबहोतहै श्रद्धा बिन नाहिंएक। यातेश्रद्धा सहकरै कार्य्य सर्वसबिबेक ॥ ब्रह्माकी गाईकथा कहत पुराणेप्रज्ञ। अत्रमुनो जाजलि सुद्विज ताहि प्रगट वरविज्ञ ॥ अतिपवित्र है आपु पै श्रद्धा हिये न तास। अरुजो हैअपवित्रपै श्रद्धावत मतिरास ॥ तिनदोउन केद्रव्यको जानत देव समान। धनउदारको श्रेष्ठहै श्रद्धातेहि महान ॥ लीजै अन्न उदारको कृपण जनन कोनाहिं। श्रद्धाहोति न कृपिणमें यहगुणिकै हियमाहिं ॥ परम अश्रद्धापाप है श्रद्धानाशनिपाप। श्रद्धावान समानहै औरन बुद्धिकलाप ॥ यातेतू श्रद्धाहिकरु जाजलि बिप्रसुजान। श्रद्धाते तूपायहै पर पद निति सुखवान ॥ भीष्मउवाच ॥ तदनुविप्र औवाणिकवर श्रद्धा-वान निमीच। ब्रह्मभावको लहतभे थोरेहि दिनकेबीच ॥ तुला-धारकी उक्तिबर बहुतअर्थ जिहि माहिं। कही ताहि अवगाहि कै मैंनृप तेरेपाहिं ॥

इतिशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेतुलाधारजाजलिसंवादेसप्तसप्ततितमोऽध्यायः ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ श्रद्धासह कारज करत सोफल उत्तम देत। कह्यो पूर्व अध्यायमें मोकोबुद्धि निकेत ॥ सो सुनिकै मेरे हिये भयोतात सिद्धान्त। कहियेअब यकऔरमैं पूछतहौंवृत्तान्त ॥ करै परीक्षाकार्य्यकी तुरकी लहि चिरकाल। कहोमोहिं अवगाहि कै बक्ता आपु बिशाल ॥ भीष्मउवाच ॥ यहिप्रसंगमें कहतहौं यक इतिहास अनूप। चिरकारी नामासुद्विज ज्ञानवान वरभूप ॥ ताके शुभ आचरणको तामेंहै वृत्तान्त। मन थिरकै ताको सुनो कुन्तीसुत क्षितिकान्त ॥ मनोहर ॥ चिरकारी वर विज्ञ बिशाल। गौतमऋषिको सुत क्षितिपाल ॥ बहुत काललौं प्रथमबिचार। करिकै कारज करै सुढार ॥ याते चिरकारी भोनाम। गौतमसुन

को मेधाधाम ॥ कहत आलसी बहुजनताहि । करत बिचारहि
जे जननाहि॥ एकसमयमें माता तास । रमति भई परसँग सहु-
लास ॥ तासु पिता तब ऐसेबैन । कहतो भयो ताहि मतिऐन ॥
अपनी माताको हनिडारु । अत्र तूनकरु और बिचारु ॥ सुनि
येबचन पिताके तौन । कहत तथास्तु भयो मतिभौन ॥ तदनु
तौन मनमाहिं बिचार । करत भयो क्षितिनाथ उदार ॥ आज्ञा
पितुकी किमि मानौन । कैसे मारहुं माता जौन॥ क्योंन धर्मसं-
कटमें हाय । बूड़ौं अज्ञानलौं दुखछाय ॥ दोहा ॥ पितुकी आज्ञा
मानिबो सोहै उत्तमधर्म । औ रक्षण जो मातको सोउ धर्महैपर्म॥
जयकरी ॥ प्रथम नारिको हनिबो ख्यात । परमपाप ताहूमें मात ॥
ताको हनिकै को जगमाहिं । दुखको प्राप्त भयो है नाहिं ॥ औ
पितुकीमाने आज्ञान । कौन प्रतिष्ठा लही महान॥ भोउत्पन्न दुहु-
नसों स्वक्ष । मैं संसार माहिं परतक्ष ॥ येकिमि मोसों दोऊकाज ।
सिद्धि होहिंभो शोचद्राज ॥ पितुकी आज्ञा मानत जौन । दूरि
करत अघनिज को तौन ॥ याते पितुकी आज्ञा ताहि । कीजे
परम धर्म अवगाहि ॥ लहेपिताकी कृपा अखर्ब । करत कृपादेव-
तहैं सर्ब॥ दुःख लहेहू छोड़त नाहिं । पितापुत्रको राखतपाहिं ॥
ऐसोपिता होत जगमाहिं । मानोताकी आज्ञानाहिं ॥ चरणादोहा ॥
होत पिताको गौरव ऐसो कीन्हों तास बिचार । अब माताको
गौरवताको करत बिचार सुढार ॥ मनोहर ॥ मोशरीर को कारण
मात । ज्योंअरणी पावकको ख्यात ॥ सुतके सुख करणी अति-
माम । माताके सम औरन आम ॥ माता जाके सोयसनाथ ।
जाके मातन तौन अनाथ ॥ पुत्र पौत्रनहूसों जौन । युक्त जगत
में मानव तौन ॥ समुद जबै मातातट जात । शिशु द्विवर्षकैसे
कैजात ॥ रक्षा माताही सबिधान । करति पुत्रकी सदामहान ॥
पुत्र समर्थहुकी अवदात । रक्षा करति नित्यहै मात ॥ जब जन
कीमाता मरिजात । तबहीं दुखी होतहै ख्यात ॥ तबहींवृद्ध जात

क्षैपर्म । शून्यहोत जगतास अशर्म ॥ जगती में नाहिं मातसमान । रक्षाकारक और महान ॥ मातासम छाया नहिंऔर ॥ हैसिद्धांत परमयह गौर ॥ धारण करति पुत्रको मात । धात्र कहावति या-तेस्यात ॥ जनतीहै पुत्रहिअभिराम । यातेजननी भोहै नाम ॥ अंगवढ़ावति सुतके स्वक्ष । याते अम्वा भई प्रतक्ष ॥ दोहा ॥ नारीको अपराध नहिं पुरुषहिकोअपराध । यामेंहै संदेह नहिं यह सिद्धांत अबाध ॥ कारण है व्यभिचारको पुरुषहि नारी नाहिं । पुरुषकरत इच्छाहितत्र जात नारि तिहि पाहिं ॥ याते नारि अबध्यहै वधिवे योग्य कबौन । पशुहू जानत क्योंनहीं जानै प्रज्ञाभौन ॥ पालिदेत आनन्दहै मृत्युलोकमें पर्म । औपू-जे परलोकमें भूरि देतहैशर्म ॥ माताको गौरव नहीं याते बरण्यो जाय । दुवोलोकमें और नहिं मातासम सुखदाय ॥ ऐसेहि करत बिचारनृप बीततभो बहुकाल । तदनंतर आवत भयो तासु पिता महिपाल ॥ बध तियको मम पुत्रकहु कियो होयनहिं हाय । मनमें करत विचारयह महत शोचसों चाय ॥ मनोहर ॥ युक्तहोतहैदुख सोंतौन । मेधातिथि गौतम मतिभौन ॥ मनमेंकरिकै पश्चात्ताप । लोचन तेसु गिरावत आप ॥ पुत्रहिकहत भयोइमि वैन । मम आश्रममें वर बलऐन ॥ ब्राह्मणहोय अतिथि व्रतधारि । आवत भयो तात अचलारि ॥ वाणीसों पहिले सनमान । करिदै अर्घ्य पाद्य सबिधान ॥ पूजतभो सादर बैठाय । पुनिपुनि मधुरीगिरा सुनाय ॥ साथअहिल्याके तिहिकर्म । कुत्सित कीन्होतातसशर्म ॥ दोष अहिल्याको तिहिमाहिं । नहिंऔ सुरपतिहू कोनाहिं ॥ औ नहमारोहूहेतात । यहबिचार निश्चयमतिजात ॥ दोषसमागमको है जानु । औरनहीं मनमें अनुमानु ॥ सुनो समागम होतोजौन । दोउनसों यह होतोतौन ॥ भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ द्वेष न काहूकोकरत बर मुनिजन अभिराम । याते येभाषण कहे गौतमऋषि बुधि धाम ॥ मनोहर ॥ तंदनु कहतभो ऐसे वैन । गौतमऋषि बरप्रज्ञा

ऐन ॥ होत अक्षमाते दुखभूरि । यहसुगौर संशय तेदूरि ॥ परम अक्षमासों मैं हाय । परो पापसागरमें जाय ॥ पतिव्रता पत्नी अभिराम । भरीगुणनसों अतिहीमाम ॥ डारीमें सुत सों मरवाय । ताहि ईरषासों दुखदाय । मोसुत चिरकारी हे आर्य्य । ताहि कह्यो कीबे यह कार्य्य ॥ करीबेर जो याकेमाहिं । परिहौं अघसागर मेंनाहिं ॥ तदनु पुत्रको ऐसे स्वक्ष । बचन कहतभो गौतम दक्ष ॥ हे चिरकारी परम निभीच । जोतू यहि कारजके बीच॥ भोहैहै चिरकारी पर्म । तौ तू चिरकारी सहधर्म ॥ करु रक्षा तू मेरी बात । औ तव माता की अवदात ॥ औ जोमें तप कीन्हो तास । ताकी रक्षा करु सहुलास ॥ आपु पापते बचिकै पर्म । तू चिरकारी होहु सुकर्म ॥ यह कारज में जो चिरकाल । कीन्हों ह्वैहै प्रज्ञ बिशाल ॥ चिरकारित्व तात तव जौन । सफल होयगो तौ वर तौन ॥ दोहा ॥ चिरदिन इच्छाहीकरी सुतकीतेरी मात । चिरदिन तोको गर्भमें राख्यो हौ हेतात ॥ चिरकारित्वहि सफल कहि चिरकारी तू स्वक्ष । गौतम ऐसे मोहबश कहत भयो प्रत्यक्ष ॥ तदनन्तर देखत भयो चिरकारीको आम। अपने पास उदासअति गौतमऋषि मतिधाम॥ जयकरी ॥ दुखित पिता को देखि नितान्त । चिरकारी बर बिज्ञ सुदान्त ॥ तत्र हाथते शस्त्र गिराय । पाणि जोरिकै शिरहि नवाय ॥ भूपैगिरि करिकै परणाम । पितुहि प्रसन्न करत भो आम ॥ देखिपुत्रसह पत्निहि पर्म । गौतम होतो भयो सशर्म॥पूरब ममभातापै कोहि । दैइगये हैं आज्ञामोहि ॥ मोपित ताहि हननकी आम । करतो रह्योबिचारहि माम ॥ मैंन हनी मोको अबहाय । कहिहै कहा पिता रुट छाय॥ऐसे हियमें करतबिचार । करि पितु पदबिचशिरहिसुढार॥ बहुत बेरलौं भूकेमाहिं । परोरहो करि शोचहि पाहिं ॥ तदनुसु गौतम सुतहिं उठाय । प्रेम सहित निज हृदय लगाय ॥ चिरंजीव रहुयह बरबैन । कहतो भयो सुप्रज्ञा ऐन ॥ करिकै पुत्रहि हर्ष

समेत। कहत भयो इमि बचन सचेत॥ चिरकारी तेरो कल्यान। होहु परम मम प्रिय मतिमान॥ चिरकारी तू रहु चिरकाल। आशिषमेरी पायबिशाल॥ तैं चिरकाल बिचारहि माहिं। कियो मातनिजमारी नाहिं॥ तातेमोहिं महतभोशर्म। प्रापतचिरकारी सहधर्म॥ दोहा॥ तदनन्तर गाथा कहत गौतमभो यह ताहि। चिरकारीजे पुरुषहैं तिनमें ये गुणचाहि। मनोहर॥ मित्र ताहि राखै चिरकाल। मित्रमाहिं धरिप्रेम बिशाल॥ शीघ्र न तजैकरै जोकाज। करिबिचार हियमाहिं दराज॥ भीष्मउवाच॥ दोहा॥ सुत कीजो चिरकारता तासों अतिही हर्ष। पावत भो गौतम सुमुनि मेधावत उत्कर्ष॥ सोरठा॥ सर्बकार्य्य केबीच चिरकारी लौंपुरुष बर। निश्चय करे निभीच चिर दिन लौं दुख लहत नहिं॥ कीन्हे प्रथम बिचार कार्य्य माहिं चिरकाल लौं। भूपति बुद्धि अगार होत न पश्चात्तापहै॥ दोहा॥ आश्रममें बहु दिवस रहि सुतसह गौतमपर्म। जात भये सुरलोकको मेधा ओकसशर्म॥

इतिशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेचिरकारिकोपाख्यानोनामाष्टसप्ततितमोऽध्यायः॥

बैशम्पायनउवाच॥ दोहा॥ परम अहिंसा धर्म्म है हिंसा कल्मष पर्म। भीषमसों वृत्तान्त यह सुनिकै पूर्व सुकर्म॥ दुर्लभ गुणि भूपतिनको परम अहिंसा धर्म। फेरि प्रश्न यह करत भो नृप कौन्तेय सुकर्म॥ युधिष्ठिरउवाच॥ किमि सुप्रजा रक्षणकरै भूप किये बिनघात। जानि श्रेष्ठ अतिमैं तुम्हैं पूंछतहौं हेतात॥ भीष्मउवाच॥ कहत एक प्राचीनहौं यहि प्रसंगके माहिं। बर इतिहास महीप सुनु पाण्डुसुवन मम पाहिं॥ द्युमत्सेन भूपाल अरु सत्यवान सुत तास। तिनको है सम्बाद नृप तिहि माहीं मति-रास॥ रामगीती॥ नृप द्युमत्सेन सुकह्यो ऐसे सत्यवानहिं बैन। ये दण्डयजन तुम देहु इनको दण्ड तात सचैन॥ ये बचन सुनिकै कह्यो ऐसे सत्यवान सुजान। ये दण्ड्यहैं पै इन्हैं देहु न दण्ड तुम बलवान॥ बध नामजो यह धर्म सो नहिं धर्म है हे

तात । यहिमाहिं हिंसा होति है सो पापहै बिख्यात ॥ द्युमत्सेनउवाच ॥ हैं योग्य बधके चौर इनको होयजो बध नाहिं । तौकहैंगे पर बस्तुको निज पागि अधरम माहिं ॥ नहिं लोकवारो कार्य केहू चलैगो हे तात । ह्वै निडर करिहैं उपद्रवको चौर गण बिख्यात ॥ सत्यवानउवाच ॥ हैं बिप्रके आधीन तीनिहुं बर्णवारेकार्य । जो दण्ड देहैं भूपतिन तौ कहतहैं बरआर्य ॥ बिन बिप्रही सब कार्य करिहैं औरहू हैं तौन । जो उलंघत बिप्रबच तेहि पर्म दुर्मति भौन ॥ सुनु ताहि देनो दण्ड भूपहि उचितहै हेतात । सिद्धांतहै यहि माहिंशंका नेकुनाहिं सरसात ॥ गुणिदेय ऐसो दण्ड तामें होयहिंसा नाहिं । यहकह्योहै मैं तुम्हैं हे अवगाहिकै मनमाहिं ॥ जिहि चौरको नृपहनतहै तिहिचौरके जनजौन । ते सर्बमारेजातहैंतिहिभूपसोंबलभौन ॥ दोहा ॥ यातेबधकीजैनहींमार दीजिये भूरि । तिहिसों डरि नितहीरहै चौरकर्मसों दूरि ॥ करिहौंमैं चोरीन अब जब इमिकहै सुचोर । तबताको नृपदीजिये तजिकहि बचन कठोर ॥ द्युमत्सेनउबाच ॥ रामगीती ॥ हेसुनहु सुत मर्य्यादसेती जनहि दीन्हेदण्ड । लहि समय होतन पापहै होहोत धर्म अखण्ड ॥ हैं है सनातन धर्मयह यहिमें नहींहै पाप । सब युगन माहीं करत आये बिज्ञभूप कलाप ॥ बिनहने मानत चोर हैं नहिं करत चोरीफेरि । यहितेन तजिये चौरकी अपराधता कोहेरि ॥ हे अल्प जिनको द्रोह औ है अल्पक्रुध मृदुपर्म । अरु सत्यही निति कहत ऐसे जे महीप सुकर्म ॥ तेराज्यके आनन्द को नहिंहोत प्रापततात । नहिंहोत कबहुं प्रताप तिनको भानु सम बिख्यात ॥ जब ताड़नाको लहतहैं तबकहत ऐसेबैन । हम करैंगे चोरीनते पुनिकरत दुर्मति ऐन ॥ सत्यवानउबाच ॥ जो हनन हीको चौरको तवहृदयहै सिद्धान्त । नरमेधके मिसिमारि तौतू करि बिचार नितान्त ॥ जोरहै तत्पर धर्ममें नृपप्रजाहू तौसर्ब । नृपश्रेष्ठके आचरणकोहै करति सरति अखर्ब ॥ जोचलत आपु

न धर्मपथमें ताजि प्रमादहि भूरि। औरहि चलावन हैंसततोको देखिकै जनदूरि॥ जो कियो चाहै दूरिअघ सो प्रथम आपुहि दण्ड। दैफेरि बंध्वादिकहि पीछे प्रजहिदेय अखण्ड॥ जहँ लहतपापी दण्डनहिं तहँबढ़त पापमहान। ध्रुवधर्म लघुता लहत हैं जन कहतहैं मतिमान॥ दोहा॥ पूर्व पितामह हौं कह्यो मोकोयह वृत्तान्त। विप्र अहिंसा धर्म इमि कहेनृपनको दान्त॥ जामेंहिंसा होयनहिं ऐसो शासनभूप। देय प्रजाको तातसुनु गुणिकै धर्म अनूप॥ सतयुग को यहधर्म है कह्योतुहौ हम जौन। यामें तत्पर रहत जे पावत आनँद तौन॥ रामगीती॥ वरधर्मवारी षोड़शी नृपकला है रहिजाति। कलि अन्त में क्षितिकन्त सुनुवर और सर्ब नशाति॥ मनु कहत स्वायम्भूसु ऐसे अहिंसा जो धर्म। निततहि धारणकरे रहिये सुखद गुणिकै पर्म॥

इतिमोक्षधर्मेद्युमत्सेनसत्यवान्सम्बादेएकोनाशीतितमोऽध्यायः ७९॥

युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ धर्म जौन गार्हस्थ अरु योगधर्मअभिराम। श्रेयदहै इनमाहिं को कहोमोहिं बुधिधाम॥ भीष्मउवाच॥ येजोदोऊ धर्म हैं देतमहत फलपर्म। साधु करत आचरणइन दोउनको गुणिमर्म॥इनदोउनको कहतहौं गुणिकैतुम्हैं प्रमान। मनको करिएकाग्रसुनु कुन्तीसुवनसुजान॥इहिप्रसंगमेंकहतहौं यक इतिहास अनूप। गोको औमुनि कपिलको हैसंबादसुभूप॥ रामगीती॥ नृपनहुष जोसोजानि करिकै वेदके वरवैन। गोकाज त्वष्टाके सुहनतो गउहि भोवलऐन॥ भोकपिल मुनितिहि गउहि देखत सत्यवान अनूप। सोनहुष नृपकी करत निन्दाभयो तहँ सुनुभूप॥ तिहि गऊमो ऋषिस्यूमरस्मी विज्ञकरि सुप्रवेश। इमि कहनलागो वैनसों हे कपिलके शुभवेश॥ जोश्रुतिहि की तू करत निन्दा और तोका धर्म। जेतपस्वी विज्ञहैंवर तेसदाहि सुकर्म॥ सुनुवेदके मानत प्रमाणहि अप्रमाण कवौन। जोवेद माहीं लिख्योहै सब उचित करिवो तौन॥ कपिलउवाच॥ मैं वेद

की नहिं करत निन्दाऔ नराखतदक्ष । सम बिषम मैंनहिंकहत कबहूं वेदबैनहिं स्वक्ष ॥ हैंआश्रमी जे सर्ब तिनके भिन्न २ सुधर्म । पैकियेते निष्काम एकहिहोत सुफल सुकर्म ॥ जिमिपरिब्राजक परमपदको प्राप्तहोत सुजान । तिमि ब्रह्मचारी गृही त्यौंही बानप्रस्थ सुठान ॥ येचारि आश्रम जौनहैं तेचारिमारग स्वक्ष । सुनुपरम पदको जायबेके बिघ्न रहित प्रतक्ष ॥ पैसुनो संन्यास मारग गहेशीघ्रहि जात । अरु ब्रह्मचारय आदिजेहैं तीनमार्ग बिभात ॥ तिनको गहेसों शीघ्रता सो परमपद नहिं लेत । हैचारिहुनको भेद इतनो गुणत बुद्धि निकेत ॥ दोहा ॥ करै कर्मयह जानिकै बेदबिहितजेसर्ब । पैजोहै संन्यास सोउत्तम परम अखर्ब ॥ रामगीती ॥ सुनुजो अहिंसा शास्त्रताते प्रकट भूरि सुकर्म । तुमकहाहिंसा शास्त्रमेंफल लख्यो उत्तम धर्म ॥ स्यूमरश्मिरुवाच ॥ जो चहै स्वर्गहि करै बिधिवत यज्ञसो अवदात । यह सुफल हिंसा शास्त्रकोहै कपिलमुनि बिख्यात ॥ अजअश्व मेष सुगौपक्षी बनौषधि बहुधर्म । अरुग्राम्य औषधि यज्ञ साधनसर्ब येसहशर्म ॥ बधकिये यातेयज्ञ माहीं होतहिंसा नाहिं । बिधिकरी पूजा यज्ञसेती सुरनकी भूमाहिं ॥ गऊ अज अरुमेष मानुष अश्वगर्दभ जौन । अश्वतर येग्राम्य पशुहैं कपिलमुनि मति भौन ॥ सिंहऔ बाराह बारण ब्याघ्र बानर ऋक्ष । अरु महिष येहैं पशूबनके सत्य मुनिबरदक्ष ॥ येयज्ञ साधन ताहि प्रापत होहिं जो अवदात । तौइन्हें उत्तमजानिये हम सुन्यो पूरबख्यात ॥ जनयज्ञ करता लहत स्वर्गहि औपशू औसर्ब । ये यज्ञमाहीं जातहोमे सहबिधान अखर्ब ॥ पशु वृक्ष लतिका पयस दधि घृत भूमिहबि दिशिकाल । ऋक् साम औ यजु बेदत्रय यजमानबिज्ञ बिशाल ॥ अरुसुनो श्रद्धा औषधी औसत्रहों सुकृशान । येयज्ञ केसब अंगहैं अरुयज्ञजो अभिरान ॥ सोलोक थितिको मूल है बर कपिलमुनि बुधिधाम । बर आज्य सोंअरु दुग्ध दधिसोंअरु

त्वचासों पर्म। अरुवालसों अरु शृंगपदसों गौमखहि महशर्म॥ जिमि करत पूरण तिमिहि सब अश्वादि पशुशुभ ठान। मख करत पूरण अंगअपने सो सुनो मतिमान॥ दोहा॥ पशुअश्वा-दिकहैं बने यज्ञहि काजैसर्व। यातेइनको हनतहैं मखमें मनुज अखर्व॥ कोऊकाहुहि हनत नहिं करत सर्व मखकाज। वध अश्वादिक पशुनको निश्चय बुध शिरताज॥ कियेकराये विधि सहितयज्ञहिप्रज्ञमहान। स्वर्गलोकमें प्राप्तह्वै पावनमोदसुजान॥

इतिशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेगोकपिलसंवादेऽशीतितमोऽध्यायः ८०॥

कपिलउवाच ॥दोहा॥ दृश्य पदारथ जौनहैं तिनको लखतहमेश। कर्म मार्गको छोड़िकै संन्यासी शुभवेश॥ प्राप्तहोतहैं ब्रह्मको काहूलोकहि माहिं। महतपराक्रम सों सुनि जुलहत व्यतिक्रम नाहिं॥ रामगीती॥ जेसर्वबन्धनसों छुटैहैं होयकै निर्द्वन्द। तेरहित ह्वै सबपाप सेतीभये फिरत अमन्द॥ जेज्ञानमें नित रहततत्पर शोकको तजिसर्ब। औरजो गुणछोड़ि करिकै जानि दुखद अ-खर्ब॥ तिनजननकी जेगतिहिपावत मनुज बर सुखदाय। गृह धर्ममेंका प्रयोजन तिनजननको दुखदाय॥ स्यूमरश्मिरुवाच॥ तुम कहतहौ सिद्धान्तही पैगृहीविन अभिराम। निर्वाह संन्यासीनको नहिं होतहै बुधिधाम॥ निनिमातकेहैंरहत आश्रितपूज जैसीभां-ति। तिमिगृहाश्रमके रहत आश्रित और आश्रम पांति॥ है गृहस्थाश्रमही सुनो सब धर्मकेरो मूल। सुर पितर पावत गृह-स्थाश्रम सोंहि तृप्ति अतूल॥ नहिं प्रजाको उत्पन्न करिबो और आश्रम माहिं। जो गृहाश्रम नहिंहोय तोमुनिहोय वर्षा नाहिं॥ जोकहौऐसे होति मोक्षन गृहाश्रम केबीच। तोसुनौ जेनहिं करत विधिवत गृहाश्रमहि निर्भीच॥ तेलहत मोक्षन आलसी औ जेन श्रद्धावान। अरु जे पगे कामादिमाहीं रहत नित्य अजान॥ संन्यास बिनहै होतिमोक्षन कहतजे इमिबैन। यह कपिलमुनि सिद्धान्त जानोते सुपंडितहैन॥ बरऋषिनकोअरु सुरनको अ-

रु पितृगणको पर्म । जन्मतहि जनको होतहै ऋणत्राय प्राप्त सशर्म ॥ बिधिसह पढ़ते ऋषिनको ऋणत्र्यो कियेते यज्ञ। ऋण सुरन केरो सर्व छूटत सुनो मतिबरप्रज्ञ ॥ श्रौकिये सुत उत्पन्न छूटत पितरको ऋणजौन । जोगृहाश्रम नहिंकरै तोयेछुटै ऋण किमितौन ॥ यमदूत सोंते लहत दण्डन करतमख सबिधान । जे पशुसहित उत्तमलोककोहैं चलेजात सुजान ॥ कपिलउवाच ॥ जे कर्मतजिकै धारि धीर्यहिधरतहैं संन्यास । रागादि मलसों रहित ह्वैकै पाय सुमति प्रकास ॥ तेनिर्बिकार सुब्रह्म भावहि लहत महत सुजान । पथमाहिं तिनकेसुरहु जायन सकत उग्रमहान॥ दोहा ॥ चारिद्वारहैं पापके गुप्तकरैंते सर्ब । ब्रह्मभाव कोहोतहै जबजन प्राप्त अखर्ब ॥ यकबाणी यकजठरत्र्यो यक उपस्थ औ हस्त । येप्रतिबन्धक ज्ञानके जानत सुबुध समस्त ॥ रामगीती ॥ कटु बचन कोनाहिं बोलिबो औवृथा बकिबो नाहिं। अरु छोड़िबो पैशून्यकोजो ग्लानि गुणि मनमाहिं ॥ अरुछोड़िबो मर्याद सेती सत्यनित्य सगौर । ये बागद्वारहि गुप्तकारक सर्ब बुधशिरमोर ॥ अरु अलोलुपता महत अशनाहिं छोड़िबो अरुजौन । येजठर द्वारहि गुप्तकारकगुणो बर मतिभौन ॥ अरुत्यागजो परदारकोहै सदाबुद्धि अगार । सोउपस्थद्वारकोहै गुप्तकार सुढार ॥ हैबाहु द्वारहि गुप्तकारक छोड़िबो हिंसाहि । जोकरत चारोद्वार गुप्तन बुद्धिसों अवगाहि । बरकहत आरजहोततताके सर्ब कारज व्यर्थ। कछुहोतहैनाहिं यज्ञतपसों प्रज्ञपरम समर्थ॥ स्यूमरस्मिरुवाच॥ हैकर्मकरिबो जौन अरुजो करमकोहै त्याग। इनदुहुनमें पथकौन सोहै श्रेष्ठकहु बड़भाग॥ कपिलउवाच॥जेबिज्ञ तवसम परमहैं अज्ञान नहिं तिनपाहिं। तेगुणत श्रेष्ठ अश्रेष्ठ कोहैं आपुही हिय माहिं ॥ स्यूमरस्मिरुवाच ॥ हैस्यूमरस्मि सुनाम मेरो कपिलमुनि अवदात। मैंश्रेय कीकरि कामना हियमाहिं परम सशात ॥ बरज्ञानलहिबे काजआयो इहांहौं तवपास। अति कृपाकरिकै कहौ मोको आपु

सहित हुलास ॥ मैं बादकी इच्छान करिकै तुम्हैं पूछत अत्र। मुनि आपुसेहौ आपुही गति तुम्हारी सरबत्र ॥ जोयुक्तहै शुचि बुद्धि सों बर चिदाभास अमन्द। तुम करत तासु उपासनाहौ कपिल मुनि निर्द्वन्द ॥ की बुद्धिकरिकै कियो निश्चय तासु ऐसो जौन। तिहिकी सुकरत उपासनाहौ आपु प्रज्ञाभौन ॥ मैं छोड़ि करिकै तर्कशास्त्रहि बेद कर्महि पर्म। हेजानतोहौं सहित बिधि बर बुद्धिसों गुणिपर्म ॥ जोसबिधि आश्रम माहिं तत्पर रहैमानव स्वक्ष। तो बेद बिहित सुकर्म सिद्धिहि होत प्रापत दक्ष ॥ बहु पूर्वपूर्ब सुकर्मवारी बासनासों माम। यहिभूरि भवसागरहि नहिं तरि सकत है बुधिधाम। हम शिष्य हैं तव कृपाकरिकै ज्ञानको उपदेश। तुम कीजिये बर कपिल मुनिहो ज्ञानमान विशेश ॥ दोहा ॥ चारोंजे हैं बन अरु चारों आश्रम जौन। तिनको पर आनन्दको साधनजो मतिभौन ॥ तामेंजो कछु न्यूनहै सो तुम देहु बताय। ताकी पूरणता नहीं हमैं प्राप्तसुखदाय ॥ चरणाकुलक ॥ जे ज्ञानमें जन रहत तत्पर साधनाके बीच। लगिताहि देत छुड़ाय जगते ज्ञान परम निभीच ॥ बर ज्ञानतेजो रहितहैं आचरण मेधाधाम। सोदेत अतिही क्लेश है बहु प्रजाको मुनि माम ॥ तुमहौ सुज्ञानी औ निरामय पर्म उत्तम स्वक्ष। अद्वैत भावहि पायबो सो अतिहि दुर्लभ दक्ष ॥ है होत कबहूं प्राप्त काहूकोहि निश्चय जानु। संदेह यामें है नहीं सिद्धान्त कहत महानु ॥ भोस्वच्छ तत्त्वज्ञान काहूको नहीं अवदात। जयचाहि अपनी करत ब्यर्थहि बाद है विख्यात ॥ जन ह्वै रहे कामादिके वशमाहिं जगमें सर्ब। यहिते सुतिनको किये वशमें अहङ्कार अखर्ब ॥ जे करत इच्छा परमगति को लहनकी अभिराम। बहु शुभाशुभजेकर्म तिनको देततजिबुधिधाम ॥ स्यूमरश्मिरुवाच ॥ जो कह्योहै हम आपुसों सो शास्त्रको अवगाहि। बिन शास्त्र जाने प्रवृत धर्म सुहोत है मुनिनाहिं ॥ जो न्याय है आचार जग

में शास्त्रहीते सर्ब । है प्रवृति कौनो नहीं जानो बिना शास्त्र अखर्ब ॥ बरशास्त्रसों जेराहितमानै व्यक्तहीं को प्रज्ञ । है बुद्धि सेती हीन ऐसे जौन मानव अज्ञ ॥ तेतमोगुणसों युक्त है संसार है बुधराज । हम कह्योहै अवगाहि तुमको तनि सुबुद्धिदराज ॥ जो बेदमाहीं लिख्योताको करत आश्रय नाहिं । अनुमानहीसों कहत सो किमि गहै मनके माहिं । जो कहत होसो कुटुम्बीको परमदुष्कर कर्म । यहिमाहिं लागे व्यर्थ कैहै कर्मकाण्ड सशर्म ॥ बर बेदवारी कृपा पीछे भये ते अवदात । सुनु नास्तिकता आय जैहै कपिलमुनि बिख्यात ॥ हमकह्यो जो यह आपुसों अवगाहि करिके ताहि । तुम कहौ हमको और तुम सो परतहै नहिं चाहि ॥ दोहा ॥ औ जैसी बिधि मोक्षको जानत तुम बुधिधाम । तैसेही हमको कहो करिके कृपा ललाम ॥

इतिशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेगोकपिलसंबादेएकाधिकाशीतितमोध्यायः ८१॥

दोहा ॥ स्यूमरश्मि हम बेद नहिं पीछे करत सुजान । जानत हैं हम बेदही लोकन को सु प्रमान ॥ शब्द ब्रह्म है एक अरु परब्रह्म है एक । कर्मोपासनकाण्ड अरु शब्दब्रह्म सबिबेक ॥ परब्रह्म निरुपाधि जो नित्यानन्दाब्यक्त । शब्द ब्रह्मके माहिं जन जो बुधहैंआसक्त ॥ सो जन अति उज्ज्वल भये क्रमसेती मतिगेह । परब्रह्म को होतहै प्रापत निस्संदेह ॥ गर्भाधानादिक सरब संस्कार जे स्वक्ष । तिनसों जोहैं युक्तजन मेधावान सुदक्ष ॥ सो अधिकारी ज्ञानको होत और नहिं कोय । ज्ञानलहेते ब्रह्म को प्राप्त होत सुख भोय ॥ गुणिकै कर्म अनन्त में अत्र कहतहौं तोहि । कर्महिं में न लगो रहै दिव्यदृष्टिसों जोहि ॥ ज्ञानारथ साधन करै तजि कामादिक सर्ब । गुणिकै बिमलो बुद्धिसों दायक दुःख अखर्ब ॥ यज्ञादिक सबही करै पै फल आशा नाहिं । मनमें राखै आपने जन मतिमान सदाहिं ॥ संन्यासाश्रम मुख्यहै तीनों आश्रम जौन । ते साधन संन्यास के जानो प्रज्ञा

भौन॥ तीनों आश्रम विधि सहित कीन्हे उज्ज्वल होन। तदनु किये संन्यास वर ज्ञान सु करत उदोत॥ निर्विकार जो ज्ञान है होत प्राप्त जब पर्म। ब्रह्मभाव तव लहत जन स्यूमरश्मि सह-शर्म॥ तीनों आश्रम जिहि किये संन्यासाश्रम काज। ब्राह्मण कहिये ताहि वर प्रज्ञावान दराज॥ सन्तोषी त्यागी परम ते सु ज्ञानके थान। और न कोऊ है गुणी जगके माहिं महान॥ सो जो परपद लहनकी तर्क करै हिय माहिं। परपद पावै छूटि तो जगते संशय नाहिं॥ स्यूमरश्मिरुवाच॥ त्यागि फलाशा को सुनो जौन करत है कर्म। अरु जे जन संन्यास में प्रवृतभये सहशर्म॥ तिन दोउनकेमाहिं जन श्रेष्ठ कहोहै कौन। वक्ता आपु महानहौ कपिल ज्ञानके भौन॥ कपिलउवाच॥ दोउनमाहीं श्रेष्ठ है त्यागी मनुज सुजान। त्यागीही आनंदको प्रापतहोत महान॥ स्यूमरश्मिरुवाच॥ तुमको निश्चय ज्ञान में गृहिहि कर्म्मके बीच। जाको निश्चय है जहां तहहीं शरम निभीच॥ निश्चयही जो मुख्यहै तौभो कहा बिशेश। ज्ञान माहिं वर कर्मते कहो मोहिं शुभबेश॥ कपिलउवाच॥ शुद्ध सु होत शरीर है कर्मन सों अभिराम। पै पावत कैवल्य जन ज्ञानहि सों मतिधाम॥

इतिशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मे गोकपिलसंवादेद्वयशीतितमोऽध्यायः ८२॥

युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ मोक्षधर्म जिन जननसों होय सकत नहिं तात। तिनको कहा त्रिवर्ग में कहो श्रेष्ठ अवदात॥ भीष्म उवाच॥ अत्र एक इतिहास हौं कहत पुरातन पर्म। ताहि सुनो एकाग्रकै मनको तात सधर्म॥ कुण्डधार निज भक्तको कीन्हेहौ उपकार। तिहिको है वृत्तान्त नृप ताके माहिं उदार॥ कोऊ निधनी बिप्रयक भूप मखेच्छावान। धर्म करौंजो धनमिलै यह गुणिकै मतिमान॥ अतिही दारुण बिधि सहित करत भयो तप पर्म। मनको थिरता माहिं करि सो ब्राह्मण सहशर्म॥ चरणाकुलक॥ महती भक्ति हियेमें सो धरि। देवतानको पूजनभो

चरि ॥ पैनकहूं नृप पावतभोधन । महाविज्ञ बरबिप्र तपोधन ॥ तदनन्तर चिंता करिकै अति । करत विचार भयो इमि बरमति ॥ ऐसो कोऊ होय सुदेवत ॥ होय प्रसन्न शीघ्रजो सेवत ॥ तदनन्तर ब्राह्मणसों लेखत । कुण्डधार जलदहिभो देखत ॥ ताहि देखि इमिभयो बिचारत । करहि श्रेयमो लाखिकै आरत ॥ रहत नगीच देवता के यह । देहै धनबर शीघ्र कृपासह ॥ तदनन्तर बिधिवत सों पूजत । भयो ताहि तहँ सुबचन कूजत ॥ थोरहि काल माहिंसो जलधर । होतप्रसन्न भयो करुणाकर ॥ ब्राह्मणके उपकारहि कारक । बचन कहतभो सोजलधारक ॥ तदनन्तर कुशशाई सोबर । ब्राह्मण स्वच्छ परम मेधाधर ॥ दोहा ॥ जलधरके सुप्रभावसों स्वप्न अवस्था माहिं । सब भूतनको देखतो भयो आपने पाहिं ॥ माणिभद्र को लखतभो स्वप्नतौनही बीच । अति तेजोमय छबि महाधारे परम निभीच ॥ आज्ञातेसो देवकी याचकको फलदेत । होतलखे आनन्द अति ताकोदया निकेत ॥ जयकरी ॥ शुभहि करतहैं कर्म जौन जन । तिन्हैं देतहैं देव राज्य धन ॥ करत अशुभहैं जेजन दुर्मति । तिनके छीनलेत करिरुट अति ॥ यक्षणके देखतसो जलधर । कुण्डधार नामाबर छबिघर ॥ करतप्रणाम भयो भूपैपरि । देवन के आगे मुदको धरि ॥ तदनन्तर मणिभद्र महामति । देवनकी आज्ञाते करिरति ॥ कुण्डधार जलधर छबि ऐनहि । सोंहै कहत भयो इमि बैनहि ॥ तोहि कहा इच्छाहै तुरकहु । अत्रनेक संकोच नतूगहु ॥ कुण्डधारउवाच ॥ जोप्रसन्नहौ देवभये तुम । देहु कृपाकरि जो मांगेंहम ॥ मेरो महाभक्त ब्राह्मण यह । याहि कृपाकरि कीजे सुखसह ॥ सोसुनि माणिभद्र बोलो पुनि । देवनकी आज्ञा मनमें गुनि ॥ मणिभद्रउवाच ॥ उठुउठु कुण्डधारहे जलधर । धनअर्थी जोब्राह्मण यहबर ॥ तौतुम देहुचारु याकोधन । अतिही आनन्दित करिकैमन ॥ ब्राह्मण चाहतहै धन जेतिक । अबहीं चारु

देतहौं तेतिक॥ कुंडधार मानुष्यहि गुणिचल। ब्राह्मण कीमति कोसुनु वरबल॥ जासु प्रशंसा कोबुध गावत। ऐसे तपमें भयो लगावत॥ कुंडधारउवाच॥ धनचाहतहम ब्राह्मण काजन। रत्न पूरणा भूमि दराजन॥ रहों धर्म में नित्यहि तत्पर। यह सुविप्र हम मांगत यहबर॥ मणिभदउवाच॥ दोहा॥ रहोधर्मके माहिं यह तत्पर नित्यहि बिप्र। धर्म्मनके जेपरम फल याहि मिल्यो तेक्षि-प्र॥ भीष्मउवाच॥ दुर्लभ इच्छित पायबर कुण्डधार सहहर्ष। होत भयो भूपाल मधिसुनु अरिदर उत्कर्ष॥ तदनन्तर तिहि ब्राह्म-णहि कुंडधार भोदेत। जीरण चीर सुधीरहे परम सुधर्म निकेत॥ तिहिकों लखिके दोष गुणि जलधर में लहिग्लानि। जाय तपस्या करतभो बनके माहिं महानि॥ अरिल॥ देव अतिथिसों रहेमूल फल। बाकी तिन्हें भक्षिके निर्मल॥ किये तपस्या ब्राह्म णकी अति। होती धर्म मध्यमेंदृढ़ मति॥ त्यागि मूल फलको सो मतिधर। पर्ण अहारी होतभयो बर॥ तदनन्तर पर्णहुको तजि करि। जलाहार भोधीरजको धरि॥ तदनु सुभक्षत भयो स्पर्शन। त्यागि नीरहूको बहु बरसन॥ तासुप्राण छीजत भो तबहुंन। बहुतकालमें ताकी बरगुन॥होतीभई सुदिव्यदृष्टि नृप। सह बिधान बर करतकरत तप॥ ताकी होति भई ऐसी मति। कछू कालमें तहँबर नरपति॥ मांगे कोऊ जोमोसों धन। ताहि देउँतौके प्रसन्नमन॥ मिथ्या होयनहीं बाणी मम। यह बिचारि कै तदनु सुउत्तम॥ फेरि तपस्या करत भयोवर। सहित विधान महा मेधाधर॥ तदनु विचारत भो मनमें यह। ब्राह्मण तोनमहा आनँद सह॥ जोमैं राज्य देहुं काहुहि अब। ताहि मिलैतो सह समाज सब॥ मिथ्या होय नहीं मम भाषण। ब्राह्मण कहौं मिलै तुरताक्षण॥ तदनु सुकुण्डधारभो दर्शन। देतो ताहि प्रकट सह हर्षन॥ कुण्डधारकी पूजा सह विधि। करतभयो सो ब्राह्मण बुधिनिधि॥ तदनु कहतभो ऐसे जलधर। तिहिब्राह्मण कोभूप-

ति बरकर ॥ दिव्यदृष्टि जो पाईतैं अति । तिहिसों तूलखु भूपन कीगति ॥ औलोकनको करु अवलोकन । सहित चराचर के बहु थोकन ॥ दोहा ॥ तदनन्तर सहसन नृपति भयो नरकके बीच । दिव्यदृष्टि सों देखतो ब्राह्मण तौन निभीच ॥ कुण्डधार सों कहत भो तदनु ताहि इमिबैन । जोतूदुखको प्राप्तभो मोहिं पूजि मति ऐन॥तौमोको पूजे कहा तोहि भयो फलपर्म । औतेरो उपकार हमकीन्हों कह्यो सुकर्म ॥ देखु देखुतू फेरिद्विज कामवान जन जौन । नरकहि पावत कामना करैसु किमि बुधिभौन ॥ देव तानके बचनते कामादिक जेसर्व । बिघ्न करतहैं जननके प्रापत होय अखर्व ॥ देवतान कीबिन कृपा धार्मिक होतन कोय । परम धर्म प्रापत भये आपुहि कोतूजोय॥ तपके स्वच्छ प्रभावते महत राज्यधन भूरि । दीबेकी इच्छा करत जनहि मोदसोंपूरि ॥ देव विघ्न जोनाहिं करैंतौ धार्मिक जनहोय । देहिं जगत मेंजनन कोजो मन आवै सोय ॥ भीष्मउवाच ॥ चौपाई ॥ तदनु सुबिप्र जोरि कै पाणी । इमि जलधरहि कहत भो बाणी ॥ कीन्ही आपु अनुग्रह भारी । मोऊपर बर पर उपकारी ॥ मैं तव पूर्व असूया कीनी । मतिसों काम लोभसों भीनी । तिहिको तुम मनमें न बिचारो । ताहि माफ करिकै सुबिसारो ॥ ये सुबचन ब्राह्मणके सुनिकै ।कुण्डधार जलधर बर गुणिकै । क्षमा कियो तहँ ऐसे कहिकै ॥ मिलिकै सो ब्राह्मणसों चहिकै ॥ भयो सुअन्तर्द्धान तहाहीं । फेरि लखि परचो बिप्रहि नाहीं ॥ दोहा ॥ तदनन्तर सो फिरतभो सब लोकनकेबीच । कुण्डधारकी लहि कृपातपसों भयो निभीच ॥ करन लग्यो संकल्पजो हौंन लग्योसो सिद्धि । फिरन लग्यो आकाशमें लहिकै तपसों सिद्धि ॥ सन्त बिप्रअरु देवता औ चारणजो यक्ष । हुलासित ह्वै पूजा करत धार्मिक जनकी स्वक्ष ॥ कामिनकी औ धनिनकी पूजाकरत कबौ न । याते ।... निनते श्रेष्ठ हैं धार्मिकजन मतिभौन ॥ मोक्षारथ साधन

नहीं होयसकैजो तात। ह्वैतत्पर निति धर्ममें रहिहैं ह्वैअवदात॥
इतिशांन्तिपर्वणिमोक्षधर्म्मेकुण्डधारोपाख्यानेत्र्यशीतितमोऽध्यायः८३॥
युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ धर्मारथजो यज्ञहै तासुरूप कहुमोहिं॥
तात सुनो विख्यात अब कृपा दृष्टिसों जोहि॥ भीष्मउवाच॥ उंछ-वृत्ति वरविप्रको मैं वृत्तान्त अनूप। नारदको गायो तुम्हैं अत्र कहतहौंभूप॥ नारदउवाच॥ काव्य॥ विदर्भनामा देशमाहिं यकविप्र सुउंछ वृत्तिवारो॥ मनके माहिं विष्णु पूजाको करतविचार भयो भारो॥ सूरजपर्णी औसुवर्चला ताको शाक भक्षिफीको। औ सावाँको भक्षि तहांसो रहतहुतो अतिवरधीको॥ सावां अरु सो शाक बिष्णुको अरपे सो नृप दिवकेरो। साधनभयो अहिंसा सेतीआनँद दायक बहुतेरो॥ परम निर्मला ताकी नारी पुष्कर धारिणि नामाही। भई कृशाहीव्रत कीन्हेंसो तबहूं अति अभि-रामाही॥ दोहा॥ मोरपुच्छ अरु परणजे धरे वस्त्रही तास। सोइ करतिजो पतिकहत धारि शापकी त्रास॥ आज्ञा पतिकी पायकै पुष्कर धारिणि बाल। त्यागि फलाशा बिविध मख करती भई बिशाल॥ होयन हिंसा जीवमें करिकै यह सुविचार। पशुबनायकै पिष्टको हनती भईसो दार॥ सुनहु तात यक मृगहुतो तिहि अटवीके माहिं। ब्राह्मण कोसो कहतभो ऐसे ह्वैकैपाहिं॥ अंगहीनभो यज्ञ तवहुते पिष्ट पशुप्रज्ञ। याते मैं तोको कहत विप्र परम धर्मज्ञ॥ जो नहिं धन तव पासतौ मोको हनि सविधान। स्वर्गलोकको जाहु तू सहतिय समुद सुजान॥ तदनन्तर तिहि यज्ञमें सावित्री साक्षात। होय कहत ऐसे भई तिहि ब्राह्मणको तात॥ तोसों यहमृग कहतसो करि सुविधान समेत। सावित्री के बैनये सुनिकै बुद्धि निकेत॥ सहवासीहै यह सुमृग कहत भयो इमिबैन। याते हेसावित्रि सुनु याको हनिहौंमै न॥ ब्राह्मणकेयेबचन सुनि सावित्री अचलेश। मख पावकके माहिं तहँ करती भईप्रवेश॥ फेरिहु मृगकोकहतपै मान्यो ब्राह्मण नाहिं।

कहतभयो इमि मृगहि तू खशो रहुन मम पाहिं ॥ ये ब्राह्मणके-
बचनसुनि हरिण अष्टपद जाय । कहतभयोइमिआयकै फिरि
बिप्रहि नरराय ॥ मोहिंमारिकै सहित बिधि हुति तू मखकेबीच ।
सँग गतिको हौं प्राप्तह्वै जासों होहुंनिमीच ॥ दिब्यदृष्टि मैं देतहौं
तोको ब्राह्मणपर्म । तिनसों तू लखु अप्सरा सुखमासनी सशर्म ॥
औ गन्धर्बनके भरे भासों भूरि बिमान । रत्नसोंभूषितभले
देखुस्वच्छ मतिमान ॥ दिब्यदृष्टि लहि हिरणसों दखिबिप्र चि-
रकाल । हिंसाकोयह स्वर्गफल यहतहँ गुन्यो नृपाल ॥ कौनहु
कारण पायकै हरिण होयहे धर्म । बनमें तिहि रहतो हुतो शी-
तादिक सहिपर्म ॥ होकारणहि छुड़ायबे बिप्रहिकहत कुरंग ।
मोको हनि हुति बिधि सहित करु तू यज्ञ असंग ॥ सुनिकुरंगके
बैन ये द्विज यह कियो बिचार । स्वर्गलहौं मैं याहि हनि हुनि
मखमाहिं सुढार ॥ यहबिचारतहि बिप्रको तपभो नष्ट बिशाल ।
हिंसा मखउपकारिका याते नहीं नृपाल ॥ तदनन्तर तिहि बिप्र
सों यज्ञ अहिंसावान । करवावतभो आपुही धर्मसधर्म सुजान ॥
समाधान भो नारिको ब्राह्मण की हे भूप । भये अहिंसा यज्ञबर
सहित बिधानअनूप ॥ अहितहिंहिंसा धर्महे निश्चयजानुसु-
धर्म । परम अहिंसा धर्मसों उत्तम सर्ब सशर्म ॥

इतिशान्तिपर्बणिमोक्षधर्मेयज्ञनिंदानामचतुरशीतितमोध्यायः ८४ ॥

युधिष्ठिर उवाच ॥ दोहा ॥ त्रिबर्गमाहीं धर्मको कही श्रेष्ठता आप ।
मोहिं पूर्ब अध्याय मेंतात सुबुद्धि कलाप । परम उपाय किये
बिना मोक्षहोत नाहिं तात । कह्यो पूर्बसो मोहिं तुमकहु उपाय
अबदात । भीष्म उवाच ॥ पूछनकी सबधर्म औबर कैवल्य उपाय ।
तोहींमेंहै बुद्धिबर बिमला सुनुनरराय ॥ घट करणेमें बुद्धिजोहो-
तसुघट जबसिद्धि । तबन प्रयोजन तासुकछु ऐसेही बुधिनिद्धि ॥
प्रवृति धर्म है साबिधि जो कछुन प्रयोजन तासु । निवृति धर्म
निष्कर्म जबमनमें कियोप्रकासु ॥ एकहि मारग मोक्षको तोहि

कहतहौं तौन। मनकोकरि एकाग्र सुनु कुन्ती सुत मति भौन॥
मनकोजो संकल्पहै ताको छोड़िअखर्ब। करैकामको दूरिऔ क्ष-
मा धारिकै सर्ब॥ दूरिक्रोधताको करै औ आलसको त्यागि। नि-
द्रादूरि करैसुबुध परमबुद्धिमें पागि॥ सावधान तासों करैभयको
दूरि महान। मनलगाय क्षेत्रज्ञमें रोकै श्वास सुजान॥ इच्छाको
अरुद्वेषको तजैधीर्य्यको धारि। तजैलोभऔ मोहको सन्तोषहि
बिस्तारि॥ परमसुतत्त्वाभ्यास में पगिकै आठहुयाम। भ्रमको
औ अज्ञानको करैदूरि बुधिधाम॥ तजै अधर्महि कृपासों औ
अनित्यता जौन। करैसनेहै दूरिनृप तासों प्रज्ञा भौन॥ वायु
रोकसों क्षुधा औ मौन भावको धारि। बहुत वारता को तजै
बिमलामति बिस्तारि॥ करुणासों अभिमानको दूरि करै हे
तात। करै सुदूरि बितर्कको निश्चयते अवदात॥ मतिसों मन
औ वचनको जीतै बुद्धि निधान। मतिको जीतै ज्ञानसों निर्मल
परम महान॥ आतमावारे बोधसों जीतै ज्ञानहिं पर्म। जीवात्मा
के बोधको चित्त प्रकाशसो पर्म॥ यह मारगहै मोक्षको निर्मल
परम अनूप। यापैजे बुधचढ़तते सुखसों पहुंचत भूप॥

इतिशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेयोगचारानुवर्णनोनामपंचाशीतितमोऽध्यायः८५

युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ सब कोऊ हमको कहत धन्यधन्य जग
माहिं। औ हमसों कोऊमहा दुःखित जगमें नाहिं॥ हमदेवतन्कै
दुख लह्योधारेते नरदेह। यातेनरदेहहि गुणयो दुःखरूप बुधिगे-
ह॥ करिहैंवर संन्यासको ग्रहणकबैहमतात। छोड़नकाजैदेहको
दुःखदमहा बिख्यात॥ इंद्रियआदिक सर्बजे तिनकोतजि अभि-
मान। जैहौंमैं आरण्यको कबहे तातसुजान॥ भीष्मउवाच॥ व्याकु-
ल होहुन भूपतुम अन्तवान गुणिसर्ब। कोऊहैन अनन्तयहहै
सिद्धान्त अखर्ब॥ लहिहौ तुम कैवल्यजब ह्वैहै दुखको अन्त।
जोतुम इमि हमको कहो हियमें गुणि क्षितिकन्त॥ मेरोमन ला-
गोरहत नित्यराज्यके माहिं। लहिहौं किमि कैवल्यको तौसुनु

नृपममपाहि ॥ अचल कछूहूहै नहीं यातेबर भूपाल । लहिहौ तुम कैवल्यको आनँद परम बिशाल ॥ साधनकिये समाधिको अल्पकालही बीच । आनँदकोकैवल्यके लहिहौनृपति निभीच ॥ प्राप्तभये जेदेवते दुखसुख तिनमें नाहिं । लागैनिति लागोरहै मोक्षसाधना माहिं ॥ श्यामअरुण रणमेंमिले तद्वतहोतसमीर । श्याम अरुणपै गुणनहीं मारुतको रणधीर ॥ इमिहीदुखसुख युक्तसों भये आत्मा तात । लागत सुख दुखवानपै भिन्नहिहै अवदात ॥ आत्माके गुणहैं नहीं सुख दुःखादिक सर्ब । यातेछेदे जातहैं छेदे गुणत अखर्ब ॥ तमजो भो अज्ञानतेताहिज्ञान सों स्वक्ष । दूरिकरै तब होत है ब्रह्मप्रकाशित दक्ष ॥ आत्मा सिद्ध न होत द्रुत यत्नहु किये बिशाल । याते लागोई रहै बिकल न होय नृपाल ॥ भ्रष्टहोयकै राज्यसों वृत्रासुर बलवान । कह्यो जौनसो अत्रमें तोको कहत सुजान ॥ कहत भये ऐसे बचन शुक्रताहि अवगाहि । भये पराजय तू हिये ब्यथा करत क्यों नाहि ॥ वृत्रउवाच ॥ मनसों महत बिचारकै जगऔ मोक्षहि पर्म । जानतहौं यातेन मैं मुदशुक लहत सुकर्म ॥ बशमें ह्वैकै काल के प्राणी कर्माधीन । नरकमाहिं बूड़तकिते पावत स्वर्ग प्रवीन ॥ जहँरहिबेको कर्म है जितनो तितने बर्ष । रहिकै तहँ पुनि जन्म को प्राप्तहोत शतबर्ष ॥ ऐसेमैं संसारके बीच लखतहौं जीव । कर्मकरै जैसोलहै लाभसुनो मतिसीव ॥ वृत्रासुरके बैनयेसुनिकै शुक्र नरेश । कहत भये वृत्रासुरहि ऐसे बचन बिशेश ॥ असुर होयकै ये बचन तू बोलत क्योंतात । असुर भावके बैनये नाशकहैं बिख्यात ॥ वृत्रउवाच ॥ मैं सुबिजयके लोभसों पूर्बकियो तप पर्म । सो जानतहौं आपुऔ सुमति सु और सुकर्म ॥ मैं तपवारे तेजसों घेरि तीनहू लोक । मारतभोबर आपुको जानि महाबल ओक ॥ सबभूतन के माहिं नहिं जीतिसक्यो कोउ मोहि । कोऊमेरेतेज को सकत हुतो नहिं जोहि ॥ तपसों भो ऐश्वर्य्यहो

ऐसो प्रापत मोहि। सो सब मेरेकर्मसों गयो नष्टह्वै जोहि॥ नष्टभये ऐश्वर्य्य सों प्रातधीर्य को होय। मैं न शोच नेकहु करत हियोज्ञानसों भोय॥ पूर्व सुराधिप समरके समय माहिं अवदात। मोहिं बिष्णु भगवान को दरशनभो हो ख्यात॥ कीन्हेको सुरराजकी आयेहुते सहाय। तेजोमय जिन की महा महिमा जानि न जाय॥ जानततप कछु शेषहै पूरब कृत तिहिमाहिं। कर्म फलहि पूछन करत इच्छा हौं तव पाहिं॥ आत्मा साक्षात्कारकी जो सामर्थ्य महान। तौनकहाहै करिकृपा कहौमोहिं मतिमान॥ किहि ते प्रवृत सुहोत है किहिते जीवत भूत। रहत निरन्तर किहि फलहि करिकै जीव अकूत॥ रहत निरन्तर जिहि फलहि लहिकै जीव महान। सोकिहि ज्ञान सुकर्मसों पायोजात सुजान॥ कुन्तीसुतये शुक्रसुनि वृत्रासुरके बैन। कहतभये मैं कहतसो सुनु सबन्धु बलऐन॥

इतिमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेवृत्रगीताशुपडशीतितमोऽध्यायः॥

उशनोवाच॥दोहा॥ नमस्कारमैंकरतहौं भगवत विष्णुहिपर्म। तासुकृपाकोपायकै कोनहिं होतसशर्म॥ तासुमहातम कहतहौं तुम कोमैं सुखदाय। मनको करि एकाग्र सुनु चंचल ताहि विहाय॥ भीष्मउवाच॥ तिही समयके माहिंतहँ आये सनत्कुमार। तिनको संशय करनको दूरिसुबुद्धि अगार॥ पूजित ह्वैकै दुहुँनसों बैठत भेतेतत्र। आसन अतिही स्वच्छपर गति जिनकी सरबत्र॥ उशना सनत्कुमार को कहतभये इमिबैन। नारायणको वृत्रको कहुमहात्म्य सुखऐन॥ चरणाकुलक॥ सुनिकै सनत्कुमार सुज्ञानी। शुक्राचारय की यहबानी॥ नीके विष्णु महातमवारे। कहतभये बर बचन सुढारे॥ सबजग स्थित विष्णुके माहीं। जाननतासु गतिहि कोउ नाहीं॥ भूत ग्रामको सोयबनावैं। काल पायकै सोइ नशावैं॥ फिरि उत्पन्न करतहैंसोई। यहिवृत्तान्तहि जानतकोई॥ इन्द्रियादिको निग्रह कीन्हें। बुधको बिष्णु परतहैं चीन्हें॥ और

उपाय कियेते भारी। जानि परत है नहिं धनुंधारी॥ जन्म अनेक और ब्यापारै। कीन्हें नहीं स्वच्छता धारै॥ शुद्ध होतहै जनिमें एकै। लहे सुरन हरिको सबिबेकै॥ दोहा॥ ऐसीहै सामर्थ्य प्रभु नारायणकी पर्म। कहीतोहिं अवगाहि हम याको गुणि तूमर्म॥ बृत्रउवाच॥ हरिकीही सामर्थ्यसों जो सबहीहै होत। काहेको तोमैंकरौं हिये बिषाद उदोत॥ तव बाणीमैं श्रवण करि कल्मषसों भोदूरि। मति सों तासु बिचार हौं करत मोदसोंपूरि॥ भीष्मउवाच॥ ऐसे कहिकै बैनबर बृत्रासुर मतिमान। बिष्णुहि अन्तःकरण में ल्याय परम करिध्यान॥ प्रापत परम स्थान को होतभयो तजिदेह। ऐसो हरिके शरणको है प्रभाव बुधिगेह॥ युधिष्ठिरउवाच॥ सनत्कुमार सुबृत्रको कह्यो महातम जास। येईहैं भगवान सो तिनकी हमको आस॥ भीष्मउवाच॥ और नृपनलों मतिगुणे कृष्णहि कुन्तीनन्द। कारण हैं संसारके येभगवान अमन्द॥ निर्बिकार जो ब्रह्महै ताको चौथो अंश। अर्द्धभाग तिहि माहिं है यह केशव यदुबंश॥ अर्द्धभाग जो शेषहै सत्तासेती तास। सबजगतयहहैबन्यो जासुजन्म अरुनास॥ युधिष्ठिरउवाच॥ बृत्रासुर बृत्तान्त सुनि मैं जान्यो यहतात। आत्माकी गतिको लखी बृत्रासुर अवदात॥ आत्माकीगति लखत नहिं राज्यभये तोनष्ट। थिरताको लहतोन कहुं पावत अतिही कष्ट॥ यहि असार संसारसों बृत्रासुरभो मुक्त। अति बिलन्द आनंद जो सो तासों भोयुक्त॥ जिनमें केवल सत्वहै तेनजन्म पुनिलेत। औजिनमें रजतम लहत पुनि पुनि बुद्धि निकेत॥ अशरमको हम शरम गुणि लगे रहत तिहिबीच। ध्यौंकिहि गतिको प्राप्त हम ह्वैहैं तात निभीच॥ भीष्मउवाच॥ पिता पितामह शुद्धहै तव औ तूहू शुद्ध। याते चिन्ता तूनकरु भूपति मनमें उद्ध॥ प्राप्त सुपुण्य प्रभावसो ह्वै दिविमें अभिराम। मानुषताको प्राप्त फिरि ह्वै हौ नृपमतिधाम॥ ह्वैहै सिद्धनमें तदनु गणना

तव भूपाल । तत्पर हौ तुम धर्म में शोच न करो विशाल ॥
इतिमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेसप्ताशीतितमोऽध्यायः ८७ ॥
युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ परम विष्णुको भक्त अरु परम जासु विज्ञान । वृत्रासुर ऐसो महा बली सुधीरज मान ॥ शक्रताहि कैसे हन्यो यह मेरे सन्देह । कहोमोहिं विस्तारसों आपु महामति गेह ॥ भीष्मउवाच ॥ बज्री रथपै बैठिकै देवगणन सहउद्ध । भयो वीरतासों भयो आवत कीबेयुद्ध ॥ अचलोपम वृत्रहि लखत सोहेभो सुरराज । उन्नत योजन पंचशत तासुदेह नरराज ॥ औस्थूलकछु अधिकत्रय शतयोजन बलधाम । निर्जर सबकांपत भये ताको लखिकै आम ॥ संयुता ॥ मघवान ताकहँ देखिकै । बलवान अतिअवरेखिकै ॥ शिथिलाङ्ग होतभयोमहा । नहिं धीर्य्य धारि गयो तहा ॥ बहु दुन्दुभी बाजनलगीं ॥ चहुं ओर घोर सुधुनि पगीं ॥ नृपदेखिकै सुरराजको । अरु तासु सर्बसमाजको ॥ डरनेकहू नहिं धरतभो । रणलालसा हियकरत भो ॥ सब फौजको तहँ साजिकै । रणको खरो भय गाजिकै ॥ असि शूल परिघ सबानसों । अरु और शस्त्र सुठानसों ॥ सुर दैत्यते लड़ने लगे । अति भूरि अमरषसों पगे ॥ दोहा ॥ बिधातादि सुर और ऋषि आवतभे तहँसर्ब । देखनकोरण अप्सरा औ सुसिद्ध गन्धर्ब ॥ तोटक ॥ तदनन्तर वृत्र सुबाहुबली । नृप प्रापत ह्वै नभमाहिं छली ॥ रति उन्नत प्रस्तरकी बरषा । करतो सुभयो तहँबेधरषा ॥ सुरते शरवृष्टि महा करिकै । सुवरावतभे तिनको चरिकै ॥ दिविमेंशरके गण छायरहे । सटि बारिदके समभायरहे ॥ दोहा ॥ चाहिवृत्रसों तदनुकरि मायायुद्ध महान । मोहतभो सुरराजको तत्रपरम बलवान ॥ मान वेदके वाक्य सों सुऋषि बशिष्ठ अनूप । मोहदूरि सुरराजको करत भये तहँ भूप ॥ बशिष्ठउवाच ॥ तोमर ॥ तुमहोयके सुरराज । बलवान वीर दराज ॥ सुनुहोत मोहित पर्म । किहि हेतुतेवर कर्म ॥ विधि

बिष्णु हैं तबपास । शिवसोम औ सहुलास ॥ अरु देखुये ऋषि सर्ब । तवखरे पास अखर्ब ॥ डरु नेकु नू न सुरेन्द । हतु-शत्रु बृन्द बिलन्द ॥ तवस्तव पढ़त दराज । गुरुआदि ऋषि सुरराज ॥ भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ ये बशिष्ठके बचन सुनि बासव बीर अनूप । बलदराज को प्राप्तसो होतभयो सुनुभूप ॥ दूरि करत माया भयो वृत्रासुरकी सर्ब । महत तेजसों आपने बासव बली अखर्ब ॥ नगस्वरूपिणी ॥ सुवृत्रको निहारिकै । कराल शोच कारिकै ॥ सुऔ चमूहु देखिकै । महा कराल लेखिकै ॥ दोहा ॥ सुराचार्य बहु ऋषिन सह जाय महेश्वर पास । तिनको प्रथम सुनायकै वृत्र तेज परकास ॥ तदनु प्रार्थना करत भे वृत्रनाशके अर्थ । जानि महेश्वर को महा तेजोमय ससमर्थ ॥ तदनु महेश्वर को महा तेज होय ज्वर भूरि । वृत्रासुर बलवानकी देह माहिंगो पूरि ॥ तदनु महेश्वर कहत भे सुरराजहि इमि बैन । यह वृत्रासुर परमहै बल महान के ऐन ॥ बहु माया यह करत है गति याकी सरबत्र । प्राप्त योग को होय कै तू याको हनि अत्र ॥ अरिल ॥ साठि हजार बर्ष कीन्हो बर । वृत्रासुर तप पूरब पबिधर ॥ बिधिवत थिरता में मन को करि । हिये कामना अति बलकी धरि ॥ याहि दियोहो तहँ यहवर बिधि । लहिहै वृत्रासुर महिमा सिधि ॥ औ लहिहै तू महा बलत्वहि । उग्रतेज अरु महा छल-त्वहि ॥ दोहा ॥ याते अतिहीउग्रहै वृत्रासुरबलवान । याकोहनिबे काजमैं अपनो तेजमहान ॥ तोहिंदेतहौं भीतिको छोड़ियाहि तू मारि । उद्ध युद्ध में बज्रसों गर्जिबीर असुरारि ॥ शक्रउवाच ॥ जयकरी ॥ तव प्रसाद सों याको हनिहौं । निजप्रताप लोकनमें तनिहौं ॥ भीष्मउवाच ॥ ज्वर जब वृत्रासुर के तनमें । प्राप्त भयो तब सुर ऋषि गनमें ॥ फैलत भो आनन्द महानो । ऐसोसो नहिं जाय बखानो ॥ तिहिते सुरऋषि महत निनादे । करत भयेबहु छोड़ि बिषादे ॥ तदनन्तर बहु बाजे बाजे । युद्धकाज भट दुहुंदिशिगाजे ॥

बगरीही माया जोभारी। क्षणमें नष्टभई सो सारी॥ असुर बृन्द अतिही अकुलाने। सुधि बुधि अपनी सर्व भुलाने॥ यह बृतान्त जानि ऋषिदेवा भूपति तहां सहित अहमेवा॥ सुनाशीरकी करिसुबड़ाई। मारु मारु धुनि करी सुहाई॥ दोहा॥ तहँ रथस्थ सुरराजको अतिकठोर भोरूप। सुनिकै सुस्तुति ऋषिनकी मुखकी उक्ता भूप॥

इतिशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेवृत्रासुरोपाख्यानेअष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८॥

भीष्मउवाच॥दोहा॥ बृत्रासुर ज्वर युक्तके जेशरीरके माहिं। चिह्न भये रण समयमें कहत तेसु तत्रपाहिं॥ चामर॥ सुआस्य तासु धूम्रके समान तत्रहोतभो। महान श्वास देहमाहिं कम्पको उदो तभो॥ उठे सुरोम सर्वश्रौ अखर्व जो मजातभो। शिवा कढ़ी सुबक्त्रते नृपालतासु ख्यातभो॥ दोहा॥ गिरति भई आकाशते उल्का ताकेतीर। महता घोरा ताहिलखि जकेअसुर सबवीर॥ उक्ता॥ गृध्रऔर बककाक। बोलत कुत्सित बाक॥ बृत्रासुरके घोर। फिरत भये चहुंओर॥ नगस्वरूपिणी॥ सुवज्रलेय हाथमें। अमर्त्यबृन्द साथमें॥ निहारतो सुबृत्रको। भयोधरैं सुक्षत्रको॥ गुरुतोमर॥ ज्वरसों युत बृत्रवली रणमें। लखिबासवको रुटकै मनमें। अतिघोर निनाद भयो करतो। डरकोनहिंनेक भयोधरतो॥ दोहा॥ लेत जम्हाई बृत्रपै बज्र चलायोशक्र। अतिही तेजोमय महत काल अग्नि समवक्र॥ क्षिप्रहि भयो गिरावतो बृत्रहि सोपवि घोर। जैजैजै धुनि करतभे देव सर्वतिहि ठौर॥ युत सत्तासों बिष्णुकी बज्र चण्ड भूपाल। तासों हनि बृत्रहि गयो दिविको श्रीसुरपाल॥ रामगीती॥ नृपतत अनन्तरबृत्रवारी देहते अतिभाम। अतिघोररूपा ब्रह्महत्या भईकढ़तीश्राम॥ दशनावली अतिहीकराला घोरचक्षुबिशाल। कछुकृष्ण पिंगल रूपजाको खुले बालकराल॥ अरु धरेदीर्घकपाल माला अति बिशालातौन। औ चीर बल्कल कियेधारण तानबरबलभौन॥

बहु रुधिर सों सोभरी देखन लगी इन्द्रहि तत्र । सुरराज सो सुरलोकको नृपहुतो जातो अत्र ॥ लखिताहि गहतीभईसोकर तासु गरमें डारि । लखिताहि भारी भीति सेती भरोबर असुरारि ॥ सोकमलके बिसमाहिं बहुदिन भयोकरतो बास । तहँभई तेजोमयी नष्टा सर्ब्ब ता की भास ॥ बहु बृह्महत्या छूटिबेकी करी इन्द्र उपाय । पै नहींछूटी महाघोरा दुःखदा नरराय ॥ नृप तत अनन्तर जायबृह्मा पास श्रीसुरराज । लहिचरणगिरतो भयो तिनके भरो दुःख दराज ॥ है ब्रह्महत्यागह्यो सुरपहि बिधाता यहजानि । गुणि बृह्महत्याको भयोइमि कहत मेधातानि ॥ तू छोड़िदे सुरराजको हैकह्यो मेरोमानि । हैकहाइच्छातोहिं मोको अत्र कहु अनुमानि ॥ ब्रह्महत्योवाच ॥ तुम भये परमप्रसन्न मोपै बिधाता लोकेश । तेहितें सु मोको सर्ब्ब प्रापत भयो कछु नहिं शेश ॥ मैं नाशतेहां करो मोको देहु आपु निवासु । इमि बचन कहि पुनि कह्योऐसे बिधाताको आसु ॥ मर्य्याद तुमहीं लोकमें यहकरीहैलोकेश । गोबिप्रहैं नहिंयोग्यबधके पूज्य परमहमेश ॥ जोकहतहौ सोकरौंगी रहिहैं नपै मर्य्याद । तुमदेहु मोहिंनिवास मैंतहँ रहौंछोड़ि बिषाद ॥ भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ द्विजहत्याकेप्रगट ये चतुरानन सुनिबैन । राहिबेको इमिकहतभे देहैंतोकोऐन॥ तदनन्तर करतेभये बृह्माशिखिको ध्यान । इमिबृह्मातट आयकैकहतो भयोकृशान ॥ आज्ञाजो कछु होयहम करैंतौन लोकेश । चतुराननये बहानिके सुनिकैबचन बिशेश ॥ कहतभये इहिभांति हम द्विजहत्याके भाग । करिहैंबहु तिन माहिंतुम पावकबरबड़ भाग ॥ चौथे भागहि लेहुतुम अत्रगुणो मतिऔर । अघछूटन कोशक्रको यह शिखिसुनि करिगौर ॥ कहतभयो इमिजौन तुम कहिहौ करिहौं सोय । पैमेरी कबछूटिहै अघतुम कहियेजोय ॥ ब्रह्मोवाच ॥ जबहवैहै प्रज्वलित तू तव जोपूजा नाहिं । करिहैतब शिखिजायगी द्विजहत्या तिहिपाहिं ॥ बैनधनंजय श्रवण करि

ब्रह्माके येस्थात। द्विजहत्याके भागको धारतभोहितात॥ तदनु बुलावतभो द्रुहिण तृण औषधि अरुवृक्ष। कह्योतिनहुंको जोकह्यो अग्निहि हुतोप्रतक्ष॥ व्यथितहोयकै अग्निवत ब्रह्माकेसुनि बैन। कहतभये इमिहे द्रुहिण द्विजहत्याकोऐन॥ धारणकरिहैं पै सुनोयाको कैहै अन्त। कबतुम कहौ बिचारिकै दुखभो हमैंअनन्त॥ हमसब अपने भाग्यसौं शीतादिक जेसर्व। सहततिन्हें हैं आपुहौं गुणत न द्रुहिणअखर्व॥ ब्रह्मोवाच॥ छेदन भेदनकरिहि जो पर्वकालकेमाहिं। द्विजहत्याके भागसों जैहैताकेपाहिं॥ भीष्मउवाच॥ तरु औषधि तृणये बचन सुनिकै बिधिको पूजि। जिमि आये तिमिजातभे स्तव सुनहु बिधिकूजि॥ तदनुबुलावत भोद्रुहिण अप्सरानको तात। कह्योतिनहुंको जो हुतो कह्यो नगादिहि स्यात॥ अप्सरसऊचुः॥ द्विजहत्याको भागहम लेहैं चतुरथअद्य। पै छूटैगी यहकबै कहौहमैं तुमसद्य॥ भीष्मउवाच॥ मैथुन करिहै जो पुरुष रजस्वला के माहिं। द्विजहत्याको भागयह जैहै ताके पाहिं॥ तदनन्तर कीलाल को ब्रह्माचिन्तन कीन। सो ब्रह्मा को प्राप्तकै करि सुप्रणाम प्रबीन॥ विधितुम मम चिन्तन कियो यातेहम तवतीर। आयेहैं जो कहहु सो करैं कह्योइमि बीर॥ ब्रह्मोवाच। द्विजहत्या सुरराजको प्रापतभईविशाल। ताकोचौथो भाग तुमलेहु सुनो कीलाल॥ कीलालउवाच॥ द्विजहत्याको भाग हमलैहैं चतुरथसर्व॥ पैविधि हमको छोड़िहै कब यह दुखद अखर्व॥ ब्रह्मोवाच॥ मूत्र पुरीष श्लेषमा जोजन तोमें डारि। है ताके सँग जायगी द्विजहत्या तुरवारि॥ तदनन्तरताजि इन्द्रको द्विजहत्या सुखदाय। प्राप्तभई चारिहुनमें होतीहे नरराय। फिरि आज्ञा लहि द्रुहिणकी अश्वमेध सविधान। सुनाशीर करतो भयो महाधीर बलवान॥ परम शुद्धिको प्राप्तभो ताते श्रीसुरराज। यह पूरब हमहौ सुन्यो कुन्ती सुत नरराज॥ कृपाते सुलोकेशकी द्विजहत्यासों वक्र। छूटि सुनिज ऐश्वर्य्यको प्राप्त

होतभो शक्र ॥ वृत्रासुरके बदनते मे उतपन्नाशिखण्ड । तेद्विजातिके भक्षणहि भूपति प्रबल प्रचण्ड ॥ श्रेष्ठताहि प्रापत भयो जैसे बज्री बीर । तैसे ह्वैहौप्रातनृप तुमहू बर रणधीर ॥ पढ़िहैं शक्र कथाहि जो पर्ब पर्बके माहिं । विप्र बृन्दमें किल्विषहि प्रापति ह्वैहै नाहिं ॥ कह्यो पराक्रम इन्द्रको अद्भुत अत्र महान । अब इच्छा है सुननकी तुमको कहा सुजान ॥

इतिशान्तिपर्बणिमोक्षधर्मेवृत्रबधोनामएकोननवतितमोऽध्यायः ८९ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥दोहा॥ ज्वरसों मोहित वृत्रको बज्री बज्र चलाय। मारयोसो सुनिकै भई इच्छायह नरराय॥ ज्वर जो सो उतपन्न भो किमि किहिते कहुआप । ज्वरवारी उत्पत्तिको हमको बुद्धि कलाप ॥ भीष्मउबाच ॥ जैसे ज्वर उत्पन्नभो तुम्हैं कहत हौं आम। कुन्तीसुत भूपालमणि सुनो बीर बलधाम ॥ मनोहर ॥ रत्नसों भूषित अभिराम । गिरि सुमेरुकोशृंग ललाम॥ तापै बैठेहुते महेश। शैलसुतासह पूर्ब सुरेश॥ औबैठेअश्विनीकुमार। हे औ धनद सुभूप उदार ॥ सनत्कुमारादिक ऋषिपर्म । बैठेहुते तहां सहशर्म ॥ औ सु अंगिरस आदिकतात । बैठेहे सुहर्षि अवदात ॥ बैठे नारद पर्बत तत्र । हे तहँ गति तिनकी सर्वत्र ॥ औ सु अप्सरा सर्ब अनूप। बैठीहुतीं तहांसुनु भूप ॥ शीतल मन्द सुगन्ध समीर। बहत हुती सुखदायक बीर ॥ औ बिद्याधर सिद्धसुढार । सेवतहे पशुपतिहि उदार ॥ औ बहुनाना बपुधरभूप। औहेराक्षस तत्र अकूत। नन्दीधारणकीन्हेशूल । खरोतेजसोंभरोअतूल॥ गंगाधारणकीन्हेरूप। सेवतिहीशंकरहि अनूप ॥ दोहा ॥ इमि देवनसों ऋषिनसों पूजित श्रीभगवान । रहत भये गिरि शृंगपै उन्नत परम सुठान ॥ मनोहर ॥ कौनहु काल माहिं भूपाल । दक्ष प्रजापति बिज्ञ बिशाल ॥ इच्छाकरी करनकी यज्ञ । पूरबवत् बिधिसोंधरमज्ञ ॥ शक्रादिक सु देवता सर्ब। दक्षयज्ञको लखन अखर्ब । भयेसु हरद्वारको जात। बैठि

बिमाननपै अवदात॥ शैलसुतातिन सबको देखि। कहत भई शम्भुहि इमि लेखि॥ ये सुरजात कहां हैं सर्ब। बैठि बिमानन पै सु अखर्ब॥ सुनाशीर आदिक सानन्द। कहिये संशय भयो बिलन्द॥ महेश्वरउवाच॥ हयमख करत प्रजापति दक्ष। तत्रजात शक्रादिक स्वक्ष॥ उमोवाच॥ दक्ष यज्ञमें क्यों नहिंजात। आपु कहौ हमको बिख्यात॥ महेश्वरउवाच॥ देवन पूर्बहिसों मखमाहिं। हमको भाग देत हैं नाहिं॥ उमोवाच॥ अतिहि श्रेष्ठ देवनमें आप। परम तेजके महतकलाप॥ पैनहिं पावत भागईशान॥ यातेभो दुखमोहिं महान॥ भीष्मउवाच॥ ऐसे कहि शंकरको बैन। होति भई चुपधरी अचैन॥ देबीके मनको बृत्तान्त। मनमें जानि शंभु क्षितिकान्त॥ लैकें भीम रूप गणसाथ। नन्दी पै चढ़ि गिरिजा नाथ॥ मख बिध्वंस करतभे जाय। दक्ष प्रजा-पतिको नरराय। केतेगण करतेभे ध्यान। कितेकरतभे हासमहान कितेरुधिरसों अग्निहि धाय। भये बुझावत तत्रनृराय॥ मख खम्भन को किते उखारि। भये फिरावत कौतुक धारि॥ दक्ष सेवकन को तहँदौरि। ग्रसतभये केते वरजोरि॥ तदनु तौन मख धरि मृगरूप। भो अकाशको भागत भूप॥ दोहा॥ ताके पीछे जातभे शिवलहि शर को दण्ड। तत्र स्वेदकन भालते शिवके गिरो प्रचण्ड॥ सो कणभूमें गिरत हीं महाअग्नि भोहोत। ताके बिच यक पुरुषको होतो भयो उदोत॥ मनोहर॥ ताको अतिही ह्रस्व शरीर। भीमरूप चख अरुणसुबीर॥ तासु भयङ्कर ऊरध केश। भरोरोमसों ताकोबेश॥ कृष्ण वर्णसो परमकराल। श्येन उलूक सदृश भूपाल॥ धारण किये रक्तसों बास। मखहि जरावत भोसो आस॥ सुरऔ ऋषिगण पैनृपतौन। तदनु दौरतोभो बलभौन॥ साध्वससेती तासुअखर्ब। भीतभयेसुर औ ऋषि सर्ब॥ बसुधा कांपति भई बिशाल। शीघ्रबेगसों तासु नृपाल॥ सर्बजगतमें हाहाकार। दिशिदिशिमें भोहोत

अपार ॥ ब्रह्मातिही समयके माहिं । जाय कहत भो इमि शिवपाहिं ॥ ब्रह्मोवाच ॥ भागयज्ञ में देवत सर्ब । तुमहूं को देहैं हे सर्ब ॥ यह जो श्यामल पुरुष कराल । कर्षिलेहु ताको तुम हाल ॥ तवरुटते सुर औ ऋषिभूरि । रहेभीतिसोंहैं सबपूरि ॥ तव प्रस्वेदतेभोजो आम ॥ यह ज्वर ह्वैहै ताकोनाम ॥ रहि है शिवलोकनके माहिं । सकिहैधारि याहि कोउनाहिं ॥ यांतेकीजै खण्ड अनेक । याके करिकै आपु बिबेक ॥ सुनिकै ब्रह्माके येबैन । कहत तथास्तुभये शिव ऐन ॥ खण्डकिये बहु ज्वरके ईश । गुणिकैबिधिके बचनमहीश ॥ गज मस्तकमें पीड़ाजौन । ज्वरको खण्ड जानुनृपतौन ॥ पर्व्वतमाहिं शिलाजतु तात । काईजलके माहीं ख्यात ॥ अरु सर्पनमें जो निर्मोक । ज्वरको खण्ड जानु बल ओक ॥ पशुपदमेंजो खोरक रोग । औ भूमेंऊखर संयोग ॥ हयगल व्रणमें आमिष खण्ड । बढ़ततौन ज्वरभागप्रचण्ड ॥ शिखामाहिं बढ़तीहै और । मोरशीशमें नृपाशिर मौर ॥ औकोकिल केजो चखरोग । ज्वरबिभागको सो संयोग ॥ सर्बशुकनके हिक्काजौन । ज्वर बिभाग जानोनृप तौन ॥ शार्दूलन मेंजो श्रम माम । ज्वरबिभागसोहै बुधिधाम ॥ ज्वरहि नाममानुष्यन माहिं । निश्चयकरि सुकह्यो तवपाहिं ॥ चरणा दोहा ॥ जन्म मरण में मध्यमें त्योंहिं जनाहिं प्राप्तज्वरहोत । लहत तेज यह शंकर कोहै ज्वर नामाबल पोत ॥ दोहा ॥ वृत्रासुर जब मुक्तभो ज्वरसेती भूपाल । मार्यो बज्रचलायकै तब ताको सुरपाल ॥ प्राप्त होतभो बिष्णुको वृत्रासुर तजिदेह । घातित ह्वैकै बज्रसोंमहापराक्रमगेह ॥ ज्वरवारी उत्पत्तिहम कही तुम्हें भूपाल । अब इच्छाहै सुननकी तुमको कहाबिशाल ॥ ज्वरवारी उत्पत्तिको जो सुनिहैं बृत्तान्त । रोगन सोंसो रहित ह्वै ह्वैहैं सुखी नितान्त ॥

महाभारतेशान्तिपर्बणिमोक्षधर्मेज्वरोत्पत्तिर्नामनवतितमोऽध्यायः ९० ॥

जन्मेजयउवाच ॥ दोहा ॥ यज्ञाकियोजो भंगाशिव ताहि कियोपुनि

दक्ष। किमिलहि शंकरकी कृपा हमको कहो प्रतक्ष॥ वैशंपायनउ-वाच॥ हरद्वार शुभदेशमें दक्ष करत भो यज्ञ। संग मुऋषि संघात लै सह बिधान धर्मज्ञ॥ स्वर्गलोकवासी परम स्तुति करत मे सर्ब। औ पृथ्वीवासी सरब अंजलिजोरि अखर्व॥ इन्द्रसहित आवतभये मखभागीते सर्ब। तिनको देखि दधीचि अति कीन्हो क्रोध अखर्ब॥ कहत भये ऐसे वचन ऋषि दधीचि नृपतत्र। सो न यज्ञहै शम्भुकी पूजाहोत न यत्र॥ घोर उपद्रव होतभो यामें बिन गिरिजेश। ताहि बिचारत कोउनहिं मति बिस्तारि बिशेश॥ ऐसे कहिकै बैनसो ध्यान चक्षुसों स्वक्ष। सह गिरिजा गिरिजापतिहि देखतभो ऋषि दक्ष॥ औ देवीके देखतो भो नारदहि समीप। अतिहि महत आनन्दको प्रापतहोत महीप॥ एकमंत्र तिन सबनको जानि निभीचि सगर्ब। मख ग्रहते कढ़िकहत भो इमि सुनि दक्ष अखर्ब॥ पूजनते सुअपूज्य के औजे पूज्य अनूप। किये अपूजन तासुबुध जानतहैं मतरूप॥ पातिकनर संहारको होत प्राप्तहैपर्म। अमृत गुणै कोऊ न मम भाषत मोहि समर्म॥ चरणाकुलक॥ इतनेहीमें शंकर आये। सबके देखतरूढ़सों छाये॥ तिनको देखि कहत भो वानी। दक्ष प्रजापति इमि अभिमानी॥ रुद्र सु एकादश हैं तिनको। जानत हैं हम नाहीं इनको॥ दधीचिरुवाच॥ शंभु समान और हम नाहीं। देखत देवत लोकन माहीं॥ शिवको नहीं बुलावन केरो। सब को मंत्र परत है हेरो॥ याहि सुमंत्रसों यज्ञ न कै है। पूरण भूरि उपद्रव ग्वैहै॥ दक्षउवाच॥ ये सुविष्णु सब यज्ञन वारे। हैं सुईश प्रभु सुखद सुढारे॥ येई योग्य बुलावन को हैं। इनके और समान न-हो हैं॥ देहौं यज्ञभाग इनहीको। करिकै भूरि भक्ति मेंहीको॥ देव्युवाच॥ कौन दान औ नियम करौं में। औ किहि तपको तटहि धरौं मैं॥ यज्ञ भाग जिहिसों पति मेरे। पावैं ऋषिसुर बीच घनेरे॥ गौरीको कहती इमिबानी। कहत भये ऐसे

वृषयानी ॥ मोहिं गौरि तू जानति नाहीं । मैं अब कहा कहौं तव पाहीं ॥ मख मैं स्तुति करत द्विज वेदी । मेरो रति सह होत अवेदी ॥ करत कल्पना मखके माहीं । मम भागहुको सबिधि सदाहीं ॥ देव्युवाच ॥ करत प्रतिष्ठा निज तिय सों है । हीनहु पुरुष चढ़ाय सुभौं है ॥ भगवानुवाच ॥ करत प्रतिष्ठा होंमैं नाहीं । देखु अबहि मैं तेरे पाहीं ॥ जाहिकरत उतपन्न दिराजै । मखको भाग लेनके काजै ॥ ऐसे कहि देवीको बानी । श्री कैलाशनाथ वृषयानी ॥ दोहा ॥ अपने मुखते एक तहँ भये बनावत भूत । ताहि कहत ऐसे भये करिकै कृपा अकूत ॥ दक्षप्रजापति के मखहि नष्टशीघ्र करुजाय । बीरभद्र तव होयगो नामख्यात बरकाय ॥ चरणाकुलक ॥ शंकरकी यहबाणी सुनिकै । तिहिको बीरभद्र सोगुनिकै ॥ काली सहित जाय मखनष्ट । करि करिबे दक्षादि सकष्ट ॥ बलसों दूरि करनके काजै । पारबतीके कोप दराजै । बीरभद्र गण तदनु सुढारे । रोम कूपते अतिबल वारे ॥ बरउत्पन्न बहुत गणकीन्हे । शिव समउग्र परेते चीन्हे ॥ रौम्य नामहोते मे तिनके । अतिहि बीरबर साध्वस बिनके ॥ दक्ष यज्ञको कीबे भंगे । आयेते धरि क्रोध उतंगे ॥ करत भये तहँघोर निनादै । सुरनहु सुनिकै लह्यो बिषादै ॥ केतदक्ष गणनको मारे । केतेयज्ञ स्तंभ उखारे ॥ केते हव्य खायकेभूमैं । केतेडार देतभे भूमैं ॥ हुती देवतनकी जे नारी । तहँते फेंकि दूरि गहिडारी ॥ रक्षादेव करतहैं जाकी । तामेंधरी पांति समिधाकी ॥ ऐसो यज्ञस्थान सुहायो । बीरभद्र गणताहि जरायो ॥ तदनु काटिकै शिर मखवारो । घोर निनाद करत भो भारो ॥ दक्ष और ब्रह्मादिक देवा । सकेपाय तिहिको नहिं भेवा ॥ तदनु भयेपूछत इमिताको । कोतू धरे भूरि बलताको ॥ बीरभद्रउवाच ॥ देवीको भोक्रोध महानो । ताहि जानि अमरष ईशानो ॥ करत भये तातेहम आये । करन भंग तव मखहि सुहाये ॥ दोहा ॥ मैंहौं भो शिवकोपते बीरभद्र

मम नाम। भई भद्रकाली प्रगट गौरी रुटते माम॥ काक्याकुलक॥
शिवके भेजे आये इतहैं। जानो हमतव परम अहितहैं॥ ताते
शिवके शरणै जावो। मनमें दक्ष और मति लावो॥ वीरभद्रकी
बाणी सुनिकै। दक्षधर्म भृत मनमें गुनिकै॥ शिव तटजाय नम्र
अतिह्वैकै। दक्षदक्ष इतिसो तियग्वैकै॥ पढ़िस्तोत्र शुभशीघ्रं
शिवको। करत प्रसन्नभयो अतिशिवको॥ तदनु कहतभो ऐसे
बानी। शंकरको लहिकृपा महानी॥ धर्मकियो जोमैं बहुकालै।
सहित सुवेद बिधान बिशालै॥ सोनहिं व्यर्थहोय शिवमेरो।
यहबर देहुशरणि निति हेरो॥ शिवउवाच॥ धर्मनष्ट ह्वैहैतवनाहीं।
मोदित होहु दक्ष मनमाहीं॥ येसुनि बैन हर्षसों पागो। शिव
सहस्र नामहि अनुरागो॥ पढ़िकै स्तुति करतभो नीकी। दक्ष
प्रजापति वृषयानीकी॥ युधिष्ठिरउवाच॥ सुस्तुतिकरी जिननामन
सेती। शिवको मतिकारिदक्ष सचेती॥ भईलालसामो मनमाहीं।
तिन्हैं सुननकी कहु मोपाहीं॥ भीष्मउवाच॥ दोहा॥ अति सुखदा
यक नामहैं शंकरके अवदात। तेश्रद्धा सह तुमसुनो तुम्हैं कहत
हौं तात॥ सहस्रनाम॥ नमस्ते देवदेवेश देवारिबलसूदन। देवे-
न्द्रबलविष्टम्भ देवदानवपूजित॥ सहस्राक्षोविरूपाक्ष अक्ष-
यक्षाधिपप्रिय। सर्वतः पाणिपादान्त सर्वतोक्षिशिरोमुख॥
सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्यतिष्ठसि। शंकुकर्ण महाकर्ण
कुम्भकर्णार्णवालय॥ गजेन्द्रकर्णगोकर्ण पाणिकर्णनमोस्तुते।
शतोदरशतावर्त्त शतजिह्वनमोस्तुते॥ गायंतित्वांगायत्रिणो
अर्चयत्येकमर्किणः। ब्रह्माणंत्वांशतक्रतुमूर्ध्वंखमिवमेनिरे॥
मूर्त्तौहितेमहामूर्त्ते समुद्रांबरसन्निभ। सर्वादेवताह्यस्मिन्ना
वोगोष्ठइवासते॥ भवच्छरीरेपश्यामि सोममग्निंजलेश्वरं।
आदित्यमथवैविष्णुं ब्रह्माणंचबृहस्पतिं॥ भगवान्कारणंकार्यं
क्रियाकरणमेवच। असतश्चसतश्चैव तथैवप्रभवाप्ययो॥
नमोभवायशर्वाय रुद्रायवरदायच। पशूनांपतयेनित्यं नमो-

स्त्वन्धकघातिने ॥ त्रिजटाय त्रिशीर्षाय त्रिशूलवरपाणिने । अम्बकाय त्रिनेत्राय त्रिपुरघ्नायवैनमः ॥ नमश्चण्डाय कुण्डा ययण्डायाण्डधरायच। दण्डिनेसमकर्णायदण्डमुण्डायवैनमः ॥ नमोर्ध्वदंष्ट्रकेशायशुक्लायावततायच । बिलोहितायधूम्राय नील ग्रीवायवैनमः ॥ नमोस्त्वप्रति रूपायबिरूपायशिवायच । सूर्य्यायसूर्य्यमालाय सूर्य्यध्वजपताकिने ॥ नमःप्रमथ नाथायवृष स्कन्धायधन्विने। शत्रुन्दमायदण्डाय पर्ण चिरपटायच ॥ नमो हिरण्यगर्भायहिरण्यकवचायच । हिरण्यकृतचूडायहिरण्यपत येनमः ॥ नमस्तुतायस्तुत्याय स्तूयमानायवैनमः । सर्वायसर्ब- भक्षाय सर्बभूतांतरात्मने ॥ नमोहोत्रेथमंत्राय शुक्लध्वजपताकि ने। नमोनाभायनाभ्याय नमःकटकटायच ॥ नमोस्तुकृशनाशाय कृशांगायकृशायच । संहृष्टायनमस्तुभ्यं नमःकिलकिलायच । नमोस्तुत्रायमाणाय शयितायोत्थितायच । स्थितायधावमानाय कुण्डायजटिलायच ॥ नमोनर्त्तनशीलाय मुखवादित्र वादिने ॥ नाटोपहारलुब्धाय गीतवादित्रशालिने ॥ नमोज्येष्ठाय श्रेष्ठाय बलप्रमथनायच । कालगाथायकल्पाय क्षयायोपक्षयायच ॥ भीं- मदुन्दुभि हासाय भीमब्रतधरायच । उग्रायचनमोनित्यं नमोस्तु दशवाहवे ॥ नमः कपालहस्ताय चितिभस्मप्रियायच । बिभीष- णायभीष्माय भीमब्रतधरायच ॥ नमोबिकृतवक्त्रायखड्गजिह्वा यदंष्ट्रिणे। पक्वाममांसलुब्धाय तुम्बीबीणाप्रियायच ॥ नमोवृषा यवृष्याय गोवृषायवृषायच । कंकंकटाय दण्डायनमःपचपचा- यच ॥ नमःसर्बवरिष्ठायवरायवरदायच । वरमाल्य गन्धवस्त्राय बरातिबरदायच ॥ नमोरक्तबिरक्ताय भावनायाक्षमालिने । सं- भिन्नायबिभिन्नाय छायायातपनायच ॥ अघोरघोररूपाय घो- राघोरतरायच । नमःशिवायशान्ताय नमःशान्ततमायच ॥ एक पाद्बहुनेत्राय एक शीर्षायवैनमः। क्षुद्रायक्षुद्रलुब्धाय सबिभाग प्रियायच ॥ चञ्चलायशितांगाय नमःशमशमायच । नमश्च

ण्डिकघंटाय घटायाघंटघंटिने ॥ सहस्राध्मातघंटायघंटामाला
प्रियायच। प्राणघंटायगंधाय नमःकलकलायच ॥ हूंहूंहूंकारपा
रायहूंहूंकार प्रियायच। नमःशमशमेनित्यं गिरिवृक्षालयायच ॥
गर्भमांसशृगालायतारकायतरायच। नमोयज्ञाययजिनेहुताय प्र
हुतायच ॥ यज्ञवाहायदांताय तथायातपनायच। नमस्तटायतटा
ट्याय तटानां पतयेनमः ॥ अन्नदायान्नपतये नमस्त्वन्नभुजे
तथा। नमःसहस्रशीर्षाय सहस्रचरणायच ॥ सहस्रोदितशू-
लाय सहस्रनयनायच। नमोबालार्क वर्णाय बालरूपधरायच ॥
बालानुचरगोप्ताय बालक्रीडनकायच। नमोवृद्धायलुब्धाय क्षु-
ब्धायक्षोभणायच ॥ तरंगांकितकेशाय मुंजकेशायवैनमः। नमः
षट्कर्मतुष्टाय त्रिकर्मनिरतायच॥वर्णाश्रमाणांविधिवत् पृथक्कर्म
निवर्तिने। नमोघुष्यायघोषाय नमःखलखलायच॥ श्वेतपिंगल
नेत्रायकृष्णरक्तेक्षणायच। प्राणभग्नायदण्डाय स्फोटनायकृशा
यच॥धर्मकामार्थमोक्षाणां कथनीयकथायच। सांख्यायसांख्यमु
ख्यायसांख्ययोगप्रवर्तिने॥नमोरथ्याविरथ्यायचतुष्पथरथायच।
कृष्णाजिनोत्तरीयाय व्याल यज्ञोपवीतिने ॥ ईशानवज्रसंघात
हरिकेशनमोस्तुते। अंबकांबिकनाथाय व्यक्ताव्यक्तनमोस्तुते ॥
कामकामदकामाय तृप्तातृप्तविचारिणे। सर्वसर्वदसर्वघ्न संहा-
रांतनमोस्तुते ॥ महामेघचयप्रख्य महाकालनमोस्तुते। स्थूल
जीर्णांगजटिले वल्कलाजिनधारिणे ॥ दीप्तसूर्य्याग्निजटिले
वल्कलाजिनवाससे। सहस्रसूर्यप्रतिम तपोनित्यनमोस्तुते ॥ उ-
न्मादनशतावर्त गांग्यतोयार्द्रमूर्द्धज। चन्द्रावर्त्तयुगावर्त्त मेघाव
र्त्तनमोस्तुते ॥ त्वमन्नमत्ताभोक्ताच अन्नदोन्नभुगेवच। अन्न-
स्रष्टाचपक्ताचपक्वभुक्पवनोनलः ॥ जरायुजाण्डजाश्चैव स्वेद
जाश्चतथोद्भिजाः। त्वमेवदेवदेवेशभूतग्रामचतुर्विध॥ चराचर-
स्यस्रष्टात्वं प्रतिहर्तातथैवच। त्वामाहुर्ब्रह्मविद्वांसो ब्रह्म ब्रह्म
विदांवर ॥ मनसःपरमायोनिः खंवायुर्ज्योतिषांनिधिः। ऋक्सा

मानितथोङ्कारमाहुस्त्वांब्रह्मवादिनः॥ हायिहायिहुवाहायि हुवा-
हायितथा सकृत्। गायन्तित्वांसुरश्रेष्ठ सामगाब्रह्मवादिनः॥
यजुर्मयोऋग्यजुश्च त्वामाहुर्निमयस्तथा। पठ्यसेस्तु तिभि-
श्चैव वेदोपनिषदोगणैः॥ ब्राह्मणाक्षत्रियावैश्याः शूद्रावर्णावरा
श्चये। त्वमेवमेघसंगाश्च विद्युत्तामितिगर्जितः॥ संवत्सरस्त्व
मृतवो मासोमासार्द्धमेवच। युगंनिमेषाःकाष्ठास्त्वं नक्षत्राणिग्रहा
कलाः॥ बृषाणाङ्ककुदोसित्वं गिरीणांशिखराणिच। व्याघ्रोमृगा
णां पततां तार्क्ष्योनन्तश्चभोगिनः॥ क्षीरोदोप्युदधीनांच यंत्रा
णांधनुरेवच। बज्रःप्रहरणानांच ब्रतानांसत्यमेवच॥ त्वमेवद्वेषइ
च्छाच रागोमोहः क्षमाक्षमे। व्यवसायोधृतिर्लोभः कामक्रोधौ
जयाजयौ॥ त्वंगदीत्वंशरीचापी खट्वांगीसशरीतथा। छेत्ताभे-
त्ताप्रहर्त्तात्वं नेतामंतापितामतः॥ दशलक्षणसंयुक्तो धर्मार्थकाम
एवच। गंगासमुद्राःसरितः पल्वलानिसरांसिच॥ लता वल्य
स्तृणौषध्यः पशवोमृगपक्षिणः। द्रव्यकर्मशुभारम्भः कालपुष्प-
फलप्रदः॥ आदिश्चान्तश्चवेदानां गायत्र्योंकारएवच। हरि
तोरोहितोनीलः कृष्णो रक्तस्तथारुणः॥ कद्रुश्चकपिलश्चैव
कपोतोमेचकस्तथा। अवर्णश्च सुवर्णश्च वर्णकारोह्यनोपमः॥
सुवर्णनामाचतथासुवर्णप्रियएवच। त्वमिन्द्रश्चयमश्चैव बरदो
धनदोनलः॥ उपप्लवश्चित्रभानुः स्वर्भानुर्भानुरेवच। होत्रंहो-
ताचहोम्यंच हुतंचैवतथाप्रभुः॥ त्रिसौपर्णंतथाब्रह्मा यजुषश्श-
तरुद्रियं। पवित्रंचपबित्राणां मङ्गलानांचमङ्गलं॥ गिरिकोहि
ण्डकोबृक्षी जीवः पुंगलएवच। प्राणःसत्वंरजश्चैव तमश्चाप्रम
दस्तथा॥ प्राणोपानःसमानश्च उदानोव्यानएवच। उन्मेषश्च
निमेषश्च क्षंतत्तंभित मेवच॥ लोहितान्तर्गतादृष्टिर्महावक्रमहो-
दरः। शूचीरोमाहरित्श्मश्रुरूर्ध्वकेशश्चलाचलः॥ गीतवादि-
त्रतत्वीशो गीतवादनकप्रियः। मत्स्येजलचरोजाल्यो ऽबालःके
लिकलःकलिः॥ अकालश्चातिकालश्चदुष्कालःकालएवच। मृ

त्युःक्षरश्चकृत्यश्च पक्षोपक्षक्षयंकरः॥ मेघकालोमहादंष्ट्रःसंवर्त्त-
कबलात्मकः। घण्टोघण्टःघटीघण्टी चरुचेलीमिलीमिली॥
ब्रह्माकाय कमग्नीनांदण्डीमुण्डस्त्वदण्डधृक्। चतुर्युगश्चतुर्वेद
श्चातुर्होत्रप्रवर्तकः॥ चतुराश्रमनेताच चातुर्वर्ण्यकरश्चयः।
सदाचाक्ष प्रियोधूर्त्तो गणाध्यक्षोगणाधिपः॥ रक्तमाल्यांबरधरो
गिरीशोगिरिकप्रियः। शिल्पिकःशिल्पिनांश्रेष्ठः सर्व शिल्पप्रवर्त्त
कः॥ भगनेत्रांकुशश्चण्डः पूष्णोदन्तविनाशनः। स्वाहास्वधा
वषट्कारो नमस्कारोनमोनमः॥ गूढ़व्रतोगुह्यतपास्तारकस्तार
कामयः। धाता विधातासंधाता विधाताधारणोधरः॥ ब्रह्मात
पश्चसत्यश्चब्रह्मचर्यमथार्जवं। भूतात्माभूतकृद्भूतो भूतभव्य
भवोद्भवः॥ भूर्भुवःस्वरितश्चैव ध्रुवोदांतोमहेश्वरः। दीक्षितोदी-
क्षितः क्षंतो दुर्दान्तोदांतनाशनः॥ चन्द्रावर्तो गुणावर्त्तः संवर्त्तः
संप्रवर्त्तकः। कामोविन्दुरणुस्थूलः कर्णिकारस्रजप्रियः॥ नन्दीमु-
खोभीममुखः सुमुखोदुर्मुखोमुखः। चतुर्मुखोबहुमुखो रणेष्टाग्नि
मुखस्तथा॥ हिरण्यगर्भः शकुनिर्महोरगपतिर्विराट्। अधर्म
हामहापार्श्वश्चण्डधारीगणाधिपः॥ गोनर्दोगोप्रस्तरश्च गो-
वृषेश्वरबाहनः। त्रैलोक्यगोप्तागोविन्दो गोमार्गोमार्गएवच॥
श्रेष्ठः स्थिरश्चस्थाणुश्च निष्कम्पः कम्पएवच। दुर्वारणोदुर्वि-
षहो दुस्सहो दुरतिक्रमः॥ दुर्द्धर्षोदुःप्रकम्पश्च दुर्विषोदुर्जयो
जयः। शशःशशाङ्कःशमनःशीतोष्णोक्षुज्ज्वराधिधृक्॥ आध
योव्याधयश्चैव व्याधिहाव्याधिरेवच। समयज्ञमृगव्याधो व्या
धीनामागमोगमः॥ शिखण्डीपुण्डरीकाक्षः पुण्डरीकवनालयः।
दण्डधारस्त्र्यम्बकश्च उग्रदण्डोण्डहाशनः॥ विषाग्रपात्सुर
श्रेष्ठः सोमपास्त्वमरुत्वाति। अमृतपास्त्वंजगन्नाथ देवदेवगणे
श्वरः॥ विषाग्निपामृत्युपाश्चक्षीरपासोमपास्तथा। मधुश्चुपा
नामयपा स्त्वमेवतुषिताजपाः॥ हिरण्यरेतापुरुषस्त्वमेवत्वंस्त्री-
पुमांस्त्वंहिनपुंसकश्च। बालोयुवास्थविरोजीर्णदंष्ट्रस्त्वंनागेन्द्र

शक्रस्त्वंविश्वकृत्विश्वकर्ता ॥ विश्वकृद्विश्वकृतांबरेण्यस्त्वं ॥
विश्ववाहोविश्वरूपस्तेजस्वीविश्वतोमुखः । चंद्रादित्योचक्षुषी
ते हृदयश्चपितामहः॥ महोदधिःसरस्वतीवाग्बलमनलोनिला
होरात्रनिमेषोन्मेष नचब्रह्मानगोविन्दः ॥ पौराणाऋषयोनते
माहात्म्यंवेदितुंशक्ताः। याथातथ्येनतेशिव यामूर्त्तयःसुसूक्ष्मास्ते
नमह्यंयातिदर्शनं ॥ त्राहिमांसततंरक्षपितापुत्रमिवौरसं । रक्षमां
रक्षणीयोहं तवानघनमोस्तुते॥ भक्तानुकम्पोभगवान् भक्तश्चा
हंसदात्वयि । यःसहस्त्राण्यनेकानि पुंसामावृत्यदुर्दशः ॥ तिष्ठ
त्येकसमुद्रान्ते समेगोप्तास्तुनित्यशः । यंविनिद्राजितश्वासाः
सत्वस्थाःसंयतेन्द्रियाः॥ज्योतिपश्यतियुंजानास्तस्मैयोगात्मनेन-
मः। जटिलेदण्डिनेनित्यंलम्बोदरशरीरिणे ॥ कमण्डलुनिषंगा
य तस्मैब्रह्मात्मनेनमः। यस्यकेशेषुजीमूता नद्यःसर्वांगसन्धिषु॥
कुक्षौसमुद्राश्चत्वारस्तस्मैतोयात्मनेनमः । सम्भक्ष्यसर्वभूतानि
युगांतेपर्युपस्थिते ॥ यःशेतेजलमध्यस्थस्तंप्रपद्येऽम्बुशायिनं ।
प्रविश्यवदनंराहो र्यःसोमंपिबतेनिशि ॥ ग्रसत्यर्कंचश्वर्भानु र्भू-
त्वामांसोभिरक्षतु । येवानपातितागर्भा यथामामनुपासते॥ नम-
स्तेभ्यःस्वधास्वाहाप्राप्नुवंतुमुदंतुते। येऽगुष्ठमात्रापुरुषादेहस्थाः
सर्बदेहिनां ॥ रक्षंतुतेहिमान्नित्यं नित्यंचाप्याययन्तुमां । येनरो
दंतिदेहस्था देहिनोरोदयंतिच ॥ हर्षयन्तिनहृष्यंति नमस्तेभ्य-
स्तुनित्यशः । येनदीषुसमुद्रेषु पर्वतेषुगुहासुच ॥ वृक्षमूलेषुगोष्ठे
षु कांतारेगहनेषुच । चतुष्पथेषुरथ्यासु चत्वरेषुहटेषुच ॥ हस्त्य
श्वरथशालासु जीर्णोद्यानालयेषुच । येषुपंचसुभूतेषु दिशासु
विदिशासुच ॥ चन्द्रार्कयोर्मध्यगता येचचन्द्रार्करश्मिषु । रसा-
तलगतायेच येचतस्मैपरंगताः ॥ नमस्तेभ्योनमस्तेभ्योनमस्ते
भ्योस्तुनित्यशः । येषांनविद्यतेसंख्या प्रमाणंरूपमेवच ॥ असं-
ख्येयगुणारुद्रा नमस्तेभ्योस्तुनित्यशः । सर्बभूतकरोयस्मात्सर्ब
भूतपतिर्हरः ॥ सर्बभूतान्तरात्माच तेनत्वंननिमंत्रितः । त्वमेव

हीज्यसेयस्माद्यज्ञैर्विविधदक्षिणैः ॥ त्वमेवकर्त्तासर्वस्य तेनत्वंन निमंत्रितः । अथवा मायया देव सूक्ष्मयातत्रमोहितः ॥ एत-स्मात्कारणाद्वापि तेनत्वंननिमंत्रितः । प्रसीदममभद्रन्ते भव भावमतस्यमे ॥ त्वयिमेहृदयंदेव त्वयिबुद्धिर्मनस्त्वयि । स्तु-त्वैवंतंमहादेवं विरराममप्रजापतिः ॥ भगवानपिसुप्रीतः पुनर्दक्ष मभाषत ॥ दोहा ॥ ऐसे करिकै शम्भुकी दक्षस्तुति अवदात । होत भयो चुप फेरि नहिं कछू कह्यो हे तात ॥ कहत भये इमि दक्षको ह्वै प्रसन्न ईशान । भये परम इहिस्तवनसों हम परितुष्ट सुजान ॥ रहिहौ नित्य समीपमम कहैं कहा हम और । तुमको दक्ष प्रजापते बिज्ञ बिप्र शिरमौर ॥ बाजपेय शत औ सहस्र अश्वमेध अभिराम । तिनको लहिहौ तुम सुफल मम प्रसादते माम ॥ भयो बिघ्न तव यज्ञमें ताते करहु न क्रोध । ऐसोहो भ-वितव्यही जानो दक्ष सबोध ॥ दक्षप्रजापतिसों बचन ऐसे क-हिकै तत्र । अन्तर्द्धान सुहोतभे गति तिनकी सर्व्वत्र ॥ दक्षप्रोक्त यह स्तव जो ताको पढ़िहै जौन । औ सुनिहै नहिं अशुभ को प्राप्त होयगो तौन ॥ ह्वैहै मानव प्राप्तसो दीर्घ आयुको भूप । अतिहि श्रेष्ठ यह स्तवहै कामद परम अनूप ॥ सबदेवनकेमाहिं जिमि अतिहि श्रेष्ठईशान । तिमि सब स्तवन माहिं यह स्तवश्रेष्ठ बलवान ॥ रामगीती ॥ यशराज्यसुख ऐश्वर्य बिद्या चहै जो जन तात । सो भक्ति सहज न सुनै यहि वर स्तव को अवदात ॥ भय रोग सब मिटिजातहैं अभिरामहोत शरीर । यहदेह सोहो लहत समता गणनकी बरधीर ॥ यहस्तव जौने धाममाहीं पढ़ो जायनरेश ।तिहि माहिं भूत पिशाच राक्षस करिन सकतकलेश॥ जो सुनै नारी भक्ति सेती तौन पूज्या होति । ह्वैहोति सुरपति नारिकीसी तासुबिमला ज्योति ॥ जोसुनै अथवा पढ़ैताके सिद्धि होत सुकर्म । औ बिचारै कहै सोऊ सिद्धिहोत सशर्म ॥ ईशगौरी गुहहि औ नंदीहि पूजि सप्रेम । ह्वैतदनु शुद्धसुपढ़ैशिवका सहस

नामसनेम ॥ दोहा ॥ प्राप्तहोतदेहान्तमें स्वर्गलोकके बीच । होत नतिर्य्यग योनिमें प्रापत भूप निभीच ॥

इतिमोक्षधर्मेदक्षप्रोक्तशिवसहस्त्रनामसमाप्तिरेकाधिकनवतितमोऽध्यायः॥

दोहा ॥ दुःखमहत अरु मृत्युसों त्रसित रहत सबजीव । जिमि हमकोये प्राप्तनहिं होहि कहो मतिसींव ॥ भीष्मउवाच ॥ यत्रएक इतिहाससुनु भूपति छोड़ि बिषाद । नारद और समंगको तामेंहै संबाद ॥ नारदउवाच ॥ चरणाकुलक ॥ नित्य नित्यहर्षितहि रहतहौ । शोकताहि नहिंनेकु लहतहौ ॥ औ उद्वेग नेकहू नाहीं । देखि संमग परत तवमाहीं ॥ रहत सुनित्यतृप्त के समहौ । करत बाल तवचेष्टा तुमहौ ॥ समंगउवाच ॥ भूतसुभव्यभविष्यहि जानो । मैं नसत्य मिथ्याहो मानो ॥ यातेमनहीं लहत उदासी । धारेरहत हर्षता खासी ॥ मिथ्याभाव गुणय मनमाहीं । कर्मारम्भ करतहौ नाहीं ॥ कर्मारम्भ बिना किहि भांती । तुम ऐसे जीवन कीपांती ॥ जीवैगी तुमयह जोबानी । कहौसुनो तौऋषिबर ज्ञानी ॥ जीवत अन्ध पंगुहय जैसे । जीवत हमहूं हैं सुनितैसे ॥ सब इन्द्रियहि शोकसों छावैं । औ इन्द्रियहि मोहकोपावें ॥ ऐसेमतिसों जोजन जानै । सोइप्रज्ञ सुखदुख नाहिंआनै ॥ मूरखइन्द्रियहै मुनिजाकी । सो नहिं लहत प्राप्तप्रज्ञाकी ॥ प्रापति प्रज्ञाहोतन जाको । सुख दुख होत प्राप्तहै ताको ॥ मो ऐसो जो आतमज्ञानी । दुखदा अहन्ताहि जिहिभानी ॥ सोचिन्तैनहिं कबहूं भोगे । औ सुख दुखवारे संयोगे ॥ योगारूढ़ पुरुषबर जोहै । चाहत और केन सुखसोहै ॥ प्रापति भई न कबहूं जाकी । मनमें धरैन इच्छाताकी ॥ प्राप्तहोय जोधनहि महानै । तौन हर्षता मनमें आनै ॥ ताकेनाश कालकेमाहीं । प्रापतहोय बिषादहिनाहीं ॥ दोहा ॥ योग बिना नाहिंहोतहै प्रापत ज्ञानमहान । औनयोगबिनहोतहै प्राप्त परम कल्यान ॥ मनोहर ॥ प्राप्तभये प्रियहोत सहर्ष । तातेदर्प होत उत्कर्ष ॥ नारकहोतदर्पते भूरि । तातेभो प्रिय मुदसों दूरि ॥ कह्यो

तोहिंयह जो वृत्तान्त । तप करिकैमैं तौन नितान्त ॥ जान्यो ताते मोकोशोक । करत नहीं बाधा मति ओक ॥

इतिमोक्षधर्म्मेसुमंगनारदसम्वादोनामद्व्यधिकनवतितमोऽध्यायः ९२ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ अबलौं वृद्धा ज्ञानके कहेबहुत उपदेश । आपु पितामह प्रज्ञवर हमको सुखद विशेश ॥ जानत तत्त्वन शास्त्रको संशय गत मनजासु । उद्योगहु नहिं करतजो अयश्रेय-सकहुतासु ॥ भीष्मउवाच ॥ चरणाकुलक ॥ तत्पर गुरुपूजा के माहिं । रहैं सु बैठैं वृद्धन पाहिं ॥ औनृप शाश्वत शास्त्र सुनेते । लहत श्रेयजन कहत गुनेते ॥ अत्रएक इतिहास सुढारो । कहत तुम्हें हौं ताहि बिचारो ॥ गालव अरु नारद मेथामें । है संवाद दुहुँनको तामें ॥ गालव निज श्रेयसकेकाजै । मतिकोकरिबिस्तार दराजै ॥ कहतभये नारद को बानी । हर्षित ह्वै ऋजुतासों सानी ॥ लोकतत्त्व को हमनहिं जाने । जानत तुमसब तुमहिं बखाने ॥ छूटि जाय अज्ञान हमारो । प्राप्तहोय बरज्ञान सुढारो ॥ जासों ऐसी हमैं बतावो । चारुउपाय देर मतिलावो ॥ मानवचारिहु आश्रम वारे । निजु निजुही को कहत सुढारे ॥ मिलत श्रेय आश्रमहू माहीं । पै न मिलत जो रहतसदाहीं ॥ नारद शास्त्रहोत जो एकै । होतश्रेयतो लहत बिबेकै ॥ बहुत शास्त्र हैं मुनिवर ताते । जानि नपरत श्रेय मेधाते ॥ नारदउवाच ॥ सबशास्त्रहि लखिहैं औ सुनिहैं । तिनको अपनी मतिसों गुनिहैं ॥ तोहिं श्रेय तबपरि है जानो । शास्त्र बिनन परिहैं अनुमानो ॥ शास्त्रकेन सिद्धान्तहि जानै । अरु अपनेको शास्त्रीमानै ॥ श्रेयपरत ताहीनहिं जानो । ममये बचन सत्यकरि मानो ॥ दोहा ॥ सह विधि वेदाध्ययन जो अरु वेदान्त बिचार । अरुजो इच्छाज्ञानकी श्रेयस सोयसुढार ॥ जानेसो सबशास्त्र बर लाभबुद्धि कोहोत । बुद्धिलाभ सम और नहिं जानतहैं मतिपोत ॥ बुद्धिलाभ सोइश्रेयहै अति उत्तम अ-

भिराम । कह्यो तुम्हैं जो श्रेय है सो गुणिकै हम आम ॥
इतिशान्तिपर्बणि मोक्षधर्मेश्रेयवाचिकोनामत्र्यधिकनवतितमोऽध्यायः ॥
युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ होतसुप्रज्ञा लाभहै कीन्हें शास्त्रबिचार । श्रेयसप्रज्ञालाभते प्रापत होत अपार ॥ कह्योपूर्ब अध्याय में हमको तुम यह तात । और एक बृत्तान्त अब पूछतहौं कहु ख्यात ॥ हमऐसे भूपालते संग पाशसों पर्म । छूटै किहिगणसों भयेयुक्ति कही गुणि मर्म ॥ भीष्मउवाच ॥ रामगीती ॥ हौं कह्यो पूर्ब अरिष्टनेमी सगर को इतिहास । नृपअत्र सो सुनु मनहिं थिरकरि बुद्धिको सुप्रकास ॥ सगरउवाच ॥ ऋषि कहाकीन्हेंपरम सुखके मनुज प्रापत होत । अरुकहौ कैसे होयकबहूँ शोच को न उदोत ॥ भीष्मउवाच ॥ सुनिबैन ये सुअरिष्टनेमी सगरके अवदात । गुणि चित्तमाहीं आपने इमि कहत भो सुनुतात ॥ हे मोक्षको सुख जौन सोई परमसुख अभिराम । नहिं होत ताको कबहुँ प्रापत मूढ़ जो जन माम ॥ नितरहत है पुत्रादिमें औ पशुन में अनुरक्त । बहुदुःखदा जो नेहफांसी भयो तासों युक्त ॥ अतिप्रौढ़ करिकै सुतन को तिनको सुकरि सुबिवाह । नितरक्तरहनो नेहफांसी जानु सो नरनाह ॥ जो जानि करिकै सुतनको सामर्थ छोड़िहिदेत । सोचरतहै आनन्द से तोलोक माहिं सचेत ॥ अरु सुतवती जब होयनारी ताहिदे तब त्यागि । नहिं पुत्रहोय समर्थ तौलौं रहैमति में पागि ॥ येबचन मेरे श्रवण करिकै मुक्तवत रहुभूप । तू छोड़िकै उद्वेगताकरि बुद्धि बिमल अनूप ॥ दोहा ॥ ये सुबिप्र के बचन सुनि सगर भूप बड़ भाग । प्राप्तभयो प्रज्ञाहिसों मनमें गाहिकै त्याग ॥ भीष्मउवाच ॥ संग पाशसों छुटतजन त्याग दियेते सर्ब । और उपायन है कछू त्याग समान अखर्ब ॥
इतिशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेसगरारिष्टनेमिसंवादेवेदाधिकनवतितमोऽध्यायः
वैशम्पायनउवाच ॥दोहा॥ छूटिजातहै दुःखसों छोड़िदेय सबसंग ।

पूरब यहवृत्तान्तकहि भीषमप्रज्ञ उतंग ॥ संगदोषते लहतजन अधोगातिहि दुखदाय । अरु प्रतिवन्धक स्वर्गके मारगको नर-राय ॥ कहिबे को यह शुक्रको उपाख्यान जो ताहि । पूछे पांडवके कहत श्री भीषम अवगाहि ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ असुरनके प्रिय माहिं रतकाव्य रहत क्यों तात । औ अप्रियमें सुरनके कहो मोहिं वि-ख्यात ॥ असुरनहीके तेजको नित्यवढ़ावतपर्म । क्वैकरिकै देवर्षि बर याको कहिये मर्म ॥ अरु प्रापत शुक्रत्वको भयो कहो किहि भांति । अरु पाई किहिभांतिसों चारुऋद्धिकीपांति ॥ जौनरूप भूमिस्थअरु तासों दिवकेमाहिं । वशिष्ठादि सबऋषिनलों जाय सकत हैं नाहिं ॥ यह सब जाननकी महति इच्छा मो मनमाहिं । मो सबप्रश्ननको सुगुणि कहोआपु ममपाहिं ॥ भीष्मउवाच ॥ कहत तुम्हैं हौं जौन तुम पूछो हे वृत्तान्त । जैसे हम पूरब सुन्यो तैसे सुनु क्षितिकान्त ॥ जयकरी ॥ असुर करतबाधा मखबीच । हुते सुरनको होय निभीच ॥ लेतहुते जब अमर दबाय । दैत्यन के वृन्दनको धाय ॥ असुर जातहैं भागि सदाहिं । तब भृगुपत्नीके गृहमाहिं ॥ शरणभयेते भृगुकी बाम । रक्षा करतीही अभिराम ॥ तहां न जाय सकतहे देव । तासुशापको गुणिकैभेव ॥ तब तिन लयो बिष्णुकीशर्ण । निर्जर जानि महाभय हर्ण ॥ विष्णु सुरन को पीड़ित देखि । अति अरु शरणभये अवरेखि ॥ चक्रचलाय सुनो अवनीश । भृगुपत्नी को काट्यो शीश ॥ लयो शुक्रको शरणो जाय । तब तिन असुरन भयसों छाय ॥ शुक्रमात के बधसोंक्षीण । अभयदेवके तिनहिं प्रवीण ॥ देवनकोबाधा अति भूरि । देनलग्यो वहु रुटसों पूरि ॥ सर्ब जगतको प्रभु पुरहूत । अरु ताको जो कोश अकूत ॥ यक्षराज ताको प्रभुख्यात । तासु शरीर माहिं भृगुतात ॥ योगयुक्ति सों करि सु प्रवेश । रोकि धनपतिहि सुमुनि सुबेश ॥ हरत भये ताको धन सर्ब । स्वच्छ योगसो परम अखर्ब ॥ धन हरिगये सब अलकेश । प्रात होत

भो दुखहि अशेश ॥ दीन होयके शंकर पास । जात भयो भो अतिहि उदास ॥ शंकरको अपनो वृत्तान्त । कहत भयो ऐसे क्षितिकान्त ॥ भार्गव मो तनुमाहिं प्रवेश । करिकै रोंकमोहिं गिरिजेश ॥ लेयगये मेरो धनसर्ब । योगयुक्तिसों पर्मअखर्ब ॥ तोमर ॥ सुनि श्रीदके ये बैन । करिशम्भु रातेनैन ॥ कबिहै कहां कहुमोहि । धनदे कह्यो इमि जोहि ॥ दबिभौन शम्भुसमीप । गुणि क्रोधवान महीप ॥ करमाहिं लीन्हें शूल । शिवको सुगुणि प्रतिकूल ॥ दोहा ॥ शूलपाणि को लखिपर्‍यो भार्गव अतिही दूरि । तदनु पर्‍यो शूलाग्रपै देखि योगसों भूरि ॥ चरणाकुलक ॥ शंकर कबिहि शूलपै जान्यो । भये शूलपै यह अनुमान्यो ॥ तपसों भई सिद्धता भारी । प्रापत कबिको परम सुढारी ॥ सो यह चाहत मोहिं बतायो । यह गुणि शूलहि सद्य नवायो ॥ शूल नवावत करमें आयो । कबि तपके तेजससों छायो ॥ कर में लखि कै शीघ्र तहांहीं । डारि देतभे निज मुख माहीं ॥ शम्भु उदरमें प्रापतह्वैकै । कबिभो फिरत शोचसों ग्वैकै ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ भार्गव शम्भु उदरके माहीं । पैठि कियोका कहुमो पाहीं ॥ भीष्मउवाच ॥ भार्गव पैठि उदर में नीको । सुस्तुति करत भो वृषयानी को ॥ कढ़िबेकी कबिके मन आवै । शंकर सोंपै कढ़नन पावै ॥ तब शंकरको ऐसे बानी । कहत भयो तत्रहि कबिज्ञानी ॥ दोहा ॥ मोपै होय प्रसन्न शिव कढ़न दीजिये नाथ । बारबारमैं कहतहौं तुम्हें जोरिकैहाथ ॥ तब शंकर ऐसे कह्यो निकरु शिश्नकीराह । सर्बद्वार रोंकत भये इमि कहि शिव नरनाह ॥ अरिल ॥ शंकर सर्ब द्वार रोंके जब । अति ब्याकुलता लहत भयोतब ॥ फिरत उदर में भो कबि इतउत । शिव के दहत तेजसों दुखयुत ॥ उक्ता ॥ कढ़त शिश्न की राह । भार्गव भोनरनाह ॥ शुक्र भयो है नाम । याते कबिको आम ॥ दोहा ॥ भार्गव शिवके उदर ते कढ़े शिश्न की राह । याते दिव में सकतहै जाय नहीं नरनाह ॥ महत तेज

सों युक्त अति निकसे कबिहि निहारि। होत क्रोध युत शूललै खरे भये त्रिपुरारि॥ भई निवारति क्रोध तहँ देवी शिवको भूरि। देवीके पुत्रत्वको प्राप्तभयो मुदपूरि॥ ब्रह्मोवाच॥ शुक्र भयो मम पुत्र है याते याको नाश। कीजै आपुन ममपते करिकै क्रोध प्रकाश॥ देव उदरते जो कढ़त तासु विनाश। कबौन। भयो आजुलौं औ नहीं ह्वैहै हे मम रौन॥ ये देवी के बचन सुनि ह्वै प्रसन्न शिवतत्र। जाहु शुक्र तू मुदित ह्वै तव मन आवै यत्र॥ दोहा॥ शिवको औ तिमि उमाको करिकै शुक्र प्रणाम। निजस्थानको जातभो तेजोमय अभिराम॥ भार्गवको जो चरितसो हम सब कह्यो बिशाल। हमको जो पूछ्यो हुतो कुन्ती सुत भूपाल॥

शान्तिपर्बणिमोक्षधर्म्मेभार्गवसमागमोनामपञ्चाधिकनवतितमोऽध्यायः॥

युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ संग दोष ते शुक्रसो लहत ऊर्ध्वगति नाहिं। यह सुनि तुमसों डर भयो भूरि मोहिये माहिं॥ याते पूछत आपुसों कहौ श्रेय कछु और। प्रबक्तान के आपुहौ तात परम शिरमौर॥ कौन कर्मकीन्हे पुरुष दुओलोकके बीच। अतिहि परमजो शरमहै ताकोलहे निभीच॥ रामगीती॥ एक कहत हौं इतिहास तुमको अत्रमैं प्राचीन। इमि पराशरको पूछतो भो जनकभूप प्रवीन॥ सबभूतगणको श्रेयहै कादुओलोकनमाहिं। जो जानिबेकेयोग्यहै सो कहोमेरे पाहिं॥ येबचन सुनिकै पराशर नृप जनकके अवदात। इमि भये कहते जनक को मुनि कृपा करिकै तात॥ पराशरउवाच॥ बर धर्म होहै श्रेय भूपति दुओलोकन बीच। कुछ और श्रेष्ठ नधर्मते हैबदत बिज्ञ निभीच॥ जन होत है अति पूज्य दिवमें प्राप्त धर्महि होय। बुध आश्रमीते रहत तत्पर धर्ममें अघगोय॥ जनचारि बिधिकी लहतहै गति जनक भूप सुजान। तेक्रमहि सों मैं कहत तुमको अत्र बिज्ञ महान॥ जन योनिको बिहगादिकीहै लहत अघरत जौन। अरु स्वर्ग

को तेहोत प्रापत पुण्यवत मतिभौन ॥ सोमनुज ताको पाय जामें पुण्य पाप समान । फिरि ह्वै शुभाशुभ कर्म माहीं प्राप्त होत सुजान ॥ नृप पुण्यको अरु पाप सबको भये ते उच्छेद । जन प्राप्तहो कै अल्प पदको नित्य रहत अखेद ॥ गति लहत तैसो मनुज जैसे होहिं पूरब कर्म । गतिकर्मके आधीन जानो जनक भूप सशर्म ॥ नृपकिये पुण्य अपुण्य तिन में होय जो बलवान । है होत ताको भोगप्रथमहिं कहत मेधावान ॥ अघहोय अथवा पुण्य जोई जातहै रहिशेश । हैहोत ताको भोग पीछे नशत नहिं अचलेश ॥

इतिशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेपराशरगीतासुषडधिकनवतितमोऽध्यायः ९६ ॥

पराशरउवाच ॥ दोहा ॥ हैसुखादिको हेतुनृप पूरबकृत जो कर्म । तासु करन उच्छेदबर करैयोग गुणिमर्म ॥ ब्रह्म भावसों लखत जो संसारहि लहिदेह । ब्रह्म भावको लहतहै सोईनृप बुधिगेह ॥ निरालम्ब मनकरि करी सेवाजिहि जनपर्म । भक्ति ज्ञानरूपी परम सोय प्रशस्त सुकर्म ॥ हस्तादिक कोकार्य्यनाहिं तासेवाके माहिं । जिन्हें ज्ञान साक्षात नहिं तिनसों होतोनाहिं ॥ दुर्लभजो है आयुनहिं ताहि बितावै ब्यर्थ । उत्तर उत्तर शरमको यत्नहिंकरै समर्थ ॥ भक्तिज्ञान रूपापरम सेवाजो अभिराम । ताको प्रापत होयकै पूरबजन बुधिधाम ॥ फिरिजो राजस कर्ममें प्राप्त होय भूपाल । लहै श्रेष्ठता तौनहीं कहत सुबुद्ध बिशाल ॥ प्राप्तबर्ण उत्कर्षको पुण्य कर्मसों होत । ताहि बितावत है कुनर करिकै पाप उदोत ॥ कियोपाप अज्ञानते जोनपरम सुखदाय । ताको दूरि करै परम करिकै तप नरराय ॥ पाप कर्मते होतहै निश्चय दुःखहि भूरि । यह बिचार करिकै रहै पापकर्मसों दूरि ॥ कुत्सित होफल लखतहौं पापनको अचलेश । देहादिहि जाको रुचत सोअघ करत हमेश ॥ होतनहीं बैराग्य है पापात्मासों भूप । निश्चय ताको होतहै नरक प्राप्त दुखरूप ॥ रंग बस्त्रते छूटत है केते

छूटतहैन। यत्न कियेते इमिहि अघ जानोनृप मतिऐन ॥ कियो जौन अज्ञानते छूटिजात सोपाप। औजानेसों जो कियो सोनहिं सुमतिकलाप ॥ जोजनकरिसुबिचार यह नित्यकरत शुभकर्म। प्रापतहोत कल्याणको निश्चय सोजनपर्म ॥ यहसाधारण सबन को कह्यो धर्म हमभूप। अब बिशेष भूपतिनको कहतनृप धर्म अनूप ॥ जीतैउन्नत अरिनको पालै प्रजहि सनीति। अग्निहोत्र औ मखकरै बयके मध्य सरीति ॥ करैबास आरण्यमें अन्तमाहिं लहिज्ञान। निग्रह कैइन्द्रियन को रहैभूप सविधान ॥ जिमि आपुहि देखै तिमिहिं भूत गणानको सर्व। सत्यमाहिं तत्पर रहै गुणि कै धर्म अखर्व ॥

इतिशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेपराशरगीतासुसप्ताधिकनवतितमोऽध्यायः ९७ ॥

पराशरउवाच ॥ दोहा ॥ हमराजा हैं मुनिनके पालतहैं सहधर्म। तिनको कीन्हों योगजो सहविधान अतिपर्म ॥ कैहै छठहों अंशबर ताके फलके बीच। हमको प्रापत यहसुगुणि मनमें होय निभीच ॥ प्राप्ति होनको ब्रह्मको हमक्यों करैं उपाय। जोऐसे हमको कहौ तौसुनिये नरराय ॥ कौन कौनको करतहै जगमाहीं उपकार। कौन देतहै कौनको यहतुम गुणो उदार ॥ प्राणी कर्महि करतहै सर्व आपने अर्थ। कोऊ करत परार्थ नहिं निश्चय जानु समर्थ ॥ माता आदिक की कियेसेवा सहित विधान। सुधरतहै परलोकयह गुणिकै करत सुजान ॥ निकसो अरनोही अरथयाते वाहूमाह। ऐसेही सबको गुणो निश्चयहैनरनाह ॥ भीष्मउवाच॥ सुनि सुपराशर के बचन देगुणि जनक नृपाल। फिरि पूछनमो चाहिकै तिनकै बुद्धिबिशाल ॥ जनकउवाच ॥ काहे साधन श्रेयसों जोहैनित्य अमंद। औ बिनाशको लहत नहिंकहिये विज्ञ बिलन्द ॥ अरु प्राणी कहँ जायकै आवत इतनाहिं फेरि। कहो आपु अवगाहिकै ज्ञानचक्षुसों हेरि ॥ पराशरउवाच ॥ साधन नित्यअसंग है परम श्रेयकोभूप। औ बिनाश नहिं होतहै तपको स्वच्छ अनूप-

प ॥ आवत इतनाहिं फेरिजो प्राप्तब्रह्ममें होत । जानतयहवृत्तान्त भो जिनके ज्ञान उदोत ॥ अरिल ॥ जोजन करिकै दूरिअधर्महि । प्राप्त होतहै उत्तम धर्महि ॥ अभय दान जीवनको दैकरि । सानँद रहत मोक्षको लैकरि ॥ जोजन सहसन सुरभिनके चय। देत सैकरन अरु चंचल हय ॥ तिहिते अतिहि श्रेष्ठहै सोजन । अभय देत भूतनको जोजन ॥ दोहा ॥ बिषय मध्यहू रहिनहीं लिप्त होत मतिमान । बिषय बिनाहूं बिषयमें लिप्तहि रहत अजान ॥ अरिल ॥ लगि बिषयनमें जोनित देखत । अपनो भलोसोन अवरेखत ॥ बशमें होयक्रोध वारेबहु । सुखकोप्राप्त होतहै नहिंकहु ॥ देरन कीजै कीजै अतिद्रुत । धर्महि बिमला मतिसों ह्वै युत ॥ छोड़तिमृत्यु धर्मके काजन । समयपाय लैजाति सुराजन ॥ दोहा॥ चित्तहोत जब विमल है शर्म धर्मसों भूप । तबनृप योगाभ्यासकी आवत राह अनूप ॥ जात अन्ध अभ्याससों जैसेनिज गृह माहिं । ऐसेही बरयुक्ति जो लही गुरूके पाहिं ॥ ताकेबर अभ्यासते ज्ञानी परमअनूप । मार्गअगोचर माहिंहू जात चलोहै भूप॥ मोक्षधर्म के माहिंजन बिप्रनहीं है जौन । जन्म मरणमें चक्रसम घूमतहै जनतौन ॥ ज्ञान मार्गको लहतजो दुहूं लोकमें पर्म। प्राप्तहोत आनन्दको तुम्हैं कहत गुणिमर्म ॥ मनहीं कारण बन्ध को लगेबिषयमें भूप। औनलगे तेमोक्षको कारण मनहिंअनूप॥ याते मनको रोकिकै कीन्हें योगाभ्यास । आत्माको जनहोत है प्रापतपाय प्रकास ॥ इन्द्रियकी जे बिषयहैं तिन्हैं गुणत निज कार्य्य । सोनिज कारज योगसों छूटि जातहै आर्य्य ॥ मृन्मय भाजनमें पके रहत नहीं कीलाल । तैसे तपयुत देहमें बिषय नहीं भूपाल ॥ आच्छादित अज्ञानसों बिषयमाहिं रतजौन । जानत पथनाहिं अन्धजिमि तिमि आत्माको तौन ॥ जरा अवस्थालौं रहत जोरत जगहीबीचि । अहि बायुहि ग्रसिलेत तिमि ताको मृत्यु निभीच ॥ खैंचेखैंचे फिरतहै जिमि नावहि मल्लाह । मन

तिमि देहहि भावना सोंजगमें नरनाह ॥ नेहयुक्त जन ज्ञान नाशि ऐसे लहिकैंकष्ट । नीरमाहिं जिमि जात ह्वै सैकनको गृहनष्ट ॥ जोशरीरको गुणत गृह तीरथ अंतर शुद्धि । औमति मारगमें चलत पावत सुख बरबुद्धि ॥ अतिबर आस्तिकभावते मतिसों गुणि व्यापार । करै सुबुध जिहि अर्थसों नष्टन होत उदार ॥ भीष्मउवाच ॥ जनक पराशर सुमुनिसों सुनिकै यह सिद्धान्त । प्राप्त परम आनन्दको होतभयो क्षितिकान्त ॥

शांतिपर्वणिमोक्षधर्मेपराशरगीतासमाप्तिर्नामअष्टाधिकनवतितमोऽध्यायः ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ सत्य क्षमा दमसुमतिको सुबुध सराहत सर्व । लोकमाहिं तव मतिकहा यामेंप्रज्ञ अखर्व ॥ भीष्मउवाच ॥ कहत एक इतिहासहौं यहि प्रसंगमें भूप ॥ साध्यनको अरु हंस कोहै संबादअनूप ॥ हरिगीती ॥ बिधिहंस ह्वैकै हेमके फिरतेसुती-नों लोकमें । नृपसुनो कबहूं भये आवत साध्यवारे थोक में ॥ साध्याऊचुः ॥ हेहंस हमहैं साध्यनामा देव पूछत आपसों । तवरूप लखिकै ज्ञानितुमको भरे ज्ञान कलापसों ॥ हमकोकहो तुम कृपा करिकै मोक्षकोजो धर्महै । तव बदनते अभिराम अतिहीं बचन निकसत नर्महै ॥ हौंकहा जानत श्रेष्ठ तुमअरु रमतहै तव मन कहां । जोकाज कीन्हें पुरुषछूटे जगतसों कहुसो इहां ॥ हंसउवाच ॥ बरस्वधर्म्माचरणधारे सत्यनित भाषणकहै । मवछोड़िकै रागा-दिको जबचित्त वारीको लहै ॥ कबहूं प्रियाप्रिय प्राप्तमें हर्ष बि-षादै नाकरै । इन्द्रियन को बशमेंकरै नहिं कामना कौनिहुधरै ॥ नहिं कहैकबहूं बैनऐसे होय दुख जिनको सुनै ॥ कटुबचनको जोदुःखहै सो सह्यो जात नयहगुनै ॥ जन कहैकोऊ आयके कटु बचनतो आपुन कहै । नहिं कहो ऐसोमानिहियमें क्षमा धारेही रहै ॥ हमसुनत उत्तम कार्य्यहै यह और यासमहै नहीं । सुख चहतसो यह करत कारज लगत अन्तनहै कहीं ॥ दोहा ॥ सत्य सुफलहै बेदको सत्यसुफल को पर्म । इन्द्रिय केरो रोंकिबो नाको

मोक्षसशर्म ॥ बचनक्षुधा तृष्णारटहि औ उपस्थकोजौन । रोकत है ताको कहत हमध्यानी मतिभौन ॥ मैं परिपूरण ज्ञानसों तबहूं नित्यसहर्ष । सेवत सोबिधि बड़ेनको जानि महत उत्कर्ष ॥ तृष्णाको अरु रोषसों रहितहि रहत सदाहिं । बिषय लाभको जातनाहिं कबहुं सुरनके पाहिं ॥ छूटोहौं मैं पापसों घनसों जिमि निशिनाह । कौनहु कारजमें लगत मैंन सहित उत्साह ॥ बुधसों अबुधन को करै कबहुं नहीं अपमान । औन बुलावै निज निकट करिकै प्रेम महान ॥ निन्दापरकी औ स्तुती अपनीकरैकबौन । कोऊजो निन्दाकरै तौ सुनि रहै सुमौन ॥ होत जासु अपमान है तासु कछूनहिंहोत । नशत शीघ्रही करतजो लहिकै दुःख उदोत ॥ क्रोधी जो शुभ करत है ताको यम हरिलेत । श्रमही को सो होत है प्रापत अबुध अचेत ॥ जयकरी ॥ सत्य क्षमादम प्रज्ञापर्म । ये चारो दायकहैं शर्म ॥ पैइन चारिनहूंके माहिं । औरहि गुणो सत्यसम नाहिं ॥ सत्यस्वर्ग को है सोपान । कीन्हों मैं सिद्धान्त महान ॥ दोहा ॥ देवन को अरु सुरन को फिरि लोकन के बीच । कहत यहै सिद्धान्त हौं मैं भो परम निभीच ॥ जैसे जनको सँगकरै तैसोही ह्वै जात । आपहु कछु दिनमें सुनो बसन रंगइव स्यात ॥ जे नित तत्पर रहत हैं शिश्न उदरके माहिं । अरुजे नित्यहिकहत हैं पुरुष बचन सब पाहिं ॥ औ चोरीमें जेरहत तत्पर सहित हुलास । तिनते दूरहि रहतसुर कबहुं न आवत पास ॥ सम्भाषण सुर करत हैं बर साधुनके संग । नित्य प्रशंसा करत हैं तिनकी परम उतंग ॥ जौन सत्वगुण हीन अरु असन करतजे सर्ब । होतनहीं संतुष्ट हैं तिनसों देव अखर्ब ॥ साध्याऊचुः ॥ किहिसों छादित लोकनहिं किहिसों होत प्रकास । अरु किहिसों मित्राहितजत अत्रकहो हमपास ॥ हंसउवाच ॥ आच्छादित अज्ञानसों मत्सरसों न प्रकाश । होतजात हैलोभको भये महानप्रकाश ॥ साध्याऊचुः ॥ बैन एक

ब्राह्मणन में रमत सोदके बीच । मौन धरनको और को कलह न करत निभीच ॥ हंसउवाच ॥ रहत मोदते प्राज्ञ अरु प्राज्ञगहन हैं मौन । प्राज्ञहि कलह न करत हैं करत लोकमें गौन ॥ साध्या ऊचुः ॥ का कारण देवत्व को विप्रनको अभिराम । अरुकाहै सा-धुत्वको कारण कहिये आम ॥ असाधुत्वको हेतु औ मानुषना को कौन । साध्यन के ये बचन बर सुने हंस मनिमौन ॥ हंसउ-वाच ॥ वेद पढ़न देवत्वको कारण है अभिराम । औ कारण सा-धुत्वको व्रतजो विधिवत माम ॥ असाधुत्वको हेतुहै निन्दाकी बो जौन । मृत्युलहत यहिहेतु ते मनुज कहावत तौन ॥ भीष्मउवाच ॥ हमकोपूछ्यो जौनतुम अत्रकह्यो हमतौन । अवआगे कापूछि-हौ हमको सुतवल भौन ॥

इतिशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेहंसगीतासमाप्तिर्नामैकोनशततमोऽध्यायः९९ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ सत्य क्षमा दमऔ सुमति इन चारिहु के माहिं । कही श्रेष्ठता सत्यको आपुतात ममपाहिं ॥ सो सुनिकै निश्चयभयो मोमनमें अवदात । सांख्यमाहिं अरुयोग में जो बिशेष कहुख्यात॥ सांख्य माहिं अरुयोगमें जो विशेषहै दक्ष। सुन्योपूर्व पै आपुसों सुनि हौं फेरि प्रतक्ष ॥ भीष्मउवाच ॥ करत प्रशंसा सांख्यकीसांख्यमती हैजौन । करतप्रशंसा योगकी अरु योगीहै तौन ॥ दृश्यमान यहजगत जो ब्रह्म तौनहैसर्व । सांख्य नामयहिज्ञानको हैनृप अत्र अखर्व ॥ ब्रह्मजगत यहसर्व जो तौ ईश्वर नहिं कोय । ईश्वरबिन किमि छूटिबो महादुःखसों होय॥ करत प्रशंसायोगकी याते योगी स्वक्ष । भिन्न योगमें पूज्य औ-पूजक हैं नृपदक्ष ॥ ईश्वरपूज्य अनूपजो मोक्ष प्रदातातौन । सांख्ययोग के माहिं है इतोभेद क्षितिरौन॥ जगते भिन्नन ई-श्वरहि जानन को यह हेतु । सांख्यमती ते कहतहैं हेसुनु तात सचेतु ॥ कबहूं जो नहिं लगत है बिषय वृन्दके बीच । मानतहै संसारको ब्रह्महि परम निभीच ॥ ब्रह्महिसो ह्वैजात है होतजबै

देहान्त । यातेमानै भिन्नक्यों ईश्वर को क्षितिकान्त ॥ याहीको बरकहतहैं सांख्यसुप्रज्ञअखर्ब । सांख्य माहिं हेनृप प्रवृत होय सकत नहिंसर्ब ॥निश्चय सांख्यमतीनको होत शास्त्रते तात । जिमियोगिनकोतिमि तिन्हैं अनुभवहोत न ख्यात ॥ दुओमार्ग ये मोक्षकेश्रेष्ठ गुणत हौ भूप । प्रवृतहोय जिहिमाहिं बरसोइहोत सुखरूप ॥ तुल्यहि बृत तुल्यहि दया तुल्यहिहै आचार । दोउन केहैंशाखहीभिन्न सुबुद्धिअगार ॥युधिष्ठिरउवाच ॥ तुल्यहि हैदोऊन केआचारादिक सर्ब । भेदशास्त्रको क्योंभयो कहियेतातअखर्ब ॥ भीष्मउवाच ॥ अनृत भावजो द्वैतको ताको एकहु बार । तत्त्वज्ञान तब होततब उदय न होत उदार॥रागमोह अरु स्नेहऔ तथा क्रोधअरु काम । द्वैतभाव जबलौं रहत तबलौं ये सब नाम ॥ तातसुनो जब होहिं नहिं उत्पन्नहि ये सर्ब । कर्महोत नहिंदेह नहिं रहतिन दुःख अखर्ब ॥ सांख्य शास्त्रकी रीतियह कहीतुम्हैं जो भूप । योगशास्त्र की रीतिसों अबहौं कहत अनूप ॥ जो निशेधहै मानिबो जगको तासोंख्यात । सत्यभावजो दृश्यमें सोन रहतहै तात ॥ तासोंसब रागादिको होय जात उच्छेद । मुक्तहोय संसारसों नित्यहि रहतअखेद ॥ ऐसो जोनहिं होयतौयोग मार्ग ते भ्रष्ट । निश्चय योगी जातह्वै महत पायकै कष्ट ॥ होति बिघ्न सम्भावना योगमार्ग सों पर्म । मोक्षमाहिं याते नहींयोग सुमुख्य सुधर्म ॥ याहीको निश्चयकरतदै अनेकदृष्टान्त । आगेसोएकाग्र कैचित्तहि सुनि क्षितिकान्त ॥ रामगीती ॥ अनिमेष जैसे मत्स्य बलवत काटि करिकै जाल । पुनि प्राप्तहोत सुनीरमें तिमि योगवान बिशाल ॥ सब काटिकै कल्मषनको परपदहि प्रापत होत । फिरि होत ताहिन प्राप्तहैं रागादिवारो होत ॥ जिमितोरि पाशहि हरिण बलवत बिमल मार्गहि जात । तिहि भांतिही बलवान योगीयोगसों अवदात ॥ लोभादिबन्धन महत दुःखद काटिकै ते सर्ब । है बिमल मार्गहि लहतजो आनन्द रूप अ-

खर्ब ॥ जिमि अबल फांसी माहिंपरि मृग जात है कै नष्ट।
तिमि भांतिही बलहीन योगी महत लहिकै कष्ट ॥ बध लहत
जैसे जालमें परि मत्स्यजे बलहीन। तिहि भांतिही सों अबल
योगी जानु भूप प्रबीन ॥ जिमि अल्प पावक थूल इन्धनसों
सुनो बुझिजात। तिहि भांति योगी अबल दीरघ किये साधन
तात॥ जिमि भयेते सुकृशान सोई महतबर बलवन्त। करिजारि
डारत भस्मसर्बा भूहितुर क्षितिकन्त॥ सुनु तिमिहिं क्रमसों
योग करिकै भयेते बलवान। मो जगहि अंत अनेह रविसम
सोखिलेत महान ॥ जिमि अबल जनको लेत करिबश माहिं
नीर प्रबाह। तिमि बिषय योगी अबलको करिलेत वश नर-
नाह ॥ जिमिबली बारण नीर श्रोतहि रोंकिहै सो देत। तिमि
बिषयको योगी दुलहिकै योग बलहि सचेत ॥ बरयोगके लहि
बलहि योगीतेजसों अतिभात। ऋषि सुरनके अभिराम पद
को प्राप्तते कै जात॥ नृप सबल योगी पै चलो नहिं मृत्युहूको
जोर। करि योगबलसों लेत योगी बलीभूत अथोर ॥ तिन
सहित भूतन फिरत भूकै बीच निर्भयहोय। नहिं जीति ताको
सकत केहूं काहु कबहूं कोय॥ बलयोग सोंजो होतप्रापत कह्यो
तुमसों तौन। अबकार्य्य सूक्ष्म योगतेजो होत सुनि बलभौन ॥
जिमि हनत धन्वी लक्षको अति सावधान महान। तिमि करत
योगहि सबिधि सों कैवल्य लहत सुजान ॥ जिमि स्नेहसेती
पात्रपूरण धारि शिरपर ताहि। सो पानपै जन चढ़त करि
एकाग्र मन अवगाहि ॥ एकाग्र करिकै चित्त त्योंहीं योगवान
नरेश। है करत आत्महि अमल जैसो परम चण्ड दिनेश ॥
जिमि महाजलके माहिं गतजोनाव ताहिमलाह। अतिशीघ्र
देत लगाय तटपै तिमिहिं बरनरनाह ॥ अतिश्रेष्ठ योगी योग
करिकैकरि सुदूरि प्रमाद। सुनु लहत है परपदहि जाके नहीं
निकट बिषाद ॥ जिमि सार्थिवर हय युक्तरथसों रथीको निज

देश। पहुंचाय देत सुशीघ्रहीहै तिमिहिं वर अचलेश॥ जो धा-
रणामें युक्तयोगी योगको अभिराम। सोहोत प्रापत परमपद
कोतीरलौं बुधिधाम॥ परमात्मा में आत्माकोकै प्रबेश अनूप।
जोरहत योगी हनत सोअघ लहतपद सुखरूप॥ युधिष्ठिरउवाच॥
उक्तछा॥ कैसेकरिआहार। योगी प्रज्ञसुठार॥ औकिनको नृपजीति।
बलको लहैसरीति॥ भीष्मउवाच॥ दोहा॥ मण्डल कणापिण्याक
कोभक्षण करै हमेश॥ तजिदुग्धादिकसोंलहत योगबलहि अच-
लेश॥ यवकी लपसी बिरचिकै ताहिखाय बहुकाल। एक बेर
सोहोतहै प्रापत बलहि बिशाल॥ अरुजो योगी पिवतहै दुग्ध
मिश्र कीलाल। बहुबर्षनसों होतहै प्रापत बलहि बिशाल॥
जोननिरन्तर करतनहिं योगी मांसअहार। तौनहोतहै योगके
बलको प्राप्त सुढार॥ कामक्रोध शीतोष्ण अरु वर्षाभय अरु
शोक। श्वास अरति तृष्णा महति औबिषयनको थोक॥ आ-
लस औनिद्रा परश जीते इन्हें सुजान। योगी ह्वैकै योगके
बलको परम महान॥ करत प्रकाशित आत्महि बिमलामतिसों
भूप। चंचल ताको चित्तकी करिकै दूरि अनूप॥ यह मारग
अति वक्रहै यामें होत निबाह। काहू काहू कोसुनो बिज्ञबीर
नरनाह॥ छुरीधार अतिनिशितपै खरो रहौहै जात। योगमार्ग
ऊपर नहीं चल्यो जातहै तात॥ नष्टाजाकी जातिहै योगधारणा
पर्म। सोयोगनिहिं लहतहै बर शुभ गतिहि सशर्म॥ जोयोगी
बिधिवत रहत योगधारणा माहिं। जननमरन केदुःखको फेरि
लहत सोनाहिं॥ यहिविधि योगी योगके बलसों परमअनूप।
सब भूतनकोछोड़िकै जात ब्रह्मह्वै भूप॥ रीतिसांख्य अरुयोग
की भिन्न भिन्न भूपाल। शास्त्रभेद याते भयोहै हेप्रज्ञबिशाल॥
इतिमहाभारतेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेयोगबिधिर्नामशततमोऽध्यायः १००
युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ योग मार्गहमको कह्योआपुस विधि वि-
ख्यात। अबसम्पूरण सांख्यको कहुबिधान हेतात॥ भीष्मउवाच॥

कपिलआदिकन जोकह्योसूक्षम अति अभिराम। स्वच्छ परम मतसांख्यको सुनो तौन तुमश्याम॥ श्रमएको नहिंपरनहैं देखि सांख्यमेंभूप। औदोषहु एको नहीं गुणवहु परम अनूप॥ सुर नर ऋषि राक्षसनकेअरु असुरनके भूरि। विषय जानिकेदोष सह परमज्ञानसोंपूरि॥ और सबजे तिनहुंके जानिविषयभूपाल। औ सु अबाधिको आयुकी गुणिकैविज्ञविशाल॥ सवविपर्यिनको दुःख गुणिअनिश बिलंद नितान्त। योगमाहिं अरु दोषजे तिनको गुणि क्षितिकान्त॥ दशगुण गुणिकै सत्वके रजकेनौअनुमानि। औतमके गुण आठगुणि तिनकेसुमानिमहानि॥ गुणनाम। दोहा॥ अनुद्वेग ऋजुता परम श्रद्धाप्रीतिप्रकाश। पुण्यत्याग सन्तोष औ दूतिदूष मतिराश॥ इतिसत्वनामानि॥ अनशनत्व मदपरुषता भेद औररुटकाम। दर्पद्वेष अरुकृपणताये रजगुण नवमाम॥ इतिरजोगुणनामानि॥ महामोह अरु मोहतम अरु तामिश्रनरेश। निद्राअन्ध प्रमाद औ आलसदायक क्लेश॥ इतितमोगुणनामानि॥ सत्व सगुणहैं बुद्धिके इन्द्रिय सहमतजौन। ताकेषटगुणजानिके तिनकोनृप बुधिभौन॥ रूपादिक जेपंचअरु महत्तत्त्वअहँकार। येगुणसप्त सुबुद्धिके जानो बुद्धि अगार॥ मनन करन मनको सुगुण दृष्टादिकजेतात। तेपांचोंइन्द्रियनके पंचसुगुणहैंख्यात॥ जो बाधत इन सबनको मोक्षलहत सोस्वक्ष। होत प्राप्त जब ज्ञानको जानिपरत येदक्ष॥ रामगीती॥ नृपरूपसों युतदृष्टिहै अरु गन्धसों युतघ्रान। रसमाहिं जिह्वा युक्तहै अरुशब्दमेंहैं कान॥ अरुबायु युक्त स्पर्शमेंहै मोहसो तमबीच। युतअर्थ माहींलोभ हैं बरबदत विज्ञ निभीच॥ पदगमनमें आसक्तऔ करशक्त बलमें पर्म। हम कहत जोयह गुणोताको आनिहि सूक्ष्मपर्म॥ अरुउदरमें आसक्त शिखिहै भूमिजलमेंभूप। जलतेजमें आसक्तेतेजसवायुमाहँ अनूप॥ आसक्त नभमें बायुहै अरु महतमेंनभतात। अरुमहततत्त्वसुबुद्धिमेंआसक्तहैअवदात। आसक्ततम

में बुद्धिहै तम रजोगुणकेमाहिं । रजसत्वमें आसक्तहै हमसुन्यो बुधजन पाहिं ॥ अरु सत्वसों आसक्त है जीवातमा में स्वक्ष । जीवातमाआसक्तमाया सहितप्रभुमेंदक्ष॥कैवल्यमें आसक्तमाया सहित प्रभुहै जौन । कैवल्यसो आसक्तहै नहिंकहूंनृपबलभौन॥ दोहा॥मनअरु उद्भवकारणा धी अरुपूरब कर्म । आश्रित जानो देहके येसबभूप सुधर्म॥उदासीन मध्यस्थजो आत्मा परमअनूप। तामें है नहिं पापयह जानै गुणिकै भूप ॥ है आरोप इन्द्रियादि को आत्मामें जो तात । तौन अबिद्या सेतीजानै दक्षपरम अव-दात ॥ स्वप्नमाहिं जिमि आतमा एकहि जगदाकार । देखिपरत है बासना बशते सुमति अगार॥ जानोतिमि जाग्रतहुमें देखि परत जो सर्ब । सो भ्रम है यह सत्य नहिं धरिकैज्ञान अखर्ब ॥ बिषय बासना महति जो दुखदा अतिहि बिशाल । ताते दुर्लभ मोक्षहै आत्माको महिपाल ॥ लगत बुद्धिमें मोक्षका सहसन में कोउएक । पूरब पुण्य प्रभावते प्रापत भये बिबेक ॥ दुर्लभहै अ-तिमोक्ष जो जानो नृप सिद्धान्त । बिषय बासनाते करत मनुज कुकर्म नितान्त ॥ जन्म मरणको प्राप्तह्वै याते बारंबार । लोक-नमाहीं दुःखको प्रापतहोत अपार॥ पैदेही तव दोषजो तिन्हें जानिके त्यागि । लागे मोक्ष उपायमें बर बिबेकमें पागि ॥ युधिष्ठिर-उवाच ॥ देहोद्भवहै दोष कहुं कौनअत्रहे तात । बक्ता औरन आ-पसों कहूं लोकमें ख्यात ॥ भीष्मउवाच ॥ पंचदोषहैं देहके माहिं बदतहैं बिज्ञ । शिष्यकपिल मुनिके क्षितिप परमसांख्यसर्बज्ञ ॥ भयनिद्रा अरुश्वास औ काम क्रोध दुखरूप । सबदेहिनकी देह में पंचदोष ये भूप ॥ अप्रमादतासों भयहि छेदे अरु निद्राहि । सेवन करिके सत्वको जीतेजन अवगाहि ॥ छेदै क्रो-धहि क्षमासो अरु जो हे नृपकाम । करैतासु छेदनसुबुध सङ्क-ल्पहि तजिमाम ॥ अरुजो पंचम दोष है श्वासताहि आहार । करिसुअल्प छेदैसुबुध मतिको करिबिस्तार ॥ दोष पांचहुनको

सुनो ऐसे छेद नृपाल। सांख्य मार्गमाहीं प्रवृत रहै सुविज्ञ वि-
शाल॥ काटिशुभाशुभवासना ज्ञानशास्त्रसों चंड। सांख्यमार्ग
में प्रवृत जे धीरयवान अखंड॥ यह संसारसमुद्र जो अतिहि
विशाल गँभीर। निश्चय ताको तरतहैं तेसुनु नृपवरवीर॥ यह
संसार समुद्र जो तरितिहि को नरनाह। सांख्यमारगी होत हैं
तदनुप्राप्तनंभमाह॥ प्राप्तहोतनभमाहितब सूरयतिनकोस्वच्छ।
राखत अपने करण में भरे तेजसों स्वच्छ॥ पद्मनालहिं जिमि
तंतुहै तिमिरहि किरणनमाह। विषयमुचौदह भुवन के लखन
लगत नरनाह॥ तिनकोप्रापत होत हैं तत्रतहां सो वायु। सत
लोकको मरुत के जात जौननरराउ॥ शीतलादि जे तीन
गुण तिनसों युक्त अनूप। जासु परशते होतसुख कुन्तीसुत
बरभूप॥ तमोगुणहि प्रापत करत तिनको सो पवमान। तम
रजको रज सत्यको प्रापत करत सुजान॥ शुद्ध प्रभुहि प्रापत
करत तिन्हैं सत्य सुखदाय। परमात्माको करत हैं प्रापतप्रभु
नरराय॥ परमात्माको प्राप्त ह्वै तिनहीं में मिलिजात। लहत न
फिरि आगमनको सांख्यमती अवदात॥ युधिष्ठिरउवाच॥ परमा-
त्माको प्राप्त ह्वै जनमतिके अवदात। जनन मरणके समर
नहिं करतकीन फिरितात॥ पूछतहौं मैं आपसों सत्यकहौ तुम
अत्र। तुमसों और न विज्ञ है गतिजाकीसर्वत्र॥ भीष्मउवाच॥
प्रश्न कियो यह जौन तुम सो अति संकटवान। बुधजनको
नृप होत है ऐसे माहिं महान॥ कीन्हा शिष्य न कपिलके अत्र
परम सिद्धान्त। सोमैं ताको कहतहौं सुनु थिरह्वै क्षितिकान्त॥
मोक्ष अवस्था माहिंहू तात रहत है ज्ञान। हानि ज्ञानकी होत
नहिं कपिल मुनि कहत सुजान॥ इन्द्रियको सुष्वभाव है मोक्ष
अवस्था माहिं। तातेज्ञान घटादिको तत्ररहतहै नाहिं॥ निर्वि-
कार परमातमा प्राप्तभये तिहिबीच। होत न फिरि आगमनको
प्रापत रहत निभीच॥ यहहम जीवनमुक्तको कह्योतोहिं तृपता-

सशर्म ॥ भोजनमधुरबिचित्रबर बस्त्ररत्नद्युतिमान । तिनकोप्रापत होयकैकरत महतअभिमान॥ चान्द्रायन आदिककरत बिधिसेती उपवास । इच्छाहीमें राखिकैफलकीसाहितहुलास ॥ चारोहुंआश्रमनमें तत्पररहतनृपाल । बहुप्रकार के करत हैं बहु पाषण्ड बिशाल ॥ बहुप्रकारके करतहैं बहुमख औ बहुदान । करत चारिहूं वर्ण लहि चारिहुके सुबिधान ॥ चरणा दोहा ॥ आपुहि करत बिभाग आत्मा माया सेती माम । धर्म अर्थको कामसत्त्वको रजतम को बुधिधाम ॥ दोहा ॥ द्वंद्वअनेकनको लहतनित्यनित्य भूपाल । ममतामाहीं पागिकै आपुहि भूल बिशाल ॥ देवलोकमें प्राप्तह्वै मैं सुखलहिहौं भूरि । शुभ कर्मनको करिकहत ऐसो मुदसों पूरि ॥ कबहूं देवत्वहि लहत कबहूं मानुषताहि । निरयमाहिं परिकैलहत कबहूं दुःख महाहिं ॥ जनन मरन कोटिन लहत माया के बशहोय । घूमत तीनों लोकमें बहु कौतुकको जोय ॥ आपु अनिन्द्रियपै सुनो माया बशतें भूप । सेन्द्रिय मानत आपुको ह्वैकै सगुणअनूप ॥ अक्षरहैपै आपुकोमानतहै क्षर आपु । परि प्रपंचमें प्रकृतिकै हेनृपबुद्धि कलापु ॥ रहति षोड़शी है कला शशिकी यातेभूप । फेरिहु पंचदशो कला ह्वैहै जाति अनूप ॥ इमि सुप्रकृति आत्मा रहत याते पावत देह । बहु प्रकारकी फेरिहू जनकभूप मातिगेह ॥ माया को जब होतक्षय होततबै है मुक्त । तबलौं अत्राहि रहतहै जबलौं मायायुक्त ॥

शान्तिपर्वमोक्षधर्मेबशिष्ठकरालजनकसम्बादेत्र्यधिकशततमोध्यायः १०३॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा माया के सुबियोगबिन होत मोक्षहै नाहिं । यह सुनिसुमुनि बशिष्ठसों मतिसों गुणिमनमाहिं ॥ पुरुष नित्यातिमिनित्यहै मायाहूतिहितौन । ह्वैहैमोक्ष बिचारियहजनक भूपमतिभौन ॥ पूंछत सुमुनिबशिष्ठसों फेरिभयो भूपाल । नम्रहोय ऐसे परमतनिके बुद्धिबिशाल ॥ जनकउवाच ॥ जैसेभार्य्या पुरुषकोहै संबन्ध अनूप । अक्षर क्षरसम्बन्धहै तद्धतुहो मतिरूप ॥ गर्भधारि

नहिं सकतहै नारीसो बिनपीय । विरचि सकतशिशुरूप नाहिंसु मुनिपुरुष बिनतीय ॥ दोउनके सम्बन्धते औगुणतेंशिशुरूप । होत सुनो सबयोनि में निश्चय सुमुनि अनूप ॥ अस्थिस्नायु मज्जासुगुण ये सुपिताके तीन । माताके त्वचमांस औ शोणित येसुप्रबीन ॥ वेदशास्त्रके बीच है यहहम सुन्यो प्रमान । इमिहैं प्रकृति अरु पुरुषको है सम्बन्ध सुजान ॥ ताते जान्यो परत है मोक्ष मार्गसों ब्यर्थ । जो तुम जानत होहुतौ कहिये मोहिं समर्थ ॥ मेरे महती मोक्षकी कांक्षा है अवदात । सबतत्त्वनको आपुहो जानत बरमुनि ख्यात ॥ वशिष्ठउवाच ॥ जानत हेनृ बेद औ शास्त्रहि जनक नरेश । पैजानत तिनको नहीं सूक्ष्मतत्त्व बिशेश ॥ वेदशास्त्र धारण किये पैनभयो तत्त्वज्ञ । ताते सब धारण भयो तासव्यर्थ नृपप्रज्ञ ॥ ग्रन्थतत्त्व जानेविना ग्रन्थ धारिबो भारि । ताहीकोहै सफलजो जानततत्त्व सुढारि ॥ जो जानत है तत्त्वकहि सकत यथोचित तौन । तत्त्व कहै किमि ग्रन्थको अर्थ न जानत जौन ॥ सांख्य माहिं अरु योगमें जैसो निर्णय स्वक्ष । देखियरत तैसो तुम्हें अत्र कहत मुनि दक्ष ॥ योगमार्गसों लखत हैं योगी जाहि नृपाल । प्राप्त होत है ताहि बर सांख्यमतीहु बिशाल ॥ सांख्ययोग को एकही जानत सो मतिमान । ताकी गतिको और सो जाय न सकत सुजान ॥ नरनारी सम्बन्धते जिमि सु होति है देह । पुरुष प्रकृति सम्बन्धते तिमिहि जगत मतिगेह ॥ ऐसे तुम हमको कह्यो पूरब गुणि भूपाल । सो सुनु अत्र न लगत है यह दृष्टान्त विशाल ॥ जैसे एक स्वभाव है नरनारी को भूप । पुरुष प्रकृतिको एक है तिमि न स्वभाव अनूप ॥ पुरुष अनिन्द्रिय औसुनो तुच्छप्रकृतिहै जौन । याते माया पुरुषको है सम्बन्ध कबौं न ॥ पुरुष भिन्नहै प्रकृति ते निश्चय नहिंसन्देह । सत्तासे तोपुरुषकी रचति जगहि मतिगेह ॥ मायाही ते होतहै आकाशादिक सर्व ।

फेरिलीन ह्वैजातहैमायामेंहिं अखर्ब ॥ प्रकृतिअकेली रचित किमिजगतहिबिनासहाय। यहआशंका जोकरौमनमें तुमनर-राय॥तौतुमसुनिये देतहौंतुम्हैंअत्रदृष्टान्त। शुक्रसुमित्राबरुण कोगिरतभये क्षितिकान्त॥ देखेउरबशिहीतदनुसोमित्राबरुण उठाय।शुक्रधरतभेकुम्भमेंयत्न सहितसकुचाय ॥हमओहोतअ गस्त्यभे कुम्भमाहिं अवदात। यकपुरुषहिकेसुगुणसों ऐसेही हेतात॥ यकप्रकृतिहि सोंहोतहै जगको सकलप्रपञ्च। पुरुष कछू नहिं करतहै अत्रन संशयरञ्च॥ आपुनिरामय आत्मा नित्य अनादि अनन्त। देहादिकमें सर्बहौंपै इहिभांतिभनन्त॥ देहादिक संघात कहावत याते आत्माभूप। अज्ञमहान जानते हैं यहवृत्तान्त अनूप॥ जब जानै इमिजीव येमायाके गुणसर्ब। तब परको देखनलखत जोहै नित्यअखर्ब॥ जोगुणके सम्बन्ध सों रहित सो ईश्वर पर्म। बुध ताकोपर कहतहैं गुणाति जासु मति मर्म॥ सांख्य माहिं अरुयोगमें जेहैं कुशलअनूप। जा-नत प्रकृतिहि को सबै हैं जेते गुणभूप॥ जबलौं जानत आपु नहिं आपुहि तबलौं जीव। जबजानैतब ब्रह्महै नित्यभूप मति सीव॥ भिन्न भिन्न जानत सुनो जीवब्रह्म को अज्ञ। औजानत हैं एकही जेमहान हैं प्रज्ञ॥ जीवब्रह्म के माहिं जो हेतुभावक्षर तौन। औ अद्वैत भावसों अक्षर नृपमति भौन॥

श्रीशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेवशिष्ठकरालजनकसंबादेचतुरधिकशततमोध्यायः

जनकउबाच॥ चरणदोहा॥ जीवब्रह्म के एकत्वहि तुम अक्षरक-हतसुजान। औनानात्वहि कहत आपहौ क्षरबरविज्ञ महान॥ दोहा॥ सुनिमुनिइनदुहुमतन हे होतमहतसन्देह। सो मैं प्रकटे कहतहौं तुमको अत्रअछेह॥ होतनहीं एकत्व है बन्धमोक्ष को हेतु। औहैहेनानात्व में आतम नाशसचेतु। क्षरहै जो नानात्व सो यहि सुवचनसों दक्ष। याते फिरि हमको कहो करिकैकृपा प्रतक्ष॥ क्षरअक्षरको जो कह्यो हमको तुम वृत्तान्त। बुद्धिस्थिर

मम है नहीं याते रह्यो न दान्त ॥ बुद्धिमान है कौन अरु है अबुद्ध सो कौन । औ प्रबुद्धहै कौन तुम कहो हमैं बुधिभौन ॥ ज्ञानँ प्राप्तिको नाम है बिद्या सुखकी खानि । जासों ज्ञान ढँपो रहै ताहि अबिद्या जानि ॥ अक्षर कहत सुनित्यको क्षर अनित्य कोभूप । तत्त्वविवेकहि कहतहैं सांख्य सुप्रज्ञ अनूप ॥ चित्त वृत्तिके रोकको योग कहतहैं दक्ष । प्रवृत्तभये जन यागमें होत परम हैं स्वक्ष ॥ चरणादोहा ॥ बिद्या और अबिद्याको अरुक्षर अक्षरको तात । भिन्न अभिन्न भावकहु औ तिमि सांख्ययोग को ख्यात ॥ बशिष्ठउवाच ॥ सुनहुजनकनृप सांख्ययोगके चारु निरूपण बीच । सबप्रश्ननको उत्तर तुमको देहौंअत्र निमीच ॥ दोहा ॥ योग सांख्यके माहिंमें प्रथम कहतहौं योग । जिहि बिधि सों पूरब कहत आये हैं बुधलोग ॥ सुनु नृप योगी जननको ध्यानहिहै बलपर्म । बिद्याबिदितहि ध्यानको द्विबिध कहतगुणि मर्म ॥ यक मनकी एकाग्रता दूजो प्राणायाम । प्राणायामहु होत हैद्वैबिधिको मतिधाम ॥ एकसगर्भ निगर्भ यकतिनदोउनमेंभूप । जो जपध्यान समेत है प्राणायाम अनूप ॥ सो सगर्भ है कहत बुध अगर्भ बिन जपध्यान । इनदोउन में श्रेष्ठहै सगर्भ जौनसु जान ॥ मूत्रपुरीष अनेह औ भोजनको सुअनेह । तामें प्राणायाम नहिं कीजै नृपमतिगेह ॥ शेषकालमें करतही रहैसुप्राणायाम । अब प्रत्याहारहिसुनो तुम्हैं कहतहौं आम ॥ इन्द्रियकेरो रोक जो सोहै प्रत्याहार । सब इन्द्रियको विषयमें लगन न देय सुढार ॥ मनसों अथवा प्रेरणा द्वाबिंशन सों पर्म । रोककरै इन्द्रियनको योगीजन गुणिमर्म ॥ पंचाबिंश औपुरुष जो नित्यानन्दअनूप । ताहिप्राप्त हूवैसुनो जनकबिज्ञबरभूप ॥ द्वाविंशति जे प्रेरणा तिनसों जान्योजात । ब्रह्मसनातन शुद्धजो परमनित्यअवदात ॥ कामादिक सों रहित है जाकोमन अति स्वक्ष । ताहीसों ह्वै सकत है योग सहित बिधि दक्ष ॥ ह्वै विमुक्त सब

संगसों अल्पअहारी होय । मनहि लगावै आत्मा में सुज्ञानसों जोय ॥ विषयमें नजाकी लगै इन्द्रियहवैकै मुक्त । रहै काष्ठवत जानिये भयो योगमें युक्त ॥ जिमिस्थान निर्वातमें रहत प्रकाशितदीप । बुद्ध्यादिक सों हीनत्यों योगी जो अवनीप ॥ अनुभव बलतेजब कहै मैं हौंब्रह्मअनूप । देखिपरत परमात्मा आत्मा में तब भूप ॥ लघुहूते लघु औ महत महतहु ते है तात । सबभूतनमें रहतहै पै नहिं जान्यो जात ॥ ऐसे आत्महि जानिबो सोई योग नरेश । और न लक्षण योगको हैबर कहत बुधेश ॥ योग यथा विधि हम कह्यो तोहिं अत्र अवगाहि । अब हौं सांख्य ज्ञानको कहत सुनो तुम ताहि ॥ बरवा दोहा ॥ भूप कहत अव्यक्त प्रकृति को जे जनहैं प्रकृतिज्ञ । महत्तत्त्व उत्पन्न होतहै तिहि सुप्रकृति तेप्रज्ञ ॥ दोहा ॥ अहङ्कार उत्पन्न नृप महत्तत्त्वते होत । पंचभूतको होत है तिहि ते तात उदोत ॥ अव्यक्तादिक आठये मूल प्रकृति सुठार । मन इन्द्रिय दश विषय शर षोड़श ये सुबिकार ॥ होत जहांते सर्वये होत तत्रहीं लीन । जैसे सागर में लहरि तैसे भूप प्रवीन ॥ इन सबको लय होत तब रहत ब्रह्म है एक । औ उद्भव जब होततब आपुहि होत अनेक ॥ प्रकृतिहि करत चिदातमा बहुप्रकारकी दक्ष । मुख्य अधिष्ठातासुनो याते सोई स्वक्ष ॥ क्षेत्र बन्यो जो प्रकृति को रहत जबै तिहि बीच । होत अधिष्ठाता नृपति तब चैतन्य निभीच ॥ जानतहै सो क्षेत्र को याते भोक्षेत्रज्ञ । नामआत्माको परम जानतहै बरप्रज्ञ ॥ पंचविंश औ पुरुष जो सोई ईश्वर तत्त्व । और अनीश्वर सर्बजे हैं चौबीस अतत्त्व ॥ जानत जोयहि भेदको सोय सांख्यहै भूप । जे जानत यहि भेदनहिं सो घूमत दुखरूप ॥ बुद्धिमानहै नामजीव को प्रकृती नाम अबुद्ध । भिन्न प्रकृतितेे जोहै आत्मा ताकोनाम प्रबुद्ध ॥ कह्यो तोहिं अवगाहि हम यहबरब्रह्म बिचार । ब्रह्मभावको लहत सो जोयह गुणत सुढार ॥ फेरि जन्म नाहिं लहत जे

पावत ब्रह्मज्ञान। जेनहिं पावतते लहत पुनिपुनि जन्म सुजान॥
शान्तिपर्व्वणिमोक्षधर्मेवशिष्ठकरालजनकसंवादेपंचाधिकशततमोऽध्यायः॥

वशिष्ठउवाच॥ दोहा॥ जो अव्यक्त प्रकृतिहै ताको जन्म प्रलय हैधर्म। ताहि अविद्या कहतहैं ज्ञानी गुणिके मर्म॥ जन्म मरण सों रहित जो ताको बिद्यानाम। पंचाविंश सुकहतहै जाहि मनीषा धाम॥ छूटत है अज्ञान नृप जैसे जैसे दक्ष। होत सुविद्या भाव है तैसे तैसे स्वक्ष॥ विद्या कर्मेन्द्रियन की बुद्धीन्द्रिय मतिमान। विद्या बुद्धीन्द्रियन की पंचसुभूत महान॥ भूतनकी विद्या मनस औ रूपादिक तास। हैविद्या रूपादिकी अहङ्कार मतिरास॥ अहंकार कीबुद्धिसुविद्या तास प्रकृति अव्यक्त। परब्रह्महै ताकी विद्या जानत ज्ञानाशक्त॥ सर्वज्ञानको ज्ञेय है विद्याही भूपाल। नाम ज्ञानधी वृत्तिको कहत सुबुद्ध बिशाल॥ सोई है धीवृत्ति नृप निश्चय करिबो जौन। जौन जानिबो योग्यहै ज्ञेयकहावत तौन॥ विद्या और अविद्या तुमको कहीसुहम क्षितिकान्त। क्षरअक्षरको फेरि कहतहौं तुमकोमैं वृत्तान्त॥ दोऊ अक्षर अक्षरहु दोऊ निस्संदेह। कारण तुमको कहतहौं दोउनको मति गेह॥ आदि अन्तसों रहितहै औहै नित्य अमन्द। तत्त्व कहत दोऊनको प्रज्ञावान अमन्द॥ क्षरको अक्षर कहत किमि जो इमिकहो नृपाल। तोमैं तुमको कहत हौं याको हेतु बिशाल॥ सहगुण जो उत्पत्ति जगत की अक्षर ताके काज। फिरि फिरि लहत बिकार कहावत क्षर याते नरराज॥ गुण जालहि जब करत सुयोगी शुद्ध ब्रह्ममेंलीन। पंचविंशकहु होयजात तबतब-हींलीन प्रवीन॥ पंचविंशकी लयभये रहिहै आत्मानाहिं। जो तुम इमि गुणिकै कहौ तौ सुनिये मोपाहिं॥ महदादिककी लय भये प्रकृति माहिं जिमिभूप। रहत प्रकृति है शेषतिमि जानत प्रज्ञ अनूप॥ निज उत्पाति स्थानजो षडविंश और अमन्द। पंचाविंश कैजात है तामेंलीन नरेन्द॥ लय सुभये आभासकी

होतमुख्य नहिंनष्ट । शुद्ध आत्मारहतहै ये ममबचन सपष्ट ॥
निर्गुणताको होतहै पुरुषप्राप्त जब स्वक्ष । तब बिनाश को होत
है प्रकृतिहु प्रापत दक्ष ॥ पंचबिंश क्षेत्रज्ञ जब शुद्धात्मामेंलीन ।
होन लगत तब गुणवती प्रकृतिहु गुणत प्रवीन ॥ निर्गुण जानत
आपुको नित्यानन्द अमन्द । बिशुद्धात्मा होतजब प्रज्ञ सुजनक
नरेन्द ॥ जब इमि जानत अन्यहों मैंश्रो माया अन्य । तत्त्वताहि
तब होतहै प्राप्तपुरुष नृपधन्य ॥ मिश्रित मायामें पुरुष होत
नहींहै फेरि । कह्यो तुम्हैं अवगाहि यह ज्ञान चक्षुसों हेरि ॥
पुरुष कहत इहि भांति जब घूमि होतहै ज्ञान । जीवन अपनो
समुझिकै जैसे मात्स्य सुजान ॥ ह्रदते ह्रदको होतहै प्रापत तैसी
भांति।पावतहो अज्ञानते मैं देहनकी पांति ॥ मायाके बशमें भये
बीतिगयो बहुकाल ।मैंश्रापुहि जानो नहीं भये अबुद्ध बिशाल ॥
साबिकारा जो प्रकृतिहै तासोंमैं अबिकार । ठगोगयो पैदोषनहिं
याकोअत्र अपार ॥मेरोही अपराधहै भयेसुयामेंशक्त । बहुप्रकार
केबिषयमें भयोरह्यो आशक्त ॥ अबमें जाग्योभई अविद्या निद्रा
मेरीदूरि । देहौं छोड़ि प्रकृतिको अबमैं रहिहौं सुखसों पूरि ॥
अब रहिहौं षडबिंशके संग प्रकृति सँगमैन । ऐसे जानत ज्ञान
सों पंचबिंशहै ऐन ॥ क्षरअक्षर को सर्वमैं तुम्हैं कह्यो वृत्तान्त ।
जैसे लिख्यो सुवेदमें तैसेबर क्षितिकान्त ॥

शान्तिपर्वणिमोक्षधर्म्मेवशिष्ठजनककरालसंबादेषडाधिकशततमोऽध्यायः॥

युधिष्ठिरउबाच ॥ दोहा ॥ अबमैं बुद्धअबुद्धको कहतबिभाग अनूप ।
वेद माहिं जैसो लिख्यो तैसो सुनु बरभूप ॥ बुद्ध ब्रह्मको कहत
बुध जी वहि कहतअबुद्ध।गुणयुतभये अबुद्धहै होतबुद्धहो शुद्ध ॥
गुणको धारण करतहै बुद्धिमान जोजीव । जानतहै नहिं बुद्धको
यातेसुनु मतिसीव॥मैंकर्त्ता मैंभोगता बुद्धिमानअभिराम।कहत
करत क्रीड़ा महत लहि बिकार को नाम ॥ निर्गुण पुरुष प्रधान
को जानतहै नाहिं जीव । याते कहत अबुद्ध है ताहि प्रज्ञ मति-

सीव ॥ जो जानैतो पंचविंशकहि षडविंशकहि नभूप। पंचविंश संगात्मक यातेसुनु मतिरूप ॥ जानतनाहिं षडविंशहि यानेजीव-हि कहत अबुद्ध। जानत पंचविंशकहि याते बुद्धिमान बुधशुद्ध॥ पंचविंशक चतुरविंशकहि जानतहै षडविंश। षडविंशहि जानत नहिंदोऊयेनृप जनकअहिंस ॥ सोइंदश्य अदश्यमें निज संज्ञासों छाय। रहोनित्यहै ब्रह्मवर निर्गुण सुनुनरराय ॥ सर्वव्यापकब्रह्म जोतौ क्यों देखते नाहिं। हमनहिं जो ऐसोकहो अत्रमोहिं अव-गाहि ॥ अब आनत हैं आपुको देहीनृप मतिऐन। चतुर्विंश औ पंचविंशकहि तबसो जानतहै न ॥ षडविंशककी कोकहै वहतो निर्गुण पर्म। जब जीतै प्रकृतिहि सुनो थिरह्वैकै गुणिमर्म ॥ उत्कृष्टा अति निर्मला विद्या जो अति स्वक्ष। ताको जानत है महा सुखदा जनक सुदक्ष॥ बोध होत षडविंशको तिहि विद्या सों शुद्ध। बोधभये षडविंशको तजत प्रकृतिको उद्ध ॥ तदन-न्तर मैं कहतहौं निर्विकार षडविंश। प्रकृतिहि जानतगुणवती सुन्योभूप अवतंश ॥ सर्बगुणनसों रहितहौं मैं षडविंश प्रबुद्ध। जब इमि जानत होत तब अजर अमर अतिशुद्ध ॥ जबलौं ब्र-ह्मज्ञान नहिं तबलौं सर्ब प्रपंच। होत सुब्रह्म ज्ञानतब है प्रपंच नहिंरञ्च ॥ मैं आत्मा इमि बुद्धिसों जबनहिं जानोजाय। तब जानो षडविंशको अनुभव भो नरराय॥ जब अभेद ताकेलहत षडविंशककी दक्ष। रहित सु पुण्यापुण्यसों होयजात तबस्व-क्ष ॥ जो प्रबुद्ध अरु बुद्धिमान जो अरु है जौन अबुद्ध। सोहम अत्र बखानिकै कह्योतुम्हैं नृपशुद्ध ॥ तबलौंहै नानात्व सु जब लौं जानब नहिं षडविंश। जबजान्यो तब होतजातहै नृपएकत्व अविंश ॥ जानब जो एकत्वको सोय मोक्षहै भूप। कहत सुनोजे ज्ञानमें तत्पर रहत अनूप ॥ मोक्षतबैहीं होतजब छूटिजात अ-ज्ञान। औरउपाय न मोक्षकी हैहै भूप सुजान ॥ मोक्षमार्ग में प्रवृत जे क्षमावान धीमान। तिनको कहिबे योग्य है जो हम

कह्यो सुजान ॥ रत्नवती जो भूमिहै सो दीजै महिपाल । यहदीजै न अपात्रको कबहूं बिज्ञ बिशाल ॥ आदि अन्त अरु मध्यसों रहित ब्रह्मपर स्वक्ष । कह्यो तुम्हैं हम डरहु मति अब कराल नृप दक्ष ॥ कह्यो ज्ञानको तत्त्व जो तुमको हम यहभूप । जनन मरन नहिं होतहै तामें परो अनूप ॥ ताहि जानिकै देहतुम त्यागि मोहको सर्ब । ब्रह्मासों पायो हुतो मैं यहज्ञान अखर्ब ॥ कह्यो तुम्हैं षडविंशहम तेहिको जाने दक्ष । होत न पुनरावृत्ति को प्रापत है जन स्वक्ष ॥ बिधिते सुन्यो बशिष्ठऋषि औ बशिष्ठ सों भूप । नारद सुन्यो प्रतक्ष यह बरसिद्धान्त अनूप । औ नारदसों हम सुन्यो कह्योतोहिं हमतात । शोचहि तजिद याहि गुणि तू मतिसों अवदात ॥ जानत जेक्षर अक्षरहि तेन रहत भय पूरि । औ नहिं जानतते सदालहत भीतिकोभूरि ॥ अबिज्ञानते मूढ़ते जन्म सहस्रन लेत । उपद्रवनको होत हैं प्रापत महत अचेत ॥ अज्ञानार्णव घोर अति तामें परिकै भूत । बहु प्रकारके लहत दुख बूड़त नित्य अकूत ॥ अज्ञानार्णवते तर्‌यो नाहिं रजतम तबमाहिं । याते तू आनन्दको लहिहै भूपसदाहिं ॥

शान्तिपर्वमोक्षधर्मेबशिष्ठकरालजनकसम्बादेसप्ताधिकशततमोऽध्यायः ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ क्षरअक्षरको सर्वहमकह्योतुम्हैं सिद्धान्त । जैसेपूरबहौं सुन्यो तैसे सुनुक्षितिकान्त ॥ योगीमनसह बायुको जिहि २ अँगमें स्वक्ष । राखत हैं देहान्तलौं तिहितिहि अँगके दक्ष ॥ देवनवारे लोकको ते योगीहैं जात । अब यह तुमको कहतहौं तातसुनो बिख्यात ॥ याज्ञवल्क्य अरुजनकको कहिकै बर सम्बाद । सुनो तौन एकाग्र करि मनको छोड़ि बिषाद ॥ जनकउवाच ॥ योगी करिकै योग बर किहि किहि लोकहि जात । याज्ञवल्क्य हमको कहो आपु बिज्ञहौ ख्यात ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ रामगीती ॥ मन सहित बायुहि धारिपदमें जौन छोड़त देह । सो बिष्णुवारे लोकमाहीं जातहै बुधिगेह ॥ अरु जंघमाहीं धारि

छोड़े बसुनको जोलोक।तिहिमाहिं प्रापतहोतयोगी योगसों मति ओक ॥ अरु जानु माहीं धारि छोड़े साध्यलोकहि जात। धरि पायुमें जो तजत सो लहि मैत्रलोक बिभात॥ अरु प्रजापतिको लहत है धरि उरूमें अवदात। तजि देहको मति गेहयोगी तेज को सरसात ॥ अरु धारि पार्श्वन माहिं छोड़ लहत आयुन लोक। बरजात सुरपति लोकको धरि नाभि में मति ओक॥बाहू नमेंहू धारि बायुहि सहितमनमहिपाल । तनुतजे सुरपति लोक माहीं जातसुखद बिशाल॥ उर माहिं धरि तनुतजे शिवके लोक को अभिराम । अरुधारि ग्रीवामाहिं उत्तमलोक लहतललाम॥ है होत बिश्वेदेव को नृप प्राप्त मुखमें धारि । अरु गन्धवह को प्राप्त नासा माहिं धारि सु टारि ॥ अरु श्रोत्रमें धरि तजेदिशि को प्राप्त योगी होत । भ्रूमाहिं धरिकै आश्विनेयनको लहै मतिपोत ॥ अरु होत अग्निहि प्राप्त लोचन माहिं धरिकै स्वक्ष । है पितृगण को प्राप्त होत ललाट में धरि दक्ष ॥ मन सहित बायुहि धारिकै योगी सु मूर्द्धा बीच । है होत प्रापत द्रुहिणगणको वर बदत बिज्ञ निभीच ॥ धरि सहित मन जिमि अंगमाहीं बायुको तजि देह । जन जात हैं जिहि लोकको ते कहे हम मतिगेह ॥ अब कहतहौं मैं तुम्हैं जे जन मरत बत्सर माहिं । ते होत प्राप्त अरिष्ट तिनको ते सुनो मम पाहिं ॥ जन लखै जौन अरुन्धतीको औ न पूरण चन्द्र । अरु दीप दक्षिण ओर देखै खण्ड प्रज्ञ नरेन्द्र ॥ अरु लखै जो नाहिं ध्रुवहि जीवत तौन वत्सर एक । क्षितिकान्त सुनु सिद्धान्त करिकै कहत बुध सबिवेक ॥ अरु लखै जो नहिं आपु को पर चक्षु माहीं भूप । जन तौनहूं यकवर्ष जीवत बदत बिज्ञ अनूप ॥ छबि हीनको कैजाय महती अतिहि छबि अभिराम । अरु जाय कै छबिमान जनकी हीनछबि मतिधाम ॥ अरु अल्पमति को जौन ताको जाय कै मति भूरि । अरु दीर्घमति को जौन ताको जाय

ह्वैमति दूरि ॥ अरु पूर्व प्रकृतिन रहै जाकी औरही ह्वैजाय । जो करै परिभव सुरनको अरुबिप्र को नरराय ॥ षटमास हीमें तौन प्रापत मृत्युको ह्वै जात । जो अंग देखै मध्यखाली सूरशशिको भात ॥ अरु सुरभि लागै जाहि नृप सब गन्ध ऐसी दक्ष । है सप्त निशिमें होत ताको मृत्यु आय प्रत्यक्ष ॥ अरु जासु चख अरु दशन को जो रंगसो फिरिजाय । अरु कर्ण नासा जाय जा के बक्रह्वै नरराय ॥ ह्वैजाय संज्ञाहीन औ बररूप जाको भंग । अरुबाम चखते गिरै आकस्मात् जल सुनु स्वंग ॥ अरु मूर्द्धाते धूमनिकसै सद्यसो मरिजात । येजानि महत अरिष्ट मानव बुद्धिसों अवदात ॥ परमात्मामें आत्माको देलगाय अनूप । निशि दिवस गाफिल रहै नेकु नत्यागि सबको भूप ॥ देहान्त कोजो समय ताको रहै देखत दक्ष । परमात्मा में आत्माको लाय करिकै स्वक्ष ॥

इतिशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेयाज्ञबल्क्यजनकसंवादेअष्टाधिकशततमोध्यायः ॥

याज्ञबल्क्यउवाच ॥ दोहा ॥ भिन्न प्रकृतिते ब्रह्महै ताहि जनावन काज । परम गुप्त यह कहतहौं सुनो तौन नरराज ॥ फिरत हुतो मैं वेद प्राप्तिकी इच्छाही में धारि । भासमान सों यजुर्वेद में लहतभयो शुकटारि ॥ बसुकला ॥ करत प्रसन्न भयोमैंभानुहि । तप करिकै बिधि सहित महानहि ॥ मोहिं इमि कह्यो चाहि भासकर । मांगु अत्र तू द्विज वांछित बर ॥ अति प्रसन्नता दुर्लभ हैं मम । भये प्रसन्न देत सब है हम ॥ तदनु नाइ करि कै मैं शीशहि । कहतभयों ऐसे अहनीशहि ॥ यजुर्वेदहम चाहत जानन । दीजै क्षिप्रहि कीजै आनन ॥ ये सुनि बैनकह्यो इमि दिनकर । यजुर्वेद देहै तोको बर ॥ बचन होय कै देवि सरस्वति । बसिहै तौ शरीर में बरमति ॥ दोहा ॥ तदनु कह्यो इमि मोहिं रबितू निज बदन पसारि । बदन पसारतमैं भई पैठाते देवि सुढारि ॥ जब पैठी मम देह मेंबाणी रबिकी स्वक्ष । जरन लगो

तब नीरमें भयो पैठतोदक्ष ॥ कला ॥ मोहिं देखि रविभे इमि बोलत । तूकाहेको व्याकुल डोलत ॥ दाहरहैगी एक मुहूरत । शीतल तामेंह्वै हैतूरत ॥ तदनु देखि मोको शीतल अति । कहत भये इमिरवि सुनु क्षितिपति ॥ यजुर्वेद ऐहैंद्विज पूरण । याज्ञवल्क्य तोको अतितूरण ॥ तूबनाय हैशतपथ नामक । ब्राह्मण को सुविप्र मति धामक ॥ ह्वैहै तदनु मोक्षमें तव मति । सांख्य योग में कीन्हे सोरति ॥ जौन मिलत पदहै अति पावन । ताहि प्राप्त ह्वैहैसह चावन ॥ दोहा ॥ ऐसे कहि मोसों वचन अस्त होत भे भानु । तदनु गिराको गेहमें चिन्तन कियो सुजानु ॥ स्वर व्यंजन सों भूषिता प्रणव सहित अभिराम । कढ़ति भई मम बदनते बाणी बिमला माम ॥ देवीको अरु भानुको अरपत भो मैंतास । पारायण करिकै परम सह बिधि सहित हुलास ॥ बिरचत भो मैं तदनुतृप शतपथ ग्रन्थ अनूप । महत हर्षको प्राप्तह्वै सह रहस्य बरभूप ॥ चरणा दोहा ॥ अति उत्तमशत शिष्यनकोमैं भयो पढ़ावत स्वक्ष । अप्रियार्थ बैशम्पायनके शिष्यन सहित सुदक्ष ॥ तदनु सुशिष्यन सहकरवायो तत्र सुपिताको यज्ञ । देवलमम मामाको पक्षीहुतो तत्रवर प्रज्ञ ॥ दोहा ॥ ताके देखत हमलई यज्ञ दक्षिणा तत्र । अरु नृपमम मामा हुतो बैशम्पायन यत्र ॥ दक्षिणार्थ निज बेदकी तासोंकियो बिवाद । बेद दक्षिणा होतमैं सुनहु भूप अबिषाद ॥ तबमोको तेरेपिता और मुनिन अभिराम । समुझायो इमिमति करै मातुलसों कहि आम ॥ शाखा कीन्हीं पंचदश यजुर्बेद की पर्म । मैंताहिकरिकै भानुसों करि प्रसन्न सहशर्म ॥ परम कृपासों भानुकी यजुर्वेदको पाय । प्रवृत होतभो मैंसुनो प्रज्ञ जनक नरराय ॥ हमसुबनाई पंचदश शाखा तिनको जानि । चिन्तन करै सुब्रह्मको तदनन्तर अनुमानि ॥ मनोहर ॥ पूरब बिश्वाबसु गन्धर्ब । अतिही प्रज्ञावान अखर्ब ॥ यहभो पूछत मोहिंप्रतक्ष । काहित ब्राह्मण कोहैस्वक्ष ॥

दोहा ॥ जो बिचारहै युक्तिसों अन्वीक्षा तिहिनाम । सोप्रधान जिहिमाहिं है जनकभूप मतिधाम ॥ ताहि कहत आन्वीक्षिकी विद्याहै बरबुद्ध । सोविद्यापूछतभयो बिश्वाबसु अतिशुद्ध ॥ औ बिश्वादिक प्रश्नसो करतो भयो अनूप । ताको हमयह होकह्यो जनक बिज्ञबर भूप ॥ एक मुहूरत बैठुतू याकोकरि सुबिचार । बिश्वाबसुसुनु तोहिमैं कहिहौं बुद्धि अगार॥ध्यानकरतमैं तदनुभो देवीको सान्निधान।ताते उत्तर प्रश्नको उपज्यो तुरहि सुजान॥ तौन सुनावत ताहिभो प्रतिसोंमैं अवगाहि । सोदे उतर अति अमल है बिश्वादिकको याहि ॥ बिश्वाबसु गन्धर्बको तदनु कह्योमैं भूप । अबतुम बिश्वादिकन को उत्तर सुनहु अनूप ॥ भूत सुभव्य भयंकरै बिश्व कहतहै दक्ष । भूतभव्य भयको करै तासु नाम सुनु स्वक्ष ॥ चरणा दोहा ॥ भूतभव्य भयंकर जानो अरु भय जगको नाम । अब अबिश्वको सुनो रूप तुम तुम्हैं कहत हौं आम ॥ दोहा ॥ मौन अबिश्व कहावत आत्मा भिन्न बिश्वते जौन । ऐसेहीतुम श्वाश्वको जानोबर मतिभौन ॥ सुबुध कहत स्वप्रकृति को अश्व निर्गुणाहि स्वक्ष । मित्र पुरुषको कहत अरु बारुण प्रकृतिहि दक्ष ॥ ज्ञानप्रकृतिको कहत अरु कहत ब्रह्मको ज्ञेय । ज्ञान प्रकृतिको नामभो जातसो मनदेय ॥ सुनो जौन जन्मादि को उपयोगी हैज्ञान । तौन प्रकृतिभो ज्ञानहैयाते नाम सुजान ॥ जौन ज्ञानसो जातहै जान्यो तासों ज्ञेय । कहत सुबुधसो पुरुषहै सुनोभूप मनदेय ॥ जासु ईश्वरको कहत अरु जीवहि अज्ञ नरेश । रहित सुभये उपाधिसों दुऔब्रह्म येदेश । ईश्वर कारण रूपहै जीव सुकारज रूप । कारण कार्य्य उपाधि जब छूटिजाय सुनुभूप ॥ निर्बिकार परब्रह्मतब येदोऊ ह्वै जात । याते तजन उपाधिको करैयत्नअवदात ॥ तथा प्रकृतिको कहत अरु पुरुषहि को सुकनाम । अतपा कहत सुब्रह्मको निर्बिकार मतिधाम ॥ तपानाम याते भयो प्रकृति लहत सन्ताप । हैकनाम

सुखको भयो याते पुरुषक आप॥ कबहु नहीं सन्तापको पावत याते भूप। भयो ब्रह्मको नामहै अतवा भनत अनूप॥ प्रकृतिहि कहत अवेद्यबुध वेद्य पुरुषकोनाम। जानै साधन मोक्षको होत सुपुरुष ललाम॥ भयो वेद्यहै पुरुषको याते नाम सुजान। औजड़ताते प्रकृतिको भो अवेद्य अभिधान॥ चला कहत अरु अचलको पूछोहो तुम जौन। ताको उत्तर देतहौं अत्र सुनो मति भौन॥ चला प्रकृतिको कहतहैं निश्चल पुरुषहि शुद्ध। उत्पतिलय जगकी करत लहि विकार को उद्ध॥ माया याते चलाभो नामतासु मतिधाम। उत्पत्ति लयको जगतके करताहै पैनाम॥ पुरुष विकारन लहतहैं याते निश्चल स्वक्ष। भयोतत अभिधान है जनकभूप बरदक्ष॥ तिनहि अवेद्य सुपुरुषको प्रकृतीवेद्य सुजान। कहत सुबुध अवगाहि कै जिनकी बुद्धि महान॥ यद्यपि कही अवेद्य है पूरब प्रकृति सुदक्ष। वेद्य पुरुषको औ सुनो शास्त्र रीतिसों स्वक्ष॥ देखि परत यातेसुनो प्रकृतिहि है नृपवेद्य। दृश्यमान नहिं होत है याते पुरुष अवेद्य॥ जड़ताते जानति न जिमि प्रकृति आपनो रूप। तिमि पुरुषहु यातेसुनो दुओ अज्ञहैं भूप॥ श्रुतिबल-सो तुम किये बिश्वादिक प्रश्न अमन्द। तिनको उत्तर मैं दयो श्रुति बलसोंहि बिलन्द॥ प्रश्नसु आन्वीक्षिकी को कीन्हों गन्धर्वेश। तुमवर बलसों तर्कके उत्तर तासु अशेश॥ बलसों आन्वीक्षिकिहि के मैंहों देहौं अत्र। विश्वावसु गन्धर्वपति सुन मनकरि एकत्र॥ उत्पत्त्यादिक जगतकी करत पुरुष है पर्न। उत्पत्त्यादिकसों रहित आपु सुनित्य सशर्म॥ अज अक्षय याते सुनो पुरुष कहावत स्वक्ष। पूर शरीरको नाम है भनत सुबुध है दक्ष॥ पुरुष कहावत आपुहै तामें कीन्हें बास। होत प्रकाशितदेहहै सत्तासेतीतास॥ करताहै संसारको यातेवर गन्धर्व। प्रकृति नामभो ख्यात है मायाको सु अखर्व॥ है विद्या आन्वी-

क्षिकी इमि बिचारिबो जौन । कह्यो तोहि अवगाहिकै हमबर मेधाभौन ॥ चरणादोहा ॥ श्रवण मननमें ईश्वर वारेरहै युक्तनित-बुद्ध । सूक्षम मतिसों यह बिचारिकै बिद्याको अतिशुद्ध ॥ दोहा ॥ बेदमाहिं जोहैकह्यो बेद्य आत्मा ताहि । जानत नहिं ते जनन औ मरणहि लहत सदाहि ॥ सांगोपांग सुबेदजे पढ़तसुनोगन्धर्ब । कोजानत नाहिं बेद्यको नित्यानन्द अखर्ब ॥ वेदभाखे कहतेहैं ताकेजे बेदज्ञ । याते बेद्यहि जानिबे करैयत्न बरप्रज्ञ ॥ पुरुष प्रकृति को नित्यही करतेरहै बिचार । तासोंपुनि पुनि जन्मको लहै नबुद्धिअगार ॥ जनन मरणको चिन्तिदुख कर्मकाण्डको त्यागि । नित्यहि जोतत्पररहै योगमाहिं जबपागि ॥ देखतहीषड बिंशको तबसो बरगन्धर्ब । कह्योतुम्हैं अबगाहिकै यहहमगुह्य अखर्व ॥ मानत षडबिंशकहिको सांख्य मार्गगतजौन । जन्म मृत्युके दुखहि गुणिपरम ज्ञानकेभौन ॥ विश्वावसुरुवाच ॥ रहित भयेते प्रकृतिसों पंचबिंश षडबिंश । होयजात यहहै कह्यो सों किमि बुध अवतंश ॥ पंचबिंश को जो कहौ याज्ञवल्क्य मुनि जीव। ईश्वरत्वताको नहींक्कैहैतोमतिसीव॥घटजो सोपटहोतनहिं कहैं शास्त्रकेदक्ष । इमिहि जीवनहिं होतहै ईश्वर कहत प्रत्यक्ष ॥ जीव नहीं है ईश्वरहि है जो कहु इमि आपु । कर्मकाण्ड तो व्यर्थ सब क्कै है बुद्धि कलापु ॥ कर्मकाण्ड सों होत है जीवहि केरेअर्थ । याते तुम अवगाहिकै कहिये अत्रसमर्थ ॥ चरणादोहा॥ जैगीषव्यादिक ऋषिनसों पूछो मैं बहुबार । पै क्कै है बिश्वास बचन तव सुनिकै बुद्धि अगार ॥ दोहा ॥ तुमसों अबिदित कछु नहीं जानत सब सिद्धान्त । यजुर्बेद को प्राप्त तुम भये भानुसों दान्त ॥ दान्त पूर्ण सांख्यज्ञानको जानत हौ मुनिआप । योग शास्त्रको तिमिहिं अरु जानत बुद्धिकलाप ॥ केवल घृतको मण्डते जैसे लेत निकारि । ऐसे तुम हमकोकहौ अतिबर ज्ञान बिचारि ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ जितनो जो जासों सुन्यो सो आवत

है सर्ब। तोको तू गन्धर्व बर प्रज्ञावान अखर्ब॥ जोतैंपूंछो मोहिं सों तोहि कहतहौं दक्ष। मनको करि एकाग्रसुनु गंधर्बदप्रत्यक्ष॥ जड़ा प्रकृतिसों पुरुषसो होत प्रकाशित पर्म। पुरुष प्रकाशित प्रकृतिसोंहोत न सुनु सहमर्म॥ पञ्चबिंशके बोधसों सांख्ययोग तत्त्वज्ञ। प्रकृतिहिकहत प्रधान हैं हेगन्धर्ब प्रतज्ञ॥ प्रकृतिमाहिं पंचबिंशकी धारणकीन्हींजाति। छायायाते भोप्रधानहै नामध्ये-यसों ख्याति॥ पंचाबिंशकी प्रकृतिमें परती छायामात्र। हैन लिप्तजो आपुहै जानो संशयनात्र॥ जबलौंसाक्षीभूत सुतबलौंपंच बिंशहैनाम। साक्षनिाहिंतब षडबिंशहिनामतासमधिधाम॥ साक्षीतासोंकहतजोदेखतहै साक्षात। साक्षीभये सुजीव कहावतषड बिंशहि अवदात॥ सांख्यमती जन जौनअरुहैं बरयोगीजौन। जन्ममृत्युकी भूरिभय ताते मेधाभौन॥ षडबिंशहि को लखतहै तत्परह्वैकेपर्म। निवृत धर्मके शास्त्रको गुणिकै मतिसों मर्म॥ षड बिंशहिको लखतजो होयजात सर्बज्ञ। जनन मरणको प्राप्तनहिं फेरिहोतसों प्रज्ञ॥ बिश्वावसुरुवाच॥ नमस्कार मैं करतहौं तुमकोहे बरदक्ष। दुर्लभ ब्रह्म बिचारयह हमको कह्योप्रत्यक्ष॥ जैसीअब तैसीरहो तव मतिबर सुसदाहिं। प्राप्तभयो बिश्वासको मैं सुतुम्हारेपाहिं॥ याज्ञवल्क्यउवाच॥ ऐसे कहिकै वचनमम करि प्रदक्षिणा तौन। अतिप्रसन्नह्वै स्वर्गको जातभयो मतिभौन॥ होत ज्ञानते मोक्षहै याते ज्ञानहिंकाज। यत्नकरे सब बासना छोड़ि भूप शिरताज॥ चारिहु बर्णन माहिंजो कहै ज्ञानकी बात। ताको सुनि श्रद्धाकरै तेहि माहिं अवदात॥ ज्ञान बार्ता माहिं जो नहीं करत श्रद्धाहि। जनन मरणको प्राप्तसो निश्चयहोत सदाहि॥ चरणा दोहा॥ बिधिमुखते ब्राह्मणभये भुजते क्षत्रियभूप अखर्ब। वैश्यनाभिते शूद्र चरणते याते ब्राह्मण सर्ब॥ दोहा॥ लहत महत अज्ञानते योनिजालको भूप। ज्ञानलहनको नृपकरे याते यत्न अनूप॥ पूछ्यो हमको जौनतुम कह्यो तुम्हैंहम तौन। यामें

तत्पर होहुतुम जनक भूप मतिभौन ॥ भीष्मउवाच ॥ सुनिकै जनक नरेशयै याज्ञवल्क्यके बैन । अति प्रसन्न होतोभयो महत पायकै चैन ॥ याज्ञबल्क्य बर सुमुनिकी जनकजोरिकै पानि । करतोभयो प्रदक्षिणा धारिसुप्रीति महानि ॥ जातभये निजथानको मुनिवर बिज्ञ बिशाल । राखतभो निज हृदयमें जो मुनि कह्यो नृपाल ॥ वेदवानबर द्विजनको कोटिगऊभोदेत । औ अंजलिअंजलिरतनसादर प्रीतिसमेत ॥ तदनन्तर सुनुपुत्रको राज्य देयकै आप । संन्यासी कोबृतधरत भयो सुबुद्धिकलाप ॥ सांख्य शास्त्रके ज्ञानको भयो बिचारतभूप । औ संपूरण पढ़तभो योग शास्त्रमतिरूप ॥ आपुहिजानतभो जनकअच्युतानित्यअनन्त ॥ निर्बिकारआनंदमय सुनुपाण्डव क्षितिकन्त ॥ जन्मादिककी चिंतना छोंड़तभयो सुजान । करतप्रशंसाभे मनुज ज्ञानीतासु महान ॥ याज्ञवल्क्यसों ज्ञान यह पायो जनक नृपाल । अरुपायोहौंजनकसों हमयह सुखद बिशाल ॥ ज्ञानपोतसों जातहै यह भव सिंधु अखर्ब । तरचो औनयज्ञादिसों कहत सुबुधहैंसर्ब ॥ तातेतूलगु ज्ञानके साधनमाहिं अनूप । भयेज्ञान कोप्राप्ततू श्रेष्ठहोयगोभूप ॥

शांतिपर्बणिमोक्षधर्मेजनकयाज्ञवल्क्यसंवादोनामनवाधिकशततमोध्यायः

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ कहीब्रह्म बिद्याहमैं तुम श्रुतियुक्तप्रधान । अब साधन सुप्रधान जो बिद्या पर्म सुजान ॥ ताकोसुनिबेकाजहौं प्रश्न करत हेतात । कहौताहि अवगाहिकै मोहिं आपु बिख्यात ॥ ऐसोहैतप कौनसो अरुऐसो बरकर्म । अरुऐसोहै शास्त्रको पढ़ेताहि गुणिमर्म ॥ जरा और अंतकाहि नाहिं मानव प्रापत होय । कहौयोग्य कहिबे तुमहिं ज्ञान चक्षुसों जोय ॥ भीष्मउवाच ॥ अत्र कहत इतिहासहौं सोसुनुछोड़ि बिषाद । जनक भूप औ पंचशिख को तामें सम्बाद ॥ मनोहर ॥ यती पंचशिख को भूपाल । ज्ञानवानबर जनक बिशाल ॥ यहतुम पूछ्यो हमको जौन । सोई पूछत भो मतिभौन ॥ जनकभूपके सुनि

कै बैन। कहत पंचाशिख भो मतिऐन॥ मिथ्या समुझै सब संसार। जरामृत्यु सह रोग अपार॥ मिथ्या सबै समुझिबो जौन। उत्तम साधन जानौ तौन॥ जरामृत्यु है जीते जात। याही साधन सों अवदात॥ दोहा॥ जरामृत्यु के जीतिबे को साधननोंहिंऔर। जानोतुमसिद्धान्तयह जनक भूप शिरमौर॥
शान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेजनकपंचशिखसंवादोनामद्विगधिकशततमोऽध्यायः
युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ तात बिना गार्हस्थ्यके मोक्षतत्त्व कहु काहि। प्राप्तभयो हमकोकहौ तातआपु अवगाहि॥ भीष्मउवाच॥ अत्र एकइतिहाससो तुम्हैंकहतहौंतात। सुलभानाम्नी ब्राह्मणी ज्ञानवती अवदात॥ ताकोअरु नृपजनकको तासेंहै सम्वाद। मनकोकरि एकाग्रसुनु तजिकै सर्बविषाद॥ धर्मध्वजनामा जनक मैथिलपूर्ब नृपाल। हुतोवेदकेमाहिं सो अतिही विज्ञविशाल॥ मोक्षशास्त्रके बीचअरु नीतिशास्त्रके बीच। प्रज्ञमहान हुतोपरम औबलवान निभीच॥ निग्रहकै इन्द्रियनको पालतहुतोधराहि। ताकेसुनि आचरणको चाहत सुबुध सदाहि॥ चण्डालुलक॥ योगधर्मकी जाननवारी। सुलभा संन्यासिनी सुढारी॥ महि में फिरत हुतीसोएका। महती ज्ञानवती सविवेका॥ जनकहिमोक्ष शास्त्रकेमाहीं। अतिहि प्रबीन सुनेसबपाहीं॥ तापसदीक्षालीबे काजे। रूपधारिकै परमदराजे॥ एकपलकमें सुलभाजाती। मिथिलामाहिं भईअतिभाती॥ भिक्षामिसि मिथिलाधिपपासे। जातिभईकारिभूरि प्रकासे॥ राजा तासु रूपको देखो। औसुकुमार ताहि अवरेखो॥ कोहै यह कितते इतआई। विमला सुंदर तासोंछाई॥ ऐसेमनमें नृपगुणतोभो। अरुअति विस्मयको लहतो भो॥ आदर करिकै अतिही ताको। भो बैठावत नृप मिथिलाको॥ तदनु तासुपद धोयसुहायो। नृप तेहिको भोजन करवायो॥ ज्ञानवान मंत्रिनकेमाहीं। बैठो जनकभूप तेहिपाहीं॥ बैठि आयकै भोजन करिकै। ज्ञानवती मतिको बिस्तरिकै॥

नृप जगते छूटो है कीना । यह निश्चय करिके सुप्रबीना ॥ सुलभा भई प्रेरणा करती । साध्वस धरत भई भरनरती ॥ ह्वै अनिमेष सामुहे ज्वैके । नृपके चारु चखनमें ह्वैके ॥ अपनी मतिको नृपकी मतिमें । करिप्रवेश पागि योगयुक्तिमें ॥ योगसुबंधन सेतीभूपै । सुलभा बांधतिभई अनूपै ॥ मूकजनक भूपहि कीबेको । ज्ञान परीक्षाको लीबेको ॥ योगरज्जुसो तासुमहानी । बांधेज्ञान जनक नृपज्ञानी ॥ दोहा ॥ रहितसदा अभिमानसों एक देहके माहिं । दोऊजे सम्बादसुनि तिनको तू ममपाहिं ॥ चरणाकुलक ॥ जनकउवाच ॥ जनक कहतभो ऐसेताको । ज्ञानवती तनिके मेधाको ॥ कोहैतू कितते इतआई । जैहै कहां तेजसों छाई ॥ औ आचार कहाहै तेरो । कहुतू शीघ्रप्रश्न सुनिमेरो ॥ मैंहौंराजा पैहौं मुक्के । हे अभिमानमें नहोयुक्के ॥ जाननकी इच्छाहैताको । मेरेकहु संन्यासिनि मोको ॥ तूप्रतिष्ठिताहैमें जानो । औप्रभाव तेरोअनुमानो ॥ हेतु मोक्षको ज्ञानसुढारो । अन्यनहीं है कहिबे वारो ॥ एकगुरूही है सुनुमेरे । है सुपराशरके कुलकेरे ॥ नाम पंचशिख है तिनकेरो । संशय किया दूरितिन मेरो ॥ तिनकेसांख्य योग के माहीं । सुलभ नेकहू संशय नाहीं ॥ मोक्षधर्म नीके तिनजानो । मैंयामें नहिं अधिकबखानो ॥ भ्रमतभ्रमत पृथ्वी में आये । मिथिलामाहिं ज्ञान सों छाये ॥ आषाढ़ादिक चारि महीना । रहतभये मम पास प्रबीना ॥ मोको मोक्ष तीन विधि केरी । कहतभये करि कृपाघनेरी ॥ एकसांख्य सेती तिनकूजी । विधिवत योगमार्गसो दूजी ॥ राज्यकेसु अभिमानै तजिकै । पालैप्रजा नीतिसों ब्रजिकै ॥ तत्पर रहै ज्ञान के माहीं । तीजो को साधन ममपाहीं ॥ यह तिनकह्यो कृपाकरि चोखी । तिनके बुद्धि ज्ञानवी पोखी ॥ बिचलित राज्यतेन तिनकीन्हों । तिनको कह्यो ज्ञानमें चीन्हों ॥ तिनकीकही मोक्ष में सुनिकै । ताको अपने मनमें गुनिकै ॥ रहित रागसों ह्वै मैं एकै । रहतपरमपद

में सबिबेकै ॥ हैसुमोक्ष की बिधिबरजानो ॥ बैराग्यहि और न अनुमानो ॥ गुरु तेज्ञानलहेजननीको । योगाभ्यासकियोसुविधीको ॥ ताते लहत सुआत्मा जानै । ताते बर बैराग्य महानै ॥ लहिबैराग्य द्वन्द्व ते न्यारो । जीवनमुक्त जानहु भारो ॥ प्राप्त भयो यहि बुद्धिहि मैंहौ । ताते रहित मोहसों ह्वैहौ ॥ रहत मुक्त ह्वै करिकै सबसों । कृपापंचशिख कीन्हीं जबसों ॥ उत्तापिन जे बीजन जैसे । उद्भवको पावतहैतैसे ॥ प्राप्तभये तेज्ञानमुदारो । होतनहीं फल कर्मनवारो ॥ चंदनसों दक्षिण करपाटै । अरुजो बाम करहि ममकाटै ॥ तिनदोउनको मैं सम जानो । हौं नहिं मित्र शत्रुतामानो ॥ सेवत गुणन लोष्ट्र औ हेमै । सुखभे नित्यहि रहत सक्षेमै ॥ दोहा ॥ बैठोहौं मैं राज्यपै रहितसंग सो होय । मैंभो संन्यासीन सम ज्ञानचक्षुसों जोय ॥ चरणाकुलक ॥ और मोक्षके जाननवारे । जेजनहैं जगमाहिं मुढारे ॥ थितिसु-चारि बिधिकेरोते हैं । मोक्षमार्ग माहीं कहतेहैं ॥ तत्परहोयज्ञान केमाहीं । करिबोजोहै कर्मसदाहीं ॥ एकाथिति यहअरु जोदूजी । ताकोतिन यहि बिधिसों कूजी ॥ तत्पररहै ज्ञानही बीचै । लागै अनत नहोय निमीचै ॥ ज्ञानहि मुख्य गणै नहिं कर्मै । तीजी थिति यह जानो पर्मै ॥ मुख्यकर्म गुणिबो नहिं ज्ञानै । सो चौथी थिति बुद्ध बखानै ॥ औसु पंचशिख गुरू हमारे । श्रेष्ठाज्ञानवती मतिवारे ॥ ऐसी थिति सुकही हैमोको । सोमैं अत्र कहत हौं तोको ॥ अन्तःकरण शुद्धबर कीबे । अतिहीं, बिमल ज्ञानको लीबे ॥ कर्मकरतहै जनबिधिसेती । करिकै अपनी बुद्धिसचेती ॥ प्रापतिहोय ज्ञान की तबहूं । कीजै कर्म नतजिये कबहूं ॥ कामा-दिकसों रहितगृही जो । है संन्यासी के समही जो ॥ कामादिक मेंतत्पर जोहै । संन्यासी सुगृहीसम सोहै ॥ यबर बैनहमारे सुनिकै । ऐसेकहै हमैंजो गुनिकै ॥ कर्मपूर्ववतही अभिलाखो । क्षत्रा-दिकको क्योंहौ राखो ॥ तौ सुनुक्षत्रादिक हमऐसे । राखत दण्डु

त्रिदण्डी जैसे॥छोड़ेते अनुरागनहोहैं ।होतमोक्षकोबाधकहोहैं॥
जो नेकहु अनुराग अराधे । तौसुनुहोयमोक्षको बाधे ॥ सुलभे
सब आश्रमके माहीं । यामें संशय नेकहुनाहीं ॥ सुनु कमण्डला-
दिकको धारे । होतमोक्ष नहिं कहत बिचारे ॥ स्वच्छमोक्षखर
शरन सुनैना । त्यागखड्ग तापै करि पैना ॥ राज्यैश्वर्य्य पाशदु-
खकारी । ताहिकाटि कीन्हींमैं न्यारी ॥ जैसोमैं तैसो तव आगे ।
सुलभाकह्यो सत्यमैंपागे॥अबसुनिबेकोबातेंतेरी ।सुलभेइच्छा
भईसुमेरी ॥अतिहि सुन्दरीहै तूसुलभा ।अब्यामैंनलखी तवतु-
लभा ॥ औतूयौबन सोंहै छाई । ऋजुतासो तवकहीनजाई ॥औ
ऐसोहैज्ञानसुढारो । बरणोजातनहींसोभारो॥ पूंछतहौं मैंसुलभा
ताते । कहुतूकोहै मोको ख्याते ॥ ममशरीरमें धसिबुधिपागी ।
सुलभामोहिं दबावनलागी ॥ सोयहमैंन उचितहै कीन्हों । मेरे
ज्ञाननहीं कीचीन्हों ॥ संन्यासीको योग्यनहींहै । छलकीबो हम
सत्यकहीहै ॥ दोहा ॥ पैठेमेरी देहमें भयो वितिक्रम जौन । तेरे
सुनुमैं कहतहौं सुलभातोको तौन ॥ चरणाकुलक ॥ दोषपराकिया
नारी वारो । प्राप्तभयोहै ताकोभारो ॥ बैठीदूरि कहैजो मोको ।
तौसुनु अत्रकहतहौं तोको ॥ मनसों तौतूपैठी मोमें । यातेदोष
सहीहै तोमें ॥ पैठीतू किहिकी पैठाई। ममहियमें सुन्दरताछाई ॥
हमक्षत्रिय तूबिप्रा बाला॥ममतव संगमते अघजाला ॥ बर्णसं-
करै सुक्कैहैसुनुहै । औरकहत ताहूको गुनुहै ॥ हमसुगृही संन्या-
सिनितेहै । आश्रम संकरह्वैयातेहै ॥ अरुजोकहै क्षत्रियाहौंहौं ।
आई संन्यासिनि मिससोंहौं ॥ तौसुनु हैतूधौं असगोत्रा । धौंहै
सुलभा नारिसगोत्रा ॥ जोतूदारसगोत्राह्वैहै । तो सुगोत्रसंकर
ह्वै जैहै ॥ औसुनुतौ भरतार विदेशै । गयो होय यातेन कले-
शै ॥ सहिनसकी मकरध्वजवारे । आईछलसों पासहमारे ॥ पर
तिय होते अगम्याह्वैहै । होयधर्म संकरजे जैहै ॥ कियोयोग्य
जो कारबेनाहीं । तेयाते पूछत तवपाहीं ॥ ज्ञानकपटसों युतहै

तेरो । कीतोमें अज्ञानघनेरो ॥ पियको तियकोतियको पियको । रतिसोंलाभ सुधासों हियको॥जोअलाभ रोगीकोनारी। विषकी तहत सोदुखकारी ॥ तैं करिचुकी परीक्षामेरी । अबनू मोहिंकहै मति येरी ॥ तूसंन्यास शास्त्रविधि सेती । पालुहोयके परमसचे-ती ॥ तूनिज कारज को इतआई । की काहू भूपाल पठाई ॥ कहिये भूठन नृपके सोंहै । औतिमिहीं द्विजके वगिचोहै ॥ याते तूकहुसत्यहि मोको । सुलभा पूछतहौंमैं तोको ॥ दोहा ॥ जानि प्रकृति अरुआचरण अरुजो मनकी वात । अरुआगमकोहेतु निज तूकहु मोकोख्यात ॥ भीष्मउवाच ॥ सुलभाको भूपति जनक बहुतै कहे कुबैन । प्रापत भई विकारको नेकुनहीं मतिऐन ॥ चरणाकुलक ॥ सुलभासुनिभूपतिसोंबानी । कहतिभई इमिऋजुता सानी॥ सुलभोवाच ॥ मतिअरुबाणी केहैंदूषण। नवनव भूपकहत मति भूषण ॥ भिन्नसुतिन दूषण सोंजोहै । सुन्दर वाक्य कहा-वत सोहै ॥ सांख्यासौक्ष्म्य औरक्रम निर्णय । औ सुप्रयोजन पंचम मतिचय ॥ युक्तहोत इन पांचो सों हैं । वाक्य बुधन के पास सुनोहैं ॥ रूपतुम्हैं इनपांचहु वारे । कहती हौंसुनु भूप सुढारे ॥ शब्दोच्चारण कीन्हे पाछे । निर्णयको घेरे मतिआछे ॥ सहजहि अर्थ परेनाहिं जानो ॥ सौक्ष्म्य ताहि भूपअनुमानो ॥ गुणदोषनकी गणनाकोई । अर्थमाहिं संख्याहै सोई ॥ कहिबे योग्य पूर्वयहबानी । अरुयह पीछे योग्यसुठानी ॥ यह बिचार कीबो नृपजोहै ॥ ताहिकहत क्रम बुधवर सोहै ॥ बहुभाषण मों निश्चय करिकै । कहनो जो है मतिविस्तारिकै ॥ निर्णय ताको प्राज्ञकहतहैं । ज्ञानमाहिं जेमतिहि सहतहैं ॥ मनमें कछूपदारथ वारी । भये कामना अतिहीभारी ॥ बहुविधि यत्नकरै करवावै । तबहूंतासु सिद्धि नाहिंपावै ॥ ताते दुःखभये जो ताजिबो । ताको फेरिन कबहूं सजिबो॥इतिनिवृत्तिरूपा यह ढापति। ताहिप्रयो-जनकहत महामति ॥ और सुनोनृप काहूवारे।होतद्वेषते जेदुख

भारे॥तिनकोदूरि करनकेकाजै। करिबो जौनउपायदराजै॥ वृत्ति प्रवृतिरूपा यह जानो। याहिहु कहतप्रयोजन मानो॥ इनपांचहुसों युक्त सुढारे। बाक्य बदनत्ते सुनोहमारे॥ दोहा॥ उपेतार्थ भिन्नार्थ अरु न्याय वृत्तबर दक्ष। असंदिग्ध अनधिक तिमिहिंअरु श्लक्ष्मा स्वक्ष॥ ये षटगुणहैंबाकके तिन्हैं बिचारैभूप। मेधाको बिस्तारिकै बिमला परम अनूप॥ सम्पूरण बाक्यार्थ की जौन प्रगटताभूप। उपेतार्थ सो जानिये मतिबर भणतअनूप॥ भिन्नारथ की सूचना शब्द माहिं जोनाहिं। अभिन्नार्थ तिहिको कहत गुणिकै मति बुधमाहिं॥ बिशेषणनकी बाक्यके सुनो स्वच्छता जौन। न्यायवृत्त ताको सुनो जेहैं मेधाभौन॥ काढ़िबो जोहै अर्थको बोलै अधिकबिनाहिं। अनधिक गुणताको कहत बुध गुणिकै मतिमाहिं॥ अष्टश्लेषादिक सुगुण तिनकी युततााजौन। ताहि श्लक्ष्मा कहतहैं सुमतिवानहैंतौन॥ अक्षर धरिये बाक्यमें कबहूं नहींकठोर। नीचोच्चारित शब्दजे तेउ नत नृप शिरमौर॥ औजो अर्थपुराणसों रहित शब्दमेंजास। ताहूको नहिं राखिये सुनो भूपबुधिरास॥ दोहा॥ औताको नराखिये जामेंहोय त्रिवर्ग बिरोध। अर्थ धर्म कामहिहै त्रिवर्ग कहत सुजौन सबोध॥ अरुकाहूको शब्दजोलगै न नीको भूप। काहूको नहिं राखिये बाक्यमाहिं मतिरूप॥ औ न असंगत राखिये शब्द बाक्य हे माहिं। शुद्धछन्द व्याकरण सों जो नहिं ताहिहु नाहिं॥ रम्भावारेनृत्य से अक्षर जेहि पद बीच। नहिं होहिं नाहिं राखिये ताहिहु भूप निमीच॥ बिना हेतुपद जौन अरु जामैं अध्याहार। ताहूको नहिंकीजिये बाक्य माहिं अधिकार॥ ये नव दूषण बाक्यके इनको जौन अभाव। सोई गुण ह्वै जात है सुनहु जनक नरराव॥ रामगीती॥ मैं कामते अरु क्रोधते अरु दीनता ते भूरि॥ कार्दय्यता ते लोभताते औ त्रपासों पूरि॥ अभिमान ते कारुण्य ते नृप औ न भयते

छाय । मैंकहति कबहुं न कछू निर्भय रहतिहौं नरराय ॥ कामा-
दिहैं नव बुद्धिवारे भूप दूषण पर्म । इन सबनके मुख्यभाव गुण
नव जानु तू गुणिमर्म ॥ बरहोय सबही गुणन सेती वाक्य
युक्त अनूप । अरु होय बक्ता बिज्ञ औ श्री तासु नैमो भूप ॥
जब विज्ञ बक्ता कहे सादर सुनै श्री जन सर्व्व । तब अर्थहोत
प्रकाशको है प्राप्त परम अखर्व्व ॥ अपमान श्रोताको सुकरिकै
कहतबक्ता जौन । हैहोत श्रोताकोन ताको बोधसुनु क्षितिरौन ॥
जो छोड़ करिकै स्वार्थको जन कहत हैं परअर्थ । तिहि माहिं
शंका होति श्रोताके सुभूप समर्थ ॥ हैं दोषवतयह हेतु ते सो
बाक्य निश्चय जानु । जिहिमें न शंका होव ऐसो कह बाक्य
सुजानु ॥ जो बदत शंका रहित बाक्यहि जानु बक्तासोय । अव-
गाहि अविकल होयकै बरज्ञान चखसों जोय ॥ मैं अर्थवत
अभिराम तोको वाक्य कहति अनूप । एकाग्र मनकरि श्रवण
करि तू जनक मिथिला भूप ॥ तो माहिं अरु मोमाहिं है चित
अंश जोसो एक । यह हेतुतेका पूछनो है मोहिं सुनु सविवेक ॥
देहादिको जो होयपूछत तो सुयेजड़सर्व्व । जड़कोकहानृप पूछनो
है गुणोमर्म अखर्व्व ॥ जिमि धूरिमाहीं परचो जलसों मिल्यो
जान्यो जात । देहादि में तिहि भांतिही चित अंशसोंअवदात ॥
दोहा ॥ जानत जड़ तातेनहीं इन्द्रिय आपुहि आपु । और नको
का जानिहैं ते सब बुद्धि कलापु ॥ क्षमहै मिली सु औरसों यह-
हू जानत नाहिं । यह सुनिकै ऐसे कहौ जो तुम मेरेपाहिं ॥ होत
पदारथ ज्ञान है इन्द्रिय सेती सर्व्व । तौसुनु तुमको कहतहौं
जनक सुप्रज्ञ अखर्व्व ॥ अपेक्षा इन्द्रिय करत सर्व्व नेत्रादिक
बरभूप । बाह्यसगुण सौन्दर्यादि की इच्छा करति अनूप । रूप
सुचक्षु प्रकाश ये देखनमें त्रयहेत । तिमिहिं और इन्द्रियनमें
जानो बुद्धि निकेत ॥ एकादश हौसुगुण मन नानाकरत बिचार ।
साधु असाधु पदार्थको ह्वैकै निकट उदार ॥ द्वादश हौ गुण

बुद्धि है करति सुनिश्चय तौन । सत्वनाम एक तेरहौं है गुण नृप मतिभौन ॥ लघु दीरघ सामर्थके जासों जानोजात । जीव जगतके माहिं सुनु जनक भूप अवदात ॥ और अहंता ममता जोहै सुगुण चौदहो भूप । तौनहु सत्वहि बीचहै जानत प्रज्ञ अनूप ॥जोकलानको बटुरिबो पंदरहौ गुणतौन । प्राणादिकको नाम है कलासुनौ क्षितिरौन ॥ षोड़शहो गुण जौन है तासु अविद्यानाम । प्रकृति और नृप प्रगटता ये द्वैगुण मतिधाम ॥ जरा मृत्यु सुख दुःखअरु प्रिय अप्रिय ये द्वन्द । तौन सुगुण उनईस औ हैं सुनु जनक नरेन्द ॥ त्रिंशक औगुण काल है अरुद्वै सदसद भाव । पंच भूप बिधि शुक्रबल अष्टक ये नर-राव ॥ इन्द्रिय आदिक तीस थे गुण हैं कहत सुधीर । गुणिकैं कहत समर्थ जो याको बुध रणधीर ॥ अस्ति नास्तिको कहत हैं सब्द सुभाव बुधेश । कहत बासनाको सुबुधि प्रज्ञावान नरेश ॥ जौनकरावत वासना शुक्र कहतहै ताहि । जासु बासना काजतिहि यत्नकहत बलवाहि ॥ कारण प्रकृति प्रधानहै इनसब केरो ताहि ॥ किते कहत अव्यक्त है किते ब्यक्त अवगाहि ॥ ऐसी जो वह प्रकृति है ताते भई सुदेह । हमतुम यह ब्यवहार सो ताहीमें मतिगेह ॥ यातेजो तव प्रश्न यह हमको कहु तू कौन । उत्तरतासन तनुहु सों दियो जात क्षितिरौन ॥ रामगीती ॥
हो नृपति शोणित शुक्रसों उत्पन्न है सबदेह । यक रातिमाहीं मिलत शोणित शुक्रबर मतिगेह ॥ अरुपांच निशिमें होतबुद बुद सात निशिमें शक्त । तव मासमाहीं होतहै सबअंग भासों युक्त ॥ जब जन्म ताको होत प्रापत लहत तब अभिधान । फिरि उत्तरोत्तर रूप औरै होत जात सुजान ॥ हे होत प्रथम सुबाल रूप सुफेरि होत कुमारु । फिरि होत प्राप्त कुमारताते यौबनहिं अति चारु ॥ फिरि होत वृद्धाअवस्थाको प्राप्तहे भू-पाल । नहिं रहतयहि क्रमसों न पूरब अवस्था मतिजाल ॥ है

होत भेद सुरूप वारो नित्य क्षणक्षण माह । है अतिहि सूक्षम जात है आन्योनहीं नरनाह ॥ उत्पत्ति जो है अवस्था को औ सुनो जो अान्त । अतिसूक्ष्म तातेताहि जानत कोउनहिं क्षितिकान्त ॥ सम्बन्धजो निज रूपको सोतो सुनो रहनैन । है अन्य जो सम्बन्ध ताको कहैं को नृप बैन ॥ तू कौनकी है प्रश्नपूछो हुतो जोयह मोहिं । यह हेतुते उत्तर न ताकोसकनि हौं दै तोहिं ॥ जिमि गुणत निष्फल आतमा है आपुको तू भूप । तिमि गुणत क्योंनहिं औरहू को प्रश्नहोय अनूप ॥ अरु गुणत जौ तू आपु को अरु अन्यको है एक । तौ कौन की है कहा पूछत मोहिं इमि सबिबेक ॥ तू कौनहै अरु कौनकी यह पूछिबो हैजौन । जेछुटेहैं जनद्वंद्वसोंयह चाहिये तिनकौन ॥ जो शत्रुमें अरु मित्रमाहीं भेदसों है युक्त । संसारसो तिहि अनुज को किहिभांति कहिये मुक्त ॥ अरु रहत जौन त्रिवर्ग माहीं नित्यहो अनुरक्त । संसारसों तिहि मनुज को किमि भांति कहिये मुक्त ॥ तूमुक्तहै नहिं मुक्त ताको करतहै अभिमान । अभिमान कोनहिं करतहैं जे मुक्तहै लहिज्ञान ॥ हैसर्व समता अहंता कोछोड़िबोजो भूप । हैसोय लक्षण मुक्तवारोभणत बिज्ञ अनूप ॥ नृपजौन पालत सबिधि सर्वाभूमिको बलवान । संहार करि सब अरिन केरो तेजसहित महान ॥ सो रहतहै इक नगरमें सर्वत्र नहिं नरनाह । औ नगरहूते रहतहै सो एकही गृहमाह ॥ गृह माहिंहू एक पलँगमें औपलँगहूके बीच । तिय अर्द्धमाहीं रहति अर्द्धहि आपु लहत निभीच ॥ मम राज्यमें अरुपुरीमें किहि दियोकरन प्रवेश । संन्यासिनी तब कह्यो सो इमिमोहिं जनक नरेश ॥ यहिहेतु काजे कह्योहै मैं तोहिं यह वृत्तान्त । तू चाहि बिमला बुद्धिको बिस्तारि गुणि क्षितिकान्त ॥ सुनु औरहू उपभोगमें औतिमिहि भोजन माह । आच्छादनहुमें रहत परतंत्रही नरनाह ॥ अरु दण्डदीबे माहिं अरु नृप कृपाकीबे माहिं ।

परतंत्रहीहै रहतराजा अत्रसंशयनाहिं ॥ हैमंत्रि आदिक बिना होतन कछू एकौकाल । है स्वबशतासों कहा हेनरराजको नर-राज ॥ निज अंगलों जे रहत हैं जन सदा अपने पाहिं । महि-पालजो सो तिनहुं सोंहै डरत रहत सदाहिं ॥ सुख अल्प जाके बीच है अरु दुःखपरम बिलन्द । है राज्य ऐसोहोत ताको प्राप्त होय नरेन्द ॥ नहिं कीजिये अभिमान नितही शान्ति रहिये धारि । जो धरत शान्ति न देततिनको सुखहि दुखसों टारि ॥ रत रहत क्षत्रिय धर्म माहीं जो नरेश नरेश । सो लेत दशवों भाग देत सुप्रजाकोन कलेश ॥ कछुन्यून क्षत्रिय धर्ममें सोभाग पंचम लेत। है कहा धर्मसु राज्य राजाबिना बुद्धि निकेत ॥ अरु मोक्ष सुखसो कहाहै बिन धर्मपर्म अनूप । है भूमि सर्बा दक्षिणा जिहिमाहिं ऐसो भूप ॥ जोअश्वमख नाहिं करत ताको कोउधर-णीमाहिं । यह हिये गुणिबिन भूमि राजारहैंगे हम नाहिं ॥ है परम धर्मन और नृपको अश्वमेधसमान । जे अश्वमेधहि करत भुव देतेइधन्यसुजान ॥ मैं राज्यमाहीं और दूषण सकति देय हजार । यहिभांतिही अवगाहिके सुनु जनकभूप उदार ॥ दोहा ॥ चारि संकरनको भयो ताको प्रापत पाप । यहसोको पूरब कह्यो होते बुद्धि कलाप ॥ मैंजो अपनी देहहै राखति तासन साथ । संग राखिहौं औरको कैसेहे नरनाथ ॥ ऐसी जोमैं ताहि इमि कहिबो उचित नबैन।सुनीमोक्षते पंचशिखयेसबनृप मति ऐन॥ मुक्त संगसो जनकतू ज्ञानीपरम उतंग। ताको फिरि कैसो भयो क्षत्रादिकको संग ॥ जोनपंचाशिख सोसुन्यो ब्यर्थ भयोतवसर्ब। केझूठहितू कहतहै सुन्योन ज्ञानअखर्ब ॥ तेमें मम तव अबहिं यह छूटहिं होतो सौन । तोमैं कीन्हों सत्वसों मैं प्रबेश मतिभौ-न ॥ औजोतू ज्ञानी परम तजे देह अभिमान । तो प्रबेश कीन्हें कहा तोमैं भयो सुजान ॥ और सुनो जो लेतहै जन्म महत कुल माहिं । तोन सभामें सदअसद देत वचन कहिनाहिं ॥ जैसे

कमल दलस्थ जल छूवत दलको नाहिं। निमिहि तोहिं छूवति नमैं करिप्रवेश तो माहिं॥ और सुनो तो पंचशिख दयोन तोको ज्ञान। जानिपरयो जो परश मम तोको भूप सुठान॥ तून मुक्त है मोक्षकी जानतहै कहिबात। तूगो दोऊ औरमों ज्ञानबिना अवदात॥ तुम्हें लोक व्यवहारसों कहतीहों निजनाम। विप्रा वैश्या हौंनमैं औनहिं शूद्रावाम॥ हौंभूपति तवसबरणा सुलभाहै मम नाम। कुलमें नृपति प्रधानके उत्पन्ना मतिधाम॥ ममपूर्वजी मखनमें मेहे चयनउतंग। चक्रद्वारगिरि द्रोणगिरि औ गिरिवर शतशृंग॥गरुड़ादिकको मखनको बिरचित जोआकार। इष्टका दिसोनामहै ताको चैतसुढार॥ ऐसेकुलमें मैंभई उत्पन्नाहौं भूप। ममसम नहिं भर्तामिल्यो भूमेंकहुं न अनूप॥ धारणमें यहहेतुते करति भई संन्यास। विना बिचारेमैं नहीं आईहौं तवपास॥ मैं तव मति सुनिमोक्षमें ताहि जानिबे काज। निष्कपटा तव निकटहौं आई मिथिलाराज॥ मैं स्वपक्ष परपक्षको कहति नहींहों बात। नहिं स्वपक्ष परपक्षको जानतमुक्त समात॥ बसतभिक्षु यक राति जिमि शून्यसदन में भूप। निमिहिं बसी यकराति मैं तवतनु माहिं अनूप॥ उकछा॥ अबमैं प्रातःकाल। जैहौं हेभूपाल॥ भीष्मउवाच॥ सुलभाके सुनिबैन। भूरिअर्थ के ऐन॥ बोलो कछून फेरि। रह्यो तासु मुखहेरि॥ यातेभो सिद्धान्त। यह पाण्डव क्षितिकान्त॥ दुर्लभ गृहमें पर्म। हेसु मोक्षको शर्म॥ हेतु मुक्तिको भूप। संन्यासही अनूप॥

शांतिपर्वमोक्षधर्मेसुलभाजनकसंवादोनामएकादशाधिकशततमोध्यायः॥

बैशम्पायनउवाच॥ दोहा॥ कहि करिकै संन्यासकी श्रेष्ठताहि अभिराम। सुलभाके इतिहासमें भीषम मेधा धाम॥ तासु दिखावत धर्म अब शुकसु चरित कहि स्वक्ष। जनमेजय क्षितिपाल सुनु पाण्डवको परतक्ष॥ युधिष्ठिरउवाच॥ पुत्र व्यासको प्रज्ञ शुक किहि प्रकार सों तात। प्रातभयो निर्वेदको कहो आपु

क्रीड़ा गौरीपति ॥ सबिधि तपस्या करनलगे तहँ ब्याससुचा-
वन । पंचभूत सम धीर्य्यंज्ञान अतिमोद बढ़ावन ॥ दोहा ॥ ऐसो
बर सुत लहनको शिवसों अति अभिराम । मनको करिएका-
ग्रतामें सुनुनृप बलधाम ॥ आराधन शिवको करत रहत भये
शतबर्ष । तत्र सुबायु अहार कै सुमुनि ब्यास उत्कर्ष ॥ नेकु न
श्रीमुनि ब्यासको हीन होतभो प्रान । वासी तीनोंलोकके अ-
चरज गुण्यो महान ॥ बैश्वानरकी शिखासी जटा ब्यासकी
चण्ड । भासतिभई सुतअनृप तेजसभरी अखण्ड ॥ कहीमार
कण्डेयही हमैं तात बहुबात । तामें यक यहहूकहीहुती परम
अवदात ॥ लहि तपके परभावसों अबउब्यासकी पर्म । वैसी
ये तेजो भई भासति जटा सुधर्म ॥ तपसेती मुनिव्यासके कै
प्रसन्न अति सर्ब । इच्छाकरि बरदेनकी बोलतभये अखर्ब ॥
जैसेधीरजमानहैं पंचभूत अतिशुद्ध । तैसोताको होयगो प्रापत
पुत्रप्रबुद्ध ॥ तिहुंलोकनमें छायहै ताको तेज महान । औ बर
यशको प्राप्ततव ह्वैहै पुत्र सुजान ॥ भीष्मउवाच ॥ पशुपतिसों बर
पायकै परम ब्यासमुनि प्रज्ञ । शिखि काजै अरणी मथन लगे
भूप धर्मज्ञ ॥ आवति ताहीसमयमें भई घृताची तत्र । भूषण
पैन्हि अनूप अति हुते ब्यासमुनि यत्र ॥ देखि घृताचिहि काम
सोंमोहितभे मुनिव्यास । शुकीरूपको धारितब आवति भीतिन
पास ॥ शुकी सुरूपा घृताचिहि देखि व्यासको काम । जैसोको
तैसो रह्यो न्यूनभोन बुधिधाम ॥ रोंकतभे बहुभांतिसों कन्दर्पहि
श्रीव्यास । पै न सक्यो रुकि करतभो औरहु महत प्रकास ॥
अरणीही में गिरत भो ब्यास सु मुनि को बीर्य । रहे मथत
ग्लानिन लही नेकहु भूप सधीर्य ॥ मथतभयेते शुक्र को होत
भयो शुक तत्र । अति तेजोमय भानुसम गति जाकी सर्व-
त्र ॥ व्यासहि को सो होतभो ताको रूपअनूप । गङ्गा ताको
आयकै भई न्हवाती भूप ॥ हरिगीती ॥ नृपचर्म कृष्ण कुरंग को

अरु दण्ड बर गिरतो भयो । शुकदेवके तट ब्योमते तहँ अतिहि तेजससों छयो ॥ सब अप्सरा नाचन लगीं गन्धर्वबर गावनलगे । शुकदेवजूको देखिकै आनन्दसों अतिही पगे ॥ सब इन्द्र आदिक लोकपालक तत्रनृप आवत भये। अरु देवऋषि अरुदेव अरुबर ब्रह्मऋषि रतिसों रये॥ बरदिव्य पुष्पन की सुवृष्टी तत्र मारुत करतभो । सब चराचरको वृन्दभूरि प्रसन्नताको धरतभो॥ सुर दुन्दुभी बाजनलगी अरुगौरि सह शिव प्रीतिसों । जन्मतहि शुकको देतभे उपनयन अतिबर रीतिसों ॥ तिहिको कमण्डलु देतभो अतिशुभ अखण्डल प्रेमसों । भेहंस सारस करततासु प्रदक्षिणा अतिक्षेमसों ॥ शुक रहत तत्रहि भयो अतिबर ब्रह्मचारीहोयकै । भेआपुहीसोंवेद ताको प्राप्त अति शुभ जोयकै ॥ तउ बृहस्पतिको गुरू कीन्हों चिन्तिकै शुभ धर्मको । सब वेदपढ़ि औशास्त्र सबपढ़ि धारिकै बिधि पर्मको ॥ गुरु दक्षिणादै गुरूसोंकरजोरि आज्ञामांगिकै। तपउग्रको आरम्भ करतोभयो विधिमें पागिकै ॥ शुकदेवतनको ऋषिनको भो पूज्य बाल्यहिमें महा ।बरज्ञानसों औतपस्यासों अधिकअत्रनहैंकहा ॥ दोहा ॥ रतताको मनरहतभो मोक्षहिमें अवदात। त्रिबर्गमें कबहूं नहीं लगतभयो सुनुतात ॥

इतिशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेशुकोत्पत्तिर्नामत्रयोदशाधिकशततमोध्यायः ॥

भीष्मउबाच ॥ चरणादोहा ॥ लेबेको उपदेश मोक्षको जाय पिताको पास । खरोहोयकै हाथजोरि इमिकहतभयो सहुलास॥परम मोक्षके धर्ममाहिंतुम अतिहि कुशलहौ तात । शान्तिलहै सो मम जासों तुमऐसो कहिये ख्यात ॥ तोमर ॥ सुनि पुत्रके शुभ बैन । लहिमोदको मतिऐन ॥ कहते भये इमिताहि । पढ़मोक्ष शास्त्रहि चाहि ॥ दोहा ॥ आज्ञालहिकै व्यासकी श्रीशुकदेव सुजान । योगशास्त्र औसांख्यको पढ़तभयो सबिधान ॥ जबजान्यो श्रीव्यासमुनिपुत्रभयोममपर्म । मोक्षधर्मबिदकहततब ऐसे

भये सशर्म ॥ मिथिलाधिप नृपजनक के पास जाहुतू तात । सर्ब मोक्षको अर्थसो कहिहै तोको रूयात ॥ काव्य ॥ पाय पिता की आज्ञाको शुकदेव प्रज्ञबर । गमन करतभो मिथिलाको मुद लहि मेधाधर ॥ मोक्षधर्म की पूछनको बिधि अति सुखदायक । चलत समय मैंकह्यो शुकहि इमिमुनि महिनायक ॥ रामगीती ॥ ऋजु रीतिसों तू जाइयो हेतात मारग माहिं । आकाश ह्वैमति जाइयो रहियोन काहू पाहिं ॥ अरु जायके मिथिलाधिपति तट कीजियो मतिगर्ब । संदेह तेरोदूरि करिहैसब जनक अखर्ब ॥ है धर्ममाहिं प्रबीण नृप औ मोक्षशास्त्रहु बीच । यजमान औहै सो हमारो नीति निपुण निभीच ॥ नृपजनक जोई कहै सोई कीजियो मति और । येबचन सुनिकै पिताके शुक चलतभो सह गौर ॥ सामर्थ्य ताकी जायबेकी ब्योममें ह्वै भूप । सहसिन्धु भूके पारसों पदसों चल्यो ऋजुरूप ॥ बर इलाव्रत शुभखण्डमाहीं मेरुगिरिहै माम । शुक उतरि ताते तहां ह्वैकै परम मेधाधाम ॥ हरिवर्ष नामा खण्ड माहीं भयो आवत दक्ष । फिरि आवतो किम्पुरुषनामा खण्डमें भो स्वक्ष ॥ फिरि भरतको जोखण्ड यह ह्वै प्राप्त ताकेबीच । बहुदेश देखन लगोसो शुकपरम प्रज्ञ निभीच ॥ नृप प्रथम चीनहिं लखतभो पुनिहूण देशहि तौन । पुनि लखत आर्य्यावर्तकोभो महामेधा भौन ॥ बहु लखत पत्तन रत्न औ बहुभरेकान्ति अनूप । पैजानि तिनको तुच्छ तिनमें मन न लावत भूप ॥ जिमि बिहँग विहमें संगसों तिमि रहित श्रीशुक पर्म । भोजनक रक्षित देशमाहीं आय प्राप्त सशर्म ॥ तिहि देशबारी लखतशोभा स्वच्छ मिथिलापास । भो बाटिकामें आवतो नृपभरो परमप्रकास ॥ नरनारि तामें लखतभो औ बहुत हयशुण्डाल । मनहै न लखते लगत तासन चित्तनेकु नृपाल ॥ ह्वै प्राप्तशुक पुरद्वारमाहीं भयो करत प्रबेश । कहि द्वारपालक तिन्हें रोके उग्रबैन अशेश ॥ सुनिबैन तिनके क्रोधनेकुन कियो

शुकबर प्रज्ञ। भो रह्यो अतिबर ज्ञानगाढ़ो गहेसुनु धर्मज्ञ ॥ अतिमार्ग श्रमसों क्षुधासों औ प्याससों न मलीन। शुकभयो नेकहु रहीजैसी प्रभातैसी पीन॥ जहँद्वारपालन रोककीन्हों खरेतहँ बिनग्लानि। बहु बारलौं अतिघाम माहीं भरेकांति महानि॥ तिन सबनमें यकदेखि शुकको कहि सुकरुणा भूरि। करिदिये ड्योढ़ी दूसरीपै पूजि ऋजुता पूरि॥ सोतहांहूं बरमोक्षही को रह्यो करत बिचार। तहँभूपको मंत्रीसु आयो एकबुद्धि अगार ॥ नृपसुनो घटिका द्वैकमें शुकदेव को तिहिपर्म। करवायकै सुप्रबेश नृपके सौध माहिं सुधर्म ॥ दोहा ॥ आसनपै बैठायकै निकरि गयोपुनि आप। जनक भूपके सदनते पाण्डव बुद्धि कलाप ॥ रामगीती ॥ पञ्चास आईं बामतहँ अभिराम छबिकी धाम। कटिछाम जिनकी मामकच अतिलोल नैन ललाम॥बरकनक के अति बनक के पहिने सुभूषण स्वक्ष। तिनकी सुकरतो जनक आज्ञा जनककी तेदक्ष ॥ रतिमाहिं रतिसम अतिहि कुशला करे रतिमयनैन। तिनके सुकेश महान के सम शीसुकेशी हैन ॥ तनमें लगाय सुबास पहिने बास अरुण अनूप। मुसकाय काय भुकाय चाहे भावकरि बहुभूप॥ तिनधोय करिके पायँतिनके चाव सहित महान। शुभ चन्दनादि लगाय के पहिराय माल सुठान॥ अति मधुर बाणी कूजि तिनकोपूजि सरति अखर्ब। करवावती तेभईं भोजन भावती अति सर्ब॥ महिहाथ तिनके साथह्वैकै तदनु बाग अनूप। दिखवावती ते भईं सबकछु गावती सुनुभूप॥ अतिभईं लोल कलोल करती डोलि डोलि नगीच। शुकदेवजूको जानिबेको धीर्य्यभूप निभीच॥ लगिरहीं सेवा माहिं औ पगिरहीं हांसीमाहिं। धर्मज्ञ सुनुशुक प्रज्ञ तिनसों भोबिकारित नाहिं ॥ तिनछयो छबिसो दयो शुकको तत्रपलँग बिछाय। करि साबिधि संध्याभयो तापै पौढ़तो शुकआय॥ मनजास ब्रह्म बिचारहामें रह्योलगि भूपाल।

नहिं भाव मनको और भो तियभाव चाहि बिशाल ॥ करिध्यान पूरब रैनिमेंअरु मध्यमें करिशैन । फिरि उठत मुनिबर भयो श्रीशुकदेव प्रज्ञाऐन ॥ करि प्रातकृत सबभये बैठत नारिहू उ-ठिसर्व्व । जिमिकरातिहीं तिमि कौतुक करन फेरि अखर्व्व ॥ दोहा ॥ ऐसे परनारीनकी लीलामाहिं अनूप । भयो बितावत दिवस निशि श्रीशुक मुनिबर भूप ॥

शांतिपर्व्वमोक्षधर्म्मेशुकस्यजनकपुरप्रबेशोनामचतुर्द्दशाधिकशततमोध्याय ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ तदनन्तर श्रीजनक ऋषि मंत्रिन सह मतिधाम । सामग्री शिरपै लिये पूजाकीअभिराम ॥ आगेकरि रनिवाससब आसनपरमअनूप । चारुरतन अरुकान्तिमयबहु बिधिके बरभूप ॥ लीन्हेको गुरुपुत्रको आगेभो नृपजात।अपने मनमें जानिकै ज्ञानीबर अवदात ॥ रत्नजटित आसनबिमललै सुपुरोहित पर्म । जनकभूपके पाणिमें देतभयो सहशर्म॥शुकको बैठनकाजनृप आसनसो भोदेत । अर्घ्यपाद्यदेकै करीपूजा बुद्धि निकेत ॥ देतभये सुरभी जनक शुद्धांगा अभिराम । पूछत भो शुक कुशललहि पूजाको मतिधाम ॥ आज्ञाबैठनको दईतदनु नृपहि शुक स्वक्ष । लहिआज्ञा बैठतभयो जनक भूमिपैदक्ष ॥ तदनु पूछिकै कुशल नृप बोलि सुकोमलबैन । फिरि आगमको हेतुभो पूछत प्रज्ञा ऐन ॥ शुकउवाच ॥ जयकरी ॥ मिथिलामें हैमम यजमान । जनक भूप बर मेधावान ॥ मोक्ष धर्ममें कोबिदपर्म । है अतिही निति रहत सशर्म ॥ प्रवृति निवृतिमें जो संदेह । दूरिकरैगो सब मति गेह ॥ यहस्वपिताकी आज्ञापाय । आयो हौं तवतट नरराय ॥ अबतुम्हैं हम पूछैं जौन । कहिये आपु यथोचित तौन ॥ ब्राह्मण कहाकरै मतिरूप । सो अबकहौ हमैं तुम भूप ॥ औ सुमोक्ष किमि लहत सुजान । कीन्हें तपकीपाये ज्ञान ॥ जनकउवाच ॥ ब्राह्मणको सु प्रथम सुनुकाज । मुखते मेरे प्रज्ञदराज ॥ प्राप्तहोय उपनयनहिंबेद । सोबिधिपढ़ै करिमनहि

अखेद ॥ तदनु दक्षिणा गुरुकोदेय। नरम वचन कहि आज्ञा लेय ॥ निजगृह माहिं आय सविधान। करै समावर्तन मति-मान ॥ ब्रह्मचर्य्यको तजिबो जौन। परम समावर्तन है तौन ॥ तदनु गृही ह्वैकै अभिराम। पुत्र पौत्रनके लखि आम ॥ पालै वानप्रस्थको धर्म। तजि प्रमादता होय सशर्म ॥ ह्वै संन्यासी ब्रह्म बिचार। करै फेरि सुनु बुद्धिअगार ॥ श्रीशुकउवाच ॥ हियके माहिं ज्ञान बिज्ञान। भये परम उत्पन्न सुजान ॥ जनतीनो आ-श्रमके बीच। रहै अवश्यहि कहां निमीच ॥ हमको कहौ अत्र यह भूप। तुमहो ज्ञानी परमअनूप ॥ जनकउवाच ॥ बिना ज्ञान बिज्ञानमहान। मोक्ष प्राप्तनहिंहोत सुजान ॥ दोहा ॥ होतज्ञान बिज्ञानहै गुरु सम्बन्धबिना न। गुरुकीसेवा मुख्यहै यातेतात सुजान ॥ मैं आत्मा यह शब्दको अर्थ जानिबो ज्ञान। आत्मा को अनुभव परम तासुनाम बिज्ञान ॥ पहिलेही तत्परभये सं-न्यासाश्रम बीच। रहि है लोकन औ करम शुक सुनुपरम नि भीच ॥ जीवनमुक्त जितेभये पूरब ज्ञानीपर्म। सब आश्रमको तिनग्रहण कीन्हों हुतो सशर्म ॥ यहिक्रमसों बहुयोनि में तजे शुभाशुभ कर्म। होतमोक्षको प्राप्तहै ज्ञानी स्वच्छसशर्म ॥ की-न्हें जे बहु जन्ममें इन्द्रियसबही शुद्ध। मुक्तहोत तिनसोंपहिले ही आश्रमसें वरबुद्ध ॥ आश्रममें पहिलेहि जो होयजाय जन मुक्त। अपराश्रमसें हूजिये तौ काहेकोयुक्त ॥ भूतनमें आत्मा लखै अरु आत्मामें भूत। होत नहींसो लिप्तहै कहु जग बीच अकूत ॥ परमात्माको होत है प्राप्त छोड़ि कै देह। गाथा अत्र ययातिकी कही सुनो मति गेह ॥ मोक्ष शास्त्रमें विज्ञते धारत गाथा तौन। आत्माही में ज्योति है अन्यत्र न मतिभौन ॥ सब भूतनके बीचमें सोहै ज्योति समान। जानत है जिन जनन को प्राप्त भयो है ज्ञान ॥ जब सब भूतनमें करै नेकु नहीं दुर्भाव। तब आत्माको होतहै प्रापत जन बुधराव ॥ राखै जब समभाव

को सब भूतनके बीच । प्राप्त होत है ब्रह्मको तब जन होय निर्भीच ॥ जब निन्दा स्तुतिहैं गुणै सम अरु काञ्चन लोह । लहि शत्रुहि कोपन करै औ न मित्र लखि छोह ॥ शीतोष्णहि सुख दुखहि अरु अर्थ अनर्थहि सर्व । जानै सम तब ब्रह्मको प्रापतहोत अखर्ब ॥ येसब तोमें लखतहौं व्यासपुत्र अवदात । और जानबे योग्यसो जानत तू हेतात ॥ आयो जब मम देश में तब मैं जान्यो तोहिं । तव सुपिताकी कृपाते ज्ञान भयो यह मोहिं ॥ तव गति है शुक अधिक अरु अधिकहि है विज्ञान । औ अधिकहि सामर्थ्य पै जानत तू न सुजान ॥ कैधों तू शुक बाल्यते कैसंशय ते तात । जानत नहिं बिज्ञानजो उतपन सो अवदात ॥ तट बैठे मोसेनके संशयसों ह्वै दूरि । शुद्ध ब्रह्मको प्राप्त तू ह्वैहै सुखसों पूरि ॥ तव हियमें उत्पन्नभो अति निर्मल बिज्ञान । थिर बुद्धी तेरी भई तजे रुटादि महान ॥ येउद्योगन करत है याते प्रापत भौन । ब्रह्महि जो उद्योग नाहिं करत लहत है सोन ॥ सुख दुःखहि सम तू गुणत नृत्य गीतमें राग । होत नतोको औनकहुं भयहि लहतबड़भाग ॥ शत्रु मित्रताको नहीं राखत काहू माहिं । कनक लोहको सम गुणत देखि आपने पाहिं ॥ ऐसो देखत तोहिं हम और मनीषी जौन ॥ देखत तेऊ हैं सबै परम ज्ञानको भौन ॥ बिप्रहि कीबे योगजो सो तू करत सदैव । औ मोक्षहि में रत रहत नित्य और कछुनैव ॥ जोकछु पूछनयोग्यहैसोतोमेंहैसर्ब । पूछोचाहतऔरकाप्रज्ञावानअखर्ब ॥

शान्तिपर्वमोक्षधर्म्मेशुकजनकसम्बादेपञ्चदशाधिकशततमोध्यायः ११५॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ भूप जनकके बचनये सुनि शुक प्रज्ञविशाल । उत्तर दिशि हिमवानको चलतोभयो नृपाल ॥ नारद तौनहिसमयमें देखनकाज अनूप । गिरि हिमवानहि आवते भये ज्ञानमय भूप ॥ राजतिहैं तहँ अप्सरा अरु किन्नर गन्धर्ब । बोलतहैं जहँमोर औ कोकिल समुद अखर्ब ॥ और बहुत बहु

रङ्केबर बिहँगनके जूह । बोलि रहेहैं डोलिकै धरैं सुमोद समूह ॥ पक्षिराजहू रहतहै नित्यहि जिहि गिरि बीच । ऋषिगण सह देवत जहां आवत नित्य निमीच ॥ बिष्णु जहां तपहौ कियो महतपुत्रके अर्थ । बाल्यअवस्था माहिंही तहांस्कंद समर्थ ॥ महति शक्ति फेकीहुती तौन गड़ी लखिबैन । सेनानी कहतो भयो ऐसे बर बल ऐन ॥ सोई याहि हलायहै औ उपारिहैसोय । मोसमबलमें होयगो बिप्रभक्त बरकोय ॥ बासीतीनोंलोकके सेना नीकेचैन । सुनिये पीड़ितहोतभे अतिही नृपबलऐन ॥ सबको पीड़ित देखिकै दीन्हीं बिष्णुहलाय । ताकेहले बसुन्धरा कँपतिभई नरराय ॥ बरवा दोहा ॥ याहि उपारे सेनानी को ह्वैजैहै अपमान । यह बिचारिकै नहींउपारी शक्तिहि श्रीभगवान ॥ कहत भये प्रह्लादको हरिइमिशक्तिहलाय । अतिहि कियो स्कंदते पुरुषारथ दृढ़काय ॥ नहिं स्कंद पुरुषार्थ सम कोऊ करिहै और । सहिनसक्यो प्रहलादये बैन उग्र तिहिठौर ॥ शक्तिहि लग्यो उखारिबे तौन हलीहूनाहिं । महत नाद करिकै गिरो मूर्च्छित ह्वै भूमाहिं ॥ तासों उत्तर दिशाको तपहै करत महेश । अग्नि प्रकाश जहांकरत चारों ओरहमेश ॥ दश योजन बिस्तारित सो आदित्याचल नाम । जाय बसत तामें नहीं कोऊ अतिही भाम ॥ औरपूर्व्वदिशि व्यासमुनि हुते पढ़ावत वेद । पैलहि बैशम्पायनहि औ जैमिनहि अखेद ॥ चौथे तिनहिं सुमन्त को तिहि स्थानको स्वक्ष । देखत भो आकाशते मुनि शुकदेव प्रतक्ष ॥ औव्यासहु लखते भये शुकहि व्योमके बीच । गुणसों छूटे बाणसम आवत उग्र निभीच ॥ आय पिताके पायँशुक धरतो भयो सप्रीति । पैलादिक चारिहुनसों मिलतो भयोसरीति ॥ तदनु जनकसम्बादसो कहतो भयो अनूप । क्रमसों सबमुनि व्यासको शुकमुनि बर बरभूप ॥ सुत सहशिष्यन को सुमुनि व्यासपढ़ावत तत्र । रहतेहैं रबिउग्र सम गति जिनकी सर्व्वत्र ॥ पैलादिक सब शिष्यते

एकसमयके माहिं । प्रार्थना करतेभये आय गुरूके पाहिं॥ शिष्या-ऊचुः॥ चरणाकुलक॥ आपुबढ़ायो तेजहमारो। महतातिमाहिं यशलहत सुढारो॥ एक अनुग्रह मांगत अबहें। जोरिपाणि तुमसों हम सबहें॥ यह सुनिकै शिष्यनकी बानी। कहत व्यास ऐसेभे ज्ञानी॥ करोंकहामैं कार्य्यतुम्हारो। तुम्हैं होय प्रियतौन उचारो॥ सबये बचन गुरूके सुनिकै। कहते भये शीशनत पुनिकै॥ षष्ठ-म शिष्य आपु मति कीजै। यहहम बर मांगत सो दीजै॥ तात सुनो पैलादिक चारो। हम औ पंचम पुत्र तुम्हारो॥ शिष्यनकी सुनिकैयहबानी। कहत व्यासभेइमि बरज्ञानी॥ ब्रह्मलोक लहि-बे की इच्छा। करै जौन सो लैमन बाञ्छा॥ बर ब्राह्मणको वेद पढ़ावै। आलस कबहुंन मनमें लावै॥ बहुत होहु तुम शिष्य हमारे। परम उज्ज्वला मेधावारे॥ दीजैवेद अशिष्यहि नाहीं। तिमि अव्रती कृतघ्नहु माहीं॥ धरिये वेदहि नहिं नहिं कबही। सुनो हमारी शिक्षा सबही॥ कनकहि बहुबिधि सेकत जैसे। शिष्यहि शोधि लीजिये तैसे॥ होय महत भय जिहिथल माहीं। तहां भेजिये शिष्यहि नाहीं॥ मेधा बढ़ै शिष्य की जिमि जिमि। अधिक पढ़ावै ताको तिमि तिमि॥ वेद पढ़नसो कार्य्य महा-नो। यहतुम सबही निश्चय जानो॥ देवनकी सुस्तुति के लीन्हें। ब्रह्मबेद प्रकटेहे कीन्हें॥ दोहा॥ बेदवान बर बिप्रको करत अना-दरजौन। कहत तुम्हैंहों सत्ययह लहत पराभव तौन॥ कहीवेद अध्ययनकी उत्तम बिधि तुमपाहिं। शिष्यनके उपकारको राख्यो तुम मनमाहिं॥

शान्तिपर्वणिमोक्षधर्म्मेवेदाध्ययनविधौषोडशाधिकशततमोऽध्यायः ११६

भीष्मउवाच॥ दोहा॥ सुनिकै गुरुके बैनये लहिकै मोद अखर्ब। आपुसमें मिलते भये पैलादिकते सर्ब॥ मधुभार॥ गुरु कह्योजौ-न। बरज्ञान भौन॥ करिहैं सदाहि। बिधि सहित ताहि॥ दोहा॥ आपुस में ते बोलि कै चारों ऐसे भूप। इमि सुप्रार्थना करतभे

गुरुसों फेरि अनूप ॥ हमसब शाखा भेदसों श्रुतिहि अनेक प्रकार । करिहैंभूमें जायके तात सुज्ञान अगार ॥ उक्था ॥ शिष्य नके सुनिबैन । परम ज्ञानकेऐन ॥ कहत भयेइमिभाय । तिनको सुनु नरराय ॥ दोहा ॥ जहँ मन आवै जाहुतहँ तुम पैला दिक सर्ब । अप्रसादता राखियो श्रुतिमें सदा अखर्ब ॥ उक्था ॥ सुनि कै गुरूके बैन । पैलादिक मतिऐन ॥ प्रदक्षिणा सबिधान । करिनत शीश सुजान ॥ उतरतभूके बीच । चारोभये निभीच ॥ दोहा ॥ यज्ञ चारिऋत्विजन सों हूबेकी बिधि स्वक्ष । भू मण्डल के बीचते प्रबृत करत भे दक्ष ॥ बिप्रन सों क्षत्रियन सों बैश्यन सों अभिराम । करवावत भे यज्ञ नृप सहबिधान मतिधाम ॥ बिदा-भये सबशिष्य जब तबबर मुनि श्रीब्यास । रतशुकसहित सुध्या-नमें होतभये सहुलास ॥ नारद ताहीसमयमें भूप आयकै तत्र । इमिबोलतभे ब्याससों गतिजिनकी सर्बत्र ॥ सुनोबिज्ञबर ब्यास मुनि तवआश्रमके माहिं । शब्दवेद अध्ययनको होत कहौक्यों नाहिं ॥ बेदघोषबिन लहत नहिं शोभा यहगिरिराज । यहसुनिकै इमिकहतभे ब्याससुमुनि शिरताज ॥ नारद तुमयहहै कही मम मनही कीबात । हो सर्वज्ञ कछूनहीं तुमसों है अाख्यात ॥ करैं अत्रहम सुमुनि बर जोतव आज्ञा होय । यहबानी सुनि कहतभे नारद ऐसे जोय ॥ अपठन मल है बेदको अब्रत मलहै पर्म । ब्राह्मणको अरु चपलता तियको सुनहु सशर्म ॥ भू कोमल वाही कहै देश म्लेच्छ स्थान । याते वेदाध्ययन तुम सुत सहकरो सुजान ॥ भीष्मउवाच ॥ चरणाकुलक ॥ नारद की यह बाणी सुनिकै । ब्यास बिशारद ताको गुनिकै ॥ पढ़त वेद भे ऊंचेबानी । करिकै अतिही सुतसह ज्ञानी ॥ ताही समय सदागति आयो । अति-शय उग्र वेगसों छायो ॥ तब गुणि अनाध्याय के भेदे । सुतसों कह्यो पढ़ै मतिवेदे ॥ चुपह्वै शुक पूछत भो पितुसों । आयो उग्र वायुसह कितसों ॥ सुनि यह स्वच्छ पुत्रकी बानी । कहत बचन

भे ऐसे ज्ञानी ॥ आयोकितते बायु महानो । तूहीनिज मतिसों अनुमानो ॥ सप्त मार्गहै मारुत वारे । क्रमसों सुनुतू तात हमारे॥ साध्यनाम सुरगण बरजोहो । तासों मरुतसमान भयोहो ॥दोहा॥ भयो उदान समानते औ उदानते व्यान । तासों भयो अपानहै औ अपानते प्रान ॥ प्राणबायु अनपत्य है यातेहोतन और । पृथक् पृथक् अब कहतहौं इनके कहत सगौर ॥ मारुतही है तात सुनु सब जीवनको प्रान । प्राण भयो यहि हेतुते मारुतको अभिधान॥ देह जलद को चलनकी करत प्रेरणा तात । प्रवह नाम याते भयो मारुत को बिख्यात ॥ उदय अस्त सूर्य्यादिको औ जठरानल धाम । करत प्रकाशित हैभयो याते आवह नाम ॥ जलधिन सों जल लेयकै जो जलदनको देत । करत बर्षिबे योग्यहै कारिकै परम सचेत॥तृतिय बायु शुकतौन है ताको उद्वह नाम । तनुमें कहत उदानहै ताहीको मतिधाम॥ जौन चलावत वायुहै नभके बीच बिमान । पृथक् पृथक् अरु करतजो बरषन काज महान ॥ मेघनको सो वायुहै चतुरथ संवह नाम । महत गिरिनको देतहै सो गिराय बलधाम॥ पीड़ा जाके बेगसों पावत अचल बिमात । मेघकहावत बेगसह जासुबलाहक तात ॥ अतिही दारुण चलतजो नभते करतो ध्यान । निवह नामहै तासु शुक सो पञ्चम पवमान ॥ भूमें गिरन नदेतजो नभगंगाको बारि । औ बीचहिते देतजो किरण भानुकी टारि ॥ क्षीण शशिहि जो करतहै पूरण अति अभिराम । षष्ठमसो पवमानहै परिवह ताको नाम॥ नाशकरत प्राणीन को जो लहिकै कल्पान्त । अन्तहु औ मृत्युहु रहत जाके बशमें दान्त ॥ आतम चिन्तक दक्षके पुत्र सुदशहज्जार । जोहै तिनके मोक्षको कारण उग्र सुढार ॥ ते ब्रह्माण्डहि फेरिकै जाके बेगहि पाय । जातभये अतिही प्रबल जौन बखानोजाय ॥जो जाके पीछे परत आवतहै फिरि तौन । होय उलंघन सकतहै काहूसों जिहिकौन ॥ सप्तमसो पवमानहै

तासु परावह नाम। चलत निरंतर रहतहैं ये सातों बलधाम॥ कंपितभो यह बायुसों उत्तम अचल महान। है अतिही आश्चर्य्य यह अद्भुत अकथ महान॥ यहजोहै शुकबायुसो बिष्णु श्वासको भूरि। सर्बव्यथाको लहत जब जात जगतमें पूरि॥ पढ़त बेदबिद बेदनहिं चलेमहत पवमान। निकसतहै सँगबायुके मुखसे बेदसुठान॥ दोऊ मारुतके भिरे खेदलहत हे बेद। मरुत चले नाहिं पढ़नको कह्यो तुम्हें हम भेद॥इमिकहि ऐसे फेरिकहि अबतू पढ़ु हेतात। द्वैपायन मुनिबर भये व्योमधुनीको जात॥

इतिमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्व्वणिमोक्षधर्मेसप्तदशाधिकशततमोऽध्यायः॥

भीष्मउवाच॥ दोहा॥ पितामय तब सुमुनिबर श्री शुकदेव-अनूप। पूछनकी बेदार्थ को इच्छा करिकैं भूप॥ नारद मुनिकी करतभे पूजा सहित बिधान। तदनु कह्यो नारद सुमनि ऐसे शुकहि सुजान॥ कहा श्रेयतेरो करैं कहुतू मोको ख्यात। नारद के सुनि बचन शुक कहत भये इमितात॥ मुनि बर जो यहि लोकमें हमको अतिहित होय। हमैं युक्त तासोंकरो कृपा दृष्टि सों जोय॥ नारदउवाच॥ ऐसे सनत्कुमार भे पूर्व ऋषिनसों बैन। कहत और तहँ उग्रहै सत्यसमानन ऐन॥ बिद्यासम नाहिंचक्षुहै और अनूप अमन्द। और नहीं अनुरागके सम अति दुःख बिलन्द॥ अज्ञानी संसारमें दुःख श्रोतके बीच। परिकै जातेहै बहे नाहिं सुख होत नगीच॥ कर्मनको फलदेख तू जगतबीच सबिबेक। मनुज उठावत पालकी एक चढ़त हैं एक॥ केते ऐसे पुरुषहैं जिनके नारिअनेक। औकेते हैं कर्मसों जिनको मिलत न एक॥ मनको करि एकाग्रये नारदके सुनिबैन। करत बिचार भयो परम यह श्रीशुकमति ऐन॥ क्लेशहोय जिहि माहिं लघु अरु फल उदय महान। कौनकर्म ऐसे परम है आनन्दस्थान॥ तदनन्तर गति उत्तमा ताको हिये बिचारि। मनहीं में इमि कहतभो महत शोकको धारि॥ कैसे ह्वैहो

प्राप्त यह उत्तम गतिको पर्म ॥जैसो फेरि न दुख लहौं नित्यहि रहौं सशर्म । उत्तम गति को लहन की इच्छा है अभिराम । मेरेमन में छोड़ि कै सर्ब संग दुखधाम ॥ उत्तम गतिकी प्राप्ति नाहिं होति योग बिन स्वक्ष । तातेह्वैकै योगको प्रापत परम प्रतक्ष ॥ छोड़ि देहको अति बिमल ह्वैके मारुत रूप । मैंप्रबेश दिननाहमें करि हौं उग्रअनूप ॥ घटत बढ़तही रहतहै पुनिपुनि सोम सदाहिं । तामें करन प्रबेशकी याते इच्छानाहिं ॥ औ शशि मेंह्वैजातजो आवतहै फिरितौन । रबिमें ह्वैकै जातसो आवतफेरि न जौन ॥ अक्षय मण्डल रहतहै मारतण्डको चण्ड । फैलावत संतापहै लोकनमाहिं अखण्ड ॥ याते तजिकै देहको मैं सब ऋषिन समेत । सूर्य्य सदनमें होयकै जैहौं होय सचेत ॥ लखो योगको बीर्य्यमम नगनागादिक सर्ब । सब भूतनके माहिं । हम करत प्रबेश अखर्ब ॥ आज्ञा लैकै तदनु मुनि नारदसों अवदात। ज्ञानी श्री शुकदेव मुनि पितापास भो जात ॥ दरश पिताको पायकै हाथजोरि शिरनाय । मांगत भयो प्रदक्षिणा करिकै बिदा सचाय ॥ सुनिकैये शुकदेवके ब्याससुमुनि बरबैन । अतिप्रसन्न ह्वैकै कहत ऐसे भे मति ऐन ॥ भोभोसुत कछु बेर तू बैठिहमारे पास । जासों मैं शीतलकरौं लोचन सहित हुलास ॥ छुटोस्नेह संदेह सों शुकमुनिबर अभिराम । पैठनको नाहिं मनकियो गमन कियो मतिधाम ॥ जातभयो कैलासको छोड़ि पिताको पास । गिरिजा गिरिजा पतिहि जहँ सेवत गण सहुलास ॥

शान्तिपर्बणि मोक्षधर्मेशुकोपाख्यानेअष्टदशाधिकशततमोऽध्यायः ११८ ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ स्वच्छशृंग कैलास को तृणसों रहित अनूप । सम अति उज्ज्वल बैठतो तामें भो शुकभूप ॥ पक्षिहु के संघातको है आराव जहान । तत्र चढ़ावत वायुभो क्रमसों सहित बिधान ॥ अतिहो उज्ज्वल आतमा सर्ब संगसों मुक्त । ताहि देखि हँसतो भयो अति मुदसों ह्वैयुक्त ॥ रामगीतो ॥ सो

योगको पुनि प्राप्त ह्वै कै मोक्ष मारग काज । चलत नभ को भयोउद्यत भरोतेज दराज ॥ करिकै प्रदक्षिणा तदनु ऐसे नारदहि शुक बैन । भो कहत गिरि कैलाशऊपर महामेधा ऐन ॥ शुकउवाच ॥ मैं लख्यो मारग मोक्षको अरु प्रवृतभो तिहिबीच । तवहोहु नितकल्याण नारद ज्ञानवान निभीच ॥ तव अनुग्रह ते प्राप्त ह्वैहौं चहतजो गति ताहि । परणाम करिकै सुमुनिसों शुक तदनु पाय बिदाहि ॥ फिरियोग कोसो प्राप्त ह्वै कैलाशते उठि पर्म । शुक बायु भूत अमन्द दिवसैं भयो जात सशर्म ॥ जब जासयन समभये ताको भूत देखत सर्व । छबि बैनतेज समान जाकीउग्र अतिहि अखर्व॥सब चराचरते भये पूजतताहि सहित बिधान । बरपुष्प बर्षणलगे सुरगण भरेतेज महान ॥ सब अप्सरा गन्धर्बताको भये बिस्मित देखि । अरु सिद्ध ऋषिहू भये बिस्मित उग्रअति अवरेखि ॥ इमि कहतभे यह तपस्यासों महत सिद्धिहि पाय । गतव्योम में रविमाहिं लाये नैन भीति विहाय ॥ यह कौन है मुखऊर्ध्व कीन्हें लखत काहुहि नाहिं । है परमजाके तेजसम बरतेज भानुहिमाहिं ॥ अति शीघ्र जाके गमनकोरव भरतभो नमबीच । भोजात मलयाचलहिसो शुकउग्रपरमनिभीच॥हैउदच सोअरुपूर्व चित्तीजहांरहति हमेशा॥तेप्राप्तकै आश्चर्य्यको इमिभई कहतिनरेश॥यहपरम वेदाभ्या समें रतबिप्र तिहि में स्वक्ष । अतिलखो थिरता बुद्धि बीरी अत्र सबहि प्रतक्ष ॥ यहअल्पकालहिमाहिंसिद्धिहि प्राप्तहै अवदात। करि सबिधि सेवा पिताचारी चल्यौ नभमें जात ॥ यह पिताके हौ अतिहि प्रियकिमि बिदा कीन्हों याहि । येउर्व्वशी के बचन सुनि शुकरह्यो चहुंदिशिचाहि ॥ नृप तदनु तहँ चहुंओर सों सुर जोरिकरिकै पानि । भे लखत शुककीप्रभा विमला भरीतेज महानि ॥ शुकदेव तिनको तबै ऐसो भयो कहतो बैन । जोपिता आवै अत्र ममआह्वान करतअचैन ॥ तो श्रवण करिकै बचन

तिनके बोलियो तुमसर्ब । ये बचनसुनि शुकदेवजू के दिशाशैल अखर्ब ॥ अरु सरित त्योंहीं सरित्पति में कहतऐसे तात । तुम कहत सोई कहैबेतव पितासों हमख्यात ॥ भीष्मउवाच ॥ तिन सब नके ये बचन सुनि शुकदेव ज्ञानीपर्ब । गुण छोड़ि कै सब भयो निर्गुण स्वच्छ दक्षअखर्ब ॥ जिहि समयमें शुकदेव मुनिवर भयो निर्गुण होत । भो होत उल्कापात औ दिगदाह कीन्ह उदोत ॥ अरु भई धरणी कम्पिता बहु भयो हाहाकार । उत्पात येसब भयेतिनको सुनो हेतु उदार ॥ जब तजत है संसारको बर महा पुरुष अनूप । तब होतहै उत्पात बिश्व अभाग्य सूचक भूप ॥ भे शिषर गिरिते गिरन के ये तरुणवारी डार । सरितानको अरु सरित्पतिको भयो उछरतबार ॥ भो मन्दभानु प्रकाश अरुभो अग्निमें नहिंज्वाल। भूमें जलाशयभये सूखत सर्ब अल्प बिशा- ल ॥ अबसुनो तहँजे शकुनि भे शुकदेव जू को तीर । बरस्रगो बर्बसबारि बासव लगो बहन समीर ॥ शुकदेव गिरि हिमवान के बन शृङ्ग अतिही माम । भोलखतहै यक हेमको यकरजत को मतिधाम॥ दोहा ॥ शतशत योजन कोसुतिन दोउनको बिस्तारि। तितनेही उन्नत मिले दोऊ हुते सुढारि ॥ तिन दोउन शुकदेवकी मतिको रोधन कीन ॥ जुदेहोतभे यहसुनो तुमआश्चर्य्य प्रबीन॥ रामगीती ॥ तिन दुहुनके कै बीचमें शुकदेव मुनिभो जात । भेशोर करते देवऋषि आश्चर्य्य यह लखि तात ॥ भे द्विधा गिरिके शानु शुकमुनि कढ़ोतिनमें होय । लखि साधुसाधु सुभये करते नाद सबतहँ जोय ॥ सो पूज्यमान ऋषीनसों अरु देवगणसों भूप। अरुयक्ष गन्धर्बादिकनसों पूज्यमान अनूप ॥ भोहोततापै पुष्पबर्षा मयी नभते होत। शुक तदनु ऊपर जातभो मन्दाकिनी को सोत ॥ भो लखत तामें हुती क्रीड़ा करति नग्ना आम । बहु अप्सरा तो देखिके शुकदेवको मतिधाम॥जिमिरहीक्रीड़ा करति तिमिही रहीधारण बास । नहिंभई करती छई छबिसों धरेभूरि

हुलास ॥ गुणि शुकहि जातो व्यासमुनि धारि हिये भूरि स्नेह । भे चलत पीछूते भये धरि योगगति मतिगेह ॥ शुकदेव मुनि बर प्रभंजनते ऊर्ध्व नभ के बीच । गतिके दिखाय प्रभाव अपनो परस उग्र निभीच ॥ भोब्रह्मभूत अमंद होतो द्वन्दरहित नरेन्द्र । गति धारि योग महान बारी व्यास बुद्धि बिलन्द ॥ शुक गमन कीन्हों जहांतेहो तहांभे मुनिजात । क्षणमात्रहीमें लगो तिनको बहुतदेर न तात ॥ शुकगयो हो जिहि द्विधा करिकै पर्वताग्रहि भूप । मुनि व्यासताको भयेदेखत भरो ओज अनूप ॥ तहँ व्याससों इमिभये कहते तत्र ऋषिवर दक्ष । यह फटोतव सुत तेजसोंहै पर्वताग्र प्रतक्ष ॥ नृप तदनु हेशुकव्यासमुनि इमिकहतभे आह्वान । स्वदीर्घसें सो भरतभो तिहुंलोक माहिं सुजान ॥ आह्वानकरिकै श्रवण बोलतभे चराचरसर्व । हांतात ऐसीभांति सेती तदनु प्रश्न अखर्व ॥ दोहा ॥ तबसों लैकै आजुतक पर्वत गहवर बीच । उच्चारण कीन्हें शबद दीरघतात निभीच ॥ हेशुक ऐसी कढ़तिहै प्रगट प्रतिध्वनि पर्म । भूतनमें शुकदेव छपि आपु प्रभावसशर्म ॥ अपनो प्रगट दिखायकै तातहि तजि शब्दादि । प्राप्त होतपर पदहि भो जोहै नित्य अनादि ॥ शुककी महिमा देखि कै अद्भुत श्रीमुनिव्यास । चिंतन करिकै शुकहि को बैठत भयेउदास ॥ तहां सुनग्ना अप्सरा मन्दाकिनिकेतीर । देखि व्यासको दौरिकै धारातिभई सुचीर ॥ यहलखि निज आसक्तता पुत्र मुक्तता ताहि । लज्जित औहुलसित भये मनहींमें अवगाहि ॥ तदनन्तर शिव आयके व्यास पास अवदात । बाणी नीकीकहि भये समुझावतहे तात ॥ शिवउवाच ॥ परमस्वच्छ सामर्थ्यको पंचभूतकी व्यास । मांग्योहो सुत पूर्व तुम करितप सहित हुलास ॥ तुम्हैंप्राप्त तैसोहिभो सोअब ज्ञानी पर्म । ब्रह्मतेजते तव सुअरु ममप्रसादते पर्म ॥ जो पद दुर्लभ सुरनको प्राप्त ताहि भो होत । तुमकाहेको शोकको हियमें कियो उदोत ॥ रहिहैपर्वत ओजलधि

जबलों तबलोंव्यास । रहिहै तेरीपुत्र सह कीरतिको सुप्रकास॥ ममप्रसादते देखिहै सबलोकनके माहिं । छायाको निजपुत्रकी सदाआपने पाहिं ॥ समुझाये श्रीशम्भुके अरुसुत छायापाय । हर्षितह्वै फिरतेभये ब्यास सुमुनिनरराय ॥ कह्यो तुम्है शुकको जनमत्योंहीं गमनअनूप। नारदमोसों यहकथापूर्बकहीहो भूप ॥ औ मुनिबर श्रीब्यास तौ कही अनेकनबार । हीहमको यह जो कथा महिमा भरी अपार ॥ धारण करिहै ताहिसो लहिहै गति निर्बान । जनन मरणके दुःखको लहिहै फिरि न सुजान ॥
शांतिपर्बमोक्षधर्मेशुकोपाख्यानसमाप्तिर्नामैकोनविंशाधिकशततमोध्यायः
बैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ जन्म गमन शुकदेवको सुनि हर्षित ह्वै भूप । तदनन्तर पूछतभयो इमि गुणिके मतिरूप ॥ होत भक्तिबिन ज्ञाननहिं अतिउज्ज्वल अभिराम । फेरि प्रश्न गांगेय को पूछतभो यहआम ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ उकछा ॥ चारोआश्रम जौन । सिद्धि लहनको तौन ॥ इच्छा मनके बीच । जौ नृप करै निभीच ॥ दोहा ॥ कौनदेवकी तौ करै पूजासहित बिधान । कौन देवकी कृपाको प्रापतहोय सुजान ॥ ब्रह्मलोकको होतहै प्रापत मानव स्वक्ष । होत तहांते हैनहीं पुनरावृत्ति सुदक्ष ॥ किहि गतिको सो लहतहै मुक्तजगतते जौन । कहाकरै अरु प्राप्त जो स्वर्ग माहिं जनतौन ॥ जासों च्युतनाहिं स्वर्गते फेरिहोय अवदात । कोपितरनको हैपिता अरु सुरनको सुरतात ॥ भीष्मउवाच ॥ जो यहपूछौ प्रश्नतुम तौन गूढ़हैपर्म । शतबर्षहुमें तर्कसों कहि नाहिं सकिहैं मर्म ॥ याको कोऊदेवके बिनाप्रसाद न भूप । अत्र कहत इतिहासहौं तुमकोएक अनूप ॥ नारायणको अरु सुमुनि नारदको सम्बाद । तामेंसो एकाग्रकहि मनसुनुछोड़ि बिषाद ॥ होतधर्मको पुत्रभो नारायण भगवान । कह्योहुतो यह ममपिता मोको भूप सुजान ॥ स्वायम्भुव मन्वन्तरमें हे नृपसतयुगबीच सुबेश । चारमूर्ति भगवानकी होतीभई बिशेश ॥ नर नारायण

हरि कृष्ण इन चारिहुमें भूप । नर नारायण करतभे तप सविधान अनूप ॥ मायामय तनु धारिके वदरी आश्रम वीच । कृश अति तपके तेजसों लखे न जात निमीच ॥ जापैंहोहिं प्रसन्न अति नर नारायण पर्म । सोई तिनको लखिसके और न कोय सुधर्म ॥ चरणाकुलक ॥ फिरत फिरत लोकनमें आये । वदरीआश्रममें छबि छाये ॥ श्रीनारदमुनि अतिवर ज्ञानी । महिमाजाय न जासु बखानी ॥ करतहुते तर्प्पण अरु पूजा । ते दोऊ तिन सम नहिं दूजा ॥ तिहिपल माहिं देखिके तिनको । अचरजप्राप्त होतभो मुनिको ॥ तदनु गुणतभो ऐसे मनमें । श्रीनारद वर मुनि तिहि क्षणमें ॥ एकहि मूर्ति विष्णुकी भारी । भई चतुर्द्धा परम सुढारी ॥ करी धर्म पै कृपा महानी । इन अतिही यहमन में जानी ॥ ये हैं परम धाम सबकेरे । भूत चराचर जे बहुतेरे ॥ औ हैं पितर चराचर वारे । सब देवनके देव सुढारे ॥ किहि देवहि अरुपितर हिये हैं । पूजत हिये धारिकै नेहै ॥ नारद यह विचारि मनमाहीं । भयो पहुंचतो तिनके पाहीं ॥ देव पितृ कारज करि आछे । नारदको देखतभो पाछे ॥ नर नारायण तदनु सुढारो । आदर करि मुनि नारद वारो ॥ बैठावतभे पूजा करिकै । बैठि सुमुनि नारद मुद धरिकै ॥ नमस्कारकरि ऐसेंबानी । बोलत भये मधुरतासानी ॥ नारदउवाच ॥ आपुहि वेद पुराणन माहीं । हौंजूगाये जात सदाहीं ॥ तुमहीं मूल चराचर वारे । सब देवन के देव सुढारे ॥ दोहा ॥ तुमकिहिकी पूजा करत मैं नहिं जानत नाथ । नर नारायण कहतभे सुनि ऐसे नरनाथ ॥ चरणाकुलक ॥ कहिबे योग्य बात यह नाहीं । लखि तवभक्ति कहत तव पाहीं ॥ अति सूक्षम जो जात न जानो । इन्द्रियादि सों रहित बखानो ॥ मुनि क्षेत्रज्ञ कहावत सोई । अरु सबको अन्तर तम ओई ॥ ताते सुनु अव्यक्त भयो है । तीनों गुणसों तौन रयोहै ॥ व्यक्त भयेते प्रकृति कहावै । सोई जोजगको सरसावै ॥

सो उत्पत्ति स्थान हमारो । नारदमुनि मनमाहिं बिचारो ॥ याते हम निर्गुणहि सदाहीं । पूजत दुओ कार्यके माहीं ॥ सोई पिता देवहै सोई । तासु समान और नहिं कोई ॥ सुर पितृ कार्य करन को जोहै । उनहींको शासन पुनि सोहै ॥ ब्रह्मादिक सुप्रजापति जेते । सोशासन गुणिकै सब तेते ॥ देव पितर कारज विधि सेती । करतेहैं करि बुद्धि सचेती ॥ देव पितर कारज सोजानो । ताहीको न अन्यको मानो ॥ प्रज्ञादिक सों जेहैं हीना । अरु गुणकर्मनसों सुप्रवीना ॥ तिनको मुक्ति जानु मुनिज्ञानी । पाय सिद्धि ते परम महानी ॥ जो क्षेत्रज्ञ ब्रह्मतिहि माहीं । प्राप्तहोत संशय है नाहीं ॥ ज्ञान योग सेती सो देख्यो । जात और सों नहिं अवरेख्यो ॥ दोहा ॥ ताहीते हमहैं कहे ऐसेजानि सदाहिं । ताकोपूजत सहित विधि भक्तिराखि मनमाहिं ॥ जोजन पूजा करतहैं जासुभक्ति सहपर्म । ताहि देतहै इष्टगति ते सुनु सुमुनिसशर्म ॥ औ निष्केवल भजत जो उनहींको जनस्वक्ष । ताहि लीनकरि लेत हैं आपुमाहिं मुनिदक्ष ॥ गुप्तवारता है कही तुम को हम यहपर्म । तुमसुहमारे भक्तहौ याते सुमुनिसुधर्म ॥

इतिशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेनारायणनारदसंबादेविंशाधिकशततमोध्यायः ॥

भीष्मउबाच ॥ दोहा ॥ मुनिनारद येश्रवणकरि नारायणके बैन । कहत भयो ऐसे वचन नारायणहिं सचैन ॥ नारदउबाच ॥ रक्षण को ये धर्मके चारि धरेतुमरूप । कीजै आप बिधान सह रक्षण तासुअनूप ॥ मैं अब श्वेत द्वीप को जात तिहारो और । रूप लखनको तदनु इमि कह्यो सुमुनि शिरमौर ॥ कोउश्वेत द्वीपमें जाय सकत मुनि हैन । जोऐसे हमको कहौ तो सुनिये ममबैन ॥ पूजागुरुकी करतहौं मैं सबिधान सदाहिं । गुप्त अन्यकी बात मैं कही न काहूपाहिं ॥ वेद पढ़े मैं बिधि सहित कीन्हों तप सबिधान । अनृत कबहुँ बोल्यों नहीं लोकनमें भगवान ॥ पाणि पाद अरु उदर अरु मेढ़ सुमम ये चारि । अंग सदा तिनको

करत रक्षणनाथ मुरारि ॥ राखत मैं समभावहौं शत्रु मित्र के माहिं। श्वेतद्वीप तिहिको सबिधि मैं हौं जपत सदाहिं ॥ याते मैं जैहौं न किमि श्वेतद्वीप के बीच। नारायण सुनि इमि कह्यो तू मुनि जाहु नभीच ॥ श्रीनारायणके बचन सुनिकै सुमुनि सहर्ष। पूजाकरि जातो भयो गिरिमेरुहि उत्कर्ष ॥ गिरि सुमेरु के शृंगपै बैठि सुघटिका दोय। उत्तर पश्चिमकोन में श्वेतद्वीप को जोय ॥ उत्तरक्षीर समुद्रके अतिउज्ज्वल अभिराम। द्वात्रिंशत योजन सहस दूरिमेरुते माम ॥ तेजोमय उज्ज्वल परम तजे देह अभिमान। देखिपरे अनशनव्रती बासी तत्रसुजान ॥ तिनके बज्रसमान तन अतिहीबर बलवान। मस्तक छत्राकार अरु घनसम तिनको ध्यान ॥ अष्टडाढ़ अति शुभ्रअरु षष्टि दन्त अभिराम। रसनासों चाटत रबिहि पायसइव बलधाम ॥ कालचक्रको लेतभो जौन देवते स्वक्ष। ध्यान योग्य सो तिन कियोहियमें ताहिप्रतक्ष ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ बासी श्वेतद्वीपके तेजोमय अवदात। कैसे मुक्तसमान भे कहोतात बिख्यात ॥ बासी श्वेतद्वीपके तिनको लक्षण जौन। अरु मुक्तनको एकही जानि परत मति भौन ॥ तिनको कैसी उत्तमा प्राप्त होति गतिपर्म। यह कहिकै सन्देह मम दूरि करहु गुणिमर्म ॥ भीष्मउवाच ॥ हम स्वपितासों यह कथा सुनी पूर्वहीभूप। मनको करि एकाग्रसुनि है यह सार अनूप ॥ पूर्व हुतोयक भूपबर तासु उपरिचरनाम। मित्रइन्द्रको भक्तबर नारायणको माम ॥ हुतो पिताको भक्तअरु धर्मी परम दराज। हरिबरते सो लहत भो सर्वाभूकोराज ॥ देव कार्य पितृकार्य को नित्य करत सबिधान। हुतो अधिक जासु यश फैलो हुतो महान ॥ यज्ञादिक जे करतहो तिनवारो फल सर्व। नारायणको देतहौं आपि सप्रीति अखर्व ॥ कीन्हों कबहूं हुतो नहिं जाने नेकहुपाप। जासु राज्य में दुष्टता होति न रही रसाप ॥ अत्रि मरीचि सु अंगिरस क्रतु पुलस्त्य मतिमान।

पुलह बशिष्ठ सुसप्तऋषि तेजसभेरमहान ॥ अष्टम स्वायम्भुव सुमनु येसब एकहजार । सुरबत्सरलौं करि सुतप सहितविधान सुढार ॥ नारायणको करतभे आराधनबरसर्ब्ब । ताते भयेप्रसन्न अति विष्णुकृपालु अखर्ब्ब ॥ शासनते श्रीविष्णुके सरस्वती अचलेश । इनआठहुके बदनमें करतीभई प्रबेश ॥ भयेबनावत शास्त्रये एकलक्ष अभिराम । हरिहि सुनावत सोभये ग्रन्थपरम मतिधाम ॥ तदनन्तर ऐसेकहत नारायण भगवान । भेऋषीन को बचनबर ह्वैके गुप्त सुजान ॥ बिरच्यो जोयह शास्त्रतुम तामें लक्षश्लोक । याहीते ह्वैहैसुनो प्रवृत्ति धर्मको थोक ॥ स्मृति बिरचिहै देखिकैस्वायंभू मनुताहि । निवृत्तिहुमें ह्वैहैप्रवृत्ति मानव ताको चाहि ॥ दैत्यगुरुहि अरु सुरगुरुहि यह उपनिषद अति स्वक्ष । देहै स्वायंभुव सुमनु ते दोऊ वरदक्ष ॥ करिहै यह बर शास्त्रको लोकन माहिं प्रचार । तदनन्तर श्रीबृहस्पति सुर गुरु ज्ञानअपार ॥ प्रज्ञउपरिचर वसुहि यह देहै शास्त्र अनूप । करि है यासों सो क्रिया बिधिवत भूमें भूप ॥ प्रवृत्ति भये ते लोकमें यह सुशास्त्रकी पर्म । आचारजतुम प्रकृतिके ह्वैहो सर्ब सशर्म ॥ नृपति उपरिचर होयगो सम्पतिवान अनूप । लुप्तहोयगो शास्त्रयह जबसों मरिहै भूप ॥ अरिल ॥ ऐसे कहिकै बैन । नारायण बलऐन ॥ तजि ऋषीनको जात । भये तहांते तात ॥ दोहा ॥ तदनन्तर सोशास्त्रबर कीन्हों प्रवृत्ति ऋषीन । सुरगुरु भो तबदेतभे ताकोतौन प्रबीन ॥ तदनु जातभे तपकरन निज निज बांछित थान । मरीच्यादिबर सप्तऋषि महामनीषा वान ॥

इतिमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्व्वणिमोक्षधर्म्मेएकविंशाधिकशततमोध्यायः ॥

भीष्म उवाच ॥ दोहा ॥ यही कथाको कहतहौं मैंअबकरि बिस्तार । मनको करि एकाग्रसुनु पाण्डव बिज्ञ उदार ॥ त्रयलोकनकेनाश को महाकल्पहै नाम । महाकल्प बीतेभयो बाचस्पति मतिधाम ॥ देव पुरोहित आंगिरस जब उत्पन्न अनूप । भयो देवतब होतभे

अतिही हर्षितभूप ॥ वृहत सुनाम बड़ेनको तिनकोजोपतिहोय। ताहि बृहस्पति कहतहैं परममनीषी लोय ॥ भूप उपरिचर नाम ताको शिष्य भयो बलवान । सोवसु हुतो महामति ताकोसुयश महान ॥ चित्र शिखण्डिज शास्त्र को पढ़त भयो नृप तौन । पालतभयो प्रजाहिसो नीति सहित बलभौन ॥ चरणाकुलक ॥ अश्वमेधसो करिबे लागो । सहित विधान मोदसों पागो ॥ सुराचार्य्यभे होताताके । तिनके सम न और मेधाके ॥ विज्ञप्रजापतिके सुतनीके । एकतहित अरुत्रित शुभश्रीके ॥ तामेंभये सदृश्य सुढारे । ये तीनोंवर मेधावारे ॥ धनुष रैभ्य मेधा तिथि आछो । होत तिन्हैं लखि पातक पाछो ॥ अर्व्वावसु सुपरासुज्ञाता । शान्ति कपिल तिमि आनँद दाता ॥ ताड्य तिमिहि ऋषि वैशम्पायन । देवहोत्र अरु कण्वसचायन ॥ वेदशिरा अरुये मेधावी । सोरह ब्राह्मण शरण शुभावी ॥ अरुसब सामग्री मखवारी । धरीगई अतिस्वच्छसुढारी ॥ बैठतभयो उपरिचर राजा । मखशालामें परमदराजा ॥ होअहिंस नृपयाते नाहीं । पशुकी घातभई मिसिमाहीं ॥ बनमें होत पदारथ जेहैं । भूप मँगाय स्वच्छ बहुतेहैं ॥ तिनके जिहि जिहि देवहि जैसे । भाग चाहिये दीन्हें तैसे ॥ ह्वै प्रतक्ष भगवान सुआये । तत्रप्रीति नृप की सों छाये ॥ आपुहि ग्रहण भागको कीन्हों । और द्विजनको दर्शन दीन्हों ॥ सुरगुरु यदिवृत्तान्तहिजाने । भेरक्रोधसों परम महाने ॥ तत्र व्योममें श्रुवहि चलायो । आंखिनमें आंशू भरि आयो ॥ तदनु उपरिचर सों इमिबानी । बोलतभे सुरगुरु अभिमानी ॥ दोहा ॥ होय हमारे सामुहे लेब उचितहो भाग । नारायण भगवानको सुनहु भूप बड़भाग ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ चरणाकुलक ॥ और देवगुरुसों हैं जैसे । भागलह्यो हरिक्योंनाहिं तैसे ॥ भीष्मउवाच ॥ पाण्डव तदनु उपरिचर राजा । नम्रसमेत सदस्य समाजा ॥ भये प्रसन्न करावत ज्ञानी । गुरुको ऐसी कहिकैबा-

नी ॥ यह सतयुगहै याके माहीं । करिबो क्रोध उचितहैनाहीं ॥ जाहि भाग दीन्हों सहरागै । नीकोताहि क्रोधनहिं लागे ॥ कै प्रसन्न देखतहैं जाको । दर्शनदेत विष्णुहैंताको ॥ हमतुमदेखि सकैंगे नाहीं । यहहम सत्य कहत सबपाहीं ॥ तदनु सुएकत द्वितवित ज्ञानी । तिनहिं सप्तऋषि ऐसेबानी ॥ कहतभये सुरगुरुकेसोंहे । ह्वै करिकै अतिहीन निचोहे ॥ हम मानस सुत ब्रह्माकेरे । गुणिकै श्रेयसकाजघनेरे ॥ पावनउत्तरदिशिको जाते । एकसमयते भये बिभाते ॥ रत्नशानुके उत्तर भारे । क्षीरसिन्धुके स्वच्छ किनारे ॥ अतिहिमहत धीरजसों ज्वैकै । सहस वर्षलों ठाढ़े ह्वैकै ॥ उत्तम तपहि भये हम करते । चलतामेंन भये मन धरते ॥ नारायणको कैसे देखैं । यहइच्छा मनमें अवरेखैं ॥ पूर्ण तपस्याभई तुम्हारी । इमि हरिबाणी भईसुढारी ॥ तुम सु तपस्या कीन्हीं आछी । मनकी चंचलता करिपाछी ॥ प्रभुको देखनको हौचाहौ । पैदेखोगे किमि अवगाहौ ॥ क्षीरसिन्धुके उत्तर नीको । श्वेतद्वीप महाहै श्रीको ॥ नारायणकेभक्त सुढारे । चन्द्रसमान सुवर्चसबारे ॥ एक बिष्णुहीको तेजानै । औरन कोहूमें मनआनै ॥ निराहार तेरहत सदाहीं । बिषय न चाहैं इन्द्रियपाहीं ॥ दोहा ॥ पुरुषोत्तमको होतहै प्राततौन मति मान । उत्तम श्वेतद्वीप में याते सुनो सुजान ॥ जावो तुमसब तत्रबर लहिहौदर्शहमार । तहँहींहोत प्रतक्षहै मेरोरूपसुढार ॥ चरणाकुलक ॥ हमसब तिहि बाणी को सुनिकै । ह्वै अनमेष ताहि हिय गुनि कै ॥ भये सुश्वेत द्वीपको जाते । अतिही आनँद पाय बिभाते ॥ पहुंचे श्वेत द्वीप के माहीं । हमको देखि परचो कछु नाहीं ॥ ताके तेजससों अतिभारी । मन्दह्वै गई नजरि हमारी ॥ दर्शन पुरुषको न भो याते । नारायणकी तदन कृपाते ॥ प्रापत होतभये हमज्ञानै । बिना उग्रतप परम महानै ॥ नारायणको कोऊ नाहीं । देखतयह बिचारि मनमा-

हीं ॥ फिरि शतबर्ष कियोतप हमजब । देखिपरे तिहिके बासी तब ॥ भरी प्रकाश चन्द्रसम शोभा । तिनकी नित्य रहतहै लोभा ॥ जपमेंबर गायत्रीवारे । बिधिसोंली थिरतासों भारे ॥ थिरतासों उज्ज्वल मनवारी । भयेप्रसन्न बिष्णु अघहारी ॥ तत्र सुएक एक मुनिवारी । महाप्रलय के रबिसम भारी ॥ अतिही उग्रकान्ति हमदेखी । तब हम जियमें यह अवरेखी ॥ हैयह द्वीपधाम तेजसको । अरु तिमिहीं अति उज्ज्वल यशको ॥ हैं सबजन समतासों पूरे । न्यूनाधिक्य नहीं हैंशूरे ॥ एकसमय में तहँहम दीसी । उठतीप्रभा सहस रबिकीसी ॥ ताको देखि तहांके बासी । भरे सुआँनँदतासों खासी ॥ नमस्कार करि तिहि दिशि दौरे । जिहि दिशि उठीपाणिको जोरे ॥ उग्राउठी प्रभाहो जाकी । करत भयेते पूजाताकी ॥ ताके तेजससों अतिभारे । मन्दह्वैगये नैन हमारे ॥ याते देखिपरयोकछु नाहीं । औरबिचारभयोमनमाहीं ॥ दोहा ॥ तदनन्तर हे महापुरुष हे नित्यपुण्डरीकाक्ष । हृषीकेशहैं नमस्कारहैं तुमको नाथ महाक्ष ॥ यहैं एक सुनते भये तत्रध्यान अभिराम । हम सबहैं सुरगुरुसुनो बाचस्पति मति धाम ॥ चरणाकुलक ॥ इतनेही में सौरभ पूरो । चलत सदा गतिभो अति रूरो ॥ जिहिजिहि कर्ममाहिं बरजेते । औषधि स्वच्छ चाहिये तेते ॥ तहां सुतौन सदागति ल्यायो । तिमिहीं पुष्पसमूह सुहायो ॥ नमो नमः यहबोले बानी । जैसेही सुमधुरता सानी ॥ तैसेहि तत्र प्रगटह्वै आये । श्रीभगवान कृपासों छाये ॥ हमतिनकी मायासों मोहे । याते तिन्हैं नहीं हमजोहे ॥ चितमेंचिन्ता भूरिहमारे । होतिभई प्रभुबिना निहारे ॥ कोहैंये कितेतइत आये । इन हमको मनमेंहुनलाये ॥ लखिकै श्वेतद्वीपके बासी । भरे परम परभासों खासी ॥ ब्रह्मभावमें तेहैं पागे । याते हमसों नहिं अनुरागे ॥ हमसे तदनु आपही बोले । बिष्णु महानकृपा जो शोले ॥ देवउवाच ॥ श्वेतद्वीप बासी तुम देखे । बिषयाबिवर्जित

आनँद भेखे ॥ हैइन केरो दर्शन जोई । परमेश्वरको जानहुसो-ई ॥ अब तुम अचिर यहांते जावो । और नहीं मनमें कछु लावो ॥कबहुं अभक्तनको यकबेरो। होतनहीं दर्शन प्रभुकेरो॥ बिन दर्शन कीन्हें हम कैसे । जाय इहांते जो कहु ऐसे ॥ होतन दरश कालमें थोरे । जानो अनृत बचन मतिभोरे ॥ महत काज करनोहै आगे । त्रेता माहिं तुम्हैंरति पागे ॥ देव कार्य्यकी सिधि को लोने । परिहै तुम्हैं सहायक होने ॥ सुनिकै ये वरबैन सुहाये । हम अपने सुधामको आये॥ दोहा ॥सकै नहम तपसादि सों परमे-श्वर को देखि । तुम कैसे लखिहौ तिन्हैं आनो तुमअवरेखि ॥ चरणाकुलक ॥सर्वोपरि परमेश्वर स्वामी। आदि अन्तसोंरहितसुना-मी ॥ ऐसे बहुबिधिसों समुझाये। गये वृहस्पति मति सों छाये ॥ सबिधि यज्ञवर पूरणकीन्हों । परमेश्वरहि पूजि मुद लीन्हों ॥ पूरणभये यज्ञ वर राजा । बिज्ञ उपरिचर बसु शुभसाजा॥करतो भयो प्रजाको पालन । सहित बिबेकनीतिकी चालन ॥ बिधिको-शाप पायहौं आयो। दिविते भुंव मण्डलको गायो ॥ पैठत भो सो नृप धरणीमें । सौरभ मत्स्यवती बरणीमें॥नारायणमें तत्पर ह्वैकै । जपतो भयो भक्तिसों ज्वैकै॥तातेफेरि परमगतिपाई। बि-धिके निकटगयो नरराई॥तदनु मुक्ति तिहि लही सुढारी॥तिहिते अन्यनपद सुखकारी ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ बृह्मलोकते क्योंसोराजा। गिरो धसोमहिमें केहिकाजा ॥ भीष्मउवाच ॥ यक इतिहास कहत प्राचीना । इह सुप्रश्नमें भूप प्रबीना ॥ऋषिऔ सुरगणकोतिहि माहीं । है सम्बाद सुनो मम पाहीं ॥ ऐसे सुरनर कह्यो ऋषि गणसों । कीजै मख सविधान अगणसों ॥ ऋषयऊचुः ॥ अजसं-ज्ञाबीजहुकी जानहु । छागाहिको अजतुम मतिमानहु ॥ हिंसा मख साधुनको नाहीं । करिबो उचित गुणो मनमाहीं ॥ दोहा ॥ यह सतयुग यहि माहिं नृप हिंसामख किमि होय । यह अहिंस युग नित्यहै जानतहैं बुध लोय ॥ भीष्मउवाच ॥ चरणाकुलक ॥ देवन

सोंऐसी बरबानी । कहतहुतेऋषि बहुविज्ञानी ॥ ताहीसमयउप-
रिचर नामा । आयो तहां भूप गुणधामा ॥ कहुंते व्योम मार्ग
मेंह्वैके । कीन्हें बहुमख तिहि मुद ज्वैके ॥ ताहि देखि ऐंसेसब
बोले । हरिहै यह संदेह अतोले ॥ तदनु जाय सुर ऋषिगण
आगे । आदर करि नृप को अनुरागे ॥ तिहिको पूछत मेते
ऐसे । यहि युग माहिं होत मखकैसे ॥ बीजनसों कीहो तपसुन
सों । कहहु भूपतुम युत बहुगुनसों ॥ यहसुनिभूप जोरिकैपानी।
कहत भयोतुम सबबर ज्ञानी ॥ तुम्हेंकौन मख लागत नीको ।
कहिये मत तुम निज निज हीको ॥ ऋषयऊचुः ॥ पशु सुयज्ञमतमें
सुखारे । बीजयज्ञ मतमाहिं हमारे ॥ हैइतको तोंनृप मतऐसो ।
अबगुणि कहोहोय तव जैसो ॥ भीष्मउवाच ॥ पक्ष राखि बैठे उन
केरी । कह्यो देखिदिशि ऋषिगणकेरी ॥ छागाहिसों मत कीजै
बिधिसों । यहमैं जानत सुमति वृद्धिसों ॥ बोले तासों ऋषिगण
ऐसे । महाक्रोध अरि अरिसों जैसे ॥ दोहा ॥ होहुभ्रष्ट तबस्वर्गते
तेरी गति अबतैन । नभमें कबहुंहोहु मति हेतू दुर्मति ऐन ॥
चरणाकुलक ॥ पैठि जायगो तूमहि माहीं । महाअधम तू सत नृप
नाहीं ॥ सुनताहि शापऋषिनते ऐसो । भयोविबर बसुधामेंतैसो॥
प्रभुप्रसादते अहिअनुकूलो । महि गत भोपै सुधि नाहिंभूलो ॥
सुमनस शापछुटनकी बिधिको । भयेबिचारत सकल सु सिधि
को ॥ हेतुहमारे यहिनृपपायो । शापऋषिनसों अतिदुख छायो ॥
तदनु सुरन यहबैनउचारो । प्रभु मेटोयहशाप तिहारो ॥ ब्राह्मण
मान्यसदा जगमाहीं । तिनकोशाप मिटैगोनाहीं ॥ जबलौं तूमहि
माहीं रहि है । तबलौं मखघृतधारा लहिहै ॥ तृप्तरहैगो नितही
तासों । बिकल न ह्वैहै तृषा क्षुधासों ॥ कछुकालमें तूको ईश्वर ।
देहै ब्रह्मलोक धरणीश्वर ॥ यह बरदै प्रभु दिवहि सिधारे । ऋ-
षिनहु लीन्हें पथ गहवारे ॥ तदनु उपरिचर बसुसोराजा । प्रभुको
नाम जानि सुखसाजा ॥ भयो जपत धरिभक्ति महानी । मान्य

बिप्रहै यह हियआनी ॥ ह्वै प्रसन्न प्रभु तास भगतिसों । ऐसे कहतभये खगपतिसों ॥ भूप उपरिचर बसुलहि शापै । ऋषि वृन्दनको करि सहदापै ॥ प्राप्त भयोहै सो महिमाही । करौऊ-र्ध्वगति प्रापति ताही ॥ ऐसेबचन स्वप्रभुके सुनिकै । पक्षनको फरकाय सुधुनिकै ॥ पैठ भूमिमें भूपहि लैकै । दयो छोड़ि नभ में मुद भैकै ॥ सोरठा ॥ तहँते तदनु नृपाल ब्रह्मलोकको प्राप्त भो । देहसहित छबिजाल महामोदको धारिकै ॥

इतिश्रीशान्तिपर्बणिमोक्षधर्मेद्वाबिंशाधिकशततमोऽध्यायः १२२ ॥

दोहा ॥ बिप्र शापते तिहि नृपति दुर्गति लही अनूप । प्रभु सुकृपाते ऊर्ध्वगति फिरि तिहिपाई भूप ॥ भीष्मउबाच ॥श्वेत द्वीप कोप्राप्त ह्वै नारद मुनि तपधाम । तहँके बासिन को भये देखत अतिअभिराम ॥ नारद तिनकी करतभे पूजा सहित बिधान । नारदकी मनसों करी पूजा तिनहुँ सुजान ॥ शमदम साधन करितहां नारायणको तत्र । स्तवन करत भे सबिधि मुनि गति जिनकी सरबत्र ॥ नारदउबाच ॥ नमस्तेदेव १ देवेश २ निष्क्रिय३ निर्गुण ४ लोकसाक्षिण ५ क्षेत्रज्ञ ६ अनन्त ७ पुरुष ८ महापुरुष ९ पुरुषोत्तम १० त्रिगुण ११ प्रधान १२ अमृत १३ अमृताख्य १४ ब्योम १५ सनातन १६ सदसत् १७ ब्यक्ताव्यक्त १८ शतधामन १९ आदिदेव २०बसुप्रद २१ प्रजापते २२ सुप्रजापते २३ बनस्पते २४ महाप्रज्ञापते २५ उर्जस्पते २६ वाचस्पते २७ जगत्पते २८ मनस्पते २९ दिवस्पते ३० मरुत्पते ३१सलिलपते ३२ पृथिवीपते ३३ दिक्पते३४ पूर्बनिवास ३५ गुह्य ३६ ब्रह्मपुरोहित ३७ महाराजिक३८ चातुर्महाराजिक ३९ आभासुर ४० महाभासुर ४१ सत्य सदाभाग ४२ जाम्य ४३ महाजाम्य ४४ संज्ञासंज्ञ४५ तुषित४६ महातुषित ४७ प्रमर्दन ४८ परिनिर्मित४९ अपरिनिंदित५० अपरिमित ५१ अवशबर्तिन ५२ यज्ञ ५३ महायज्ञ ५४ यज्ञस-

म्भव ५५ यज्ञयोने ५६ यज्ञगर्भ ५७ यज्ञहृदय ५८ यज्ञकृत ५९ यज्ञभागहर ६० पञ्चयज्ञधर ६१ पञ्चकालतकृतपते ६२ पञ्चरात्र ६३ बैकुण्ठ ६४ अपराजित ६५ मानसिक ६६ नामनामिक ६७ परस्वामिन ६८ सुस्नात ६९ हंस ७० परमहंस ७१ महाहंस ७२ परमयाज्ञिक ७३ सांख्ययोग ७४ सांख्यमूर्ते ७५ अमृतेशय ७६ हिरण्यशय ७७ देवेशय ७८ कुशेशय ७९ ब्रह्मेशय ८० पद्मेशय ८१ सर्वेश्वर ८२ बिष्वक्सेन ८३ त्वज्जगदन्वय ८४ त्वज्जगत्प्रकृतिः ८५ त्वमसिराज्यं ८६ बडवामुखोग्निः ८७ त्वमाहुतिः ८८ त्वंसारथिः ८९ त्वदिङ्मणिः९० त्वम्बषट्कारः ९१ त्वमोङ्कारः ९२ त्वंमनः ९३ त्वंचंद्रमा९४ त्वंचक्षुराज्यं ९५ त्वंदिशांगजः ९६ हयशिर९७प्रथमत्रिशौपर्ण वर्णधरः ९८ पंचाग्ने ९९ त्रिणानितेक१००षडंगबिधान१०१ प्राग्ज्योतिष१०२ ज्येष्ठामग१०३मासिकव्रतधर१०४ अथर्वशिर१०५पंचमहाकल्प१०६फेणपाचार्य१०७बालखिल्य१०८ बैखानस १०९ अभग्नयोग११० अभग्न परिसंख्यान १११ युगादे ११२ युगमध्य११३ युगनिधन११४ आखंडल ११५ प्राचीनगर्भ ११६ कौशिक ११७ प्ररष्टुत ११८पुरुहूत११९ बिश्वकृत १२० बिश्वरूप १२१ अनंतगते १२२ अनंतभोग १२३ अनंत १२४ अबध्य१२५ अव्यक्तमध्य १२६अव्यक्त निधन १२७ व्रतावास १२८ समुद्राधिवास १२९ यशोवास १३० तपोवास १३१ लक्ष्म्यावास १३२ बिद्यावास १३३ कीर्त्यावास १३४ श्रीनिवास१३५ सर्ववास १३६वासुदेव १३७ सर्वछंदक १३८ हरिहय १३९ हरिमेध्य१४०महायज्ञभागहर १४१ वरप्रद १४२ सुखप्रद १४३ धनप्रद १४४ हरिमेध्य १४५ यम १४६ नियम १४७ महानियम१४८कृच्छ्र १४९अतिकृच्छ्र१५०महाकृच्छ्र१५१सर्वकृच्छ्र१५२नियमधर १५३ निवर्त्तभ्रम १५४ प्रबचनग १५५ पृश्निगर्भ १५६ प्र-

कृति १५७ प्रवृत्तवेदक्रिय १५८ अज १५९ सर्वमते १६० सर्वदर्शिन १६१ अग्राह्य १६२ अचल १६३ पवित्र १६४ महापवित्र १६५ हिरण्मय १६६ वृहत् १६७ अप्रतर्क्य १६८ अविज्ञेय १६९ ब्रह्माग्रज १७० प्रजासर्गकर १७१ प्रजानिधनकर १७२ महामायाधर १७३ चित्रशिखंडिन १७४ वरप्रद १७५ पुरोडासभागहर १७६ गतस्वर १७७ छिन्नकृष्ण १७८ छिन्नसंशय १७९ सर्वतोवृत १८० निवृत्तरूप १८१ ब्राह्मणप्रिय १८२ विश्वमूर्ते १८३ महामूर्ते १८४ बान्धव १८५ भक्तवत्सल १८६ ब्रह्मण्य १८७ ॥ दोहा ॥ नारद कृतयह स्तव सुनि होय प्रसन्नरमेश । दर्शन श्रीप्रभु देतभे धारिके रूप विशे-श ॥ शीश चक्षु अरु उदरपद धारण किये अनेक । जपतप्रणव वेदहि पढ़त तेजोमय सविवेक ॥ चरणाकुलक ॥ नारद प्रभुको दर्शनकरिकै । नमस्कार कीन्हींमुद धरिकै ॥ नारदसोंप्रभुऐसी बानी । कहतभये मधुराई सानी ॥ एकद्वित त्रित ऋषि मुदछाये । एकसमय में इत हे आये ॥ तिनहूं को न दरशभो मेरो । बिना भक्तिके भाव घनेरो ॥ ममपदमें मनरहत तिहारो । याते दर्शन भयो हमारो ॥यह सुद्वीपके वासी जेहैं । मेरेही बपुजानो तेहैं ॥ मनमें इन्हें हमेशे ध्यावहु । बहुबिधि इनके गुणको गावहु ॥ इच्छाहोय जौन वर मांगो । हौं प्रसन्न आनँद सों पागो ॥ नारदउवाच ॥ शम दम साधनादि को आछो । आजुहि भो फल दुखभो पाछो ॥ और कहा बर तव दर्शन शम । ताहिनाथ गुणि अब मांगें हम ॥ तदनु कहतभे इमि जग नायक । श्री परमे-श्वर आनँद दायक ॥ इन्द्रियरोंकि मोहिं जे ध्यावैं । तिनके निकट विघ्न नहिं आवैं ॥ अब तुमजाहु इहांते नारद । मोसु भक्तुम परम बिशारद ॥ भीष्मउवाच ॥ अव्यय अच्युतनिति बर नामी। सोइकृष्ण जानु जगस्वामी ॥ औरन कोऊ इनकेआगे। यहनिश्चय धारहु अनुरागे ॥ नारायणउवाच ॥ मैं माया बिरची तू

याते । मोहिं लखत तनु लखतो नाते ॥ नारद यह मनमें न बि-
चारो । मैंमाधवको रूप निहारो ॥ दोहा ॥ मोहींते ब्रह्मा भये रचत
चराचर जौन । मम ललाटके क्रोधहे भये चन्द्रतप भौन ॥ द-
क्षिण पार्श्वसे रहत तू मेरे अरु बास । पार्श्वमाहिं आदित्य है
द्वादश रहतसधाम ॥ चरणाकुलक ॥ अष्टसुबसु रहत नितिआगे ।
पीछे रहत दस्र मुदपागे ॥ सर्बप्रजापति सप्तसुमुनि बर । बेद
सर्ब अरु यज्ञसुमुद कर ॥ ओषधि तपयम नियम सुनेते । मेरे
निकटलेखु सबतेते ॥ अष्टसिद्धि मेरेतट देखो । बेदमातु गायत्री
पेखो ॥ रमासुभानीकीरतिनीकी । मेरे रहत सदाहि नजीकी ॥
सरितासरअरु सिन्धुसुढारे । चारि पितरगण निकट हमारे ॥
हमहिंपिता सुरदेवन केरे । मोहिं गुणतहैं सुमुनि बड़ेरे ॥ मम
बिरधो ब्रह्मासोमेरी । पूजाकीन्हीं सबिधि घनेरी ॥ ह्वै प्रसन्न मैं
येबर दीन्हें । ताके भक्तिभावको चीन्हें ॥ कल्पआदि में मोसुत
ह्वैहौ । लोकाध्यक्ष होयमुद बैहौ ॥ तवकृत मर्य्यादामें चरिकै ।
सबहि बताश उलंघन करिकै ॥ बर लहिबेकी इच्छा जिनको ।
कैहैं तुम बरदेहौ तिनको ॥ सुरअरु असुर पितर ऋषिजेते ।
तव उपासना करिहैं तेते ॥ सुर काजै अवतार धरैंगे । हमजब
तिनमें दुःख परैंगे ॥ यह बरबर ब्रह्माको दैकै । रहते भये निवृत
हमह्वैकै॥सर्वधर्मते पर अतिजानो । निवृतिहिऔर नहीं अनु-
मानो ॥ निवृत भयेते आनँद सेती । रहतनलहत खेदताजेती ॥
दोहा ॥ निवृति माहिं तत्परभये बर आचार्य्य अनेक । करत प्रशं-
सा कपिल की गुणततिहि सबिबेक ॥ प्राप्त निवृतिको होयके ह्वै
कै मूर्त्ति अमान । यहि उत्तर दिशिमें रहत नारद सुऋषि सुजा-
न ॥ योगशास्त्रमें योग सों प्राप्त होनकी जौन । गतिसो मैंहींहों
परम नारद मुनि तपभौन ॥ सहस चौकड़ी के उतै चराचरहि
करिलीन । आत्मामें मैंरहोंगो एकाकी सुप्रवीन ॥ चरणाकुलक ॥
फिरि मायासों रचिहौं जगतै । बिषयीगण जामें हैं पगतै ॥ जो

अनिरुद्ध नामहै मेरो । मूरतिनाभि तेसु तिहि केरो ॥ होत कमल है ब्रह्मा ताते । होतभूत सब भाषतभाते ॥ रबि जिमि उदय अस्तको पावै । जानो तिमिहिं जगत के भावै ॥ मैंबराह को रूप धरौंगो । जलते भूउद्धार करौंगो ॥ हिरण्याक्ष को बधिकै बलसों । देवहि भरिहौं मोद अचलसों ॥ धरिनृसिंह बपुहिरण्यकश्यपुहि । हरिहौं देवतानके रिपुहि ॥ बलिसु बिरोचनको सुत ह्वै है । छीनि राज्यसुरपति सुखगै है ॥ अदिति माहिं कश्यपसों ह्वैकै । मैं छलिताहि मोदसों भैकै ॥ राज्यलेय सुरपतिको देहौं । वाको मैंपातालपठैहौं ॥ परशुरामह्वैकै त्रेता में । हरिहौं क्षत्रिन अरिजेतामें ॥ त्रेतायुग अरुयुग द्वापरकी । सन्धिमाहिं हनिबे सुरपरकी ॥ फिरि मैंजो दशरथसुत ह्वैहौं ॥ भालुकीश गणको सँगलैहौं ॥ सहसेना रावणको हनिहौं । लोक लोकमें निजयश तनिहौं ॥ द्वापरकलिकी सन्धीमाहीं । करिबे काज कंसकी नाहीं ॥ मथुरामें अवतारधरौंगो । दानवानके जूह दरौंगो ॥ द्वारावतिमें बास करौंगो । नरकासुरके प्राण हरौंगो ॥ तिमिहीं मुरपीठहि मारौंगो । देवनके दुखको टारौंगो ॥ दोहा ॥ प्राग्ज्योतिषपुरसों सुधनलै दानवगण भूरि । हतिकै द्वारावतीमें सोधन देहौंपूरि ॥ बलिसुत बाणासुरहि मैं हतिहौं करिसंग्राम ॥ तदनु शौभबासीनको हतिहौं बलकै धाम ॥ चरणाकुलक ॥ कालयवन ह्वै है रणवाको ॥ ह्वैहै मोहीं सों बधताको ॥ जरासन्ध नृपगण बश करि है । सोऊ मोमतिहीसों मरिहै ॥ शिशुपालहि हनिहौं मखमाहीं । धर्म नृपति के नृपगण पाहीं ॥ अर्जुन एक सहाईह्वै है । मेरो सो भुवमेंयश गैहै ॥ धर्म नृपहि बहुभ्रातन श्रीकै । थपिहौं फेरि राज्य अपनी कै ॥ पार्थहि हमहिं कहैंगे ऐसे । जनइन सों जयलहि हैं कैसे ॥ नर नारायण बरु ऋषि येहैं । लोकनमें इनके समकै हैं ॥ दुष्ट क्षत्रियनको ये नाशैं । अर्थ साधु के सुयश प्रकाशैं ॥ हरिकै भार भूरिबसुधाको । या-

दव सहित द्वारिका ताको ॥ करिहौं घोरप्रलय मैंनारद । कह्यो तुम्हैं गुण भक्ति बिशारद ॥ हंसकूर्म अरुमत्स्यसुभावन । अरु बाराह नृसिंह सुहावन ॥ अरु भृगुराम रामदशरथसुत । बासुदेवकल्की बहुगुणयुत । ये दश हैं अवतार हमारे । भक्तनके भय भंजन वारे । तिहि अवतार कार्यको करिकै । रहत फेरि पूरबगति धरिकै ॥ दर्शनभयो तोहिंमम जैसे । ब्रह्माकोहु भयो नहिंतैसे ॥ भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ इमिकहि नारदको सुप्रभु परमेश्वर भगवान । नारदके देखतभये तहँहीं अंतर्द्धान ॥ बदरीआश्रम को गये नारदहू सानंद । भगवत कथिता कथामें मनलगाय निर्द्वंद ॥ चरणाकुलक ॥ जाय सुऋषि नारद ब्रह्मासों । कही कथा यह मोदमहासों ॥ सिद्धगणनसों कही बिधाता । सिद्धन सोय कथा अवदाता ॥ कहीभानुसों हर्षित ह्वैकै । भानुकही बहुमुदसों भैकै ॥ साठिसहस्त्र बाल्यखिल्यनकों । बाल्यखिल्य करि मोदित मनको ॥ कही सुरनसों सुरन सुठानी । कही पितर गणसों सुखसानी ॥ कहीसु पितरन मोसु पितासों । मोसों तिन यह मधुर सुधासों ॥ मैं तुमसों यह कही सुढारी । हरिकी कथा महा सुखकारी ॥ जिन जिन कथा सुनी यह नीकी । तेते पूजा करत हरीकी ॥ जो जन भक्त कृष्णको नाहीं । यह न कथा कहिये तिहिपाहीं ॥ पूरब उपाख्यान मैं जेते । कहे नहीं याकीसम तेते । सिन्धुहि सुमिलि सुरासुर जैसे । मथिकै अमृत निकारौ तैसे ॥ यह इतिहास निकारौं नीके । मथिपुराण सब सुमति घनीके ॥ पढ़िहैं सुनिहैं जोजन याको । करि मनथिर तनिकै मेधा को ॥ श्वेतद्वीप माहिंसो ह्वैकै । प्रापत महामोदसों भैकै ॥ लीनानित्य नारायण माहीं । ह्वैहै यामें संशय नाहीं ॥ शुद्ध ज्ञानकी इच्छा करिकै । जो जन पढ़ै हैं मनको धरिकै ॥ सोवर चारु ज्ञानको पैहैं । नहिं अज्ञान कबहुं नगिचैहैं ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ उक्ता ॥ सुनिकै यहआख्यान । धर्मराजमतिमान ॥ श्रीहरिमाहिं बिभात ।

तत्पर भये सज्ञात ॥ सूतउवाच ॥ दोहा ॥ बैशम्पायनसों सुने यह इतिहास अनूप । सबिधि हरिहि पूजतभयो जनमेजयबरभूप ॥ फिरि मुनिसों ऐसे कह्यो परमेश्वरके नाम । फेरिकहौ तुम प्रीति सों सहनिरुक्ति अभिराम ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ अर्जुनसों निजनाम बर सहबिरुक्ति जिहिभाय । कहेपूर्ब हरिकहतहौं तिमि सुनिये नरराय ॥ अर्जुनउवाच ॥कहुनिरुक्तनिज नामको मोकोआप मुरारि । और न कोऊ कहिसकत मति महानबिस्तारि ॥ भगवानुवाच श्रुति अरुशास्त्र पुराणमें मेरेनाम अनेक । कहे ऋषिन मतिबर महत तेजोमय सबिबेक ॥ तिनमें कर्मजहैं किते किते गौणहैं नाम । ते तुमसों मैं कहतहौं धीरपार्थ मति धाम ॥ नारायण परमातमा बिश्वयोनि भगवान । अच्युत अव्यय सगुण हरि निर्गुण आनँदवान ॥ इनआदिक बहु नामहैं करिकै तिनकोजाप । पाप रहितजन होतहैं दूरिहोत त्रयताप ॥ मोसों अरु हरसों न कछु भेदजानु हेपार्थ । होयरहे हैं हमद्विधा एकहिजानुयथार्थ ॥ बरदीबेके योग्य सुनु हमैं न कोऊ और । बरलीबेको हम द्विधा भये शूर शिरमौर ॥ तुमसर्बोपरि प्रभुतुम्हें है बरसों काकाम । जोकछु इमितो कहतहौं तुम्हैं अत्रबलधाम ॥ बरकी होतीप्रवृति किमि जो हमबर नहिं लेत । द्विधा भये इहि हेतुहम जानौबुद्धिनिकेत ॥ बरवै ॥ नारानाम सलिलको सो मम ऐन । नारायण मोयाते नामसचैन॥तोमर ॥ सब जीवन में बास । है मेरोमतिरास॥ बासुदेवभो नाम । यातेमो अभिराम ॥ दोहा॥ सब जीवनमैं व्यातिहैं मेरी याते बिष्णु । नाम भयोबिख्यात है जगत माहिं सुनु कृष्णु ॥ प्रश्नकहावे श्रुति अमृत जलते गर्भस्थान । हैमेरे याते भयो पृश्निगर्भ अबिधान ॥ त्रित ऋषिको यक समयमें एकत द्वितकरिक्रोध । हुतोगिरायो कूपमें जैसमहा अबोध ॥ पृश्निगर्भ को औरऋषि कियोजायसबिधान । ताते नष्टभयोत्रित निकसो समुद सुजान ॥ पृश्निगर्भ केनामको जैसोफल अभिराम । सब

नामनको जानुतू तैसोईफलमास ॥बरवै॥ गईधरणिमें जानीयाते नाम ।भोगोविंद हमारोबरबलधाम ॥दोहा॥ भयेकर्मसंयोगते मेरे नाम अनेक । तिनके उत्तमफलनको जानतहैं सविवेक ॥ कही निरुक्ति स्वनामकी मैंतोसों हेपार्थ । कीर्त्तन किये ऋषीनके लखिके कर्म यथार्थ ॥ भूमिलोक गोलोक अरु ब्रह्मलोकमेंधीर । फिरत रहतहौं पार्थसुनु बहुबिधि धारि शरीर॥रुद्रचलतहैंसमर में तेरेरथके अग्र । मैंरक्षाहौं करततुम याते मारि समग्र ॥ बर बैरिनके वृन्दसों पाईजीति अनूप । भोसब कौरवगणनको रुद्र कालके रूप ॥ तैंने मारेरुद्रके मारे सुभट प्रचण्ड । यातेरुद्रहि पूजितू धरिकै भक्ति अखण्ड ॥

इतिमहाभारतेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेत्रयोविंशाधिकशततमोऽध्यायः १२३॥

शौनकउवाच ॥ दोहा ॥ कह्योमहतआख्यानते भोसोंसूतसुजान ।सो सुनिकै सब मुनिनको अचरज भयो महान ॥ नारायण की सुनि कथा जो जनको फलहोत । सब तीर्थनके स्नानते सोनहिं करत उदोत ॥ दुखसों लखिबे योग्यजो देव ऋषिन सों सर्व । नारद श्वेतद्वीप में सो हरि लख्यो अखर्व ॥ देखिसकत नहिं नारदहु गयेहु अनेकन बर्ष । नारायणहीकरि कृपा दीन्हों अपनोदर्श ॥ बासी श्वेतद्वीपके तासु नाम अनिरुद्ध । ऐसे नारायणहि लखि नारद फेरि प्रवुद्ध ॥ नर नारायणको लखत बदरी बनहि पयान। कीन्होंकारण तासु तुम हमको कहौसुजान ॥ सूतउवाच ॥ रामगीती ॥ इमि पितामह के पितामहको भये बूझत भूप । बरयज्ञ थलमें प्रज्ञ जनमेजय सुधीर अनूप॥ भगवानश्री अनिरुद्ध केरे गणत बचनहि तज्ञ । तिनकहा कीन्हों कहो आगे अहो ऋषिबर प्रज्ञ ॥ अरु किते बासर बसे बदरी बिपिन के अवदात । तुम धन्य मोको कियो यह सु अनन्य की कहिबात ॥ अति बर बिशारद कहेनारदसों कहा तिन बैन । नर औ सुनारायण महात्मा महा आनन्द ऐन ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ नारद

सों जिमि कहतभे नर नारायण अत्र । तिमि मैं तुम सों कहत हौं सुनिये भूपति अत्र ॥ व्यासउवाच ॥ अरिल ॥ चलिकै श्वेतद्वीपसों नारद । कथाधारि हिय माहिं बिशारद ॥ भये सुकंचन गिरिपै आवत । तदनु सुनरनारायण भावत ॥ गये परम आनँदसों पागत । कीर्त्तनमें हरिके अनुरागत ॥ नरनारायणको तहँ देखत । भयो आपनो भाग्य सुलेखत ॥ पूजाकीन्हीं नरनारायन । नारद कीसुप्रेम के भायन ॥ तिन्हैं देखियह भयो बिचारत । नारदमुनि आनँद बिस्तारत ॥ दोहा ॥ जैसे श्वेतद्वीपमें देखे हे अभिराम । तैसेहीयेहैं महा तेजोमय तपधाम ॥ अरिल ॥ यहबिचारिकै करि सुप्रदक्षिण । बैठेआसनपर सुबिचक्षण ॥ घृतकी आहुति पाय अग्नि जिमि । शोभित होतभये तिनहूं तिमि ॥ बोलतभे तहँ तदनु नरायण । नारद मुनिके प्रीति परायण ॥ देखी इत ये हमरी सूरति । श्वेतद्वीपमें तुम बर मूरति ॥ नारदउवाच ॥ देखे श्वेतद्वीपके भीतर । तुमकोमैं तुमहीं बासीबर ॥ श्वेतद्वीपबासिहि अवरेखत । तुमको निरखि तिन्हैंहौं देखत ॥ दोहा ॥ तुम बिन तीनों लोकमें तेजस्वीको और । कीर्त्तिमान श्रीमानबर बीरधीर शिरमौर ॥ अरिल ॥ इन्द्रियबिन तहँके बासीबर । धरेभक्ति तब अति उत्तम तर ॥ तब अनिरुद्धनामजो मूरति । तासु हियेमें धरिकै धूरति ॥ सबिधि सुपूजन करत हमेशहि । तासों रहतप्रसन्न बिशेषहि ॥ एकपावँसों ह्वैकरि ठाढ़े । श्री अनिरुद्ध गहेपण गाढ़े ॥ ऊर्द्ध्वबाहु वेदीपर वेदहि । पढ़त सहित अंगनके भेदहि ॥ ब्रह्मादिक सब तिनको पूजत । चरणनके सुस्तव को कूजत ॥ दोहा ॥ पूजन भक्तनको कियो सोहै शिरसो लेत । ताको प्यारो भक्तसम और न जगत निकेत ॥ जयकरी ॥ तिनको भेज्यो मैंतव पास । आयोहौं धरिमोद प्रकास ॥ रहि हौं अत्रहि नाथसदैव । अबमोहिं और कामना नैव ॥

इतिशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेचतुर्विंशाधिकशततमोऽध्यायः १२४ ॥

नारायणउवाच ॥ दोहा ॥ ब्रह्मा तिन्हैं न लखि सकैं तिन को दर्शन कीन। तुमयाते ऋषिधन्यहौ नारद परम प्रवीन॥ तिनको प्यारो भक्तसम दूजो कोऊ नाहिं। तुमसुभक्त याते दयोदर्शन तिनहृवै पाहिं ॥ जयकरी ॥ श्वेतद्वीप तपकेरो थान। तामें महातेज भगवान ॥ हमबिन ताहिजानौ और। धन्यसुनारद मुनि शिरमौर॥ सहस सूर्य्यकी शोभातत्र। श्रीअनिरुद्धरहतहैं यत्र ॥ भेउत्पन्न तिनहिंतेसर्ब। जातुयेंच भूतादि अखर्ब ॥ प्रथमतेज देख्योहौ जौन। भक्तिपसारिसुऋषि तपभौन॥ ताहीते प्रगटे अनिरुद्ध। ताहीते प्रद्युम्न प्रबुद्ध ॥ संकर्षण ताहीते जानु। बासुदेव ताहीते मानु ॥ हम उत्पन्न धर्मतेहोय। बदरीवनको उत्तमजोय ॥ करत तपस्या सहित बिधान। नारद मुनिवरबिज्ञ महान॥ दोहा ॥ हम तुमको देखेहुते श्वेतद्वीप के माहिं। जानतहौं संकल्प तव अरु आगममममपाहिं ॥ जानत भूत भविष्यअरु बर्त्तमान हमबिप्र। बदरीबनमें रहतहे होतिसिद्धि जहँ क्षिप्र॥ कह्यो जो श्वेतद्वीपमें देवदेव सोसर्ब। जानतहैं हममुनि महातेज सुविज्ञअखर्ब॥ बैशम्पायनउवाच ॥ नारायणके बचन सुनियेनारद अभिराम। नारायणमें होतभे तत्पर गुरु गुणधाम ॥ सहित बिधान सुमंत्र जपिकरि कैध्यानसुढार। बदरीबनमें रहतभो निर्जर बर्ष हजार ॥

इतिमहाभारतदर्पणेशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेपंचविंशाधिकशततमोऽध्यायः ॥

बैशंपायनउवाच ॥ दोहा ॥ नारद कौनहुकालमें देव पितरके कार्य। करते हुते बिधानसह बदरीबनमें आर्य ॥ नारायण लखि कार्य सो कहतभये इमि बैन। नारद तुम कहु कौनकी पूजा करत सचैन॥ चरणाकुलक ॥ है फलको यहि पूजा केरो। करत सबिधि धरि प्रेम घनेरो॥ नारदउवाच ॥ देव पितर परमेश्वरहीहै। पूजत तिनहीं कीरतिही है॥ यहगुणि देव पितर मैं पूजत। सहित बिधान सुनामहि कूजत ॥ प्रथम सुकुशाबिछाय महीमें। तीनपिण्ड दीजै तिनहीमें ॥ तिनमें पूजा पितरन केरो। करत सबिधि धरि प्रीति

घनेरो ॥ पितर सुपिण्ड संज्ञभे कैसे । कहोनाथ पूरब भे जैसे ॥ नारायणउवाच ॥ एकसमयमें नष्ट भईहै । धरणिडूबि पातालगई है॥ दोहा ॥ कियो तासों उद्धार हौं परमेश्वर सुबिशेष । शूकर बपुको धारिकै तेजसभरो बिशेष ॥ पूर्ब जहां धरणी हुती धरिदीन्हीं हरितत्र ॥ डाढ़माहिं लागेहुते पिण्डा तिनहिं पबित्र ॥ चरणाकुलक॥ तहां कालमध्याह्न निहारयो । पितरकार्य करनो सुबिचारयो ॥ कुशधरि तिनपै पिण्डा धरिकै । पितरकार्य कीन्हों बिधि करिकै ॥ गरमीभई सु तिनके तनमें । तिल उत्पन्नभये तिहि क्षनमें ॥ ते चढ़ाय पिण्डनपै दापी । लोकनमें मर्य्यादाथापी ॥ तदनु करत भे ऐसीबानी । श्रीबाराहरूप सुखदानी ॥ हमहींपिता बिधाता के हैं । तिनने रचे लोकसब जेहैं॥पितर सुकार्य होयगो कैसे । यहबिचार कीन्हों तिन जैसे ॥ तिनहीं चारु डाढ़ते भाई । तीनपिण्ड काढ़िथिरतापाई ॥ दक्षिण दिशि तातेतुमजानो । तेई पितर और न अनुमानो॥ दोहा ॥ मेरेबिरचे कब्यभुक पिण्डमूर्त्तिधर पर्म । लोकमाहिं ह्वैकै पितर पूजालहो सुधर्म ॥ चरणादोहा ॥ पिता पितामह अरु प्रपितामह तीनहुं पिण्डन माहिं । थिरते हमहीं हैं जानो तुम यामेंसंशय नाहिं ॥ मोते लोकअधिक नहिं याते पूजों काहि । कोममपिता सुलोकमें मोते होत सदाहि ॥ अरिल ॥ मैंहौंपितापितामहसबकर । ऐसे कहिकै शूकर बपुधर ॥ पिण्डदानदै बिधिको थापत । भये अदर्शन ताको प्रापत ॥ दोहा ॥ पितर पिण्डसंज्ञिकभये तिनके कीन्हेदक्ष । मर्यादा बाराहकी बांधी यह परतक्ष ॥ पितरदेव गुरु अतिथि गो द्विजहि सुपूजत जौन । पूजनते परमात्माहि जानोतुम बुधिभौन ॥ चरणाकुलक ॥ नरनारायणकी यहबानी । सुनिकरिकै नारदबिज्ञानी ॥ भगवतकी सुनि कथा हुलसिकै । बर्षहजार तहांसो बसिकै ॥ गये हिमालय को ऋषि चायन । लगे करनतप नरनारायन ॥ सुनिकै यह बरकथा रसाला । तुमहुं पवित्रभये भूपाला ॥ द्वैष

गावत हैं सबज्ञानी। मैं नृप नीकी बिधिसों जानी॥ ताके बिनर नरकमें डूबैं। नाना बिधि लहि दुखसों ऊबैं॥ ब्यास सुऋषि बर गुरू हमारे। येसु महामति कहे सुढारे॥ दोहा॥ उनसों मैं यह श्रवण करि तुम्हें सुनायों भूप। नारायण तुम ब्यासको जानो प्रज्ञ अनूप॥ उन बिन भारतको रचै धर्म्मकहैको और। करहु यथा संकल्प तुम यज्ञ भूप शिरमौर॥ शौतिरुवाच॥ चरणाकुलक॥ पारीक्षित यहकथा श्रवणके। मनको मखको और गमनके॥ मख पूरणकी क्रिया सुढारी। करतभये नृपशुभ मगचारी॥ इतिमहाभारतेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेपड्विंशाधिकशततमोऽध्यायः१२६॥

शौनकउवाच॥दोहा॥ यह उत्तम आख्यान हम तुमसों सुन्यो सनेह। हयग्रीवकी अब कथा कहिये तुम बरदेह॥ शौतिरुवाच॥ यहै कथापूछी हुती श्रीजन्मेजय भूप। व्यास बिशारद सुऋषि सों सुनी परम सुखरूप॥ जन्मेजयउवाच॥ धार्योबपु हयग्रीवको नारायण किहिकाज। तुम हमको समुझायके कहिये बुध शिरताज॥ बैशम्पायनउबाच॥ चरणाकुलक॥ नृप जन्मेजयकी यहबानी। सुनि बोले द्वैपायन ज्ञानी॥ महाप्रलय जब भो नरराई। तब श्रीनारायण जलशाई॥ तासु नाभिते कमल सुढारो। होतो भयो सहस दलवारो॥ ताते होतो भयो बिधाता। संपूरण बेदन को ज्ञाता॥ कमल पत्रमें तिनतहँ देखी। दोयबुन्द तेजससों भेखी॥ यक मधुरंग होतभो तासो। मधुभो भरो तेजमय भासो॥ कठिनहुती तासों भो कैटभ। अतिहि कराल बिशाल महाप्रभ॥ तिन सुबेदब्रह्मते छीने। उरादिखायके व्याकुलकीने॥ सबबिधि हरिकी सुस्तुति करिकै। कहत भये इमि दुखसों भरिकै॥ बिन बेदन किमि सृष्टि बनाऊं। मैं हेनाथ परम दुख पाऊं॥ तुम अभिमानिन केहौ नाशक। दीननके हौ मोद प्रकाशक॥ तुमहि धर्मके थापनवारे। उत्थापन कै अघको भारे॥ दोहा॥ नारायण यह स्तवन सुनि उठे नींदको त्यागि। बेदनको

ल्यावत भये उदित क्रुधसों पागि ॥ चरणाकुलक ॥ हयग्रीव बपु तिनकहँ धार्‍यो । अपनो परम तेज बिस्तार्‍यो ॥ करत प्रवेश भये महिमाहीं । पहुंचनको तिन दोउन पाहीं ॥ सुर उदगीथहि तहां उचरिकै । तिहिसों तिनते बेदहि हरिकै ॥ तिनाहिं रसातल माहिं गिराये । बिधिहि वेददै मुदसों छाये ॥ तदनु धरतभे पूरब रूपै । करि यह उत्तमकार्य अनूपै ॥ प्रभु ईशान कोणमें राख्यो । तिहि बपुको द्वैपायन भाख्यो ॥ हयग्रीवभे बेद निकेता । करन बिधानहि मोद समेता ॥ फेरि शैनमें पागे स्वामी । लोकनके नायक खगगामी ॥ ते दोऊ अति क्रुधसोंपागे । आय वेदथल देखन लागे ॥ जब तिन वेद लखेतहँ नाहीं । खोजन तबलागे महिमाहीं ॥ तिन दोउन नारायण देखे । देखत महाहास्यसों भेखे ॥ दोहा ॥ तदनु कहत ऐसे भये बेद हमारे जौन । हरे होहिंगे इनहिं ने इन बिन हैं इत कौन ॥ कोहै यह है कौनको सोवै कितसोंआय । ऐसे कहिकै वैन बहु तिन प्रभुदिये जगाय ॥ चरणाकुलक ॥ रण अभिलाषी तिनको जाने । आपहु रण बिचार मन आने ॥ लरि तिनसों रणमें बधिडारे । बूह्माके सब शोच निकारे ॥ लोक रचनकी आज्ञा चायन । दैभे अन्तर्द्धान नरा-यन ॥ बूह्मा वेदहि प्रापत ह्वै कै । बिरचे लोक मोदसों भैकै ॥ श्री हरि प्रवृति धर्मके काजे । हयग्रीव बपु धारि दराजे ॥ दोऊ दानवको बध कीन्हों बूह्माको अति आनँद दीन्हों ॥ कथा सुने यह आनँद मूलै । पढ़ोहोयसो कबहुं न भूलै ॥ दोहा ॥ हयग्रीव की जो कथा पूछी हो तुम भूप । सोहम तुमसों सब कही पावन करणि अनूप ॥ कार्य करनको बिष्णु प्रभु जैसो मनमें होय । तैसो वपुधारण करत नृप मायासों मोय ॥ वेदशास्त्र तप योग को है स्थान हयग्रीव । जानो पारीक्षित नृपति प्रवृत धर्मको नीव ॥ प्रवृत धर्म बिख्यात जो नारायण बपु जानि । नारायण के रूपही महाभूतहू मानि ॥ अरु शब्दादिकहू गुणो नारायण

के रूप । मन अरु दश इन्द्रियहु नृप सोई जानु अनूप ॥ कर्ता चेष्टा कर्म्म अरु कर्णदेव आधार । नारायणके रूपही जानो भू भर्तार ॥ चरणादोहा ॥ तत्त्व जानिबेकीहैजिनकी इच्छाते जनसर्व । नारायणही सबको जानै मति बिस्तारि अखर्ब ॥ वेदकार्य पितृ कार्य अरु परम तपस्या दान । परमेश्वरही जानुतू इन सबको सुस्थान ॥ जानत परम सुपुरुषको सुऋषि सुविज्ञमहान । वाके गमनागमनको औरन को नहिं ज्ञान ॥

इतिमहाभारतेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेसतबिंशाधिकशततमोध्यायः १२७ ॥

जन्मेजयउवाच॥ दोहा ॥ अति प्रसन्नता लहत हरि जाने तिनको एक । ग्रहण करत सोदान जो कीन्हींसहित विबेक ॥ पाप पुण्य सों रहित ते पावैं पद निर्बान । ऐसे तुम ऋषि कहतहौ मति बिस्तारि महान ॥ जे त्रिबर्गको तजत ते हरिको प्रापतहोत । पढ़त वेद उपनिषद सह जे मति को करि द्योत ॥ तिनसों गतिजानत अधिक हरिभक्तन को प्रज्ञ । तिन सम कोउ न जगतमें स्वच्छ मोक्ष धर्मज्ञ ॥ केवल हरिके भक्तको कैसोहै आ-चर्ण । कौन कालमें करतहै कहिये संशय हर्ण ॥ गति अरु अगति कहौ हमैं ऋषिबर सहित बिधान । ज्ञाताहू जो आपनो और न लख्यो महान ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ रणमुख भीष्मादिकन को लखिभोपार्थ उदास । तबहरि गाईगति अगति करि बिस्तार प्रकास ॥ हरिकी गाई गति अगति कही पूर्ब भूपाल । तुमसों हम विस्तार करि तनिके बुद्धि बिशाल ॥ है गतिमान उपासना धर्म कहत हैबुद्ध । पावत किये उपासना हरिको दर्शन शुद्ध ॥ अगति मानहै ज्ञानसो याते सुनो नरेश । अन्त लगावै मनहिं नाहिं ज्ञानी बुद्ध बिशेश ॥ जिनको मन एकत्र नहिं तेजन जानि सकैन ॥ कही जौनयह गति अगति पारीक्षित मतिऐन ॥ यहहि धर्म पूछतभये नारद सों नृप पार्थ । सुनते भीषम कृष्णके सुनो

भूप ज्ञानार्थ ॥ मम गुरु द्वैपायन कह्यो हों यह मोहिं क्षितीश । हरिबेको अज्ञान तम जानो याहि तमीश ॥ नारायणके बदनते जब भे ब्रह्मा होत । देव पितरके कार्यको हरिने कियो उदोत ॥ याही अतिबर धर्मसों है यह धर्म अखण्ड । फेणि परिष यहधर्मको जानत भये प्रचण्ड ॥ बैखानश पावत भये तिनसों यहही धर्म । पावत बैखानशन सों सोम भयो सहशर्म ॥ तदनु अन्तर्द्धान भो यह सुधर्म अवदात । तब श्रीहर के चक्षुते ब्रह्मा भयो बिभात ॥ सुनत पितामह सोमते भो यह धर्म सुढार । ब्रह्मा रुद्रहि देतभे अनुपम अमल उदार ॥ बालखिल्य गणको भये देत रुद्र यह स्वक्ष । हरि माया सों फेरिहू भोय यह अप्रतक्ष ॥ परमेश्वरके बचन ते फिरि भे ब्रह्मा होत । नारायणही तब कियो यह सुधर्मको द्योत ॥ नारायण सों लहत भे श्रीऋषि प्रज्ञ सुपर्ण । यह सुधर्मके ग्रन्थको सो ऋषि पावन कर्ण ॥ तीनबेर पढ़ते भयो याते तिनको नाम । होतभयो त्रिशुपर्ण नृप महातेजको धाम ॥ शुपर्ण ते यह धर्मको लहत भयो पवमान । तासों विघाशाशी ऋषी पावत भये सुजान ॥ बिघाशाशिन को लहत भी यह नदीश अवनीश । फेरिहु अन्तर्द्धान भो जैसे अमातमीश ॥ अब जिमि बिधिभे अवनिते तैसे सुनु भूपाल । मनमें यह भगवानके इच्छा भई बिशाल ॥ बहुबिधि की जो सृष्टिको बिरचे सहित बिलास । ऐसो यक उत्पन्न हम करैं पुरुष सहुलास ॥ ऐसे गुणतहि श्रवणते एक पुरुषभो होत । नामतासु ब्रह्मा धर्यो सर्ब गुणनको पोत ॥ ब्रह्मासों तहँ कहतभे इमि परमेश्वर बैन । प्रजा करौ बहुभांति की तुम उत्पन्न सचैन ॥ सातवत धर्महि ग्रहण करि अतिबर मोसों तात । करु सतयुगकी थापना तासों अति अवदात ॥ नमस्कार परमेश्वरहि करिकै ब्रह्मा तत्र । ग्रहणकियो अति हर्षसों धर्म सुपर्म पवित्र ॥ ब्रह्माको उपदेश करि तिहि सुधर्मको भूप । जातभये तम पारको जो अव्यक्त अनूप ॥ तदनु

सुथावर जंगमहि रचत भयो लोकेश। सतयुग की करिप्रवृत्ति को थाप्यो धर्म बिशेश॥ लोकन में सो प्रवृत भो सात्वत धर्म सुढार। पूजत भो तिहि धर्मसों हरिहि विश्व करतार॥ धर्म प्रतिष्ठाहेतु विधि स्वारोचिष मनुताहि। सात्वतभयो पढ़ावतो सहविधान अवगाहि॥ स्वारोचिष निज पुत्रको भयो पढ़ावत सोय। तासु शंखपद नामहो पढ़ो सुतिहि सुख भोय॥ भयो पढ़ावत शंखपद निज पुत्रहि अभिराम। ताको सुवरण नाम हो महा तेजको धाम॥ त्रेतायुगमें धर्मसों फिरिभो अन्तर्द्धान। बहुत काललों व्यक्त नहिं होतो भयो सुजान॥ परम भागवत धर्ममें कह्यों पूर्व हो जौन। ताहीकी यहबारता जानु विज्ञ क्षिति-रौन॥ हरिनासा ते होतभो जब फिरि श्री लोकेश। तबब्रह्माके देखते आपुहि श्री कमलेश॥ सनत्कुमारहि देतभे परम भाग-वतधर्म। पायो सनत्कुमारते वीरणप्रज्ञ सशर्म॥ रैभ्यसुमुनि को देतभो बीरण विज्ञ बिशाल। कुक्षिनाम सुतकोदयो रैभ्यसुमुनि महिपाल॥ फिरिहू अन्तर्द्धानभो स्वच्छ भागवतधर्म। गुप्तभयो बहुकाललों रह्यो तौन अतिपर्म॥ फिरि हरि अण्डज विधिभये तब फिरि सों वरधर्म। नारायणके बदनते भोउत्पन्न सुधर्म॥ ग्रहणकियो बिधि तासु फिरि ताको सहित विधान। ब्रह्मासों सो पढ़तभो बर्ही सद्म सुजान॥ बर्हि सद्मसों प्राप्त भो ज्येष्ठनाम ऋषि प्रज्ञ। ज्येष्ठ सुऋषिसों लहतभो अविकम्पन नृपतज्ञ॥ फेरिहु अन्तर्द्धान भो तौन भागवत धर्म। रहत भयो बहुकाल लौं गुप्तहि सो अति पर्म॥ जब यह पद्मज जन्म भो ब्रह्मा को भूपाल। सप्तम तबहूं हरिहि यह कीन्हों प्रगटविशाल॥ ब्रह्माको सोदेतभे ब्रह्मा दक्षहि दीन। दक्ष भानुको देतभे भूपति परम प्रबीन॥ ज्येष्ठ सुवनके परमहित देतभानु यहधर्म। ज्येष्ठसुवन इक्ष्वाकुको देतभये मनुपर्म॥ वैवस्वत इक्ष्वाकुने कियो जगत विख्यात। क्षीण होयके फेरिहू यहसुधर्म अवदात॥ नारायण

को होयगो प्राप्त कछूदिन माह। हरिसों पायो धर्म यह नारदने नरनाह॥ धर्मसनातन परमयह है महानसुखदाय। शमदमवारे जननसों यह नृप कीन्होंजाय॥ हरिहीहवैक्षेत्रज्ञ नृप सबभूतन के माह। तैसीक्रीड़ा करतहैं जैसीहोती चाह॥ धर्मराज नृपको कह्यो यह सुधर्म श्रीव्यास। सुनत सुभीषमकृष्णके बहुऋषीन के पास॥ नारदने श्रीव्यास सों कह्यो सु यह बरधर्म। यासों हरिचन्द्राभये प्राप्तहोत जनपर्म॥ जन्मेजयउवाच॥ ऐसो जो यह धर्म जो और ब्रतके माहिं। जे प्रापत द्विजतेकरैं यहसुधर्म क्यों नाहिं॥ बैशम्पायनउवाच॥ होततीन बिधिकी प्रकृति देहिनकी भूपाल। सात्विकी राजसी तामसी कहत सुबुद्धि बिशाल॥ जिनकी सात्विक प्रकृतिहै ते सुकरत यह धर्म। प्रकृतिहि जानोहेतु है क्रिया करनको पर्म॥ सात्विकही जनलहतहैं यह सुधर्मअवदात। सात्विकजनको हरिहिमें प्रेमसदासरसात॥ निजइच्छा की सिधिलहै द्विज श्रीहरिको ध्याय। तृष्णा जिनकी छुटिगई तिनहिं देत हरिचाय॥ परमेश्वरकी बिनकृपा सात्विक प्रकृति मिलैन। सात्विक प्रकृति बिना सुपथ और मोक्षको हैन॥ जिनकी राजसी तामसी प्रकृति तिन्हैं भगवान। देखत नहिं तिनको लखै ब्रह्माभूप सुजान॥ लोकान्तरको लहतहैं याते ते जन सर्ब। पुरुषोत्तम भगवान की कैसे लखै अखर्ब॥ जन्मेजयउवाच॥ सात्विक सों जे रहितहैं होय प्रकृति सों लीन। ते किमि हरिको होतहैं प्रापत कह्यो प्रबीन॥ बैशम्पायनउवाच॥ पंचरात्र अरु सांख्य अरु वेदारण्यक योग। यहहि धर्म भागवत को कहत पुराने लोग॥ भक्ति मार्गको नामहै पंचरात्र अभिराम। जीवात्मा परमात्माको जिहि मेंहै मतिधाम॥ बर बिबेक तासों सुबुध सांख्य कहत हैं पर्म। वेदारण्यककहत हैं ताकोबिज्ञसशर्म॥ जीवात्मापरमात्मा तिनको जौन अभेद। तौनहोय जिहि ग्रन्थ में बिज्ञ नृपाल अखेद॥ योग सुचित्त निरोध को नामकहत

बुध लोय। हरिहि लहनको मार्गहै इनबिन और न कोय॥
महाभारतेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेअष्टविंशाधिकशततमोऽध्यायः १२८॥
जन्मेजयउवाच॥ दोहा॥ सांख्यादिक जे सर्व हैं तिनको जानो ज्ञान। होतहोत की एकहू जाने ऋषिमतिमान॥ वैशंपायनउवाच॥ नारायण के पुत्र अरु नारायणते षष्ठ। वेद निधान सुव्यासको ऋषिबर कहतसपष्ठ॥ जन्मेजयउवाच पहिले तौ तुम यह कह्यो मोको सुऋषि अमन्द। भेवशिष्ठ के शक्तिसुत तासु पराशर नन्द॥ भयेपराशरके सुवन व्याससुवेद निधान। नारायण केसुत कहतव्यासहि अवमातिमान॥ पूर्बहु भोकाजन्महौव्यास सुऋषिकोस्वच्छ। वैशम्पायनयहकहौ मोको करिसुप्रतच्छ॥ वैशम्पायनउवाच॥ एकसमय में वेद को अरु भारतकोअर्थ। अरु नारायणसों जनमिजिमिभे भूपसमर्थ॥ममगुरु श्रीमुनिव्याससों पूछो मैंसहमोद।सुनिकै मेरेप्रश्नको कहतभये सविनोद॥ आदिकालको जौन तुम पूछो यह आख्यान। तपसों जान्यो तोहिंमैं कहततौन सविधान॥ नाभिकमलते जबभयोसप्तमजन्म नरेश। ब्रह्माको तबयों कह्यो ब्रह्मासों कमलेश॥ प्रजारचौ बहुभांतिकी लहि मेरीआज्ञाहिं। सुनिब्रह्माऐसोकह्यो बुद्धिहमारेनाहिं॥ तब प्रभुअन्तर्द्धान ह्वै मतिको कियो बिचार। करतबिचारहि सुमति सों आगेभई सुढार॥ तहँमतिसों ऐसेकह्यो नारायण भगवान। लोकरचनके हेतु तू बिधिमें करु स्वस्थान॥ हरिकी आज्ञापाय मति बिधिसे कियो प्रवेश। ब्रह्मासों फिरि इमिकह्यो ह्वैकै प्रगट रमेश॥ लोकनकी रचनाकरो अब तुमसहित बिधान। इमिकहि अन्तर्द्धान भे लोकनाथ भगवान॥ सृष्टि चराचर मय सुयह विरची श्रीलोकेश। उत मनमाहिं बिचार नृप ऐसेकियो रमेश॥ राक्षस दानव सृष्टिसे ह्वैहैं बहुबलवान। तिनसोंरक्षा सृष्टिकी कीबेकाज महान॥ बाराहादिक रूप कहु धरिकै महाप्रचण्ड। करने परिहैं बध हमैं तिनको उग्रउदण्ड॥ वाणीको उच्चारतहँ

कीन्हों श्रीभगवान। ताते सारस्वत भयो होत कहामतिमान ॥ नामअपान्तर तमाभो तासु परीक्षित तात । ज्ञाता तीनहु कालको कीर्त्तिमान अवदात ॥ तासों नारायण भये ऐसे कहत सुजान। करु बिभाग तू वेदको तात महामतिमान ॥ स्वायम्भुव मनुने कियो वेदनको सु बिभाग। सो बिभागलखि हरि भये अति प्रसन्न बड़भाग ॥ तदनु सुऐसेकहतभे तासोंश्रीभगवान। और मनुनके माहिहूं इमिहीं तात सुजान ॥ कर्त्ता वेद बिभाग के हर्त्ता अघके वृन्द। भर्त्ता कीरति भुवनमें चरता ह्वैहौ नन्द ॥ आगे कलियुग आइहै तब कुरुबंशीभूप। लहिहैं अतिबिस्तारको तुमसों तात अनूप ॥ प्रापत ह्वैहै भेदको ते बिनाशके हेत। वेद बिभागहि तबहुं तुम करिहौ तात सचेत ॥ बीतराग तव सुवनसुत ह्वैहैं बर मतिमान। लहिहैं पद निर्बाणसों प्राप्तभये बरज्ञान ॥ चरणादोहा ॥ जन्म पराशर तेह्वैहै तव सत्यवतीके माहिं। ते सरिसम तिहुंलोकन माहीं ह्वैहै कोऊ नाहिं ॥ इमि कहि मोसों हरि कह्यो जाहु इहांते तात। हम तोसों दोऊ जनस कहे अत्र बिख्यात ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ सम्भव पूरब जनम को मेरे गुरुको भूप। कह्यो प्रथम अब प्रश्नको उत्तर सुनो अनूप ॥ सांख्यादिक सब ज्ञानके साधनहे भूपाल। पंचरात्र अति श्रेष्ठ है इनमें सुनु बर भाल ॥ भिन्न भिन्न आचार्य हैं सांख्यादिक के सर्ब। है बरवक्ता सांख्यको मुनि श्रीकपिल अखर्ब ॥ हिरण्यगर्भ सुयोगको है बेत्ता मतिमान। अपान्तर तमां बिज्ञबर त्रिकालज्ञ शुभज्ञान॥ बेदारण्यक के परम ते आचार्य्य अमन्द । पंचरात्र ज्ञाता हरिहि हैहे जानु नरेन्द ॥ और पाशुपत नाम यक ज्ञाता ताके सर्ब। साधन सोऊ ज्ञानको जानो भूप अखर्ब ॥ पंचरात्र को गुणतते हरिको प्रापत होत। पंचरात्रसों होत है शीघ्र ज्ञानको द्योत ॥

महाभारतेशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेएकोनत्रिंशाधिकशततमोऽध्यायः १२९ ॥

जन्मेजयउवाच ॥ दोहा ॥ बहुतपुरुष हैं की सुऋषि एकहि पुरुष अमन्द । अब यहहमको गुणिकहो तुमहो विज्ञ विलन्द ॥
वैशम्पायनउवाच ॥ पुरुष बहुत सांख्यादिके ज्ञाताहैं भूपाल । सब पुरुषनको थानइक पुरुष अनूप विशाल ॥ नाश वार्त्ता तुम सुनो करिकै मन एकत्र । श्रवण तासु करिकै कथा कोनहिंहोत पवित्र ॥ पुरुष सूक्त यह परम है वेदनमें विख्यात । चिन्तन ताको वरऋषिन कीन्हों गुणि अवदात ॥ आपुहि जात अनेक ह्वै पुरुष किये बिस्तार । बहुरिजातहै एकह्वै पुरुषनही भर्तार ॥ नाशहि पाय प्रसाद हम तासु कहत व्याख्यान । इहि प्रसंग में कहतहौं एक इतिहास सुजान ॥ तामेंहै संवादहर गिरिवर को अभिराम । क्षीरसिन्धुमें हेमछबि बैजयन्त है नाम ॥ पर्वत तामें लोकपति ब्रह्मा आपुहि एक । मन लगाय करतो हुतो थिरह्वै ब्रह्म बिबेक ॥ महादेव आवतभये अकस्मात् नृपतत्र । नभते गिरि शिरपैभये गति जिनकी सर्वत्र ॥ गिरत भये विधि पदनपै विधितब लियोउठाय । अति आनँदसों छायकै लयो हियेसों लाय ॥ आयोजो बहुकालमें सुततासों लोकेश । अति प्रसन्न बोलत भये करिकै कृपा बिशेश ॥ आयोतू बहुकालमें याते पूछततोहिं । है सुकुशल स्वाध्यायको अरु तपको कहु मोहिं ॥ रुद्रउवाच ॥ सर्व हमारे हैं कुशल तव प्रसादते तात । बहुदिनमें मोकोभयो तव दर्शन अवदात ॥ आयोमैं यहि अचलमें तवदर्शनके हेत । तुम्हें अकेले देखिभो अचरज जगत निकेत ॥ सेवित सुर अरु असुरसों ऐसो जोन स्थान । ताहि छोड़ि पर्वत कियो आलयक्यों भगवान ॥ ब्रह्मोवाच ॥ अच्युत अव्यय सर्वगति स्वामीजगको तास । कहिवेको सुविचारइत आये हम सहुलास ॥ मोको तासु स्वरूप को है नहिं पूरण ज्ञान । जितनो है तितनो कहत ताकोकरि व्याख्यान ॥ अनेकत्व एकत्व ये दोऊ उनहीं माहिं । महापुरुष वह एकही

और दूसरो नाहिं ॥ गुणधरिकै बहुहोत हैं निर्गुणह्वै कै एक । जानत हैं भगवानको इमि बुधकरि सुबिबेक ॥ जो अचिन्त्यको जानिकै भावसूक्ष्मजो चारि । तिनसे लाय समाधिको जौनरहै मुदधारि ॥ परमपुरुषकोप्राप्तसो होत होयकोशान्त । सो अचिन्त्य अव्ययनहीं मनमें जोबरदान्त ॥ अनिरुद्ध सुप्रद्युम्न अरु संकर्षण अभिराम । बासुदेव चौथेसुये भावसूक्ष्मतपधाम ॥ सत्ता जौन अचिन्त्यकी ताहि कहतहैं भाव । ताके सूक्षमरूपये चारोहैं नरराव ॥ योगमार्गसों गुणतहै योगीइमि अति स्वक्ष । ज्ञानीते परमात्माहिं एकहि जानतदक्ष ॥ जोतुमपूछ्यो हौं हमें कह्योतुम्हें हमतौन । योगसांख्यकीरीतिसों सुनोतात तपभौन॥

इतिमहाभारतशान्तिपर्बणिमोक्षधर्मेत्रिंशाधिकशततमोऽध्यायः १३० ॥

बैशंपायनउबाच ॥ दोहा ॥ शुलभाको अरु जनकको जो संबाद अनूप । अतिहि श्रेष्ठ संन्यासको तामें सुनिकेभूप ॥ महतदुःख संन्यास में गुणि करिकै मनबीच । सुखयामें अरुश्रेष्ठतर आश्रमकौन निभीच ॥ यहजाननकी लालसा करिकै बटधरणीप। पूंछत ऐसीभांतिभो गंगानन्दसमीप ॥ युधिष्ठिरउबाच ॥ अबलौं हमकोतात बहु कहेमोक्षकेधर्म । आश्रमीनको अब कहो ससुख धर्मजो पर्म ॥ भीष्मउबाच ॥ धर्म सर्ब हैं श्रेष्ठ पै जाहि न्याय सों द्रब्य । प्राप्तभयो ताकोकियो धर्मपरमहै भव्य ॥ अत्र एक इतिहास हौं तुम्हें कहतहौं भूप । इन्द्रहि पूरबजो कह्यो नारदहुतो अनूप ॥ नारदमुनि सुरराजके पासगये जबचाहि । पूछत भो तब नारदहि सों ऐसेअवगाहि ॥ तिहुं लोकनके बीचतुम घूमतहौ सर्बत्र । लख्योहोय आश्चर्य सो हमैंकहौतुमअत्र ॥ कथा सुनाई इन्द्रको ये नारदमुनि बैन । तुम्हें सुनावत हौंकथा सोई नृप बलऐन ॥

इतिमहाभारतेशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेएकात्रिंशाधिकशततमोऽध्यायः १३१॥

भीष्मउबाच ॥ दोहा॥ गंगावारे कूलपै दक्षिणके अभिराम । महा-

पद्म पुरमें हुतो ब्राह्मण यक मतिधाम॥ अत्रिवंश को सोहुतो धर्मी नृपबल गेह। बहुतपुत्र जाकेहुते श्रुतिमें किये सनेह॥ श्रेष्ठनके आचारको करतो हुतोसदैव। निश्चय काहूधर्ममें जाहि होतहै नैव॥ कहाकरौं तौहोय शुभ प्राप्त मोहिं कल्यान। यह बिचारते हौं रहत लहिकै खेद महान॥ तासपास आवत भयो ब्राह्मण यक अवदात। ताकोकरि सत्कार अति भोजन दीन्हों तात॥ भोजन करिकै स्वस्थह्वै बैठो जब वह विप्र। तब ताको पूछतभयो ऐसेजो द्विज क्षिप्र॥ ब्राह्मणउवाच॥ सुतहि गृहाश्रम देयकै परमधर्म जो स्वक्ष। ताको करिबेकी भई भूरिलालसा दक्ष॥ पैनेहादिकसों बँधो कीन्हें सकत यातैन। जनमन्दाग्नि को चहे जिमि भोजन अतिऐन॥ यहि भवसागर पारहौं भयो चहत बुधराय। धर्मनाव मिलिहै कबै कबै उतरिहौं धाय॥ खेद लहत मम लगतनाहिं भोगनमें मन ख्यात। मोपै कृपाबिशाल करि कहो धर्मकी बात॥ बोलतभो सो द्विज अतिथिइमिताके सुनि बैन। बानी सानीमधुरता सों बर प्रज्ञाऐन॥ अतिथिरुवाच॥ है मेरेहू लालसा जो तेरे सबिवेक। मेरेहू निश्चयन हैं स्वर्ग द्वारअनेक॥ किये प्रशंसा मोक्षकी किते यज्ञकी पर्म। किते गृहाश्रमकी करतप्रशंसाहि लहिशर्म॥ चरणदोहा॥ बानप्रस्था-श्रमकी केते करतप्रशंसा भूरि। राजधर्मकी करत प्रशंसा केते मुद सों पूरि॥ गुरु सेवाकी करत हैं कितेमौनव्रत तास। किते युद्धमें मरिलहत दिवमें मोद प्रकास॥ माताको अरु पिताको पूजिलहत है स्वर्ग। उंछवृत्ति सो स्वर्गमें कितेलहत मुदवर्ग॥ किते अहिंसा धर्मसों किते सत्यसोंपर्म। कितेवेद अध्ययनसों लहतस्वर्गमें शर्म॥लहतस्वर्गमें बासहैं किते जितेन्द्रियहोय। ऐसे दिवकी प्राप्तिके बहु द्वारनको जोय॥ थिराबुद्धिमनहैनहीं जैसेमेघ सवाय। कहैंतुम्हैं हमबैन ये धारिसत्य सुखदाय॥

शांतिपर्वणिमोक्षधर्मेउंछवृत्त्युपाख्यानेद्वात्रिंशाधिकशततमोऽध्यायः १३२

अतिथिरुवाच ॥ दोहा ॥ शास्त्ररीति सों हम सुन्यो जैसो गुरुके पास । तैसो मैं उपदेशहौं तोहिंकरत सहुलास ॥ तीर्थनैमिषारण्य में नदी गोमतीकूल । नामनामयक पुरपरम छबिको चारु अतूल ॥ पद्मनाभ नामातहां महत सर्प है एक । जनहि करतसो मुदित है बानीसो सबिबेक ॥ जायतासु तटपूंछतू जौन पूछिबे होय । परम मर्म कहि है तुम्हैं ज्ञानचक्षुसों जोय ॥ है अतिथिन को परम प्रिय शास्त्र बिशारद पर्म । अनुपम गुणसों युक्तहै शान्तिहिं धरेसशर्म ॥ परमधर्मको सर्पसो जानत जलवतजास । हैस्वभाव अध्ययनमें नितहि रहत सहुलास ॥

इतिशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेउंछवृत्त्युपाख्यानेत्रयस्त्रिंशाधिकशततमोऽध्यायः

ब्राह्मणउवाच ॥ दोहा ॥ भारउतारे होतहैं जैसे मनुज सचैन । तिमिसचैन मोमन भयो सुनिकै तवये बैन ॥ उक्ता ॥ पथसोंहान्योजौन । लहि कै शय्यातौन ॥ भोजनपाय क्षुधार्त । अरुलहि अपहि तृषार्त ॥ जैसे होत सचैन । तिमिहैसुनितव बैन ॥ जौन कह्यो तुमअद्य । करिहौं सोमैंसद्य ॥ यह रजनीमें अत्र । रहुन जाहु अन्यत्र ॥ अतिथि सुनि सु यह बात । बसत भयोतहँ तात ॥ मोक्ष धर्मकी पर्म । कहतेकथा सशर्म ॥ रजनीदई बिताय। तिनदोउन नरराय ॥ पूजित ह्वैके प्रात । अतिथि भयो सो जात ॥ दोहा ॥ तदनु अत्रिबंशज सुद्विज दूरि करन संदेह । पास जान को भुजगके गमनकियोमति गेह ॥ मारगमें यकमुनि मिल्यो तेजोमय अभिराम । ताको पूछतभो सुद्विज पद्मनाभको धाम ॥ पद्मनाभ नागेन्द्र को तिहिथल दयोबताय । सोसुनिकै प्रापतभयो नाग सदनतट आय ॥ तदनु कहत ऐसे भयो सो ब्राह्मण तहँबैन । हम ब्राह्मण आये इहां हैं नागेन्द्र सचैन ॥ ब्राह्मण केये बचन सुनि पतिब्रताअहिनारि । बिप्रहि सों देखत भई बाहर आय सुढारि ॥ तदनन्तर पूजासबिधि करिकै ऐसे बैन । कहतिभई अबजो कहौ करौंतौन अतिऐन ॥ ब्राह्मणउवाच ॥

देखनको नागेन्द्रको ममइच्छाहैनारि। एतदर्थही आगमनमेरो भयो सुढारि ॥ नागभार्य्योवाच ॥ अत्रआयहैं मम सुपति भयेए-कगत पक्ष। वहनगये हैं रबि रथहि सुनु ब्राह्मण बरदक्ष ॥ पा-रीरघिरथ बहनकी हैं महिना की एक। तिनकहि तामें गयो हैं पक्ष एकसबिबेक ॥ मोको आज्ञाहोयजो अत्र करों मैं तौन। सुनिकै ताके बचन इमि कह्यो बिप्र मतिभौन ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ प-द्मनाभसों मिलनको मैं आयोहौं दार। जबलौं ऐहैंअत्र नहिं व-नकेबीच सुढार ॥ करिहौं तबलौं बास मैं जबआवैं अहिराय। तबमेरो वृत्तान्त तू दीज्यो तिन्हैं सुनाय ॥ ऐसे पन्नग नारिको कहिकै सो द्विजबैन। नदी गोमती कूलपै रहतभयो प्रतिऐन ॥ भीष्मउवाच ॥ निराहारह्वै बसतभो नदी गोमतीकूल। ताते पन्नग औरसब दुखको पाय अतूल ॥ तासपास जातेभये सर्व कुटुम्ब समेत। नदी पुलिनमें देखते ताकोभये सचेत ॥ तास पास ते जायकै कहत भये इमिबैन। निराहार ह्वैकै रहत अत्रआपुमति ऐन॥ अतिही पीड़ितहैं भयेयातेहम अहिसर्व। करौआपु भोजन लहैं तब हममोदअखर्व ॥ भोजनदेनो अतिथिको यहसुगृहीको धर्म। कन्दमूल फलजो कहौ ल्यावैंतौन सशर्म ॥ आय हमारो धामपै भूखोरहो न कोय। अतिथि आजुलों ये वचन सुनि के इमिसों जोय ॥ कहत भयो ऐसे वचन कीन्हों तुम सत्कार। याते भोजन करि चुके करहु न शोच अपार ॥ एक मास के बीच हैं बासरबाकी अष्ट। बहु बासर बाकी न अब यातेकरहु न कष्ट ॥ अष्टदिवसतक आइहैं मैं नहिं सुनो अहार। करिहौं व्रत तिनकाज यह जानो सबहि सुढार ॥ अपने अपने धाम को जावोपन्नग सर्व। खेदकरो मति आपने मनकेबीच अखर्व ॥ भीष्मउवाच ॥ पूर्णभयो जब मासतब आज्ञा रविकी पाय। आवतभो निजधामको पद्मनाभ अहिराय ॥ पहुंचोजब निज धाम में तब लखि नारीतास। पद्मनाभ के धोवती भई चरण

सहुलास ॥ तदनन्तर पूंछत भयो नारीको अहिराय । अतिथिदेव पूजातिहुती सहित बिधान सचाय ॥ मम बियोगते पीड़िता ह्वै करिकै तूनारि । धर्मनकी मर्य्यादतौ नहींतजी सुकुमारि ॥ नागभार्य्योवाच ॥ परमधर्म है नारिको पातिब्रत्य ललाम । जानति तव उपदेशते तत्त्वस्वच्छ अभिराम ॥ तुमहौ पालत धर्म में होय तुम्हारीनारि । कैसे तजिहौं धर्मको कहिये आपुबिचारि ॥ भयोपक्ष यक अत्रहै ब्राह्मण आयोएक । रहत गोमती तीरपै पढ़तबेद सबिबेक॥राहतुम्हारीलखतहै अनशन ब्रतगहितौन । मोहिंगयो है कहि बचन ऐसेसो मतिभौन ॥ जबआवैनिजधाम में नागराज तबपास । भेजि हमारे दीजियो याते सहित हुलास ॥ करौ ताहि तुम आजके शीघ्र गोमती कूल । दर्शन देकैआपनो दायक मोद अतूल ॥ नागउबाच ॥ चरणादोहा ॥ मोहिं बुलावन की सामर्थ्य न होति मनुजके बीच । सुरहै कीहै ऋषि उग्र यह ब्राह्मणरूप निभीच ॥ मानव ऐसोकोउ नहिं सके हमें जो जोय । नागराजके बचन ये सुनिकै बोलीजोय ॥ मानवहीहै वह नहीं परै देवता जानि । पै राखैहै आपुकी हियमें भक्तिमहानि ॥ कोप करौमाति दरशकी तबवह सहितजलाश । धारैचातक जिमिसुनो स्वाति बूंदकी आश ॥ बिघ्न न करिहै वह कछू दर्शन चहत तुम्हार । तासु आश माति छेदिये करिये कृपा सुढार ॥ तासु आश जो छेड़िहौ जरिहै तौ तव अंग । आशाछेदे भ्रूणहा भूपहु होत उतंग ॥होतदानते सुयश है सत्वबचन ते पर्म । स्वच्छ बोलिबो होतहै जनको प्राप्त समर्म ॥ मैं योगी तव पास मैं जब ऐहै अहिराज । याते ताके जाइये पास प्रज्ञ शिरताज॥ नागउबाच ॥ धारिहिये अभिमान नहिं क्रोध करतहौं नारि । क्रोध हमारी जातिको है स्वभाव निरधारि ॥ क्रोध सर्पमें अधिकहै याते प्राणी सर्ब । सर्पजाति की करतहैं निन्दा नित्य अखर्ब ॥ तव बाणी को श्रवण करि क्रोध दियो मैं त्यागि । धन्य आपुको

गुणतहौं तोहिं लखे अनुरागि ॥ अत्रमैं शीघ्रहि जातहौं तिहि ब्राह्मणके पास। ताके मैं सन्देह को मिलतहि करिहौं नास ॥
इतिश्रीमोक्षधर्म्मेपद्मनाभोपाख्यानेचतुस्त्रिंशाधिकशततमोऽध्यायः १३४
भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ पद्मनाभनामा भुजग तिहिब्राह्मण तटजाय। मधुर बचन बोलतभयो ऐसेबिधि नरराय ॥ रामगीती ॥ कछु तोहिं पूछत बिप्र हमहैं कीजियो मति क्रोध। तू कहांते है अत्र आयो कौनकाज सबोध ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ ममनाम धर्मारण्यहै जो पद्मनाभा नाग। मैंतासु करन मिलाप आयो अत्रहौं बड़भाग ॥ तिहिको न गृहमें सुन्यो याते अत्र कीन्हे बास। पगिमिलनके उत्साह में भे येह देखत तास ॥ कल्याण काजै तासु बिधिवत् पढ़तहौं मैं वेद। ये बचन सुनिकै कहत भो इमि पद्मनाभ अखेद ॥ नागउवाच ॥ तू अनिंदित विप्रहै वरसाधु परम अनूप। परजनहिं देखतस्नेह सों है धन्य हे मतिरूप ॥ है लखत जाकीराह सोई नागहौं मैंविप्र। प्रियकहातव मैं करौं कहु अब मित्रलौ तू क्षिप्र ॥ सुनितव हवाल स्वनारि सों हौं लखनआयों तोहिं। तिहिकार्य आयो अब तू कहुकार्य सोंअबमोहिं ॥ बिश्वासकरु ममबातमें निजकार्यकीलहिसिद्धि। सुनु बिप्र जैहै इहां ते कहुशीघ्रही मतिनिद्धि ॥ हितछोड़िकरिकै आपने सबभजतहै तू मोहिं। लैमोललीन्हों गुणनसों निज देउँका अब तोहिं ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ मैं लखनआयों तोहिं अरु अहि कछूपूछत अर्थ। अर्थज्ञ जे हैं सुनेतिनमें तोहिंमहत समर्थ ॥ यक अतिथि द्विजने तब बतायो नाममोहिं अहीन्द्र। इमि बचनकहि द्विजप्रथम ऐसेकह्योफेरि महीन्द्र ॥ दोहा ॥ मारतण्ड रथबहनको जात स्व बारी पाय। तहँ कछू आश्चर्य जो लख्योहोय अहिराय ॥ प्रथम तौन आश्चर्यकरि फिरिजो पूछौं तोहि। कहियो हेनागेशबर कृपादृष्टिसोंजोहि ॥ नागउवाच ॥ द्विज अनेक अचरजनमें सर्यहि अचरज पर्म। जाके होत प्रकाश ते

लोकमाहिं बहुकर्म ॥ जिमि डारनमें बिहँग तिमि तासुकरणके बीच । देवनसह मुनिबसतहैं ब्राह्मण बिज्ञानिभीच ॥ जासु कशाश्रितबायुजो निकरि व्योममें धूरि। होतउग्रहै औरका अचरज याते भूरि ॥ अष्टमासलौं करषिजल बर्षतभूमें सर्ब । कालपाय याते कहा अचरज और अखर्ब ॥ पुरुषोत्तम जामें रहत शाश्वत श्रीभगवान । सुनो बिप्र याते कहा अचरज और महान ॥ आश्चर्यनके बीच यक लख्यों आचरय और । अतिहि महतसों कहतहौं तुम्हें प्रश्न शिरमौर ॥ पूर्ब मोहिं यकसमय में बासरमध्य प्रचण्ड । रबिसम रबितट लखिपरयो तेजस औरअखण्ड ॥ आवतभो रबिसामुहे चीरत इव आकाश । लोकनमेंसो उग्रअति करतो भूरि प्रकाश ॥ भयोनिकट तब मिलनको भानु पसारेपानि । अरु दक्षिण करतिहिहु द्विज छबिसों भरो महानि ॥ जासुतेज हौ तौनसुनु एकक्षणकके माहिं । रबिमें मिलिगोफेरिसो भिन्न परयो लखि नाहिं ॥ तौन समय में यह भयो प्राप्त हमें संदेह । यह रबिहै की जो हुतो आयो सो मतिगेह ॥ तब हमपूछयो रबिहिइमि तुमहिंसमान प्रचण्ड । कोहैजो तुममें मिल्यो तेजस भरो अखण्ड ॥ सूर्य्य उवाच ॥ उंछवृत्तिधर एकबर बिप्र हुतो अभिराम । तौन गयो सुरलोकको भरो तेजसों माम ॥ यहसुमूल फल पर्णद्विज गिरेपरेहौ खात । बायु भक्षिके रहतहौ कबहूंअप अवदात ॥ काहूसों माँगत न हौ अरु नहिं बैठत पाहि । हो सुउंछशील वृत्तिमें तत्पर रहत सदाहि ॥ उत्तमगतिको प्राप्त बर जौनहोतहैं भूत ॥ तिनकीगतिको जानत न सुर असुरादि अकूत ॥ नागउवाच ॥ पूर्बलख्यो आश्चर्यहों यहहम सूरजपास । सिद्धमनुजते भानुमें प्राप्तहोय सहुलास ॥ करत प्रदक्षिण मेरु कीयाते धर्मारन्य । उंछवृत्तिमें रहतजे तत्परते जनधन्य ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ यहजो तुम हमको कह्यो सो आश्चर्याहि पर्म । प्रिय हमको अतिहीलग्यो यह भुजगेश सशर्म ॥ कह्यो यह सुआ-

श्चर्य नहिं हमैं बताईराह । नित्य होहु कल्याण तव पद्मनाभ अहिनाह ॥ सुमिरण मम तुमराखियो अरु तुमनिजवृत्तान्त । जबतबहमको भेजियो कहि मतिबर अहिदान्त ॥ नागउवाच ॥ अबहिंकहां द्विजजात है कहेबिना निजकार्य । आगमभो जिहि अर्थ तव अबकहु सो द्विजआर्य ॥ करिकै अपनोकाज अरु ममआज्ञाको पाय । धामआपने जाइयो संशय सर्ब बिहाय ॥ मनमेंगुण तू आपने समजेते जनतौन । हमऐसे लहि मित्र तू करु न शोच मतिभौन ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ ऐसेही जो कहतहै जैसे तूनागेश । देवतहीहैतू भुजग प्रज्ञावान बिशेश ॥ कहाकरैकामहिंकरै धर्महुतो संदेह । उंछवृत्ति सुनिकैभयो तौनदूरिमतिगेह ॥ आयो हौं जिहिअर्थ मैं तौनासिद्धिभोअर्थ । अबहमजैहैं धामको आज्ञादेव समर्थ ॥ भीष्मउवाच ॥ बिदाहोयकै भुजगसों धर्मारण्य सुबिप्र । दिक्षालीवे उंछकी जातभयो सो क्षिप्र ॥ च्यवन सुऋषिके पास सब भयेदूरि संदेह । आदरसेती लेतभे ताहि च्यवन मतिगेह ॥ जौन सुन्यो आश्चर्यहो पद्मनाभसों स्वक्ष । तौन च्यवन सों है सरब कहतोभयो प्रतक्ष ॥ सभाबीच नृप जनककी यह आश्चर्यहि भूप । कह्योहुतो मुनिनारदहि च्यवन सुबिज्ञ अनूप ॥ श्रीनारद सुरराजकी सभाबीच अभिराम । कह्यो हुतो तहँ सर्ब हे देव वृन्द बलधाम ॥ अति प्रशस्त ब्राह्मण को कह्यो हुतो सुर राज । परशुराम सों औ नृपति हमसों युद्ध दराज ॥ भयोहुतो जिहि समय में तौन समय के माहिं । बसुन कह्यो हमको हुतो हम नृप तेरे पाहिं ॥ आश्र मीनको जो हुतो पूछ्यो परम सुधर्म । सो नृप हम अवगाहिकै तोको कह्यो सुकर्म ॥ नित्य जितेन्द्रिय होयकै छोड़ि कामना वृन्द । मोक्षप्रद है सोय जो कियो स्वधर्म नरेन्द ॥ करिकै प्रायश्चित्त द्विज धर्मारण्य अनूप । लेय उंछशील वृत्ति की दीक्षा बिधिवत भूप ॥ च्यवन सुऋषि सों ह्वै बिदा धर्मा-

रण्य सुधर्म । रहतो भयो अरण्य में होय अकाम सशर्म ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामि
नाश्रीबन्दीजनकाशिवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मज
गोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारत
दर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्म्मेउञ्छवृत्त्युपाख्यानसमाप्तिर्नाम
पंचत्रिंशाधिकशततमोऽध्यायः १३५ ॥

दोहा ॥ नभबसु बसुबिधुबर्षबर बिजयनामअभिराम । आ-
श्विनशुक्लसुदशमिका तिथिलहिकै गुणधाम ॥ मोक्षधर्म दर्पण
परम मोक्षप्रदअवदात । पूरभयोताकोसुने पढ़ेकलुषकटिजात ॥
कबित्त ॥ केतेभूपदेखे महिमण्डलके बीचमें मैं ओजसों अखंडल
के समजे बिख्यातहैं । दुबन कलापनीरशोषक अमायमहा भानु
से प्रतापकोसदाही सरसातहैं ॥ मणिदेवभनैजौलौं रहतपरोक्ष
तौलौं मानसों महानधारे तेजकोबिभातहैं । उदितनरेशकेनजी
के भये श्रीके भूरि धोसके शशीकेसमफीके होयजातहैं ॥

इतिशान्तिपर्वणि मोक्षधर्मस्समाप्तः ॥

मुन्शी नवल किशोर (सी, आई, ई) के छापे खाने में छपा

अगस्त सन् १८९१ ई० ॥

अनेक नीतिसहित दुर्योधनको युद्धसे निषेध करना और उसे न मानना और दोनों ओर युद्धका उद्योग होना ॥

भीष्मपर्व ॥

भूगोल खगोलादि भूमिविस्तार और नदी पर्वतादि संख्या व पदार्थ वर्णन अर्जुन व श्रीकृष्ण सम्वाद और भगवद्गीता वर्णन पश्चात् भीष्मजीका पाण्डवोंसे युद्ध व बध ॥

द्रोणपर्व ॥

द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, दुश्शासन और दुर्योधनादि वीरोंसे पाण्डवों का सम्मुखयुद्ध द्रोणाचार्य कृत चक्रव्यूह निर्मान व तदनन्तर अभिमन्यु युद्ध व बध पश्चात् द्रोणाचार्य बधादि कथायें वर्णित हैं ॥

कर्णपर्व ॥

पाण्डवों प्रति कर्णका युद्ध व बध कथा है ॥

शल्य व गदापर्व ॥

राजा शल्यका सेनापति होकर दुर्मर्षण, श्रुतान्त, जयत्सेन, सुशर्मा शकुनि और उलूकादिकों समेत युद्ध व बध और दुर्योधन व भीमसेन का गदायुद्ध व दुर्योधनकी जंघभंगादि कथायें वर्णित हैं ॥

सौप्तिक व स्त्रीपर्व ॥

अश्वत्थामा करके पाण्डवोंके सुप्तपुत्रोंका नाश और कुरुक्षेत्रमें कौरवादिकों की रानियोंका विलाप ॥

शान्तिपर्व ॥

इसमें चार प्रकारके धर्म अर्थात् राजधर्म आपद्धर्म दानधर्म और मोक्ष धर्मादिका सविस्तर वर्णनहै सम्पूर्ण विषयबासनारहित शम दम उपरति तितिक्षा श्रद्धा समाधानादि षट्सम्पत्ति साधन योग समाधिकथन ईश्वराराधनासक्त सर्वाहंकार द्वेष ममतादि त्यक्त ध्यानधारणा अन्तरंग बहिरंग साधनादि अनेक मार्गसे मोक्षमार्ग ज्ञानोपाय वर्णन ॥

अश्वमेधपर्व ॥

श्रीकृष्णजीकी आज्ञासे अर्जुन भीमसेन नकुल और सहदेवादि चारों भाइयों को चारों दिशाओंको विजय करके द्रव्योपार्ज्जन पश्चात् राजा युधिष्ठिर को अश्वमेध यज्ञ करना और जरासंधादि राजाओंका बध ॥

आश्रमवासि मुशल महाप्रस्थान व स्वर्गारोहण पर्व ॥

युधिष्ठिरादि पांचोंभाइयोंको आश्रममें बास करना पश्चात् छत्तिसवां वर्ष वर्तमान होनेपर [illegible] [illegible] व यदुवंशियोंको मदोन्मत्तहोके परस्पर युद्धकर नाशहोना व श्रीकृष्णचन्द्रके पैरमें जरानाम व्याधाको बाण मारना व श्रीकृष्ण बलदेवको परमधामजाना व युधिष्ठिरादि पांचोंपाण्डवों को महाप्रस्थान यात्राकर स्वर्गगमन ॥

अनुशासनपर्व ॥

सम्पूर्ण धर्म्म व दान के सम्पूर्ण व्रतोंका फल व सम्पूर्ण माहात्म्य व ग्राह्याग्राह्य वस्तुविचार व तपस्वी व धर्मात्माओं के लक्षण ॥

हरिवंशपर्व दोभाग ॥

इसके प्रथमभाग में दक्षोत्पत्ति, मारुतचरित्र, पृथूपाख्यान द्वादशादित्योंकी जन्मकथा श्राद्धफल और यदुवंशमें कृष्णजीका उत्पन्नहोके बसुदेवजी के द्वारा मथुरासे गोकुलमें नन्दगृहगमन पश्चात् पूतना वत्सासुर बकासुर अघासुर प्रलम्बासुर और केशीआदिका बधकरना गोबर्द्धनोद्धारण व मथुरा गमन कंसबध और द्वितीयभागमें ऊषाचरित्र कृष्णसे मधुदैत्यका बध वामन नृसिंहादि चरित्र, देवासुर संग्राम, कैलासयात्रा, घण्टाकर्ण मोक्ष, पौण्ड्रक ऐकलव्यबध, श्रीकृष्णजीका पुष्करागमन, विचित्रकबध, कृष्ण बलदेवसे नन्दादिका समागम पर्वानुकीर्त्तन व हरिवंश वृत्तान्तादि कथायें वर्णित हैं ॥

महाभारत सबलसिंह चौहानकृत ॥

तुलसीकृत रामायणकी रीतिपर सुन्दर दोहा चौपाइयों में निर्मितहै जिस्कदरपर्वें मुद्रित होगई हैं निम्न लिखित हैं ॥

आदिपर्व, सभापर्व, बनपर्व, बिराटपर्व, उद्योगपर्व, भीष्मपर्व, द्रोणपर्व, कर्णपर्व, शल्यपर्व, गदापर्व, स्त्रीपर्व, मुशलपर्व, महाप्रस्थानपर्व ॥